

दरिया-ग्रन्थावली

[द्वितीय ग्रन्थ]

[१ दरियासागर, २ ग्यानरत्न, ३ ग्यानसरोर, ४ भक्तिहेतु, ५ ब्रह्मविवेक, ६ ग्यानमूल]

सम्पादक

डॉ० घर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

एम० ए० (दिल्ली संस्कृत दर्शन), पी एच्० डी०; ए० आर० ई (सण्डन)
प्राचार्य, जगन्नीलम संस्थान, आरा; भूतरूप होच-रिषा-निष्ठाक (बिहार)

भारतीय विद्या नन्दि

बीकानर

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

① बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

बिहारी २०१८, राकेश १८८३, सुधा २६६५

सबिन्द मूल्य ₹ ५०

मुद्रक
धनस्याम प्रेस
पटना

वक्तव्य

दरिया-सम्पादनी का यह दूसरा प्रन्थ (खण्ड) मुभीत्रों के समूह प्रस्तुत है। एका प्रथम प्रन्थ एन् १६२४ ई० में ही परिपक्व न प्रकाशित किया था। यह प्रथम प्रन्थ डॉ० कमेंडर ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा अपनी पी-एच्० डी० की उपाधि के लिए तैयार किया गया 'महासिन्धु' था। यह महासिन्धु अंगरेजी में लिखा गया था, जिसे हिन्दी-अनुवाद परिपक्व न मुद्रित कराया था। उसके बाद यह दूसरा प्रन्थ दरियादाग की छद्म पेशियों की संशोधित सम्पादित तथा पाठोपनि प्रतियों का संस्कार है, जो प्रकाशक भा०के सम्मुख प्रस्तुत है। डॉ० शास्त्री ने बड़े परिश्रम और अन्वेषणपूर्वक इन छद्म पेशियों का विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों से मित्राकर पाठों का संशोधन-सम्पादन किया है। इन्हें दरियादाग-निर्दिष्ट 'दरियादाग' 'म्यान्सन' 'म्यान्सोरे' 'भट्टिदेव' 'ब्रह्मचिरे' और 'म्यान्सूत'—ये छद्म पेशियों सम्मिलित हैं। सभी दरियादाग-प्रन्थ १४ प्रन्थ और हैं जिनके पाठोपनि-संशोधित संशोधित संस्करण के प्रकाशन की हमारी योजना है।

डॉ० शास्त्री ने अपने महासिन्धु की रचना के लिए दरियादाग की पेशियों के अन्वेषण और अनुसंधान में जो अंग्रेज धन किया था, उसका थोड़ा विवरण प्रथम प्रन्थ की सन्धि में उन्होंने स्वयं लिखा है। यों तो, डॉ० शास्त्री सन्त-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् हैं, परन्तु दरिया-साहित्य के न एवमात्र विशेषज्ञ हैं। इन्हें द्वारा है डॉ० शास्त्री-जगद्गुरु दरिया-साहित्यविशारद के द्वारा सम्पादन-संशोधित दरिया-सम्पादनी के इस दूसरे खण्ड का भी मुभीत्रों में विशय आदर होगा।

पत्र, कृष्ण नवमी २०१८ विक्रमाब्द

भुवनेश्वरराय मिश्र 'भाष्य'
संभालक

भारत गुरु-संस्थान
तीक्ष्ण

उपसृक्त विना कर मन्वी को दण्ड बरकर में परिमित किया गया है, उसमें से प्रत्येक की एक से अधिक हस्ताक्षरित प्रतियों प्राप्त हुई थी, और प्रत्येक के उचित संस्करण भी सम्म वे। इसमें से किसी एक प्रतिये कम्पना संस्करण को आधार मानकर अन्य का मुख्य पाठ सिद्धांतित किया गया है, ये प्रतियाँ अथवा संस्करणों में जो पाठान्तर अथवा सम्बंधनीय विरोधाभास हैं, उनमें से कम्पना संकेत पाठ-द्विपरिचयों में किया गया है। मुख्य पाठ और पाठ-द्विपरिचयों में ऐसी अन्तर सम्मन्वी मिलेगी, जिसके आधार पर पाठ की प्रामायिकता अथवा उपादेयता के सम्बन्ध में अधिकारित शोधकर्ता सम्मन्वी सम्मन्वी किया जा सकता है। यहाँ एक प्रासिद्धा की जा रही है, जिसमें उपसृक्त कर मन्वी का उन्नीस विभिन्न प्रतियों का विवरणालम्ब परिष्कृत है।

क्रम सं	प्राप्य-नाम	संस्करण या प्रति	विवरण	विधि-प्रकार	सूत्र प्राप्ति-स्थान	विशेष
१	परियारसगर	(क)	शुभाकर, कुम्भ	गुरुकुल-संस्था	सूत्र शुद्धीकरण,	
		(ख)	१२६६ वृ = १६१६ वि	मिरजापीठ	पठकथा शालाभार	
		(ग)	१२६१ वृ = १६४१ वि	गुलम्बार	"	
		(घ)	१०८६ वि०	धनलक्षरस	"	
		(ङ)		शालायापीठ	"	
		(च)		शालायापीठ	"	
		(ज)			"	
		(झ)			"	
		(ञ)			"	
		(ट)			"	
		(ठ)			"	
		(ड)			"	
		(ण)			"	
		(त)			"	
		(थ)			"	
		(द)			"	
		(ध)			"	
		(न)			"	
		(प)			"	
		(फ)			"	
		(ब)			"	
		(भ)			"	
		(म)			"	
		(य)			"	
		(र)			"	
		(ल)			"	
		(व)			"	
		(श)			"	
		(ष)			"	
		(स)			"	
		(ह)			"	
		(ळ)			"	
		(फ़)			"	
		(ब़)			"	
		(य़)			"	
		(ऱ)			"	
		(ल़)			"	
		(व़)			"	
		(श़)			"	
		(ष़)			"	
		(स़)			"	
		(ह़)			"	
		(ऴ)			"	
		(फ़़)			"	
		(ब़़)			"	
		(य़़)			"	
		(ऱ़)			"	
		(ल़़)			"	
		(व़़)			"	
		(श़़)			"	
		(ष़़)			"	
		(स़़)			"	
		(ह़़)			"	
		(ऴ़)			"	
		(फ़़़)			"	
		(ब़़़)			"	
		(य़़़)			"	
		(ऱ़़)			"	
		(ल़़़)			"	
		(व़़़)			"	
		(श़़़)			"	
		(ष़़़)			"	
		(स़़़)			"	
		(ह़़़)			"	
		(ऴ़़)			"	
		(फ़़़़)			"	
		(ब़़़़)			"	
		(य़़़़)			"	
		(ऱ़़़)			"	
		(ल़़़़)			"	
		(व़़़़)			"	
		(श़़़़)			"	
		(ष़़़़)			"	
		(स़़़़)			"	
		(ह़़़़)			"	
		(ऴ़़़)			"	
		(फ़़़़़)			"	
		(ब़़़़़)			"	
		(य़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़)			"	
		(ल़़़़़)			"	
		(व़़़़़)			"	
		(श़़़़़)			"	
		(ष़़़़़)			"	
		(स़़़़़)			"	
		(ह़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़)			"	
		(फ़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(व़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(श़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ष़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(स़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ह़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऴ़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(फ़़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ब़़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(य़़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ऱ़़़़़़़़़़़़़़़़़)			"	
		(ल				

क्रमासं०	प्रश्न-समाप्त	नस्तराज या प्रति	दिनांक	विवरण	मूल प्राप्ति-भाग	विवरण
	राजसरोवरे (सागरसरोवर)	(क)	११ जन, १९१६ व० १६१६ सि०		मूल खुरीराज भरक्या रावभार	
		(ख)	"		"	"
	साहिबपुर	(ग)	"		"	"
		(घ)	१८६२ सि०	दीवराज	"	"
		(च)	१६२७ सि०	दीवराज	"	"
		(द)	१८६६ सि०	उमरावराज	"	"
		(इ)	"	"	"	"
	भद्राविदेक	(क)	१२१६ व० = १६१६ सि०		"	"
		(ख)	१२८६ व० = १६१६ सि०	दीवराज	"	"
		(ग)	"	काजयादीराज	"	"
		(घ)	"	"	"	"
		(ङ)	१२६१ व० = १६४१ सि०	दीवराज	"	"
	सागरपुर	(ख)	काजिक कृष्ण ११ १६१४ सि०	भुवनेश्वर कर्षीर	"	"
		(घ)	१८६६ सि०	राज कर्षीर	"	"

निम्नलिखित धारिकाएँ एवं द्वा प्रयोगकर्ता में कार्यालय प्रस्तावों के सुलभतागत आधार तथा उनकी स्थापना परों की प्रतिक्रिया और प्रस्ताव का क्षेत्र दिया—

क्र० सं०	प्रश्न	दीक्षा या धारिका	धारिका	वीचर	वर्ष	पदों की पूर्ति संख्या
१	दरियासागर	६६	१६	११४७	१६	११७४
२	झारखण्ड	१२६	२१	१८७१	४७	१९१८
३	झारखण्ड	४१	२	३१६	—	३१७
४	महाराष्ट्र	४२	—	४०८	—	४०८
५	महाराष्ट्र	३६	—	३१६	—	३१६
६	झारखण्ड	६१	—	४२७	—	४२७

यद्यपि उपरोक्त दरिया के निम्नलिखित धारिकाओं के अभाव में निम्नलिखित धारिकाओं की पूर्ति प्रस्तावों के अभाव में संभव नहीं है। यद्यपि इन निम्नलिखित धारिकाओं के अभाव में पूर्ण प्रतिक्रिया नहीं दी जा सकती है।

इसने हरिमात्र-प्रधानी के प्रथम पाद में संतमन की ऐतिहासिक प्रथमि का विस्तारण करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि कृष्ण के प्रसक्त करीर सायें शिव का न और बानारण में रहे, उनमें प्रकटिा प्रायः सभी धार्मिक और दार्शनिक विचारधाराओं से प्रभावित हुए । उदाहरणतः उन्होंने उल्लिखित से ब्रह्मैतन्नाद शंकर से मायावाद वैष्णव आचार्यों से मीर, अहिंसा धार प्रभृति के विद्वान् तांत्रिक शैली ब्रह्मसनी यादों आर नायकों भोगियों से हयान, रहस्यवाद तथा अल-अल एवं धर्मशास्त्र के सिद्ध पैनी उक्तिर्वा, बन्धन नरुपे और सूफी मंत्रों से मायुर्धनय भक्तिार इत्यान से एकेअरवाद् की हदर भावना—इन मन्त्र-विन्दुओं का संघर्ष करते उन गरके मउ से, आपार अरुन एवं ब्रह्मिन्ना का ऐसा विविध और मानिठ गमनव्य प्रस्तुत किया, शिष्य संतमन—निर्गुणत्व की गालान्य उपाधि सिधी । व्यागारिठ दृष्टि से इन मत का लक्ष्य वा हिन्दुओं और मुगलमानों, दाशों धर वनों सबसे तार्किकीय प्रेम और निश्चया का प्रचार; क्योंकि व सभी एक ही भगवान् के पुत्र हैं चाहे उसे राम कहो वा हरिमान ।^१ जो या अत्युक्ति करीर के गन्ध में है, की गगनान्तः मंगल्यि श्रिया कगम्यव में भी लागू है । स्वयं दरिया ने करीर क व्यक्तित्व और उन्मी विचार-भाग का अणु स्वीकार किया है और स्पष्ट-स्वयन पर करीर की प्रसंगा की है । व अपने शिष्यों से कहते हैं कि—

सादि गोशा जा गानदि कपीरा ।^२

अतः, ये यह प्रेरित करते हैं कि करीरदाय क पर शीर के गान पटुन्य है और वे उन्ही बानों का जन्ता क गानन एग रह हैं जिनें करीर न प्रस्तुत किया था ।^३ एक अन्य प्रसंग में उन्होंने करीर का बहुमुख्य स्था न एन का साह दिया है और उन्ही प्रसंग में उनके शिष्य धर्मदाय की भी प्रशंगा की है ।^४ धीं दरिया के अनुनार अतुरा (ईश्वर) एग रिच का विधाना है । हिन्दु, 'निरंजन' म त्या मायाकाउ कडा एगा है कि उगमें जीशम्ना सँपहर अन्तार्गं से विचरित हो प्रात है । यपरि बड़े-बड़े पवित्र और अद्वैत-मुनि इन ज्ञान में बंधे तथापि करीर एक अथ संन से वा इग मंगार में शरीर धारण करके भी गन्ध द्वा क मार्ग क स्तुपायी बन रहे ।^५

अनेक प्रयोगों में वा दरिया म बाल का अतुरा का पुत्र^६ वा 'अरुन्द' बाबा है । उन्होंने यह किया है कि अतुरा में अतुरा क पुत्र का मान मुगल वा मे ही प्रेता में अन्तमा मान से भारतीयों

- २ दरिया सागर (१० ७६)
- ३ मादू कां जा कददे कपीरा ।
दरियादाय पद पादा दारा ४—दरियासागर (१० ८)
- ४ सात शतक गर वाय कपीरा ।
एन मद्र पुत्र गदिर ममीरा ४
धर्मदाय एग उणिगारा ।
शीर दार विचरन करे गारा ४—श्यामसून (१० १८०)
- ५ कान्ण दरार गानत मेद मारी ।
दारा संदिन पद गुरारी प्र—दरियासागर (१० ६०)
बाबा पवार पीणद गारा ।
मग लक के गार गुरारा ४—दरियासागर (१० ६१)
- ६ मद्रप्रियक (१० १००)

हुए और द्वार में मुनीन्द्र नाम से। कस्मिण में वे कबीर के नाम से संवार में जाये।^{१०} इसी कस्मिण में उनका दुगारा बनारस हुआ हरिया के रूप में।^{११} स्वयं सपुत्र ने अनेक बार हरिया को दर्शन दिया और कहा कि दरिवादान तुम्हें भय हुआ।^{१२} सपुत्र ने उन्हें अपना 'शाहबादा' को भेंट किया और कहा तथा मोहर लीये।^{१३} हुइ हुइ शब्द के तब पर विठामा और इसी 'बहाड़ी (बनराही) का उत्तरदायित्व दिया। स्पष्ट है कि यह बनराही बर्मिन् बम्ब की बनराही (बहाड़ी) थी। हरिया को सपुत्र के दर्शन देने का मुख्य उद्येश था उनसे रक्षा करना। सपुत्र ने उनके घरण ही 'जगजोड' की गयी और सुत्र-सामर्थी रयान कर विभिन्न हीनों को वार करते हुए सपुत्री में पदार्थ किया।^{१४} इन प्रकार के वर्णनों से यह प्रतीत होता है कि सपुत्र और हरिया के परस्पर सम्बन्ध की माननाओं के पीछे बड़ा ईनाइतना और इत्ताम का सम्बन्ध या अन्तर्गत का पुषवन्त सिद्धान्त का बड़ा पाप ही-नाथ हिन्दु का अन्तर्भाव भी प्रेरणा है रहा था। गीता में कृष्ण ने ब्रह्म अन्तर्गत क्षेत्र की भी उल्लेख किये हैं, अर्थात् उग्रवनों की रक्षा हुयों का विनाश, बर्म की प्रतिष्ठा आदि वे सभी हरिया के मान-मूल्य पर अंकित थे।^{१५}

इसी ध्यान-अङ्कित हरिया का कबीर के प्रति भी बची ही अन्य मन्त्र-उर्तों के प्रति थी जिन्हें हम भिन्न-भिन्न संप्रदाय की मान-धारा का प्रतिनिधि मानते हैं। उक्त उर्तोंने अपने पूर्ववर्ती भाष्य-विद्यों तथा योगियों की बर्ना-धारा के साथ की है।^{१६} नामदेव सम्प्रदाय आदि नामों का भी उर्तोंने मन्त्र-सम्बन्ध उल्लेख किया है।^{१७}

१० इस समस्त प्रसंग का विस्तृत विवरण ग्यानदीपक नामक ग्रन्थ में मिलता है। सपुत्र 'बर्णा' शब्दक प्रयोग में मिलती है। उदाहरणतः 'बर्णादि क' में—

प्रथमदि सतहृग में चलि आये
मुक्ति नाम या इहाँ कदाये
करनामे के रूप धरि, मुनीन्द्र आये कहाइयो

कमठ कबीर कासी रघाना, नाम संतापुत्र संय ब्रह्मना
सन मुक्ति चरया गरीरा।

विरमल नाम बधि कदेयो कबीरा।—महाविदेक (पृ० ३११)

- ८ फिर कसउ सँद परा गरीरा।
आम ग्यान आमन रंग हीरा ॥
सत नाम कीन्द विचारा।
हरिवा नाम ग संय सुपारा ॥
- ९ मन्दिरेणु (पृ ३०८)
- १० सरी सुन्द सम्बद्धारा।
करहु बहाड़ी शीन करारा ॥—अभिज्ञानु (पृ० ३१०)
- ११ मन्दिरेणु (पृ० ३१, सार्गी ११)
- १२ 'जगजोड' है महर हमारा असुदिर बपुपारी।
सुय बराम इहाँ आइया पीछे बचन विचारी ॥—ग्यानसून (पृ ३०६) आदि।
- १३ दरिवादान ग्याहरी, विनाशाय च सुपुत्राय।
धमसंपादनापांशु सम्बन्धामि पुगे पुगे ॥—गीता
- १४ जयो जाय रहे मोरग जागी।
अन्ध भेग मूर हम भागी ॥—ग्यानरत्न (पृ० ३२)
- १५ नामदेव बनि जागे वेम, दुन कबीर ग्यान सुग जेमे।

पुत्र जाग मच बहु जाग सनगुर २५ विरम बहनाना ॥—ग्यानरत्न (पृ ३१२)

कबीर आदि जनों की पानियों का संज्ञित करते हुए अन्तर्गत दरिया ने स्पष्ट-तत्र कवि या कवि कर्म के आदर्शों की और भी इंगित किया है। वे अपने कवियों की रचनाओं को काव्य भी कहा देने को तयार नहीं थे, जो अतमी कविता का द्वारा शत्रुओं का महान् ध्वंस करने का प्रयास करते हैं। जैसे तुलसीदास ने राम-कथा शून्य कविता को निरुपेक्ष बताया है, वैसे ही दरिया ने भी ऐसी कविता की निन्दा की है, जिसके द्वारा विमल नाम के प्रेम का आसरादन मरी जाता।^{१२} कब्रत बेशी और पुगणों के पद लेने से पाणिशय्य शब्दशः कविता सम्पन्न हो जाय, यह सम्भव नहीं। कवि के लिए ज्ञान और माया का टीक-टीक विवेचन आवश्यक है। अन्तर्गत कवि माया के गीत गाते आये हैं वे धरु गये किन्तु मन-सागर पार करन की ताकत नहीं पा सके।^{१३}

२ मिद्वान्त

अन्तर्गत दरिया के दर्शन को सामान्यतः अर्धतार का ज्ञाना उन्हींने 'छैन प्रम' का उल्लेख अनेक प्रपत्तियों में किया है। वे परमवता के बहुत क विरोधी थे अतः उनका मिद्वान्त अर्धतः हुआ, किन्तु साव-धी-साध उनका जन्म भङ्गिग्य है, अतः वह छैन शब्द अर्धतः से मिल है। ब्रह्म सनातन्य मय, निम्नार्द्ध आदि बन्धन भाषाओं का प्रम भी भङ्गिग्य है, परन्तु वह बेशी-ने-बतानों जन्म मानव के रूप में पृथ्वी पर अवतार धारण करता है जो दया को स्वीकार्य नहीं है। अतः दरिया का अर्धतार उद्योगार्थ के अर्धतार और वन्मशाकाओं के मतिविधित अर्धतार, दोनों से मिल होते हुए भी उनसे अलग किन्तुओं में समानता रखना है जगमें दन्तम और ईगाइयत के उग एकरावाद का भी पुट है, जिसमें ईरम एक है और मुहम्मद का इसा उनके पुत्र के रूप में मार्च-के के प्राणियों का उदार करते हैं। ऐसा बताया जा चुका है दरिया ने अन्त को उद्योग ईरर' का 'अंग' शब्दनाया या 'अम्ब' घोषित किया था।

दरिया के मिद्वान्त को 'त्रिगुण' कहा जाता है, क्योंकि उन्हींने अपना उनक पूर्ववर्ती कबीर आदि जनों न इरर का त्रिगुण या त्रिगुणातीत कहा है। भारतीय दर्शन के अनुसार समस्त सृष्टि के मूल में तीन गुण हैं—सत्त्व रज्जु और तमस। प्रकृति को त्रिगुणात्मिका है सृष्टि का उत्पादन है। किन्तु, पुत्र शब्द का उद्योग (प्रम) इन तीनों गुणों का प्रकृति का निदानक शब्द हुए भी उनसे निर्लिप्त है अतः त्रिगुण है।^{१४} त्रिगुण अतः त्रिगुण दानों की विवेचना करते हुए दरिया ने उद्योग का संज्ञित

११ विमल नाम प्रेम नहीं काय ।
पसि में क्या बहुत चित शाय ॥
कवि का गर करि बहुत बनाई ।
माया भेद ज्ञान नहीं पाइ प्र—स्वानतरथ (पृ० २२)

१० परि कापर परि धातु धराना ।
पर जन्म मह बिचिष प्रपाना ॥
--- --- --- ---
या दे कवि सब कवि कवि परमी ।
मिल न मरज्जुन सब की तरनी प्र—स्वानतरथ (पृ० १५१)

१८ अर्धतः प्रम विनाग मा मन्मथान निर्मोद—स्वानतरथ (पृ० ११२)

१९ पाप त्रिगुण गुण रति मन्मथान ।

और निगुण का संकल किया है। बहुत कम्ये प्रसंगों में उन्हें राम कृष्ण, राम पार्वती आदि देवी-देवताओं के पौराणिक रूपान्तरों की बर्णना की है, उनपर हीरे स्वयं किये हैं और उनके सपासकों की निन्दा की है। सगुण भगवान् को मानना उन्हें बन्धन में बाँधता है; उनकी सर्वरहितता सर्वस्वापन्नता आदि विशेषताओं को निराह्वान करना है।^{१९} निगुण सगुण नहीं हो सकता और सगुण निगुण नहीं हो सकता। संवेत्ता सगुण अपना परमरूप निगुण है, और सभी मन्त्र बीज सगुण हैं। उनमें तार्किक मेरु है।^{२०} माल में ब्रह्मा विष्णु, महेश्वर को भगवान् मानकर, पूजा होती है, हिन्दु बरिवा के अन्वय इन देवताओं में भी सगुण को नहीं पहचानता है।^{२१} एक प्रसंग में निगुण के चार स्तरों का प्रतिपादन किया गया है—सोझा, पवन, निराकार और अचञ्च।^{२२} ऐसा प्रतीत होता है कि इन विस्लेषण के द्वारा ब्रह्म की उत्तरोत्तर सूक्ष्मता की ओर संकेत है। परमरूप निराकार से भी परे है। निराकार ब्रह्म तो मूर्धन्य ब्रह्म भी है; हिन्दु अचञ्च अपना परमरूप शब्द उभोठिरुकर है; योगियों द्वारा विस्लेषि-मात्र मान्य है।^{२३} ब्रह्म की सूक्ष्मता के प्रतिपादन की दृष्टि से उसे कहीं-कहीं सगुण और निगुण दोनों

- १ सरगुन निरगुन करो बिचारा ।
करो निरबेह धेनु बिदुधारा ॥
निरगुन सोइ बिजसै नहिं माई ।
अजर अमर वेह सुदुदाई ॥
सरगुन सो अचन में लागे ।
सुदु बिराग जाग सव साया ॥—हरिपासागर (पृ १ ८)
- २१ सगुन निगुन पर पह फल जग्या ।
सतगुर मल बिरहा सन पला ॥
निगुन नाम है पुर्ण निहार ।
सगुन सकल द्विज करो बिपारा ॥—श्यावरतन (पृ २८)
- २२ ग्यानि अहित भण लीनिड हैवा ।
दद बिदह यदि लाबई सवा ॥
नीबहुँ सत पुर्ण नद जतरा ।
धन्य भाग सत पंथ पत्राता ॥—श्यावरतन (पृ २२३)
- २३ एक निगुन सोइता है भई ।
श्यानीजन सुयो अरपाई ॥
दोपरा निगुन परन कदाही ।
बद अगम बोर धन्य ना पावै ॥—मन्दिरेणु (पृ ३ ५)
- २४ एक निगुन बाजता है माई ।
श्यानीजन सुयो अरपाई ॥
दोपरा निगुन परन कदाही ।
बद अगम बोर धन्य ना पावै ॥
लीनर निगुन है निरकारा ॥
जाहे अत्र सकल सरगारा ॥
कीया निगुन अचन है मान्य ॥
जई अत्रा जानि जराई ॥—मन्दिरेणु (पृ ३ ५)

से पर बनाया गया है। उपनिषदों में जो ब्रह्म के 'परब्रह्म' की भावना व्यक्त की गई है उसका स्पष्ट प्रमाण हम स्वप्ने में खोज पाते हैं।^{१५} शंकराचार्य ने ब्रह्म की परिभाषा इस रूप में की है—'अज्ञान' के कारण 'अनिर्बन्धीय' माना है। निर्गुण्य आर सगुण्य दोनों से पर ब्रह्म की कल्पना शंकराचार्य के अनुसार 'अनिर्बन्धीय' कल्पना से मिलती-जुलती है। इस प्रकार की कल्पना से स्वप्न की अनुभूति व्यक्त होती है।^{१६} दरिया-सन्ध्यावृत्ति के पृष्ठों में परब्रह्म को चित्रित करने के लिए स्वप्न के साथ एक और शब्द बाहुल्य से मिलता है, और वह है—'विद्या'। इस कारण शब्द का तात्पर्य हुआ—'अज्ञान' ही है, 'विद्या' शब्द का भी प्रयोग स्वप्न के विशेषण के रूप में हुआ है।^{१७}

अब निर्गुण ब्रह्म के स्वप्न का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है, उसी प्राप्ति के लिए प्रेम अथवा भक्ति, भक्ति और ज्ञान इन तीनों की आवश्यकता है। बिना प्रेम की भक्ति नहीं हो सकती और बिना भक्ति के ज्ञान नहीं हो सकता।^{१८} अतः तत्त्व-गोपनीय गुणधर्मज्ञान न मान और भक्ति दोनों के सम्बन्ध की इतना प्रतिपादन की है, उनी प्रकार दरिया ने भी दोनों का समान महत्त्व बताया है।^{१९} भक्ति के साथ मान-सम्बन्ध भी सम्मिलित है। दरिया ने सतनाम के जन्म और उत्पत्ति करने का उपाय बताया है। दरिया-व्यय का शास्त्र-महात्मा जो एक रूप से मिलते हैं वह 'प्रणम अथवा 'गन्धर्व' के स्थान पर 'मन्त्र' कहकर अभिराज्य करते हैं।^{२०} यहाँ कन्धर्व दरिया ने अज्ञान विरहित अर्थ में अपने प्रश्नों में ज्ञान शब्द का प्रयोग किया उसका संक्षिप्त निरर्थक अपेक्षित है।

सामान्यतः ज्ञान का तात्पर्य शास्त्रीय प्राप्ति से है। किन्तु सन्तमन में शास्त्रीय प्राप्ति का कोई भी महत्त्व नहीं है। कबीर ने प्रारम्भ में ही कहा था कि 'कोभी पढ़ि-लिखि जग मुखा परिपन्न मया न होय। यही नहीं कि सन्त-मन के अनुभावियों के लिए वेद-शास्त्रों का निरा ज्ञान निरर्थक है, अतः इष्ट-प्राप्ति में वह

१५. त्रिगुण सगुण दोनों से ब्रह्मा।

सत्य रूप कोण विमल सुपारा ॥—दरियासागर (पृ० १०१)

१६. परब्रह्म अनुभव गुरति सुरमे।—दरियासागर (पृ० १०१)

१७. विद्यामति किन्तु परति न आई।

ग्यानी बधि बधि जन्म ना पाई ॥—मन्दिदनु (पृ० १११)

१८. बिना प्रेम नहीं भक्ति विषया।

होय प्रेम यह गुरगति पैया ॥

— — —

प्रेम सीखि गहि गौठ समाधि।

करे भक्ति निरु प्रेम सो पाये ॥—मन्दिदनु (पृ० १११)

१९. ज्ञान भक्ति किन्तु सार है सुनो ध्यान चित साध।

बिधि बिधि बिनाज एह भय धनु रंराण ॥—मन्दिदनु (पृ० १००)

अथवा

निरमल ज्ञान बिचारतु भक्ति करतु ज्ञान साध।

पद्य सरम सतगुर सेवा, चाबागमन मयाए ॥—मन्दिदनु (पृ० १०१)

२०. भक्ति करो सतनाम से, सेवि सकल धर्म भाष।

मिप्या जग जग जग है, फिरि एग सेनो नाथ ॥—मन्दिदनु (पृ० १००)

और नियुक्त का संज्ञक किया है। बहुत सन्ने प्रसंगों में उन्हें राम, कृष्ण, शिव पार्वती आदि देवी-देवताओं के पौराणिक कथानकों की बजा कर ही उनपर हीरे प्रयोज्य किये हैं और उनके उपासकों की निन्दा की है। सगुण भगवान् को मानना उन्हें धर्म में बाधना है; उनकी सर्वशक्तिमत्ता सर्वभालक्षणा आदि विशेषताओं को निरास्य करना है।^{११} नियुक्त सगुण नहीं हो सकता और सगुण नियुक्त नहीं हो सकता। गणेशः सगुण्य भयस्य परमप्र नियुक्त है, और सभी अन्य चीज सगुण्य हैं। उनमें तार्किक संदेह है।^{१२} भारत में शत्रु विन्दु, महेश को भगवान् मानकर, पूजा होती है, किन्तु दरिद्रों के अनुसार इन देवताओं ने भी सगुण्य को नहीं परपाता है।^{१३} एक प्रसंग में नियुक्त के बार लोगों का प्रतिपादन किया गया है—बोका; पवन; निगाहार और गवस।^{१४} ऐसा प्रतीत होता है कि इस विरलेपण के द्वारा शत्रु की उत्तरोत्तर धूमना की श्रेय संकेत है। परमप्र निराकार से भी परे है। निराकार शत्रु तो शक्तिशाली भी है; किन्तु सबन भयस्य परमप्र शत्रु उदात्तशत्रु है; योगियों द्वारा विष्णुचिन्ता भाग मात्र है।^{१५} शत्रु की प्रथमा के प्रतिशरण की दृष्टि से उसे कहीं-कहीं सगुण और नियुक्त दोनों

- १ सगुण निरगुण करो विचारा ।
करो विरलेप वेद निरधारा ॥
निरगुण साह विमरी माई माई ।
शत्रु शत्रु दह भुगवर्ग ॥
सगुण जो बचन में साया ।
सुत विराग जाग सब जाया ॥—दरिद्रासारा (पृ १८)
- २१ सगुण नियुक्त कर यह फल लेया ।
सगुण यत विरला जन वेया ॥
नियुक्त नाम है पुण्य निगार ।
सगुण मकर द्विज करो विचारा ॥—ग्यावरतन (पृ २८)
- २२ ग्राहि यद्विज भग हीगिउ दया ।
दह विमद कदि साकई सया ॥
तीरुं सत पुण्य नई जया ।
धन्य भाग सन पंच बलाया ॥—ग्यावरतन (पृ० २४३)
- २३ एक नियुक्त पाधता है मई ।
ग्यानी जन पूज्य शरपाई ॥
दोमरा नियुक्त परत पहापी ।
बह धगम श्रेय दया ना पावै ॥—मन्दिरेतु (पृ० ३५)
- २४ एक नियुक्त बोधता है माई ।
श्यानीजक पूज्य शरपाई ॥
दोमरा नियुक्त परत कनदी ।
बह धगम श्रेय दया न पावै ॥
लोगर नियुक्त न विरधारा ॥
जाके भद्र गहन सापारा ॥
गया नियुक्त बचन है माई ॥
जहर्षा शररा जानि जयाई ॥—मन्दिरेतु (पृ० ३५)

से परे बताया गया है। उपनिषदों में जो ब्रह्म के 'परालम्ब' की मानना व्यक्त की गई है उसका स्पष्ट प्रमाण इन स्वतंत्रों में खोजा जाता है।^{१५} शंकराचार्य ने ब्रह्म की परिभाषा करते हुए उसे सत् और अक्षर दोनों के कारण 'अनिर्बन्धीय' माना है। निरुण्य आर स्युण्य दोनों से परे ब्रह्म की कल्पना शंकराचार्य के उपर्युक्त 'अनिर्बन्धीय' कल्पना से मिलती-जुलती है। इस प्रकार की कल्पना ही सत्युक्त की अनुपमता व्यक्त होती है।^{१६} दरिया-गंगा-दी के पृथ्वी में परमता को रोहित करने के लिए सत्युक्त के साथ एक और शब्द बाहुल्य से मिलता है, और वह है—'विश्व'। इस शब्द का तात्पर्य हुआ—अन्योन। इसीलिए, 'विश्वमति' शब्द का भी प्रयोग सत्युक्त के विशेषण के रूप में हुआ है।^{१७}

शिव निरुण्य ब्रह्म के स्वरूप का संक्षिप्त विवरण दिया गया है उसकी प्राप्ति के लिए प्रेम तथा भक्ति, मति और ज्ञान इन तीनों की आवश्यकता है। बिना प्रेम की भक्ति नहीं हो सकती और बिना भक्ति के ज्ञान नहीं हो सकता।^{१८} शिव तत्त्व गोस्वामी तुलसीदास ने ज्ञान और भक्ति दोनों के सम्बन्ध की इतना प्रतिपादन की है, उन्हीं प्रकार दरिया ने भी दोनों का उमान महारव बनजाया है।^{१९} भक्ति के साथ ज्ञान-प्रकाश भी सम्मिलित है। दरिया ने 'सतनाम' के जपने और उपचारण करने का उपदेश दिया है। दरिया-गंग के साथ-साथ ही एक दूसरे से मिलते हैं, सब 'प्रणाम' शब्दों 'मस्तके' के स्थान पर 'सतनाम' कहकर अभिवादन करते हैं। यहाँ सत्युक्ति दरिया ने शिव विशिष्ट मर्म में अपने प्रश्नों में ज्ञान शब्द का प्रयोग किया उद्योग संक्षिप्त निदर्शन अपेक्षित है।

मानव्यता ज्ञान का तात्पर्य शास्त्रीय प्राप्ति से है। किन्तु सन्तमत्त में शास्त्रीय पाठित्व का कोई भी महत्त्व नहीं है। कीर ने प्रारम्भ में ही कहा था कि 'वैषी पति-पति जग मुझा परिश्रम मया न करेय।' यही नहीं कि सन्त-मत्त के अनुयायियों के लिए वेद-शास्त्रों का निरा ज्ञान निरर्थक है, अतः इष्ट-प्राप्ति में वह

१५. निरगुण सरगुण दोनों तै म्यारा।

सरर रूप बोप बिमल सुपारा ॥—दरियासागर (पृ० १०१)

१६. सत्यु अनुपम सुरति सुरसे।—दरियासागर (पृ० १०१)

१७. वैश्वमति किनु करति न जाई।

ग्यानी कधि कधि कस्त ना पाई ॥—भक्तिरेतु (पृ० ३११)

१८. बिना प्रेम बहि भक्ति विवेका।

दोष प्रेम ण्ड गुरगति परा ॥

— — — — —

प्रेम प्रीति गहि गॉन लगावे।

करे भक्ति निष्ठ प्रेम सो पावे ॥—भक्तिरेतु (पृ० ३६३)

१९. ग्यान भक्ति निष्ठ सार है सुनो खरत बिन साण।

बिनि बिनि बिल्यान ण्ड मद्र अनूप देणण ॥—भक्तिरेतु (पृ० २००)

अथवा

निरमल ग्यान विचारहु, भक्ति करहु सब साए।

मल सरत सतगुर सेवा, चाबागमन मेटाए ॥—भक्तिरेतु (पृ० ३०३)

२०. प्रीति करो सतनाम न, सेबि सकल मर्म भाष।

मिप्या जग जग जानु है, किरि पग वेसो नाव ॥—भक्तिरेतु (पृ० २८०)

बाध भी है। वास्तव्य दार्शनिक बर्मों (Bergson) ने चर्क-चैतन्य (Intelligence) और अन्तर्लुम्बि (Intention) का विरलेपण करते हुए अन्तर्लुम्बि को मन्त्र-वचन्य से ऊँचा बतलाया है। इन्का कारण है कि चर्क मन्त्रा प्रियेन्द्रिक होता है, वह पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष की द्विविधा से अन्ते को मुक्त नहीं कर सकता। किन्तु अन्तर्लुम्बि चर्क के परे की उन्मत्ता है, जिसमें साधक को उन्नत साधना, वस्तुसा एवं अन्तर्गत के बन् से 'निष्पत्ति की अ अकिञ्च शक्ति प्रदान होती है। वह मानों सूर्य के समान आत्मप्रकाशिता है। उसमें द्विविधा और साधेद का अन्तर्गत नहीं है। सन्तो का ज्ञान वस्तुतः यही दिव्यदृष्टि वाक्का अन्तर्लुम्बि है। इन्का सम्बन्ध हृदय से है, न कि मस्तिष्क से। सन्त हरिया ने मेद (सन्ध्य) और 'वे का अन्तर प्रतिपादित करत हुए कहा है कि जो मेव जानना चाहे उसके स्त्रिय उचित है कि वेद मून जाय।" यो गे परिहर्तो और मीचियों की ओर भक्ति करते हुए परिवाने कहा है कि वेद और ज्ञान के पक्षे में इन ल्यों न समल प्राप्तिमें को चँगा रखा है, चर्ककायक के नाम पर वे ज्ञान यन्त्राओं और यन्त्रों को चोखा करते हैं 'पर इन्क-अर्कम करके अन्ते स्वार्थ की निधि करते हैं।"

अन्तर्क सन्तो को पक्षय परिणत हो जाना सुमम है किन्तु लक्ष्य अन्तर्लुम्बि ज्ञान प्राप्त करना न केवल सम्भवता न है बल्कि कष्ट-साध्य भी। साध्य ज्ञान का मार्ग पर चलना मानों लक्ष्यार की चार पर चलना है। इसमें अन्तर्क अर्थिक मीच-निश्चय की आवश्यकता है।" सन्त हरिया के वीम सन्तो में वृद्ध के नाम से ज्ञान शर दे—अन्तर्कान रजानदीक, ज्ञानमून ज्ञानरजन ज्ञानसरोवै और निरन्म्यान। इससे स्पष्ट है कि दिव्य दृष्टि द्वारा मन्त्र ज्ञान की प्राप्ति और अन्तर्गत से साधकहर हरिया की माय-नारा का संयम-विन्दु है। ज्ञान के अर्थिक मक्ति, प्रेम और विवेक को भी उन्नति अन्तर्क महत्त्व दिया है। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि वाक्क पक्षय सन्त के हृदय में पहले प्रेम के 'बाई अन्तर्क' का समावेश जाना चाहिए। प्रेम के उन्त से मक्ति का मानवगत उमडेगा और उसमें विवेक के अन्तर्क वि-निधि। इन्की कननों में ज्ञान के उन्त मन्तर्क की दृष्टि होनी जिसके मादक धारम से सन्तर्क परमानन्द में विचार हो परम मन्त्र में मीन हो जावेगे।

अन्तर्क विगुणालीन है, किन्तु दृष्टि विगुण-निष्ठित है। इस दृष्टि की उत्पत्ति कसे हुई, इसके सम्बन्ध में हरिया ने अनेक सन्तो में विन्तु विवरण दिये हैं। उपनिषदों में यह बताया गया है कि दृष्टि के पूर्व एम्मान गन् भयसा अर्क मन्त्र का। उसके हृदय में एम्त्र से बहुत्व में परिष्कृत होन की इन्का हुई (नरैक्या पदु स्यामू प्रकायेन)। दृष्टि के पूर्व में एम्मान मन्त्र का ईन्तर की स्थिति और उसके मन में दृष्टि-मन्त्र की इन्का की मानना प्राय सभी परमन्त्रों में किन्ती-कन्किणी रूप में विद्यमान है। हरिया ने कहाता की है कि इन विगुणालीनका दृष्टि के परत एम्मान अन्तर्क परमानन्द में मन्त्र अन्तर्कका

- ३१ वीपी पतरा गीता सान्द्रु।
भद नदी तप वेद मुसायु ॥—हरियाभागर (पृ ७०)
- ३२ वेद किञ्च दुह कंद पसारा।
पदि कंद सई जीप पंचारा ॥
धोना हेई जीप सप रावा।
कसम अनेग वेद जो भागा ॥—मन्त्रविवेक (पृ ३४५)
- ३३ ज्ञान के मगु पगु पर न कोई।
धार किताब विपुन अति होई ॥
अगम अयाह याह किमि पाये।—ग्यावरतन (पृ० १९८)

कालोक्त में विपन्न रहा था। उस समय कर्ता और नियन्ता का भेद नहीं था, उस समय बैर-धाम नहीं थे; धूम्री नहीं थी; भाङ्गा नहीं था; महेश गणेश, सूर्य चन्द्र, तारे नहीं थे; इन्द्र भादि देवता नहीं थे क्या, धर्म, यज्ञ मोक्ष, अन्न आदि कर्म-कृत्य नहीं थे; न तो उत्पत्ति का प्रथम वा न प्रथम का। तीनों गुरु ज्ञानी साम्यावस्था में थे। इसी स्थिति में सत्युक्त के जित में बौद्ध का मन्दन हुआ और उन्होंने छवि की उत्पत्ति करली गयी।^{१४} इसी प्रथम में उन्होंने एक पुत्र और एक नारी को जन्म दिया। यह पुत्र निरंजन अथवा मन नाम से प्रसिद्ध हुआ और नारी माया अथवा कामिनी के नाम से विख्यात हुई। समस्त ब्रह्म-बुधमय विष्णु इन्हीं मन और माया के संयोग से प्रपञ्च हुआ। किन्तु इन विदेव करते हैं और भगवान् के रूप में त्रिमूर्ति उपासना करते हैं, वे सभी और ब्रह्माणी सभी पार्वणी भादि उनकी परितोषों मन रूप निरंजन आर माया रूप कामिनी के परस्पर प्रसंग के ही परिणाम हैं।^{१५} निरंजन को कहीं-कहीं धाम भी कहा गया है; क्योंकि वह बने-से-पडे शक्तिशालियों का भी गर्भ पूर्ण कर देता है।^{१६} राम, हनुमत् शिव आदि जो विपन्न-राजता में जित हुए और अनेकानन्द संष्ट छोड़े, उसके मूल में है मन और माया का परस्पर मिलन।^{१७} कामिनी कलाप-ग्राह्य कनक भी माया का प्रथम प्रतीक है। सांसारिक जन इन दोनों के बीच में उलझकर पतन करते हैं।^{१८} कामिनी और ब्रह्म के छविक छेद में हम भविष्य में जाननाही वाक्य शक्तियों का उची तरह मूल जाते हैं, जिन तरह चिक के यहाँ बैठा हुआ बहुरा प्रेम से पान-दाता गाता है और यह नहीं जानता कि कुत्र ही जलों में निर्यवना से उगरी हवा का ही जादवी।^{१९} ध्रम में रौत हुआ मनुष्य इसी में उपाये हुए जावन के उमान दस्य होना पटना है और यद्यपि वे गरम-गरम भाव निकलती रहती है, जो उसे कामातुर बनाय रही है।^{२०}

- १४ धम किन्तु उत्पत्ति काम को, पित जेतनि चित्त पीण्ड ।
गारि पुत्रं रम रंग में, इहं किन्तु इहया र्कण्ड ०—दरियासागर (१० ६६)
मायात्म्य कामिनि जो पीण्डा, अररमुनी छवि धके हीण्डा ।
- १५ हेमन्त च निरंजन अनेक, सोम-सोम सागर सुग संवेद ॥—दरियासागर (१० ६६)
- १६ १५ कामिनि ने भी परगना, अथवा मनमन मान धर्मगा ।
तेदि महं तीव्र दस मन भयउ, महा विष्णु म सर कण्ड ०—दरियासागर (१० ६६)
- १७ मन की ममिता फल है, करन करावी जगति ।
और मित्राई गरद में, रावन की भद्र हानि ॥—दरियासागर (१० ७०)
- १८ वेन कित्त जगण भरमार् ।

- वेन संहर जोग मम कारी ।
उपति विनमि देद मर घाही ॥—दरियासागर (१० ७०)
- १९ पृथो पञ्च भामिन गोका ।
कामिनि कण्ड महा मद्र शांका ०—दरियासागर (१० १०४)
- २० वेग पीक धर्मों प्रतिपाला ।
बहुत जतन की पीण्ड मेहामा ॥
स्वार्थ स्वार्थ जानि दे माती ।
पदि जिये धर्म करे रणगाती ॥—दरियासागर (१० १०५)
- २१ वेग हरिवा अरहन र्कण्ड ।
जानि शक्या धर्म करि सीजे ॥
जानी धर्म धार जो धारी ।
कामिनी रोग काम का चारी ०—नद बिदेक (१० १०५)

श्रेय होम मद्र मोह भादि सभी बिचार मन और माया के संग से उपजते हैं। तब और उसका भगनी प्रतिमा देखकर सबसे लज्जा कुतो का शीशे के मझान में भूँक-भूँककर मरना, स्या का अस्फी नाभि में उपस्थित कस्तूरी की खोत्र में लज्जना पर्यंग का दीपक का चकर कपटते-कपटते उसमें कत जामा और का कमत क छुट्ट में बँधना सुमे का सेमठ के फूल को लाठ फल समझकर बोंब मारना, भादि खतरा ख्यात को भारतीय कविनों ने माया के निपटारन में दिये हैं, उन्हें संत दरिया ने भी प्रबुद्ध किया है। त्रिप तरह रागाव बेबनेशही 'कन्यारी लोप्ये' को निताहर मानत कर बेटी है, लसी तरह माया ने भी खीद को कर रखा है।^{११} माया-संपुञ्ज मन अनादि काउ से भगना जात बिहाये है, और अमन्त कल तक मुद्र, नर मुनिनों को नाब नबाता रहेगा।^{१२} मन की अलिशामी प्रकृता को धोखित करने के लख से कहीं-कहीं दरिया ने 'मन परमेसर मन है राजा' छरर पंक्तिमें लिखी हैं। मन और माया को बरा करना और उनके वाउ से अने को मुञ्ज करना यह संत जीवन का जरम लक्ष्य है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योग-साधन आवश्यक है। दरिया के अनुसार योग दो प्रकार का होता है—(क) शिरीलक योग और (ख) विहगम योग। हमारे शब्दों में शिरीलक योग को इन्द्रयोग भी कहते हैं। संक्षेप में इस योग की प्रक्रिया यह है कि गूढाकार-स्थित कुण्डलिनी को अगाधित किया जाव किसे वह सुषुम्णा-मार्ग से ऊपर उठकर शीघ्र पौन पश्ये (स्वापिदान मणिपुर, मनहल विद्युद और आह्ला) का मेदन करते हुए उदरदत कल्पन में विधीन हो जाय। तांकिसे के अनुसार कुण्डलिनी प्राप्ति का प्रतीक है और उदरदत कल्पन ईश्वर या ब्रह्म का। कुण्डलिनी का उदरदत कमत में विनयन मानो प्रकृति के कल्पन से मुञ्ज होकर आत्मा का परमात्मा में विधीन होना है, जिसे मोक्ष या निराण कहते हैं। इन्द्रयोग के सम्बन्ध में आसन प्राणायाम मुद्रा भादि ऐसी प्रक्रियाएँ हैं, जिनका प्रयोग आवश्यक है।^{१३} इन प्रक्रियाओं का सम्बन्ध बहुत कुछ शरीर के निर्विकल से है। अतः इस परमानन्द की को प्राप्ति होती है, वह ल्पामी नहीं जाती। इसके निपटीत विहंगम, योग का सम्बन्ध शरीर के विरम माग से न होकर अरदन से ऊपर ब्रह्माण्ड माय से है। इसके अनुसार भाव्या की मुद्रा (अन्तरादि) मेत्र के अउदल-अन्त-स्थित सुषीद्वार बावना 'अमन्त होकर ब्रह्मांड में प्रवेश करती है; फिर वह दगा सिगाव और सुषुम्णा की विधेयी में मग्नन करते हुए उदरदत कमत से होकर बंक्रान्त के द्वारा बगरी हुई 'भैरव-गुहा में प्रविष्ट होती है, जिनमें अनाहत माह गुणवमन रहता है और अनात्रे लख-सी विप्लान रहते हैं तथा अदुम सुगन्धि छाई रहती है। इसकी प्राप्ति योगी को दिव्य छवि हाग होती है। भैरव-गुहा से भी ऊपर वह अवर्खनीय लोक है जहाँ निराकार अक्षुरम निराकमान रहता है, इसे दरिया ने 'अह्न लोक 'अताप' अमर क्यपी भाकि नाम दिये हैं। उन्नेने शिरीलक योग या इन्द्रयोग को उरख स्थान इण्डित् नदी दिया है कि इगनी सिद्धि लपी प्रकर लुण्डि होती है, त्रिण तरह एक लोपी वेद क ऊपर पावर मधुर फल का लसी तक भास्वारन करती है, अकतक कायंखान नदी होना। क्योकि रात्रि होत ही निगम होकर वह वेद से नीच उतर जाती है। इसके

११ बृह संतार माया कलपारी।

भद्र मताप मरम करि बारी ॥—स्वान्तरोरी (पृ० २५०)

१२ एद मन भादि का त कति चा है।

कल मन मूर मुनि बाच नकारी ॥—दरियासागर (पृ० १११)

१३ इन बिचनों का विवरण विवरण दरिया-प्रम्यावली, लख एक के अष्टम परिचय में गिय।

निरालिङ्ग किल तरह से एक पक्षी जास्य में उपा रहता है भाग मनमान हर से फलों का आस्वादन कर किं
 आद्य में उड जाता है और उसक आस्वादन की निरतरता में कोई व्यवधान नहीं होता उची तरह 'सुरति
 योग' 'छद्म योग' अथवा 'विहगम योग' का साधक निरंतर परमानन्द का आस्वादन करता है।^{४४} विहगम
 योग के सम्बन्ध में निरलिङ्ग, सुरति, सूर्य, चन्द्र इत्यादि, मिता, सुषुम्णा विकेरी, पृथ्वी अष्टदल अमल; नव
 द्वार, इरम द्वार, पंचतन्त्र; अना गिनन; चार अरुणा (आप्त, स्वप्न सुषुप्ति तुरीय) तीन गुण आदि
 ऐसे परिभाषिक शब्द हैं जिनका व्यावहारिक ज्ञान अपेक्षित है।^{४५} म्यानसरोद्दे नामक ग्रन्थ में इडा, फिन्ता
 आदि तीनों स्वरों पर आप्त एक विस्तृत प्रक्रिया-विज्ञान का विवरण है जिसमें यह प्रतिपादित किया
 गया है कि स्वर की सिद्धि और ट्रीक-ट्रीक पद्धत से संतुलन एवं तरह की भविष्यवाणी करने में समर्थ
 होते हैं। योगी के लिए मरने के बाद मोक्ष की प्राप्ति हो, यह बात नहीं है। उसे तो इनी जीवन में
 अपने ज्ञान की प्राप्ति के द्वारा मुक्ति मिल सकती है। इमी बात का संकेत करते हुए हरिमा ने कहा है कि
 मरना भी पदिसे मरि रहह।

त्रिय योग की पद्धति की गतिन चर्चा की गई, स्पष्ट है, यह अत्यन्त सूक्ष्म है और उसमें प्रवेश
 करने के लिए अत्यन्त साधक अथवा 'कृत्तुर' की आवश्यकता है। यही कारण है कि 'कृत्तुर और
 'राज्य' की अवलोकन में अतिशयिनी महता है।^{४६} ज्ञान गुण के लिए हींकिन शिष्य को सर्वस्य समर्पित कर

- ४४ अरम जोग जग जीमी चदह,
 चदि विपीसक धरि मय चदई ।
 बीहगम चदि गयेउ अक्रामा
 वैठि गगन चदि इसु लमासा ।—हरियासागर (५० १०३)
- ४५ तार पवन औ बीहुद मंग, हीअै ग्यान पिचारि ।
 दुबो चक अष्टदल केवल अरम फल सम मारि ॥—हरियासागर (५० ७३)
 पुन,
 चारि अरम्या तीन गुन, पंच तंगु ई मार ।
 प्रेम तस तुरि चारिई, मये प्रम उत्रिपारि ॥—हरियासागर (५० १०८)
- पुन
 काया परचये मूल अब पावै सतगुरु मिले तव सद्द क्रापायै ।
 —हरियासागर (५० ७३)
- पुन
 तन मारव मन हेसु रिचारि
 कामे साता तीन सुपाती ।—हरियासागर (५० १०८)
- ४६ विनु सतगुरु को भेद दतायै ।
 गुपत यह प्रग विचारै ॥—अद्वैत (५० २८४)
 पुन
 बिना शब्द नदि दोए उत्रिपारा ।
 बिन सतगुरु नदि उतरे पारा ॥—हरियासागर (५० ७३)
 पुन
 सतगुरु ग्यान होपक अब धेते,
 बसु अनुरम सुरति सुरते ॥—हरियासागर (५० १०१)

बेना चाहिए क्योंकि गुण सादास्य परमेस्वर है।^{५०} गुण इन मन्-विन्दु में हवती हुई नौघ पर आकर व्यक्ति के लिए कर्णधार के मन्त्र है।^{५८} इस सम्बन्ध में हमें स्मरण रहना चाहिए कि छद्मगुण के लिए द्वितीय प्रातिश्लेष का होना आवश्यक नहीं है। गन्ध पृथिवी तो गुण के सम्बन्ध में जो प्रातिश्लेष की जोड़ बना है वह पाप का भावी बनता है।^{५९} मद्गुण का महत्त्वपूर्ण स्थान सृष्टि करने की दृष्टि से दरिवा ने अपने नियुक्त मन की सगुण मा भी कहा है। अन्वय 'मन्त्रमन्त्र' 'सगुणमन्त्र' आदि का भी उल्लेख है।^{६०}

३ आचार-व्यवहार

दरिवा-यंत्र में आचार-व्यवहार के कुछ सिद्धान्तों का उल्लेख पावन आवश्यक है। इनमें मुख्य हैं—
 छद्मधारिता और निरुद्धता आदिगा मन्त्रादि परिहार इन्द्रिय-निरोध निरुद्धता स्वयमारोपित निर्वन्दता और प्रातिश्लेष के मेद-भाज का परिष्कार। पथिकों द्वारा कर्त्तव्य को बन्दे आदि की बलि चढ़ाना दरिवा की दृष्टि में अपमान कथ्य है। चिन्ता पाप यन्त्रान को लगना है, उदता ही पाप पुरोहित को भी लगता है।^{६१} वे यह भी कहते हैं कि बन्दे की बलि चढ़ाना ध्वजा गात्र या सूत्र की बलि चढ़ाना शिष्टे दिव्य या मुगन्मान कर्मण पाप मानते हैं विश्रान्त्यन समान है।^{६२} कहीं-कहीं तो दरिवा ने पाचंडी ब्राह्मणों और वैश्यों पर बड़े ही तीव्र व्यंग्य कते हैं। वे एक स्थल पर कहते हैं कि स्वर्ग तो ब्राह्मण और वैश्य बना हुआ है, किन्तु पर में माहड भेदुरि (शाहू की) एते हुए है, जो भयंकर

- ४० गुण बर्द सापर नीत्रिष्टु,
 एन मन धरपयो सीस।
 गुण दिषो गुण देप है
 गुण सादस जगदीस ॥—व्याजमूल (पृ ३८०)
 - ४८ भयमें गु द्विषिष दिङ्गार जन यादिन गुक्तिन ताय।
 गुण सतगुण कनरिवा गवति वामै हाप ॥—दरिवासागर (पृ० ३८)
- पुन
- दरिवा मन जन धराम ह सतगुण करी बदाज।
 मारर हसा यनि के जाव करा मुयात्र ॥—दरिवासागर (पृ० ४९)
 - ४३ सतगुण जाति-यानि नदि लीये।
 जाति ज्ञानै रदि पावन हीरे ॥—दरिवासागर (पृ ४९)
 - ५० सतगुण कड़े मुग निवारा ॥—व्याजमूल (प० ३९०)
 - ५१ चापा पाव सादस्य क साता।
 राह रेणप करै जो पाता ॥—दरिवासागर (पृ० ४१)
 - ५२ मागु वड नृजा नदि हारै ॥—दरिवासागर (पृ० ४१)
- पुन
- कोप हिरनि कोप साप जो साई।
 कोड वड नृजा नदि भारै ॥—दरिवासागर (पृ० ४१)

मांसाहारिणी है।^{१५५} उसके स्पर्श-योग से वह कैसे बच सक्ता है। हिंसा के साथ-साथ मर्यादा-चेतन भी वर्जनीय है।^{१५६} यदि हिंसा श्रेय है, तो मनुज्य को ज्ञान-रूपी सुदृग लेकर काम-जोष आदि गङ्गिणारी शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध छेद बना चाहिए और उनका विनाश कर देना चाहिए। पवि और पपीस कर्षण, पञ्चगव्य और उद्येके प्रणव पर विजय प्राप्त कर लेनी चाहिए।^{१५७} इनी प्रश्नर यदि मर्यादा से प्रेम है तो सतनाम रूषी अमन मद का पान करना चाहिए और उसमें मत्त रहना चाहिए। संतो की मरुताला में सद्युष 'साधी' है, जो प्रेम का प्याला भर-भरकर मरुजन को पिलाता रहता है।^{१५८} जाति-श्रेणिके नाम पर भयना हिन्दू, मुसलमान आदि सम्प्रदाय के नाम पर जो भेद-भाव है, उसका तीव्र विरोध दरिया में ड्रिया पा। वे कहते हैं कि जब 'एक खोदनी एमे बनमावा', तब फिर हिन्दू-अथवा मुसलमान अथवा शूर आदि कृषिन भेद-भाव क्यों। सम्प्रदाय, जाति-श्रेणिके नाम पर अनेक भयने हो रहे हैं, उन्हें उन्हें 'नर' ठगैरी' या 'पाखर' बताया दे और यह घोषित किया है कि पाखर स प्रभु मिली न काहू। अन्धकार और पाखर के अन्धर निष्पुण ब्रह्म को सृष्ट्य मानकर उसकी मूर्तियाँ बनाकर पूजना और मूल आदि को माधना, उसे हुए गिरों को मूल करने के लिए शिष्ट बना रग-दिरगे कैप से सरह हृदय महों को प्रभावित कर दिम्पलत करना बिना आचरण को मुपारे रोषान्मात्र, तीर्थ-जन आदि में समय मष्ट करना-सभी सम्मिक्त हैं। उनका विचार है कि आश्रय एमी भक्त रहे हैं, पाहे हिन्दू-तों या मुसलमान।^{१५९}

४. काव्योत्कर्ष

संग्रहि दरिया के संक्षिप्त परिचय को पूर्णता प्रदान करने के लिए उनकी रचनाओं, अध्यायन विशेषताओं, भाषा एवं शैली का मूल्यांकन अथर्वित है। इसका कुछ विल्लूत विवरण दरिया-सम्बाधली के प्रथम खण्ड में दिया गया है। इस यहाँ निम्न-लेखनी करनी चाहिए।

- ५३ अपने ब्रह्मचर बिल्ली रोई।
 कर में साकट भेदरी मोई ॥
 मांसु गाय संग सुई काई।
 बाके मुष्ट सुम्भन गदि छाई ॥
- ५४ मति कर मूल निभै जनि बाक।—स्वानसरोरै (पृ० २५१)
 पुन
 निभै सारा मूल करि साई,
 भाकति मनि बहू तेई जाई।—स्वानसरोरै (पृ० २५२)
- ५५ स्वान शरण दिवकर गहो
 कामादिक भट मारि।
 पौब पचोसदि जीति के
 करम मरम सम मरि ॥—स्वानसरोरै (पृ० २५३)
- ५६ विघट्ट नाम मर चमत् करारा।
 रहु मस्त करगिह मतपारा ॥—स्वानसरोरै (पृ० २५४)
 पुनरथ
 माधी सतगुरु प्रेम विषासा।
 जो तेदि कायक तेदि तम दासा।—स्वानसरोरै (पृ० २५५)
- ५७ हिन्दू भूदक दुमों मुषाता।
 दुमों बादि बिबादि विमाना—हरियाणागर (पृ० ८१)

माया-विज्ञान-सम्बन्धी अनुभवान के लिए तो दरिया-प्रवाहनी में क्षन्त छात्रों की लगी है। यद्यपि उनके प्रश्नों की मुख्य भाषा अन्धी बनी जा सकती है, वैसे कि 'रामचरितमानस' में है, तथापि उसमें ब्रह्ममाया, छापी बोधी राक्षसानी मैमिटी, मन्त्री मोक्षपुरी आदि अनेकानेक मायाओं अपना बोलियों की विशेषताएँ यत्र-तत्र-वर्तन मिलती हैं। मोक्षपुरी का फुट तो बहुत अधिक है और वह स्वामाधिक भी है; क्योंकि सँग दरिया साहाबाद (जो मोक्षपुरी का गढ़ है) में आसिर्भूत हुए थे। उनकी रचनाओं में ऐसे शब्द और मुहावरे भरे पड़े हैं, जो मोक्षपुरी की विशिष्ट स्मृति बने जा सकते हैं। निर्दान-निमित्त कुछ पंक्तियों उद्धरण की जा रही हैं—

जो जो परे लयेट में, फटे टाग पुमाए ।

× × ×

अधिक लंगूर बहामा भारी ।

नर के पाग रोंड फी सारी ॥

× × ×

आगि लगाए शीन हुट्टुफारी ।

× × ×

मुह विरावहिं बेई बेई ठारी ।

× × ×

जिवा जोर पायी बड़ अरई ।

जोर लवार मवन मौ पारी ॥

× × ×

मौ मन सुह अरहिं पारी समुह ।

अन्धी रावन राम ही अमुह ॥

× × ×

हुम्बरए जगने गहिं बीया ।

× × ×

माया मन ही धमे नवावे ।

सौम प्यकि के पीर अंहवावे ॥

उपरोक्त में यह बड़ा जा राजा है कि काव्य के व्यापक आदर्श का पक्षन गृह्यार का गहन विमला कथा-बन्धु और काव्य-बन्धु का अत्यन्त प्रतिपादन रस-सम्बन्धित, अति-विमल रसों अथवा अति-विमलियों का जीवन वर्णन अन्धी का उत्कर्ष भाषा का शीघ्र और रचना की आदर्शक शैली—सभी उदियों से एक ही दरिया न केवल संत-गाथीस्य में, अति-उत्तम हिन्दी-गाथीस्य में छोड़ पूर्व बरेण्य पर के अतिमारी हैं।

विषय-सूची

	पृ० सं०
१ पूर्वपीठिका	७—२२
२ दरियासागर	१—११६
३ ग्यानरत्न	११७—२४५
४ ग्यानसरोई (ज्ञानस्वरोदय)	२४७—२७४
५ भक्तिहेतु	२७५—३२६
६ ब्रह्मनिबन्ध	३२७—३७२
७ ग्यानमूल	३७३—४०६

दरिया-ग्रन्थावली

[द्वितीय ग्रन्थ]

सतनाम

ग्रंथ दरियासागर माखल दरियासाहब
सतगुर बंदीखोर ईसउबारन मुक्तिदाता नाम निसान सही^१

साखी

ग्रंथ दरियासागर, मुक्ति भेद निजुसार ।^२

ओ जन सख्य दिवेकिया, सो जन उत्तरहि पार ॥१॥^३

बौपाई^४

प्रथमहि सतपद कीन्ह बखाना । परम प्रीति सहि स्रुती समाना ॥१॥^५

सतपद मनमो कीन्ह अनुसारा । लोक वेद त्यागेउ सम भाग ॥२॥^६

सोक वेद ईह हम सम जानी । केवल नाम निरतर आनी ॥३॥^७

गए गुमान काम जग त्यागा । प्रेम दखित निजु हिरद सागा ॥४॥

बद बिधी महि करउ बखाना । छप सोक साहब भसवाना ॥५॥^८

१ (क) सतनाम छत सुख्य दरिया साहेब सत बरग नाम निदान गर्भ दरिया सागर छत सुखीत साखी । (ग) कश्चित्त । (घ) सतनाम सुखीत दरिया साहब, ईस उबारन मुक्ति दाता नाम निसान सही । (ङ) वैशाख साहब सुखीत दरिया साहब गए दरिया सागर माखल ॥

२ (ग) कश्चित्त (मार्ग से छोड़ने से- १ तक) । (ङ) निजुसार = निजुसार ।

३ (ग) दिवेकिया = दिवेकिया । (घ) उत्तरहि = उत्तरे ।

४ (घ) (ग) (ङ) अपठित । (घ) पठित ।

५ (घ) (ग) प्रथमहि = प्रथमे । (ग) पठित । (ङ) कीन्ह = कीन्हा । (क) सही = सही ।

६ (क) समानो = समानो । (ङ) कीन्ह = कीन्हा । (घ) त्यागेउ = त्यागे । (ङ) त्यागेउ = त्यागे ।

७ (घ) (ग), (ङ) ईह = यह ।

८ (घ) (ङ) (क) महि = महि । (ङ) करउ = करी । (घ) करउ = करैउ । (ङ) करउ = करैउ । (क) साहब = साहब ।

माखी

तीनि लोक के ऊपर, (तहाँ) भ्रम शोक विस्तार ।
सत सुकित्त कविरा पावै, पहुँचै जाए करार ॥२॥^१

बौपाई

क्रिपार्थत क्रिपा अब कीन्हा । दयासेपु सुसधागर दीन्हा ॥६॥^१
मैं सामरथ नहि पूरा भ्याना । सत साहेब सभद निरवाना ॥७॥^२
घनतलोचन सम भ्यानी होई । भ्रम पुख कहि सकै न कोई ॥८॥^३
सत्तरि जुग जिन्हि नल में राखा । बहु कसे बरनी (सकै) कोइ भाखा ॥९॥^४
को कबिता पद पावै ऐसा । नाम सरुण बहु दरनी कखा ॥१०॥
उन्ह कर थप कखा महि जाई । मन में सकुच सग कछु भाई ॥११॥^५
नव सख करि जाके हूँ माभा । भादि धन्त सुकौतहि छाबा ॥१२॥^६
सकल थप महिमा उजियाय । प्रती रखा समद्विष्टि पसाय ॥१३॥^७
करि माहिं सकौ तिसक के बरना । सद्यमी थकित्त भई जेहि सरना ॥१४॥^८
(इह) सोचन वेद कखा नहि जाई । तनिक द्विष्टि सम पाप कटाई ॥१५॥^९
तनिक संकार जोति के ब्रिन्हा । तीनी शोक जोति रथि सीन्हा ॥१६॥
ताके कवि का करो बसाना । एक नाम निजु हिरवै भाना ॥१७॥^{१०}

१ (ख) (ग), (घ) उपरै = उपरे ।

२ (ख) पहुँचै = पहुँचे ।

३ (घ) क्रिपार्थत = संकित है ।

४ (घ) सामरथ = सामर्थ्य । (ख) (ग) (घ) — नदि = नादि । (घ) पूरा = पूर्ण ।

(घ) साहेब = साहब ।

५ (ख) (घ) (घ) पुख = थप । (ख) (घ) (घ) न = ना । (घ) कखा = कहे ।

६ (ग) सत्तरि जुग सदन मुख रखा । (घ) (घ) सत्तर जुग सदन मुखरखा ।

(घ) थोर = थो ।

७ (ख) (घ), (घ) नदि = नादि । (घ) (घ) लगी = लागे ।

८ (घ) जाके = जाके । (घ) सुकित्तहि = सुकित्तहि । (घ) सुकित्तहि = सुकित्त है ।

(घ) सुकित्तहि = सुकित्त इंदी ।

९ (ख) बरत रखा सम द्विष्टि पसाय । (घ) बरति रही सम द्विष्टि पसाय ।

१० (ख) करि थोके तिस के बरना । (घ) (घ) थरि भाई सचे तिसक के बरना ।

(घ) सद्यमनि परित मया देहि सर्ना । (घ) सद्यमनि परित भए वैहि सर्ना ।

(घ) सद्यमनि परित भए वैहि सर्ना ।

११ (घ), (घ), (घ) नदि = नादि ।

१२ (घ) ताके = ताके ।

भ्रनंत - नाम सकल बीराना । माया फंद सभ रहे भूलाना ॥१८॥^१

साली

१ एक सो भ्रनंत भयो, सो फुटि झर विस्तार ।^२

३ भंतहु केरी एन है, साहि सोत्रु नित्रु धार ॥३॥^३

घोपाई

जो तिहि ब्रह्मा बिस्तु प्रतिपाला । जोति रूप परि रहे गोपाला ॥१९॥^४

५ पुर्व ना होहि प्रापु भवतारा । जोति गढ़े सभ कष उपकारा ॥२०॥^५

जोति रूप जगत सभ घरद । जहां तहां दुस्टन्हि सभ दलई ॥२१॥^६

साली

जोतिहि ब्रह्मा बिस्तु हरीं, संकर जोगी ध्यात ।^७

सतपुर्व छप लोक हरीं, ताको सक्न जहान ॥४॥

घोपाई

रामे जोति भ्रजरि नहि कोई । फिमन रूप परे पुनि सोई ॥२२॥^८

९ प्रह्ला बिस्तु जोति भवतारा । पुर्व नाम कोए रग करारा ॥२३॥^९

१० छप लोक सहि हम चमि भाई । साहब कहा सख समुझई ॥२४॥^{१०}

११ दीन्ह बचन सन्द ना दागी । जगत माहु भयो भनुरागी ॥२५॥^{११}

१२ गरब वास जब दीन्ह भवतारा । जम भया देया संसार ॥२६॥^{१२}

१ (क) बीराना = बडपना । (ख) रह = रहे । (घ) भुलाना = भुलना ।

२ (घ) (घ), (क) एक सो भ्रनंत भयो ।

३ (घ) भंतहु केरि = भंतहु से परि ।

४ (घ) बिस्तु = बिस्त । (घ) रहे = रहा ।

५ (घ), (घ), (घ) गढ़े = गड़े ।

६ (घ) दुस्टन्हि = दुष्टन ।

(घ) दलई = दलदल ।

७ (घ) बिस्तु = बिस्त ।

८ (घ) घोपाई सं० १२ से ३३ तक ३८ और ३९ पृष्ठों के बीच में है । रामहि जो भ्रजरि नहि कोई । (घ) (क) रामे = रामे । (घ), (घ) भ्रजरि = भ्रजरि । (घ) (क) नहि = नहि । (घ) परे = परे । (क) परे = पर । (घ) पुनि = पुनि ।

९ (घ) बिस्तु = बिस्त । (घ) जोति = जोत ।

१० (घ) (क) साहब = साहब ।

११ (घ), दीन्ह = दीन्हो । (घ) भयो = भो ।

१२ (घ), (घ) (घ) वर = वर । (घ) (क) संसार = संसार ।

कछु दिन बानक रूप बनि गएऊ । किछु दिन सबर संसै महूँ खेऊ ॥२७॥^१
 किछु दिन माया मोहूँ बिसतारा । किछु दिन ममिता सभै हमारो ॥२८॥^२
 किछु दिन बीते भो सब म्याना । क्रिपा कीन्हूँ सठ साहब जाना ॥२९॥^३
 कीन्हूँ क्रिपा भति सीतलि बानी । प्रेम भगति सठ सुमिरन ठानी ॥३०॥^४
 मयो प्रेम निरसंक विचार । गुर गमि म्यान नाम निजु साय ॥३१॥
 तनिक सखप न कीन्हूँ अनुसारा । ब्रत तेज सभ सोक उजियारा ॥३२॥^५
 कहाँ सहि कहाँ नहा नहिँ जाई । म्यालदुस्ति मन देखु सगई ॥३३॥^६

धन

कोटि कामिनि और डारहि, कोटि किस्तन प्यारहीं ।^७
 कोटि ब्रह्मा वेद मतत, धनस बाना बाबहीं ॥^८
 जोतिमंडल कोटि कससा, हिरस की परगासहीं ।^९
 भसक भासनि सागु बहूँ प्रोर मोति मनि छवि छावहीं ॥१॥^{१०}

सौरठा

घोमा धगम प्रपार, हंस संसमुस पावहीं ।
 कोइ म्यानी करे विचार, प्रेम तंतु जाके बरै ॥१॥^{११}

सौपाई^{१२}

जम जामिम जग करे बेकार । पाबंड धरम करे संसार ॥३४॥^{१३}
 जव निजु भेद पाव जन जोई । साहि देखि बसा जम रोई ॥३५॥^{१४}

१ (घ) (प) (०) कछु = किछु । (क) (ब) (७) मपउ = मीउ । (८) रवेऊ = रवेउ ।

२ (७) सभै = सभ ।

३ (७) (७) भो = मयो । (ब) सी = मया ।

४ (घ) सीतल = सीतलि ।

५ (क) (ब) (७) ब्रत = ब्रते ।

६ (७) सहि = से । (७) लपस = लपस ।

७ (घ) (प) और = अब । (०) और = अवर । धारहीं = संभवतः धारहीं ।

८ (न) बाबा = बजा ।

९ (ग) (ब) (७) की = को । हिरस = हिरण्य (होना) ।

१० (८) बहूँ = बजु ।

११ (घ) करे = करही । (प) (७) — करे = करे । (न) (ग) (७) बसे = बसे ।

१२ (ख) (ग) (ब) (७) पन्नाप ।

१३ (घ) (ग) करे = कर । (प) बेघार = बिघार । (ब) बरम = बर्म । (क), (ग) करे ईशार = कर लपसात । (ब) करे संसार = करे सपसार ।

१४ (७) दारे = दये ।

चौदह चौकी जम के होई । विनु सतगुर नहि पहु के कोई ॥३६॥^१
 चौदह मंत्र भेद जो पावै । जाए छवलोक बहुरि नहि भाव ॥३७॥^२
 सामें सार सभ्य है एका । ताहि जानहु निजु काया बिलोका ॥३८॥^३
 काया परवै निजु कही बुझाई । गुर गमि ग्यान बुझो चित्तलाई ॥३९॥^४
 अष्टवल कवत रंग है सोई । मध्य बीच वेहि बोलता होई ॥४०॥^५
 अग्रनक्ष साहां बँठे जाई । तिस भरि चौकी बँलसै भाई ॥४१॥^६
 छत्र चक्र ताहां मनि उजियारा । अक्षर अक्षर ताहां ओति निजु सारा ॥४२॥^७
 छत्र चक्र ताहां परवै पाव । मूल चक्र दिङ्ग घासन साव ॥४३॥^८
 पांच तनु तहां देखु विसेखा । पल पल करहिं अनुपम मैला ॥४४॥^९
 सामें निरति मुरति की बानी । सामें निरतु माया की दानी ॥४५॥^{१०}
 पचिस प्रकृति तहं निरति कराई । दसो दिसा रहै सोए जाई ॥४६॥^{११}
 मूल सध्र मनि मानिक देखा । निरति करै तहां ताल विसेखा ॥४७॥^{१२}
 पचिस प्रकृति के भेद कहि दीजे । होए गुर ग्यान बुझि एह सोजे ॥४८॥^{१३}
 पचीस के एह कथा सुनाई । सामें सार पवन है भाई ॥४९॥^{१४}
 इगसा पिंगसा सुलमन नारी । सार पवन तहं कर पुनारी ॥५०॥^{१५}
 चौहि पवन पटचक्रहिं देखा । होए गुर ग्यान बुझै एह भेदा ॥५१॥^{१६}
 ता त्रिकुटी महं रखा सयाई । तहवां बाल सकै नहि जाई ॥५२॥^{१७}

१ (प) चौकी = चउकी । (घ), (ग), (घ) (ङ) के = के । (ख), (ग), (घ), (ङ) पछि = गदि । (घ), (ग), (ङ) पदुपै = पदुपे ।

२ (ङ) मंत्र = मंतर । (घ) जो = जो । (घ) जो = जेयो । (ख), (घ), (ङ) कहि = गदि ।

३ (घ) सार = सार । (ग) जानहु निजुकाया = जानहु काया ।

४ (ग) परवै = परवे । (ग) निजु = निज । (ख) (ग) (घ) (ङ) कही = कही ।

५ (ग) (ङ) कवत = कमल । (ग) (घ) (ङ) मध्य = मधि ।

६ (घ) बँठे = बँठ । (घ) चौकी = चउकी ।

७ (ग) छत्र = छत्रो । (ग) अक्षर = अक्षरे । (घ) निजुसारा = नजुसारा ।

८ (घ), (ग) छत्र = छत्रो । (घ) चक्र = चकर । (ङ) चक्र = चकर । (ग) परवै = परवे ।

९ (ग) (घ) निरति = निरति । (ग) (घ) (घ) दिसा = दिस ।

१० (ग) निरति = निरति । (ग), (घ), (ङ) करै = कर ।

११ (घ) सोजे = सोजे । (घ) सोजे = सोजे । (ग) बुझि = बुझि ।

१२ (ङ) (ङ) के = के ।

१३ (घ) पिंगसा = पिंगल । (घ) (ग) (घ), (घ) सुलमन = सुलमनि । (ग) करै = कर ।

१४ (घ) (ङ) देखा = गदि । (ग) बुझै = बुझै । (घ) बुझै = बुझि ।

१५ (घ), (ग), (घ) महं = मे । (घ), (घ), (घ) (घ) — अदि = गदि । (ग) — अदि = अदि ।

प्रथम। जपे सूर अंद प्यानी । दरिया गगन बरीस पानी ॥५३॥^१
अमित बुद तहां मरि भावै । पीयत हंसा भ्रमरपद पावै ॥५४॥^२

साक्षी

भमी तत्त पर अमित पिबै, देखो सुरति सगाए ।^३
बहुत मुक्त नहिं बनि भावै जो गति बाहु सखाए ॥५॥^४

बोपाई

नाम वान जव हिरद छागा । निकरि निरंतर सुरति जागा ॥५५॥^५
कोटि तिरप सहां जल परगासा । कोटि इन्दु भेष धन वासा ॥५६॥^६
कोटिन्हि सेज जोति परगासा । कोटिन्हि पढित वेद नेबासा ॥५७॥^७

सन्द

कोटि प्यानी ग्याल गावहीं सन्द बिना नहिं वाचहीं ।^८
सन्द सजीवन मूल ऐनक भ्रमपा बरल देखावहीं ॥
सल सन्द संतोख धरि धरि प्रम मंगल गावहीं ।^९
मिलहिं सतगुर सब पावहिं फिनि ना भवबस भानहीं ॥२॥^{१०}

सोरठा

ग्याल रतन की खानि, मनि मनिक मीपक बर ।^{११}
सन्द सजीवनि जानि, भ्रमरपुर अमित पीवहीं ॥२॥^{१२}

बोपाई

एव पवन जव गगन समाई । पीयत प्रम भ्रमर होए जाई ॥ ३८ ॥^{१३}

१ (ख) (ग) जपे = जपे । (घ) बरीसे = बरिझिगौ । (ग) बरीसे = बरीसे ।

२ (क) अमित = अमिरित । (ख) (ग) (घ) (ङ)—चौखत ईल भ्रमर पद पावै ।

३ (ब) अमित = अमित ।

४ (ख) (ब) (ङ) नहिं = नहिं । (घ), (ग), (घ) (ङ) जो = जो ।

५ (ख), (ग), (ङ) तिरपै = तिरपै । (घ), (ग), (ब), (ङ) निकरि = निकरि ।

६ (ख) तहां = तहां । (ग), (घ) (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्हि ।

७ (घ) नेबासा = वेद पर नबासा ।

८ (ग) ग्यानी ग्याल = ग्यानी ग्याल ग्याल । (ख) (ग), (ब) (ङ) नहिं = नहिं ।

९ (घ) सल = सल ।

१० (ङ) सतगुर = सतगुर । (ख), (घ), (ङ) फिनि = फिनि । (ग) फिनि = फुट्टी ।
(ग) भव = भव ।

११ (ख) (ग), (ब) (ङ) बरी = बरी ।

१२ (घ), (ब), (ङ) पीवहीं = पीवै । (ग) पीवहीं = पीव ।

१३ (ग) एव = एव । (ब) भ्रमर = भ्रमर ।

सत साहब दरियाहि समुझई । जाण छपसोक बहुरि नहि भाई ॥ ५९ ॥^१
 प्रेम पियाला पियै जन कोई । विना सोख का भीन्है सोई ॥ ६० ॥^२
 सकल जिवन ब्रह्म साए चोराई । जिह नहि नाम परम पद पाई ॥ ६१ ॥^३

साली

प्रेम प्रीति लगए कै, सत सख्य अघार ।^४
 सत विना नहि बाधिहौं, नर कोटिन्हि करै बेपार ॥ ६ ॥^५

चौपाई

सत सख्य विचारै जो कोई । अमय लोक सिधारै सोई ॥ ६२ ॥^६
 अमय निसान घुनी तह होई । अजर अमर पद पाव सोई ॥ ६३ ॥^७
 बहून सुनन किमि करि बनि भावै । सतनाम निजु परचै पावै ॥ ६४ ॥^८
 सीजै निरलि भेद निजु सारा । समुझि परै तव उतरै पारा ॥ ६५ ॥^९
 बचन बाई पावक महं जाई । ऐसो तन बहूँ बाहुहु भाई ॥ ६६ ॥^{१०}
 जो हीरा पत सई घनेरा । होए हिरंमर बहुरि न केरा ॥ ६७ ॥^{११}

- १ (ग) सत = सत्य । (ख), (घ), (ङ) दरियाहि = दरियाहि । (झ), (ग), (घ) (ङ) पदि = मदि ।
२. (ख), (घ), (ङ) पियाला = पिआला । (ग) पियाला = प्याला । (ङ) पियै = पिये । (ग) पियै = पीये । (ग) भीन्है = भीन्हे ।
- ३ (ग) (घ), (ङ) जीवन = जीवन् । (ख) परम = प्रेम । (ख) (ग) (घ) (ङ) जिन्ह = जिम्हि ।
- ४ (ङ) प्रीति = प्रीति । (ग) लगएकै = लगएके । (ख) (ग), (घ) सत = सते ।
५. (ग) विना नहि = विनाहि । (घ) (ग), (घ) (ङ) बाधिहौं = बाधिरौ । (ख) (ग), (घ), (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्हि । (घ), (ङ) करै = करे । (घ) (ग), (घ), (ङ) बेपार = बेपार ।
- ६ (ख), (घ) सतै = सत । (घ), (ङ) विचारै जो कोई = विचारै कोई । (ख), (ङ) विचारै जो कोई = विचारै कोई । (घ), (घ) (ङ) अमय = अमै । (ग) अमय = अमै । (ख) (ग) विचारै = विचारै । (घ) सोई = सोई ।
- ७ (घ) (ग) (घ) (ङ) तहै = तहा । (ग) पावै = पावे ।
- ८ (घ) करि = कर । (ग) पावै = पावे ।
- ९ (घ) (घ) परै = परे । (ख), (ग) उतरै = उतरे ।
- १० (घ), (ग) बाई = बावे । (ख) ऐसे तन के बाहुहु भाई । (ग), (घ) (ङ) ऐसो = ऐसे ।
- ११ (ङ) जो = जो । (ग), (ङ) जो = जेसो । (घ) सई = सहर । (ग) (घ), (घ) तहै = तहे । (ख) (घ) (ङ) न = ना ।

गई मूल तव निरमल धानी । दरिया दिन बिच भुरति समानी ॥ ६८ ॥^१
 पारस सख कहा समुझाई । सतगुर मिलै तव देहि देसाई ॥ ६९ ॥^२
 सतगुर सो जो सत बलाव । हृष बोधि छपसोक पठावै ॥ ७० ॥^३
 धर धर म्यान कर्षे विसतारा । सो नहि पट्टु पै लोक हमार ॥ ७१ ॥^४
 एक नाम प्रम सो सारै । संत साधु का दरसन पारै ॥ ७२ ॥^५
 पारै दरसन मुक्ति का मेधा । सुजस निरखि करै निजु सेवा ॥ ७३ ॥^६

साक्षी

सुमति चिन्है सो बाधरा, कुमति चिन्है सो पूर ।^७
 चिन्है विना जग जात है, बड़ मूरख ज्यों फूर ॥७४॥^८

चौपाई

घापे सांच सांच है सोई । भूठा भा जग जात बिगोई ॥७४॥^९
 सस पुर्स महिमा उजियारा । कोटिन्हि मूरख सिर पर धारा ॥७५॥^{१०}
 कोटिन्हि कामिनि निरति कराई । कोटिन्हि होरा सेज विछाई ॥७६॥^{११}
 ताहि साहब के धरन मनावौ । भेद निरखि निजु निरगुन गावौ ॥७७॥^{१२}
 जब छूटै यह जग के भटका । जम जगाति सम तव फटका ॥७८॥^{१३}

- १ (ख) (ग) प, (घ) गई = गहै । (ङ) समानी = समाला ।
 २ (क) सख = सखद । (ख), (ग) सतगुर मिलित बधि देसाई । (घ) सतगुर मिलै ते
 देहि देसाई । (ङ) सतगुर मिलै ही ते देहि देसाई ।
 ३ (ब) सो = सोर । (ख) छपसोक = छपक ।
 ४ (ग) कर्षे = कसे । (घ) पट्टुपै = पट्टुपे ।
 ५ (क) प्रेम = परेम । (ख) (ग) (ब) (घ) सो = लप । (ग) का = के ।
 ६ (घ) पारै = पारने । (ङ) सुजस = सुजसिक । (ख) मधा = मधै । (ग) (ब) (ङ)
 मेधा = भवा । (ग) करै = करे । (ख) सेवा = सेवे ।
 ७ (घ) चिन्है = चिहने । (ख) बाधरा = बाधर । (ख) कुमति = कुमत । (घ) चिन्है = चिहने ।
 ८ (घ) चिन्है = चिहने । (ख) (ग) (घ) (ङ) बड़ = बड़ । (ख) मूरख = मूरख ।
 (घ) मूरख = मूरख ।
 ९ (घ) (क) घापे = घापे । (ख), (घ) (ब) (ङ) घा = इया ।
 १० (क) पुर्स = पुर्ण । (ख) (ग) मूरख = मूरख ।
 ११ (ख), (घ) (घ) (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्हि । (घ) निरति = निरति ।
 (ख) (घ) (घ) (ङ) कोटिन्हि = कोटिन्हि ।
 १२ (ख) साहब = साहेब । (ख) (घ) (घ)मनावौ = गनावौ । (ग) निरगुन = नर गुन ।
 १३ (ख) (घ) (ङ) छूटै = छूटै । (घ), (ब) क = की । (घ) जम होए फटका ।
 (ख) मधे मेह करका । (घ) (ङ) करै करका ।

कैसे हंसा पहुंचे जाई । जम जगाति दुग है भाई ॥७६॥^१
जम जगाति दुर्ग बटवारा । मारि जीव सब करै भ्रष्टारा ॥८०॥^२
चौदह मंत्र बान संघाना । मारहु जम के पर निर्बाना ॥८१॥^३
चौदह मंत्र भेद बिस्तारा । एक सब ते हंस उवारा ॥८२॥^४
कामिनि कनक फंद जमजाता । चौदह बिन्दै करम का काना ॥८३॥^५
सीख सभ्य तुह करो विचारा । लोक बढ त्यागो सम भारा ॥८४॥^६
त्यागहु संत जमकर बंदा । समुक्ति परी सब भव जल फंदा ॥८५॥^७

साक्षी

दरिया सध विचारिये, सीनि भोक ते न्यार ।^८
गुर ते भरम जनि राखहु, मिर्वाहि सन्द निद्रु सार ॥८६॥^९

चौपाई

सतगुर जानि के बंधहु पाऊ । भरम त्यागि तव हिरदै साऊ ॥८६॥^{१०}
सतगुर से सुक्ति परे उह देसा । प्रेम सुखी जब पाठ सवेसा ॥८७॥^{११}
आदि मंत्र जी पूछे भाई । छपलोक कहीं समुझाई ॥८८॥^{१२}
राह देखाए दीड़ कइ ग्याना । जम के मान मरदि घर ध्याना ॥८९॥^{१३}
हार पठात सोन असमाना । ताहि पुर्ल के करी बखाना ॥९०॥^{१४}

१ (ग) पहुँचे = पहुंचे । (ख) दुर्ग = दुर्ग । (घ) दुर्ग = दुर्ग ।

२. (ख) बटवारा = बटवारा । (घ), (ग), (ङ) (च) सब = सम । (ज), (ग) करै = करे ।

३ (घ) मंत्र = मंत्र । (ख) संघाना = समघाना । (ङ) जमके = जम ।

४ (ख) ते = से ।

५. (घ) (घ) बिन्दै = बिन्दे । (ङ) बिन्दै = बिन्दे ।

६ (ग) दार = दार ।

७ (घ) पंक्ति अपठिग । (ङ) त्यागहु = तेत्यागहु । (ङ) कर = के । (ख) (घ), (ङ) परी = परी । (घ) मव = मयो । (घ) मव = मो ।

८ (ङ) सध = सध । (ग) विचारिये = विचारिये ।

९ (ख) (ग), (घ) (ङ) ते = से । (ख) (घ) (घ), (ङ) मिर्वाहि = मीतिहि ।

१० (घ) जगिडे = जगिडे । (ङ) द्विरै = द्विरै ।

११ (ख) (घ) (ङ) परे = परे । (ग) उह = वोह ।

१२. (ग) जो = जो । (घ) जो = जो । (घ) (ङ) (ङ) पूछे = पूछे । (ख) (घ), (ङ) (ङ) करी = करे ।

१३ (घ) देखाए = देखा । (ख) मान = मानि ।

१४ (ख), (ग) — दार = दार । (घ) दुर्ग = दुर्ग । (ख), (घ), (ङ) के = के । (ख), (ग) (ङ), (ङ) करी = करे । (ङ) अपठिग पाठ — उठाना ।

घादि भत सधपुल्ल प्रमाणा । ब्रम्ह एक ही सम घट जाना ॥११॥^१
 तीनि भोक जम दाखन प्रहर्ष । चौपा भोक पुर्ल एक र्हर्ष ॥१२॥^२
 भजर भमर हंसा तंह होई । भञ्जित भर्दि वासै सम कोई ॥१३॥^३
 सो सुल्ल [मुल्ल नहिं आत वसानी । वृकै सो ओ निरमस प्यानी ॥१४॥^४
 सत्त लोक सत्त वा वंषा । बिनु सतगुर जस जइमति वंषा ॥१५॥^५

छन्द

सेत मंडस सेत चहुं ओर सेत छत्र बिराजहीं ।^६
 सेत तळ पर भापु बठे हंस चंवर ओसावहीं ॥^७
 प्रेम भमंद सुगंध सुंदर प्रेम मगस गावहीं ।^८
 परिमल भगर गुलाव की भर्दि हंस सो सुल्ल पावहीं ॥३॥^९

सोरठा

भति सोमा सुल्ल सार, प्रेम पंष मोरे हित है ।^१
 कोइ प्यानी करे बिचार, घटस भमर सुल्ल हंस है ॥३॥^२

चौपाई

सतगुर जानु सत्त सुल्ल बानी । सभ्य सांच बिरसा केहु मानी ॥१६॥
 मिननी करौं हुनो कर जोरी । सत्त साहव प्यान करे जोरी ॥१७॥^३

१ (क) सतपुर्ल = सतपुल्ल । (ख) प्रमाणा = प्रमना ।

२. (प) दाखन = दाखिम । (क), (प) चौपा = चौप । (क) पुर्ल = पुल्ल ।
 (ख) (ग) एक = ओए । (घ) एक = ओए ।

३ (घ) (ग) (प) (क) हंस = हंस । (ख) (प) (क) (क) तंह = तहां । (क) होई =
 रहरै । (ख), (ग) वासै = वासे ।

४ (क), (ग) (प) (क) भर्दि = भदि । (ख) वृकै = वृकै । (ग) वृकै = वृकै ।

५. (प) (प) सत्तलोक = सत्तलोक । (घ) सत्त = सत्त । (ग) सत्त = सत्त ।
 (क) सत्त = सत्त । (ख) सत्त = सत्त । (ख) (ग) (प) (क) जइमति = जइमति ।

६ (ग) चहुं = चौहु । (घ) चहुं = चौहु । (ख) (ग) ओर = ओर । (क) ओर = ओर ।
 (क) छत्र = छत्र ।

७ (क) तळ = तळ । (ग) (प) चंवर = चंवर ।

८ (ग) प्रेम = प्रेम । (ख) (ग) (क) भमंद = भमंद । (ख) गावहीं = गावहीं ।

९ (घ) पावहीं = पावहीं ।

१० (क) मोरे हित है = मजो रहित है । (प) मोरे हित है = मजो रहित है । (प) मोरे
 हित है = मज रहित है । (क) मोर हित है = मी रहित है ।

११ (घ) करै = करण । (ग) करै = करे । (घ) सुल्ल = सुल्ल ।

१२ (प) मिननी = मिननी । (ख) (ग) (क) (क) करौं = करे । (प) हुनो = हुनो ।
 (घ) नारव = नारव । (ग) नारव = नारव है ।

मनहि म माना प्रमरस भीन्हा । सुरति चीन्हि सध्द मौ लीन्हा ॥६८॥^१
 सांघ सध्द बूमो मौ लाई । हस बोधि छपलोक पठाई ॥६९॥^२
 बूमो विस मनि या तन सोमी । सत लोक सत नहि टोली ॥१००॥^३
 यह कुल करम छाडि सभ वैहू । सतगुर चगन सध्द तव सेहू ॥१०१॥^४
 भ्रम्रित प्रेम पियहू सुहू दासा । तन छुट्टे छपलोक में बासा ॥१०२॥^५
 जब धात्रीपर पहुँचै जाई । मांग मोहर देउ देसाई ॥१०३॥^६
 सतगुर देखि रहै सकुषाई । गावहि मंगल कामिनि भाई ॥१०४॥^७
 बहुत अनंद सुख मयो विलासा । जग मरन मेटा भव त्रासा ॥१०५॥^८
 कोटि कला तहँ देखी जाई । चलत फिरत सुख बहुत सोहाई ॥१०६॥^९
 हस रूप दक्षि रखा सीमाई । भ्रम्रित बन रखा छबि छाई ॥१०७॥
 प्रति अनंद सुख वरनि न जाई । प्रमरपुर भ्रम्रित रस पाई ॥१०८॥^{१०}
 कोटिहि कामिनि मंगल गावै । हीरा मानिक सेज विछावै ॥१०९॥^{११}
 चंवर सोनाबहि बहुबिधि मांती । सभ हसा बैठहि एक जाती ॥११०॥^{१२}

१ (म) मनहि = मन्दि । (ख), (घ), (ङ) भीन्हा = भीना । (७) सध्द = सवर्द । (घ), (ग), (ग) (७) लीन्हा = लीना ।

२. (७) सध्द = सवर्द । (घ) (ग) (ङ) ली = लव । (ख) ली = लिह ।

३ (घ), (ग) (ख), (ङ) या तन = आपन । (ग) सत = सत्य । (ख), (ग) (ख) (७) सत = सत्या । (घ), (ग), (घ), (७) नहि = नहि ।

४ (घ) (ग), (घ) करम = कर्म । (ख) (ग) (घ), (७) छाडि = छोड़ि । (ख) तव = तव ।

५. (ख) छुट्टे = छुट्टे । (ख) छपलोक = छपलोक । (घ) छपलोक = छपलोक । (ख) (घ) ही = मे ।

६ (घ) देउ = देही । (ग) देउ = देह ।

७ स्तौत्यत पाठ में 'सतगुर' के बाद 'हुपा' है । (ख), (ग) (७) हुपा = हुपा । (घ) हुपा = (घ), हुपा । (घ) रई = रहा ।

८. (ग), (घ) अनंद = अनन्द । (ख) मयो = भेदे । (घ) मयो = मयो । (७) मया = मी । (ख) (घ), (घ), (७) विलास = बिलास । (घ) मरा = मरे । (घ) मत्र = मी । (ग) मव = मयो । (७) प्रम्रित = प्रम्रित ।

९ (घ) कला = कला । (घ) (घ) (घ), (७) देखी = रखा ।

१० (घ) (घ) अनंद = अनन्द । (ख) (७) न = न ।

११ (घ) (ग) (७) कामिनि = कामिनि । (घ) गव = गद । (घ) मानिक = मानिक ।

१२ (घ) चंवर = चार । (घ), (घ), (७) बैठहि = बैठ । (ग) बैठहि = बैठ ।

साक्षी

भगम पंथ की खेड़ी ग्रहें बूझै बिरसा कोए ।
सत साहब सामरय छै दरिया सख विसाए ॥११॥
बोपाई

भै निरलि सेहु सो निनु सारा । भारी जार हुमा टक्कारा ॥१११॥
रोटा काजि बूरि बरि दीन्हा । प्रसल ग्यान निनु परवै लीन्हा ॥११२॥
साहब परवै दीन्हा देलाई । सख भेद निनु नहीं बुझाई ॥११३॥
सत गुर गुर की राह निनाग । मिलै सब पारै निनु सारा ॥११४॥
बौनुग बारि जो कौन्ह निमेरा । जो जन बूझै सो पहु थु सबरा ॥११५॥
तीनि सोन जम जासिम घेरा । मुनि पंडित मी जम के बेरा ॥११६॥
सत पुस सससोवहि डेरा । नाया कवीर कर्छहि जग केरा ॥११७॥
प्रमैसोक जह भय नहि होई । प्रभित प्रम पिय सम कोई ॥११८॥
जाहि सोक सहि हम घसि भाई । ताहि सोक बिरसा जन जाई ॥११९॥
प्यान कपी जनि मूनी कोई । सख विचार कर्छहि नर सोई ॥१२०॥

१ (ग) बरै = ई । (ग) बरै = बेद । (घ) बरै = इर । (ङ) बूझै = बुझाई ।
(ग) बूझै = बुझे । (घ) बिरसा = बीसा । (ग) बिरसा = बिरसा ।
२. (ब) साहब = साहेब । (घ) सामरय = समरप । (घ) सामरय = समरप । (ङ) (घ),

१ (ङ) (ग), (घ) (ग) में अपठित ।
४ (ङ) सेहु सो = सेहु । (घ) (ग) (ङ) जार = बरि ।
२ (घ) बरि = बी । (ङ) दीन्हा = दीनदा । (घ) (ग) (घ), (ङ) परवै = परवे । (ङ) (ग),
१ (ङ) साहब = साहेब । (घ) (ङ) परवै = परवे । (घ) परवै = परवे । (ङ) (ग),
४ (घ), (ङ) (ङ) राह = राही । (घ) निनाग = नाग । (ङ) (घ), (ङ) मिलै =
मिले । (घ) सारा = सीरा ।
६ (घ) बूझै = बुझे । (ग) सबेरा = सेबेरा ।
६. (ग) कनिरिज वाड—गुरु पुरु ससुकोबुदि बरी । (घ) भी = मय । (ग) भी = मयो ।

१० (घ) बप = गाय । (घ), (ङ) पुन = पुरन ।
११ (घ) बभै सोहय बदा भै नहि होई । (घ) सम सोक मद भै नहि होई । (ङ), (ङ)
बभै सोक बादा भै नहि होई । (घ) सम = सोम ।
१२. (घ) (ङ) नदि = नै । (घ) बिरसा = बिरसा । (घ) बिरसा = बिरसा ।
११ (ङ) बूझै = बुझे । (ङ) बूझै = बुझे । (घ) विचार = विचारि । (ग) बरदि =
बराड ।

मोहि से पूछहु प्यान कराया । धारी भंत कहीं बिस्तारा ॥१२१॥^१
 सीमि मोक्ष बंद यह कहई । घोषा सोक पुर्व घोष रहई ॥१२२॥^२
 प्रजर प्रमर लोक बिस्तारा । ई सम करि तम बीन्ह पसारा ॥१२३॥^३
 हरि भगतिन्हि भगताई कीन्हा । तिरगुन फंद ठेहु नाहि चीन्हा ॥१२४॥^४
 तिरगुन से हूँ घोष गुन म्याया । प्रजर प्रमर सत्त करताया ॥१२५॥^५
 हस बंस सहं पहुषी भाई । प्रजर प्रमर तहवां होए जाई ॥१२६॥^६
 सत्त सब्द जो करै बिबेका । भादि भत कामा महं देसा ॥१२७॥^७
 सत्त सब्द भुझी चित लाई । सो हूँसा निरमल होए जाई ॥१२८॥^८
 प्रमर लोक महं पहुषाहि दासा । देखहि प्रविगति प्रजब तमासा ॥१२९॥
 सतगुन मय्याहि मानु सुभागा । निरमल होए मल कर्वाहि न सागा ॥१३०॥^९
 गरब गुमान भूसे सम म्यानी । विद्या बंद पढ़ि भरम न जानी ॥१३१॥^१
 मोटा मन के फिरे गंवार । जो मन मिलै मिलै करताया ॥१३२॥^{११}
 पानी पवनहु से मन ठेजा । जहवां कहु तहवां मन भेजा ॥१३३॥^{१२}
 सो मन मिलेऊ दरिया दासा । सब्द देखि मेदि जम भासा ॥१३४॥^{१३}

१ (घ) भादि भादि की हो बिस्तारा ।

२ (प) घोषा = घोष । (व) पुर्व = पुरुष । (घ) घोष = घोष ।

३ (क) प्रजर = प्रमर । (ख) (प) इह सम श्रीतय श्रीह पसारा । (ग) वेह सब हरब श्रीह पसारा । (घ) इ सम श्रीतय श्रीह पसारा ।

४ (क) भगतिन्हि = भगतन्ह । (ग) भगतिन्हि = भगतिन्ह । (घ) भगतिन्हि = भगतिन्ह ।

५ (ग) (घ) घोष = उह । (ग) प्रमर सत्त = प्रमर ई सत्त ।

६ (घ) (ग), (घ) (व) धर्म = धर्म । (ख), (घ) तहवां = ताहा । (ग) सत्त सब्द जो मले धर्म ।

७ (ख) (घ) करे = करे । (ख) (घ), (घ) (व) बिबेका = बिबेका ।

८ (ख) (घ) भुझी = भुझी । (ग) भुझी = भुझी । (घ) भुझी = भुझी । (ग) होए = हो ।

९ (घ), (व) म = मा ।

१० (घ) (ग) (घ), (ख) गरब = गर्व । (घ), (घ) (व) मूँ = मूँ । (व) विद्या = विद्या । (घ) (ख) म = मा ।

११ (घ) (ख) क = के । (घ) फिरे = फिराई । (व) फिरे = फिराई । (घ) मिलै मिलै = मिलै मिलै । (ग) मिलै मिलै = मिलै मिलै । (घ) मिलै मिलै = मिलै ।

१२ (क) पवन = पौन । (घ), (ख) त = से । (घ) (ग), (घ) जहवां = जाहा । (ग) तहवां = ताहा ।

१३ (ख) मेदि = मेदि । (व) मेदि = मेदि । (घ) (घ) (व) जम जम = जम ई जम । (घ) जम जम = जम हर जम ।

तीनि सोक तीनि गुन फैलाई । चौपा सोक निरगुन सै जाई ॥१३२॥^१
तीनि सोक तो बेद बसना । चौपा सोक के मरम न जाना ॥१३६॥^२

धम्

कोटि कचन दान दे कोइ कोटि कया पुरानन ।^३
कोटि तीरख जो पगु फिरै तो न सुसै गुर म्यानन ॥^४
घनंत नाम सभ कहत है एक नाम परमानन ।^५
एक नाम सोए पुन ना है ताहि सोजु निजु घामन ॥४॥^६

सोरठा

एक से घनंत मयो, सो फूटि डार बिस्तार ।^७
घंतहू फिरि एक है, ताहि सोजु निजु सार ॥४॥^८

चौपाई

जो तिहि ब्रम्हा बिलु प्रतिपाना । जोति रूप घरि रहे गोपाला ॥१३७॥^९
पुन पुरान मा होहि भवतारा । गरुं जोति करै उजिभारा ॥१३८॥^{१०}
वह तो सत पुन बस्याना । चौपा सोक जहं भय नहि जाना ॥१३९॥^{११}
राम नाम जग सभ कोइ जाना । किस्न रूप सो ब्रम्ह बसना ॥१४०॥^{१२}

- १ (ख) तीनिगुन = त्रिगुन । (घ) चौपा = चौब । (ग), (घ) सै जाई = से जाई ।
२ (ख) तो = त । (घ) तो = ती । (घ) (ग) (घ) (ङ) के = की ।
३ (ङ) कोटि = कोटिह । (घ) (घ) (ङ) कोई = इह । (घ) कोटि = कोटिह । (ङ) कोटि = कोटिह ।
४ (ङ) कोई = कोटिह । (घ) जा = जयो । (घ) जो = जो । (घ) फिरै = फिरे । (घ) फिरै = परे । (घ) तो = तयो । (ङ) (ङ) न = ना । (ङ) (घ) सुसै = सुसे । (ङ) म्यानन = म्यान ।
५ (घ) तम = सभ । (घ) (घ) परमानन = प्रमानन ।
६ (ङ) पुन ना है = पुनय ना ।
७ (घ) (घ) (घ) (ङ) से = से । (घ) (घ) मयो = मयो । (घ) मयो = मौ । (ङ) मयो = मयो । (ङ) (घ) (ङ) डार = डारै । (घ) डार = डार ।
८ (घ) (घ) फिरि = फिरि ।
९ (ङ) बिलु = बिलु । (घ) बिलु = बिलु । (घ) (घ) रहे = रखा । (घ) (ङ) रहे = रहे ।
१० (ङ) पुन ना होहि जोती कचतारा । (घ) (घ) (ङ) ना = नाइ । (घ) (ङ) भवतारा = कोतारा । (घ) (घ) (ङ) मरै = मरै । (घ) करै = करे ।
११ (घ) से = ती । (ङ) पुन = पुनय । (घ) (घ) चौपा = चौब । (ङ) (घ) (घ) (ङ) मदि = मदि ।
१२ (घ) नम = यव । (घ) (ङ) किस्न = किस्न ।

१. पाव आए माया कर भीन्हा । उपर्ये विनसी तन होए भीन्हा ॥१४१॥^१
 पुख पुरान कहो निजु बना । उन्हीं के मुख रसना है नएना ॥१४२॥^२
 १. उन्दूके हाथ पांव बिस्तारा । उनहीं होहि जोति भवतारा ॥१४३॥^३
 १. जोति रूप अगत सम घरई । कबहि ना नारी पुर्ल भवतरई ॥१४४॥^४
 १. अम्हा बिस्तु जोति भवतारा । पुर्ल पुरान बोए रग कपरा ॥१४५॥^५

सादी

तीनि भंश है जोति से, अम्हा बिस्तु महेस ।^६
 भादि अम्ह बोए पुर्ल हहीं, ताको सुनो सदेस ॥१०॥^७

चौपाई

सस नाम निजु प्रम लगावै । सार सब सो परगट पावै ॥१४६॥^८
 भ्रमंसीक सतगुर की बानी । भावागवन मेटी सो प्राणी ॥१४७॥^९
 तहवां आए बठो तुह दासा । छोड़हु संसै जम के त्रासा ॥१४८॥^{१०}
 सुफल महातम म्यान सुरंगा । भति पकज मन होत तरंगा ॥१४९॥^{११}
 अड़हु सुरग म्यान की डोरी । प्रेम रंग सख निजु बोरी ॥१५०॥^{१२}
 सुनहु म्यान गति कंठ उषारा । निरगुन की गति अगम अपारा ॥१५१॥^{१३}
 ताके सोज करहु तुम म्यानी । निरभै सख सुरति रहु ठानी ॥१५२॥^{१४}

१ (ग) भीन्हा = भीना । (ख) (ग) उपर्ये = उपर्ये । (घ), (ग) भीन्हा = भीना ।

२. (ग) पुख = पुख ।

३ (क) उन्दूके = उन्दूके । (घ) (ग) (घ) (क) उन्हीं = उन्हीं । (ग) भवतारा = चौपाई ।

४ (क) रूप = अरूप । (घ), (घ) सम = मह । (ग) सम = सोम । (ख), (ग), (घ), (क) कबहि ना नारी = कबही नारी (क) पुर्ल = पुख ।

५ (घ) (ग) बिस्तु = बिल । (ग) भवतारा = चौपाई । (क) बोए = बोए ।

६ (क) बिस्तु = बिस्तु । (ग) बिस्तु = बिस्तु ।

७ (ग) हहीं = है । (घ), (ग) (घ) सुनो = सुनहु ।

८ (क) सस = सस ।

९ (ग) भ्रमंसीक = भ्रमंसीक । (घ) प्राणी = प्राणी । (क) प्राणी = प्राणी ।

१० (घ) उषारा = उषारा । रसोहव पाठ में द्वितीय चरण के आरम्भ में 'रह' अक्षर है ।

११ (क) सख = सख ।

१२. (घ) (क) अपारा = अपारी । (घ) (ग), (घ) (क) निरगुन = निर्गुन ।

१३ (घ) (क) ठानी = ठानी । (घ) निरभै = निरभै ।

दरिया-मग्नाबली

धगम गमी बरू तुम दासा । स्वागहु संसै जम के वासा ॥१५३॥
 मनरे पख सम जगत भुसाना । मन बीन्हूँ सो चतुर सुमाना ॥१५४॥
 मन बीन्हूँ बिनु पार न पाव । देह परि फेर भव जन पाव ॥१५५॥
 भगम छोड़ि सरर कह साये । कहे दरिया प्रेमरस पागे ॥१५६॥
 मन के बीन्हूँ रागै एक ठाँई । जरा मरल कबहीं नहिँ पाई ॥१५७॥
 मन कर्ता सम काम सवारै । मनहीं स फिरि नरक महँ डारै ॥१५८॥
 मनहीं तीरप सकम कराव । मनहीं म न की पूजा बड़ावै ॥१५९॥
 मनहीं मारि मर्तहूँ में घाव । मनहीं बीन्हूँकै जग समुझाव ॥१६०॥
 मनके सनन सनदन सागे । मनहीं ने जागी सम जागे ॥१६१॥
 मनहीं बेद कितेब पुराना । मनहीं खट दरसन जग जाना ॥१६२॥
 नोपा मन्ती मर्तहूँ बुझाव । मूल नमि बिरला काई पाव ॥१६३॥
 जब सगि मूल सरर नहिँ पावै । तब सगि हँसवोक नहिँ जाव ॥१६४॥

- १ (घ), (ङ) दुप = दुपद । (च) दुप = दुपद । (न) स्वागहु = वेह स्वागहु ।
 (क) स्वागहु = स्वागहु । (ग) सुवे = सुवे । (ख) (ग) जम के = जम के । (घ) जम
 के = जमकर ।
 २ (क) मनके = मनक । (ग) सम = सम । (घ) बीन्हूँ = बीन्हूँ । (घ) (घ) से = सेई ।
 ३ (क), (घ) (घ) (क) मव बिहारा बिनु पार न पावै । (क) देव = देवि । (ग) (घ)
 देव = देवि । (घ) देव = देवि । (क) भव = भौ । (ग) मर = मरी ।
 ४ (क) मप = मप । (घ) (घ) (घ) (घ) लये = ला । (क) बदे = बई ।
 ५. मनके = मनके । (घ) रागै = रागै । (ख) (ग) (घ), (क) नहि = नहि ।
 ६ (क) (घ) मनही सेह नरक मह डारै । (ग) मन येह सेह नरक मह डारै । (क) मनही
 में फिरि नरक मह डारै ।
 ७ (घ) मनही = मनई । (क) बरावै = बरावै । (घ) मनही = मनई । (ख) (घ) मनही =
 मनई । (घ), (घ) मनही = मनई ।
 ८ (घ) मनही = मनई । (घ) मनहि = मन । (ग) (घ) (क) बीन्हूँके = बीन्हूँ के ।
 ९ (क) मनक = मनके । (ग) (ग) (घ) लगे = ला । (क), (घ) (घ) (घ) लगे =
 जागे ।
 १ (घ) मनही = मनई ।
 ११ (क) (घ) (घ) नोपा = नोपा । (ग) नोपा = नोपा । (ग) मनहि = मनई ।
 १२. (क) नपि = नपि । (क) (ग) (घ), (क) नहि = नहि । (क), (घ) तब = ततो ।
 (क), (ग), (घ) (घ) नहि = नहि ।

साक्षी

अस्टदस कवस भवर तहं दखहु सन्द विचारि ।
 बहे दग्या चित बेतहु, वेतहु भरम सभ डारि ॥११॥^१

औपार्ई

मूल सळ घुनि होत संजोरा । सुरति बाधि रात्रे एक ठोरा ॥१६५॥^१
 सुरति डोरि बेती चित सारि । मूल सम्य के एहि उपाई ॥१६६॥^२
 मूर बं जब एक पर भावै । तबहीं डोरी लै बिसमाव ॥१६७॥^३
 मूल सळ घुनि होत उपाग । यहवां जाइ करो पैठारा ॥१६८॥^४
 अकह बंवन के ऊपर मूला । सहस्र बन्वल तहवां रजु फूना ॥१६९॥^५
 परिमस अग्र बास तहं भावै । हुंसा पियत दहुत मुय पाव ॥१७०॥
 होए दास सतगुर के पास । सेवा भक्ति प्रेम परगासा ॥१७१॥^६
 मीं तो साहब तुम बहं जाना । मेरो मन तुम्ह सै मनमाना ॥१७२॥^७
 भरम छुट सो करहु उपाई । जेहि से हंस छपनोबहि जाई ॥१७३॥^८
 सुरति सगाए के करो संभार । कुल बरम छाड़ो बंधारा ॥१७४॥^९
 जो सत सम्यहि करो बिचार । सोइ हंस भवसंधु उधारा ॥१७५॥^{१०}

- १ (ग), (घ) कंबल = कमल । (ग) देखहु = देखी । स्वीकृत पाठ में साक्षी के पूर्वार्ध के अन्त में 'गु' लै है ।
- २ (घ) (ङ) देखहु = देख । (ख) (प) भरम = भ्रम ।
- ३ (प) बाधि = बाधि । (ख), (ग), (घ) (ङ) रात्रे = रात्रो । (ग) ठोरा = ठोरा । (घ) ठोरा = ठोरा । (ङ) ठोरा = ठोरा ।
- ४ (घ) (ग) (ङ) बेती = बेती । (प) बेती = बेती । (घ) (ग), (घ) (ङ) के = की ।
- ५ (ख), (ग) (घ), (ङ) बंध जब एक = बंध एक । (ख) (ग) सै = से । (घ) सै = सै ।
- ६ (घ), (ग), (घ), (ङ) जाइ = जाए ।
- ७ (ग) कंबल = कमल । (घ) सहस्र = सहस्र । (ख) रजु = रज ।
- ८ (ङ), (ग) (घ) होए = होए । (ख) के = क । (ङ) क = की । (ङ) प्रेम = प्रेम ।
- ९ (घ) साहब = साहब । (घ) मीं = मी । (ख) तुम बहं = तुम्ह बह । (ग) तुम बहं = तुम ही । (घ) तुम बहं = तुम्ह ही । (ङ) तुम बहं = तुम्ह बहं । (घ) (घ) तुम्ह सै = तुम्ह से । (ग) तुम्ह सै = तुम से । (ङ) मरी = मरी । (ङ) तुम्ह मीं = तुम्ह से ।
- १० (ख) (घ) भरम = भ्रम । (ग) छुट = छुट । (घ) भो = से । (ग) (ग), (घ) (ङ) जेहि से = जेहि से । (घ) (ङ) हंस = हंस ।
- ११ (घ) (घ) संभार = संहार । (ग) (घ) बरम = ब्रम । (घ), (ङ) दलो = दोषो । (घ) बेवहाग = बेवहाग । (ङ) बेवहाग = बेवहाग ।
- १२ (ङ) जो = जो । (ख) (ग) करो = कर । (ङ) करो = करै । (ङ) हंस = हंस । (घ) भरम = भ्रम । (घ) भरम = भ्रमो । (ग) छुट = छुट ।

घबड़ बात कशा नहि जाई । भगम गमी तहं मुरति सगाई ॥१७६॥^१

खम्ब

भागे भाग भेन भति है सख मुरति विचारहीं ।^१
 भजर जोति मनूष बानी देखि तहं सुप पावहीं ॥^२
 भगम गमी तहं भति भ्लामन्ति ननु मन ठहरावहीं ।^३
 सत मुक्ति के सिरहि पगु है भन्नितफल तहं सासहीं ॥५॥^४

सोळा

भजरा जाति बराए मूल सख निनु सार है ।
 गहो मुरति चित लाए बहे दरिया भवरहित है ॥५॥^५

षोषाई*

भगम मुरति भतहु चितलाई । मुरति बंवल खु मुरति सगाई ॥१७७॥^६
 भबभक चित मुमुकि जय सागे । निगमन जोति भन्नित तहं जागे ॥१७८॥^७
 गहिर म्यान निनु करे विचार । भन्नके पदुम होए उजियारा ॥१७९॥^८
 भगम कपा बहुत हम बहिया । भरति भावास रचिन्हि भय जहिया ॥१८०॥^९
 जग में भाए बहो सत बाना । प्रम पुगुति विरला जन राठा ॥१८१॥^{१०}
 बीरा देह देह हस मुनुताई । मूल सख विरला केहु पाई ॥१८२॥^{११}
 यह बीरा पाए सत जा गहई । सो हसा भवसागर सरई ॥१८३॥^{१२}

१ (ल) (ग) (ब) (भ) नहि = नाहि ।

२. (घ) खम्ब = खम्बर ।

३ (घ) (ब) (प), (घ) तहं = तहां ।

४ (ग) निगमन = निगमन ।

५. (घ) सत मुक्ति के सीति पगु है । (ग) (ब) (घ) सत मुक्ति की सीति पगु है ।

६ (ल) (ग) भय = भी ।

७ (घ), (ग) (ब) पात्रमाष ।

८. (घ) येनहु = यही । (ग) (ग) बंवल = बंवल ।

९. (ल) (ग) (प) मुमुकि = मुमुकि । (घ) मुमुकि = मुमुकि । (ग) सागे = सागे । (ब), (ग) (घ) भन्नित = भन्नित ।

१० (ल) करे = करे । (ब) करे = करे । (ग) (घ) मून है मून है ।

११ (घ) (ल) (प), (घ) बटुम = बटुम । (घ) भय = भय ।

१२. (ब), (प) बहो = बहो । (ग) बहो = बहो । (घ) बहो = बहो । (घ) पुगुति = पुगुति । (घ) मुमुकि = मुमुकि ।

१३ (ल), (घ) रा दर = दर रा । (ल) जो = जो ।

१४ (ब) जो = जो । (घ) भय = भी । (ग) भय = भय ।

निजु गहि सुरति लगावहु भारी । सोहं ठीका माह समाई ॥१८४॥^१
 ठीका धागे हूंगा मृना । प्रेम सन्द अहवां असपुता ॥१८५॥
 सेत धजा निशि दिन फहराई । भ्रमित मरि तह बहुत सोहाई ॥१८६॥^२
 हीरा मानिक बहै परगासा । संखनि मनी रई चहु पासा ॥१८७॥^३
 ऐसा निजु है सोक निवासा । कर गुलाब मुल भ्रमित वासा ॥१८८॥^४
 धमी तत्तु सुरति लो लाव । सहजहि सोक पयाना पाव ॥१८९॥^५
 सीतल सन्द निजु प्रेम बढानै । यह सत साधु की सेवा सावै ॥१९०॥^६
 चोर साधु चीन्है चित साई । ताहि से प्रम बरब बखु भाई ॥१९१॥^७
 गुगा गहिरा म्यान विचाग । दीवि त्रिस्टि का करो अनुसारा ॥१९२॥^८

साली

ध्यान त्रिस्टि दोषक बरै, बहा जो मानु हमार ।^९

दरिया गुर दरिया बहै, समुक्ति देखु एक धार ॥१९३॥^{१०}

बौपाई

छीनी जुग जय जात भोरारै । तेहि पीछे बज्रजुग पति भाई ॥१९३॥
 तब मुक्ति बहू भानि धोसाई । साहब अपन बहा समुझाई ॥१९४॥
 बहै पुग सुनो हो दासा । जिव सम विनसै जम के प्रासा ॥१९५॥
 बहै पुग सुनो पित साई । जीव बाचे के बखनि उपाई ॥१९६॥^{११}

१ (ख) (ग) (घ) (ङ) सोई = सोईय ।

२ (ख) (घ), (ङ) निशि दिन = निशदिन । (ग) फहराई = पराई ।

३ (ख) (घ) (ङ), (ङ) मानिक बहै = मानिक है । (घ) (ग) (घ) (ङ) संखनि = संखनि । (ग) रई = रदे । (ख) चहु पासा = चाहुपासा ।

४ (घ), (ग) (घ) ऐसा = ऐसो । (घ) (घ) (घ) (ङ) निवासा = नवासा । (घ) (ग) मरै = मर ।

५ (घ) धमी अंत गुणति क्यो लावै । (ग) धमी तत्तु सुरति लो लावै । (घ) धमी तत्तु सुरति सब लावै । (ङ) ब्रमित तत्तु सुरति लो लावै । (ख), (घ) सहजहि = सहजे । (ख) पयाना = पेयाना । (ङ) पयाना = पेयाना ।

६ (ख), (घ), (घ) (ङ) बी = बी ।

७ (घ) (घ) (घ) (ङ) साधु = साधु । (ग) चीन्है = चिन्है । (ङ) चीन्है = चिन्है । (घ) (घ) साधु = साधु ।

८ (घ) दीवि = दिवि । (घ) का करो = करो ।

९ (घ) बरै = बरे । (घ) बरै = बरै । (घ) बहा = बदन ।

१० (ख) (ङ) द्यु = देवो ।

११ (घ) (ग) (घ) बहै = बहे । (घ) पुग = पुरग । (ग) (ग) (घ) (ङ) दे = दे । (घ) बखनि = बखन ।

मरु जुग जब होहि विस्तारा । सम जीवन बहू करहि प्रहारा ॥१६७॥
 पहिले बिनसहि भिनु के माया । धरम छोड़ि तब बिनसहि बाया ॥१६८॥
 बिनसहि रूप जो बरे सरीरा । बिनसहि जोमा जो बड़ बीरा ॥१६९॥
 बहे पुन मुतो जित साई । जीव बापे ने बचनि उपाई ॥२००॥
 सख एग में बहो सुभाई । जग रक्ष्या होए एहि उपाई ॥२०१॥
 भस हमार उही पनि जाई । जीव बापे के एहि उपाई ॥२०२॥
 मुक्ति जाण सेहु प्रवतारा । हुंस बोधि छपसोक सिधारा ॥२०३॥
 सेहु मुक्ति तुह सत ने बानी । सत नाम होसै जमपुर हानी ॥२०४॥
 बटिन जान दस परिमारा । सत सख संतोख बिधारा ॥२०५॥
 ध्याल गमी जेहि होसै प्रानी । बचहि न होसै जमपुर हानी ॥२०६॥
 जेहि मोहि जाना ठेहि में जाना । ठाहि संत के करो बसाना ॥२०७॥
 सत सख त्रिन्हि केवत जाना । प्रभे सोक सो संत समाना ॥२०८॥

१ (ग) मरु जुग जब होए विस्तारा । (घ) मरु जुग होएहि विस्तारा ।
 (ङ) मरु जुग जब होएहि विस्तारा । (च) सम जीवन के करिहै प्रहारा । (न) रूप
 जो बहू बंद करिहै प्रहारा । (व) सम जीवहू बंद करिहै प्रहारा । (श) सम
 जीवहू तब करिहै प्रहारा ।

२ (ग) बहिले = बहिले । (घ) बिनसहि = बिनसे । (ग) (घ) (ङ) बिनसहि = बिनसिहै ।
 (न) भिनु = भिनु । हरिद्वत पाठ में 'भिनु' के बाद 'सोइ' है । (व) के = की । (घ),
 (ङ) (च) धरम = धर्म । (ग) बापि = पुत्री । (घ), (ङ) (च) दोनि = दुखिहै ।

३ (घ) बिनसहि = बिनसी । (ग), (ङ) बिनसहि = बिनसिहै । (ग) (ग) बरे = बरे ।
 (ग) बिनसहि = बिनसे । (घ) (ङ) बिनसहि = बिनसिहै । (घ) (ग) (घ), (ङ) जो
 बहू = बहू बहू ।

४ प्रिण्ड ।

५ (ग) (ग) (घ), (ङ) बहो = बहो । (ङ) में = मा । (घ) रक्ष्या = रक्ष्या ।

६ (घ) हमार = हमार । (ग) एग उपर बहो सुभाई ।

७ (घ) मुक्ति = मुक्ति ।

८ (ग) तुह = तुम । (घ), (ङ) ब = बहै । (ग) (घ), (घ) (ङ) सतनाम = सतनाम ।
 (ग) हानी = हानी ।

९ (ङ) प्रवतारा = प्रवतारा ।

१० (ग) होसै = होसै । (ङ) होसै = होसै । (ग) होसै = होसै ।

११ (घ) (घ) (ङ) बहो = बहो । (ग) (ग) (ङ) बाया = बाया । (घ) बाया = बाया ।
 (ङ) ब = बहै । (ग), (ग) (घ) (ङ) करी = करी ।

१२ (ग) करी = करी । (ङ) करी = करी ।

सोड रहिहै हमार पास । सत पिबहिं अन्नित ग्ग दासा ॥२०६॥^१
 ताहि रामे के बहुत उपाई । अमर होए बिनमै नहिं पाई ॥२१०॥^२
 बहै पुल बिरला बेहू जाना । मुक्ति पथ संतन्हि पहचाना ॥२११॥^३
 अन्नित नाम निजु करे बिचार । अमर लोक ता कर पैसाग ॥२१२॥^४
 जो सपने निजा नहिं बीडा । ध्यान लगाए रहै सीनीन्हा ॥२१३॥^५
 जिया जन्तु एक जिव जाना । एके अन्हू समहि पहचाना ॥२१४॥^६
 आतमध्यान करहि नहिं बीन्हा । आतम पूजि रहै सीनीन्हा ॥२१५॥^७
 निजि सासग जो ध्यान लगाई । सतनाम दूजा नहिं गाई ॥२१६॥^८

मात्री

सतनाम निजु सार है अमरलोक के जाए ।^१
 बहै दरिया सतगुरु मिसै, संसै सपन भेटाए ॥१३॥^२

बोपाई

सतनाम है निरगुन अयाग । ताको नाम ना करे अहारा ॥२१७॥^१
 इन्द्र लोक इन्द्र बोए रह्यहीं । तिनहुके नाम बिगुणधन बर्यहीं ॥२१८॥^२

- १ (ग) (ग) (घ) (ङ) रहिहै = रहिहै । (ग) हमारे = हमारे । (ग) संत = संत । (घ) निबहिं = बोये । (ब) बिबहिं = बीबै ।
 २ (घ) (ङ) एने = एने । (ब) (ग) (घ) (ङ) के = की । (ल), (ग) (घ) (ङ) निजु करे पत्र = बिनमै नहिं भाइ ।
 ३ (घ) (ग), (ब) बहै = बहै । (ङ) पुग = पुग्य । (ब) मुक्ति = मुक्ति । (ङ) कतन्हि = संतन्हि ।
 ४ (ग) बहै = बहै । (ङ) ताकर = ताका करे । (ग) (घ) पैसाग = पैसाग । (ग) पैसाग = पैसाग ।
 ५ (घ) जो सपन = जो सपन । (घ) (ङ) जो सपन = जो सपनै । (ग) (ग) (घ) रहै = रहे । (ङ) रहै = रही । (ग) (घ), (ङ) लो = लो । (ग) लो = लो ।
 ६ (घ) बीब = लय । (घ) (ङ) पढ = पढै । (ग) समहि = सम । (ग) समहि = समलि । (घ) समहि = समै ।
 ७ (घ) बहै = बहै । (ग) (घ) (ङ) नहिं = नहिं । (घ) (ग) रहै = रहै । (घ) लो = लो । (ङ) लो = लो ।
 ८ (घ) (ग), (घ) (ङ) निजि = निजु । (ग) (ग), (घ) (ङ) नहिं = नहिं ।
 ९ (ङ) के = के ।
 १० (ग) (घ) (घ) (ङ) बहै = बहै । (घ) (ग) (घ) मिसै = मिसै । (ग) (घ) संसै = संसै ।
 ११ (ग) (ग) (घ), (ङ) ताये = ताये । (घ) ना = ना । (ग) बहै = बहै ।
 १२ (ग) (घ) निगहुं = निगहुं । (ग) (ग), (घ) (ङ) बिगुणधन = बिगुणधन ।

ब्रम्हमोक्ष ब्रम्हा ब्रसयाना । तिनहुके काल करै पिसिमाना ॥२१६॥^१
 एक निरजन उभाहि भुवावै । विन बीन्है बोइ मुक्ति न पावै ॥२२०॥^२
 भूठि बालजनि जानै कोई । सब विचार बरुहि नर सोई ॥२२१॥^३
 झित्तु घष परसै अब करई । नाम हिरमर ते जग तरई ॥२२२॥^४
 छपसोई सै हम अनि प्राए । सार सब गहे मुक्त पाए ॥२२३॥^५
 जो निश सहिई संसाग । सोई गहिई सब हमार ॥२२४॥^६
 सई निग निग्मन होए भगा । जान प्रबड अपने होए भगा ॥२२५॥^७
 माद बिदु दुबो भंस हमार । सत गहे सो उतरै पार ॥२२६॥^८
 माया सेजि सब सो सावै । ताके माय जगत सब नावै ॥२२७॥^९
 मन्स बसावै एहि संसार । सोई निजु है बस हमार ॥२२८॥^{१०}

साखी

जो जिव फनि नारि सो, सो नहि बंस हमार ।^{११}
 बंस रागि नारि जो स्यागे सो उतरै भव पार ॥^{१२}
 माया बरो है बंस नी जो बूझै निजु सार ।^{१३}
 जेवों भावै तेवों परवै मन्स पसै संसार ॥^{१४}

- १ (घ) (ग) करे = करे । (व) करे = करे । (श) करे = करहि ।
२. (क) विन = विनु । (ग) बीन्है विना बोइ मुक्ति न पावै । (घ), (श) विन = विना ।
- ३ (क) (ग) जानै = जाने । (ग) (घ) करहि = करहु ।
- ४ (ग) झित्तु = झित्तु । (ग) (घ) परसै = परसे ।
- ५ (घ) सै = गे । (ग) (घ) सै = सदि । (श) सै = सैदि । (घ) (घ) (श) (श) प्राए = प्राद । (घ) (ग) (घ) (ल) पाए = पावै ।
- ६ (ग) (घ) गहिई = गदिहै । (घ) (घ) (श) संसाग = संसाग । (ग) (घ) गदिहै = गदिहै ।
- ७ (घ), (घ) (श) गहे = गहे । (घ) प्रबड = परबड । (श) अपने = अपने ।
- ८ (ग) (ग) (घ), (ल) बिदु = बिदु । (घ) (घ) दुबो = दोष । (घ) दुबो = दोष । (ग) (ग) (घ) (ल) भंस = भंस । (ग) (घ) पारै = गद । (श) से = से । (ग) (ग) (घ) उतरै = उतर ।
- ९ (घ) सो = सो । (घ) (श) सो = सो । (ल) ताके = ताके । (घ) जगत = जग ।
- १० (ग) बसावै = बसावै । (घ) संसार = संसार । (ल) है = एह ।
- ११ (ग) बरे = बरे । (घ) गी = गे । (घ) से = से । (ल), (ग) (घ) (ल) गदि = गदि ।
१२. (घ) जो = जो । (ल) स्यागे = स्यागे । (ग) (घ) (ल) उतरै = उतर । (घ) उतरै मन उतर पार । (ग) मन = मन । (ग) मन = मन ।
- १३ (ग) नी = नी । (ग) नी गहे निजुगार । (घ) बरो गहे एह निजुगार । (घ) जो गहे निजुगार । (श) जो बूझै निजुगार ।
- १४ (ग) भावै = भावै । (घ) परवै = परवै । (ग) (ग) बसै = बसे । (घ) संसार = संसार ।

मासा टोपी मेख नहि, नहि सोना सिंगार ।
सगा भाव सतसग है, जो जोड़ गई करार ॥१४॥^१

चौपाद

वन जीवन साको हुए म्याना । पुर्न पुरान जिन्ह सुमग्न ठाना ॥२२१॥^१
छोई संत होइ निग्मल बानी । नीर छीर विबरन बरि मानी ॥२३०॥^२
हंस दसा निरमल सुन पावै । रहै भ्रसेप म्यान सो सावै ॥२३१॥^३
मीन पंथ साधु गढ़ु म्यानी । ऐसी मन की प्रीतम जानी ॥२३२॥^४
घावन जाउ करै पहुबानी । पूरन पण हूँ निग्मल बानी ॥२३३॥^५
पावै मेद सण निजु सारा । छपलोक के गह सुधाग ॥२३४॥^६
सतगुर म्यान जवे होए जाई । दग्गन दलि संसे मिटि जाई ॥२३५॥^७

साप्ती

मेदि सर्व सत सण से, जो गुर मिल करार ।^१
सतगुर विना पार नहीं, भरमि रहा ससाग ॥१५॥^२

चौपाई

सतगुर सस सण भरिपूरा । निरमल सरौर मेटेउ सभ पीरा ॥२३६॥^३

१ (ग) (घ) (ङ) नही = नारी । (ख) (ग) (घ) , (ङ) नहि = नहि ।

२ (घ) जो = जी । (घ) , (ग) गई = गये ।

३ (ङ) (घ) मय = मन्य । (घ) मन्य जीवन है तासे म्याना । (ख) (ग) (घ) (ङ) हर = है । (ख) (ग) (घ) , (ङ) जिन्ह = जिन्दि । (घ) , (ग) (घ) (ङ) सुमग्न = सुमिरल ।

४ (घ) होइ = होदि । (ग) (ङ) होइ = होए । (ङ) होइ = होइ संत होदि निबानी ।

५ (घ) रहे कबोल ज्ञान सो सारी । (ग) रह = रहे । (घ) रहै कबोल म्यान लख सावै ।

६ (घ) (ग) (घ) , (ङ) प्रीतम = प्रतिमा ।

७ (घ) (ग) करै = कर । (ग) निरमल = निरगुन ।

८ (ङ) पावै = पाप । (ग) पावै = पाने । (घ) के = की । (घ) क = कै । (घ) (ङ)

९ (ङ) जवे = जये । होए = हो । (ग) (घ) संसे = संसे । (ग) (ग) (घ) (ङ) मि = मिन ।

१० (ङ) मेदि = मदि । (ग) संसे = संसे । (घ) मेदि संसे लख स । (ग) (ङ) (घ) मे = मे ।

(ङ) (घ) , (ङ) जो = जी । (घ) जो = जरी । (घ) (ग) मिसे = मिन ।

११ (घ) (ङ) नही = नारी । (घ) मगार = मगार ।

१२. (ङ) मेटेउ = मेटा । (ग) मेटेउ = मेटा । (ङ) मेटेउ = मेटा ।

जाति पाति किछु गरब न करिए । ससनाम निजु हिरदै धरिए ॥२५१॥^१

साली

ससनाम निजु सार है, संसा करा विधार ।

जौ हरिया गुर गहिर है, (तो) मिने सख निजु सार ॥१६॥^२

चोपाई

सनगुर चरन प्रेम रस माता । सीषेठ दुम सुगंध सुपाता ॥२५२॥^३

हौ सेवक जुग जुग तोहाय । क्रिया करहु जनि सावहु बारा ॥२५३॥^४

हुकुम चरन तब छिर पर सीन्हा । भगति भाव सब हिरदै चीहा ॥२५४॥^५

छन्द

सुप सार संनि बाज नाही सबा झोही नंदन ।^६

भै भाजु बाजु नगाज गरबाहि, बसी (जैसन) निज पुर जैसन ॥^७

मान बानी तजु तै जड घमस रंग ससनामही ।^८

भैवटि बाड न सागु ताही, मार जोर न पावही ॥६॥^९

सौरठा

पाये मुनि धर सोए सार सख मसान में ।^{१०}

(चोड) मरबाहि करे बिलाए, प्यान रतन जचहा मिरन ॥६॥^{११}

- १ (ग) किछु = कुछ । (ख), (घ), (च), (ट) हिरदै = हिरदै ।
- २ (घ), (ङ) जौ = जौ । (ग), (ङ) तौ = तो । (ग) तौ = तौ । (ग) मिने = मिनिदि । (घ) (च) मिष = मिने ।
- ३ (घ) (च) चरन = चरन । (ग), (घ) (ङ) सीषेठ = सीषेठ । (घ), भबिठ = सीषेठ । (ङ) दुर्म = दुम ।
- ४ (ग), (घ), (च) हौ = हो ।
- ५ (घ) निर पर सीन्हा = निर सीन्हा । (ग) भगति = भक्ति । (ग) (घ) (ङ) हिरदै = हिरदै ।
- ६ (घ) (ग), (घ) सेने = तजु ।
- ७ (घ) भै = भौ । (ङ) नगाज = नर राज । (ग) (घ) गरबाहि = नगाज । (ग) गरबाहि = प्रेम । (ग) गरबाहि = प्रेमहि । (घ) गरबाहि = प्रेम में । (च) गरबाहि = प्रेम । (ङ) भम सीन निज पुर जैसन । (ग) बाटि निज पुर जैसन । (घ) दगति निज पुर जैसन । (ङ) बसनि म निजु पुर जैसन ।
- ८ (ङ) घमसली = घमसली । (ग) (च) घमसनी = घमसनी ।
- ९ (ङ) बौदरु बड ना लागु । (ग) बौदरु बड ना लागु लादि । (घ) बौदरु बड ना लागु लादि । (ङ) बौदरु बड ना लागु लादि । (ग) (घ), (ङ) न = ना ।
- १० (ङ) मनिदि पार—कनकम सनमाता । (ग) मंगर = कनकम ।
- ११ (ग) चोड कानी करे विषय । (घ) चरे = चर । (ग) (ग) (घ) (च) मिने = मिने ।

श्रीपाई

मन के फंद परा संसार । आत मीन उया करै ग्रहार ॥२५५॥^१
 ऐसे नास सकल जिव मारै । उपजनि विनसनि नर कह्युं डारै ॥२५६॥^२
 करम छोड़ि करता क जान । तवहीं लोक पमाना ठान ॥२५७॥^३
 पावै भेद तब मन के राखे । निरगुन निरखि निरतर साधे ॥२५८॥^४
 साध जोग जो निरमल बानी । आतम देव निरजन जानी ॥२५९॥^५
 मनसा माविनि मन के बीहा । होण म्यान प्रम गति भीन्हा ॥२६०॥^६
 आतमनेव पूजहु तुम्ह भाई । ना जग पाती तोरहु आई ॥२६१॥^७
 पपल पुत्रै निरगुन नहिं पाई । आतम जीव घाठ इन्ह साई ॥२६२॥^८
 आतम दरस म्यान जो जान । तवहीं लोक पमाना ठान ॥२६३॥^९

माखी

परआतम के पूजत निरमल नाम आहार ।
 पढित परपस पूजते मटके भमके द्वार ॥१७॥^{१०}

श्रीपाई

तन यरवर मन दरु विचारी । तहूवां लोज आतम बनबारी ॥२६४॥^{११}

- १ (क) (ग) (घ) (ङ) मनक = मनकी । (घ) (ग) (घ), (ङ) उवां करै = बीव करै ।
- २ (ग) ऐश = ऐशे । (ग) मारै = मार । (ख) उपजनि = उपजम । (घ) विनसनि = विनसल । (घ) (ग) (घ) नरकई = नरकदि । (ङ) नरकई = नरके ।
- ३ (घ) (घ) (ङ) करम = कर्म । (ग) करम = कर्म । (घ), (ग) जानै = जाने । (ग) (घ) पमाना = पमाना । (ङ) पमाना = पमाना । (क) (ग) ठानै = ठान ।
- ४ (घ) (ङ) पावै = पावे । (घ) राखे = राख । (ग) निरतर = निरत ।
- ५ (ग) (ग) (घ) राखे = राख । (घ) (ङ) निरमल = निर्मल । (ग) आतम = आत्म ।
- ६ (घ) (ग) (घ) (ङ) के = कह । (घ) भीन्हा = बीहा ।
- ७ (ग) आतम = आत्म । (ग) (घ) (ङ) तुम्ह = तुम । (ग), (ग) (घ) तोरहु = तोरहु । (ङ) तोरहु = तोरहु ।
- ८ (घ) (घ) (घ) पपल पुत्रै = पपल पुत्र । (ङ) पपल पुत्रै = पपल पुत्र । (घ) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नहिं । (घ) (ग) आतम देव पात इन्ह उद । (घ), (ङ) आतम जीव पात इन्ह उद ।
- ९ (घ) (ग) आ = उव । (ग) (ग) पमाना = पमाना ।
- १० (घ) परआतम = परमात्म ।
- ११ (ग) पपल = पपल । (ग) मार = मार । (ङ) मार = मार ।
- १२ (ग) तहूवां = तहूवां । (ग) (घ) गात्र = गात्र । (घ) गात्र = गात्र । (ङ) गात्र = गात्र ।

ताहि गोजव मुर नर मुनि हाग । मधिब केइ डाग बिस्तारे ॥२६५॥^१
 दरियासाग कहा जो भाई । ताहि सोजो निरमल होग जाई ॥२६६॥^२
 ताहि साजो भेद निजु साग । मूल छोटि जनि गहहु हाग ॥२६७॥^३
 दरिया भव जन भगम भपारा । सत साहब सन्द निजु सारा ॥२६८॥^४
 बोसहि सतपुर ग्यान गनीग । गुर गमि ग्यान जपहि निजु हीरा ॥२६९॥^५
 जाग छपवोक सुरति सोसीन्हा । पुन पुगन नाम गति बोन्हा ॥२७०॥^६
 कर जोरि हसा करहि मुख पैता । पुत्र पुगन बोसहि निजु बना ॥२७१॥^७
 धनत फिरत पुनि बहुत साहाई । ऐसे एक कल्प त्रिति जाई ॥२७२॥^८
 तफ्त एक सहै भजब बनार्ई । (छवि) निरवत हंसा रहा लोभाई ॥२७३॥^९
 ऐसन रूप कहा नहि जाई । करि करि जोति रहा छवि छाई ॥२७४॥^{१०}
 भर्षे मिसान पुनि साहां होई । भजग भमग पद पाई सोई ॥२७५॥^{११}

साक्षी

जोतिमइल रवि बोटि है, जो करि सकै बगान ।^{१२}

दरिया पर्दाहि विचारिण, ग्रम्ह रूप जो म्याल ॥२८॥^{१३}

धौपाई

निगुन ना गनि भगवत नपार्ई । जाक सत सामरय सहाई ॥२७६॥^{१४}
 सोनन सत्त साधु की बानी । दरिया तिन विच सुरति समानी ॥२७७॥^{१५}

- १ (ग) गोजव = गोत्र । (घ) (ङ) इते = इतै । (च) वेक = वेक । (ण) डार = डार ।
 (ट) डार = डार ।
 २ (ग) दरियासाग = दरिया मवा साग ।
 ३ (ग) गोजो = गोजो । (घ) गोजो = गोजो । (ङ) जानि = जन । (ण) गहहु = गहु ।
 ४ (श) भव = भा । (ग) भव = भवो । (घ), (ङ) नाहव = नाहव ।
 ५ (घ) (ग) जपहि = जपहु ।
 ६ (ग) सा = सै । (घ) (घ) भा = भा । (च) सा = सो । (ट) पुग = पुगा ।
 ७ (ग), (ग) (घ) (ङ) हंसा = हंसा । (च) पुग = पुगा । (ण) बोसहि = बोसे ।
 ८ (घ) (ग), पुनि = पुनि । (घ) पुनि = पुनि ।
 ९ (ग) (च) तमग = तमग । (ग) (ग) (घ) (ङ) नरै = नरै । (ख) (ग) (घ), (ङ)
 इना = इना ।
 १० (ग) (घ) (च) मरि = मरि ।
 ११ (ग) इने = इने । (ग) जरे = जरे ।
 १२ (घ) बो करि बरै बगान ।
 १३ (घ) (च) रिचरिण = रिचरिण ।
 १४ (ग) कल्प मगद = कल्पमगद । (ग) गमरय = गमरय ।
 १५ (घ) मपदी = मपदी ।

जव सतगुर से परसै पाई । भवजस वे सम संसै मटाई ॥२७८॥^१
 बोवाहि सतगुर ग्यान गंभीरा । नग्या समुक्ति सेह तुम बीरा ॥२७९॥^२
 जो जो हंसा बोधो जाई । सो सो हसा पहुँचै भाई ॥२८०॥^३

साखी

दरिया भवजस भगम है सतगुर परो जहाज ।^४
 तेहि पर हंसा पड़ि ब, जाण बरो मुगगाज ॥^५
 पहुँचै हसा सत सख त सतगुर मिले जो मीत ।^६
 कहै दरिया भव भगम तजी वसे जगन महं चीन ॥१९॥^७

बोपाई

गलनाम विचारि कोई । धजर भगर पद पाई सोई ॥२८१॥^८
 एक घछर घुनि बर भाई । निहघछर भगनि प्रभ पद पाई ॥२८२॥^९
 निहघछर जानु जंजा मे बीचा । मरु क बान जम भी नीचा ॥२८३॥^{१०}
 निहघछर पड़िन बरो विचारा । देवो वद निमु सुरति तोहारा ॥२८४॥^{११}
 बानि ना मीमै बीमन ग्याना । बानि बरै सा जमपुर जाना ॥२८५॥^{१२}
 बादि तेजि चीनल गहु घीरा । तय मिनहहरी घनूपम हीरा ॥२८६॥^{१३}

- १ (ग) परसै = परस । (क) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ग) संसै = संसे ।
 २ (घ) (घ) (घ) तुम = तुम ।
 ३ (घ) बोधो = बोधे । (४) (ग) पहुँचै = पहुँच ।
 ४ (ग) (ग) (घ) सतगुर १२ बी से वजिरी नही है । (घ) भव = भव ।
 ५ (घ) बरिडे = बरिडे ।
 ६ (क) पहुँचै = पहुँचै । (ग) (ग) (घ) (घ) त = ते । (ग) मिले = मिला । (घ)
 (क) मिन = मिनै ।
 ७ (घ) (ग) बरै = बरै । (ग) (घ) भव = भौ । (ग) (घ) तेजि = तेजे । (क) (ग)
 (क) बी = बी ।
 ८ (ग) विचारि = विचार । (ग) बापै = बाप ।
 ९ (ग) (ग) घुनि = घुन । (क) घुनि = घुनि । (घ) (घ) (घ) भक्ति = भक्ति ।
 १० (ग) (घ) (घ) निहघछर = निहघर । (ग) निहघछर = निहघर । (घ) (ग) (घ)
 (क) जंजा = जंजा । (ग) (ग) (घ) न = त । (ग) (ग) (घ) (क) नीचा = नीचा ।
 (क) मरु = मरु । (ग) (ग) बाण = बाण । (क) बान = बाने । (ग) भी = भवो । (घ)
 भा = भा । (घ) भा = भा ।
 ११ (क) (ग) (घ) (घ) निहघर = निहघर । (ग) देवो = देव । (घ) देवो = देव ।
 १२ (ग) (ग) (घ) (क) बानि ना मिनै निर्मन ग्याना । (ग) बरै = बर ।
 १३ (ग) (ग) (घ) (घ) निर्मनहरी = निर्मनहरी ।

तव छूटहि मन को विस्तार । तव पडहों सन् निवृ साय ॥२८७॥^१
 ए वड नहि होए बडाई । पन्थान पूजि जो तिलक बनाई ॥२८८॥^२
 सम घट करम प्रउर नहि ठूजा । ध्यानमयेव की निरमल पूजा ॥२८९॥^३
 ससनाम ई निरमल बानी । ताकी सोअहु पडिन ग्यानी ॥२९०॥^४

साथी
 मेरे कहे नहि मानहु पडित, ए नहि होए प्रनाम ।^५
 योग जुगुति जह अहू हस कहा विनाम ॥२९१॥^६

बोपाई
 जाहि योगत मुर नर मुनि हारे । बोनहु पडिन बचन जिषाने ॥२९२॥^७
 बचन कठोर बोवहु जनि बना । ए नहि मित्रिह पुन प्रमाना ॥२९३॥^८
 सीतल सए जो करहु प्रवाना । नार सए तहि मिनिहि निनाता ॥२९४॥^९
 बाणिहि जन्म गया सठ लोग । धन पी वान बिग न भोग ॥२९५॥^{१०}
 पडि पडि पोषी माया प्रमिमानी । जगत प्रउरि सम मिथ्या बवानी ॥२९६॥^{११}

१ (ग) (ग) (घ) (ल) तव = अब । (ल) छूटहि = छुट्टि । (ग), (घ) (ल) छूटहि = छुट्टिदि ।
 (घ) पडहों = पैहों । (घ) (ल) पडहों = पैहों बड । (घ) पडहों = पडहो बड ।

२ (घ) (ग) , (घ) ए बेई = ए बड । (ल) ए बेई = एड बई । (ल), (ग) (घ) (ल)
 नहि = नादि । (ल) जो = जो ।

३ (ग) (ग) (घ), (ल) बन = बन । (घ) (घ) (ल) बन = बनरि ।
 (ग) बनर = बनरि । (घ), (ग) (घ) (ल) नहि = नादि । (ग) (ग) (घ) (ल)
 (ल) पी = पी ।

४ (घ) निरमल = निमलि । (ग) (ग) (घ) तापी = तप ।

५ (घ) (घ) मरे = मरे । (ल) बडे = बई । (ग) (ग), (घ) (ल) नहि = नादि ।
 (ग) मानहु पडित = मानहु । सर्वहण पउ में पडित क बाद ए नादि है । (ग), (ग)
 (घ), (ल) ए नहि = ए नादि ।

६ (ग) (घ) जड दगहु = जडा न दयाबहु । (ग) जं द दगहु = जडा में दगाबहु । (ल) जं द
 दगहु = जडा दगबहु ।

७ (घ) (ल) दर = दारै । (ल) बिबर = बिबारे ।

८ (ग) बने = नादि । (ग) (ग) (घ) (ल) नहि = नादि ।

९ (घ) जो = जपो । (ग) तदि = तद ।

१० (ग) बंन क बाग विद्या त भोग । (घ) (ल) बंन की दान बिद तै भाग । (घ) बिदने =
 बिदो है ।

११ (ग) माया = मी । (घ) माग = मै । (घ) मया = मय । (ल) मया = मये ।
 (ग) जग = जगि । (ग) (घ) (ल) बनर = बनरि । (ग) बनरि = बनरि ।

साखी

कोठा महस घटारिया, सुन सवन बहु राग ।^१सतगुरु सग्विन्ह विना, क्या पछिन्ह महं नाग ॥२१॥^२चौपाई^३जौ न जानहु छपलोक के मग्गमा । हस गा पहुँचै एहि खटकरमा ॥२१६॥^४गाग सख जय सिद्धता सावै । तब सतगुरु बिछु घासु सखाव ॥२१७॥^५दरिया कहे सख निग्गाना । प्रठरि कही नहि बद बगाना ॥२१८॥^६बेदे घग्गि रहा ससाग । फिरि फिरि होण गग्ग भवताग ॥२१९॥^७घारि घग्ग विष होण होइह । जोइनि संकष्ट चीरासी जइह ॥२००॥^८

साखी

घोगमी के भवन में कल्प कोटि बहि जाहि ।^९व्याल विना नहि बाबिह, फिरि फिरि मटवा खाहि ॥२२॥^{१०}

चौपाई

ससनाम निजु बगे निबेरा । जौ पाहो दानमोक्खिह बेरा ॥२०१॥^{११}

१ (घ) मुमै = मुमो । (ग) मुमै = मुमोको । (प) मुमै = मुमै ।

२ (ग) बिहै = बिहै । (ख) (ग) जौ = जौ । (घ), (ग), (प) मह = मे ।

३ (ग) (ग) (घ) (घ) घट्टि ।

४ (घ) जौ = जौ । (घ) जौ = जो (घ) (ग), (प) न = नादि । (घ) न = ना । (घ) के = कर । (घ) के = कै । (घ) (ग) (घ) (घ) मग्गमा = मग्गमा । (घ) ना पडुपै = ना पडी । (ग) ना पडुपै = न पडुपिदि । (घ) (घ) ना पडुपै = ना पडुपिदि । (घ) (ग) (घ) (घ) घग्गमा = घग्गमा ।

५ (ग) जव = जे । (घ) (ग) जिजु = जिजु ।

६ (ग) (ग) (घ) बदे = बदि । (घ) बदे = बदे । (ग) (घ) (घ) घट्टरि = घट्टरि । (ग) घट्टरि = घट्टरि । (घ) (ग) (घ) (घ) बही = बही । (ग) (ग) (घ) (घ) बदि = मदि ।

७ (ग) (ग) (घ) जे = जे । (घ) जे = जे । (ग) (घ) संघट = संघट । (ग) फिरि फिरि = फिरि फिरि । (घ) (घ) होण = होदि । (घ) मग्ग = मग्ग । (घ) मग्ग = मग्ग । (ग) (घ) मग्ग = मग्ग ।

८ (ग), (ग) (घ) (घ) होण = होण । (ग) जौ जइह = पायमार । (ग) जोइनि = जोइनि । (घ) (घ) संकष्ट = संकष्ट । (घ) जइह = जइह ।

९ (ग) भवन = भवन । (ग) (घ) बाबिह = बाबिह ।

१० (ग) (घ) (घ) बदि = बदि । (ग) (ग) (घ) बदिहै = बदिहै । (घ) (ग) फिरि फिरि = फिरि फिरि । (ग) (घ) मग्ग = मग्ग ।

११ (ग) जौ = जौ । (घ) जौ = जौ । (घ) जौ = जौ । (घ) बारी = बारी । (ग) (घ) दानमोक्खिह = दानमोक्खिह ।

सत सद्य नहि मानहि वाली । जाति प्रसवापि रहा सम ग्यानी ॥३००॥^१
 जाति पुत्र की कामिनि प्रहई । विना पुत्र कामिनि नहि सहई ॥३०१॥^२
 एकर धर्म मुनाबो बही । पुर्क विना कामिनि नहि लही ॥३०२॥^३
 कामिनि मगति सभे जग जाना । पुत्र म्यान निरलेप बमाना ॥३०३॥^४
 ग्यानी बाहु क नाव न माया । जो जन वृक्षे सा होण सनाया ॥३०४॥^५
 सरब म्यान बग्यानो ताही । एकर धर्म मुनावहु मोही ॥३०५॥^६
 बंक माल कउन घर वासा । बउन पवन जाती परबाना ॥३०६॥^७
 छबो चक्र के बहिए भेदा । घस्टानवकवन के बरहु निवेदा ॥३०७॥^८
 साग पवन के बहिए भेदा । बउन पवन मट चक्राहि छेरा ॥३०८॥^९
 घस्टदत्त कवन ग्य हूँ भीना । तामें बजन मुरति सोनीन्हा ॥३०९॥^{१०}
 बहवाँ बानन प्रात प्रधान । बउन सद्य ते हंस उवारा ॥३१०॥^{११}
 एकर भेद बहा तुम भाई । वह गिया बर जोग दिवाई ॥३११॥^{१२}

१ (क), (ग), (घ), मदि = जादि । (घ) रहा = रहै (घ) रहा = रहै । (घ) सम = सब ।

२ (घ) (ग) (घ), (घ) मदि = जादि । (घ) कामिनि = कामिनी ।

३ (घ) (ग) (घ), (घ) धर्म = धरम । (घ) मुनाबो = मुनाबदु । (घ) बही = बहिवा ।
 (घ) बही = बहर । (घ), (ग), पुत्र विना = विना पुत्र । (घ), (ग) (घ) (घ) मदि =
 जादि । (घ) लही = लहिवा । (घ), (घ) लही = लहर ।

४ (घ) कामिनि = कामिनी । (घ) (घ) (घ) मम = सम ।

५ (घ) (घ) (घ) (घ) ग्यानी = ग्यानी । (घ) क = को । (घ) क = क । (घ), (घ) (घ)
 प्राय = प्रायै । (घ) मार = म मारै । (घ), (घ) न = ना । (घ) (घ) वृक्षे = वृक्ष ।
 (घ) सो होण = होर ।

६ (घ), (घ) मार = मार ।

७ (घ) बउन = बोल । (घ), (घ) बउन = बरने । (घ) बउन = बरने । (घ), (घ) (घ)
 (घ) बउन = बरन । (घ), (घ), (घ), (घ) परबाना = परबाना ।

८ (घ), (घ) लहो = लह । (घ), (घ) (घ) बहिए = बहिरे । (घ) (घ) (घ) (घ)
 निवेदा = निवेदा ।

९ (घ) बहिए = बहिरे । (घ) (घ), (घ) (घ) बजन = बरन ।

१० (घ) बंवन = बरन । (घ) (घ) भीना = भीना । (घ) (घ), (घ), (घ) लौ = लह ।
 (घ) (घ) लीगहा = लीगा ।

११ (घ), (घ) बरवाँ = बरवाँ । (घ) बरवाँ = बरवाँ । (घ) (घ), (घ), (घ) बानन =
 बानन । (घ) (घ), (घ), (घ) मम = मम । (घ), (घ) (घ) बउन = बरन ।
 (घ) बान = बरवाँ ।

१२ (घ) वृक्ष = वृक्ष । (घ) वृक्ष = वृक्ष । (घ) बह = बहै ।

एकर भेद नाहि तुम जाना । पंडित पढ़ि का बंद पृथना ॥३१॥
एकर भेद पृष्ठु तुम मोहा । एकर अथ सुनावीं तोही ॥३२॥

साखी

कवन घरा बोए हउ है कवन घरा बोए नाम ।
कवना घरा बोए जोति है कवन मुरति निजु घाम ॥
अथ घरा बाए हउ है मन मुकुटावनि नाम ।
अभर अनुपम जोति है कवन मुरति निजु घाम ॥३३॥

बोपाइ

पंडित नाम अजहु नहि बोन्हा । मुरति नगाए र्हो न मीन्हा ॥३१॥
बिन्हु पंडित सब्द निरबाना । निरगुन नाहि बिन्हु अमाना ॥३२॥
मुल अक निजु हीन छाती । अमरल कवन रहु निबानी ॥३३॥
द्वयलोक सत बोए पानी । अना जोति अहु निगमन बानी ॥३४॥
मुक्ति पदार्थ सतगुरु पाता । जात बिगम प्रेमरस माता ॥३५॥
काना अथ त्रिष्टि अमपाना । अनाम निगम अवरिजो जाना ॥३६॥
पाको जोगी जगत बजाना । जाक यमनमंडल अमपाना ॥३७॥
मनाहि मैं माता प्रेमरस मोहा । पंडित सो जो सब्दहि बोन्हा ॥३८॥

१ (क) (ख) तुम = तुम्ह ।

२. (क) पृष्ठु = पृथरी । (ख) तुम = तुम्ह । (घ) (ङ) तुम = तुम । (च) एकर अथ सुन
तोही = अथ सुन । (ग) सुनावीं = सुनावहु । (ख), (ङ) सुनावीं = सुनातो ।

३ (ग) (ङ) घरा = घर । (घ) घर = घर ।

४ (ख) (ग) (ङ) कवन = कवन । (घ) पय = पर । (च) पय बोर = परा ।

५. (घ) बोर = बोर । (ख) (घ) (ङ) मन = मन ।

६ (ग) अथ = अथ ।

७ (ख) (घ) (ङ) अहि = अहि । (ख) (ङ) मीन्हा = मना ।

८. (घ) अमाना = अमाना । (घ) अमाना = अमाना । (ङ) अमाना = अमाना ।

९. (ख) हउ = ही । (ख) (घ) (ङ) रहु निरबानी = रहु निरबनी ।

१० (घ) बोर = बोर । (ङ) बोर = बोर ।

११ (घ) मुक्ति = मुक्ति । (ख) (ग) (ङ) विरोप = विरोप ।

१२. (ग) अथ सुनावीं = अथ सुन । (घ) सुनावीं = सुनावहु । (ङ) अथ सुन
तोही = अथ सुन ।

१३. (घ) अथ सुन तोही = अथ सुन तोही ।

१४. (ग) मीन्हा :

सतगुर बिना बरहिह जिव हानी । बहे दरिया तनु बतुर सेवानी ॥३२४॥^१
सतगुर की गति भगम भपारा । लोत्रि देखहु सख्द निबु साग ॥३२५॥^२

साक्षी

म्यान संपूर्ण प्रेम रस, विवरन करो बिचारि ।^१
हुंस बस मुख पावही भवतल जाहि न हारि ॥२४॥^२

सोपाई

एव घाट के पावहि भेना । सबही बरिह सख्द निरेना ॥३२६॥^३
निरंजन सोन्हि बरहिह सुग पैना । दिनु चीन्है नहि सीतल बना ॥३२७॥^४
बिन्हहु बंद कहाँ से घापा । घारी बिन्हहु प्रेम पर पावा ॥३२८॥^५
बहं त जोति निरंजन राई । जो रासा तहि बिन्हहु माई ॥३२९॥^६
समुन्धि परिह सख्द निबु साग । मिले म्यान हाण निस्तरा ॥३३०॥^७
मूठ बहन के सभ हितकारी । साँब बह नर पारि गारी ॥३३१॥^८

साक्षी

अहाँ साँब तहं पापु है निति गिन होहि सहार ।^१
पन पन मनहि बिलाइए, भीठा मोल बिबाए ॥२५॥^२

१ (ग), (घ) बरिह = बरिदि ।

२ (ब) देखहु = देखु ।

३ (घ) बिचारि = बिचार ।

४ (घ), (घ) मव = भो । (घ) मव = भयो । (ब), (घ) न = ना । (घ) हारि = हार ।

५ (ग) घन = दधे । (घ) के = का । (घ), (घ) बाबदि = बापे । (घ) बरिह = बरिहै ।
(ग) बरिह = बरिदि । (घ) निगदा = निगैदा ।

६ (ग) निरंजन चीन्है गुनपैना । (ग) निरंजन बिन्हि बरिदि गुनपैना । (घ) निरंजन
बिन्हि करे गुनपैना । (घ) चीन्है = चीन्है । (घ) (ग) (घ), (घ) बदि = बादि ।

७ (ग) बिन्हहु = बिन्हहु । (घ) प्रेम पर पावा = परपवा ।

८ (ग) (ग) (घ) (घ) बहं = बहं । (घ) (घ) जो = जो ।

९ (ग), (ग) मिले = मिल ।

१० (घ), (घ) मूठ बहन सभ हितकारी । (घ) मूठ बहन सभ हितकारी । (घ) मूठ बहन
के सभे हितकारी । (घ) साँब बहन नर परे गारी । (ग) (ब) साँब बहन नर पारि
गारी । (घ) साँब बहन नर परे गारी ।

११ (घ) पापु = पाप ।

१२ (ब) बिलाइए = बिलाए । (ग), (घ) (ब), (घ) साँब = साँबे ।

चौपाई

वेद कहि बके ब्रम्ह बिचारा । नहीं मिलै तब सिरजनिहारा ॥३३२॥^१
 जोगी जोग करत सम हारे । प्रउरि कतेको तनके जारे ॥३३३॥^२
 सर्व प्रउरि सन्यासी हारे । बुद्धि मूढि करै बिचारे ॥३३४॥^३
 अंगम जोगी रहे सम हारी । एक नाम निजु सवा पुकारी ॥३३५॥^४
 सो मामा ना पिन्है गंवारा । फिरि फिरि होए गरम प्रपतारा ॥३३६॥^५
 मस्ति बिहूना सो नर आनी । सूनी मसक रहै विनु पानी ॥३३७॥^६
 ताको जीव न जम ई सांघा । सतनाम प्रम निजु नाचा ॥३३८॥^७

साक्षी

कलक कामिनि के फंद में बलभी मन लपटाए ।

कल्पि कल्पि जिव अरन सगी त्रिम्या अम गंवाए ॥३६॥^८

चौपाई

भूसे फिरिह माया लपटाना । संत साधु नहि गुर गमि म्याना ॥३३९॥^९
 बटत मूल सम जात भोरारै । सांघ सम् नहि हिररै नारै ॥३४०॥^{१०}
 करम कागत सम जात भोरारै । अब अमवृत निबट कलि धारै ॥३४१॥^{११}

१ (ब) (ग) (ब) (क) बके = बके । (ब) नाहि मिशिहो सिर्बनिहारा । (ग), (ब) नाहि मिसे सिर्बनिहारा । (क) नाहि मिले सिरिबनिहारा ।

२. (क) हारे = हारै । (ब) प्रउरि = प्रवर । (ग) प्रउरि = प्रौरि । (ब) (क) प्रउरि = प्रवरि । (क) हारे = हारै ।

३ (ब), (ग) तपै = तपे । (ख), (ग) प्रउरि = प्रवर । (ग) प्रउरि = प्रौरि । (क) प्रउरि = प्रवरि । (क) हारे = हारै । (ब) (ग) करै = करे । (क) करै = करे करै । (क) बिचारे = बिचारे ।

४ (क) रहे = रहै ।

५ (ब) (ग) मागा = मगाही । (ब) (क) माला = मगा । (ब) (ग) पिन्है = पिन्हे । (ब) फिरि फिरि = फेरि फेरि । (ग) होए = होइ । (ग) (ब) (क) गरम = गर्म । (ग) प्रपतारा = प्रौरि ।

६ (ग) बिहूना = बिहीना । (क) सूनी = सूनी । (ब) (ग), (ब) रहै = रहे ।

७ (ब) है = है ।

८ (ब) जीव अरन लपै = जीव अर है । (ग) (क) जीव अरन लपै = जीव अरन लपे । (ग) जीव अरन लपै = जीव अरत है । (ग) त्रिम्या = त्रिधा ।

९ (ब) (क) मूले = मूलै । (ब) (ग), (ग), (क) नहि = नहि ।

१० (ब) (ग) (ग) भोरारै = बोरारै । (ख), (ग) (ग) (क) नहि = नाहि ।

११ (ग) (ब) अमवृत = अमवृत् । (ग) काफत = कफत । (क) काफत = कफत । (ब) (ग), (ब) धारै = धारै ।

मुखं जस पुरउनि भो धीन्हा । मुन पट पै पट नहि धीन्हा ॥३४२॥
 हस भ्रुमान फिर दसो सीसा । जवहि दूत भेजा जगगीसा ॥३४३॥
 मुन नहि निरन्य सन क वंना । ठगि ठगि नीर परत प्रतिनंना ॥३४४॥
 लै जगदीस नग मट डारा । जम बउको करै पुकारा ॥३४५॥

साथी

मानु विना मुन संपवा सम मिलि करै पुकार ।
 एकल हस बलि जात है बोड नहि मग सोहार ॥२७॥

षोषाद्

माने पीछे बहुत भुनाना । जिन्हि नहि सन् हमागे माना ॥३४६॥
 पान परवाना हनो पाया । छनि गहन सन सन् समया ॥३४७॥
 जो जो चढ़े हमारी बागी । जिन मुमुताम छपनोकसै जाहा ॥३४८॥
 सत सन् हन बाट निमरा । नूठ जात सो जम के बेरा ॥३४९॥

साथी

सन् हमार मानिहीं, छाड़ह मन विन्दार ।
 सत मुक्ति के चीन्हवे, उतरज नव अल पार ॥२८॥

१ (घ) (ग) सूँ = सुगन । (घ) सूँ = सूखा । (ङ) सूँ = सुगी । (ग) भौ = भरो ।
 (ग), (घ) छींगल = छींगल । (घ) (ग) सूँ = सूटे । (घ) घई = पग । (घ) (ग) (घ),
 (ङ) कदि = कदि ।

२ (घ) (ग) (घ) फिरै = फिर । (ग), भउस रग हल ।

३ (घ) (ग) (घ) (ङ) मदि = मदि । (ग) (ग) (घ) निरन्यै = निरन्ये ।

४ (घ) (ग) (घ) से = से । (ग) करै = कर । (घ) करै = करे ।

५ (घ) एकस = एकस । (ङ) एकस = एकस । (घ) (ग) (घ) (ङ) कदि = कदि ।

६ (घ), (ग) करस = करे । (ग) (घ) पद = पद । (घ) वद = वद । (घ) (ग), (घ)
 (ङ) कदि = कदि ।

७ (घ) (ग) (घ) (ङ) हमगे = हमगे । (ग) गदि = गदि से । (घ) (घ) गदि हन
 मरु = मरुति मरु ।

८ (घ) (घ) पद = पद । (घ) (ग) से = से ।

९ (घ) (घ) (घ) कयी = कयी । (घ) उमडे = उमडे ।

१० (घ) (घ) (घ) (ङ) मरी = मरु । (घ) मन्दीरी = मन्दीरी । रपीरि बउ

११ (घ) (घ) (घ) (ङ) मरी = मरु । (घ) मन्दीरी = मन्दीरी । रपीरि बउ

१२ (घ) भा = भा । (ग) भा = भा ।

बीपाई

निरुष नाम जो कर वखाना । मिसै प्रेमवद श्रीमुख प्याना ॥३५०॥^१
 करनी करि करि गए मुलाई । मे न पावन्हि नाम सहाई ॥३५१॥^२
 रहु संभारि नाम लो साई । नाम विना नहि सिद्धि कहाई ॥३५२॥^३
 नाम निरमस कै करी निखेदा । सत्त सध्द पावै निम्बु भेदा ॥३५३॥^४
 सोइ सत खोनो विस साई । जीवनिमुक्ति जो जिन्य कहाई ॥३५४॥^५

साखी

जिदा जीवाहि बगत में देखो सट्ट बिचारि ।^६

अजर अडाल वोए अमर हूँ वचन कहा निरुमारि ॥३५॥^७

बीपाई

बोए निरगुन सरगुन ते भीन्हा । जाके प्राण पिड सम चीन्हा ॥३५५॥^८
 जाके हाथ पाव मुख वानी । बोलाहि प्रम सुधारस बानी ॥३५६॥^९
 तीनि गुन ते रहित अमाना । प्राण पिड अग उदित निखाना ॥३५७॥^{१०}
 मरै ना जीव जिन्या सोई । अछे सिद्ध गति जानै कोई ॥३५८॥^{११}

साखी

अछे सिद्ध वोए पुस हूँ जिन्या अजर अमान ।^{१२}

मुनिवर पाके पंडित, वेद कर्पाहि अनुमान ॥३०॥^{१३}

- १ (क) जो = बी । (ख) जो = जेयो । (ग) (घ) करै = करे । (ङ), (च) (ब) सिद्धे = सिद्धे ।
- २ (ग) गए = गये । (ख) (ब) (क) न = ना । (ग) मेव पावन्हि नाम सहाई । (ङ) (घ) पामन्हि = पामन्ह ।
- ३ (ख) (ग) (ब) (क) रह हय = रहु । (ख) (ग), (ब) (क) मारी = संमारी । (घ) लो = लोयो । (घ) (क) लो = लय । (ङ) (घ) (च), (क) नहि = नाहि । (ङ) (ग) (ब) (क) सिद्ध = सिध ।
- ४ (ख), (घ) के = के । (ख) करि = करी । (घ) करि = करे । (ग) पावै = पावहि ।
- ५ (ग) जीवनि = जीव । (ब) मुक्ति = मुक्ति ।
- ६ (घ) अमर = अमर ।
- ७ (ब) (क) बोए = बोए । (ग) हूँ = हूँ ।
- ८ (क) बोए = बोए । (ख) निरगुन = निगुँ । (क) जाके = जाके ।
- ९ (क) अडे = अडे । (ख) (ग) (घ) बापी = खली ।
- १० (ब) निखान्य = खाना ।
- ११ (ग) मरै जीवै मरि थीदा है मरि । (घ) अछे = अछे । (ङ) खाने = खाने ।
- १२ (ग) अडे = अडे । (ब) बोए = बोए । (क) पुस = पुरख ।
- १३ (ङ) (ग) (ब) पंडित = पंडित ।

चौपाई

सो निरगुन बधि बहै सनाया । जारे हाथ पांव नहि माया ॥३५६॥^१
 निराकार अकार विद्वाना । रूप रंग ना बहै नमूना ॥३६०॥^२
 भूमे पडिन भगम ना जाना । सा कर्ता नहि हुन बाना ॥३६१॥^३
 नाना रंग बोरहि बहु बानी । अरुम भेष त्रिटप मन ठली ॥३६२॥^४

साक्षी

जैमे सवा दुर्म में अरुमि रहा बहु मांति ।^५
 ससगुर मत्र ना जाहो, अपनी अपनी जाति ॥३१॥^६

चौपाई

गुन अरु जीव मह सेना । अगोत अरु अपही पेवा ॥३६३॥^७
 भूना पर गन भून गवाई । मूत त्रिना ग्यान यह पाई ॥३६४॥^८
 जीव अरु ना कहीं उपाइ । मोलि जीव अरु मिनि जाई ॥३६५॥^९
 घट परवी जब करि निवेश । गुर गमि ग्यान पाव निजु भेष ॥३६६॥^{१०}
 चुषै प्रम मुग अमिठ लाई । पीबत प्रेम हसा मुग पाइ ॥३६७॥^{११}
 गानी कून चापु लै भाई । भानमदेव की पूजा लाई ॥३६८॥

१ (ग), (घ) बहै = बह । (ग) बहै = बह । (घ) अरु = अरु । (ग) (ग) (घ) अरि = अरि ।

(ग) (घ) निराकार = निरकार । (ब) अकार ना = अकार ना रंगा ना । (ग) बहै = बह । (ग) बहै = बहै ।

२ (घ) भूमे = भूमे । (ग) (ग) (घ), (घ) अरि = अरि । (ग) मुने = मुने । (ग) (घ) (ब) मुने = मुने ।

३ (घ) (घ) अरुम = अरुम । (ग) (ग) (घ) मन = मना ।

४ (घ) दुर्म = दुर्म ।

५ (घ) (ग) (घ) (घ) ना = ना । (घ) अरुमी अपनी = अरुमी अपनी ।

६ (घ) सो निरगुन बधि बहो सनाया । (ग) अगा = अगा । (घ) अरो इत = अरुम । (ग) अरि = अरु । (ग) रंगा = रंग ।

७ (ग) भूना = भूना । (ग) (ग) (घ) (घ) बहै = बहै ।

८ (ग) (घ) (घ) (घ) अरो = अरो । (ग) मांति = मांति । (ग) (घ) (घ) मोत्रि = मोत्रि ।

९ (ग) (घ) परवे = परवे । (घ), (ग) बहै = बह । (ग) पावे = पावे ।

१० (ग) (ग) (ब) (घ) चुषै = चुषै । (ग) (ग) (घ) (घ) पीबत = पीबत । (ग) (ग) (घ) (घ) रंग = रंग ।

घाउमदेव निरंजन राई । बाहर भीतर घाउ लखाई ॥३६६॥^१
 मूल फूल मंवर लपटाई । पीयत सुधा मगन होए जाई ॥३७०॥^२
 पचीसो तारि ठहूँ ताल सुनाई । नाबहि हंसा नैतुन देखाई ॥३७१॥^३
 सबो मिमि एक रूप देखाई । पांचो मिति गुर पूरा पाई ॥३७२॥^४
 ठेघो सतगुर की वसि जाई । घादि अंत सम दहि देखाई ॥३७३॥

साक्षी

सतगुर ग्यान दीपक बरै जो मन होखे धीर ।^५

कहे दरिया संसै मिट, हरै सकल सम वीर ॥३२॥^६

धौपाई

कहे दरिया जिन्हि केवल जाना । सोई जन साहब पहचाना ॥३७४॥^७
 सप्त पुर्ख की यह प्रभुताई । नाहि पाप जन निजु पुर जाई ॥३७५॥^८
 जब निजु ग्यान गमी करि पेखै । अविगति जोति त्रिस्टि मह देखै ॥३७६॥
 मनहव नी घुनि बरै बिषारा । अन्हु त्रिस्टि होए उजियारा ॥३७७॥
 यह जो बोद गुर म्यानी बुझै । अन्हु अनाहुव घाउहि सुझै ॥३७८॥^९
 पंडित सो जो मनहि बुझावै । मनहीं मत कै पूजा कदावै ॥३७९॥^{१०}
 घट में समिता घटाह में मुन्ना । घटाह में पाति फूल एक सुन्ना ॥३८०॥^{११}
 मुरति अनूप जहूँ नन करोखा । कंवल नाम सो पवन सुरेखा ॥३८१॥^{१२}

१ (ब) लखाई = बखलाई ।

२ (क) मंवर = मोर । (घ) सुधा = सुगन्ध ।

३ (घ) (ग) (ङ) तारि ठहूँ ताल = तारिकास । (घ) (घ) (ट) हंसा = हंस । (ङ) नैतुन = नैतुन । (च) (च) कतुन = कतुन ।

४ (ग) (घ) नव = नवो । (ङ) गुर पूरा = एकत्र ।

५ (घ) (ग) (ङ) बरै = बरे । (च) दीपक बरै = दीपकरी । (च) (घ) जो = जो । (च) अं = अंश । (ङ) (घ) (ङ) (च) होखे = होखे ।

६ (घ) (ग) (ङ) मिटै = मिटे । (घ) मिटै = मिटे । (ङ) (ग) हरै = हरे ।

७ (घ) बदे = बदे । (ङ) (ङ) छादव = छादेव । (घ) पहचाना = पहचाना ।

८ (ङ) घुर्ष = घुर्ष । (घ) (च) मिटु = मिट । (ग) अनाहुव = अनूप ।

९ (ङ) (घ) यह जो = जो । (ङ) यह जो = यह जो । (ङ) घाउहि = घाउ ।

१० (घ) (ग) मनई = मनके । (च) मनई = मनके ।

११ (घ) (घ) (ङ) घादि में सली पहादि में मुन्ना । (च) बरव में सेली बरव में मुन्ना । (ग) बरव = बरव ।

१२ (घ) मुरति = मुरति । (ग) कंवल = कमल । (च) (घ) ने = ने । (घ) से = से । (ङ) अना = अना ।

धन धन होलें अनहद बानी । दम्पि सरूप भवन खु ठानी ॥३८२॥^१
 गुरु ग्यानी जो होखे कोई । सप्तनाम निजु पावे सोई ॥३८३॥^२
 सध पास दीब करि परई । जाए छपलोक नरक नहि परई ॥३८४॥^३

साक्षी
 छपलोक बोए सत हही जिदा कहा युभाए ।^४
 घोखा धंभा सेजि के, सह्य भमगपुर जाए ॥३३॥

चौपाई
 मने नहे जो माने न कोई । प्रावन जात बहूत दुख होई ॥३८५॥^५
 दुख दाख है जम जजाना । सतगुर सग्य ररे प्रतिपाला ॥३८६॥^६
 जिन्हि जिन्हि माना सग्य निजु सागा । गीबि द्विष्टि भई उजियारा ॥३८७॥^७
 सत्त सग्य सीस जो पारी । यीरा देद तव दरस देखावै ॥३८८॥^८
 जम जम के पाव कटाई । जाए छपलोक बहुरि नहि भाइ ॥३८९॥^९
 पचोस प्रकृति भय वीनू नारी । पांच ततु है भ्रामभयागी ॥३९०॥^{१०}
 जोग जा पुगुति परयाना । जोगी सा जो करै बलाना ॥३९१॥^{११}
 क्यन परा जहाँ उपरै ग्याना । क्यन परा जहाँ हंस भसयाना ॥३९२॥^{१२}
 क्यन परा जहाँ पीव पानी । क्यन परा जहाँ मूसी संमानी ॥३९३॥^{१३}
 कहाँ पचीस प्रकृति के नेग । कहुवां पांचो भूत निमरा ॥३९४॥^{१४}

१ (क) होये = होय ।

२ (घ) जो = जयो । (ङ) जो = जो । (च) (ग), (घ) (ङ) होय = होये । (घ) (ग) (घ)

(ङ) पावे = पावै ।

३ (ङ) पाव = पार ।

४ (ग) गत = कर्त ।

५ (घ) मर = मरै । (घ) बदे = बदा । (ङ) बदे = बह । (घ) (ङ) माभ = माभै ।

६ (ग) ई = कहे । (घ), (ग) करै = कर ।

७ (घ) माता = माम । (घ) ईबि = दिम्प ।

८ (घ) जो = जप । (ग) जो = जयो । (घ) जो = जयो । (ङ) जो = जो । (ग) दरग =

प्राग ।

९ (घ) (ङ) के = कै । (ग) कर = करै ।

१० (घ) (घ) कव = को । (ङ) कव = को । (ग) (ग) सीनू = सीनिक ।

११ (घ) (घ) सुगुनि = सुगिन । (घ) सुगुनि = सुगि । (ग) करै = कर ।

१२ (घ) पया = धरा । (घ) (घ) करी = करवत ।

१३ (घ) ११२ पा कपति । (ग) पीवै = पीव ।

१४ (ग) (घ) कता = कटा । (ग) (घ) (ङ) क = कै । (ग) पांच = पाँच ।

पाप पुन्य भोग कहां करई । कवन घरा जहां सुनि रहई ॥३१५॥^१
 उतमुनि मूस कंवल रहु फूला । उपरै प्रम होए असधुला ॥३१६॥^२
 गुप्तचरज में प्रात समाना । त्रिकुटी सुन्य पवन असपाना ॥३१७॥^३
 धमी तत्तु तहां पीवै पानी । कंवल नाम तहां खुती समानी ॥३१८॥^४
 इन्दी काम भोग एह करई । नासा बास भापु सम हरई ॥३१९॥^५
 भासस निद्रा कबहि न राता । काम विद कबहीं नहि पाता ॥४००॥^६

साखी

जोगी सो जो जोग महं मातस मातै भेद विचारि ।^७
 पांच तत्तु अपने बस करै हुमति सभ दुरि डारि ॥३४॥^८

बोपाई

घर मं भावै सिग्गनिहारा । अमर होए पावै करतारा ॥४०१॥^९
 ऐसन जोगी होसै कोई । गोरख सुल बोए गनिण सोई ॥४०२॥^{१०}
 अब लगि जोग तब से सुख पावै । कामा पतन बहुत दुख पावै ॥४०३॥^{११}

१ (ग) (क) बरा = बर ।

२ (ब) (क) लन = धनु । (घ) कंवल = कमल । (ङ) (ग) उपरै = उपर ।

३ (ब) (क) गुप्त = गुप्त । (ङ) (ग) (घ) (क) चरज = चरज । (क) त्रिकुटी = त्रिकुटी ।
 (ख) (ब) (क) सुन्य = सुन ।

४ (ग) धमी = धर्मिय । (ङ) कंवल = कमल । (ङ) मात = मात । (ङ) सुति = सुर ।
 (ग) (ब) सुति = सुर ।

५ (ब) इन्दी = इन्दि । (ङ) (ब) एह = इह । (ङ) हरई = रहई ।

६ (ख) (ग) (घ), (क) अतिरिक्त पद्य — से जोपी इह जग मे रावै । पवन साधि जो
 मन के भावै ॥ भासस निद्रा बधि घम करई । लाग संख्य भापु घम हरई ॥

७ (ब) नहि = ना । (ग) (ब) (क) नहि = नाहि । (ङ), (ग) (घ), (क) जोपी —
 जोगिया । (ग) जोग मह मातस । (घ) जोपदि मातस । (क) जोपदि मात । (ङ) (ग)
 (ब) (क) मातै = माते । (ङ) 'महं' नहीं है ।

८ (घ) (घ) अपने = आपने । (क) अपने = अपने । (ग) (ब) बस करै = बसि कर । (क)
 बस करै = बसि करै । (ख) (ग) (क) हुमति = हुमति ।

९ (ङ) (ग), (ब) सिग्गनि = सिग्गनि ।

१० (घ) (क) ऐसन = ऐसन । (ङ) (ग) (घ) (क) होके = होसै । (घ) (क) दुख बोए =
 दुखि बोए । (घ) (घ) दुख = दुखि ।

११ (ख) अब = अब । (ग) अब = अभी । (ङ) लमि = लगि । (घ) लमि = ली । (ङ) तब =
 तौ । (ब) तब = तबो । (ख) ल = लामी । (क) ल = ली । (ग) (क) पावै = पावै ।
 (क) बहुत = बहुतै ।

ग्यान मत है सभ स भीन्हा । पुत्र नाम निजु हिरद भीन्हा ॥४०४॥^१
 जंगम जोगी जटापारी । नाथ नबावहि दोजत भारी ॥४०५॥^२
 भगति ग्यान जो जानहि कोई । प्रम रुचित तब हिरद होई ॥४०६॥^३
 धनमव धनहृद करे विषारा । मुक्ति पर तब उबरै पारा ॥४०७॥^४
 मूर्ख तीन लोक छे न्यारा । पुत्र पुगत निजु प्रम अघारा ॥४०८॥^५
 धर्म सार जहां भय क नासा । जुग जुग धमर करे विलासा ॥४०९॥^६
 सुरति धाधि धमनि जब ठानै । पहुँचे सो जो मन के जान ॥४१०॥^७
 मून सद्य तहां सै पहुँचावै । जा कोइ सतगुर होण लदावै ॥४११॥^८
 सपन भग्य ना ता बहू हाई । पहुँचे जाए सवरा सोई ॥४१२॥^९
 धम लोक जहां भय नहि हाई । अहित प्रेम पिव सभ कोई ॥४१३॥^{१०}
 दीकि इच्छि ग्यान लो लावै । जाए छसलोष बहुरि नहि आवै ॥४१४॥^{११}
 भय बूझत धमर होण आई । सतगुर सद्य प्रम पर पाई ॥४१५॥^{१२}
 ताकी पर सदा उजियारा । धमर पारि मित्रजनिहाग ॥४१६॥^{१३}

१ (ग) ग्यान = ग्यानी । (ङ) पुत्र = पुत्र ।

२ (ग) (ग) (ग) (ग) दोजत = दोजत ।

३ (ग) भगति = भक्ति । (ग), (ङ) जो = जो । (ग) जो = जो । (ग), (ग), (ग) जानहि = जान । (ङ) जानहि = जानै ।

४ (ग) धनमव = धनमा । (ग), (ङ) धनगव = धनगो । (ग) करे = कर । (ग) करै = करे ।

५ (ग) मूर्ख = मूर्ख । (ग) मूर्ख = मुक्ति । (ग) सोइत ग्यारा = सोइत ग्यारा । (ग) छे = छे । (ग) (ङ) पुत्र = पुत्र ।

६ (ग) धर्म = धर्म । (ग) के = के । (ग) करै = कर । (ग), (ग) (ग) धमर = धमर । (ग) करै = करे । (ग) (ङ), (ग) विलासा = विलासा ।

७ (ग) (ङ) जब = जो । (ग) जब = जो । (ग), (ग), (ग) पहुँचे = पहुँचे । (ग) मन ब = मन ब ।

८ (ग) (ग) (ङ) छे = छे । (ग) तहां छे = तहां छे ।

९ (ङ) रुचन = रुचनै । (ग) (ग) (ग) पहुँचे = पहुँचे ।

१० (ग) (ग), (ग) (ग) नहि = नहि । (ग) अहित = अहित । (ग) निरै = निरै ।

११ (ग) (ङ), (ग) दीव = दिवि । (ग) दीवि = दिवि । (ग) (ग) लो = लव । (ग), (ग), (ग) नहि = नहि ।

१२ (ग) (ङ) (ग) धम = धी । (ग) धम = धमो । (ग) पर = पर ।

१३ (ग) पर = पर । (ग) पारै = पारि ।

प्रमित बचन समन्धि त दोसै । प्रेम जुगति कवहीं नहिं डोलै ॥४१७॥^१
मूठ कहै नर दुर्मति सोई । सच कहै प्रमित रस होई ॥४१८॥^२

साबी

सत्त समद एह बुझिकै दुर्मति घालै घोए ।^३
कसै दरिया घट निर्मल मैला कवहिं न होए ॥३५॥

चौपाई

पावै परम पद जग उजियारा । सुरति घोषि करे अनुसारा ॥४१९॥^४
निम्ब पुर पहुँचै बिलस न होई । जौ मन चीन्हि के पावै कोई ॥४२०॥^५
पाँच पचीस अपने बसि होई । क्रोध मोह त्रिसना सम सोई ॥४२१॥^६
ऐसन जोगी जोग पसारा । ताको घट सदा उजियारा ॥४२२॥^७
होसै जोग्य न नाम बसि भावै । जम जम ऐसे जहँडावै ॥४२३॥^८
भगति प्याम का करे विचारा । सहज मुक्ति भवसँभु उवारा ॥४२४॥^९
मन के धार चीन्हि चित लाई । कसि कमान प्यान पर भाई ॥४२५॥^{१०}
सीनि नोक भव वेद पसारा । तामें चीन्हो प्यान विचारा ॥४२६॥^{११}
तामें सतगुर सम तें न्यारा । चौथा लोक ताको पसारा ॥४२७॥^{१२}

१ (ब) (घ) दोसै = दोसे । (क) दोसै = दोसा । (ग) जुगति = जुक्ति । (घ) जुगति = जुगति । (ङ) (ग) दोसै = दोसे । (च) दोसै = दोसा ।

२ (ब) (घ) (ग) (ङ) कइ = कहे । (क), (ग), (ङ) दुर्मति = दुरमति । (ब) सत्त = सत्त । (ग) सत्त = सत्त । (ग) (घ) कइ = कहे ।

३ (ग) सत्त = सत्त । (ख) एह = इह । (ख) (ग) (घ) बुझिकै = बुझिके ।
(ब) (ग) (ङ) दुर्मति = दुरमति । (ग) (घ) घालै = बाले ।

४ (क) परम = प्रम । (ख) (ब) (ङ) परम = प्रेम । (क) (ग) (घ) (ङ) बोधि = बाधि । (ग), (ब) करे = करे ।

५ (ब) (ग) (घ) पहुँचै = पहुँचे । (ब) (ब) बिलस = बेलस । (ब) जौ मन चीन्हिके पावै कोई = जेप मोह त्रिसना सम सोई । (ग) जौ = जहाँ ।

६ (ब) पाँच पचीस अपने बसि होई = ऐसन जोगी जोग पसारा । (घ) त्रिसना = त्रिमुना ।
(ङ) त्रिसना = त्रिमुना ।

७ (ब) घट = पर । (क) घट = बठ ।

८ (ब) (ग) (ङ) (ङ) जम = जोग । (ख) (ग) जम = जामन । (घ) जम = जमन ।
(ङ) ऐसे = एसे ।

९ (ब) भगति = भक्ति । (घ) भव = भवो । (ख) भव = भ ।

१० (क) ४२४ संभवक श'पद अपठित । (ग), (ब), (ङ) चिन्हि = चिन्हो ।

११ (ख) (घ) भव = भौ । (ग) भव = भवो ।

१२ (ङ) न्यारा = न्यारा । (ख) (घ) चौथा = चौथ । (ब) पैवरा = पैवरा ।
(घ) पैवरा = प्यारा ।

निस्वै भजर भमर होण जाई । बत्रहि न एह जग भटका थाई ॥४२॥^१
 भमर लोक महं प्रमित पीव । मुक्ति महानम जुग जुग जीव ॥४२६॥^२
 भंतर जोगी भवन में वामा । प्रेम पुष्य जहो भय के नासा ॥४३०॥^३
 जुग जुग रही पुल के पावा । भविगति देखी भजव समासा ॥४३१॥^४
 सतगुरु छव मानु सत सोई । जम प्रम के दुर्मति गोई ॥४३२॥^५

छन्द

पीवन मुक्ति जन रक्ति हैं भयसंधु पार उतारती ।^६
 जन जानि भजु सत नाम न सुगय परिभव पावहीं ॥^७
 दनुजपावन ग्यान भी गति प्रीतिपथ मो पावहीं ।^८
 हरहि बतिमर अगत पीवन सत सो गुन पावहां ॥७॥^९

सोरठा

परमाय्य परमानन्द विद्या पर सुरति सगाए ।^१
 जो सारन वो धन, जगजीवन गुन ग्यान है ॥७॥^२

धोपाई

जम सति प्रम जुगति नहि होई । बतनो ग्यान बय नर सोई ॥४३३॥^३

- १ (घ) (ग) (व) एद = इया । (च) एर = इर ।
- २ (घ) सुक्ति = सुगति ।
- ३ (ग) भवन = भोग । (ग) प्रेम = परम ।
- ४ (घ) क = कै । (च) क = कए । (ग) भविगति = भविग । (ग) दये = दखदि ।
- ५ (ग) मानु = मानु । (घ) (च) क = कै । (घ) (ग), (च) दुर्मति = दुर्मति ।
- ६ (घ), (व) जीवन = जीवनी । (घ) मुक्ति = मुक्ति । (च) (घ) (च) भय = भय ।
- ७ (ग) मा = मयो । (ग) सेवु = सेवु ।
- ८ (ग) बानी = जानु । (च) क = कै । (ग) पावहीं = पावहीं ।
- ९ (क) राम = राम । (ग) सो = सो । (ग) सो = सी । (ग)
- १० (ग) (ग), (घ) (च) मग = मनि ।
- ११ (घ) (घ) (च) मगदए = मगदरी ।
- १२ (घ) सो = सो । (ग) (घ) जो = जयो । (घ) राम है = राम है ।
- १३ (ग) (घ) उर = उर । (ग) उर = उरयो । (च) सग = सगति । (घ) सुगति = सुगति । (ग) जुगति = जुगति । (च) जुगति = जुगति । (ग) (ग) (घ) (च) नहि = नहि । (घ) दये = दये ।

सतगुर सीतल सखर समाई । प्रमी प्रम रस सहजे पाई ॥४३४॥^१
 प्रलि पंकज ज्यों रहे सोभाई । बिलगिबिहरिफिरि हिलिमिलिभाई ॥४३५॥^२
 ज्यों चंदा बित दीन्हु बकोरा । ऐसी प्रीति करै नहि भोरा ॥४३६॥^३
 भूलि भूलि सम जाईह नसाई । म्यान विना नहि दीक देसाई ॥४३७॥^४
 सोइ गुर निरूपै बित मह भावै । जो जन जियतहि मुक्ति यतावै ॥४३८॥^५
 तन छूट फिरि परहि बदेसा । कैसे गुम्हरि मुक्ति सदिसा ॥४३९॥^६
 राह सकि जम करिह महारा । देह धरै मरमे संसारा ॥४४०॥^७
 तन छूट पुनि कहाँ समाई । कहु कैसे नाम भजन सौ साई ॥४४१॥^८
 जियतहि सत पद जो मन नाई । तन छूट सत सखर समाई ॥४४२॥^९
 भगति बिना जम दारुन ग्रहई । विना म्यान कहु कैसे सहई ॥४४३॥^{१०}
 भरमि भरमि फिरि भवबल धारै । मन नहि बिर तव कथन ब्यथावै ॥४४४॥^{११}
 एके चोर सकल जिव मार । कहे बरिया स परबस डार ॥४४५॥^{१२}

- १ (क) सम्प्राई = समोई । (ख) प्रमी = प्रमित । (घ) प्रमी = प्रमित । (ङ) प्रमी = प्रमी । (च) प्रेमरस = प्रेरस । (ज) (ग) परवे = परवे । (झ) परवे = परवे ।
२. (क) ज्यों = जो । (ग) (घ) (ङ) ज्यों = ज्यों । (ज) (ग) रहे = रहा । (घ) रहे = रहे । (ङ) बिलगि बिहरि फेरि ही मिलि भाई ।
- ३ (क) ज्यों = जो । (ग) (घ) ज्यों = ज्यों । (ङ) ज्यों = ज्यों । (ज), (घ) बंदा = बंदा । (घ) (ङ) बंदा = बंदा । (ग) (घ) करे = करे । (ज) (ग) (घ), (ङ) नहि = नाहि ।
- ४ (क) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।
५. (घ) गुर = गुर ।
- ६ (घ) दूरे = दूरे । (ज) फिरि = फेरि । (ङ) परहि = परी । (घ) (ङ) परहि = परहि । (ङ) बदेसा = बनेसा । (ङ) गुम्हरि = गुम्हरि । (घ) गुम्हरि = गुम्हरि । (घ) (ङ) गुम्हरि = गुम्हरि ।
- ७ (ङ) करहि = करी । (ग), (घ), (ङ) करहि = करिहि । (ङ) (ग) भरै = परी । (ङ), (घ) मरमे = मरमी । (घ) मरमे = मरमिहि । (ङ) संसारा = संसारा ।
- ८ (ग) (ङ) दूरे = दूरे । (ङ) पुनि = पु । (घ), (ङ), (ङ) सौ = सव ।
९. (ङ) सतपद जो मनटाइ = सतपद मन टाई ।
- १० (घ) मयति = भक्ति । (घ) कहु = कह ।
- ११ (घ) फिरि = फेरि । (ङ), (घ) मव = मी । (ग) मव = मवो । (ङ) मन नाहि बिर कहु कोन ब्यथावै । (ग) मन नाहि बिर ही कथन ब्यथावै । (घ) मन नाहि बिर स कथन ब्यथावै ।
१२. (घ) (ङ) एके = एके । (ङ) करे = करे । (घ) से = से । (ङ) से = से ।

मूल घट पुनि सम रस जाई । सतगुर मुरति लगावहु माई ॥४४६॥^१
 राष रक जइहें सम कोई । सम मिलि बलिहं सखस कोई ॥४४७॥^२
 नइहें पडित वेद पढंवा । दह घरी फिरि भरमि घनता ॥४४८॥^३
 सतपव बिना सकल सम जाई । भगति महातम गुन नहिं गार्इ ॥४४९॥^४
 सोनि लोक खु डोरि से बंधा । ह्विदन मूढे चछु का प्रया ॥४५०॥^५
 छुट डोरि चतनि जय होई । एक नाम निजु पावै सोई ॥४५१॥^६
 पाव वस्तु अनूपम यानी । पूरन पर उपज जहं ग्यानी ॥४५२॥^७
 जब लगि टिटि ए नहिं पाव । दसित काल संस मह घाव ॥४५३॥^८
 जब सतगुर सत सवर यमाई । दुग्मति काल निकट नहिं जाई ॥४५४॥^९
 कोटि तिरथ सायुन्हि के प्राणा । भगति भाष कितिबिस सख हरना ॥४५५॥^{१०}
 सायु निकट सख तिरथ कहाव । मूला भरमि क जग भरमाई ॥४५६॥^{११}
 भरमि र्छा नर नाम विहूना । पलपल होअ मूल महं छीना ॥४५७॥^{१२}
 सोष सक्ति सम जीव जहाना । पातमराम नही पहाचाना ॥४५८॥^{१३}

साक्षी
 मातम दास ग्यान निजु, क्यहि ना होलें भीन ।^{१४}
 सतगुर चल समाए र्छो प्रम ली सोन ॥३६॥^{१५}

- १ (ग) घट = घट । (घ) (ग) (ग) पुनि = चिति ।
- २ (न) जइहें = जाई । (ग), (घ), (ग) जइहें = जाइदि । (घ) जइहें = जाई ।
- ३ (ग) जइहें = जाइदि । (ग) जइहें = जाई । (घ) पढंवा = पढंताता । (ग) फिरि = पर ।
- ४ (ग) भरमि = भामिरी ।
- ५ (घ) अनूपम = अमल । (घ), (ग) (घ) (ग) नहिं = नाहिं ।
- ६ (घ) छिरे = छिरे । (घ) (ग) (ग) न = ना ।
- ७ (घ) पावै = पयेव । (घ) (ग) वस्तु = वस्तु । (घ) पूरन पर जहा उपजे ग्यानी ।
- ८ (ग) जब = जब । (घ) लगि = लगि । (घ), (ग), (घ) नहिं = नाहिं । (ग)
- ९ (ग) क्यहि = क्यहि । (घ) क्यहि = क्यहि ।
- १० (घ) कोटि तीरथ सायुह क करना । (ग) भरमि = भक्ति । (घ) (ग), (घ) (ग) सख = सम ।
- ११ (घ) विहूना = विहीन । (घ) होयै = होय ।
- १२ (घ) (घ) (घ) (ग) पातमराम ना निगडु कपना ।
- १३ (घ), (ग), (ग) दसित = दसित । (ग) मा = न ।
- १४ (घ), (घ) (ग) रई चल ता स्थीन ॥

बौपाई

जोग जुगति सजि भोग सम करई । नाम विना नर नरकहि परई ॥४५१॥^१
 भानु सुमिरछु साहव धनी । एक नाम मिजु हिरा भानी ॥४६०॥^२
 खग मीन इनो पप भारी । मन के ससै देखु विचारी ॥४६१॥^३
 भावत जात जो मन के चिन्हई । सुक स्याम भगति किछु करई ॥४६२॥^४
 कसई के काम सभै मिटि जाव । औ घट में किछु परष पाव ॥४६३॥^५
 छह दिवमति करि सीख अपना । कहे दरिया सत सुनु बचना ॥४६४॥^६
 इह अछर मह निअछर पावै । ग्यान भगति जब दिवता लाव ॥४६५॥^७
 पल पल रई चरन लौ लाई । सत चाहव सामथ सहाई ॥४६६॥^८
 भगतवखल संतन्ह सुसदाई । काटि पाप अन निभु पुर जाई ॥४६७॥^९
 निरभै नाम तन होहि सहाई । सुमिरत नाम सुषसम पाई ॥४६८॥^{१०}
 सूह नाम गति अनस लसाई । ताते रछी चरन पित लाई ॥४६९॥^{११}
 सूह नाम गति अगम अपारा । केते अघम तरे अघिकारा ॥४७०॥^{१२}
 दीन देवाल सवा किरपासा । तुह सुमरत दुस वर मेटाया ॥४७१॥^{१३}

१ (ग) जुगती = जुक्ति ।

२ (ब) भानु = अशुभ । (ग) (घ), (ङ) भानु = अशुभ ।

३ (ग) खग सो मीन दोन पप भारी । (ब) खग अशुभ मीन । (ग) (ब), (ङ) ससै = ससै ।

४ (ङ) को = को । (क) मनके = मनके । (ग) भगति = भिद्यु । (घ) मक्ति = कस्तु ।
 (ब) पलन्तर कस्तु के अम अशुभ मह जाई ।

५ (ब) (ङ) कसई के काम = कसई काम । (ग), (ब), (ङ) मिटि = मैटि । (ब) पप
 पट में कस्तु परषै परई । (ग) अनो पट में परषे कस्तु पावै । (ब), (ङ) को पट
 में परषे कस्तु पावै ।

६ (घ) इह = येह । (ब) (ब) दिवमति = दिवमत । (घ) छतु = छतु ।

७ (घ) इह = एह । (ब), (ग) (ब), (ङ) मह = गह । (ग) भगति = मक्ति ।
 (ब) (घ), (ब), (ङ) जब = तब ।

८ (घ) रई = रई । (ब) (ब), (ङ) लौ = लव । (ग) लौ = लवो । (ब) सखन = साईन ।
 (ग), (ङ) समथ = समथ ।

९ (ग) भगत = मक्त । (ब), (घ) अन = नर । (ब), (ब) निभु = निभु ।

१० (ब) तन = तब ।

११ (ब) सूह = सुह । (ङ) ताते = ताते ।

१२ (घ) सूह = सुह । (ब) (ङ) तरे = तरै ।

१३ (ग) (घ) दीनदेवाल = दीनदेवाल । (ङ) दीनदेवाल = दीनदीवाल । (ब) सुष
 सुमिरे दुग वंद मेगला । (घ) सुह = सुह । (घ) सुह सुमरे दुग वंद मेगला । (ङ) सुष
 सुमिरे दुग वंद मेगला ।

मूल घट पुनि सम ग्य जाई । सतगुर सुरति सगावहु नाई ॥४४६॥^१
 राव रव जइहें सम कोई । सम मिनि जनिहें सखम योई ॥४४७॥^२
 नइहें पंडित वेद पढता । देह घरी फिरि भगमि मनना ॥४४८॥^३
 सतपद बिना सखल सम जाई । भगति गहानम गुन नहि गाई ॥४४९॥^४
 तीनि सोक रहु डोरि से बधा । ह्रिद न मूळ षष्टु वा मंपा ॥४५०॥^५
 छट डागि जेतनि जव होई । एष नाम निजु पाव सोई ॥४५१॥^६
 शव बन्तु मनूपम वानी । पुन पद उपज जहं मानी ॥४५२॥^७
 जव सगि श्रिटि एष नहि भाबै । मरसित जान संम मह घाव ॥४५३॥^८
 जव सतगुर सत सख समारै । दुग्मनि जान निवट नहि जाई ॥४५४॥^९
 शोडि तिरथ सापुन्हि के घाना । भगति भाव किमिनिव सव ह्वना ॥४५५॥^{१०}
 सापु निवट सब तिरथ बह्राव । मूना मरमि न जग भग्मारै ॥४५६॥^{११}
 मरमि रखा नर नाम विहना । पमपव शाल मूल महं छीना ॥४५७॥^{१२}
 गीव सकि सम जीव अहाना । घातमगम नती पदघाना ॥४५८॥^{१३}

माश्री

घातम दास ग्यात निजु बजहि ना होय मीत ।^{१४}

सतगुर अरन समाइए, रहु प्रम सो सीत ॥४६॥^{१५}

- १ (ग) बड़े = बड़े । (घ) (ब), (क) पुनि = पुनि ।
- २ (ग) जाई = जारी । (घ), (ग), (क) जाई = जाइदि । (घ) जाइ = जाई ।
- ३ (ग) जाई = जाइदि । (क) जाई = जाई । (क) पना = पढता । (घ) फिरि = पर । (ग) (क, मरमि = मरमिरी ।
- ४ (घ) मरमि = मगत । (घ) (ग), (घ) (क) नहि = नाई ।
- ५ (ग) छटै = छट । (घ), (ग) (क) म = मा ।
- ६ (क), (ग), छु = छु ।
- ७ (घ) पावै = पदव । (घ), (क) बन्तु = बन्तु । (घ) पून पद जहा उपजै मानी ।
- ८ (ग) जव = जीव । (घ) तिमि = तिमि । (घ), (ग), (घ) (क) नहि = नाई । (ग) मंपा = मंपा ।
- ९ (क) समाइ = समाई । (क) जाइ = जाई ।
- १० (ब), (घ) शोडि तीरथ सापुन्हि के घाना । (ग), शोडि तीरथ सापुन्हि के घाना । (क) शोडि तीरथ सापुन्हि के घाना । (ग) भगति = भक्ति । (घ) (ग), (घ) (क) ह्वना = ह्वना ।
- ११ (क) वे = वे ।
- १२ (ग) विहना = विहीना । (घ) होयै = होय ।
- १३ (ग) (ग) (घ) (क) घातमगम ना विग्रहु कपना ।
- १४ (ग) (ग), (क) दरम = दरम । (ग) मा = म ।
- १५ (ग), (घ), (क) रई जान लप हीन ॥

दरिया-मन्पावली

बोपाई

सुमिह ग्यान सतगुर वित्त लाई । का मूलहु एही दुनिमाई ॥४७७॥^१
 काम क्रोध मद तेजहु भाई । काम न भाव एह चतुराई ॥४७८॥^२
 एक नाम निजु साहब गाई । काटीह फद पाप सम जाई ॥४७९॥^३
 सुमिछु मुस संपति विसराई । दिना बारि का रंग बडाई ॥४८०॥^४
 जोग जाप जग जीवन प्राणी । कज पुख में सुरति समानी ॥४८१॥^५
 निरमल है मन बवहि ना भाव । ल छपलोक चुरतीहि भाव ॥४८२॥^६
 विहिति विहिति गुन जो बन गावै । ध्यान प्रतीति प्रम रम पाव ॥४८३॥^७
 एक नाम छत्र सिर साब । भनहुद धुनी म्यान सह गाव ॥४८४॥^८
 जब समै भव के विसराव । तब निजु नाम प्रेम पद पावै ॥४८५॥^९
 गुर गमि ग्यान प्रम लो सावै । ताते संपति घम विसराव ॥४८६॥^{१०}
 जानहु छठ सत एह नामा । जन्म जान बेधर्ष बेकामा ॥४८७॥^{११}
 सतगुर सख सत परवाना । तानि संत कर निरमल म्याना ॥४८८॥^{१२}
 माया रूप अनि फिरहु नुसाना । भतहु फिरी परिह पछताना ॥४८९॥^{१३}
 जम के फांस फंद सब भारी । किरिया करम बद मत भारी ॥४९०॥^{१४}

- १ (ख) (घ) सुमिह = सुमिछु । (ब) मूलहु एही = मूलहु एम । (ग) मूलहु एही = मूलहु दुद ।
 २ (ग) मद क्रम क्रोध । (ख) एह = इह । (घ) एह = एहि ।
 ३ (ख) एक = एक । (ग) (घ) (ब) एक = ऐक । (घ) साहब = साहेब ।
 ४ (घ) (ग) (ब) (ब) दिना = दिन ।
 ५ (ब) जीवन = जीवनी ।
 ६ (घ) निरमल है मत = निर्मल मत है । (ब) बवहि ना भाव = बवही भावै । (ब) (घ) लो = लौ । (ग) लौ = लैई । (ब) चुरति निभावै ।
 ७ (ब) ४८३ संकल्प कामाई अपमि । (घ) प्रतीति = परतीति ।
 ८ (ब) छत्र = छतर । (घ), (घ), (घ) (ब) तई = तहो ।
 ९ (ख) (ग) समै = संघै । (ग) मव के = मनो बो । (ग) प्रेम = प्रेम । (ब) प्रेम = प्रेम ।
 १० (ख), (ग), (ब) (ब) लो = लव । (घ) (घ) घम संपति इह सम विवरावै ।
 ११ (ग) (घ), (घ) (ब) जानहु मठ एक मतनामा । (ब) (घ) (ब) बे धारव बेनाग । (ब) बे धारव बेकामा ।
 १२ (ब) सतगुर सत मख सत परवाना । (ग) कर = के । (घ), (ब) कर = केर ।
 १३ (घ) (घ) (घ) निरि = केरि । (ग) परिह = परिह ।
 १४ (ख) (ग) (घ), (ब) जम नाम । (घ) (ग), (ब) (ब) किरिया = क्रिया ।

दरिद्रतागार

मही धरतीधर दीन दयाता । मगति हेतु च्या प्रतिपाता ॥२७२१॥
धन्य पद धनुगगही ।

जग जीवन जम मुफ्त ताहि को नगति जो गुन गावहा ॥
मय भरम करम विचारि क चतनाम जो जन जानहीं ।
दड़ि दम निरुध विचारि के विरला जो जन जानहीं ।
धरि धरत ध्यान समाधि करि गुन ग्यान दिना नहि पावहा ॥२॥

मून सख निशु साग, माव भजन चित वाण ।
दया दीपक उजियार या छोटि चरनि ना जानिए ॥२॥
मोरठा चौपाई

एक नाम विनु काम न होई । तया जान नर जम दिगोई ॥२७३१॥
नो मनहीन ग्यान नहि चोन्टा । सलगुर धरन प्र म दिनु हीन्टा ॥२७३२॥
कवन निरम नाम चहाई । भजन मनि बाण मन जाई ॥२७३३॥
नाद्व ग्यान धरै चित सार्ई । रूप मनूप जानि छवि छार्ई ॥२७३४॥

मन पवन पर सत है दगदु ग्यान विचारि ।
राधि साधि एक मग मिलाव जनरि जाग सा पाग ॥२७३५॥

- १ (ग) (घ) धन देनाडा = दीन दयाता । (ग) मगति = मति ।
- २ (ग) मगति = मद भगति । (घ) मगति = इह भगति ।
- ३ (ग) (घ) मद = भो । (ग) (घ) मय = भै । (घ) (घ) (घ) मरम = मम । (ग) (घ) (घ) इरम = इरम ।
- ४ (ग) (ग) (घ), (घ) चरि = चरि । (घ) विचारिक = विचारिके । (ग) (घ) विरला मम चरि = चरि ।
- ५ (घ) चरि = चरि । (घ) स्माधि = स्मृति ।
- ६ (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- ७ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- ८ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- ९ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १० (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- ११ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १२ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १३ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १४ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १५ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।

- १० (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- ११ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १२ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १३ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १४ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।
- १५ (ग) (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि । (घ) चरि = चरि ।

हरिया-मन्वावली

एक नाम अठरि नहि भाई । जनि भूलो घंघा लपटाई ॥५०२॥^१
 डार पतान सोर असमाना । ब्रम्हादिक् सो खोजहि जहाना ॥५०३॥^२
 आदि अंत मध्य काया विराजै । अविगति नाम छत्र सिर छाजै ॥५०४॥^३
 एह खोजै तब बोह कह पावै । विना केवट को नाव चनावै ॥५०५॥^४
 हरिया कहै सुनो संसारा । निरुषै नाहि त भूलहु गवारा ॥५०६॥^५
 आदि अंत एक होए भावै । अरि अरि भेख जगत सब गाव ॥५०७॥^६
 आदि अंत के मरम न पाई । देखत जग भूला दुनियाई ॥५०८॥^७
 अरुमै मगु मति भर्म मुनाना । बसि माया संग मया देवाना ॥५०९॥^८
 अंतकाल जब आए तुलाना । मुख से दचन भूला सम म्याना ॥५१०॥^९
 घन घाम सो माया विराना । जब जम पकरि के खैचल प्राना ॥५११॥^{१०}

अर्थ

मगति भाव अनूप दिवता म्याम जो गुन गावहीं ।^{११}
 सार सद्द प्रतीति करि करि मूस निगम सखावहीं ॥^{१२}

- १ (क), (ख) (ग) अठरि = अठरि । (ग) अठरि = अठरि । (ख) मूले = मूलहू ।
२. (क) (ख), (ग) डार = डारह । (ग) डार = डारह ।
- ३ (क) (ग), (ख) (ग) मध्य = मध्य ।
- ४ (ख) एह = इह । (ख) खोजे = खोजै । (ख) बोह = छह । (ख) कह = के । (ग) केवट = केवट ।
५. (ख) हरिया = हरी (खो० सं० १ १ से आये की खोपड़नों पृ २ के अर्थ है) । (ख) कहै = कहै । (ग) (ख), (ग) संसारा = संसार । (ख), (ग) त = ती । (ख) त = तव ।
- ६ (ख) एक = एक ।
- ७ (ख) (ग) (ख), (ग) के = की । (ख) (ग) जग = जगत । (ग) जग = जग ।
८. (ख) (ग) अरुमै = अरुमै । (ख) अरुमै मोह गहै मति मुलाना । (ख) अरुमै मगु है मति मुलाना । (ग) अरुमै मगु ममिता लपटाना । (ख) अरुमै मगु माया मति मुलाना । (ख) बसि माया संग मया देवाना = मुख से दचन भूल सम म्याना । (ख) संघ = सम । (ग) मया = भै । (ख) (ग) मया = मया ।
- ९ (ख) ११० संस्कृत खोपड़ का पाठभाष है ।
- १० (ख) (ग) घन = अन्व । (ग) माना = भावा । (ख) के = के । (ख) खैचल = खैचल । (ग) खैचल = खैचल । (ग) खैचल = पीचल । (ख) खैचल = खैचल ।
- ११ (ख) मगति भाव = भाव भक्ति । (ख) दिवता = दिवत ।
१२. (ग) सार = सार । (ग) प्रतीति = परतीति ।

धीनि सोक सम कई पुकारी । पद गीता सम वेद विचारी ॥४६१॥
 प्रतह कारन जगत मिचारी । प्रम रुचित नहि हिन विचारी ॥४६२॥

साम्बी
 कई दरिया एक नाम है मिरया है संसार ।
 प्रम भगति जब ऊपर, उतरि जाए मव पार ॥३६॥
 चौपाई

भाय भगति जो दिवता साव । हीरा नाम धी परगट पाव ॥४६३॥
 भूले फिरहि बिना गुर माली । सत सन्द नहि पावहि यानी ॥४६४॥
 सुनहु सस सन्द निनु सारा । दयानिधी भवसयु उवाग ॥४६५॥
 भगतवधल सतहु मुलगई । जनने दुप मट प्रभुताई ॥४६६॥
 भगति हेतु प्रगट होए जाई । जब सुमिरै त्रिक प्रेम लग्याई ॥४६७॥
 जग महिमा गति अपरमपाय । नाम ना तूले बने विचारा ॥४६८॥
 जनने दुप घायु दुग पाव । मकट होए तब जाए छोडाव ॥४६९॥
 कहाँ कहाँ नहि नय सह्याई । जिन्हि जिन्हि भगति प्रेमसो लाई ॥५००॥
 हिरदै प्रेम यिवक दिव्याई । प्रतह होए एक फिरि जाई ॥५०१॥

१ (घ) (ग) (व) कई = कई । (क) पद गीता वेद विचारी । (ग) पद गीता सम करण विचारी । (घ) पद गीता इद वेद विचारी । (क) पद गीता इद वेद विचारी ।
 २ (क) कई = कई । (घ) एरु = यरु । (घ) मिरया = मिरया । (ग) भव = भौ ।
 ३ (क) (ग) उरने = उरने । (ग) जाए = जादि । (ग) भव = भौ ।
 ४ (घ) (घ) ओ = उर । (ग) ओ = उर । (क) ओ = औ । (ग), (ग), (घ) (क) धी = धी । (घ) पाये = पा पये ।

५ (घ) (क) भूने = भूने । (घ) (क) मदि = मा । (ग) (ग) मदि = मादि ।
 ६ (घ) मव = भौ । (ग) मव = भौ । (ग) छेपु = छेपु ।

७ (ग) मगल = मगल । (क) उरु = उरु है । (घ) (घ) मटे = मटे ।
 ८ (क) टेरु = टेरु । (ग) भगति = भक्ति । (क) सुमिर = सुमिरै । (घ) (ग) (क) प्रेम = प्रेम ।

९ (घ) (ग) (घ) (क) मदि = मदिना । (ग) (घ) भूने = भूने । (ग) कपो = कपो ।
 १० (घ) कपु = कप । (घ) (ग) एरु = एरु । (घ) कप हीय तब कपु छेनाये ।
 (क) कप हीय तब जाए छेनाये ।

११ (क) भा = भै । (घ) (क) लौ = लौ ।
 १२ (ग) प्रेम = प्रेम । (घ) प्रेम = प्रेम । (घ) (क) प्रेम = प्रेम । (ग), (ग) फिरि = फिरि ।

भरम छुटै एक नाम सहार्ई । भररि भुगति का करहु उपाई ॥५२०॥^१
 राह करहु जो पहुनि सवेर । भगम पंष तह जाहु सवेरा ॥५२१॥^२
 कर स्वारथ केहु छेई न पावै । ब्यान डोरि पर चदि के धावै ॥५२२॥^३
 सरधि सेहु किछु संग सहार्ई । बिलम न होए पहुवै तह जाई ॥५२३॥^४

साखी

आके पूजी नाम है, करहि ना होखै हानि ।^५

नाम बिहूना मानवा, जमक हाथ बिकल ॥३६॥^६

चौपाई

सो सामर्थ के कहीं उपाई । सत्तनाम घटे गुन गाई ॥५२४॥^७
 ना घुम्त तब वेत देसाई । संत सेवा सतगुर पद पाई ॥५२५॥^८
 एक कोस आना चलि जाई । गोठी संमर बांधु बनाई ॥५२६॥^९
 इह तौ अपरमपार है आना । गाठि संमारी सेहु सुआना ॥५२७॥^{१०}
 जानत नर अितुनोक सुख पाई । ताते मुनि रखा दुनियाई ॥५२८॥^{११}
 घागे सुखसागर बहुतेरा । जो मन करै ग्याम निनु केरा ॥५२९॥^{१२}

- १ (क), (ग) (घ) छुटै = छूटे । (ख) (ङ) भररी = भररि । (प), (ब) भररि = भौरि । (य) (व) भुगति = भुगति । (ग) भुगति = भुक्ति ।
- २ (क) जो = जो । (ख) (ग) (ब) पहुनि = पहुँचि । (ङ) सवेरा = सवेरा । (क) तह = तहाँ । (ख), (ग), (प) (ङ) सवेरा = समेरा ।
- ३ (क) करहु समार केठ छेके ना पावै । (ग) कर समार केठ छेके न पावै । (ब) कर समार केठ छेके न पावै । (ङ) कर समार केठ छेके ना पावै । (ख) पर = कर ।
- ४ (क), (ग) सरधि = सरथ । (प) सरधि = सरथ । (ख) (ग), (ब) (ङ) किछु = किछु । (ख), (ग) (ब) (ङ) बिलम ना होए तहाँ पहुँचै आत ।
५. (क) (ब) (ङ) आके = आधी । (ग) आके = आके ।
- ६ (ग) निहूना = निहीना । (ख) हाथ = ह । (प) बिकल = बिकलि ।
- ७ (क) (ग) (प) (ङ) के = की । (ख), (ग), (ब) (ङ) करी = करी ।
- ८ (क) ५.१३ संस्कार चौपाई अपठित । (ग), (ङ) सतगुर = संतगुर ।
- ९ (क) (ङ) आना = आत । (ख), (ब) संमर = समरि । (ग) गोठी समार सेहु सुआई । (ङ) संमर = समर ।
- १० (क) (ग) इह = एह । (ख) तौ = ते । (ग) तौ = तौ । (ङ) तौ = तव । (ख) (ग) (ङ) संमारी = समर । (प) संमारी = समरि ।
- ११ (ङ) मिनु = मिरनु ।
१२. (क) (प), (ङ) जो मन करै = जो मन करै ।

प्रेम प्रीति लगाए निम्नै बहुरि ना नवअल भावहीं १^१
कामा खोनु कपाट अजपा अर्थ में अरि भावहीं ॥६॥^१

सोरठा

अलि मंदिल में बास, बारिज चारि के ऊपरे ।^१
खुनेवो अज सुवास, निमनि प्रेम नव पव में ॥६॥^५

चौपाई

अब लनमुनी प्रेम परगासा । गुलै अंज पुज निजु वासा ॥५१२॥^१
मधुकर राज बास सुग पावै । सपटि धानि सुपट गुलि भावै ॥५१३॥^१
खो पद पंअर दित में सागा । प्रेम प्रीति मन भी बएरागा ॥५१४॥^१
धो संसै भव जास भोरार्ई । प्रेम प्रीति नाम निजु पाई ॥५१५॥^१
मन के संसै जे निहमारी । अमै सोर ठारग परगारी ॥५१६॥^१
पुन नाम निम्नै तव पावै । सपन बबहि ना इह जग भावै ॥५१७॥^१
सतगुर भागे सुग बहुरेरा । सतपद का खो करि निमेरा ॥५१८॥^१
हिरदै ध्यान नाम खो सावै । बिमन अरन पद पंअर पाव ॥५१९॥^१

- १ (ग) मा = म । (घ) भव = भवो । (प) भव = भौ ।
- २ (घ) अर्थ = अर्थ । (ग) (घ) (ङ) अर्थ = अर्थ । (ग) (ग) (घ) भावहीं = भावहीं । (ङ) अर्थ = अर्थ ।
- ३ (घ), (ग) (घ) (ङ) चारि = चारि । (ग) (ग) (घ) (ङ) उपर = ऊपर ।
- ४ (ग) खनवो = खनवो । (ग) (ग) (घ) (ङ) पव = पव ।
- ५ (घ) (ङ) लनमुनी = लनमुनी । (घ) परगासा = परगासा । (ङ) परगासा = परगासा । (घ), (ग) खनै = खनै । (घ) पुज = पुज ।
- ६ (ग) राज = राज ।
- ७ (ग) भी = भी । (ग) भा = भावो । (ग) (घ) बएराग = बएराग ।
- ८ (घ) (ग), (घ) (ङ) खो = खो । (ग) संसै = संसै । (ग) भव = भव । (ङ) प्रीति = प्रीति ।
- ९ (घ) (ग), (घ) (ङ) मनषी = मनषी । (घ) अ = अ । (घ), (ग), (घ), (ङ) निरअरी = निरअरी । (ग) अमै = अमै । (घ) (घ), (ङ) परगारी = परगारी । (ग) परगारी = परगारी ।
- १० (ङ) अर्थ = अर्थ । (ङ) अरन = अरन । (ग) (ग) (घ) इह = इह ।
- ११ (ग) सतगुर = सतगुर । (ग) खो = खो । (घ) खो = खो । (ङ) खो = खो । (घ) खो = खो ।
- १२ (घ), (ग) (घ), (ङ) सा = सा ।

सो मन निरमल निरुषै रंगा । उपजै ग्यान साधु के संगे ॥१३८॥^१
 एक नाम प्रेम सुख पैना । करै भगति बोसै सत बना ॥१३९॥^२
 सोइ करो हसा सुख पाव । नहि तो फिरी काल भरमावै ॥१४०॥^३
 जाइहि जम भिया जग मांहीं । सतगुर चरन मुधा सम नाहीं ॥१४१॥^४
 सम घट ब्यापिक एके रामा । सरग पताल बसै सम घामा ॥१४२॥^५
 एके ब्रम्ह सफ्त घट सोई । ताहि चिन्हहु सतसंगति होई ॥१४३॥^६
 तिनहु यह रचै सफ्त अहाना । प्रादि घत सत परवाना ॥१४४॥^७
 बीट फरिग समन्हि में ब्यापै । इहु सम चिन्है ग्यान निधु प्राव ॥१४५॥^८

साखी

मरकट नग नहि चीन्हहीं, नगन फिरै बन मांभ ।^१

नाम विमुख नर विकल है बर जननी हाए बांभ ॥४२॥^२

बौपाई

जो नग साल नाम मांहि चीन्हा । मरकट मुठि अपनहिं जिब दीन्हा ॥१४६॥^१

सो सठ रठरठ मति का हीना । साधु संगति नहि चिन्है बिहूना ॥१४७॥^२

- १ (क) सो मम निरुषै निर्मल रंगा । (ख) (घ) उपजै = उपजे । (ङ), (ग) के = के ।
- २ (ग) करै = करे । (ङ), (ग) बोसै = बोसे ।
- ३ (क) हसा = हस । (ङ) (ग), (घ) (ङ) नहि तो = मांदि तो । (ङ) (घ) फिरी = फेरि । (ङ) फिरी = फेरि । (ग) (ङ) ब्याप = ब्यापि ।
- ४ (क) जाइहि = जाइ । (ङ) जम = जम । (ङ) भिया = भिया । (घ), (ङ) भिया = भिया ।
- ५ (घ) एके = एकदि । (ङ) (ङ) एके = एकै । (ङ) (ग) सरग = सरग । (ङ), (ङ) सरग = सरग ।
- ६ (घ) (ङ) एके = एकै । (ङ) (घ) (ङ) संगति = संगति ।
- ७ (क) तिनहु यह रचा = तिनहु इह रचा । (ग) तिनहु यह रचा = तिनहु इह रचा ।
- ८ (क) समन्हि में ब्यापै = समन्हि में ब्यापे । (घ) समन्हि में ब्यापै = समन्हि में ब्यापे । (ङ) इह = इह । (ङ) चिन्है = चिन्है । (घ) चिन्है = चिन्है । (ङ) (ङ) चिन्है = चिन्है । (ङ), (घ) (ङ) (ङ) ब्यापै = ब्यापे ।
- ९ (क) (ङ) (ङ) मांहि = मांदि । (ग) मांदि = मांदि । (ङ) (घ), (ङ) (ङ) फिरै = फिरै । (ङ) (ङ) फिरै = फिरै ।
- १० (ङ), (घ) (ङ) विमुख = विमुख । (ङ) (घ) (ङ) बर = बर । (घ) बर = बर । (घ) होए = हो ।
- ११ (क) जो = जो । (ङ), (ङ) जो = जो । (ङ), (ग) (घ) मांदि = मांदि । (ङ) (घ) अपनहिं = अपनहिं । (घ) अपनहिं = अपनहिं । (ङ) अपनहिं = अपनहिं ।
- १२ (क) संगति = संगति । (घ), (ङ) संगति = संगति । (ङ) (घ) (घ) (ङ) मांदि = मांदि । (घ) बिहूना = बीना । (घ) बिहूना = बिहूना ।

मन की दौर घ्रापु बुझि भावै । तब घट में किछु परवै पावै ॥५३०॥^१
मनहि में करता घग्ता घहई । मन एह राह दिगान्न चहई ॥५३१॥^२
जौ मन ग्यान कैद करि भावै । तब मन साँचा सनगुर पाव ॥५३२॥^३

साखी

कहे दरिया मन कैद करू, जो चाहो सतनाम ।^४
करम काटि नर निजु पुर, जाए यसो निजु घाम ॥५०॥^५

चौपाई

मनहि अलायै मनहि किरायै । मनहीं तीरय वरत कराय ॥५३३॥^६
जौ मन ग्यान बखीटी सावै । तब मन ग्यान नाम निजु पावै ॥५३४॥^७
मनहीं मम प्रचार कराय । मनहीं मन की पूजा चढ़ाय ॥५३५॥^८
जौ मन मूर्खि घ्रापु सगाव । तब जोगी बोए सिद्ध कहावै ॥५३६॥^९

साखी

मनके जीतै जीतिया, मन हार भो हानि ।^{१०}
मनहि बोलाए ग्यान करू, तब सुख उपजै जानि ॥५१॥^{११}

चौपाई

कहे दरिया मन रहस्यत पीरै । एसे घोर सकय जिष पीरै ॥५३७॥^{१२}

- १ स्वीट्ठ पाठ में 'मन' के पहले 'जो' है । (ख) (घ), (ङ) भी मनकी दबुर बुझि भावै । (ग) यसो मनकी घोर बुझि भावै । (घ) तब घट में परवै किछु पावै । (ग) (घ) (ङ) तब घट में परवै कापु पावै ।
- २ (ग) मनहि = मनु । (ग) एह = इयह । (घ), (ङ) एह = इह ।
- ३ (ग) जौ = जो । (घ) (ग) (घ), (ङ) साँचा = साध ।
- ४ (ग) जे = जेहो । (घ), (ङ) जे = जे ।
- ५ (ग) (घ), (ङ) करम = कर्म ।
- ६ (ग) मनहि = मनु । मनहि = मनु । (ग) मनहि = मनु । (घ) वरत = वर्त ।
- ७ (ग) जौ = जो । (ख) (ग) (घ) (ङ) बखीटी = बखीटी ।
- ८ (ग) मनहि = मनु । (ग) मनहि = मनु । (घ), (ग) मन की = मनक । (घ) मन की = मनक । (ङ) मन की = मनकै ।
- ९ (घ) जौ = जो । (ग) बोए सिद्ध = बोए दीपा ।
- १० (ख) मनक जीतै = मन जीत । (घ) (ग) (घ) मन हार = मनक हारे । (ङ) मन हार = मनक हारे । (ग) भो = भवो । (ङ) भो = मर ।
- ११ (ख) मनहि बोलाए = मदी निलोए । (ग) मनहि बोलाए = मनु दिगोए । (घ) मनहि बोलाए = मनु दिगोए । (ङ) मनहि बोलाए = मनु दिगोए । (ख) (ग) (घ) इयह = इयह ।
- १२ (ङ) बहै = बह । (ग) पीरै = पीर । (ग) (घ), (ङ) पीरै = पीरै ।

जेहि पूजे से देवता होई । पूजे तेहि जान नहि कोई ॥५६३॥^१
 सोमता पूजे सभ संसै मेटाई । तब हसा छपलोक समाई ॥५६४॥^२
 जाए छपलोक बहुरि नहि भवना । जम जुग सुखसागर पवना ॥५६५॥^३
 मूस तहवां करिहै बहुतेरा । बहुरि ना करिहै इह जग फेरा ॥५६६॥^४
 निजु गहि नाम प्र म लौ लाव । दास ह्राए तव जग समुझाव ॥५६७॥^५
 तबहीं ग्यानी सांच कहाव । जो करता के भेद बताव ॥५६८॥^६
 मन ग्यान एक रंग मिलाव । तव मन म्यान नाम एक पावै ॥५६९॥^७
 सतगुर सख्य प्र म निजु सारा । संत साधु मिलि करो विचारा ॥५७०॥

छन्द

गहू गहिर म्यान विचार ते सत सन्द मे घुनि सावहीं ।^८
 इह जान दे बहु बात बक्या सख्य नहि विड़ भावहीं ॥^९
 सहं भ्रमग है दरियाव दिसमें सख्य कोइ कोइ पावहीं ।^{१०}
 सहं कंवल फूमे भवर भूले जोति प्रति छबि छावहीं ॥१०॥^{११}

सोरठा

भूजा दोविधा डारि एक नाम संसार में ।^{१२}
 भवबस जाहि न हारि, निस्वै नाम विचारिए ॥१०॥^{१३}

- १ (ख), (ग) पूजे = पूज । (ल) जदि पूजे तेहि जानु नहि कोई । (ग) जे पूज तेहि जानु नहि कोई ।
- २ (ग) पूजे = पूजे । (ग) संसै = संसे ।
- ३ (ख) मादि = ना । (ख), (घ) जन्म = जनम ।
- ४ (ख) (घ) (ष) करिहै = करिहै । (ख), (घ) (ष) करिहै = करिहै । (ख) (ग) (घ) (ङ) इह = इहा ।
- ५ (ख) निजु नाम । (ख) (घ) (ष) (ङ) लौ = लौ ।
- ६ (ख) जो = जो । (ख) डे = डे ।
- ७ (ख) एक = एक । (घ) एक = निजु ।
- ८ (ग) से = सै ।
- ९ (ख) (ग) (घ) (ङ) सख्य = भेद ।
- १० (ग) कंवल = कमल । (घ) (ङ) फूले = फूलैवा । (घ), (ङ) भूल = मूलो ।
- ११ (ग) नाम = नामदि ।
- १२ (घ) (ष) भव = भौ । (ग) भव = भवो । (ग) विचारिए = विचारिहै । (घ) विचारिए = विचारि ।

सत नाम निजु इह जग तारै । सोइ नाम गति बाहे विसारै ॥५४८॥^१
 परम गुरु बोए पुल भमाना । अनंत पुग ताको भसयाना ॥५४९॥^२
 जानहु तेहि सत परवाना । महि मंडल घन्ती भसयाना ॥५५०॥^३
 है सरस्वत्य समन्दि तें न्यारा । जीवन मुक्ति है जिन्द करारा ॥५५१॥^४
 जाकर भादि भव विसतारा । भवनि पताल महि मडल तारा ॥५५२॥^५
 भातमदेव अन की पूजा । भातम छोड़ि देव नहि दूजा ॥५५३॥^६
 पढ़ि पढ़ि पंडित वेद वखाना । पत्यल पूजत फिरत मुलाना ॥५५४॥^७
 मूरति हिरदै करो वखाना । तव गुम होइ बहु अमर गमाना ॥५५५॥^८
 जेहि कारन सठ तीरथ जाई । रतन पदारथ इह महि पाई ॥५५६॥^९
 पढ़ि पंडित का षद वखाना । सो पट पट नहि खोजै म्याना ॥५५७॥^{१०}
 मन की मयनि करु निज प्याना । दूड़ि रहो एक गुप्त समाना ॥५५८॥^{११}
 देस पावहु का धंधा भाई । निस्वै होए तवहि निजु पाई ॥५५९॥^{१२}
 निस्वै ग्रन्थ सत है सारा । निस्वै उतारहि भव जल पारा ॥५६०॥^{१३}
 निस्वै तेहि मिलहीं करठारा । निस्वै भगति प्रम निजु सारा ॥५६१॥^{१४}
 भातम दरस दिरै जेहि प्राणी । कबहि ना होखै भवजन हानी ॥५६२॥^{१५}

- १ (घ) (ग), (घ) इह = इना । (घ) (ग) तारै = तारे । (घ) बाहे = बाई । (घ) (ग) विसारै = विचार ।
 २ (घ), (ग) परमगुरु आए पुर्यं कमला । (घ) प्रथमदि आए पुरा कमला । (घ) प्रथमदि
 आए पुरथ कमला ।
 ३ (घ), (ग) भसयाना = भसयाना ।
 ४ (घ) (ग), (घ) सरस्वत्य = सरस्वती । (घ) समन्दि = समन्दि । (घ) (ग) समन्दि = समन्दि ।
 (घ) (ग) तें = त । (घ) (ग) जीवन = जीवनि । (घ), (ग) मुक्ति = मुक्ति ।
 ५ (घ) (ग) (घ) (ग) जाकर = जाकरि । (ग) कबनि = कौनि ।
 ६ (घ), (ग) (घ) (ग) की = का । (घ) (ग), (घ) (ग) महि = भादि ।
 ७ (घ) (ग) (घ) (ग) हिरदै = हिरदि ।
 ८ (घ) (ग) (घ) (ग) गुम = गुम । (घ) तव गुम होइ बहु अमर गमाना ।
 ९ (घ), (ग) (घ) (ग) महि = भादि । (घ), (ग) खोजै = खोज ।
 १० (घ) (ग) (घ) (ग) गुप्त = गुप्त ।
 ११ (घ) (ग) (घ) (ग) धंधा = धंधा । (ग) धंधा = धंधा ।
 १२ (घ) (ग) (घ) (ग) जल पारा = जल पारा । (घ) उतारहि = उतारैदी ।
 १३ (घ) (ग) (घ) (ग) मिलहीं = मिलदि । (ग) भगति = भक्ति ।
 १४ (घ) (ग) (घ) (ग) प्राणी = प्राणी । (घ) कबहि = कबि । (घ) भवजन = भवो ।

दरिया-म-मापली

जेहि पूरू से देवता होई । पूरू तेहि जान नहि कोई ॥५६३॥^१
 बोलवा पूरू सग संसै भेटाई । तव हसा छपलोक समाई ॥५६४॥^२
 बाए छपलोक बहुरि नहि भवना । जन्म बूग सुलसागर पबना ॥५६५॥^३
 पूरू तहूवां करिहैं बहुवेरा । बहुरि ना करिहैं इह जग फेरा ॥५६६॥^४
 तवही ग्यानी सांच कहाव । दास होए तव भग समुझाव ॥५६७॥^५
 मन ग्यान एक रग मिसाव । जो करता के भेद बताव ॥५६८॥^६
 सतगुर सख प्र म निजु सारा । संत साधु मिनि करो विचारा ॥५७०॥

धन्व

गह गहिर ग्यान विचाय ते सत सख में भुनि सावही ।^६
 इह जान दे बहु वात बपटा सख नहि दिइ भावही ॥^७
 तह भगम है दरियाव दिलमें सख कोइ कोइ पावही ।^८
 तह कवल पूसे मंजर भूले जोति प्रति छवि छावही ॥१०॥^९

सोरठा

बूजा दोविधा डारि एक नाम संसार में ।^{१०}
 भवजस जाहि न हारि, निम्ब नाम विचारिण ॥१०॥^{११}

-
- १ (ख), (ग) पूरू = पूरे । (घ) जेहि पूरे तेहि जान नहि कोई । (ग) जे पूरे तेहि जान नहि कोई ।
 - २ (ग) पूरे = पूरे । (ग) संसै = संसै ।
 - ३ (ख) गहिर = गा । (घ), (ङ) जन्म = जन्म ।
 - ४ (ख) (ग) (घ) करिहैं = करिहैं । (घ), (ग) (ङ) करिहैं = करिहैं । (घ), (ग) (घ)
 - (ङ) इह = इहा ।
 - ५ (क) निठ नाम । (ख) (ग) (ङ) (ङ) सो = सव ।
 - ६ (ङ) सो = जी । (घ) के = डी ।
 - ७ (ङ) एक = यक । (ख) एक = निठ ।
 - ८ (ग) ते = ती ।
 - ९ (ख) (ग) इह = इह ।
 - १० (घ) (ग) (घ) (ङ) सख = भेद ।
 - ११ (ग) कवल = कमल । (ख) (घ) पूसे = शूतेवा । (घ), (ङ) भूले = भूलेयो ।
 - १२ (ग) नाम = नामदि ।
 - १३ (ग) (घ) भव = भव । (ग) भव = भवो । (ग) विचारिण = विचारिके । (ङ) विचारिण = विचारि ।

जेहि पूरै से देवता होई । पूरै तेहि जान नहि कोई ॥५६३॥^१
 बोलता पूरै सम संसै भेटाई । तब हुंसा छपसोक समाई ॥५६४॥^२
 जाए छपसोक बहुरि नहि भवना । जन्म जूग सुससागर पवना ॥५६५॥^३
 पूस तहंवां कन्हि बहुतेरा । बहुरि ना करिहै इह अग फेरा ॥५६६॥^४
 निजु गहि नाम प्र म लौ नाव । दास होए तब अग समुझाव ॥५६७॥^५
 तबहीं ग्यानी सांच कहाव । जो करता के भेद बतव ॥५६८॥^६
 मन म्यान एक रग मिलाव । तब मन ग्यान नाम एक पावै ॥५६९॥^७
 सतगुर सख प्र म निजु सारा । संत साधु मिलि करो विचारा ॥५७०॥

अन्व

गहु गहिर ग्यान विचार से सत सख में धुनि सावहीं ।^१
 इह जान दे बहु बात बक्ता सख नहि दिइ भावहीं ॥^२
 तहं भगम है दरियाव दिलमें सख कोइ कोइ पावहीं ।^३
 तहं कंबल फूले भंवर भूने जोति भति छवि छावहीं ॥१०॥^४

सोरठा

दूजा दोषिभा डारि, एक नाम संसार में ।^१
 भवजस जाहि न हारि नित्यै नाम बिचारिए ॥१०॥^२

- १ (ख), (ग) पूरै = पूरे । (ल) जेहि पूरे तेहि जातु नहि कोई । (म) जे पूरे तेहि जान नहि कोई ।
- २ (ग) पूरे = पूरे । (ग) संसै = संसै ।
- ३ (ख) नाहि = ना । (ब), (क) जन्म = जन्म ।
- ४ (ख) (ग) (ब) करिहै = करिहै । (ब), (ग) (घ) करिहै = करिहै । (ख) (ब) (ब) (क) इह = इहा ।
- ५ (क) निजु नाम । (ख) (ग) (घ) (ङ) लो = लो ।
- ६ (क) जो = जो । (ल) के = के ।
- ७ (ख) एक = एक । (घ) एक = एक ।
- ८ (घ) से = से ।
- ९ (ख) (घ) इह = इहा ।
- १० (ख) (ग) (घ) (ङ) सख = सख ।
- ११ (म) कंबल = कंबल । (घ) (ङ) फूले = फूलें । (घ), (ङ) भूने = भूने ।
- १२ (घ) नाम = नाम ।
- १३ (म) (घ) भव = भव । (ग) भव = भव । (ब) विचारिए = विचारिए । (ङ) विचारिए = विचारिए ।

बीपाई

जीवन मुक्ति है एक वेवहारा । ताहि सुमिरै जिव जग उवाग ॥१७१॥^१
 प्रम भगति जिन्हि केवम जाना । जोतिमंइय मह ताकर प्राता ॥१७२॥^२
 सचनाम जपहु येवहारा । विना नाम समुपा अयनाग ॥१७३॥^३
 एक नाम जो हिरदै साव । जनम जनम के पाप कटावै ॥१७४॥^४
 मत्तनाम सम ते अधिकारा । पूजहु देव का बज्रु विषाग ॥१७५॥^५

साक्षी

सचनाम अमित नहिं चाखेउ, नहिं पाएउ पैसाग ।^६
 कहे दरिया जग अरुमेठ, एक नाम विनु संसार ॥१८॥^७

बीपाई

सतगुर ध्यान छो सो लार् । मेटाहि जग जिय जम नहिं गार् ॥१७६॥^८
 जनम जनम के प्रादित्त जाव । निरकेवम होए छपमोक सिधाव ॥१७७॥^९
 करहु ध्यान सतगुर के सेवा । सचन मही का पूजहु दवा ॥१७८॥^{१०}
 निहततु छोडि जा ततु विषापी । सो हसा छपनाक सिधारी ॥१७९॥^{११}
 गुगा होए अमित सा पारै । पापु बसै किरि मोरि चत्ताव ॥१८०॥^{१२}

- १ (ख) (घ) मुक्ति है = मुक्ति । (ब) (ग) लार् = लार् । (घ), (ग) (ब) सुमिरै = सुमिर ।
- २ (घ), (ग) (ब) गायति = मक्ति । (घ) (ब) संर = संर ।
- ३ (ख) नाम = वेद । (घ) अयताग = अयोताग ।
- ४ (ब) (ग) (ब) जो = जो । (ग) (ब) क = क । (घ) के = के ।
- ५ (ग) (घ) त = त ।
- ६ (घ) दंड नाम अमी नहिं बारी । (ग) दंड नाम अमित नहिं बारी । (घ), (ग) दंड नाम अमित नहिं बारी । (घ) नहिं पाएउ पैसाग । (ग) नहिं पाएउ पैसाग । (घ), (ग) नहिं पाएउ पैसाग ।
- ७ (घ) (ग), (घ) (ब) अरुमेठ = अरुमेठ । (घ) अरुमेठ = अरुमेठ । (ग) अरुमेठ = अरुमेठ ।
- ८ (ग) (घ), (ब) लो = लो । (ग) (ग) मेःदि = मेःदि । (घ) मेःदि = मेःदि ।
- ९ (घ) के = के । (ग) (ग), (घ) (ब) सिपये = सिपये ।
- १० (घ) सिधारी = सिधारी । (ग) (घ) (ब) सिधारी = सिधारी । (घ), (ग) (घ) सिधारी = सिधारी ।
- ११ (ब) बारी = बारी । (ग), (ब) बारी = बारी । (घ) (घ) (ग) बारी = बारी ।

बेहि पूरै से देवता होई । पूरै तेहि जानै नहि कोई ॥५६३॥^१
 दोसठा पूरै सभ संसै मेटाई । तब हसा छपलोक समाई ॥५६४॥^२
 आए छपलोक बहुरि नहि भषना । जम जूग सुखसागर पवना ॥५६५॥^३
 पूख तहवां करिहै बहुतेरा । बहुरि ना करिहैं इह जग फेरा ॥५६६॥^४
 निम्नु गहि नाम प्रम लो लाव । दास होए तब जग समुझाव ॥५६७॥^५
 ठवहीं म्यानी सांच कहाव । जो करता के भेद बतानै ॥५६८॥^६
 मन म्यान एक रंग मिलावै । तब मन म्यान नाम एक पाव ॥५६९॥^७
 सतगुर सख प्रम निम्नु सारा । संत साधु मिलि करो विचारा ॥५७०॥

सन्द

गहु गहिर म्यान विचार ते सत सन्द में घुनि सावहीं ।^८
 इह जान व बहु वात बकटा सन्द नहि दिइ भावहीं ॥^९
 तहं भगम हूँ दरियाव दिलमें सख कोइ कोइ पावहीं ।^{१०}
 तहं कबल फूले भवर मूले ओति अति छवि छावहीं ॥१०॥^{११}

सौरठा

दुजा दोविधा शारि, एक नाम संसार में ।^{१२}
 भवजम जाहि न शारि, निम्बै नाम विचारिए ॥१०॥^{१३}

- १ (ख), (ग) पूरै = पूर । (घ) बेहि पूरे तेहि जानै नहि कोई । (ग) ज पूरे तेहि जानै नहि कोई ।
- २ (ग) पूरे = पूरे । (ग) संसै = संसि ।
- ३ (ख) नाहि = ना । (घ), (ङ) जम = जनम ।
- ४ (ख) (ग) (घ) करिहैं = करिहै । (ख), (ग) (घ) करिहैं = करिहैं । (ख), (ग) (घ) इह = इहा ।
- ५ (क) निम्नु नाम । (ख) (ग), (घ) (ङ) लो = लाव ।
- ६ (ख) जो = जो । (घ) क = के ।
- ७ (ख) एक = एक । (घ) एक = निम्नु ।
- ८ (ग) ते = तै ।
- ९ (घ) (ग) इह = इहा ।
- १० (ख) (ग) (घ) (ङ) छवि = भव ।
- ११ (ग) कबल = कमल । (घ) (ङ) फूले = फूलैवा । (घ), (ङ) मूल = मूलो ।
- १२ (ग) नाम = नामहि ।
- १३ (घ) (ङ) भव = भी । (ग) भव = भवो । (ख) विचारिए = विचारिडे । (ङ) विचारिए = विचारि ।

चौपाई

जीवन मुक्ति है एक वेवहारा । ताहि सुमिरै निब होए उवारा ॥१७१॥^१
 प्रम मयति जिन्हि केवल जाता । जोतिमंडल मह ताकर प्राणा ॥१७२॥^२
 सतनाम जपहु वेवहारा । विना नाम पसुमा भवनाग ॥१७३॥^३
 एक नाम जो हिरदै सार्व । जनम जनम के पाप कटावै ॥१७४॥^४
 मवनाम सब ते भयिकारा । पुरुनु देव वा करुनु विचारा ॥१७५॥^५

साक्षी

सतनाम भजित नहि पाखेउ नहि पाएउ पैसार ।^६
 कहे दरिया जग भरमेउ, एक नाम विनु संसार ॥१७६॥^७

चौपाई

सतगुरु ध्यान रखा सो सार्व । मेटाहि जरा जिव जम नहि सार्व ॥१७६॥^८
 जनम जनम के प्राणित जाव । निरखेवल होए छपलोक सिधाय ॥१७७॥^९
 करुनु ध्यान सतगुरु के सेवा । सकल गही वा पूजहु देवा ॥१७८॥^{१०}
 निहतनु छोड़ि सो सतु विचारी । सो हसा छपलोक सिधारी ॥१७९॥^{११}
 मृगा होए भजित सो पाव । प्रापु खसै फिरि मोरि अन्ताव ॥१८०॥^{१२}

१ (घ), (ग) मुक्ति है = मुक्ति । (ख), (ग) ताहि = ता । (घ), (ग) (ग) सुमिरै = सुमिरे ।

२ (घ), (ग), (ग) मयति = मक्ति । (ख) (ग) मंड = मे ।

३ (घ) नाम = देव । (घ) भवताग = भवोवारा ।

४ (घ), (ग) (ख) जो = जी । (ग) (ग) क = कै । (ग) के = का ।

५ (ग) (ग) ते = तै ।

६ (घ) ईस नाम धर्मा यदि जायै । (ग) ईस नाम धर्मिण यदि जायै । (ख), (ग) ईस नाम धर्मिण यदि जायै । (घ) यदि जायै पैसार । (ग) यदि जायै परमार । (घ), (ग) यदि जायै परमार ।

७ (घ) (ग), (ग) (ख) भरमेउ = भरमयो । (घ) नाम विना संसार । (ग) नाम विना संसार ।

८ (घ), (ग), (ग) सो = हो । (घ), (ग) मेटाहि = मेतिदि । (घ) जीव = जी ।

९ (ख) क = कै । (ग) (ग), (ग), (ग) सिधायै = सगारै ।

१० (घ) सिधारी = सिधार । (ग) (ग) (ग) सिधारी = सिधारै । (घ), (ग) (ग) (ग) सिधारी = सिधारै ।

११ (घ) खरी = खरी । (ग), (ग) फिरि = फिरि । (ग) (ग), (ग) खरी = खरि । (घ) खरी = खरी ।

ठिरगुन त बोए रंग है भीन्हा । प्रजर भमान सतपुसोहि भीन्हा ॥६०१॥^१
 सत सुक्रिब ना वीग पाव । सो हखा सतलोकहि धाव ॥६०२॥^२
 धमी तनु पिय निजु म्यानी । क्यहि ना होखै भवजल हानी ॥६०३॥^३

साली

नेम अपचार सटकरम नहीं, नहीं पाठ को पात ।^४
 चौला खंन ठहर नहीं, भीठा देव निदान ॥६०७॥^५

चौपाई

मीठा है परसाव हमारा । समुक्ति सिंह बोइ म्यान करारा ॥६०४॥^६
 पहिने मुस में प्रेम सगार्व । तव पीछे ल हाय उठाव ॥६०५॥^७
 ओ दाफा जन होए हमारा । ताहि देख परसाव बिचारा ॥६०६॥^८
 देख परवाना सत की दानी । करना-भ्रमित सेव मानी ॥६०७॥^९
 जोग सुगति निजु गहवे दानी । ताको बाल कर नहि हानी ॥६०८॥^{१०}
 प्रदव भवान सलाम जो करई । एके हाय सँ सिर पर धरई ॥६०९॥^{११}

- १ (ख) (ग) (घ) (ङ) ठिरगुन = त्रिगुन । (च) (छ) छतपुसोहि = छतपुसि ।
- २ (ख) (च) लोक्रहि पावै = लोक्रहि पाव । (घ) लोक्रहि धाव = लोक सिधावै ।
- ३ (च) (ङ) पियै = पीये । (ग) (घ) पियै = पीरै । (ग) म्यानी = म्याना । (ख) म्यानी = म्याना । (ख) मन्म दरम माया बिरगानी । (ग) (च) (ङ) मन्म दरम माया बिरगानी ।
- ४ (ङ) (ग) (घ) (ङ) करम = कर्म । (ख) (ग) (घ) (ङ) नहीं = नाही । (ख) (ग), (घ) (ङ) नहीं = नाही ।
- ५ (ग) (घ) (ङ) नहीं = नाही ।
- ६ (ग) सिदे = सिद्धि । (घ) (घ) सिदे = सिद्धि । (ङ) १७४ संस्कृत चौपाई की अर्थलिपि आरति है ।
- ७ (ग) पीछे लै = पीछे से । (घ) पीछे ल = पीछे से । (ङ) पीछे ल = पीछे से । (च) लै = ल ।
- ८ (घ) दाफा = दफा । (घ) हमारा = तुम्हारा ।
- ९ (ग) (च) (ङ) की = के । (घ) की = के । (घ) करना = करण । (घ) करना = कर्म । (घ) भ्रमित = भ्रमिण ।
- १० (घ) सुगति = सुक्ति । (घ) (ङ) सुगति = सुगति । (ग) गहवे = गहवे । (ख) गहव = गहवे । (घ) गहव = गहव । (ङ) गहव = गहव । (ग) (घ) (च) (ङ) ताको = ताके । (ग) (ग) करै = कर । (ग) (ग) (च) (ङ) नहि = नाही ।
- ११ (ग) (ग) (घ) (ङ) एके = एक । (ग) (घ) (घ) लै = लै । (ङ) हाय लै = हाव ।

हिंदु सुख हम एक जाना । जो एह मानै सखद निसाना ॥६१०॥^१
 सभं ओष साहब कर भई । बुद्धि विचारि ग्यान एह कहई ॥६११॥^२
 जो दाफा मह भाव जानी । तास नरम बहू जनि मानी ॥६१२॥^३
 मन पानी सभे के होई । हिंदु सुख दूजा नहि को^४ ॥६१३॥^५
 बरि मुरीद सत सखद दिवाव । कसिमा बुद्धि विचारि पदाव ॥६१४॥^६

साखी

किताव कारण हम समुनि के, राखा सखद प्रमान ।^१
 मुन कसिमा नहीं कहिए प्रलफ दपु निसान ॥६८॥^२

श्रीपाद

प्रलफ निसान दखे देखेसा । जो जानै सो बहू सखिसा ॥६१५॥^३
 निम्बिवास में गहा समारि । बलि धमति डाक तहं भाई ॥६१६॥^४
 मूर जाहर दीदम है साफा । बरस दोनार बनल सभ जाफा ॥६१७॥^५

साखी

जसे पून जो तोल में, वास जो रहा समान ।
 ऐसो सखद सजीवनी, सभ षट मुरति गियाए ॥४६॥^६

श्रीपाद

वेरं तीस तेत प्रसयाना । सखद चिन्ह प्रहसे विलगाना ॥६१८॥^७

- १ (ग) (ग) सुख = सुख । (घ) (र) लख = लख । (प) (र) ए = ए । (घ) सखद = सखद ।
- २ (ग) (ग) (घ) (र) लख = लख । (ग) (घ) ए = ए ।
- ३ (ग) दाफा = दाफा । (ग) लाम = लामो । (ग) (घ) (र) लाम = लाम ।
- ४ (ग) धन = धन । (ग) (ग) गले ब = गले लख । (घ) (र) गले ब = गले लख । (ग) (घ) सुख = सुख । (र) सुख = सुख । (ग) (ग) (घ) (र) नहि = नहि ।
- ५ (ग) (घ) मुरीद = मोदी ।
- ६ (र) शोषण = शोषण । (ग) (ग) (घ) (र) गमुक्ति ब = गमुक्ति ।
- ७ (ग) (ग) (घ) (र) नदी = नदी ।
- ८ (र) निमान = निमान । (ग) देग = देग । (घ) देग = देग । (ग) (घ) (र) मान = मान । (ग) (ग) बदे = बदे ।
- ९ (घ) निम्बिन = निम्बिन । (ग) दा = दा । (ग) (ग), (घ) (र) बदन = बदन ।
- १० (ग) (घ) (र) लन = लन ।
- ११ (ग) (ग) (घ) (र) लन = लन । (ग) (घ) गरीबी = गरीबी ।
- १२ (ग) (ग) ल = ल । (घ) (र) ल = ल । (ग) (ग) (घ) लख दि = लख दिखाना ।
 (घ) सखद दि = सखद दिखाना ।

श्रीपा सोक सतगुर की वानी । साज सोजहु पंडित ध्यानी ॥६३६॥^१
भेन निरसि सेहु सो ततुसारा । काया कोट बडा विसतारा ॥६४०॥^२

छन्द

ध्यान गमी बिषाह निर्मल सुरति मूल प्रकासहीं ।^३
तहाँ पदुमपत्र भर्ष भ्रमकै जोति प्रति छबि छावहीं ॥^४
तहाँ हंस बंस वसि मानसरवर, पुग सो मन भावहीं ।^५
कहे दरिया दरस सतगुर, ध्यान जो गुन गावहीं ॥११॥^६

सोरठा

भवजल धगम धपार, नाम बिना नहि वावहीं ।^७
सौ का नाम धधार जोँ धाहो भव तरन कहे ॥१०॥^८

श्रीपाई

तीनि सोक जम जान पसारा । बिना भेद नहि उठर पारा ॥६४१॥^९
गुह सभ्र जो पावे कोई । ताहि देखि भना जम रोई ॥६४२॥^{१०}
होए चेतनि कव मनि उजियारा । सभ्र सिषासन भना धसवारा ॥६४३॥^{११}

सास्त्री

धारख मंडल नवसंड प्रिणी, रामे सभ्र नितार ।^{१२}
उलटि पवन सटपझहि छेरे देखहु काया विधार ॥५२॥^{१३}

१ (ग) (ब) श्रीपा = श्रीप । (ब) (क) श्री = क ।

२ (क) कोट = कोठ ।

३ (ग) सुरति = धृति । (घ) (ग) (ब) (क) प्रकासहीं = प्रकाशहीं ।

४ (ग) तहाँ पदुमपत्र मे धपर भ्रमकै । (ब) पदुमपत्र तथा धरव भ्रमकै । (क) पदुमपत्र का भर्ष भ्रमक ।

५ (घ) सरवर = शरोवर । (घ) (ग) (क) पुग = पुग्ग । (ब) पुग = पुगही ।

६ (क) दरस = दर्श ।

७ (घ) भव = भी । (ग) धार = धारो । (घ) (ग) (ब) वावहीं = वाव्हिो ।

८ (घ) सौध = सौध । (ग) सौध = सौध । (ब) (क) साध = सध । (ब) धाहो = धाहो । (क) धाहो = धाहो । (ग) धार = धार । (घ) धार = धारो । (क) धार = धार ।

९ (क) धाहि = धा । (घ) (ग) उठरे = उठरे ।

१० (ग) (घ) गुह = गुह । (क) गुह = गुह । (घ) जो = जो । (ब) जो = जो । (क) जो = जो ।

११ (क) (ग) (घ) (क) सिषासन = सिषासन । (ग) (घ) धसवारा = धसवारा ।

१२ (ग) (ग) (घ) (क) प्रिणी = प्रिणिमी ।

१३ (ग) धार = धार । स्वीकृत धार में 'धटपझहि' टि । (ग) धर = धर । (क) धर = धर ।

हिंदु मुख्य हम एके जाना । जो एह मानै सबद निवाना ॥६१०॥^१
 सब जीव साहब कर प्रहई । बूझि विचारि ग्यान एह कहई ॥६११॥^२
 जो दाफा मह भाव जानी । तास भरम बेहू जनि मानी ॥६१२॥^३
 प्रन पानी सभे के होई । हिंदु मुख्य पूजा नहि कोई ॥६१३॥^४
 करि मुरीद सब सब निकाव । कतिमा बूझि विचारि पड़ाव ॥६१४॥^५

साथी

निकाव बारात हम समुझि के राखा सब प्रमान ।^६
 मुल कतिमा नहीं कहिए प्रलफ देनु निमान ॥४८॥^७
 चौपाइ

प्रसफ निवान देख दरबया । जो जान सो कई सन्धिसा ॥६१५॥^८
 मिस्त्रिवास में रूखा समाई । बलि चमेलि डाक तहं भाई ॥६१६॥^९
 नूर अहूर दीदम है साफा । दरम दीदार बखल सम बाफा ॥६१७॥^{१०}
 साथी

असे पून जो तील में, यास जो रूखा समाए ।

ऐसो सब सजोबनी, सम घट सुरति त्रिनाए ॥४९॥^{११}
 चौपाई

वेर सोस सेल प्रसगाना । सब्द चिन्ह प्रइये बिलगाना ॥६१८॥^{१२}

१ (ग) (ग) गुण्ड = गुहई । (घ) (ल) लठ = लक । (घ) (ल) एण = एण । (घ) गण्ड = गण ।
 २ (ग) (ग) (घ) (ल) लभ = लभ । (ग) (घ) लण = लण ।
 ३ (ग) दाय = दाया । (ग) लाग = लागे । (ग) (घ) (ल) लग = लागे ।

४ (ग) अंत = अन्त । (ग) (ग) गमे क = गम लक । (घ) (ल) लमे क = लम लक । (ग)
 (घ) गुण्ड = गुहई । (ल) गुण्ड = गुण्ड । (ग) (ग) (घ) (ल) नदि = नदि ।
 ५ (ल) बारात = बारात । (ग) (ग) (घ) (ल) समुझि क = समुझि ।

६ (ग) (ग) (घ) (ल) मदी = मदी ।
 ७ (ल) निवान = निवान । (ग) ला = ला । (ग) ला = ला । (ग) (ग) (ल) जान =

जान । (ग) (ग) बदे = बदे ।
 ८ (घ) भिन्न = भिन्न । (ग) रदा = रदा । (ग) (ग) (घ) (ल) जान =

९ (ग) (घ) (ल) लण = लण ।
 १० (ग) (ग) (घ) (ल) लण = लण । (ग) (घ) लणानी = लणानी ।

११ (ग) (ग) ल = वेर । (घ) (ल) ल = वेर । (ग) (ग) (घ) लन्द लि ट लणु लिगाना ।
 १२ (ल) सब्द लि ट अरम लिगाना ।

बोए धमहृद लागे जब ताया । मूर चढ़ाए चंद मनिमाया ॥६५१॥^१
 म्निम्लिन्त जंतर बाज भाया । पिये प्रेम होए मरवाला ॥६५२॥^२
 भजपा के एह भेद बतार्ह । पाप तसु तहं परगट पाई ॥६५३॥^३
 तंतु पाए निहसतु में जाई । तंतु में तंतु रखा छवि जाई ॥६५४॥^४
 तंतु कियारी जोत किताना । तंतुहि गह सख निरवाना ॥६५५॥^५
 विना तंतु नहि सख समोई । कह दरिया समुमें जन कोई ॥६५६॥^६
 सख नाम पखे नहि पाई । सुर नर मुनि सम चसे मुसाई ॥६५७॥^७

माथी

सत गुर साहव सांघ हूँ, बेसो सख बिचार ।^८
 डोरी गहै सख की तन मन डारो बारि ॥५५॥^९

चीपाई

सतगुर भागे तन मन वीज । प्रेम प्रीति रस क्यहि न छीज ॥६५८॥^{१०}
 मन की ममिता सम कुरि डारा । परसि सेहू सख निजु सारा ॥६५९॥^{११}
 सख एक में कहीं कुसाई । जौ सोह पंडित बुझो भाई ॥६६०॥^{१२}
 मूल दिहंगम डोरी भाई । रवि ससि पवन जो सुरति सम्राई ॥६६१॥^{१३}

- १ (क) बोए = बोझ । (घ) बोए = व्येए । (च) (ङ) जब लागे ताया । (ज) जन लागे ताया । (झ) चंद = चंद्र ।
- २ (ग) इह = एह । (ङ) म्निम्लिन्त । (छ) म्निम्लिन्त । (ज) (ग) बाज = बाजे । (घ) पीरे = पीए । (ग) प्रेम = प्रेम प्रेम । (घ) पीज प्रेम होए मस्त मन्तवाना ।
- ३ (ल) तसु = तसु । (ग) (घ) (ल) एह = एह ।
- ४ (ल) में जाई = म जाई ।
- ५ (घ) (घ) (न) कियारी = कियारी । (ग) (ग) जोत = जोते । (घ) (घ) तंतुहि = तंतु । (ग) (ग) (घ) गहै = गहै । (ग) निरवाना = निरवाना ।
- ६ (घ) विना = विना । (ग) (ग) (घ) (ल) नहि = नाहि । (घ) (ग) (घ) (ङ) कइ = कइ । (ग) समुमें जन कोई । (घ) समुमें जन कोई ।
- ७ (ग) पाप = पाप । (घ) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि । (घ) (ङ) कस = कसै ।
- ८ (ग) (ग) (घ) (ङ) बिचार = बिचारि ।
- ९ (ग) (ग) (घ) (ल) गहै = गहै । (ग) (ग) (घ) (ङ) डारो = डारो ।
- १० (ल) भागे = भाग । (ल) न = ना ।
- ११ (ल) पणि = पणि ।
- १२ (ङ) मण । (ग) (ग) (घ) (ङ) में । (ग) (ग) (घ) (ङ) कहीं = कहीं । (घ) (ग) (घ) (ल) तोड़ = तोड़ । (ग) बुझो = बुझु ।
- १३ (ग) दागी = नेगीब । (घ) (घ) (न) सुरति = सुरति । (ग) सुरति = सुरति ।

चौपाई

बारि भंजल जो परसै भाई । भोग किए पुनि सम रस जाइ ॥६४४॥^१
 द्रव चक्र के भेद है सारा । जो बूझै सतगुर के प्यारा ॥६४५॥^२
 सतगुर बिना होहि नापारा । भठग गुरु पारंगड पसारा ॥६४६॥^३
 गुरु सोई जो सीप बुझाव । सीप सोई साहब लौ सार्व ॥६४७॥^४
 बहूता गुरु बर्यही गुरवारि । सद्य बिना उन्हि भेद न पारि ॥६४८॥^५
 सय पार धनु दर दमामा । धर्म निधान पाए सुगधामा ॥६४९॥^६

सामी

धर्म निधान बजावहु, परगहु सद्य निजुसाग ॥^७
 जमर मान मरदिहै, जिन्दा सत कनार ॥१३॥^८
 भूरा सोइ संगहिण बूझ सीना मच ॥^९
 काएर कादर बिचनि घसे, मिला न वचन भमोल ॥१४॥^{१०}

चौपाई

बिनु भुग वचन सय एक थाला । बिनु पगु निगनि जगत में होला ॥६५०॥^{११}

- १ (ग) बंजल = बजल । (ग) जो = जा । (प) जो = जो । (ग) (र) पस = पसे । (प), (र) पुनि = तनि ।
- २ (ग) द्रव = द्रो । (ग) चक्र = च । (प) चक्र = च । (प) श = श । (ग) (ग) (प) (र) च = च । (र) भग (ग) (ग) (प) (र) साग ।
- ३ (ग) (प) (प) (र) का = का । (ग) (ग) (प) (र) भग = भग । (ग) परंगड पसारा = परंगड पस पसारा ।
- ४ (ग) (ग) (प) सीप गण गण गण गण ।
- ५ (ग) (ग) (प) (र) बहूता = बहूता । (प) गुरवारि = गुरवारि । (ग) (र) (र) न = ना ।
- ६ (र) गद = गद । (ग) तन = तन ।
- ७ (ग) भन = भन । (र) भने गणगु गण निगण । (ग) गण गण गण (प) पणगु गद निगण ।
- ८ (ग) (प) (र) मरदिहै = मरदिहै । () तन = तन । (ग) बिना गणगण = पणगु गण निगण ।
- ९ (र) भिना मच म गणगण । (ग) गण = गण । (प) बूझ = बूझ । (र) जो बूझ भेद भन भन । (ग) (ग) जो बूझ नि भन भन । (प) जो तन नि भन भन । (र) जो बूझ नि भन गण ।
- १० (प) (र) काएर कादर बीद । (ग) नि कादर गण । (र) नि न वचन भमोल ।
- ११ (र) एक = एक । (ग) (र) गि = गि । (ग) गण = गण । (प) (र) र = र

पारस परस मोती होई । मानसरोवर अररि ना कोई ॥६७२॥^१
 अररि सीप बहुते जग भरई । विनु पारस मोती नहि लहई ॥६७३॥^२
 सतगुरु मिस सो बम्ह पुनोता । सास्तर ग्यान पदा निम्बु गीता ॥६७४॥^३
 भव संसै में क्वहि न भटकै । जों जल बंस क्वहि ना भटकै ॥६७५॥^४
 हठ निग्रह करि भूसे जोगी । आसन बांधि ठवन रस भोगी ॥६७६॥^५
 तन साधत फिरि मए असाधी । पांच पचीस कहु कसे बांधी ॥६७७॥^६
 सुद्धम ग्यान निम्बु करा विचारा । मूस बिहगम निरमल सारा ॥६७८॥^७
 जैसे पपिहा बुद असमाना । भे निरसि कै उलटि समाना ॥६७९॥^८
 सत सव्य का बरहु बसाना । जों तरकस कसि लीज कमाना ॥६८०॥^९
 सव्य विमोए खेने जोगाना । सोई संत है निरमल ग्याना ॥६८१॥^{१०}

साम्नी

सतगुरु सव्य एह सांभ है, खोजहु निरमल ग्यान ।^{११}
 जौ हीरा यम सहै सोह की, अमर होए निदान ॥६७॥^{१२}
 चौपाई

इह धन बुद वात बहुतेरे । साधु असाधु कृमति सम फेरे ॥६८२॥^{१३}
 सुमति सोइ तहँ संत बिराजा । कृमति पांच तहँ मन मो राजा ॥६८३॥

- १ (ग) पारस परसे मोतीय होई । (घ) मानसरोवर अररि ना कोई । (व) मानसरोवर और न कोई । (ख) मानसरोवरि अररि ना कोई । (ङ) मान सरोवर अररि ना कोई ।
- २ (घ) (प) (ङ) अररि = अररि । (ग) अउरी = अररि । (ख) विनु = बिना । (ख) (ग) (ब) (ङ) नहि = नाहि । (घ) लहई = लहई ।
- ३ (ख) (ग) मिसै = मिसै । (घ) (ब) (ङ) सो = सो ।
- ४ (घ) मी नागर में क्वही भटकै । (ग) भव = भवो (प) में = मेंह । (ख) खी = खी । (ग) जी = जीवो । (ङ) बी = बी । (ग) (ङ) बंस = बंस । (ब) (ङ) ना = नाहि । (ग) अटक = अटके । (ब) (ङ) अटक = अटक ।
- ५ (ग) (प) मूस = मूस ।
- ६ (घ) (ग) (प) फिरि = फेरि । (ग) (ब) (ङ) मए = मया ।
- ७ (घ) (ग) (प) (ङ) सुद्धम = सुद्धम ।
- ८ (ब) (ङ) असमाना = असमाना । (ग) (ग) (ब) (ङ) कै = कै ।
- ९ (घ) (ग) बी = बी । (ब) जी = जी । (ग) (ग) (ङ) तरकस = तरकस ।
- १० (ग) खेन = खेन । (ग) खेन = खेन । (ब) (ङ) खेन = खेन । (घ) है = है ।
- ११ (प) (ङ) पर = पर । (ग) संभ है = सांभ है ।
- १२ (ब) खी = खी । (ङ) जी = जी । (ग) (ग) (प) सहे = सहे ।
- १३ (ग) (ग) न = पर । (ग) (ग) (प) (ङ) बहुतर = बहुतर । (घ) (ग) (प), (ङ) फेरे = फेरे ।

सतगुरु सदा तयहि सखि भावै । मूत्र पूल घमिन मूत्र पाव ॥६६०॥^१
 होए निरति तव मुरनि दयाव । माग नर तय परगट पाव ॥ ६३॥^२
 गगन मंडल विच मुगति संवागी । इगना गिगना मुगमन नाग ॥६६४॥^३
 साधहु सद्य जीव जग मुकुता । पात पुन्य कवहीं नहा नगना ॥६६४॥^४
 तेसी जुगति जा जान बोई । कह गिया निजु जोगी माई ॥६६६॥^५

दरिया सद्य विचागि ननक मन निमान ।^६
 जो सत सदा ना पाइए बाह कय गुर ग्यान ॥४६॥^७

परगटु सत सद्य गह वानी । कर विषक मा निगमल ग्याना ॥६६७॥^८
 बिनु परस नहि मूत्र भेटाई । पागिय जन नोड नर समाइ ॥६६८॥^९
 सगहि तनु विषागुं भाई । पानी पण जये हस दिनगाई ॥ ६६९॥^{१०}
 संक्षित जन पण भीतर च्छेइ । विवरन वरन इमि कर नहई ॥६७०॥^{११}
 हय तया सग मुय पाव । कात कुयुदि निरट नहि भाव ॥६७१॥^{१२}

- १ (ग) (घ) (ङ) मुग = मुग ।
- २ (ग) निरति = नर । (घ) निरति = निरति । (ग) (ङ) मुगति = मुगति ।
- ३ (घ) (ङ) मुगति = मुगति । (ग) (घ) (ङ) मुगमन = मुगमन । (ङ) मुगमन = मुगमन ।
- ४ (ग) (ग) (घ) (ङ) जीव = जीव । (ग) गग = गह । (घ) मुकुता = मुकुता । (ग) मुकुता = मुकुता ।
- ५ (ग) ग = ग । (घ) ग = गगो । (ग) (ग) जन = जन । (ग) (ग) (घ) कहे = कहे ।
- ६ (घ) (ङ) विचागि = विचागि । (ग) (घ) () ननक = ननक ।
- ७ (ग) (घ) (ङ) गे = ग । (ग) ग = गग । (ग) ग = गग । (ग) गे = गग । (घ) गे = गग । (घ) गे = गग । (घ) गे = गग ।
- ८ (ग) (ग) कय = कय ।
- ९ (ग) ग = ग । (घ) (ङ) ग = ग । (ग) (ग) ग = ग । (ग) (ग) (घ) (ङ) ग = ग ।
- १० (ग) ग = गग । (ग) ग = गग । (घ) (ङ) ग = गग । (घ) (ङ) ग = गग । (ग) (ग) ग = ग ।
- ११ (ग) (ग) (घ) ग = ग ।
- १२ (ग) (घ) ग = गग । (ग) ग = गग । (ग) (ग) (घ) (ङ) ग = ग ।
- १३ (ग) (ग) ग = गग । (घ) (ङ) ग = गग । (ग) (ग) (घ) (ङ) ग = ग ।

पारस परस मोली होई । मानसरोवर
 अउरि सीप बहुते जग भरई । विनु पारस
 सतगुर मिलै तो ब्रम्ह पुनीवा । सास्तर म्या
 भय संस मं कर्वाहि न भटक । जो जल कर
 हठ निग्रह करि मूले जोगी । भासन दा
 तन साधत फिरि भए बसाधी । पांच पर
 सुखुम ग्यान निजु करो विचारा । मूल वि
 जसे पपिहा बुद असमाना । भेद नि
 सत सब्द का करहु बखाना । जो तर
 सब्द विमोए खेये चोगाना । सोई

साखी

सतगुर सब्द एह सांघ छै, सो
 जो हीरा घन सह सोह की, घ
 चौपा

दह घन बुद घात बहुतेरे । न
 सुमति सोइ तह संत विराजा ।

विचारा ॥७१३॥
 * बटा ॥७१४॥
 १ छे विरोगी ॥७१५॥
 बुनि बनि साई ॥७१६॥
 ने दे न पाई ॥७१७॥
 न जम बाना ॥७१८॥
 हे नपुर के दासा ॥७१९॥
 सिभारि सोई ॥७२०॥
 न जम की पीरा ॥७२१॥

विच साए ।

जम गेबाए ॥६१॥

कहि करहुं निमेरा ॥७२२॥

- १ (ग) पारस परसे मोली होई । (घ) अ
 होई । (घ) मानसरोवरि अउरि ना *
- २ (ब) (घ) (ङ) अउरि = अउरि । (।
 (घ) (ङ) नहिं = नाहिं । (ख) र
- ३ (ख) (ग) मिल = मिल । (घ) (।
 ४ (घ) मी सागर में कवाही भटक ।
 (घ) जी = जेयो । (ङ) जी = जा
 (घ) भटक = भटके । (घ) (र)
- ५ (घ) (घ) मूल = मूल ।
- ६ (घ) (घ) (घ) धिनि = धेनि ।
- ७ (ख) (घ) (घ) (घ) सुखुम -
- ८ (घ) (ङ) असमाना = सना
- ९ (ख) (ग) जी = जेयो । (घ
- १० (घ) जेन = जेन । (घ) -
- ११ (घ) (घ) एद = एद । (।
- १२ (घ) जी = जेयो । (ङ)
- १३ (ग) (ग) द्र = एद ।
 (ङ) धेरे = धेरा ।

मान । (ब) जी गुर
 (घ) मिलै = मिले ।

श्री मन हसो तनु विचारी । पाप बोधे तन सदा मुखागी ॥६८५॥^१
 पशोस बोधे सध की होरी । हृषुम सदा गल बर तारी ॥६८६॥^२
 ग्यान की होरी प्रेम ग्य पीरै । गुर गमि ग्यान समनि कर पीर ॥६८७॥^३
 होण प्रेम तव मुग्धि समाना । निहमछर रुनि मास है म्याना ॥६८८॥^४
 दास कले पवन परवाना । भावन जान भा चिन्ह टिकाना ॥६८९॥^५
 मन पवन के एके सगा । ग्यान विचारि बुद्ध एह ग्या ॥६९०॥^६
 एक मन इहक समारा । छन महं निकट हाण निनाग ॥६९०॥^७
 मन क ग्य बुद्धे जनि काई । निगमन हाए निगन साई ॥६९१॥^८
 एह मन जान ज जास जहाना । सा मन कीन्हि हावहु निजु ग्याना ॥६९२॥^९

माथी

इह मन काजी इह मन पाजी, इह मन करता इह दखेम ।
 इह मन पाठै इह मन पंडिन, एह मन दुखिया एह नरम ॥६९३॥^{१०}

१. (ग) ही = ह्या । (ग) कथा = कथ । (घ) (ङ) कथा = कथ । (ल) (ग) बाप = बाप ।
२. (श) (ष) (ष) सध की = सधुधी । (ग) सध की = सधुधी । (ग) गल = ल । (ग) गल = गल ।
३. (श) (ष), (ष) ग्यान की होरी = ग्यान डरी । (घ), (ङ) मुग्धि क पीर = बुद्धि कर पीर ।
४. (ग) मुग्धि = मुग्धि । (ल) (ग) (घ) (ङ) निहमछर = निजमछर ।
५. (घ) (ग) कले = कथ । (ल) (ग) सा = सो । (ग) चिन्ह = चिन्ह । (ल) (ग) (घ) (ङ) टिकाना = टिकाना ।
६. (श) (ग) मन पवन क = मन पवना क । (घ) (ङ) मन पवन क = मन पवना क । (घ) एक म्या = एक रमा । (घ) (ङ) एक म्या = एक म्या । (ल) बुद्ध नर रंगा । (ग) बुद्ध एह ग्या । (घ) (ङ) बुद्ध नर रंगा ।
७. (श) एक = एक । (ष) (ष) एक = एक । (ल) (घ) इहक = इहक । (घ) (ङ) मंगरा = मंगरा । (ल) (ग) (घ) (ङ) होर = होर ।
८. (घ) (ङ) मनक = मनक । (ल) (ग) बुद्धे = बुद्ध । (घ) (ग) (घ) (ङ) जनि = जनि ।
९. (घ) (ङ) एह = एह । (ल) मनगल = मनगल । (ल) होमहु = होमहु । (ग) हत्यहु = हत्यहु । (घ) हत्यहु = हत्यहु ।
१०. (घ) (ग) एह = एह । (ग) एह = एह । (ल) (घ) एह मन करता दखेम । (ग) एह मन कया एह दखेम । (घ) एह मन करता एह मन दखेम ।
११. (ग) एह = एह । (घ) एह = एह । (ल) (घ) (ङ) दुखिया कथ ।

जो गुर म्यानी मिलै निजुसारा । म्यान गमी का करै विचार ॥७१३॥^१
 तीनि सोक हूँ मन कर ठाटा । मनहि विसंभर रोकै बाटा ॥७१४॥^२
 ऐसो जीवन जिवै जो जोगी । सख नाम तन रूँ विपोगी ॥७१५॥^३
 मुवै मा जीवै धावै नहि जाई । सम घट पावै चुनि चुनि खाई ॥७१६॥^४
 दसे कोइ नहि समे भोरावै । मुनि म्यानी कोइ मद न पावै ॥७१७॥^५
 वडे जोगी जोग विधाना । उहहु के घँचि मारै जम वाना ॥७१८॥^६
 कोइ नहि बाधे जम क फांसा । जो नहि होए सतगुर के दासा ॥७१९॥^७
 सतगुर के गति पावै कोई । जाए छपलोक सिघारै सोई ॥७२०॥^८
 गहै प्रेम होए निरमस सरीरा । भेटि जाए सम जम बी पीरा ॥७२१॥^९

सास्ती

सुमिरहु सप्त नाम गति, प्रेम प्रीति चित भाए ।
 बिना नाम नहि बाधिहीँ निभा जन्म गेवाए ॥६१॥^{१०}

बीपाई

सुमिरहु सोक सवार सवेरा । म्यान गुर गति करहुँ निमेरा ॥७२२॥^{११}

- १ (उ) जो गुर म्यानी = जो गुर म्यान । (ग) जो गुर म्यानी = जो गुर म्यान । (ब) जो गुर म्यानी = जो गुर म्यान । (ङ) जो गुर म्यानी = जो गुर म्यान । (ख), (घ) मिलै = मिले । (च) (ग) करै = करे ।
- २ (ग) मनहि = मगह । (उ) (घ) (ब) रोकै = रोके ।
- ३ (ख) (घ) (ङ) ऐसो = ऐसन । (ङ) जीवन = जीवनी । (उ) जीवै जो जोगी = जीवै जो जोगी । (ब) (ङ) जीव आ जोगी = जीवै जोगी । (उ) (घ) रहे = रहे ।
- ४ (उ) (ङ) मुवै = मुभै । (ग) भाव नहि जाई = भावै जाई । (उ) (घ) भाव = भावे ।
- ५ (ग) (घ) (ङ) दसे = देस । (ग) (ब) (ङ) मद = मद । (ग) (घ) (ङ) न = ना ।
- ६ (घ) वडे = वडे । (ङ) जोस विधाना = जोग आ विधाना । (ङ) उहहु = उहहु । (घ) (ब) घँचि = घँचि । (उ) (ग) (घ) मारै = मारे ।
- ७ (ग) (ग) (ब) (ङ) नहि = नाहि । (ब) (ङ) बाधे = बाधे । (घ) (ङ) जम के = जमके । (ग) (घ) (ङ) जो = जो । (ग) जो = जो । (घ) नहि = ना । (उ) (ब), (ङ) नहि = ना ।
- ८ (घ) के = की । (ङ) क = क । (ग) (ग) सिघारै = सिघारे ।
- ९ (ग) (ग) गटे = गटे । (ग) जाए = जाइ । (ग) (ग) बी = बी । (घ) (ङ) बी = बी । (उ) पीरा = पीरा ।
- १० (ग) बिना मगहि बाधिदो । (ग) (घ) (घ) निभा = निभा ।
- ११ (ङ) गहै = गहै ।

भवजल जल है मगम भपारा । कवन केवट गहिहै कखभारा ॥७२३॥^१
 जो भयहीं करि सेहु निमेरा । म्यान गुरु गति गहो खवरा ॥७२४॥^२
 जो सै बहु सतगुरु की बानी । साधि सको तव भवजल पानी ॥७२५॥^३
 बिना सब नहि होए उजियारा । बिनु सतगुरु नहि उतरहै पारा ॥७२६॥^४
 काया परवै मुख पद पावै । सतगुरु मिलै तव सब सभावै ॥७२७॥^५
 कवन सख छपलोकहि जाई । कवन सख से परवै पाई ॥७२८॥^६
 कवन तनु सै सुरति समाई । कौमे प्रेम खुवै मुख लाई ॥७२९॥^७
 कवन पवन गरजै ब्रह्म डा । कवन काल राए कहुं सठा ॥७३०॥^८

माथी

सार पवन श्री चौदह मत्र रीज म्यान विचारि ।^१
 छयो चक्र मन्दल कथन, करम भान सभ जाति ॥६२॥^२

चौपाइ

एक पवन सार निजु बानी । सोइ भेद निरखो तुम्ह म्यानी ॥७३१॥^१
 निरति सुरति में भावै जाई । जानै जोतिहि जाति समाई ॥७३२॥^२

- १ (क) ६३ संकटक चौपाई का पाठ नहीं है । (ग) भव = भवो । (घ) भव = भी । (ग) (घ), (न) कवन = कवन । (म) (क) गहिहै = गहिहै ।
- २ (ग) श्री = श्रौं । (ख) सेहु = लहु । (घ) गहो खवेरा = करहु निमेरा ।
- ३ (ख) अब सेहु छपल क बानी । (ग) अब सिधो सतगुरु की बानी । (घ) जो लहु छपल क बानी । (ख) (घ) भव = भी । (ग) भव = भवो ।
- ४ (ख), (ग) (घ) (क) नहि = नाहि । (घ) (क) उजियारा = उजियारा । (ख) (ग) (घ) नहि = नाहि । (घ) उतरहै = उतरै ।
- ५ (ग) परवै = फरवै । (ग) मिल = मिश्र । (ख) तव = तौ । (ग) तव = तो ।
- ६ (घ) जाई = जाव । (ग) से = सो । (ग), (घ) परवै = फरवै ।
- ७ (घ) कवन = कवन । (घ) (ग), (घ) सै = ल । (घ), (घ) (क) खुवै = खुए । (घ) छुए = मस ।
- ८ (घ), (घ) गरजै = गरज । (घ) गरजै = गरज । (ग) राए कहुं सठा = राए कर दहा । (घ) राए = रई ।
- ९ (घ) पवन = पवन । (घ) (घ) श्री = श्रौं । (न) श्री = श्रिया ।
- १० (घ) (घ) (क) छयो = छन । (ग) (घ) (घ) कथन = कथन । (ग) (क) करम = कर । (घ) (घ) कथनकथन मस जाति ।
- ११ (घ) एह = ऐ । (घ) (घ) निरखो = निरखो ।
- १२ (घ) मे = मी । (घ) जोतिहि = जोति ।

पुद्ग कर पवन घूर भी खंदा । चढ़ै गगत सम कर मनि फटा ॥७३३॥^१
 धमै नाम निनु जान छोई । पिबै प्रेम मुखारस छोई ॥७३४॥^२
 इगसा पिगसा मुलमन फीरै । साए कपट गगत गहि घेरै ॥७३५॥^३
 ध्व फर निनु करै निमेरा । सो जोगी घर पतुंभु सवेरा ॥७३६॥^४
 सत सख जो करै बखाना । सेत भजा निस दिन फहरना ॥७३७॥^५
 धावै भनमव देखु बिचारी । घाठ कंवल घर भीतर वारी ॥७३८॥^६
 नवो माटिका करहु निमेरा । पिबै प्रेम असखिअ भर डेर ॥७३९॥^७
 दसए द्वार रंघत कव वंदा । जहूँ कामिनि निति करै अनंदा ॥७४०॥^८
 इग्यारहवै म्यात खत्र सिर घरई । पुर्व होए जग मै भवतरई ॥७४१॥^९
 परहूँ भीतर बाहर धावै । पांचो तनु का पगवै पावै ॥७४२॥^{१०}
 तेरहवै तीनि गुन ते म्यारा । सख पुक निनु म्यात विचारा ॥७४३॥^{११}
 बीरहव धाबागवन ना होई । निजट सिगासन पतुंभु साई ॥७४४॥^{१२}

- १ (स) (क) कर = करि । (ल) (म) (न) भी = मर । (ल) (ग) चढ़ै = चढ़े ।
 २ (प) धमै = धमे । (घ) (ग) जान = जान । (ख) पिबै = पीये । (ङ) पिबै = पीमै । (च),
 (म) (क) छोई = छोई ।
 ३ (क) (क) इगसा = ऐगसा । (ख) पिगसा = पैगसा । (घ) (ग) (क) (क) मुलमन केरै ।
 (ङ) करै = करै । (ख) (घ) (प) ।
 ४ (य) ध्व = ध्वो । (ङ) फर = फर । (घ) खै = खो । (ग) (क) करै = करे ।
 (ङ) सवेरा = सेवेरा ।
 ५ (घ) जो = जो । (ख) जो = जो । (घ) (ग) कर = करे ।
 ६ (घ) (ग) म्याव = म्याव । (घ) (क) (क) अनमव = अनमी । (ग) भनमव = भनमी ।
 (ग) भाग कंवल = भस्त कंवल ।
 ७ (ल) नवा = नव । (ग) नवो = नवो । (घ) पिर = पीये ।
 ८ (घ) द्वार = द्वार । (ङ) द्वार = द्वार । (य) (घ) रंघत = रंघ । (घ) रंघत = रंघ ।
 (ख) (ग) (क) (क) खई = खई । (य) (क) कामिनि = काम । (ख) निति = नित । (घ),
 (ग) खई = खई ।
 ९ (ग) (ग) इग्यारहवै = इग्यारहवै । (घ) इग्यारहवै = इग्यारहवै । (ङ) इग्यारहवै = इग्यारहवै । (य)
 (ङ) पुर्य = पुर्य ।
 १० (ग) (घ) परहवै बाहर भीतर धाव । (ल) (ग) (क) (क) पांचो = पांच । (ल) का
 = का । (य) पाव = पाव ।
 ११ (ल) (घ) (क) (क) तेरहवै = तेरहवै । (य) (ङ) पुर्य = पुर्य ।
 १२ (ग) (घ) (ङ) बीरहवै = बीरहवै । (ग) धाबागवन = धाबागवन । (ग) ना = न । (घ),
 (ङ) सिगासन = सिगासन । (य) पतुंभु = पतुंभु ।

भवजस जल है भगम भपाग । कउन कवट गहिहँ करुमारा ॥७०३॥^१
 जो भबहीं करि सेहु निमेरा । ग्यान गुण गति गहा सबेरा ॥७०४॥^२
 जो लै बहु सतगुरु की बानी । तापि सबा नच भवजन पानी ॥७०५॥^३
 बिना सम्र नहिं हाए उत्रियाग । विनु सतगुरु नहिं उन उरिह पाग ॥७०६॥^४
 काया परबै मूल जत्र पाई । सतगुरु मिनै तव सब्र लखाई ॥७०७॥^५
 कवन सुख छनसोकहिं भाई । कवन सुख मे परबै पाई ॥७०८॥^६
 कवन ततु लै सुरति समाई । किये प्रम बुधै मुक्त लाई ॥७०९॥^७
 कवन पवन गरजे ब्रह्म ठा । कवन कान राए कह सदा ॥७०१॥^८

साम्नी

सार पवन धौ साहू मत्र, रीज ग्यान बिचारि ।
 दबा अक मन्दल कवल, करम बाज सम जाति ॥६०॥^९

चौपाइ

एक पवन सार निशु बानी । सोइ भेद निरखो तुम्ह ग्यानी ॥७३१॥^{१०}
 निरति सुरति में भाई जाई । जानै जातिहिं जाति समाई ॥७३२॥^{११}

- १ (क) ६८३ संकलक चौपाइ का पाठ नहीं है । (ग) मत्र = मत्रो । (घ) मत्र = मंत्र । (ग) (घ) (क) करम = करम । (ग) (घ) पाईहिं = गहिंहे ।
- २ (ग) री = रीति । (क) लोहु = लहु । (ख) सरो सबेरा = सतगुरु निमरा ।
- ३ (ख) उत्र सतगुरु सतगुरु क बानी । (ग) सबा निरो सतगुरु की बानी । (घ) री सतगुरु सतगुरु क बानी । (ख) (घ) मत्र = मंत्र । (ग) मत्र = मत्रा ।
- ४ (ग) (ग) (घ) (क) नहिं = नाहिं । (घ) (क) उत्रियाग = उत्रियाग । (ख) (ग) (घ) नहिं = नाहिं । (ख) उत्रहिं = उत्र ।
- ५ (ग) परबै = परब । (ग) मित्र = मित्र । (ख) तव = तौ । (ग) तव = तौ ।
- ६ (ग) जाइ = जाइ । (ग) म = मो । (घ) (घ) परब = परब ।
- ७ (ग) कवन = कवन । (ख) (ग) (घ) म = ल । (ग) (घ) (क) बुध = बुध । (ख) मुर = मुर ।
- ८ (ग) (ग) गरज = गरज । (घ) गरज = गरज । (ग) राए कह सदा = राए कर सदा । (घ) राए = राइ ।
- ९ (घ) पवन = दीन । (ग) (क) भी = भी । (क) भाई = भाई ।
- १० (ग) (घ) (क) दबा = दबा । (ग) (घ) (क) करम = करम । (ग), (क) करम = ६८ । (घ) (घ) बालकम गम जाति ।
- ११ (घ) एक = १ । (घ) (क) निरखो = निरखो ।
- १२ (ग) म = म । (घ) जातिहिं = जति ।

नाहि पचीस पवन तुम चीन्हा । प्रकृति गति विधरन नाहि कीन्हा ॥७५६॥^१

साक्षी

इह एको नहि जानहु कैसे होए निस्तार ।^२

मन ममिता मन् त्यागहु, मिमहि सम् निजुसार ॥६४॥^३

चौपाई

मूल गवाए तुम जाहु गवाग । पकरि पेढ तव पकरु द्वारा ॥७५७॥^४

भूनाहि भादि अंत मै सोई । मरन काल तव जसै विगोई ॥७५८॥^५

नाम क्रोध लोभ यइ भारी । पठित वेद कीन्ह विस्तारी ॥७५९॥^६

क्रोध मस्ट भए मुनि ग्यानी । क्रोधे कीन्ह मूल मं हानी ॥७६०॥^७

क्रोधे खवन छन मै गएऊ । सक बिभीसन पल महं मएऊ ॥७६१॥^८

क्रोधे आदौ गए नसाई । छपन कोटि जल परिमिन्ह भाई ॥७६२॥^९

क्रोधे गन गंधर्व सम गएऊ । पठित पढ़िजे क्रोधे मएऊ ॥७६३॥^{१०}

सोक वेद सहि जमपुर बासी । भगति माख ब्रम्हन सम भासी ॥७६४॥^{११}

मुक्ती द्वार जम मे मारी । नौ प्रह साए टगररी ठारी ॥७६५॥^{१२}

१ (ग) तुम = तुह । (ख) (घ) (ङ) तुम = तुम्ह । (च) प्रकृति = परकृति । (ग) नाहि = ना ।

२ स्वीकृतपत्र में कैसे क पहले पठित है । (ख), (ग) इह = एह । (ख) (ग) (घ) (ङ) नाहि = नाहि ।

३ (ख) मन् त्यागहु = मन् अगहु त्यागहु । (ग) मन् त्यागहु = मन् अगहु त्यागेहु । (ख) मिमहि = मिति । (ग) मिमहि = मित ।

४ (ग) तुम = तुह । (घ) (ङ) तुम = तुम्ह । (ग) पकरु = पकरोहु । (घ) अस्पष्ट । (ङ) लप = लप ।

५ (ग) (घ) (ङ) (च) मै = माहि । (घ) (ग) कर्ज = कर्जे ।

६ (ङ) क्रोध = क्रोधा । (ङ) किन्ह = किनह ।

७ (ग) मए = म । (ख) (घ) मे = मह ।

८ (ग) (घ) (ङ) (च) बिभीसन = भीषान । (घ) (घ) (ङ) मएऊ = मऊ ।

९ आदौ संख्यक ७३२ अक्षर ७३२ अक्षर । (ङ) क्रोधे = क्रोधा । (ग) जवा = जादो । (घ) (ङ) आदौ = आदु । (ङ) अष्टि = अष्ट । (ग) परमिन्ह = परीन्ह । (घ) परमिन्ह = परमिन्ह । (ङ) परमिन्ह = परमिन्ह ।

१० (ङ) क्रोध = क्रोधा । (घ) (घ) संघर्ष = संघर्ष । (ङ) संघर्ष = संघर्ष । (ङ) गएऊ = गऊ । (ग) क्रोध मएऊ = क्रोध मएऊ । (घ) (ङ) क्रोधे मएऊ = क्रोध मएऊ ।

११ (ग) वेद = वेद वेद । (घ) (ङ) लहि = लम । (घ), (घ) ब्रम्हन = ब्राम्हन । (ग) (ङ) ब्रम्हन = ब्राम्हन ।

१२ (घ) (ङ) मुक्ति = मुक्ति । (ख) द्वार = द्वार । (ङ) द्वार = द्वार । (घ) (घ) मारी = माग । (घ) मी = मी । (घ) नौ = नव । (ङ) मी = माव । (ग) साए = साव । (ग) (घ) (ङ) टगररी = गगरी । (ग) (ग) टारी = टार ।

महि मंडल सन राह यनारि । दीप दीप सुग व सोहारि ॥७४५॥^१
 चंद सुख तहं मनि जजियारा । नही जगहि गगन का तारा ॥७४६॥^२
 प्रखे विष्व सुख सुदर सोई । प्रजर प्रमर बैठे सम कोई ॥७४७॥^३
 चीनि सोन नस्ट जब सोई । ऐसा वेद बहै सम कोई ॥७४८॥^४
 तब एह शीव कहाँ रहि जाई । सोह जगह मोहि देहु दसाई ॥७४९॥^५
 साँधो पंडित मानो भाई । पढ़ि पढ़ि गीता भरय दुमसाई ॥७५०॥^६
 सम छोड़हु जग नी चतुराई । अंतकान फिरि जम वै साई ॥७५१॥^७

साखी

पंडित पढ़ि जनि मूलै कोई सोषु सुमति के मेव ।^१
 गीता म्यान विचारहु, करहु जम के सेव ॥६३॥^२
 चौपाइ

नाहीं दिससागर गृह देसा । नाहीं करि लेहु बचन विसेसा ॥७५२॥^१
 नाहीं प्रीति पिया से साई । नाहीं ग्यान गुरु गमि पाई ॥७५३॥^२
 नाहीं शीव सक्ति को म्याना । नाहीं आत्म चिन्हहु अपना ॥७५४॥^३
 नाहीं पांच तपु शुभ साधा । नाहीं तबो नाटिका राधा ॥७५५॥^४

१ (ग) (क) राह = रहा ।

२. (क) चंद = चंद्र । (ग) (घ) सुख = सुख । (घ) (ग) (घ) (क) तहं = तहां । (क) (घ) (ग) (क) मनी = मानी । (ग) जगहि = जगे । (क) का = की ।

३ (घ) अखे = अखे । (ग) विष्व = विश्व । (क) विष्व = विरिष्व । (ख) (ग) बेटे = बेटे ।

४ (क) (घ) (क) एह = इह । (ख) (क) शीव कहाँ = शीव कहाँ ।

५ (क) करय = कर्य । (ग) (घ) (क) पढ़ि पढ़ि गीता भरय दुमसाई = पढ़ि पढ़ि गीता भरय दुमसाई ॥ (ख) (ग) शी चतुराई । (ग) (घ) (क) पुमसाई = पुमसाई ।

६ (क) (घ) (क) सम छोड़हु जग नी चतुराई = पढ़ि पढ़ि गीता भरय दुमसाई ॥ (ख) (ग) (घ) (क) सम छोड़हु = सम छोड़ो । (ख) फिरि = फेरि । (ग) पै = पर । (घ) प = परि ।

(घ) मूल = मूल । (ग) (घ) मूलै कोई = मूलनी । (क) मूल कोई = मूलहु । (घ) (ग) (घ) (क) पुमति = पुमति । (ख) (घ) (क) के = का ।

७ रीष्ट पा में गीम्यान क परल कस्तार है । (घ) के = कर । (घ) के = क ।

(क) प्रीति = प्रीति । (ख) (ग) म्यान गु = म्यान गुम । (क) म्यान गु = म्यान म गु ।

(ग) (घ) सक्ति = सक्ति । (ग) आत्म = आत्म । (ग) (ग) (घ) (घ) गुम = गुम । (घ) (क) (घ) मरो = मर । (घ) नाटिका राधा = नाटिका राधा ।

सो माया रावन घर गएऊ । बुधि ब्रह्म ग्यान समे वसि भएऊ ॥७७५॥^१
धन मंह रावन भए विभंसा । कुल नहि राखा एको बंसा ॥७७६॥^२

साखी

मन की ममिता बाल छै, करन करवै जानि ।^३
घोर मिलाव गरद में रावन की भइ हालि ॥६६॥^४

चौपाई

बिन्हि ब्रम्हा कहि वद सुनाई । ताके अंत ब्रम्हो नहि पाई ॥७७७॥^५
कोटिन्हि ब्रम्हा गए भसाई । कोटिन्हि इन्द्र मव खलि भाई ॥७७८॥^६
केले क्रिस्न जगत भरमाई । गोप सखा संग गाम खराई ॥७७९॥^७
मुख मुरली लिए आपु बजाई । विदावन वसि छान सुनाई ॥७८०॥^८
केले कंस वध उन्हि कीन्हा । कछक बार कुबचिहि मन दीन्हा ॥७८१॥^९
केले संकर जाग सभ करहीं । उपजी विमसी देह सभ खरहीं ॥७८२॥^{१०}

साखी

कहै दरिया सुनु पंडित, इ ह करता के भेव ।^{११}
पपस फूल बाहे पूजहु सुमरत कव सुखदेव ॥६७॥^{१२}

- १ (ब) (क) गएऊ = गऊ । (प) (क) समे = सम । (ख) (ग) (प) (क) भएऊ = भैऊ ।
- २ (ब),(क) मंह = मे । लन्हि = ना । (ख),(क) राखा = राखिन । (ग) (ब) राखा = राखिन्ह ।
३. (प) (ब) (क) करम = कर्म ।
- ४ (प) (ग) (प) (क) भी = भी । (ब) (क) मिलाव = मिलाधे । (प) (क) गरद = गर्द । (प) में = मो ।
- ५ (क) बिन्हि = बिन्ही । (प) (ग) कहि = कइ । (प) (ग) (प) (क) ताके = ताके । (ग) ब्रम्हो = ब्रम्हे । (ग) (ग) (ब) (क) पछि = पाछि ।
- ६ (ग) (ग) बाटिन्हि = कोटिन्हि । (क) ब्रम्हा = बरहमा । (ख) (ग) कोटिन्हि = कोटिह । (क) कोटिन्हि - कोटिन्ह ।
- ७ (क) क्रिस्न = क्रिस्न ।
- ८ (प) आपु बजाई = आपु बज जाई । (क) विदावन = विदावन । (ग) ७५ संकस्य चौपाई की अर्धानी अर्थात् ।
- ९ (ग) (ग) (ब) (क) वध = बधन । (प) (क) कछक बार = क्यबार । (ग) क्यक बार = क्यउपार (ब) क्यक बार = क्यउपार । (ग) कुबचिहि = कुबरी ।
- १० (ग) विमयी = बनी ।
- ११ (प) पंडित = पंडी । (ग) (ग) के = क्य । (ब) (क) के = कर ।
१२. (क) बाहे = बाटे । (ग) सुमरत = सुमिर । (ग) सुखदेव = सुखदेव । (ब) (क) सुखदेव = सुखदेव ।

पढ़ि पालंड पयस की पूजा । घाउमदेव भजनि ना दूजा ॥७६६॥^१

साखी

तव तोहि जानौ पंडित, मुक्ति कही देहु घाए ।^२

छप लोक की वाते कहवहु तव मोर मन पतिघाए ॥६९॥^३

चौपाइ

पोषी पत्रा गोता गावहु । भेद नाहि तइ वेद भूनावहु ॥७६७॥^४

भक्त पाप अपन सिर नीर । अपनी मुक्ति बड़ा सुम कोर ॥७८॥^५

काटिन्हि ब्रम्हा सोवत भुनाना । छपलोक नहि सुरति समाना ॥७६८॥^६

सुरति चिन्ह बिनु मए दिवाना । मन परबै बिनु आपु भलाना ॥७७०॥^७

तुलसी ताकर मंत्र शिवाये । राम ताकर से जग भग्माये ॥७७१॥^८

माया पक्ष परमै सम नाई । निरमै इह सोरै नहि सोई ॥७७२॥^९

ए माया बनि छगो वनाई । माया से जग घनि घुनि लाई ॥७७३॥^{१०}

माया त सकल वस कीहा । माया की सीता नहि चीन्हा ॥७७४॥^{११}

(अ) (प), (व) (क) की = का । (ख) बन = राम । (ग) भजति = भोगि । (घ) (ग) (ङ), (च) ना = नाहि ।

२. (घ), (ग) (घ), (ङ) जानी = जानो ।

३ (ग) कश्चु = कथा । (घ) कश्चु = कश्चु । (ङ) मोर = मोरो ।

४ (ग) (ङ) पत्रा = फल । (ग) गीता गावहु = गीता सम गावहु । (ग) भेद नाहि तो वेद भूनावहु ।

५ (अ) भक्त = श्रवण । (घ) (ग) (ङ) (च) धम्ये = भ्रान्त । (घ) (ग) भानी = जान । (घ) मुक्ति = मुक्ति । (ग) (ङ) (च) सुम = सुम्ह ।

६ (ग) (ग) (घ) काटिन्हि = काटिन्हि । (ङ) काटिन्हि = कोटिन्हि । (घ) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि । (ग) सुरति = सुरति ।

७ (ग) सुरति = सुरति । (ग) फिन्हि = चिन्हे । (ग) मए = मई । (ग) मए = म । (ग) (ग) (घ), (ङ) शिवाया = शिवाया । (ग) (घ) परब = परब । (घ) आपु = आप ।

८ (ग) (घ) (घ) (ङ) ताकर = ताकर । (ग) दिहाव = मुनाव । (घ) दिहाव = विद्याव ।

९ (ग) माया = मया । (ग) (घ) (ङ) परमै = परमै । (ग) भिग्म = भिग्म । (ग) भिग्म = भिग्मे । (ग) (ग) इह = एह । (ग) लात्र = लोत्र । (ग) (घ) (ङ) लाई = लोघे । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।

१० (ग) (घ) ए = इह । (घ) (ङ) ए = एह । (घ) से = त । (ग) (घ) (ङ) स = सो ।

११ (ग) (घ) (घ) (ङ) वस = वसि । (ग) (ग) (घ) की = का । (ङ) की = का । (ग) (घ), (ङ) नहि = नाहि ।

घरि घरि रहे जोति की प्राणा । सो नर जइहँ जम के प्राणा ॥७६२॥^१
 पुर्ब पुगन जिन्हि हुंस उवारा । ताको लोख ना करहि गवारा ॥७६३॥^२
 भटका मिट ना भूस भेटाई । ऊच नीच कहि गए भसाई ॥७६४॥^३
 गुर गमि ग्यान गमी नहि कीन्हा । नाहि गुरु सतगुरु कहू खीन्हा ॥७६५॥^४
 मोह कहीं जो कहहि कबीरा । दरियायास पद पायो हीरा ॥७६६॥^५
 माहव परबै दीन्ह देखाई । तात लोक बसा समुझाई ॥७६७॥^६
 मूठ बात जनि जानै कोई । सब्द विचार करहि नर लोई ॥७६८॥^७
 जम जगति बडा उतपाता । करै अचानक जीव कहू घाता ॥७६९॥^८
 मासु पिठा बौड संग न लागे । मुझला पुर्ब नारि जिव त्यागे ॥८००॥^९
 नाही माया रोइ बिचारी । जइहँ प्रमहा भरि भरि घारी ॥८०१॥^{१०}
 मुझला कुरमा नरक के देखी । मत्त मुक्त लाए मासु सम लेखी ॥८०२॥^{११}
 छोटि जाति के करम विधाना । भरि क्राएक नरक समाना ॥८०३॥^{१२}

- १ (क) (न) रहे = रई । (घ) (ग) (ङ) खी = खी । (च) खी = खी । (ज) (ग) (घ) खई = खई । (घ) (ल) जम के = जमके । (ल) प्राणा = प्राणा ।
- २ (ग) (ङ) पुर्ब = पुर्ब । (घ) जिन्हि = जिन्हि । (ग) ताको = ताको । (ग) ना = ना ।
- ३ (ग) भटका = भटका । (घ) मिट = मिट । (ग) मिट = मिट । (घ) (ङ) मिट = मिट । (घ) (ग) (घ) (ङ) भूस = भूस । (घ) (ग) (घ) (ङ) भे-सा = भे-सा ।
- ४ (ग) (घ) (ङ) (ङ) नाहि = नाहि । (ज) (ग) (घ) (ङ) गुरु = गुरु । (ज) (ग) (घ) (ल) मत्तगुरु = मत्तगुरु ।
- ५ (घ) (ग) (ङ) (ङ) कहीं = कहीं । (घ) पायो = पायो । (ग) पायो = पायो । (घ) पायो = पायो ।
- ६ (ग) माहव = माहव । (घ) (घ) परब = परब । (ज) (घ) (घ) (ल) तात = तात ।
- ७ (घ) मूठ = मूठ । (ज) (ग) (घ) जान = जान ।
- ८ (घ) जगति = जगति । (घ) (ग) (घ) बडा = बडा । (ग) (घ) कर = कर । (ज) (ग) खई = ख । (घ) खई = ख ।
- ९ (घ) मायी = मायी । (ग) (ग) (घ) (ङ) नाहि = नाहि । (घ) रोइ = रोइ । (ल) रोइ = रोइ । (ग) (ग) (घ) (ल) बिचारी = बिचारी ।
- १० (ग) जइहँ = जइहँ । (घ) जइहँ = जइहँ । (ज) (घ) (घ) प्रमहा = प्रमहा । (ल) प्रमहा = प्रमहा ।
- ११ (ग) (ग) कुरमा = कुरमा । (घ) सम = सम ।
१२. (घ) जाति = जाति । (घ) शक्ति = शक्ति । (ग) करम = करम । (घ) (घ) (ल) भरि = भरि । (ग) भरि = भरि । (घ) भरि = भरि ।

चौपाई

पंडित नाम कृपय विचारा । सत नाम है प्रम भवारा ॥७८३॥^१
 सत सारथि करि सीसै भवना । जनम जनम के मेदु कल्पना ॥७८४॥^२
 साहि खोजो जो खोबाहि कबीरा । वेठि निरंतर सीसै बीरा ॥७८५॥^३
 जनम जनम के घोसा मिटि जाई । जाए छपनोक बहुरि नहि भाई ॥७८६॥^४
 केठे ब्रम्हा बाहि नसाई । इप्र केसको बिनसाहि भाइ ॥७८७॥^५
 अइहहि सेस सहस्र मुख बचना । तीनि लोक की ईहै रचना ॥७८८॥^६
 बसिहैं संकर जोग बिसारी । बलिहैं क्रिस्त बाल मुरारी ॥७८९॥^७
 जउहैं जोगी जति सम कोई । तीनि लोक कास बसि होई ॥७९०॥^८

सखी

कहे हरिया मुनु पंडित, दक्षी सब विचारि ।
 जो जइहैं भभे सोफ महं, साहब सुरति समारि ॥६८॥^९

चौपाइ

दूकत मुन नर मुनि सम हारे । भादि भव नहि कहे बेचारे ॥७९१॥^{१०}

१ (ख) है = एह । (ग) प्रेम = पेरम ।

२ (ख) (ब) कल्पना = कल्पना । (ग), (घ) जनम जनम = जन्म-जन्म । (ङ) जनम जनम = जनमे जन्म । (च) (छ) के = क ।

३ (ग) निरंतर = निरंतर ।

४ (ब) क = का (ङ) के = क । (उ) (ग) (घ), (ङ) मिटि जाइ = मिति जाई । (घ) (घ), (ङ) महि = माहि ।

५ (ख) बाहि = जाए । (ङ) इप्र = इतर ।

६ (ग) (ब) बनेघो = बनेघो । (ग) अइहहि = अइहै । (ङ) (घ) (ब), (ङ) बी = बा । (ग) (घ) इहै = इहै । (ग) इहै = इहै ।

७ (ख) (ग) बलि है = बलिहै । (घ), (ङ) बलि है = बलिहै । (घ) (ङ) क्रिस्त = क्रिस्त । (ग) पाल = जो बाल ।

८ (ग), (घ) जउहैं = जउहैं । (ङ) जउहैं = जउहैं ।

९ (ख) कहे हरिया मुनो भवना पंडित । (ग) पंडित = पंडित ।

१० स्त्रीकृत पाठ में कहे क पहल जो नर पाठ है । (घ) नर = जन । (ग) (ब) जउहैं = जाही । (ग) जउहैं = जाइ । (ङ) जउहैं = जाइ । (घ) (ङ) जनमोक = जन्मोक्त ।

११ (घ) (घ) (ङ) हार = हार । (ग) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि । (ग) ब = ब । (ङ) कहे = कहे । (ग) बेचारे = बिचारे । (ग) (घ) बेचारे = बिचारे । (ङ) बचारे = बचारे ।

दरिया-मन्त्राली

मनन भारी जिना वीपक नाम मनि विखरावहो ।
कहे दरिया दाग दिन में सप्तवि मन लपटावहीं ॥११॥^१

सोरठा

अंधियारे वीपक वीजिए तब होसै परनास ।
ध्यान समुक्ति नर सीजिए उतरि जाए भवपार ॥११॥^२

बौपाई

मानुष जन्म है सुफल अनंदा । जो जन परै ना अम के फंदा ॥८१२॥^३
कहत सुनत सब जाह नसाई । मन परषै विनु मूस गवाई ॥८१३॥^४
नाम दिना बस जीवन कहावै । जो नहि गुर गमि ग्यान सखावै ॥८१४॥^५
संत सोह सीतल सत बानी । अमित प्रेम पित वाए ग्यामी ॥८१५॥^६
मस्तक मुकुटा जाक होई । मस्तगर्यद बहाव साई ॥८१६॥^७
ताके पारस सिर मुक मागा । मैं नहि निबट रहै उह जागा ॥८१७॥^८
विनु मुकुटा मस्तक है हीना । सा नर ऐसा सत गुर बीना ॥८१८॥^९
भयंग सोइ जाके मनि उजियारा । जाके तेज वीपक भव टारा ॥८१९॥^{१०}
रहै धमीप बोए सनमुक्त सोई । अतरि फिरै सब कषुघ्रा होइ ॥८२०॥^{११}

- १ (ख) मनन = भीन । (घ) अमल = अमोल । (ल) (व) (श) (ष) मारि = मारि ।
- २ (ख) (ग) (घ) दाग = दगा । (ङ) लपटावहीं = पकटावहीं ।
- ३ (ए) अंधियारे = अंधिमारहि । (ए) अंधियारे = अंधिप्रार । (ए) (अ) वीजिए = वीजिये ।
(ग) (ग) (घ) (ङ) बरखस = परमान ।
- ४ (ब) (द) वीजिए = वीजिये । (ए) (ब) मष = भी । (ग) मष = मषो ।
- ५ (ङ) जो जन = जोरन । (ग) (ग) परै = परे । (घ) (अ) ना = इह ।
(अ) क = कै ।
- ६ (ल) (घ), (अ) जाह = जाए । (ग) जाह = जाहि । (ए) (ग) (घ) परष = परष ।
- ७ (ग) जो = इह । (ग) जो = इहो । (घ) (ग) जो = जी ।
- ८ (ल) बोए = बोए ।
- ९ (घ) मुकुटा = मुकुट । (ग) (घ) जाक = जाकह । (अ) जाक = जाक । (घ) मस्त =
मस्तक ।
- १० (ख) ताके = जाके । (ग) (घ) सिर = सिरै । (अ) सिर = सिरि । (ल) भ = मष ।
(ग) (घ) रहै = रह । (ल) रह = बाए ।
- ११ (घ) विनु = विना । (ग) मुकुटा = मुकुट । (द) पना = लेके ।
१२. (ग) (घ) नर दाग = भयना । (घ) (ल) मस्तग = भी धार ।
- १३ (ग) (घ) रह = रहे । (ल) कोर = भाए । (ग) (घ) (न) अतरि = अतरि । (ग) अतरि =
अति । (न) (घ) (घ) फिर = फिरे ।

बड़े जीव मछरी सम खाड़ी । मुझसा पितर नरक का जाही ॥८०४॥^१
 मारिह हिरनी सली वगेरा । मारि मारि सम खेनिह भहेरा ॥८०५॥^२
 मामु एक दूजा नहि होई । समुष्टी भन भरपै नहि कोई ॥८०६॥^३
 भाषा पाप ब्रम्हन कह्यं यता । राह दक्षाए करै बिसवाता ॥८०७॥^४
 हिंदू तुलक दुनो भुवाना । दुनो बादि बिबादि बिलाना ॥८०८॥^५
 बोए हिरनी बोए गए जो लाई । सोहू एक दूजा नहि भाई ॥८०९॥^६
 ब्रम्हन से बिलकक कै साजा । कल्प कोटि लै होए सकाजा ॥८१०॥^७
 मोलना दोजल जार में भाई । अवरिस जवर उहि बहुत सताब ॥८११॥^८

छन्द

भरमि भव भवसागरे गुन ख्यान गमि नहि पावहीं ।^१
 पढ़ि वेद बिलेख पुरान को गति दरस दया नहि भावहीं ॥^२

- १ (घ) बड़ बड़ जीव मछरी खाड़ी । (ग) बड़ बड़ जीव मछरी सम खाड़ी । (ख) (ङ) बड़े = बड़े । (ल) (ग) (ब) (ङ) से = से ।
- २ (घ), (ग) (ङ) हिरनी = हरिनी । (घ) हिरनी = हरनी । (ख) खेनिह = खेन ।
- ३ (घ) एक = एक । (घ) (ब) (ङ) नहि = नाहि । (घ) (ग) भरपै = भरपे । (घ) भरपै = भरपे ।
- ४ (ख) (ब), (ङ) भाषा पाप ब्रम्हन क यता । (ङ) भाषा पाप ब्रम्हन नहि बरता । (घ) = कर = करे । (घ) पाठ स्वीकृत किया गया है ।
- ५ (घ) हिंदू तुलक बाद दुनो भुवाना । (ग) हिंदू तुलक दुनो भुवाना । (ब) हिंदू तुलक इमि दुनो भुवाना । (ङ) हिंदू तुलक इमि दुनो भुवाना । (घ) (ग) दुनो बादि बिबादि बिलाना । (घ), (ङ) दुनो बादि बिबादि बिलाना ।
- ६ (घ), (ग) हिरनी = हरिनी । (घ) (ङ) हिरनी = हरनी । (ख) (ङ) बोए = बोए । (घ), (ङ) बोए = बोए । (ख), (ग) सोहू = सोहूभा । (ङ) सोहू = सोहू । (ख), (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।
- ७ (घ) (ग) (ब) (ङ) ब्रम्हन = ब्रम्हन । (घ), (घ) (ङ) से = से । (घ) बिलकक = बिलकक । (घ) (ङ) बिलकक = बिलकक । (ब) बिलकक = जो बिलकक । (घ) (घ) क = क । (घ) से = से । (ग) (ब) (ङ) लै = लै । (ख) (ग) (घ) (ङ) होए = होए ।
- ८ (घ), (ग), (घ) (ङ) मोलना = दोजल ।
- ९ (घ), (घ) (ब) (ङ) भरमि = भरमि । (घ) भर सागर = भी सागर । (घ) भर सागर = भी सागर । (घ) (ग) गुन = गुन । (घ) (घ) (ब) (ङ) पढ़ि = पढ़ि ।
- १० (घ), (ङ) दरस = दर्स । (घ) भावहीं = भावहीं ।

कष्ट फिर हम बड़ा कुसीना । घरबा में दुरविति नहि चीना ॥८३०॥^१
मूठ कहे सम मूठ सुनाब । मीगुन वाम जनेऊ नाब ॥८३१॥^२

साक्षी

सांघो पंडित मानवा, सत सीम यासीस ।^३

सत नही स्वारथ तक सोई बड़ा बकील ॥८०॥^४

चौपाई

सत घरती है सत धकासा । सते भगति प्रेम परमासा ॥८३२॥^५
ताको सत नर कर बसाता । पपन छोड़ि समुक्त जो ग्याता ॥८३३॥^६
ना कसु वाम ना कसु राई । ठाक पुत्र मिस का भाई ॥८३४॥^७
जो कोइ पंडित होख भाली । भेद समुक्ति से निरमल बानी ॥८३५॥^८
मेरे कहे जो मानहु प्राली । सत सख नहि होखै हाली ॥८३६॥^९
धम सोक जहं भय नहि जानी । होय हिग तव निरमल बानी ॥८३७॥^{१०}

- १ (ख) चिरे = चिर । (घ) निर = चिरे । (प) (क) चिरे = चिरई । (द) (ग) क्वा = कवे ।
(ग), (क) कुसीना = कुसीना । (घ), (ग) (ब) (क) क्वा में = कर में । (द) (ग)
(घ) (क) नहि = नाहि । (ग) (क) चीना = चीना ।
- २ (द) (घ) (प) क्वा = कवे । (ग) सुनाब = सुनावे । (द) (ब) (क) मौ = मव ।
(ग) बी = भवो ।
- ३ यको = याव । (ग) मानवा = मानव । (ग) मानवो = मानवो । (ब) मानको = मानको ।
(घ) लत = लते । (द) गता = गता । (ग) (ग) (ब) बालीत = बालीत ।
- ४ (द) सत नाली नाली ताक । (घ) सत बस धादि स्वरथ ताके । (प) सत नाली ताके
स्वरथ । (क) सत नाली ताके स्वारथ । (ग) (ब) (क) (क) बकील = बकील ।
- ५ (ग) (ब) गले बगै है । (घ) सत बगै है । (क) गले बगै है । स्वीकृत पाठ में लो
मर्मादि क परत ईद है । (ग) क्वा = कवे । (घ) भगति = भक्ति । (ख) क्वा = कवे ।
(ग) (ब) (क) = कर = कवे ।
- ६ (घ) समुक्त = समुक्ते । (घ) समुक्त = जो समुक्ते । (घ) जो = जेव ।
- ७ (ग) म किगु वाम ना कसु राई । (घ) ना = ने । (प) ना कसु बोस जो कसु ।
(क) ना कसु बाम ना कसु राई । (क) कसु ताके पुत्र मिस का भाई । (द)
(घ) कसु ताके पुत्र मिस का भाई । (घ) (क) कसु छोड़ि पूरे का मिस भाई ।
- ८ (ग) से = सेव । (क) स = से ।
- ९ (क) कवे = कवे । (ग) बी = बव । (ग) बी = जो । (ग) (ग) (द) (क) नहि = नाहि ।
- १० (ग) क्वा = कवे । (ग), (घ) (प) (क) भय = भ । (घ) नहि जानी = नाहि हो जानी ।
(ग) बानी = भाषा ।

संत सोई मनि मस्तक भूना । ग्यान रतन बन्धीं नहि भूना ॥८२१॥^१

साखी

दरिया मगत कहाए सोई, जाके मनि उजियार ।^२

घठरि भग्म से भठि मुए, निरमै नाहि गंवार ॥६६॥^३

धौपाई

परस नाम कहाव सोई । जो परसै सो बचन होई ॥८२२॥^४

घठरि परसै सम सील बखाना । ताको बविजन करै बखाना ॥८२३॥^५

सतगुरु सब वषन जेहि लागे । सो जन संत है सुरनि सुभागे ॥८२४॥^६

नारी सोई जो नर में बोलै । पिय की सेवा बचन नहि बोलै ॥८२५॥^७

घठरि कतेको बचन गवाव । ताको सेवा बविजन लाव ॥८२६॥^८

सकल जीव कहूँ कहूँ बुझाई । पंडित के घर सोषन भाई ॥८२७॥^९

धपन ब्रम्हन विस्तो होई । घर में साकठ मेहरि सोई ॥८२८॥^{१०}

मामु साए संग पूत जाई । ताके मुख खुवन गहि पाई ॥८२९॥^{११}

१ (प्र) (ग) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।

२. (ग) मगत = मग्न ।

३. (ङ) स्वीकृत पाठ में 'मठि' की जगह 'भठि मठि' है । (ख) अजरि भरमि भकि मुव । (ग) औरि भरमि से भगि मणि मुए । (घ) औरि भरमि सम भठि मणि मुव । (ङ) अजरि भरमि सम गणि मुए । (ग) निरम = निरमे । (घ) (ङ) निरम = निर्मै ।

४ (ग) (घ) परस = परसे ।

५ (ग) अजरि = अजर । (ग) अजरि = अजरि । (घ) (ङ) अजरि = अजरि । (ग) (घ) परस = परसे । (ङ) परस = परसे । (घ) (ङ) ताये = ताके । (प्र) (ग) करै = करे । (घ) (ङ) कर = करो ।

६ (ग) (ग) (घ) (ङ) सुरनि = सुरनि ।

७ (ग) पिया के बचन कहिं ना टोल । (ग) (घ) (ङ) की = के । (ग), (घ) (घ) (ङ) नहिं = नाहि ।

८ (ग) (ङ) अजरि = अजरि । (घ) (घ) अजरि = औरि । (घ) (ङ) कतेको = कतेको ।

९ (घ) (ङ) ब्रम्हन = ब्रम्हन । (ग), (ग) (घ) ब्रह्म = ब्रह्म । (प्र) न = ना । (घ) न = ने । (घ) (ङ) न = न ।

१० (ङ) भपन = भपन । (ङ) धपन = धपन । (ग) (घ) (घ) ब्रम्हन - ब्रम्हन । (ङ) ब्रम्हन = ब्रम्हन । (घ) (ङ) विस्तो = विस्तो । (ग) महरि = महर । (घ) घर म महरि गात्र सोई ।

११ (ग) (घ) (घ) (ङ) संग = संगे । (ग) (घ) (ङ) ताकि = ताके । (घ), (ग) (घ) (ङ) खुवन = खुवन ।

क्रोध मोह जिसना नहिं होई । पंडित नाम सदा है सोई ॥८४६॥^१
 संभा गाएत्री जाप जिन्हि जाना । भेन निरसि जिन्हि निगु न ठाना ॥८४७॥^२
 सरगुन रूप बिरला जन पाव । निरगुन नाम सहज सो साव ॥८४८॥^३
 पूरन पंडित कहाव सोई । भठारह गुन प्रमहन क होई ॥८४९॥^४
 भठारह वरन के राजा सोई । प्रमह बिन्है बिनु जात विगोई ॥८५०॥^५
 नीगुन सुतरा जोरि सुषारा । गांठि तीनि मोहकम कै बारा ॥८५१॥^६
 नाम क्रोध मोह बह नारी । बोलहुं पंडित बचन विचारी ॥८५२॥^७
 पंडित सुदे बह निरुमारा । वा तुह अपहु बचन पद सारा ॥८५३॥^८
 कहि पर हंसा होहि प्रसवारा । कसे उतरहिं भव जम पारा ॥८५४॥^९
 सतगुर जानि पाति नहिं क्षीज । जाति सोजै तेहि पातक दीज ॥८५५॥^{१०}
 कहीं सभ सुनो सतवानी । सतगुर बिना करिहैं जम हानी ॥८५६॥^{११}

साक्षी

दरिया भवजल प्रगम है, सतगुर करो जहान ।^{१२}
 तापर हंसा चढ़ि कै जाए करो सुसराज ॥७२॥^{१३}

- १ (घ) (घ) (ङ) भिसना = टिसना । (ख) (ग) (ब) (ङ) नहिं = नाहि ।
- २ (ख) (घ) (ल) माएत्री = गाएत्री । (ग) माएत्री = गाए । (ख) (ग) जाप बचन ।
 (ङ) जाप = जगह । (ल) (घ) निगुन = निर्मल । (ख) (ग) (ब) (ङ) ठाना = म्याना ।
- ३ (ग) रूप = रूप । (घ) (ग) (ब) (ङ) सहज = मो सहज । (घ) (ग) (ब)
 (ङ) सा साव = सराव ।
- ४ (घ) क = कह ।
- ५ (घ) भठारह बरन के = भठारह क । (घ) क = ब । (ल) क = क । (ग) बिन्है = बिन्धे ।
- ६ (घ) (ल) नी गुर = नरगुर । (ख) (ग) (घ) (ङ) सुषारा जोरि = सुत संघोरी ।
 (घ) (ग) क = क ।
- ७ (घ) पद = मद ।
- ८ (ग) गद्रे = मद । (ब) (ल) लम्ब = गम्ब । (घ) (ग) (घ) (ङ) बह = बरह ।
 (घ) (ल) (ब) (ल) तुह = तुम । (ल) पदसारा = पदसारी ।
- ९ (ग) (ल) हंसा = हंसा । (घ) (ब) होहि = होदि । (ब) कसे = कसे । (ग) (घ)
 (ल) उतरहिं = उतरिदि । (घ) भव = भी । (घ) मर = मरो ।
- १० (ग)/(घ)/(घ)/(ल) नहिं = नाहि । (घ) पात्र = पौत्र । (घ) (घ) (ल) पातक = पातका ।
- ११ (ग) (घ) (घ) (ल) कहीं = करो । (घ) सुनो = सुनहु । (ख) करिहैं = करी ।
 (घ) (घ) (ल) करिदि । (घ) जम हानी = जीहानी ।
- १२ (ग) (ग) भव = भी ।
- १३ (घ) (ल) तार = तदि पर । (ग), (घ) (ल) हंसा चढ़ि = हंसा चढ़ा ।

सुन्दे सारं सुन्द उवागे । सुन्दे षडि छत्राक सिषाग ॥८३८॥^१
 सुन्दे योग हस भसवारा । सुन्दे चामुक ग्यान कगग ॥८३९॥^२
 सुन्दे पठे मांभ मंभारा । सुन्दे पीवै प्रेम भभाग ॥८४०॥^३
 कह दरिया जिन्हि सुन्द निमरा । ताको हंसा पहुषु सवेग ॥८४१॥^४

साव्नी

सुन्द सरासन वान है, ससे सुन्द निसान ।^१
 कहै दरिया नर वाचिया, सतगुर की पहचान ॥७१॥

बीसाइ

हीरा सोई जग में लहई । छोटी बड़ी बात सम कहई ॥८४२॥^१
 जंसो राजा रब कहावै । एक रग बुजा नहि भाव ॥८४३॥^२
 दूबा दोबिधा ज नहि होई । भगत नाम कहावै सोई ॥८४४॥^३
 भ्रमहन सोइ जो भ्रमहन चीन्हा । ध्यान लगाए रहै सो लीन्हा ॥८४५॥^४

- १ स्त्रीलप पाठ में 'सुन्द गारै' क पूर्व ईह है । (ग) "ह = एह । (ग) (क) सुन्द = सुन्द । (ख) सुन्द = सुन्द । (ख) (ग) सारं = तारे(ग) (क) सुन्द = सुन्द । (क) सुन्द = सुन्द । (ख) (ग) उवागे = उवागे । (क) सुन्द = सुन्द । (क) सुन्द = सुन्द । (ग) सिषाग = सिषागे ।
- २ स्त्रीलप पाठ में 'सुन्द योग' तथा 'सुन्द चामुक' क पूर्व ईह है । (ख) ईह सुन्द = एह सुन्द । (ग) "ह सुन्द = सुन्द । (घ) ईह सुन्द = इह सुन्द । (क) (ग) योग = योग । (घ) (क) योग = योग । (ग) (ग) "ग = एह । (घ) इहसुन्द = सुन्द । (ख) (ग) (घ) (क) चामुक = चामुक ।
- ३ स्त्रीलप पाठ में सुन्द पठ तथा सुन्द मांभ क पूर्व ईह है । (ग) (ग) ईह = एह । (घ) ईह सुन्द = सुन्द । (क) ईह सुन्द = इह सुन्द । (ग) पठ = पठ । (घ) पठ = पठ । (घ) पठ = पठ । (ख) (ग) ईह = एह । (घ) ईह सुन्द = सुन्द । (क) ईह सुन्द = इह सुन्द । (ख) पीर = पीर । (घ) (घ) पीर = पीर । (क) पाव = पाव ।
- ४ (क) हंसा = हंसा । स्त्रीलप पाठ में 'ताको हंसा' क पूर्व ईह है । (ग) (घ) इह = एह । (क) हंसा = हंसा ।
- ५ (ख) सुन्द = इह सुन्द । (घ) (क) सारासन = सरासन । (क) ससे = ससे ।
- ६ स्त्रीलप पाठ में 'हीरा सोइ तथा 'छोटी बड़ी' क पूर्व ईह है । (ख) (ग) ईह = एह । (घ) जग = जग । (घ) लहई = लह । (ग) लहई = लहई । (घ) (क) लहई = लह । (ग) (घ) ईह = एह । (ग) (घ), (ग) लहई = लह । (ग) लहई = लहई ।
- ७ स्त्रीलप पाठ में 'जंसो राजा क पूर्व ईह है । (ख) (ग) ईह = एह । (घ) जसो = जस । (घ) (क) जसो = जस । (घ) (क) एक = एक । (ग) (घ) (घ) (क) नहि = नहि । (ग) (घ) (घ) (क) लीन्हा = लीन्हा ।
- ८ (ग) (घ) (घ) (क) ज = जह । (घ) भगत = भगत ।
- ९ (ख) (ग) (घ) (क) मोइ = मो । (ख) (घ) (घ) (क) भ्रमहन = भ्रमहनी । (ग) (घ) ग = गे । (ख) (घ) (घ) (क) सा = सा ।

क्रोध मोह तिसना नहि होई । पंडित नाम सदा है सोई ॥८४६॥^१
 संझ माएत्री जाप जिन्हि जाना । मे- निरखि जिन्हि निगुन ठाना ॥८४७॥^२
 सरगुन रूप बिरसा जन पावै । निरगुन नाम सहज सो लाव ॥८४८॥^३
 पूरन पंडित कहाव सोई । प्रठारख गुन प्रमहन के होई ॥८४९॥^४
 प्रठारख वरन के राजा सोई । ब्रम्ह जिन्है विनु जात विगोई ॥८५०॥^५
 नोगुन सुतरा जोरि सुधारा । गाठि तीनि मोहकर्म कै हारा ॥८५१॥^६
 काम काष मोह बह भारी । बोलहुं पंडित वचन विचारी ॥८५२॥^७
 पंडित सबे कह निरुपारा । का तुह अपहु कवन पद सारा ॥८५३॥^८
 कहि पर हंसा होहि प्रसवारा । कये उतरहि भव जल पारा ॥८५४॥^९
 सतगुर जाति पाति नहि क्षीन । जाति सोज तेहि पातक वीन ॥८५५॥^{१०}
 कहीं सब सुनो सतवानी । सतगुर बिना भरिहैं जम हानी ॥८५६॥^{११}

साली

हरिया भवजल प्रगम है, सतगुर करो जहास ।^{१२}
 सापर हुआ यदि कै जाए करो सुखराज ॥७२॥^{१३}

- १ (उ) (प) (क) तिसना = तिसना । (य) (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि ।
- २ (रा) (प) (क) माएत्री = माएत्री । (ग) माएत्री = माए । (ख) (ग) जाप = जपन ।
(ङ) जाप = जपन । (घ) (ग) निगुन = निर्मल । (ङ) (घ) (क) (ङ) ठाना = स्थाना ।
- ३ (ग) रूप = स्वरूप । (य) (म) (प) (क) सहज = गो सहज । (ख) (ग) (घ)
(ङ) ना लाव = लताव ।
- ४ (घ) क = कह ।
- ५ (रा) अठारह वरन क = अठारह क । (घ) क = का । (ङ) क = क । (य) जिन्है = जिन्हें ।
- ६ (घ) (उ) नी गुन = नरगुन । (ख) (ग) (घ) (ङ) कुप्रा जोरि = सुठ संजोरी ।
(य) (ग) क = क ।
- ७ (य) पद = मर ।
- ८ (ग) मत्र = मत्र । (घ) (उ) उतर = उतरै । (य) (ग) (घ) (ङ) कवन = कवन ।
(य) (ग) (घ) (ङ) गुह = गुह । (ङ) पदवात = पदवात ।
- ९ (ग) (ङ) हंसा = हंस । (घ) (ङ) होहि = होदि । (घ) बंस = बंस । (ग) (घ),
(ङ) उतरहि = उतरिहि । (य) भव = बी । (घ) भव = भव ।
- १० (य) (ग), (घ), (ङ) नहि = नाहि । (घ) सोज = जोज । (य) (ग) (ङ) पातक = पातका ।
- ११ (य) (म) (प) (क) कहीं = कहीं । (म) सुनो = सुनहु । (य) भरिहैं = भरिहैं ।
(घ) (घ) (ङ) कहीं । (घ) जम हानी = जीवहानी ।
- १२ (य) (ग) भव = वा ।
- १३ (घ) (उ) धर = धर पर । (ग), (घ) (ङ) हंसा कवि = हंस कवि ।

द्विरिच्छि सुगंध हस विर शरी । बोलहि मगल बहुत सुठारी ॥८०॥^१

साक्षी

सुधा भ्रगर परिवल की छरिहं द्विरिच्छिहं बहुत सुठारि ।^२

दया दरस दीदार में मिटा कस्यना छारि ॥८१॥^३

श्रीपाद

पुष्प एक समहि तें प्यानी । संतन्हि महिमा सदा वजानी ॥८२॥^४

साहि मुमिरे हंसा सुख पावै । कर्वाहि न एह जग भटका साव ॥८३॥^५

सख विषार करे नर छोई । भ्रमर साक पहुंनै सोई ॥८४॥^६

सख विवनी भयत कहावै । विनु सखे जय में भग्मावै ॥८५॥^७

साक्षी

सख सरासल बाल है, गहो खरत मित साए ।^८

गुह के सख विषारिण, दुरमति सखल मेटाए ॥८६॥^९

श्रीपाद

सतगुर सख प्रेम रख पीने । नाम बुबुधि दूरि सम कीने ॥८७॥

सख निरगुन माह हमारा । साक भोजहु प्यान करारा ॥८८॥^{१०}

बद भाव सम कहै बनाई । सपते निरगुन नाहू न पाई ॥८९॥^{११}

सख पुन बाए विमल विरोगा । प्रेम प्रीति छीने नहि जोमा ॥९०॥^{१२}

१ (घ) द्विरिच्छि = द्विरिच्छि । (घ) (घ) (घ) (क) सुगरी = सुठारी ।

२ (घ) (घ) (घ) (क) सुधा = सोधा । (घ) (घ) द्विरिच्छिहं = द्विरिच्छिहं । (घ) सुठारि = सुठारि ।

३ (क) दीदार में = बीमार दिन में । (ग) (क) बीदार में = बीरारि में । (घ) (घ) (घ) (क) मिटा = मेटा ।

४ पुष्प = पुष्प । (ग) समन्धि ते = समन्धि मे । (घ) (क) संतन्हि = संतन्धि ।

५ (घ) मुमिरे = मुमिरे । (घ) (घ) (क) न = ना । (ग) (घ) (घ) (क) एह = इह ।

६ (घ) करे = करे । (घ) करे = करे । (ग) भ्रमरसाक = भ्रमरसाक सह । (घ) (घ), (घ) भ्रमरसाक = भ्रमरसाक कह । (ग) (घ) (घ) पहुंनै = पहुंनै ।

७ (घ) भयत = भयत । (ग) सख = सख । (घ) सख = सख । (क) सख = सख ।

८ (ग) सखे = सखे ।

९ (ग) (घ) (घ) (क) गुह = गुह । (ग) (घ) विषारिण = विषारिण । (घ) विषारिण = विषारिण । (घ) विषारिण = विषारिण ।

१० (घ), (घ) सख = सख ।

११ (ग) (ग) (घ) कह = कह । (ग) सख = सखे । (ग) (घ), (घ) न = ना ।

१२ (घ) पुन = पुन । (घ) बाए = भाए । (ग) छीने = छीने । (ग) जोमा = ना । (घ) (घ), (घ) नहि = नहि ।

मनसा मालिनि भाग्यु देखाव । कामदेव तह मंगल गाव ॥८७६॥^१
 भासम दव की परस वानी । सिर्षहि परम सुख बहुत वखानी ॥८८०॥^२
 सतगुर भय्या सुख बहुतरा । सतनव वा जो बने निमेरा ॥८८१॥^३
 वृम्ह पंडित सठ की धानी । निरखि निरंतर निरगुन ठानी ॥८८२॥^४
 पंडित से गुन हाठ जनक । जो करता के जाने मेक ॥८८३॥^५
 बी निरगुन गुन सुके विसतारा । पंडित तेजिहू बर के भारा ॥८८४॥^६

साखी

सास्तर गोसा भागवठ, पढ़ि पाव नहि मूल ।^७
 प्रेम प्रीति निस्वै लगै तव पाव अस्यूस ॥७५॥^८

श्रीपाद्

निस्वै नाम प्रेम सो सावै । सो हुआ छपलोख सिधावै ॥८८५॥^९
 जाइहि सोक वहरि नहि भवना । जम जम के भेट कल्पना ॥८८६॥^{१०}
 ऐसे वृम्ह पंडित भारी । मग सेहु सतनाम सहाई ॥८८७॥^{११}
 काया भदर ब्रम्ह निजु वासा । ताहि चिहहु प्रेम परगासा ॥८८८॥^{१२}
 कहीं धानी सुनहु सुजाना । विना भेद हस नहि जाना ॥८८९॥^{१३}

१ (क) मालिनि = मालिन । (ख) बंगारै = देखाई । (ग) गावै = गाई ।

२ (ख) (ग) (घ) बरम = दूरसे । (घ) (ग) (घ) (ङ) परम = प्रेम ।

३ (ख) (घ) भय्या = भाग । (ङ) भय्या = भाग्य । (ग) जो = जब । (घ) (ङ) जो = जी ।
 (ग) कर = कर । (ङ) निमेरा = निमरा ।

४ (ख) पंडित = पण्डित । (ग) निरगुन = निगुन ।

५ (ग) (घ) स = स । (ग) (घ) (ङ) होन = होए । (ग) जो = जब । (घ) (ङ) जो = जी ।
 (ङ) (ङ) के = कर । (ङ) (ङ) जाने = जान । (ङ) मेक = मक ।

६ (ग) जी = जी । (ग) (ग) (घ) (ङ) जी निरगुन सुक विसतारा । (घ) क = क ।
 (ङ) के = क ।

७ (क) पढ़ि के पाव । (ग) पढ़ि पव । (ग) (ग) (ङ) (ङ) नहि = नाहि ।

८ (क) श्रीकृष्ण पाठ में 'निरव के दरल 'जब है । (ग) (ग) (ङ) लग = लग । (घ) हस =
 लाम । (ङ) पव = पाव ।

९ (ग) जी = जी । (ङ) (ङ) जी = जी ।

१० (ङ) जाइहि = जाई । (ग), (ग) (घ) (ङ) नहि = नाहि । (ख) मटै = मटै ।
 (ङ) (ङ) मट = मटि । (ग) जम जुग गुन कल्प पवना ।

११ (ग), (ग) (ङ) मने = मने ।

१२ (ङ) काया अंदर है (ग) काया अंदर । (ङ) वासा अगर है ।

१३ (ग) (ग) (घ) (ङ) कहीं = कहीं ।

सुनहू पंडित हंस के घारी । मूठ वल बहू जो वादी ॥८६०॥^१
 प्रमह फूटि घस भौ तीनी । छस पुसं इमह सम ने भीनी ॥८६१॥^२
 प्रतिबेदु घट परगट प्रहुरै । पुसं तेज इमि करि जग सहुरै ॥८६२॥^३
 बकहू ग्यान एह काया विलोई । भपने भापु में जाए समाई ॥८६३॥^४
 सुरति बंसल बहूँ निगु बानी । सुस्रमनि घाट करो पहाणी ॥८६४॥^५
 भरि गगन घन बरिस घानी । दरिया दिस बिष सुरति समानी ॥८६५॥^६
 निस्व सुरति म्यान रस सानी । पिय प्रेम तहू निरमस बानी ॥८६६॥^७

साली

भतना ग्यान भगति कर भेष, दिल सागर मन लाए ।^८
 पंडित बारहू बानी होखै, कास क्वहि नहि साए ॥७६॥^९

बीपाइ

घन बोए पंडित घन बोए ग्यानी । घन बोए संत जिन्हि पद पहाणी ॥८६७॥^{१०}
 घन बोए जागी जुगुता मुकुटा । पाप पुन्य ब्यही नहि भगता ॥८६८॥^{११}
 घन बोए सील जो कर विषारा । घन सतगुर जो खेबनिहार ॥८६९॥^{१२}

- १ (अ), (क) ईस के = ईस क । (ख) मूठ = ताब । (ग) मूठ = छत । (घ), (च), (ज) बहूँ = बड़े ।
 २ (ग) भी = भी । (घ) भी = भी । (क) भी = भी । (ख) (ग) (घ) (क) छीनि = छीना । (ग) (घ) पुसं = पुसु । (ख) (ग) (घ) (क) भीनी = भीना ।
 ३ (ग) प्रतिबेदु = परतपसु । प्रतिबेदु = परतिबेदु । (घ) प्रतिबेदु = प्रतिबेदु । (ग) पुसं तेज बग इमि कर लहुरै । (घ) पुसं तेज बग इमि कर लहुरै ।
 ४ (ग), (घ) म्यान = म्यानी । (घ) एह = एह । (ख) भपने = भापने । (क) भपने = भापने । (ग), (घ) (क) (ख) समाई = समाई ।
 ५ (ग) सुरति बंसल = सुरति बंसल । (घ) सुरति बंसल = सुरति बंसल । (ख) सुरति बंसल = सुरति बंसल । (ग) सुरति बंसल = सुरति बंसल ।
 ६ (ग) (घ) बरिस = बरिसे । (ख) सुरति = सुरति ।
 ७ (ग) पिय = पिय । (घ) (क) पिय = पिय । (घ) (क) निरमस = निरमसि ।
 ८ (ग) भतना = भतना । (ख) का = का ।
 ९ (ग) होखे = होखे । (ख) (घ) (क) (ख) मदि = मदि ।
 १० (ग) (घ) घन = घन । (ग) बोए = बोए । (घ) (क) बोए = बोए । (घ), (क) बोए = बोए । (ग), (घ) घन = घन । (क) बोए = बोए ।
 ११ (ग) (घ) घन = घन । (ख) (क) बोए = बोए । (ग) मुकुटा = मुकुटा । (घ) मुकुटा = मुकुटा । (ग) (घ) मदि = मदि । (ग), (घ) (क) मुकुटा = मुकुटा । (घ) मुकुटा = मुकुटा ।
 १२ (ग) (घ) का = का । (ग), (घ) (क) घन = घन ।

मनसा मासिनि प्रापु देखाव । कामदेव तह मंगल गाव ॥८७६॥^१
 प्रातम दव की दरसी वानी । सिर्चहि परम सुख बहुत वसानी ॥८८०॥^२
 सतगुर भय्या सुख बहुतरा । मतपद वा जो कः^३ निमेग ॥८८१॥^३
 बुझहु पंडित सत की धानी । निगुनि निगुतर निगुन ठानी ॥८८२॥^४
 पंडित सै गुन होत जनऊ । जो करना क जान भेऊ ॥८८३॥^५
 जो निरगुन गुन सुकै विचठारा । पंडित तेजिहै क^६ के भारा ॥८८४॥^६

साम्बी

सास्तर गोता भागवत, पदि पाव नहि मूल ।^७
 प्रेम प्रीति निस्वै सर्ग तव पाव असचूल ॥७५॥^८

धीपाइ

निस्वै नाम प्रेम ली नाई । सो हुंसा छपसोक सिधाई ॥८८५॥^९
 जाइहि लोक वहरि नहि धवना । जम जम के भेट कनपना ॥८८६॥^{१०}
 ऐसे बुझहु पंडित भाई । मंग भेहु सतनाम सहाई ॥८८७॥^{११}
 काया अंदर अन्हु निजु वासा । ताहि चिहहु प्रेम परगासा ॥८८८॥^{१२}
 कहीं वानी सुनहु सुजाना । विना भे^{१३} हस नहि जाना ॥८८९॥^{१३}

- १ (प) मासिनि = मासिन । (स) देखाव = दरसई । (ख) गावै = गाव ।
- २ (ल) (ग) (ब) दरस = दरस । (घ) (ग) (ब), (न) परम = प्रेम ।
- ३ (घ) (ब) भय्या = आग । (ब) अगना = आग । (क) जो = अब । (घ) (र) जो = जो । (ग) करे = करे । (ह) निमेग = निमरा ।
- ४ (घ) पंडित = मन्त्रगुरु । (ग) निरगुन = निगुन ।
- ५ (ग) (घ) सै = स । (घ) (ब) (ह) होत = होए । (ल) जो क जान = जो क जान । (ब) (र) जो = जो । (ब) (ग) के = कर । (घ) (ह) जान = जान । (र) भेट = मेट ।
- ६ (घ) जो = जो । (घ) (घ) (ब) (न) जो निरगुन सुकै विचठारा । (घ) क = क । (र) के = का ।
- ७ (ह) पदि के पाव । (ग) पदि पर । (ख) (ग) (ब) (ह) नहि = नाहि ।
- ८ (क) स्त्रीहृत पाठ में 'निस्व' क पहल 'अव' है । (घ) (ग) (र) रूप = रूप । (ब) रूप = साग । (ह) पव = पाव ।
- ९ (ग) ली = ली । (घ), (न) ली = ली ।
- १० (घ) जाइहि = जाही । (ग) (ग) (घ) (न) महि = नाहि । (ग) मटे = मट । (ब) (ह) भेट = मटे । (ग) जम गुण मुर सागर पवना ।
- ११ (ग), (ग) (घ) लव = लव ।
- १२ (क) काया अंदर है (ग) काया अंदर । (र) काया अंदर है ।
- १३ (घ), (ग) (घ) (र) कहीं = कहीं ।

कहेउ मेद हंस निजु जाना । जातै हंस सभ करहि पमाना ॥६११॥^१
 कही सप्तपद ईमन ब्रत ना । दरि जाण जनि कछु रटना ॥६१२॥^२
 धरसठ तिरप धई सरीना । तामे वसं मनुपम हीरा ॥६१३॥^३
 जय हीरा हारमर पाव । ठव हंवा छपलोक धमावै ॥६१४॥^४
 सतभुर प्यान सुनो सतवानी । तजहु पंडित पग कसे भानी ॥६१५॥^५
 गरु प्रम संतन्हि से जाई । दरसन प्रेम मिषा नहि भाई ॥६१६॥^६

साली

सामी सख्त ससार में, संतो कछु बिचार ।^७
 नाम लौका प्यान केवट लेइ उठार पार ॥७०॥^८

बीपारि

बानी एक बट बट में समानी । एहि बानी को मरम न जानी ॥६१७॥^९
 जंगम जागी है बहुतेरा । जान करै बट भोतर डेरा ॥६१८॥^{१०}
 ग्यान गमी नहि करै बिचारा । निगुन सरगुन नहि निरुभारा ॥६१९॥^{११}
 जो जय बीपारि बख्त पचासा । जो नहि मन सतगुर के पासा ॥६२०॥^{१२}
 बस्पकोटि मवधक में परई । बन्ट बन्पना बड़ दुल सहरई ॥६२१॥^{१३}

१ (र) कहेउ = कहेतो । (ल) (र) पमाना = पेमाना ।

२ (ग) कही गणपत नमि मन ब्रत ना । (ग) (घ) कही गणपत इयव ब्रत ना । (र) कहे गणपत इमि मन ब्रत ना । (ग) (ग) (घ) (न) दरि जाण कछु तमि रटना ।

३ (ग) (ग) (घ) मरना = मरगरी । (र) (ग) (घ) मर = मरे । (र) (न) बमै = बस ।

४ (घ) (र) बर = बरहो ।

५ (ग) (घ) (घ) ईम भानी = इ संशामी ।

६ (र) प्रेम = पेरम । (ग) संतन्हि = सतगुर । (ग) (घ) (ठ) संतन्हि = संतन्ह । (ल), (ग) मिषा = मिषा ।

७ (र) कछु = कोछु ।

८ (ग), (घ) (घ) (र) लौका = लरका । (ग) (घ) (घ) (न) उठार = उठावे ।

९ (ग) (ग) (घ) (र) को = क । (घ) मरम = मर्म । (र), (ठ) म = मा ।

१० (ग) दे = दे । (ग) री = रर । (ग) (ग) बर = बरे ।

११ (ग) (घ) (घ) (र) नहि = नाहि ।

१२ (ग) जो = जव । (घ) (घ) जो = जी । (ग) बीपारि = बीव । (ल) जो = जव । (र) (ग) (घ) (न) नहि = नाहि । (घ) क पासा = क पासा । (ठ) क पासा = के पासा ।

१३ (ग) (घ) (र) भावक = भावक । (घ) भावक = भावक ।

घन बोए नारि पिपा रगराती । सोइ सुहागिनि कुल नहि जाती ॥६००॥^१
 अशुद्धित अम्ह पडित सो ग्यानी । मनके रंग बुम्हडु निजु ग्यानी ॥६०१॥^२
 जो करता के भेद बतावै । सीम होए तब जग समुझाए ॥६०२॥^३
 अम्हन वेद पढ़ै का पावै । जीव मारि मासु मुस तावै ॥६०३॥^४
 साकर वात मानै संसार । कसे खेई उतारहि पारा ॥६०४॥^५
 मासु मछरी ब्राह्मन जो खाई । अतकाल केरि जम घर जाई ॥६०५॥^६
 सो नहि वाचै कवनि टवाई । परै नरक चारासी जाई ॥६०६॥^७

साक्षी

सतनाम अजित नहि पिबै, कसे होए उवार ।^८

कहे दरिया जग अरुम्ह, एक नाम बिना संसार ॥७७॥^९

चौपाइ

निरसि नाम निजु पंडित कहाव । तब अपने गुन जग समझावै ॥६०७॥^१
 पंडित बाख्ख बानी सोई । कवहि न जमपुर जात दिगोई ॥६०८॥^२
 सपने कवहि न या जग भावै । सतगुर ग्यान नाम निजु पावै ॥६०९॥^३
 छपलोक की वाजे कहुक । केवल हंस हिरमर रहेक ॥६१०॥^४

१ (क) (ग) पल = पल्य । (घ) (ङ) बोए = बोए । (च) नहि = ना ।

२. (घ) सो = सोर । (ग) (ब) मनके रंग बुम्हडु निजु ग्यानी । (ख) मनक रंग बुम्हडु निजुग्यानी ।

३ (ब) के = क । (ख) (ग) (घ) (न) समुझाए = समुझाव ।

४ (क) वेद = वेद । (ब) मासु = मसु ।

५ (ब) साकर = साकरि । (घ) (घ) मान = माने । (घ) (न) संसार = संसार । (र) (र) कसे = कसे ।

६ (ग) मछरी = मछ ।

७ (ख) (ब) खे नहि बाव = ना नादि बाव । (ग) खे नहि बाव = खे नादि बावहि ।

(घ) (ग) (ब) (ङ) परै = परे ।

८ (घ) पिब = पाव । (ग) पिब = पावे । (घ), (ङ) पिब = पाए । (ख) (घ) (ङ) कसे होए उवार = कसे के होए उवार ।

९ (क) अरुम्ह = अरुम्हे । (ग) अरुम्ह = अरुम्हेतो । (घ) (ग) (ब) (च) एइनाम = नाम ।

(ख) संसार = संसार ।

१० (ग) (ब) (ङ) निगि = निगि । (घ) अल = अल । (घ) (ग), (ब), (च) समुझाव = समुझाव ।

११ (क) (ग) (ङ) म = ना । (घ) कवहि न इया जग जात निपाइ ।

१२ (ब) छपल = छपल । (च) या = नद ।

१३ (च) कहेक = कहेक ।

कहे श्रिया सो संत सुजाना । एह भेन बिरसा केहु माना ॥६३४॥^१

साखी

गगन गुफा मह वठिके, देखो सख्य समान ॥^२

छुटि जाए जग संसै, जम के मरदो मान ॥७६॥^३

श्रीपाई

सख्य धरती सख्य प्रकासा । सख्ये भगति प्रम परकासा ॥६३५॥^४

सख्ये रखा सकल संसार । सख्ये बंधन लोक बिरसारा ॥६३६॥^५

श्रीपा लोक सख्य की बानी । सख्य समुंदर बांधन म्यानी ॥६३७॥^६

सख्य विना नहिं हारी पाय । सख्ये पंडित करो बिरसारा ॥६३८॥^७

उकार वेद जगत पैनाई । मूल भेद बिरसा केहु पाई ॥६३९॥^८

मूल भेद सख्य निजु सार । करनी कथा म्याम बिरसारा ॥६४०॥^९

साखी

मूल सख्य निजु सार है, कहनी कथा अपार ।^{१०}

श्रीप सखि मन राखि कै उत्तरि जाए मज पार ॥६०॥^{११}

श्रीपाई

दुस्य दुस्य सम करै पुकारा । दुस्य ना होतहि हंस उवाग ॥६४१॥^{१२}

१ (ग), (घ) या = योई । (घ) (घ) (ह) एर = हर ।

२ (ग) गुफा = भोड । (ग), (घ) (ह) गुफा = गोप । (घ) (ग) बंठिके = पठिके ।
(ह) बंठिक = पठिके । (ह) बंठिक = पठिके ।

३ (ग) मरद = मरि । (ह) जमद = जमद । (घ) मरदा = मरद ।

४ (घ) सख्ये = सख्ये । (ह) सख्ये = सख्ये । (घ) सख्ये = सख्ये । (ग) म्यामि = मखि ।
(अ) (ग) (घ) (ह) परकासा = परगासा ।

५ (घ) रखा = रख्ये । (घ) (घ) (ह) (ह) रखा = रख्ये । (घ) बांधन = बांधन ।

६ (घ) श्रीपा = श्रीप । सख्ये = सख्ये । (घ) समुंदर बांधन = समुंदर को बांधन ।

७ (ग) नहिं होग = होग नहिं । (ग) नहिं होग = होस नहिं । (घ) सार = सख्ये ।
(ह) सार = सख्ये ।

८ (ग) उकार = उकार । (ग) जगत = जगत । (ग) पैनाई = पटनाई । (घ) भेद = भेद ।

९ (घ) मूल भेद सख्य निजु सार = करनी कथा म्याम बिरसारा । (ग) करनी कथा म्याम
बिरसारा = मूल भेद सख्य निजु सार ।

१० (ग) कहनी = कथा ।

११ (ग) (ग) (घ) राखि कै = राखि कै । (ग) मज = मज । (ग) मज = मज ।

१२ (ग) दुस्य दुस्य = सम सम । (ग), (घ) करै = करै । (ग), (घ) होतहि = होतहि ।

नहि पावै छपलोक के बासा । फिरि फिरि करहि जेम की भासा ॥६२२॥^१
 ज्य कामिनि सं खो निनारा । मनसा कामिनि कगे विषारा ॥६२३॥^२
 जब होवै ससगुर के दासा । तब सम छुटिहैं जम क बासा ॥६२४॥^३
 सो जागी जग साख क्हावै । जो करजा के भेद क्हावै ॥६२५॥^४
 मन बिर होए तो भगति बिदावै । साग सख का परवै पावै ॥६२६॥^५
 अयुमन काम करै नर जाई । पेड़ पकरि तब डार देखाई ॥६२७॥^६
 अपन नख हसा वंठावै । अपन निरलि तब सुरति समावै ॥६२८॥^७
 अस्तम्य त्रिगसि विमन विरोगा । छप एक मन मुकुता जागा ॥६२९॥^८
 निमदर निरलि प्रेम पद पावै । छुटिआएतिमिरिगगन भरिसावै ॥६३०॥^९
 प्रेम पंथ महुं पैठे सोई । तामे संस जात विगोई ॥६३१॥^{१०}
 सीस उतारि दक्षिना जो देवै । का हमको सुम्ह का कहि सेव ॥६३२॥^{११}
 अकर भेद कहुं सम जाई । अन्धर माह निहच्छर पाई ॥६३३॥^{१२}

- १ (ग) पावै = पावे। (घ) (ङ) पावै = पाएहु। (च) फिरि फिरि = फेरि फेरि। (प) करहि = करिहो। (द) (ध) (ढ) जम की भासा = जम के आसा।
- २ (ग) से = स। (ग) कामिनि = कामि।
- ३ (ग) (घ), (ङ) क दासा = क दासा। (घ) तब सम छुट्टी जमे के दासा। (ग) (घ), (ङ) छुटिहैं = छुटिहैं।
- ४ (ग) क्हावै = क्हावै। (घ) जा = जा। (ङ) जो = जो। (घ) क = क। (ङ) के = के।
- ५ (ङ) रीसण पाग में 'मन' क पूर्व जीं दे। (घ) जीं = जी। (ग) जीं मनधर = मन धर। (ग) (घ), (ङ) (ङ) होए तो भगति = होए भगति। (ग) परवै = परव।
- ६ क = करे। (ग) (घ), (ङ) डार = डारह। (ग) त = ता।
- ७ (ग) (घ), हसा क्हावै = हस ब्यत्रा। (ग) हसा ब्यत्रव = हस ब्यत्रवा। (ङ) हसा ब्यत्रव = हसा ब्यत्रवा। (ङ) अल = आल। (ग) अपन = आपे। (ग) (घ) (घ) (ङ) समाव = समाव।
- ८ (ग), (घ) (घ) (ङ) त्रिगसि = त्रिगसि। (घ) क = क।
- ९ (ग) (घ), (घ) (ङ) निमदर = निमदर। (ग) (घ) (ङ) निमिरि = निमिरि। (घ) निमिरि = निमिरि।
- १० (ङ) महुं = महि। (ग) (ग) पठ = पठ। (ङ) पैठे = पड़ै। (घ) (घ) (घ) तामे = तामे। (ङ) तामे = तामे। (घ) संस = संस।
- ११ (घ) उतारि दक्षिना = उतारि ग दक्षिना। (ङ) का = काहा। (घ) सख = सखा। (ङ) तब = तब।
१२. (ग), (घ), (घ) (ङ) अन्धर = अन्धर। (घ), (ङ) मय जाई = मय जाई।

घोर घोराण समै बिब साव । धार बाहि बिन्हि तव सुख पावै ॥६५०॥^१
 घ्राप निरजन सखस पसारा । पंड दव करम रवि डारा ॥६५१॥^२
 इह सिन्सोक निरजन गई । बीबहु चौकी जम बसाई ॥६५२॥^३
 एको हंसा ना हारहि पाव । बीबहि भसम करै जनि छारा ॥६५३॥^४
 काला कवीर बीन्ह वैसारा । सत खोर ने राहु सुभारा ॥६५४॥^५

साली

हार जम सतनाम से, हाप डडा दीन्हो बारि ।^६
 प्रमरसोक को बाईहै, सत ना बावहि हारि ॥६२॥^७

चौपाई

कवन दस हस अनि जाई । भीखन जस तो प्रगम गासाई ॥६५५॥^८
 यडा जगानी भब जग पांग । कवन जुगति से दीरै बीरा ॥६५६॥^९
 जोय जुगति भेद पहचानी । उपरै प्र म भगति निजु म्यानी ॥६५७॥^{१०}
 होल हीरा तव निगमन बानी । भयति निर्गतर हिररै ठानी ॥६५८॥^{११}
 सन्द विचारि म्यान बह घीरा । सत मुक्ति को भेदे वीरा ॥६५९॥^{१२}
 देव परबाला सत की वाती । चरना प्रजित सेव मानी ॥६६०॥^{१३}

- १ (घ) सख = सख । (घ) धार किन्हे तपही सुख पाव । (ग) बेरहि बिन्हि तवहि सुख पाव ।
 (घ) (-) बावहि बिन्हि तव सुख पाव ।
 २ (ग), (घ) भाव = भाव ।
 ३ (ग), (घ), (घ) (-) सिन्सोक = निमित्तक । (ग) बसाई = बसाई । (ग) बसाई = बसाई ।
 ४ (ग) एको इत इति नाहि पाव । (ग) ना = न । (घ) ना = नाहि । (ग), (ग) कर = करे ।
 ५ (घ) (-) पसारा = पसारा । (घ) (घ) क = क ।
 ६ (घ), (घ) हारे = हारै । (ग) सतनाम = सतनाम ।
 ७ (ग) को बाई है = को बाई हो । (ग) (घ) को बाई है = को बाई हो । (घ) को बाई है =
 को बाई हो । (घ) ना = न ।
 ८ (घ) मौ = मौ । (घ) (घ) ना = ना । (घ) भव = भव । (घ) कवन = कवि ।
 ९ (घ) (घ) कवन = कवन । (ग) जुगति = जुगति । (घ) जुगति = जुगति । (घ) (घ)
 (घ) स = स । (घ) दीरै = दीरै ।
 १० (घ) जुगति = जुगति । (ग) (ग) उपरै = उपरै । (ग) भयति = भयति । (घ)
 (घ) म्यानी = म्यानी ।
 ११ (ग) होल = मल होल । (-) निगमन = निगम । (ग) भयति = भयति । (ग) हिररै = हिररै ।
 १२ (ग) (घ) (घ) (-) पीग = पीग । (घ) दव = दव ।
 १३ (ग) बी = बी । (ग) बी = बी । (घ) (घ) बी = बी । (घ) अरिना = अरिना ।

सून्य नो धरती सून्य नो पानी । सून्य क्यहि नहि देखि भग्यानी ॥६४२॥^१
 सम मह देखिय सब्द का पूरा । चिन्है विना जम दत हूँ घुरा ॥६४३॥^२
 मुक्ति पदारथ सोय गंवारा । समुक्ति सेहू भेद निजुसारा ॥६४४॥^३
 करनी काम सकल संसारा । करनी क्यहि काम विस्तारा ॥६४५॥^४
 करनी काम कामिनि के साधा । विनु वीन्हे माहि हाहि सनाया ॥६४६॥^५

साली

धवन लोक बोए धमर है, हसा कर्यहि क्तोल ।^६
 सीतल सब्द उचार्यही, भो हीरा धनमोल ॥^७
 धमै लोक बोए धवल है, धजरा जोति बराए ॥^८
 साहव सत सामर्थ्य है, दरिया कहा बुझाए ॥६९॥^९

चीपाई

भौसंघु त्रिबिधि विकार जलमारी । सतनाम निजु सब्द विचारी ॥६४७॥^१
 बाया क्यौर जगत मह भारी । हारे पडित वेद पुकारी ॥६४८॥^२
 यदे अरुक्ति रूहा संसारा । अितक भय पर लै तब हाग ॥६४९॥^३

- १ (ख) (म) (क) सून्य = सून। (ख) (क) नो = ना। (ग), (घ) नो = न। (ल) (प)
 (द) सून्य = सून। (ख), (द) नो = ना। (ग) (प) नो = न। (ख) (म) (क) सून्य =
 सून। (ख) (ग) (घ) (क) = करहि। (ल) (प) (म), (क) नहि = नाहि।
 (ख) (क) कति = कतिपय। (ग) कति = कतिपय। (प) कति - कतिपय। (ख) (ग) (प)
 (द) भग्यानी = भग्यानी।
- २ (ख), (घ) किय = किय। (क) किय = किय। (ग) का = क। (ग) चिन्है = चिन्हे।
 (घ) है = हए।
- ३ खोए = खोब।
- ४ (प) (घ) संसारा = संसारा। (क) क्यहि = क्यहि।
- ५ (क) के = क। (ग) विनु = विना। (ख) (प) (क) चिन्हे = चिन्है। (ल) (ग) (घ)
 (क) नहि = नाहि।
- ६ (घ) धमर है = धमर है। (ग) धमर है = धमर है। (क) धमर है = धमर है।
 स्त्रीरूप पा में 'इगा' के पहले 'ई' है। (प) इगा = इस।
- ७ स्त्रीरूप पाठ में 'सिन्हा मरु' के पूर्व 'अई' है। (प) (क) उचार्यही = उचार है।
 (प) मय = मयो।
- ८ (प) भय = भय। स्त्रीरूप पाठ में 'अर' के पूर्व 'अई' है।
- ९ (प) कहा = कहे। (क) कहा = कहे।
- १० (ख) मय सेतु विघ्न त्रिबिधे जल मारी। (ग) मा मियु विघ्न त्रिबिधे जल मारी।
- ११ (ग) जगल = जग। (प) (क) हारे = हार।
- १२ किय = किय। (ख) किय = किय। (ग) किय = किय।

जाहां देख ताहां भ्रष्टमदरखी । मन मो दीसल कीन्हसि भ्रष्टी ॥६६॥^१
 वहां देखि सहां नाम अनूपा । मन मो दरसन दरस सबपा ॥६७॥^२
 बोए निरगुन गुन रहित समसूसा । भ्रष्टे छत्र मनि मंगल मूसा ॥६८॥^३
 काटै करम कपट नहि राख । उर अंतर मुख नामे भासै ॥६९॥^४

साली

मो सेंधु बिबिधि बिकार जस बोहित सुकित साध ।^१
 गुर सतगुर कन्हारिया, सैवनि बाके हाप ॥७१॥^२

श्रीपाई

तव नहि करते शीतम कीन्हा । तव नहि निगम नेति अस कीन्हा ॥७०॥^१
 तव नहि छोट न सेस महेशू । तव नहि सुरसरि भावि गनेसू ॥७१॥^२
 तव नहि दिनमनि इन्द्र प्रकामू । तव नहि उडिगन गगन नेवाडू ॥७२॥^३
 तव नहि दया घरम परसंगा । तव नहि उतपति तव नहि भंगा ॥७३॥^४
 तव नहि जय्य ज्योय नहि जाया । तव नहि कुमती तव नहि पाया ॥७४॥^५

- १ (उ) अटै = अटो । (व) बेरै = बरिब । (र) मन मोर मोहा सीसल भरसी । (म) मन मोहा सीत की भ्रष्टी । (न) मन मोहासल किनासि भ्रष्टी । (ह) मन मे बासल किनासि भ्रष्टी । स्वीकृत पाठ मे 'दीसल (दीस पहा) रल गवा ई ।
२. (य) बेनि = बेनिब । (र) बेवि = बन । (र) (ग) (घ) (ङ) मन मो = मानो । (र) दरम = दया ।
- ३ (ब) (र) बोए = बोए । (ब) (र) छत्र = छिद्र ।
- ४ (ग) (घ) काट = काटे । (ब) करम = कर्म । (ग) नाम = नामहि । (ब) (र) नामे = नामी ।
- ५ (ग) मी = मर । (ग) मी = मता । (र) बिकार = बेकार ।
- ६ (ग) (घ) (ब) (र) कन्हारिया = कन्ह कन्हरी । (र) सैवनि = सैवनि ।
- ७ (घ) तव = तथा । (ग) (घ) (र) नहि = नाहि । (घ) करते = कता । (ब) कपट = कट । (ग) (घ) (ब) (र) नहि = नाहि ।
- ८ (ग) दिनम = दिनित । (र), (घ), (घ) (र) नहि = नाहि ।
- ९ (र), (घ) (घ) (र) नहि = नाहि । (ग) इन्द्र = नाहि । (ग) (ब) इन्द्र = इन्द्र । प्रकामू = प्रकामू । (र) (ग), (घ) (र) नहि = नाहि ।
- १० (ग) (ग) (ब), (र) नहि = नाहि ।
- ११ (ग) (ग) (घ) (र) नहि = नाहि । (घ) (र) दय्य = जय । (घ) ज्योय = ज्येय । (ग) (घ) कुमती = कुकित । (घ) कुमती = कुकित । (र) कुमती = कुकित । (र) (ग) (घ) (र) नहि = नहि ।

सार सन्द भीन्ह्व मन जाई । सत लोक सन्द पहुवाई ॥६६१॥^१
 भति सुख सागर कहा न जाई । जा जान भ्रमित फल पाई ॥६६२॥^२

द्वन्द्व

मोमा सुखर प्रेम मंगल गगन में भरि भावहीं ।^१
 भवि म्बलाभक्ति भोति निरमलि म्यान को गुन गावहीं ॥^२
 भजर भ्रमर हस बंस ताही मोती मनि धित चुगहीं ।^३
 जरा मरन ते रहिस भ्रमर बहुरि ना भवजस भावही ॥१२॥^४

सोरठा

सतगुर म्यान बिचारि, संस रहित भ्रमरपुर ।^१
 भगति करै नर नारि, दयावन्त सम द्रिस्टि है ॥^२
 दिल दरिया दरसन देखिए, धंजन कछ गुर म्यान ।^३
 भ्रमगम निगम गति कंठ है, विमल चरन धित ध्यान ॥१२॥^४

चौपाई

म्यान बिराग विषेक बिचार । सहज सुरति भवसिंधु उवारा ॥६६३॥^१
 भ्रतम दरस म्यान जब होई । व्यापिक प्रमृ देखै सत सोई ॥६६४॥^२
 प्रतिबेवु पट परगट भहई । इमि करि प्रमृ म्यान मत कहई ॥६६५॥^३

१ (ख), (घ) (ङ), (च) मन = धित ।

२ (ख) (घ) (ङ) न = ना । (ख) (ग) जाने = जाने । (घ) भ्रमित = इह भ्रमित ।
 (ङ) भक्ति = भक्ति ।

३ (घ) (ङ) सुख = सुख ।

४ (ख) (ग) निरमलि = निर्मल ।

५ (ख) (ग) (घ) (ङ) चुगहीं = चुगहीं ।

६ (ख) भ्रमर = भ्रमरपुर । (घ) मय = मी । (ग) मय = मयो ।

७ (घ) संस = संस । (ङ) रहित = रही ।

८ (ग) भगति = भक्ति । (घ) कर = करे । (ग) कर = करहि ।

९ (ग) (ग) दरसन = दरसन । (घ) देखिए = देखिये ।

१० (घ) चरन = चरन ।

११ सुरति = सुरति । (घ) (घ) मय = मी । (ग) मय = मयो । (ग) (घ) (ङ) सिंधु = सिंधु ।

१२ (ग) बर = बने ।

१३ (घ) प्रतिबेवु = प्रतिबेवु । (ग) प्रतिबेवु = परति बिम्बु । (घ) प्रतिबेवु = प्रतिबेवु ।
 (ङ) प्रतिबेवु = परतिबेवु ।

साक्षी

निगम धारि उत्तपति भयो चतुरानन मूल बन ।
उचरेत् सञ्ज प्रनाहद, मन्मथार मव ऐन ॥८३॥^३

श्रीपाई

निगकार नहि मई प्रकार । सोइ विरंवि भस कीन्ह विषारा ॥८५॥^१
नहि मूल मवन मएन नहि बाठा । प्रसके नहेउ विरंवि विषारा ॥८६॥^२
नहि दुख मुक्क नहि व्यापिक माया । मई बिबेह धरम नहि बाया ॥८७॥^३
बिनु पगु बस सुन बिनु काना । बिनु करि निरति वेद करि जाना ॥८८॥^४
बिनु चसु वेस सत्य पतासा । बिनु पूज परगट है कासा ॥८९॥^५
कई विरंवि बद प्रस मासा । मूल डार पत्र नहि सासा ॥९०॥^६
भइसन ध्यान भमित सम सोसा । संघु बिकार परा बड़ सोसा ॥९१॥^७
बिनु पय बल बहुव दुख पाव । बिनु देसै कहु केहि गोहरास ॥९२॥^८
बिनु परंभ कइसन परनासा । बिनु वपु धरि वसै केहि प्रामा ॥९३॥^९

साक्षी

निगकार धाकार रहित है कहेउ सो भेद प्रभेद ।^{१०}

दूटो पूटो मएन बोए, बिरह विरग न छेद ॥८४॥^{११}

- १ (क) (स), (घ) (श) उल्लसि = उत्तपति । (घ) मनो = मन । (ग) (श) मनो = मनो । स्त्रील्ल वाड में दृष्टी अर्थात् स्त्री के प्रारंभ में ही अर्थिक है ।
- २ (स) उचरेत् = उचरे । (श) उचरेत् = उचरत । (घ) म् = म ।
- ३ (घ) (स) (घ) (श) निराकार = निरंकार । (स) (ग) (घ) (श) नहि = नाहि । (घ) (ग) (घ) कइ = कइ ।
- ४ (ग) (घ) मएन = मन । (स) (घ) (श) म्माडे = म्माडे । (स) कहेउ = कहेयो ।
- ५ (स) (ग) व्यापिक = व्यापिक । (घ) (ग) (घ) मइ = मइ ।
- ६ (स) बिनु पगु कान सुन नाहि बासा । (स) कउ = कउ । (ग) मुर्म = मूल । (घ) (घ) (घ) धरि = धर । (घ) धरि = धर । (घ) धरि = धर ।
- ७ (स) बिनु वपु धार कल पतासा । (ग) बिनु वपु केने सो म्माडे पतासा । (घ) छय = छा ।
- ८ (स), (घ), (घ) कइ = कइ । (घ) मूल ना डार पत्र नाहि सासा । (घ) मूल ना डार पत्र नाहि सासा । (घ) (श) मूल डार पत्र नाहि सासा ।
- ९ (स) (ग) भइसन = ऐसन । (ग) मी = मनो । (घ) मी = मन । (घ) बइ = बइ ।
- १० (स) (ग) कउ = कउ । (स) कउ = कउ । स्त्रील्ल वाड में दृष्टी अर्थात् स्त्री के प्रारंभ में ही अर्थिक है ।
- ११ (स) पर = परे । (स) कइसन = कइसन । (घ) (घ) (घ) (घ) कउ = कउ । (ग) पर = परे । (घ) कौ = कौ ।
- १२ (घ) रहित है = रहित । (ग) कइउ = कइयो । (श) कहेउ = कहेउ ।
- १३ (स) दूटो कहे उर मन बाए । (स) दूटो कहे उर मन बाए । (घ), (घ) दूटो दूटो मएनउ भोए । (ग) (श) न = न । (ग) न = न ।

साखी

प्रब किछु उतपनि करन बहै, चित चेतनि चित बोन्ह ।^१

नारि पुर्ख रस रग में, इह किछु इह्या कीह ॥८२॥^२

चौपाई

माया रूप कामिनि जो कीन्हा । प्रस्टमुजी छवि छेकै लीन्हा ॥६७५॥^१

देखत रूप निरजन प्रजेठ । सोम छोम सादर मुख सजेठ ॥६७६॥^२

देखत पल भरि रखा न गएऊ । नन प्रेम मुख बहुते भएऊ ॥६७७॥^३

जब कामिनि से भी परसगा । उपजे मनमत भाव प्रनगा ॥६७८॥^४

तेहि महँ तीनि देव तब भएऊ । ब्रम्हा विस्तु महेसर कहेऊ ॥६७९॥^५

तेहु तीनि भाग तब कीन्हा । कन्या तीनि सतीछन कीन्हा ॥६८०॥^६

माया चरित्र जो चित चलाव । भरमि मोह तिति देव मठाव ॥६८१॥^७

प्रापु निरखर जोखि होए जागी । सेवा कर्यह भोग रस लागी ॥६८२॥^८

ब्रम्हा की ब्रम्हाइनि जानी । विस्तु की विम्नाइनि रानी ॥६८३॥^९

संकर के देवी संग भएऊ । त्रिविधि ग्यान तीनि मिसि ठएऊ ॥६८४॥^{१०}

१ (ग) किछु = कछु । (ख) (ग) (ब) (ङ) उतपति करन = उतपति कर । (घ) बहै = न बह । (च) बहै = न बाहै । (ज) बहै = न बाहे । (झ) बहै = न बाही । (ञ) चित चेतनि चिन्ह । (ग) चित = चिन्ता ।

२. (ग) इह = एह । (ग) किछु = कछु । (घ) (ग) इह्या = इह्या ।

३ (ग) (ङ) छेक = छेके ।

४ (ग) सज = सजी । (ख) सोम छोम मुख सुदर सजेठ । (ग) (घ) सजेठ = सजेठ ।

५ (घ) (ब) (ङ) न = ना । (घ) (ग) (ङ) नैम = नपन । (ङ) प्रेम = प्रेम । (ङ) बहुते = बहुते ।

६ (घ) भी = भी । (ग) उपजे = उपजेठ । (ग) प्रनगा = नगा ।

७ (घ) मह = मे । (घ) (ग) विस्तु = विस्तु । (ङ) कहेऊ = कहेऊ ।

८ (घ) सतीछन = सतीछन । (ग) सतीछन = सती छन । (घ) (ङ) सतीछन = सतीछन ।

९. (घ) प्रापु = प्राप ।

१० (घ) इनि = इह । (घ) इनि = इह । (ग) (घ) विस्तु = विस्तु । (घ) (ङ) विस्तु = विस्तु । (घ) की = की । (घ) (ङ) विला = विल्ला । (घ) इनि = इह । (घ) रानी = रानी । (ङ) रानी = रानी ।

११ (ग) छर के संग देवी भएऊ । (ग) (ग) तीनि = तीनि । (ग) (ग) (ब), (ङ) टएऊ = टएऊ ।

मैं कुमुदिन तुह पूरन बंदा । मैं धमीन कइ परम धनंदा ॥१००७॥^१
मैं चकोर तुह द्विष्टि घापा । चुम प्र मरस पसक सक्या ॥१००८॥^२

छन्द

सम तेजि भरम विकार जग के संत सदा गुन गावही ।^१
कंज पुज रस मोद मधुकर सर सरोज पर घावही ॥^२
सै सपटि लागू घानि छन मैं अन्नित छबि सहुं छावही ।^३
दरस दरिया परसु धरने बइ चकोर पद पावही ॥१३॥

सौरठा

पद पकज कइ ध्यान मनि प्रागे वीपक कहा ।^१
मुनहु संत मुजान, सुखद सदा ह्मि करि कहा ॥१३॥^२

श्रीपाई

वेहि नहि बिमस चरन चित्त घाना । मकट हाएके भरमि निदाना ॥१००९॥^१
मुक्त सवन संका नहि घाना । होए भूभय बिचि करहुं घाना ॥१०१०॥^२
सोचन ससधि नाम नहि देखा । मैन विहून किमी न लेखा ॥१०११॥^३
मथि हेतु मुनिए जो प्राती । मिसै बिमस रस अन्नित घानी ॥१०१२॥^४
संत दरस पद पावन करई । चित्तमनि चित्त सन हरई ॥१०१३॥^५

१ (ग) कुमुदिन = कुन्दी ।

२ (घ) तुह = तुम । (व) तुह = तुव । (७) द्विष्टि = विरिष्टि । (घ) (व) चुमै = चुमेने ।

३ (घ) (व) (७) (८) बवरे = बवस । (घ) लाना = लाने ।

४ (घ) सर सरोज पर घावही = सरोज पर घावही । (७) सर सरोज पर घावही = सरोज पर घावही ।

५ (ग) सपटि = सपटि ।

६ (७) अन्नित घाना = अन्नित गलाना ।

७ (व) ह्मि = हम । (ग) करि = कर ।

८ (ग) वेहि नाहि = विह नाही । (घ) (व) (७) वेहि नाहि = विह नाही । (७) भरमि = मरमि । (व) मरमि = मरमु ।

९ (घ) ध्यान = ध्यान । (ग) चरई = चरिहो । (न) चरही = चरिहो । (घ) (७) चरही = चरिहो । (ग) धरना = धरना । (ग) धरना = धरना । (ब) (८) धरना = धरना ।

१० (घ) विहून = विहून ।

११ (ग) (व) (७) मुनिए = मुनिरे । (७) मुनिए = मुनिरे । (घ) जो = जा । (७) प्राती = प्राणी । (ग) मित्त = मित्त ।

१२ (७) सीमा पाठ में श्रीपाई की दानो अर्थात्पिचो क परसे ब्ययः 'जो और 'छे है । (ग) (८) जो = जी । (घ) जो = जेने । (घ), (ब), (८) जो = जा ।

घोषाह

अम्हू संपूरन सर्व विरयै । अपने छत्र अउरि सिर छाये ॥११५॥^१
 दयासेधु सुख सर्व सखपा । वसै निरखर सुर नर भूपा ॥११६॥^२
 सुनै सखन मुख अछित धामी । तीनि लोक मह अंतरजामी ॥११७॥^३
 मल रहित मनोहर सुन्दरताई । अछे असोग सुख संतत गाई ॥११८॥^४
 विमत बिगोग बोए भग्म निकेता । बोए पर चिता चिता मनि हेता ॥११९॥^५
 निमि सोवन बेहि जन पर सागा । सेधु सुखै सहै पगु पागा ॥१२०॥^६
 जीवन मुक्ति बिद जग भूसा । मातु पिता नहि माया भकूता ॥१२००॥^७
 त्रिगुन सरगुन इनो ते न्याय । सख रूप बोए विमल सुधाय ॥१२०१॥^८
 एह पर निजु सुकै सोई । हिरदै अंकुर म्यान जब होई ॥१२०२॥
 सखगुर म्यान दीपक जब सेसे । वस्तु अनूपम सुरति सुरसे ॥१२०३॥
 पाष तंसु तन सुदर देखा । निजु गहि प्रेम प्रीति सतरखा ॥१२०४॥^९
 मोहि से कहन कहैत जग माहीं । तदपि कहा विनु रखा म जाहीं ॥१२०५॥^{१०}
 खे नर एक सुह निरगुन निरंता । होहि सनाप सुमिरिह सम संता ॥१२०६॥^{११}

- १ (क) स्त्रीह्र पाठ में 'अम्हू' क पूर्व 'बोए' है । (ख) (घ) (ङ) अउरि = अवरि । (ग) अउरि = औरि ।
- २ (ग) सेधु = सिधु । (ख) सख = सख । (ग) वस = बसे ।
- ३ (ख) (ग) सुन = सुने ।
- ४ (ग) मल = मले । (ख) संतत = सन्तत ।
- ५ (क) स्त्रीह्र पाठ में 'पर' क पहल 'बोए' है । (घ) (ङ) बोए = भोए । (ख) (ग) बोए = भोए ।
- ६ स्त्रीह्र पाठ में 'सोवन' क पूर्व 'रिति' है । (ख) (ग) (ङ) (घ) निमि (रिति) = निमित्त । (घ) भी = मी । (ग) भी = मी । (क) स्त्रीह्र पाठ में 'सेधु' क पहल 'भी' है । (ग) सेधु = सिधु । (ख), (घ) सुकै = सुख । (ङ) सुकै = सुखे । (ग) सुकै = सुखेहि ।
- ७ (क) स्त्रीह्र पाठ में 'जीवन' क पहल 'बोए' है । (घ) (ङ) बोए = भोए । (ख) (घ) जीवन = जीवनि ।
- ८ त्रिगुन = त्रिगु । (ग) (ग) बूते = बुभु । (घ), (ग) (ङ) रूप = रूप । (ङ) बोए = भोए ।
- ९ (घ) इह मेर भा समुमे सोई । (घ) एह पर निजु सुक छोड़ । (घ) इह मेर सुक निजु सोई । (ङ) इह मेर निजु सुक छोड़ । (घ) हिरांमा अंगु जा जब होइ । (ग) हिरदै = हिरे । (घ) हिरद = हिरंमा । (ङ) हिरद = हिरंभा ।
- १० (घ) (ग) खे = लख । (घ) (ङ) नर = सख । (घ) वस्तु वस्तुम सुखे बीस । (घ) वस्तु = वस्त । (ङ) वस्तु = वस्त । (घ), (ङ) सुरसे = सुरस ।
- ११ (क) स्त्रीह्र पाठ में 'पाष' क पूर्व 'इह' है । (ग) इह = एह ।
- १२ (ग) कहेउ = कहेओ । (ग) कहेउ = कहेओ । (ग), (घ) तदपि = तर्पि । (ग) क्या = क्यो ।
- १३ (ग) (ग) (घ) (ङ) नर नाबक सुह निजुम निरंता । (घ), (ग) होहि = मोहि । (घ) सुमिरिह = सुमिरि ।

षट् सुर बुद्ध करै बेसासा । उदै भस्त केरि होहि प्रकासा ॥१०२६॥^१
इंगला भन्द्रवाहिनी कहिमा । पिगसा मानु प्रकासित महिमा ॥१०२७॥^२

सासी

वारि भवस्या तीनि गुन, पांच ठवु है सार ।
प्रेम तेस तुरि वारिक, भए बम्ह उभिबार ॥६॥^३

चौपाई

ए रोए धक भरमित सोका । कामिनि कनक महा बड़ सोका ॥१०२८॥^४
उमै र्यागि सामर्य है दूजा । ताको चरन कंबल की पूजा ॥१०२९॥^५
तेजि कर्मर्प कामिनि नहि साबा । सुमरि नाम त्रिजु होहि सनापा ॥१०३०॥^६
सो जन सामय सदा सहार्ई । मुक्ति सनीप सग फस पार्ई ॥१०३१॥^७
पर्यै नाम भर्ज ब्रह्मंडा । दनुज दावन पाप सत बंडा ॥१०३२॥^८
नाम प्रताप जुग जुग भसि भाव । सभन संत गुन महिमा गावै ॥१०३३॥^९
संत रहनि भी बारिज वारी । सदा मुक्ती निरसेप बिचारी ॥१०३४॥^{१०}
अमकुकरी अस महं जो रहई । पानी पर कबहीं नहि सहई ॥१०३५॥^{११}
दधी मच छित बाहर भावै । केरि छीत नहि उलटि समावै ॥१०३६॥^{१२}

- १ (ग) बुद्ध = दौड । (ग) बुद्ध = रोए । (ग) बेसासा = विक्रमा । (ग) केरि = छिदि । (ग) (ग) (घ) (ङ) प्रकासा = परवासा ।
- २ (ग) (ग) इंगला = रोए इंगला । (ग) (ग) (घ) (ङ) वाहनी = वाहनी । (ग), (ग) (घ) मालु = मान । (ग) (ग) (घ) (ङ) प्रकासित = परासित ।
- ३ (घ) प्रेम संत = प्रेम ललुख । (ग) (ग) (घ) बारिई = बरी । (ङ) बारिक = बारी ।
- ४ (ग) रोए = रो । (ग) कामिनि गद्य = कामिनि ही लोका । (ग) भक्ति लोका = भक्ति लोका । (घ) भक्ति लोका = भक्ति लोका ।
- ५ (ग) बंदन = बन्दन । (ग) (ग) (घ) (ङ) बी = बी ।
- ६ (ग) (ग) (घ) (ङ) महि = माहि । (ग) (ग) (घ) सुमरि = सुमरि । (घ) सुमरि = सुमरि ।
- ७ (घ) मुक्ति = मुक्ति । (ग) गनी = गनी ।
- ८ (घ) स्त्रीगत पाठ में 'पर्यै' क पूर्व 'रोए' है । (घ) (घ) रोए = रोए । (ग) (घ) पर्यै = पर्यै ।
- ९ (घ) स्त्रीगत पाठ में 'मालु' क पूर्व 'मान' है । (ग) (ग) (ग) मालु = मालु ।
- १० (ग) भी = भरो । (घ) निरसेप = निरसेप ।
- ११ (ग) (घ) (ङ) कुकरी = कुकरी । (ग) कुकरी = कुकरी । (ग) (ग) (घ) (ङ) मंड = मंड । (ग) (ग) (घ) (ङ) महि = माहि ।

सुनं स्रवन भूमिभ्रंतं रासै । सोचन सलधि नाम रस्य धारै ॥१०१४॥^१
 रसना रसि वसि धमिति पीवै । या जग माह सोइ जन पीवै ॥१०१५॥^२
 सतगुर ग्यानिहि सोचन सोवै । हरै समै कसि मत घष मोवै ॥१०१६॥^३
 समुम्भि सुमिह गुन साहब नीका । सम से सरस मला मनि टोका ॥१०१७॥^४
 औ तरनी जल जहा तराई । नाम सुमिह जल बोहित पाई ॥१०१८॥^५

साक्षी

पदुम प्रगास मधुप पद पावन, लगेत चरन चित मोर ।^६

विलगि बिहरि फिरि इलहि कंज पर, फनि मनि कर तन भोर ॥८५॥^७

श्रीपाई

करम जोग जम जीतै चहई । चढ़ि पपीसक फेरि मय ग्रहई ॥१०१९॥^८
 बिहंगम चढ़ि गएत प्रकासा । बँडि गगन चढ़ि देखु तमासा ॥१०२०॥^९
 माहामुद्रा उनमुनि पेल । धनवन भांति मोति तह देखै ॥१०२१॥^{१०}
 घट चमकौ धरिसै धन धानी । परिमल धप्रवास रस सानी ॥१०२२॥^{११}
 इगसा पिगसा सुल्लमन घाटा । बंजनाल रस पीवै वाटा ॥१०२३॥^{१२}
 खोइस दस कंबल विगसाना । सपटि सर्ग मधुकर सलजाना ॥१०२४॥^{१३}
 सरिता तीनि संगम तह भएऊ । वारि बिपारि धमिति रस पएऊ ॥१०२५॥^{१४}

१ (ख) (ग) (घ) सुन = सुन । (ल) रस्य = रास्ये ।

२ (क) पीवै = पीयै ।

३ (ल) (घ) ग्यानिहि = ग्याना । (घ) ग्यानिहि = ग्याना । (क) ग्यानिहि = ग्याना ।
 (ख) समै = समने । (ग) समै = समने । (घ) (ग), (घ) (क) कसिमत = कसिमति ।

४ (क) सुमिह = सुमिह । (ख) समसे = समसे । (घ) (ग) मजा = माल ।

५ (ग) औ = औ । (क) औ = औ । (घ) (ग) जहा = जहा ।

६ (घ) (ग) (घ) प्रगास = प्रगास । (घ) (क) लगेत = लगेत । (घ) (घ) लगेत = लगेत ।

७ (क) तन = तना ।

८ (क) जोग = जोग । (ग) जीत = जीते । (ग) फेरि = फिरि । (ख) (क) मय = मय ।
 (घ) मय = मयो । (क) मय = मया ।

९ (घ) (ग) गएत = गयो । (ल) बँडि = बँडे । (घ) बटि = बट्टी ।

१० मुद्रा = मुद्रा । (घ) (क) उन्मुनि = उन्मुनि । (ख) (ग) (घ) अनवन = अनवनि ।

११ (ख) इगसा की बरिस धनप्रानि । (ग) (घ) (क) इगसा की बरिस धनप्रानि ।

१२ (क) सीगल पाठ में बंजनाल क पहल 'छाँ' है । (घ) (ग) (क) (क) सुल्लमन = सुल्लमनि ।

१३ (घ) (क) कंबल = कंबल । (क) कज = कज ।

१४ (ल) (ग) (घ) (क) सरिता = सरिता । (ग) (ग) (घ) (क) मधुकर = मधुकर । (ग) (घ)
 (क) बिपारी = बिपारि । (ग) बिपारी = बिपारि । (ग) (ग) (घ) (क) पएऊ = पएऊ ।

जैसे चीक धर्यों प्रतिपाता । बहुत जतन के कीन्ह नेहाला ॥१०४६॥^१
 स्वारस्य स्वाद जानि के मारी । एहि विधि कास करै रसबाटी ॥१०५०॥^२
 सतगुर सब जानु परमीना । पाए परमपद होहु मधीना ॥१०५१॥^३
 भौ संसै सब जात भोपाई । सकल सिस्टि भेहि माहू समाई ॥१०५२॥^४
 सतगुर ससमाम लौ सीना । मनमोदिक के मद मो छीना ॥१०५३॥^५
 नाम पिळ्ळन धम्रित खाली । उर धंतर मुख हिरवै गाली ॥१०५४॥^६

साली

जब सतगुर पद पाइयां मेटि भव भ्रम उदास ।^७
 मोह सागर सब सूखिया, मेटि तम तेज प्रकास ॥६८॥^८

सन्व

हंस बस गति मान सरवर चुगत चित मोती धनी ।^९
 पै पाए विवरन बरत न बिलपेठ संकित अस धम्रित धुनी ॥^{१०}
 मन देखु विचारि सम लोभ सातब सुमिद नाम निरगुन धनी ।^{११}
 बहे दरिया दरस सतगुर कंज पुज धम्रित सनी ॥१४॥

सोटा

पद पंकर बर ध्यान विलै विचार सम परिहरो ।^{१२}
 दूजा कोह नहि धान, सस सभ जाके बसै ॥१४॥^{१३}

- १ (य) (र) धर्यों = धर्या । (य) जतन = जत । (ख) (न) के = के । (ल), (म), (न) नेहाला = निहाला ।
- २ (य) (ग) क = के । (ख) मारी = मारी । (य) (ग) करै = करे ।
- ३ (ग) जाणु = जाने ।
- ४ (य) भौ = भव । (म) भौ = भवो । (ख) बाल = बाल । (ग) (व), (प) भोपाई = भोपाई । (ख) सिस्टि = सिस्टि ।
- ५ (ग) (ख) (र) लौ = लो । (ख) लौ = लो । (य) लौ = लो । (ग) लौ = लो ।
- ६ (ग) नाम पिळ्ळन = नाम निरगुन । (य) न = ना ।
- ७ (ग) पाइयां = पाये । (य) पाइयां = पाये । (य) (र) मभ = मी । (य) मभ = मभो । (य) (म) (न) (र) मभ = मभ ।
- ८ (य) (ग) (र) (र) उर = उर । (ग) मदि = मदि ।
- ९ (य) सरवर = गयोवर ।
- १० (य) (ग) (र) बरत न = बरत । (ग) (ग) (र) (र) बिल गेठ = बिल गेठ । (य) (ग), (ख) (र) धुनी = धुनी ।
- ११ (ग) (ग) (य) (र) दखु = देखु । (ग) सम लोभ = लोभ । (र) सम लोभ = सम लो ।
- १२ (ग) (ख) (र) विचार = विचार ।
- १३ (ग) जाके = जाके । (र) जाके = जाके ।

पूज वास तिस भया फुलेता । बहुरि तीत तेत महि भैया ॥१०३७॥^१
 इमि करि सत प्रसन्न गुन सहई । भव निवृत्तक नाम गुन गहई ॥१०३८॥^२
 प्रथपट घाट सही सोई संता । सो जन जानु सदा गुनवंता ॥१०३९॥^३
 प्रजपा जाप भनाहद नादा । सेजि भव भरम सो वादि विवाता ॥१०४०॥^४
 प्रमिन्न बुद तहू करै निरंदा । ऐत प्रजीर मगन मन अंदा ॥१०४१॥^५

साथी

मनि मानिक दीपक बरै, उनमुनि गगन प्रकास ।^६
 मनमोदिक मर वेजिक, अरा मगन जम प्राप्त ॥१०४१॥^७

श्रीपाद

मुख सारद नारद मुनि गावै । सो सतगुर पद प्रगट देखावै ॥१०४२॥^८
 सेस सहस्र मुख बोले बानी । सतगुर महिमा तेहु बखानी ॥१०४३॥^९
 संत श्राधु मिति करै बखाना । केवल निरभै नाम भमाना ॥१०४४॥^{१०}
 माया चिन्है संत है सोई । ग्यानि भगति वा करै बिमोई ॥१०४५॥^{११}
 जो माया जग करै बिनासा । भवघरु परै भरमि के प्रासा ॥१०४६॥^{१२}
 प्रावै जाण जगत करि प्रपना । ज्यो बिसान खेदी वा जतना ॥१०४७॥^{१३}
 अब चाहै सब सावै मिनावै । जोति सोइ के फेरि उपजावै ॥१०४८॥^{१४}

- १ (ख) पूज वास तिस = पूज वास से तिस ।
- २ (क) लहर = बहरे । (ख) (ग) भव = मौ । (घ) मर = मरो । (ङ) गहरे = गहर ।
- ३ (ग) लख = लखे । (ख) सोई = सो । (घ) जानु = जानि ।
- ४ (ग) भव = मरो । (क) मर = मा ।
- ५ (ख) (ग) करै = करे ।
- ६ (ख) (ग) बरै = बरे । (घ), (ङ) उनमुनि = उनमुनि ।
- ७ (ख) (घ) (ग) (ङ) लखिक = लखिक । (क) लखिक वाड में 'अरा मगन' के पूर्व सेये है ।
(ख) (ग) सेये = सेया । (ङ) सेये = सेरे ।
- ८ (ग) मुख = मुख । (घ) बखानै = बखान ।
- ९ (घ) (ङ) बोले = बोले ।
- १० (ख) (ग) करै = करे ।
- ११ (ग) चिन्है = चिन्हे । (ख), (घ) (ग) (ङ) ग्यानि = ग्यानि । (ग) भगति = भक्ति ।
(ख) (ग) करै = करे ।
- १२ (ख) (ग) करै करे । (ख) मर = मा । (ग) मर = मरो । (ख) (ग) परै = परे ।
(ग) (ख), (ङ) के = के ।
- १३ (ख) करै = करे । (ग) भना = भनना । (ङ) ज्यो = जा ।
- १४ (ख), (घ) लख निदाव = लखनिदाव । (ङ) बोये के = बोये के ।

धौपाई

छन सरवर मन देखु बिभारो । तामें छरिटा तीनि सुघारो ॥१०६१॥^१
 बामें माग सरवर प्रहई । हंस बंस कौतुक वहं करई ॥१०६७॥^२
 बु गी मोठी निरमस सीका । मल्लकि बरै मन मस्तक टीका ॥१०६८॥^३
 हंस बंस गुन ग्यान गभीरा । नीर छीर दिबरन कच बीरा ॥१०६९॥^४
 काग कपुत करम बहु धीना । भई खुवास मीन मुल सीना ॥१०७०॥^५
 हंस कौतुक दक्षि भए मतीना । निरमस संतमत जगत से भीना ॥१०७१॥^६

साक्षी

जब सगि वया न ज्यने, सम जुग जाहि घनंत ।^७
 तब सगि भगति ना प्रेम पद, सुकृति सोक बिनु कत ॥१०७॥^८

धौपाई

सरगुन निरगुन करो बिभारा । करो मिसेद वेद निरुभारा ॥१०७२॥^१
 निरगुन सोइ बिनसी महि भाई । भबर धमर देह मुक्तदाई ॥१०७३॥^२
 सरगुन सो बंधन में साया । मुनि बिराग जोग सम जाया ॥१०७४॥^३
 ओं भकार से प्रगट हूँ माया । सोइ मंद बर किम कदाया ॥१०७५॥^४

- १ (४) सरवर = सरोवर । (म) (ग) (ब) (७) छरिटा = छरिता । (प) सीनि = सीनि ।
- २ (८) बामें = ओ बायें । (ग) (न) सरवर = सरोवर । (ब) सरवर = सरोवर । (ब) कौतुक = कौतुक । (ग) कौतुक = कौतुक । (८) कौतुक = कौतुक । (७) कौतुक = कौतुक ।
- ३ (४) (ग) बु ग = बुगि । (म) (प) बर = बरे ।
- ४ (५) मतीना = मतीना ।
- ५ (म) (म) मस = मसे । (म) (ब) (७) भीना = भीना ।
- ६ (४) कौतुक = कौतुक । (न) मर = मे । (७) मतीना = मतीना । (४) कपुत से भीना = कपुत से भीना । (ग) (ब) कपुत से भीना = कपुत से भीना । (७) कपुत से भीना = कपुत से भीना ।
- ७ (ग) बर = बरे । (४) (७) सगि = सगी । (७) (ग) ज्यने = ज्यने ।
- ८ (ग) म = मदि । (ग) (ग) सुकृति = सुकृति । (७) सुकृतिसेक = सुकृति से ।
- १ (ग) निरगुन (गम) करो = निरगुन वा । (ग) निरगुन (गम) करो = निरगुन करो । (ग) वेद निरुभारा = वेद निरुभारा ।
- १ (ग) (न) मोद = मोद । (म) विजय = विजये । (ग) (ब) (७) मदि = मदि ।
- ११ (७) विगल = विगले ।
- १२ (ग) ओं भकार = ओ उच्चार । (ग) ओं भकार = ओं उच्चार । (प) (७) ओं भकार = ओं उच्चार । (ब) से = से । (७) ओं भकार से प्रगट = ओं उच्चार परगट । (ग) है = मर । (७) किम = विनुन ।

शौपाई

राम जोति जग सम केहु जानी । किस्तरूप कंबला सग रानी ॥१०५५॥^१
 रोग दोष सुख भोग बितासा । कृष्णा काम बाम ग्रिह बासा ॥१०५६॥^२
 जेहि माया सुर नर मुनि ताचा । बपु धरती केहु नाही बाचा ॥१०५७॥^३
 देह धरी सम खोजहि पंचा । माया प्रयाह किमि होहि सनाया ॥१०५८॥^४
 ब्रूइत भव में उबि उबि जावै । जेहि नहि सतगुर ग्यान समावै ॥१०५९॥^५
 कवि धरती करनी पव पवना । खनि तिसोक रोग दुख दवना ॥१०६०॥^६
 जिन्है बिना कवि बहूत मूलाना । ग्यात विराग बियेक ना जाना ॥१०६१॥^७
 स्वारथ स्वाद समौ केहु भाना । माया रूप सो ब्रम्ह बखाना ॥१०६२॥^८
 मन मारस सिव संकर जोगी । मन रासस इन्द्रीजित भोगी ॥१०६३॥^९
 किस्ल राम मनहीं को रंगा । मन ते उतपति मन्ते भगा ॥१०६४॥^{१०}
 मनहीं चीन्हि प्रेमपद पावै । मन्ते जोगी भग समुम्हवै ॥१०६५॥^{११}

साखी

दधिसुत से भ्रजित पायो, रविमुत भ्रात न बास ।^{१२}
 भला मार ब्रम्ह के, पूरन प्रेम प्रकास ॥८९॥^{१३}

- १ (घ) पङ्क्ति-मन्त्रस्य : किस्तरूप कंबला सग रानी । राम जोति जग सम केहु जानी ॥
- (७) किस्ल = किस्ल । (ग) कंबला = कम्ला ।
- २ (ग) दोष = दोष । (ख) बितासा = बेससा । (ग) बितासा = बेलासा । (ब) बाम = बान ।
- (७) ग्रिह = गिरिहि ।
- ३ (घ) जेहि माया = जो माया । (ग) जेहि माया = जे मए । बपु = बपु । (घ) (ग) धरती = धरती धरि । (ल) नाही = ना । (ग) नाही = न ।
- ४ (घ) खोजहि = खोजति । (७) खोजहि = खोजत ।
- ५ (ख) ब्रूइत = ब्रूइत । (घ) (ग) उबि उबि = उबि उबि । (७) उबि उबि = उबि उबि ।
- (ग) जेहि = जे ।
- ६ (ख) (ग) पवना = पावन । (७) पवना = पावना । (घ) (७) तिसोक = तिसोका ।
- (घ) (ग) दवना = दावन । (७) दवना = दावना ।
- ७ (ग) जिन्है = जिन्हे ।
- ८ (ग) (ग) समौ = समे । (घ) ब्रम्ह = ब्रह्म । (७) बखाना = बखाना ।
- ९ (घ) (ग) (ब) मारस = मारस । (७) मारस = मारस । (घ) (ग) इन्द्रीजित = इन्द्रजित ।
- १० (ग) किस्ल राम इहि मन्त्रि को रंगा । (ग) इस्ल राम मन्त्रि को रंगा ॥
- ११ (ग) मनहीं = मन्हीं । (घ) चीन्हि = चीन्हि । (घ) समुम्हवै = समुम्हवै । (ल) से = से ।
- १२ (ग) पायो = पय । (ग), (घ) पायो = पयो । (७) पायो = पयो ।
- १३ (ग) (ग) पन्ना = पन्ना । (ग) ब्रम्ह के = ब्रम्ह के । (घ) ब्रम्ह के = ब्रम्ह के ।
- (घ) (ग) (७) प्रकास = प्रकास ।

बौपाई

बोए त्रिगुण ते रहित भ्रमाता । ग्याल गमी त्रिरले पहुषाना ॥१०८६॥^१
 जरे मरे नहि भावै जावै । प्राण पिड सठपुर्ष क्हावै ॥१०८७॥^२
 ससगुर प्रेम पिळखत पावै । ग्यान रतन मनि सो जन गावै ॥१०८८॥^३
 प्रसहित ब्रम्ह पंडित जन ग्याता । दोह स ब्रम्ह पंडित जन ग्याता ॥१०८९॥^४
 तथा ग्यान इमि स्वारय ब्रह्मै । ब्रम्ह ग्यान निरुपम कह्यै ॥१०९०॥^५
 धनगो म्यान विरसा जन जाना । माया की गति महि पहिषाना ॥१०९१॥^६
 सप्र ग्यान जव जन के होई । ससै रहित भ्रमरपुर सोई ॥१०९२॥^७

साली

सवन म्यान पित में वसै संघ्यासन कष नेम ।^८

कहै सुन हिय में बसै दरिया वरखन प्रम ॥९२॥^९

बौपाई

बिनु देसै बुझ दाखल पाव । बिना ग्यान भौषक में भाव ॥१०९३॥^१
 बिनु परवै जम सासन करई । सई सुल बुधि बल सम हरई ॥१०९४॥^२
 संत निकट बिनु निपट बुझारी । भरकट मुठ जम जाल पसारी ॥१०९५॥^३
 निकट फंजा महि चीन्है कोई । ज्यों मिर्गा मय भांवर होई ॥१०९६॥^४
 प्रकरम को कसि काय विखाला । निकट वसै बुझै नहि जम जाना ॥११००॥^५

१ (ब) (क) बोए = ओर ।

२ (क) जरे मरे = जरे मरे । (क) सल पुर्ष = सल पुस्तक । (क) क्हावै = क्हावै ।

३ प्रेम = प्रेम । (घ) पाव = पाग । (ब) रतन = रत्न । (क) जन गावै = जन गावै ।

४ (क) प्रसहित ब्रम्ह पंडित जन ग्याता = अश्वमेध ब्रम्ह जीव परगता । (घ) (क) ददत ब्रम्ह पंडित जन ग्याता = ददत ब्रम्ह जीव परगता ।

५ (घ) इमि = तम ।

६ (क) (घ) (ब) (क) नहि = नाहि ।

७ (ब) जम = मय ।

८ (क) वसै = बसे ।

९ (क) (घ) कहै सुनै = बदे सुने । (घ) (ब) (क) हिय = दिमा ।

१० (ब) मौषक = मयक । (क) मय करण भांजित ।

११ (घ) घई = छे ।

१२. (ब) निपट = खला । (घ) (ब) (क) मुठ = मुठि ।

१३ (क) (घ), (क) नहि चीन्है = चीन्है नाहि । (क) ज्यों = जी । (घ) ज्यों = ज्यों । (क) ज्यों = ज्यों । (क), (ब) (क) मिर्गा मय = मिर्गा मय से ।

१४ (क) (ब) (घ) प्रकरम का कसि = अमरकाम कसि । (घ) निकट बसे बुझै नाहि जम जाना । (घ) (क) निकट बसे बुझै नाहि अमरकाम ।

हतेउ कंस जिन्ह वान विसाला । बसिहि बांधि जिन्ह दीन्ह पताला ॥१०७६॥^१
 सो माया जग चिन्ह ना कोई । परा भयाह बंद मति सोई ॥१०७७॥^२
 भाई आए बिसंभर दवा । जो जन जानि विचारै भेवा ॥१०७८॥^३
 सो सीमा उन्हि रषो बनाई । गोप सखा संग गाण भरार्ई ॥१०७९॥^४
 जो भगते आए भगवाना । ब्रम्ह म्यान बंद मठ जाना ॥१०८०॥^५
 पागवती के जव मौ ग्याना । महादेव के पूछेउ जाना ॥१०८१॥^६
 भाटी ब्रम्ह भई भयवाना । इन्हक भेद कहौ निजु म्याना ॥१०८२॥^७
 बोध कथे इमि कहि समुझार्ई । संकर बहुविधि कथा सुनार्ई ॥१०८३॥^८
 आसी अति जय परगट सहई । जोगी मुनि म्यानी सम कहई ॥१०८४॥^९
 इह चरित्र बिरसा पहचाना । मुनु देवी निजु ग्यान वखाना ॥१०८५॥^{१०}
 जगदंबहि भसपिर तव कीन्हा । धादि ब्रम्ह राम कहि कीन्हा ॥१०८६॥^{११}
 माया चरित मोह भगवाना । मुनि पठित सम म्यात वखाना ॥१०८७॥^{१२}
 जव सतगुर पर परई पाई । माया चरित्र सहई विसयाई ॥१०८८॥^{१३}

साखी

बह्मिपति सुरपति कामरिपु, सारद भो सुखदेव ।^{१४}

कहुव विठेउ पुग कस्य लही, म्यान विराग विमेव ॥६१॥^{१५}

- १ (ख) इतेउ = इत्या । (ग) इतेउ = इकरो । (ब) इतेउ = इत्यो । (ङ) इतेउ = इलेरो ।
२. (ग) चिन्ह = चिन्हे । (ख), (ग) (घ) (ङ) बन्दमति = बन्दमन ।
- ३ (घ) विचार = विचारे ।
- ४ (ब) रषो = रषा ।
५. (घ) (ग) (घ), (ङ) म्यान = मयते ।
- ६ (ग) मी = मनो । (ख) (र) के = कर । (ख), (ग) (घ) पूछेउ = पूछेरो । (ङ) पूछेउ = पूछेरो ।
- ७ (घ), (ग), (घ) भई = भये ।
- ८ (ग) इमि = इमि ।
- ९ (ङ) आसी = असी ।
- १० (ख) (ग) (घ) (ङ) बिरसा = बिरसे । (ख) निजु = निज ।
- ११ (ख) (ग) (घ) (ङ) जगदंबहि = जगदम्बी । (घ) भसपिर = अस्पृशित । (ङ) तव = त ।
- १२ (ग) चरित्र = चरित ।
- १३ (ग) परब = परब । (ग) (घ) (घ) सहई = सहै ।
- १४ (ग) धापी-संख्या ६१ से ७० संख्या १ पर तब खगिस्त । (घ) और = अथ । (ङ) मी = मो ।
- १५ (घ) विठउ = वीठ । (घ) विठउ = विठो । (ङ) विठउ = विठार । (घ) विराग = विरा । (घ) विमेव = विनेव । (ङ) विनेव = विनेरो ।

बोलत ब्रम्ह दिसें निजु सोई । ज्यो दरपन में प्रतिमा होई ॥११०६॥^१
 दया देखै तव बाके देखै । ब्रम्ह दिवाए प्रिस्टि महं पेखै ॥१११०॥^२
 बोए ना मरै जिब नहि भाई । जाकर धंस सब ब्रम्ह कहाई ॥११११॥^३
 बोए निरलेप माया नहि हेवा । इह त्रिगुन बीज बोष ज्यो खेता ॥१११२॥^४
 विमल सकुम सुधारस सानी । पव पदुषानहु निरमल म्यानी ॥१११३॥^५

साधी

अबोधत ब्रम्ह बिराग मठ ब्रम्ह म्यात निरलेप ।^६
 धापे बिन्है अजरि बिन्हावै, भातमवरसी देव ॥६३॥^७

चौपाई

मन परमेसर मन है राजा । मनहीं तीनि लोक महं छाया ॥१११४॥^८
 इह मन करता किरन कहावै । मनहि बिसंभर दिख पर भाव ॥१११५॥
 मनहीं अमल अकास प्रकाश । मनहीं पांच तत्तु का वासा ॥१११६॥^९
 मनहि समीर वारि धन धैरे । मनहीं छटा गरज धन धैरे ॥१११७॥^{१०}
 मन अनम नब बार गोसाई । मन अनंत रूप कला देसाई ॥१११८॥^{११}

- १ (ब) (ग) (घ) बोळत = बोळ्या । (ग) दिसे = दिखे । (ब) ज्यो = जेव । (ग) (घ) ज्यो = ज्यो ।
 २ (ग) दया = दय । (ब) (ग) देखै = देखे । (ख) (ग) बाके = बाक्य । (घ) दिवाए = दिवाई ।
 (घ) (ब) मह = मे ।
 ३ (ब) बोए = बोए । (ग) ना = नाहि । (ब) (घ) जा = जाम । (ब) (ग) (घ) (घ) महि =
 माहि ।
 ४ (ब) बोए = बोए । (ब) इह = एह । (ब) (ग) त्रिगुन है बीज = त्रिगुन बीज । (ग) बोषे =
 बोध । (ब) बीज बोषे ज्यो = बीज ज्यो ।
 ५ (क) स्वीकृत पाठ में 'किन्हा' के पूर्व 'बोए' है । (ब) (घ) बोए = बोए ।
 ६ (घ) (घ) निरलेप = निर्लेप ।
 ७ (ग) बिन्है = बिन्हे । (घ) (घ) (घ) अजरि = अजरि । (ब) (ग) बिन्हावै = बिन्हे ।
 ८ (घ) (ब) (घ) परमेसर = परमेसर । (घ) मनहीं = मन्हीं ।
 ९ (घ) इह = एह । (घ) किरन = किरन । (ब) (घ) किरन = किरन । (घ) मनहीं = मन्हीं ।
 (ब) (घ) (घ) दिख = दिखु ।
 १० (घ) मनहीं = मन्हीं । (घ) मनहीं = मन्हीं ।
 ११ (ग) मन्हीं = मन्हीं । (घ) धैरे = धैरे । (घ) धैरे = धैरे । (ग) मन्हीं = मन्हीं । (ब),
 (घ) गरज = गरजी । (ग), (घ) गरज = गरजी । (ब) धैरे = धैरे । (ग) (घ) धैरे = धैरे ।
 (घ) धैरे = धैरे ।
 १२ (ब) (ग) (घ) अनम = अनमे । (घ) अनम = अनमे । (ब) (घ) नब = नबो ।

प्रभ्रित छेबि वासनि करु पाता । नाम भजन बिनु विस्त्रिघर जाना ॥११०१॥^१
बाके दया धरम नहिं छटा । जम जासिम जिव करु छठपाता ॥११०-॥^२

छन्द

जीवन जन्म असाधि नरको नरक नाग जो बहै ।^१
जम भीन्हि बिति विभारिके बलि कपट जाके सो भहै ॥^२
जम सासना कसि मुसुकु अडि वसि कासके घर जिव दहै ॥^३
बहै हरिया दरस बीना परस काके दुख सहै ॥११॥^४

सोरठा

सतगुर बचन परवान जो जन जाहै मुक्तिफल ।^५
मुनो सबन तनु म्यान, इर धतर जयहीं बसै ॥११॥^६

चौपाई

एह मन घानि अठ अलि धारै । एह मन सुर मुनि नाथ नवारै ॥११०१॥^१
मन चिन्हला विनु बह दुख पारै । मन चिन्हला विनु मूल गवारै ॥११०२॥^२
मन चिन्हहु मन म्यान संजोगी । मन चिन्हला विनु बहुत त्रियोगी ॥११०३॥^३
मन के सिव बिचिछि छन सागे । मनहीं के छोगी छन जागे ॥११०४॥^४
मनहीं वेद विनुव सुनारै । मनहीं अट दरसन सम पारै ॥११०५॥^५
सतगुर नेद बुझु तनु वानी । जेहि साजे होए निरमल म्यानी ॥११०६॥^६

१ (घ), (ङ) वासनि = वास । (क) विस्त्रिघर = विस्त्रिघर ।

२ बाके = बाके ।

३ (ख) नाग जो बहै = नाग जो बहै । (घ) घर जो बहै = घर जो बहै ।

४ (ख) बिति = बित । (घ) विभारिके = विभारिके ।

५ (घ), (ङ) कासके घर = कासके घर ।

६ (ख) (घ) (ङ) कास = कास । (ख) सहै = सहै ।

७ (ख) बचन = वचन । (ङ) जाहै = जाहै । (घ) (ङ) मुक्ति = मुक्ति ।

८ (ख) बसै = बसे ।

९ (ख) (घ) एह = इह । (ख) इह मन सुर मर मुनी नवारै । (घ) इह मन सुर मर मुनी नवारै । (ङ) एह मन सुर मुनि नाथ नवारै ।

१० (ख) किरला = किरला ।

११ (ख) (घ) किरलु = किरलु । मन किरलु मन किरलु ।

१२ (घ) (ङ) लागे = लागे ।

१३ (घ) मन्दी = मन्दी । (घ) (घ) (ङ) जागे = जागे । (ग) मन्दी = मन्दी । (ख) पार = पार । (ग) पारै = पारै । (घ) (ङ) पारै = पारै ।

१४ (ख) जागे = जागे । (ख) किरलु = किरलु ।

मंगल मूल है रहनि बिसोका । घरमराए दर क्वहि न रोका ॥११२६॥^१
घनंत एक महं रहा समारै । सतगुर म्यान जवे होए जारै ॥११२७॥^२

साखी

बाग्ज बारि के ऊपरे, मणि मदिल में बास ।^३

दिनमनि प्रम भौ पत्र में फूले कंज सुबास ॥१४॥^४

चौपाई

मातु पिता सुत बंदी भगिनी । अपने मग में सम कोह मंगनी ॥११२८॥^५
घटत छने छन जान धोराई । हिवै विवेक म्यान नहि माई ॥११२९॥^६
भूमे संपति स्वार्थ भूदा । परे भवन में भ्रम मगुदा ॥११३०॥^७
संत निकट फिरि जाहि दुराई । छन छन माया मोह लपटाई ॥११३१॥^८
भव का सोषसि मन्हि मुलाना । ज्यों सेमर सेइ सुगा पछताना ॥११३२॥^९
तब तोए बहैल जो समै एगाना । बंधु माया भौ दरख सजाना ॥११३३॥^{१०}
मरल काम कोह संग न साजा । भव जम मुसुक दीन्ही हाया ॥११३४॥^{११}
मातु पिता घरनी घर ठाढ़ी । देखत प्रान सीन्ह बी बाढी ॥११३५॥^{१२}
गाढे घन गहिरे जो गाढै । छुटे माल जहां तक गाढ ॥११३६॥^{१३}
नैम भयावन बाहर डेरा । रोवहि सम मिलि घांगत घेरा ॥११३७॥^{१४}

- १ (क) खनी = रखनी ।
- २ (घ) माई = इम । (ङ) जवे = ऊपरे ।
- ३ (क) के = कै । (ख) (ङ) ऊपरे = ऊपरे ।
- ४ (ग) भौ = भवो । (ङ) फूले = फूलै ।
- ५ (क) मात पिता सुत बंदी भगिनी । (ग) बंदी = बंधु । (ख) (ङ) बंदी = बंधो । (ङ) अपने = आपने । (ग) (घ) मगु = मग ।
- ६ (क) (ग) (ख) (ङ) कनेछन = कनकन । (ग) (ङ) धोराई = दोराई । (ख) विवेक = विषय ।
- ७ (ख) (ङ) भूमे = भूमै । (ख) परे = परै । (ग) मगन = मगोन । स्त्रीकृत पाठ में 'मग' अक्षिप्त है ।
- ८ (क) (ख) (ङ) फिरि = फेरि । (घ) (ख) (ङ) किले बास रख फेरि लफ्फाई ।
- ९ (घ) अक्षिरिह पाठ—इमइम माया मोह लपाना । (ङ) सुगा = सुमा ।
- १० (क) तब तोए बहैल = तब तबो । (ग) (ख) तब तो बहैयो । (ङ) तब तबो = बहैयो । (ख) माया = माए । (ग) (ख) (ङ) माया = माई ।
- ११ (क) (ग) (घ) (ङ) मुसुक = मसुक । (ख) (ग) (ख) (ङ) दीन्ही = दीन्ही ।
- १२ (ङ) बी = बी ।
- १३ (ख) (ग) (ङ) गाढै = गाड़े । (ख) (ग) (ङ) गाढै = गाड़े ।
- १४ (क) भयन भयावन । (ग) मगोन भेभावन । (ख) (ङ) मगन गामगन । (ख) (ङ) रोवहि ॥ रोवही ।

छन्द

मन भसावै खंज मीन ज्यों मन उडिगन गगन सोहावहीं ।^१
 मन धन्य अनिल मन और भरमिनु बज पुंज पर भावहीं ॥^२
 मन करम करता काम कामिनि दाम धाम छवि छावहीं ।^३
 मन निमुखासर सोवत सपना सब रूप बनि भावहीं ॥१६॥^४

सोरठा

मन संसै सागर भयो, बुरख धगम अयाह ।^५
 सठगुर दमा तरनी दियो, उतरि जाए भवपा ॥१६॥^६

चौपाई

जिन्हि सतपद खोजा पितलाई । निबट नाम निमु ग्यान समार्ह ॥११६॥^७
 भातम दरस ग्यान जब बूझै । प्रेम भगन होए अपनहि पूझै ॥११७॥^८
 तछु तिसरु मनि मुद्रा फरै । धनहुद धुनि मुरली तहु हेरै ॥११८॥^९
 धनपा संझ तरपन करई । गाएत्री म्याल गमी मति सहरई ॥११९॥^{१०}
 पस पस सुमिरै प्रेम रस पीरै । मनि मुहुता तहवां चित दीरै ॥१२०॥^{११}
 अंद मूर वोए परसै भएऊ । सरिता छीनि संगम तहं खेऊ ॥१२१॥^{१२}
 बन्ह पस तहवां भरि पीरै । बन्ह दिदाए तहवा सुख जीरै ॥१२२॥^{१३}

- १ (ग) मन = मन्त्र । (ख) मगन = सपन ।
- २ (ग) और = और ।
- ३ (प) मन करम करता = मन करता । (घ) (ङ) कामिनि = कामी ।
- ४ (ख) सोवत = सोझत ।
- ५ (ग) संसै = संसै । (घ) संसै = संसै । (ङ) (च) भयो = भयो । (छ) भयो = भयो । (ज) भयो = भयो ।
- ६ (ख), (ग) दियो = दियो । (घ) (ग) (ङ) मन = मी ।
- ७ (ङ) अतिरिक्त पाठ—सुनान । (ग) (ग) (घ) (ङ) चौपाई का पाठानुसार ।
- ८ (ग) मगल = मंगल न । (ख) अरनहि = अरनहि । (घ) अरनहि = अरनहि । (ङ) अरनहि = अरनहि ।
- ९ (ङ) मनि = मन । (ख) (ग) हेरै = हेरै । (ङ) (घ) हेरै = ररै । (ङ) हेरै = होरै ।
- १० (ङ) स्त्रीला पाठ में 'अरगा' के पूर्व ईर है । (ग) ईर = एर । (ख) (घ) मनि = मन । (ग) मनि = मे ।
- ११ (ख) (ग) (घ) (ङ) सुमिरै = सुमिरै । (ख) (घ) (ङ) तहवां = तहां ।
- १२ (ग) परसै = परस । (ख) (घ) (ङ) (च) छीनि = मनिना । (घ) (ग) (घ) (ङ) तहं = तहां । (ङ) खेऊ = खेऊ ।
- १३ (ङ) (ग) (घ) (ङ) बन्ह = कुम । (ग) (घ) (ङ) खेरै = खेरै । (ख) खेरै = खेरै ।

ग्रन्थ संपूर्ण दरियासागर ह्याश्रयासक्ति सिखन तद्व्यार भैस सावन वरी नौमी रोज समिदार परवान दिन बुपहर उठवे साहब धन सो मिनती मोरी छुटस प्रसर भात्राहीन पढ़व सम जोरि सकल दरियापंथी साधु भो सीख को घतनाम सतनाम ।

ग्रन्थ लिखावत नरहरदास दरियापंथी वासिदे मौजे रवई प्रगने बिसतहजारी भागे सानिहाल (?), जो कोई ग्रन्थ चोटाव सो जम जगति के घक्का पावै प्रत-कास बिगुरधम होए ।

धारीख—२ सावन, सन् १२६६ साल ?



१ (क) ग्रंथ दरिया सागर संपूर्ण सतनाम माल्लत दरिया साहब साहब का मन्थन साहबसाहब मोरपुर परगना बनवारी ठपे बीसी मीजे बरकंभा टकल चौठ नै परवान समुक्ति खेना ठेकार मेल बिछे माल्लतपुर परगना माल्लतपुर मौजे सिद्धपुर मौजीदास हुमादास का मन्थन पर ठेकार हुमा समत सन १२६० घात छै नाम बैसाध सुरी दंकी बार झुकर के बसवत गिरवारीदास कबीर दरिया साहब के दल बं साहब कालदास भी धामी गुठ भागे सम संत साधु सेक से छतनाम सो बेहि साएक ठेसम से छतनाम ।

(ख) छतनाम गरंभ संपूर्ण दरिया सागर माल्लत दरिया साहब दरिया साहब का भस्वान साहबसाहब मोरपुर परगने बनवार ठपे बिधि मीजे बरकंभा सरकार सो छी समुक्ति खेना ।

फनि लिखते

मोझम परने बासा गइ बिछे मोरपुर ।

दल व झुकर लिखते

दल बे साहब मोहरदास का मुडा सो छहि झुकरत केरीदास लिखा छे छहि मास घत मि धारीख २८ दिन रवि सुकल पढ़ जो बेसा सो लिखा मम दोस न दीवते मे कने छतनाम साधुन के पल केरीदास का छतनाम प३धे ।

(ग) ग्रंथ संपूर्ण दरिया सागर इनामि दासि समत गठारख छै १२८३ छै नाम बैसाध सुरी ठेस १३ बार झुकर के ग्रंथ लमार मर चौठ पर मन्थन पर साहबसाहब मोरपुर परगने बनवारी ठपे बीसी मीजे बरकंभा टकल दरिया साहब का मन्थन बे फनि समुक्ति खेना बसवत उमरादास कबीर मुकल दल बे बहिनी बिराए मति ग्रंथ सिद्धि दिया भूषा ठेसि के साइ बिधि मान दैध करते जफे साहब का कर से कराह होए छे ग्रंथ गुठ का कर मे कने वे बीन कादमा मीरदास कबीर जो बीन हुए है अन होइगे ती सने सो छतनाम भागे पठित जन से मिनती मोरी टूटल झुकर खेवै जोरी ।

(घ) संपूर्ण दल्लत सातवारीदास ।

साष्ट उठाए काय करि लीन्हा । बाहुर जाए भगिनि जो दीन्हा ॥११३८॥^१
 जरि गइ खनरि भसम उडियानी । दिना चारि सोष कीन्हो ग्यानी ॥११३९॥^२
 फेरि धंभै लपटानी प्राणी । विसरि गई बोए नाम निसानी ॥११४०॥^३
 खरषहु खाहु दया करु प्राणी । ऐसे बूढे बहुत भूमिमानी ॥११४१॥^४
 सतगुर सन् सांच इंह मानी । बड्डे दरिया करु मयति वसानी ॥११४२॥^५
 भूमि मरुम एरु मूल गंवाव । ऐसन जन्म क्हो फेरि पाव ॥११४३॥^६
 धन संपति हाथी धन जोरा । मरुन संत संग जाए न तोरा ॥११४४॥^७
 इंह तन देह भगिनि में जरिहैं । भसम उड़ाए फेरि ना हेरिहैं ॥११४५॥^८
 मातु पिता सुत बंधों नारी । ई सन यावरि तोहरि बिसारी ॥११४६॥^९
 मेदिहहि बिसमै होहि भनदा । तिस भंजुरि दै करिहैं गंदा ॥११४७॥^{१०}

साम्नी

कोठा महुस भटारिया, सवन सुनै बहुराग ।^{११}

सतगुर सख बिन्है दिना, ज्यों पंखिन्हु मंह काग ॥१५॥^{१२}

१ (इ) लीन्हा = लीन्हा ।

२. (ख), (ग), (घ) (क) उडियानी = उडियानी । (क) (ग), (घ) (क) दिना = दिन । (ख), (ग) कीन्हो = कीन्हा जो । (घ), (ग), (घ), (क) ग्यानी = ग्यानी ।

३ (म) फेरि = फिरि । (क) धंभै = धंभै । (ग) (क) धंभै = धंभै । (घ) प्राणी = प्राणी ।

४ (ख) लो = लो । (ग) बूढे = बूढे । (क) बूढे = बूढे ।

५. (ग), (ग) इह = इह । (ग) मयति = मयति ।

६ (ग) भूमि = भूमि । (घ) ऐसन = ऐसन । (घ) जन्म = जन्म ।

७ (द) हाथी = हाथ । (घ) मरुन संत संग जाए न तोरा । (ग) मरुन संत संग जाए न तोरा ।

८ (घ) इंह = इहा । (ग) इंह = इह । (घ) देह = देह । (घ) (ग) (घ) न = नाहि ।

९ (घ) इंह = इह । (घ) (घ) (घ) बंधों = बंधों । (घ) बंधों = बंधु । (घ), (ग) तोहरि = तोहरि । (घ) तोहरि = तोहरि । रीझन पद में मातु पिता के पहल इह दै ।

१० (घ) मेदिहहि = मेदिहहि । (ग) मेदिहहि = मेदिहहि । (घ) मेदिहहि = मेदिहहि । (ग) बिसमै = बिसमै । (घ), (ग) होहि = होहि । (घ), (घ) (घ) (क) दै = दै । (घ), (घ) (घ) करिहैं = करिहैं ।

११ (घ) सुनो सर बन बहुराग । (ग) सुनो सर बन बहुराग । (घ) सुन सर बन बहुराग । (घ) सुनो सर बन बहुराग ।

१२. (ख), (ग) बिन्है = बिन्है । (ग), (ग) ज्यों = ज्यों । (घ) ज्यों = ज्यों । (घ), (ग), (घ) (क) मंह = मे ।

ग्रन्थ संपूर्ण दरियासागर इयाददासति निखल सद्दयार
नीमी रोज सनिवार परवान बिन दुपहर उठसे साहब जन सो ।
बखर मात्राहीन पदम घम जादि सकन दरियापंथी सामु
सतनाम सतनाम ।

ग्रन्थ सिलावल नरहरदास दरियापंथी वासिदे मीजे रबाई प्र
भागे सानिहात (?), जो कोई ग्रन्थ खोरख तो जम जगाति के ।
काल विगुरुषन होए ।

तारीख—२ सावन, सन् १२६६ साल ?



- १ (क) ग्रंथ दरिया सागर संपूर्ण मद्रक भाग्यल दरिया साहब साहब का मन्थन ए
परयना बमबारी तपे बीथी तेमार मद्रक मीजे भरकंभा लखत बीरा से परद
तेमार भेठ किले भाग्यलपुर परयना भाग्यलपुर मीजे सिर्फरपुर मीजीवास कु
पर तेमार हुना समत सन ११२२ साल समी नाम बैसम्य हरी पंथी बार ।
मिरजापीवास कबीर दरिया साहब के दस्त बै साहब बखरवास बी सामी पुद ।
साधु सेक से सतनाम को लेहि साएक लेखम से सतनाम ।
- (ग) सतनाम परम संपूर्ण दरिया सागर भाग्यल दरिया साहब दरिया साहब
साहायस भोजपुर परयने बमबार तपे किले मीजे भरकंभा दरबार से खरी छुट्टी
परयने लिखते
मोक्षम परयने बाका गङ्ग किले मीरजपुर ।
दस्त बै छुट्टत लिखते
दस्त बै साहब मोहरदास का मुडा सो छवि छुट्टत बैबीदास लिखा सो छवि मास
तारीख २० दिन एनि छुट्टत पक्ष जो बैया सो लिखा मम दोस न पीमते मे न
साधुन के पास बैबीदास का सतनाम प३० ।
- (ख) म ब संपूर्ण दरिया सागर इमादि बारिल समत अछरख ही १००३ समी नाम बैसाख
सेस ११ बार अमठार के ग्रंथ लखार मद्र बीरा पर मन्थन पर साहायस भोजपुर प
बमबारी तपे बीथी मीजे भरकंभा लखत दरिया साहब का मन्थन से फानि छमुकि से
दसकत अमठारवास कबीर मुकल कत न बहिनी तिराए मति ग्रंथ सिखि दिया पूय सेसि ५
साह किलि अन्व दूध बरत अस्त साहब का कर से बैरख होए तो ग्रंथ पुद का कर से
भावे बै बीन काएका गीछरत कबीर को गेख हुए ही मम होखिग ही खने सो सतनाम जने
दखि जम से बिलती मोरी हटल बाकर सेन बोरी ।
- (७) संपूर्ण दस्तना साहायदास ।

ग्यान रतन

ग्यान रतन

विना
 भेष
 निरपी
 क्रम
 व ह्य क्रम
 शो
 पुरइली
 सेको

विना
 भेष
 निरसि
 कर्म
 व ह्य, क्रम
 शो
 पुरइनि
 जेको । आदि

★

अस्य 'भ्याम रक्षत' को मूलहस्त लिपि में लिपिकार ने प्रायः 'झ' की जगह 'र', 'ज्यो' की जगह 'जेबो' 'ल' की जगह 'प', 'या' की जगह 'भा', 'ए' की जगह ए एव 'स' की जगह 'श' वर्ण का प्रयोग किया है, 'व' के लिए व और 'व' के लिए बिन्दुयुक्त 'व' का प्रयोग किया है।

उसने प्रायः सभी स्वरों पर ह्रस्व इकार के बदले दीर्घ 'ई' का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं ह्रस्व 'इ' के लिए ह्रस्व 'इ' का भी प्रयोग देखा जाता है।

अस्य कहीं-कहीं पर ऊर्ध्व रफ (पूर्व-रकार) को पर-रकार के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

जैसे—प्रुख = पृथ्वी। प्रव = गव भादि।

कहीं-कहीं मूल हस्तलिपिकार ने 'न' के लिए अनुस्वार का प्रयोग किया है, और मर्त्ययुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती वण पर अनुस्वार का प्रयोग किया है। यदा कदा 'व' का प्रयोग 'य' के लिए आया है—देवान = देयान भादि।

मूल हस्तलिपि से प्रतिलिपि में निम्नलिखित रूप से उच्चारण-परिवर्तन हुआ है—

मूल हस्तलिपि	प्रतिलिपि
पुर्ष	पुर्ष
जीरा	जिदा
साहव	साहव
मुक्तीठ	मुक्कित
दरिमा	दरिया
भापत	भापत
उवारन	उवारन
विमत	विमत
नीनु	निनु
विवेक	विवक
विभारि	विभारि
जाए	जाए
धौपाइ	धापाई
मनी	मनि
मस्तक	मस्तक

जीवन कंचित कंचन में सागा ।^१ नाम विसारि भोग में जागा ॥१०॥^१

घोहा

टिक्ता भूल निजु नाम है, खो भरन चित लाए ।^१

हंस बंस मुकुटाइहै, जिन्दा जग में भाए ॥२॥^४

चौपाई

बिमल नाम प्रेम नहिं चाखे ।^१ कसि में कया वहुत चित राखे ॥११॥^६

कबि भाखर करि बहुत बनार्ह । माया जेव म्याम नहिं पार्ह ॥१२॥

सूति पुरान कबिहिं मुनि म्यावा । जिवन पदारथ सो भ्रम राता ॥१३॥^७

कबि विराग मुनि स्वान्ध साधी । अपने हाम भापु पगु बोधी ॥१४॥^८

परम तख प्रेम जब चीन्है । निजु गहिं नाम सुरति महं भीन्है ॥१५॥^९

दुर्मति दुविद्या कबिहिं ना भाखे । काम क्रोध अपने मन प्राखे ॥१६॥

करहुं क्रिपा मोहिं सतगुर देयाया । सुती बचन मोहिं होख निहाला ॥१७॥^{१०}

को है काम क्रोध कर मुला । पाप पुन्य कैये जग फूला ॥१८॥^{११}

कै परकृती खे एहिं भांगा । निगुन सीति कवन है रंगा ॥१९॥^{१२}

कवन नाम निजु मुक्ति संयोगा । कवन पवन विन्धि साधे जोगा ॥२०॥^{१३}

दोहा

विबरन करो यिचारि क सुनो खवन चित लाए ।^{१४}

बिगत विमल निजु नाम है, त्रिस्टी देठ देसाए ॥३॥^{१५}

१ (क) में = मह ।

२ (क) (घ) (ग) मोय में वास्य = भाग एत पाप्य ।

३ (क) खो भरन चित लाए = खी प्रतखष लाए ।

४ (क) में = मह ।

५ (क), (घ) विमल प्रेम नाम नहिं चाखे ।

६ (घ) में = मह ।

७ (क) सूति पुरान कबि मुनिखर म्यावा ।

८ (घ), (ग) (घ) तख = तख ।

९ (क) चरति = मुति ।

१० (घ), (ग) मोहिं = मन ।

११ (क), (घ) (क) कर = कै ।

१२ (ग), (घ) परकृती = प्रकृति ।

१३ (क), (घ) मुक्ति = मुक्ति ।

१४ (क), (घ) (क) चित = चित ।

१५ (क) कर = कै । (क) है ।

सतनाम

सत पुर्ख बिंदा साहब सत सुकित सतगुर दरिया साहब
ग्रन्थ माखल ग्यान रतन भगम ग्यान ईस ठभारन^१

बोहा

म्यान रतन मनि मंगल, विमल सुधा निम्बु नाम ।
करो विवेक विचारि के, आए धमरपुर घाम ॥१॥

चौपाइ

विमल नाम मनि मस्तक टीका । विना विवेक भेस सम फीका ॥१॥
निरलि नाम निम्बु प्रम समेठा । काटि कर्म बलि मंगल ह्वा ॥२॥
पुरन बम्ह पंडित सो ग्याता । निगनेप पुरइति जेवो पाता ॥३॥^१
पुर्ख नाम निम्बु पारख बहई । भब मुपुठाहल जग में सहई ॥४॥
विमल नाम निम्बु प्रेमहि पावे । सुरति घगा महं आए समावे ॥५॥
पुर्ख नाम निम्बु बिमल विरोगा । म्यान बुक्ति जन छिजे न जोगा ॥६॥^२
म्यान विना दुस दाफ्त दावे ।^३ तस सिला पर तावन ठावे ॥७॥
माया कहीत मन सकि सजोगा ।^४ हूर न बलि मलि विरख विमोगा ॥८॥
माया मंदिल मानो बंझित छाया ।^५ धिप नहि नेति नाम गुन गाय्या ॥९॥

१ (ख)—सत पुर्ख साहब सुकित नाम सतगुर बोमजीत दरिया साहब ग्रन्थ म्यान रतन सुकित के दाता ईस ठभारन बंदी छोर । (घ)—ग्रन्थ रतन रतन माखल दरिया साहब सतगुर सुकित कर्म अथारन साहब बन्दी छोर पुर्ख पुरान साहब बिन्दा साहब । (ब)—मन्थ म्यान रतन माखल दरिया साहब सतगुर सुकित ईस ठभारन सुकित के दाता नाम निगल बन्दी छोर दीन बेकाल खरन समर्थ के (इस प्रति में प्रायः ख, ब, घ के स्थान में एकमात्र 'ग' का प्रयोग हुआ है । कबच स्वीकृत प्रति में 'दीहा' भी अथवा सर्वत्र 'धमो' का उल्लेख है ।)

२ (घ) पुरन बम्ह पंडित छेद ग्याता ।

३ (ख), (घ) सुकित = सुगुण । (ग) सुमि । छिजे = दिखे ।

४ (ख) (घ) (ब) ग्यान = नाम । दावे = दावे ।

५ (ख) कहीत = कति ।

६ (घ) मंदिल = धरि ।

क्रोध मद माति भक्ति नहि जाना । क्रोध दुस्त्रिया दुस कहुत भुमाना ॥३५॥
 संत भुजान भक्ति गुर ग्याना । लेभि विषय रस भ्रंजित पाना ॥३६॥
 दरिया दर्पन सिक्कित समाना । विमल भल्लके सत निसाना ॥३७॥
 मनि मानिक महिमंढस मूला । संसित प्रेम सहसदल फूला ॥३८॥
 वरस रिवाकर कमल में सागा । तम भी पूरी विमल रस पागा ॥३९॥

शोहा

काटि कम सत सव्व से, मिसे महिर गुर ग्यात ।
 मरम करम सम नासि के मयो धमरपुर घाम ॥५॥

छन्द

अम आल काल बिचारि के सत सव्व में भुनि सावहीं ।
 गुर ग्यान विमल बिराग मद यह कुमति कमि बिसरावहीं ॥१॥
 धमर लोक में लोक नाही सिक्कित सोमा पावहीं ।
 मभ मरम कम न ब्यापु कवहीं उरित मंगल गावहीं ॥२॥

सोरठा

करो विवेक बिचारि, धमर लोक भ्रंजित पिबो ।
 भी अल आहि न हारि सतगुर क्या ठरनी दिबो ॥१॥

धौपाई

जेवों भुषंग मरम में सागा । स्वारय कारन जोग जो आगा ॥४०॥
 उपवी मनि यह निरमल नीका । मनि के भागे दीपक फीका ॥४१॥
 काकि मही मनि दीपक कीन्हा । उरि पतंग भोजन भोग सौन्हा ॥४२॥
 सर्ग मक नहि भविगति जाना । मौल भरमि नहि पद पहुचाना ॥४३॥
 सुरति पुरान कपि पंडित ग्याठा । सीस संतोख प्रेम महि रता ॥४४॥
 निस्ना धौगुन विषय विकारा । सत सव्व नहि कदे विचारा ॥४५॥

१ स्वीकृत पाठ में पहली ध्यौसी के प्रारंभ में 'धौई' है । (क) (घ), (ग) विषय = विषे ।

२ (घ) (ग) (क) भी = धम ।

३ (क) भी = मयो । (घ) मयो । (ग) भ्यो । (क), (ग), (घ) धम = ज्ञान ।

४ (घ), (घ) दिबो = दिबे । दिबो = दिबे ।

५ (क) जेवों = जो । (क) मरम = मर ।

६ (क) (ग), (ग) दीपक = दीपक है ।

७ (घ) (ग) मौल = मूल । (घ) भ्यन ।

८ (क) (घ) निस्ना = निमुना, (घ) निहना । (घ), (घ) विचारा = बेचार ।

श्रीपाद

प्रातमवात पाप कर मुता । पर के दिने घम रहु फूना ॥२१॥^१
 पथीस प्रकृति तन स्वारय अहर्द । भानन भानन सुख सम लहई ॥२२॥^२
 प्रहृ रूप मह रज गुन कहिया । रोग सोक सुख स्वारय महिया ॥२३॥^३
 बिस्तु रूप कह सम जग सागा । घमस फिरे प्रातम महि आगा ॥२४॥^४
 रद रूप जग परसै करई । बोहकार तमगुन ओ कहई ॥२५॥^५
 करसा पवन ह्निदै अब भावे । अगिनि सक्य क्रोध तह भावे ॥२६॥
 सरद पवन अब ह्राए मनकूला ।^६ बंदर्य संग रहेत समतूला ॥२७॥
 निनु अक्षर निनु नाम समोई ।^७ दुद वाकी निरमल तह होई ॥२८॥^८
 पूर पवन बिन्हि साधे जोगा । निरमल म्यान होए कबहि न रोगा ॥२९॥

श्रीपाद

म्यान समीप सुधा सम, देखहु पग्गिम रंग ।^९
 अन्न आनि घन सफ्ट है, मन भुमग होए भग ॥३०॥

श्रीपाद

मधुकर मातति वास रस पाया । सकि सरूप जोग किमि आगा ॥३०॥^{१०}
 कामिनि कनक जल जमआला ।^{११} तन भव धरित व्यापेवो साता ॥३१॥^{११}
 मुरीति महति कर्म तन सागा । जाग कपूत मरम जोग आगा ॥३२॥
 मुनि हरि कीरति बहुत बनार । स्वारय सागि भक्ति विसरार ॥३३॥^{१२}
 यह द्विस्तात द्विस्ति मंह देतो । ऊष नोष महि मंडल पयो ॥३४॥^{१३}

१ (ख) धर्म = धरम । (ग) प्रम । (घ) धर्म ।

२ (अ) सम = रूप । (ब) सम ।

३ (ख), (ग) सोक = शोक । (घ) शोष ।

४ (ख), (ग) बिस्तु = बिस्त । (घ) बिस्तुन ।

५ (ख) रद = रदर ।

६ (ख), (घ), (ग) मनकूला = मनकूला ।

७ (ख), (ग), (घ) निनु अक्षर = निनु अक्षर ।

८ (घ) निरमल तह = तह निरमल ।

९ (ख), (घ) (ग) समीप = समीप ।

१० (ख) वास = वा ।

११ (ख), (घ) जल = जल । (घ) बंदर ।

१२ (घ) (ग) (घ) मध = मी ।

१३ (ख), (घ) कीरति = कीरति । (घ) कीरति ओ ।

१४ (ख), (घ) मंह = मैं ।

दोहा

उतपति मखल सनेह यह, प्रगट कह्यो सम जानि ।
सुनो संत पित हित दे, सेह बचन सत मानि ॥७॥

हरिया साहब बचन^१

सत्तरि जुग रहु सुख बेसुना ।^१ तब नहि होत पाप ना पूना ॥६१॥^२
तब नहि राम रमिता अग भाए । जाके बेद भोक सम गाए ॥६२॥^३
तब नहि होते पवन भी पानी । तब नहि छंग ना सीव मषानी ॥६३॥
तब नहि होते बेदकर मूसा । तब नहि गर्व ना ग्यान भनकूना ॥६४॥^४
तब नहि कम्धर बाहु सख्या । राब रंक नहि अविगत रूपा ॥६५॥
तब नहि होते फरइ न पूना । तब नहि होते गर्भ भनकूला ॥६६॥
तब नहि ब्रह्म वेद विचारी । तब नहि गंगा रहति दोचारी ॥६७॥^५
तब नहि काम्ह रूहे बर जोरी । तब नहिमुखली मुख मंह मोरी ॥६८॥^६
तब नहि आव सूर्य विचारा । तब नहि मइस दसो अचारा ॥६९॥
भादि भन्त नाहि कुस बोळ । नहि कुस पंडित नहि कुस बोळ ॥७०॥^७
सत्तरि जुग सयन सुख बाधा ।^८ सत पुर्ष के अजब उमासा ॥७१॥^९
जुगन्हि जात महते उन्हि जाना । सत सुकित मिलि बिन्हो पत्ता ॥७२॥

दोहा

सत पुर्ष निम्न भापुसे बिन्ह माया विचारा ।
सत बचन यह कृति के, संत करहु निदमारा ॥८॥^{१०}

१ (ख), (ग) (घ) = पाउभाब ।

२ (घ) (ग) सुख = सुख । (घ) = सुख ।

३ (घ) ना = नाहि ।

४ (घ) सम = सख ।

५ (ख) (ग), (घ) अनकूना = अकूना ।

६ (ग), (घ) विचारी = लचारी ।

७ (घ) अन्ह = काम्ह ।

८ (ख), (ग) बोळ = बेळ । बोळ = देळ ।

९ (ख) (ग) (घ) सुक = सुख ।

१० (ख) पुर्ष = पुत्र ।

११ (घ) यह = ई ।

ममिता पद मन मोदिक पासा । साक्षा सहित मुक्ति इन्दि नासा ॥४६॥^१
 सेजि कमल दल कुमुदनि पासा । विखि माला मंह चाहे सुवासा ॥४७॥^२
 ऐसे धिप नर जाहि भूलाई । सकलो सोमा मोह बनाई ॥४८॥^३
 संत सुबुद्धि बचन सत भासा । सील सतोल रोख रचि रासा ॥४९॥
 मोह कोह यह तिगुन फंदा । विखै भवन में चाहे प्रमत्ता ॥५०॥^४

दोहा

विष भाव रस मांगत, ध्यागत सत सनेह ।
 अतरासी के भवन में, फिरि फिरि धरिई देह ॥६॥^५

संक्षेप बचन

मैं सेवक तुम सतगुर दाता । तुमसे भवरि कवन बड़ प्याता ॥५१॥
 धारि भ्रत निजु क्या सुनाई । होहू दयाल भरम सम जाई ॥५२॥
 को ई राम जाहि जग सागा । वेदविदित मुनि पंडित जागा ॥५३॥
 को ई सिया सक्न जग पावे । सो साहब सत भेद बतावे ॥५४॥^६

दरिया साहब बचन*

मलि मति भइ पूछा तुम्ह ग्याना । धारि भ्रत भाखौ परवाना ॥५५॥^७
 टीका मूल सत मैं यह भाजौ । सुन्ह से गोए के काह के राखौ ॥५६॥^८
 कसौ क्या जुग-जुग धरि जाई । संत सुखद मुन मंगल गाई ॥५७॥^९
 अछै विषय गोए पुन अजेना । मुन निरजन सो संग खेला ॥५८॥
 सोरहू मुन सव लोक निधासा । सुकित सदा पुन के पासा ॥५९॥
 सोई सुकित सोई जोगजीता । महिमा प्रमत्त प्रेम निजु हीता ॥६०॥

- १ (घ) मन = मनो । (क), (ग) पासा = मसा ।
- २ (घ) मंह = मूह ।
- ३ (ख) (ग) (घ) सकल सोमा यह मोह बनाई ।
- ४ (घ) में = मूह । (घ) भवन = भवन ।
- ५ (ख) (ग) (घ) अतरासी = अतरासी
- ६ (म) (ग) (घ) पावे = पाव । बतावे = बताव ।
- ७ (ग) दरिया साहब बचन = सतगुर बचन । (घ) दरिया बचन ।
- ८ (घ) परवाना = प्रदाना ।
- ९ (घ) सन = मन्व ।
- १० (घ) सुनाई = सुन ।

गुह स मंत्र पुछ्यो मैं जाई । धाय्या होए सो करी उपाई ॥८७॥
 गए रिखी संकर के पास । कै परनाम बचन परनासा ॥८८॥
 दुह कर ओरि बचन कह्यो स्वामी । सिमा विबाह मुल मंगल धामी ॥८९॥
 श्री कुस कोह सकस संवसारा । की राजकाल ग्रिह ब्याह विधारा ॥९०॥
 श्री रिखि मूनि के सत्तपों जाई । धाय्या होए सो करी उपाई ॥९१॥

बीहा

संकर मल में बूझि के, कइ बचन समुझाए ।
 धनुस सुप्रमर राखी एहि विधि ब्याह उपाए ॥९०॥

पीपाई

एहि जग धनुस तुरे जो कोई । सिमा विबाह धवसि के होई ॥९२॥
 ए स्वामी मोहि संरी भारी । को यह खोप बड़ाएउ तारी ॥९३॥
 सीता सती सोई वर बरिहै । यह जग नीति समर जो करिहै ॥९४॥
 सप्त बचन रासहु परतीती । त्रिभुवन नाम सुप्रमर मीठी ॥९५॥
 चत्ते तुरंत अनन्यपुर धाए । जग पवित्र करि धनुस धराए ॥९६॥
 मुनि पंडित कइ धानि बोसाई । अन्य धाहुति करि मंगल गाई ॥९७॥
 धनुस के पूजा कीन्ह बहु जाती । खंदन संघ पूछ्य धन जाती ॥९८॥
 निमदिन सोषत मंत्र बिभारी । बिधि परिपंच कठिन मह बारी ॥९९॥
 गए अनक अह भीत निबासा । रानी धाए बैठि अहुं पास ॥१००॥
 गनी मिमि के मंत्र विभारी । परगट करि जग में परधारी ॥१०१॥
 तव बंदी के धेगि बोसाई । मुस मंत्र सम प्रगट सुनाई ॥१०२॥
 जाहू अह संह कहि समुझाई । सुबस सबा गुन भाट बड़ाई ॥१०३॥

१ (क) (घ) संवसारा = संसारा ।

२ (ग), (घ) ग्रिह = पिछी ।

३ (क), (घ) (ग) में = मह ।

४ (क), (घ) स्वामी = धामी ।

५ (घ), (घ), (क) मह = इला ।

६ (ब) अतिरिक्त—शिव बचन ।

७ (घ), (घ), (घ) जग = जग ।

८ (घ) धनु = ब ।

९ (क) भीत निबास = मदन में बासा । (ग), (घ) मदन वैभसा ।

१० (घ) गुन = गुण । (घ)—गुण । (घ) गुण्य ।

श्रीपाई

पहिल हुकुम धरली तव कीन्हा ।^१ टारि सुमेर जाकल तव दीन्हा ॥७३॥^२
 जो कन्या सत पुर्व ने कीन्हा । जोग मोग रस परगट कीन्हा ॥७४॥
 सकि के संग निरबत बासा । तीनि देव मिति कीन्ह परकासा ॥७५॥^३
 तीनि देव सखा बहु बानी । पप्र धनंत किमि कहा बखानी ॥७६॥^४
 भव किछु कया कहीं निजु भागे । सुनहु संत निजु प्रेम सुभागे ॥७७॥^५
 मन माया कर ऐसन साखा । धरुके राव रंक वड राखा ॥७८॥^६
 कहीं जोग कीन्ह भोग विभासा । कहीं दान कीन्ह पुन्य क भासा ॥७९॥^७
 कहीं कया सभ संतन्ह सागो । जाने मोह सखल भ्रम भागो ॥८०॥^८
 कहा राम सिया कर वाता । भादि भंत जो बुझे म्याता ॥८१॥

दोहा

माया जनक सिह भाइया, परगट भई तिनि सोक ।^९
 सोमा सकल संभारि क, दिवा समन्हि क सोक ॥९॥

श्रीपाइ

धरि बिचित्र सोमा बहु भांठी । पूरन बंद सरस जनु कांठी ॥८२॥^{१०}
 निगमेबनि ओति सु दर कांठी ।^{११} बिमल सकप रचा यह भांठी ॥८३॥^{१२}
 ठाकर कवि किमि करहु बडाना । सकन सकप माया कर जाना ॥८४॥
 रिलि सोषत मन भो वरागा । बळत ऊळत सोमल जागा ॥८५॥
 करब विवाह कवन विधि भांठी । की कुस नति राव सिह बांठी ॥८६॥

१ (ग), (घ) (च) पहिल = पहिले ।

२ (घ) (ग) टारि सुमेर तव जाकल कीन्हा ।

३ (ब), (घ), (ग) परकासा = परगटा ।

४ (ब) सखा = सखा ।

५ (ब) कतिचि पाठ—'सुनहु देवक कहते है' ।

६ (ब) (घ) (ग) बच = बच ।

७ (ब), (ग), (घ) विभासा = वेलासा ।

८ (ब) कयी कया समन्हि दित लायी ।

९ (घ) कतिचि पाठ—'जागवली माछाक मुनि हो कहत है' सिव पारवती न चरते है'
 (ब), (घ) सिह = सिही ।

१० (घ) बिचित्र = बीचम । (घ) बेचित्र ।

११ स्त्रीशत प्रति में 'बांठी' के पहले 'कति' पाठ है । (घ), (ग) बांठी = बांठी ।

१२ (ब), (घ) यह = यही ।

बोह बोह भूप निवृत्त होए बेसा । टारे ना टरे धनुस के रेखा ॥११५॥^१
सिखा विरंचि ओ अंक बनाई । के सेहि मेटि करे अघिकारि ॥११६॥

दोहा

बीस भुजा दस (सीस) रावन, रंगभूमि में प्राए ।
बस पीष्य सम तौसि के सजा बना सजाए ॥१२॥

देसहि धनुस भयंकर भारी । येठि रहे सभ पीरस हारी ॥११७॥
सजित भए माया करि नीचा । ग्रिह नहि आहि धनुस नहि धीचा ॥११८॥^२
देसि बिकल भइ राजकुमारी ।^३ बठे भूप सक्ल सम हारी ॥११९॥^४
सारंग सक्ति भयंकर भारी । दूट न धनुस परहि जग गारी ॥१२०॥^५
सिय मुख देसि बिकल भइ रानी । यह प्रन कठिन धनुस तुम भानी ॥१२१॥
प्रागे कृपा अवधपुर गएऊ । राम जन्म जग परगट भएऊ ॥१२२॥
प्रापति मंगल सम मिलि गामा । कवि आसर करि सम्य सुनाया ॥१२३॥^६
सहन भंडार सुटाबहि भारी । देहि रनिवास अरुखी सारी ॥१२४॥
वाजन वाजल बहुत सोहाई । नट नागरि सम नाधु वनाई ॥१२५॥
मन के मनोरथ सम के पूजा । राम पियार अवरि नहि दूजा ॥१२६॥
चार पृथ जनमे प्रति नीका ।^७ सम गुन साएक बंध के टीका ॥१२७॥^८
जैसे मनि मदिम में रासा । देसि हंस भव चारो सासा ॥१२८॥^९

दोहा

अथ पवित्र मूल मंगल अर्जुन मंदिल अरि ।^१
हर्ष भए सम देसि के अमृत भट भिसारि ॥१३॥

- १ (ग) कै = कर ।
- २ (ब) ग्रिह = मिठी ।
- ३ (ख) मई = मए ।
- ४ (क) बठे = बढ़ी ।
- ५ (ख), (ग) परहि = परिधि, (घ) गारी ।
- ६ (क), (घ) कवि कवि आसर अरु सुनाया ।
- ७ (क), (ख) चार = चार । (ग) चारो ।
- ८ (क) बंध के टीका = बंध टीका । (घ) बंध का टीका ।
- ९ (ख) (घ) चारो = चार ।
- १० (ख) अथ = अथ ।

दोहा

सकल राव जग जा कई, सभ से कहव पुकारि ।^१
धनुस सुरे सो बरै जानकी, मिनती मंत्र विचारि ॥११॥

छंद

धिप धिप यह राव रंक सभा सकल प्रचारहीं ।
सुनो सवन मही मंडल भूपति वंशी भाग प्रकारहीं ॥३॥
महा कठिन प्रन रोपेवो जनक यह संकर थाप अदावहीं ।
धनुस सुरे सो महावीर भट वेद विदित जग गावहीं ॥४॥

सोरठा

रिखि मुनि बोसै विचारि, जो जन में जग राव भस ।
सोई पुर्न सिया नारि, जनक संतै सभ मेठिहै ॥२॥^२

शौपाइ

कहे माट सुनु भूप सुजाना । सुनो सवन द विदित प्रधाना ॥१०४॥
धनुस सुर सो म्याहै सोता । राव रंक जोई प्रन जीता ॥१०५॥^३
मुनिके भूप धले दल साजी । देखि धनुस मुस भगल राजी ॥१०६॥
देस देस के भूपति धाए । रगभूमि अंह धनुस धराए ॥१०७॥
होए कुन हानि निकट नहि जाई । एक एक मंत्र पूछे तंह धाई ॥१०८॥^४
कोइ म्यानी धिप बोसै विचारि । सुनो सकल मिलि धवन हमारी ॥१०९॥
परम प्रम सु दरि मुस सोभा ।^५ केहि नहि कहिए मायाकर सोभा ॥११०॥^६
केहि नहि भूजन भौन मुस सेज्या । केहि नहि राज काज कुस सज्या ॥१११॥^७
केहि जग कंदर्प केहि नहि भीता । सभ जग सरिता कह नहि मीना ॥११२॥^८
के नहि भोग भाग मुस मांगे । के नहि लोग अस्ति से जाये ॥११३॥^९
के नहि पंडित सुबुधि सुजाना । के नहि सिया कर मनमाना ॥११४॥

१ (प) करव = बरी ।

२ (ब) मेठिहै = छुट्टिहै ।

३ (ब) दुरै = तरि ।

४ (घ) मंत्र = मंत । (क), (ग), (घ) पूछे = पूछदिं ।

५ (घ) केहि नहि प्रम सुदरि मुस सोभा । (घ) के नहि प्रेम सुदरि मुस सोभा ।
(घ) के नहि प्रम सुदरि मिलि सोभा । स्थीरत पाठ में 'परम' के परले 'केहि नहि' है ।

६ (घ) कहिए = बरी ।

७ (ग) भौन = भाव । (घ) सज्या ।

८ (घ) भय = बच । (क), (ग) (घ) सरिता = दखीता । (ब) मीना = मिषा ।

९ (क), (ब), (घ) जाने = जापी ।

संग सखी लिए जनककुमारी । गई तुरंत अहां विग्रहारी ॥१५१॥
 राम रंक धिप बैठे भारी । राम के देखि तहां पगु डारी ॥१५२॥
 जनकनिमा श्री सखिन्ह उमेता । राम के देखि मगन मन हेता ॥१५३॥
 नाहि संसय सुख सागर नीका ।^१ दूटे धनुष तब सभ बनीका ॥१५४॥
 सिया प्रम प्रीति निजु हूसी । मानो कली कमल की फूसी ॥१५५॥
 दिनमनि दिन भ्रम्बुज छबि छाया । भिंगा भाव रस भ्रमिय सोहाया ॥१५६॥^२
 जैसे राम धनुष पंह कैसे । मारो धीर महामट जैसे ॥१५७॥
 देखत दल सभ भद्रि भकुलाना ।^३ मानो कपित काल ठेयना ॥१५८॥

दोहा

महा कठिन कराल प्रन, रंगभूमि भी भीर ।^४
 कर गहि जाप बड़ाइया तानि तोरा रघुवीर ॥१५९॥

श्रीपार्श्व

मधुर मनोहर वाजन वाजा । हरखेवो नगर सिया स्त्री छाजा ॥१६०॥^५
 दूटे धनुष सख्य भी भारी । परसुराम सुनि लागु गोहारी ॥१६०॥
 जैसे कोपि करि ध्राए ठहवा । राम सज्जन बैठे रहे जहंवा ॥१६१॥
 बोले बचन क्रोध करि सीता । को सारि धनुष के ब्याहे सीवा ॥१६२॥
 लखन बन्हा सुनहु हो स्वामी । का तुम्ह बन्ही गब अतिगामी ॥१६३॥
 यह पिनाक तो बहुत पुराना । तेहि तोरे तुम का पकड़ताना ॥१६४॥^६
 धनि सुंदर है विपि के मूला । सुनी बचन मोहि लागत मूला ॥१६५॥
 जो सरिका करे सरिकाई । बड़ा होए सो करे समारई ॥१६६॥

१ (ब) सुख = किहु ।

२ (क) (ग) भ्रमिय = भ्रमी ।

३ (क) सभ = सष ।

४ (क) महा कठिन कराल प्रन रंगभूमि भी भीर ।
 कर गहि जाप बड़ाइया तानि तोरा रघुवीर ॥

(ग) महा कठिन कराल प्रन रंगभूमि भी भीर ।
 कर गहि जाप बड़ाइ के तानि तोरा रघुवीर ॥

(ब) महा कठिन क्रोध बचन रंगभूमि भी भीर ।
 कर गहि जाप बड़ाइ के तानि तोरा रघुवीर ॥

५ (ख), (ग) शिका धी = शिकारि ।

६ (क) तेहि तोरे का का पकड़ताना । (ग) तेहि तुरै का का पकड़ताना । (ब) तेहि तुरै के का पकड़ताना ।

चौपाइ

ज्ञान समान कि धापुनि धागे । गुन श्री श्याम कि बेदमत जागे ॥१२६॥^१
 करि भोजन सम कुटुम समाजा । शानद मंगल वाजन बाजा ॥१२७॥
 खेताहि जागे पुत्र पियारा । एक से एक सोभा अभिकारा ॥१२८॥^२
 बैसे मनि मस्तक के टीका ।^३ रामदरस देखे सम नोका ॥१२९॥
 बिस्वामित्र दुखित मुनि भारी । मुनि पुस देखि भवष पगु ठारी ॥१३०॥
 पशुषि रिखी जहां द्विप राया । भादर मांति बहुत चित सामा ॥१३१॥
 कहे द्विप रिखि धाएसु दीबे ।^४ महा परसाद भोजन फल कीबे ॥१३२॥
 क्रिया समेत दया बहु कीन्हा । भाग हमार भवष पगु दीन्हा ॥१३३॥
 तब रिखि ऐसन बोसे विषारी । राम के दीबे धम्पा हमारी ॥१३४॥
 रिखी भवन द्विप सागी कारी ।^५ खेबों भुमग मनि सेत निकारी ॥१३५॥
 रानी विक्रम दुखित महठारी । करि रोदन पुहुमी पगु ठारी ॥१३६॥^६
 भवष बुडे मनो जस मंह सोका । प्रान दुखित सौ विपति बियोगा ॥१३७॥
 रिखि तब क्रोध कीन्हु परखंका । मानो काव लिए सिर डंका ॥१३८॥
 रामहि द्विप धागे तब दीन्हा । भरन छुइ के मिनती कीन्हा ॥१३९॥
 जले सुरग निनु रिखि के साभा ।^७ पिछे मसन धागे खुनाया ॥१४०॥
 मुरसरि माह मंजन तब कीन्हा । रगरि बंदन सिर सीतक दीन्हा ॥१४१॥
 भ्रिस्यु ठाठिका निकट तुलाना । मारवो हृदय ठाकि के घाना ॥१४२॥
 हरमेवो रिखि मुनि धारति कीन्हा ।^८ पासीवषा राम कंह दीन्हा ॥१४३॥
 बेदबिहिस करि बिमस पढ़ाए । रिखि तब भले जनकमुर धाए ॥१४४॥
 मयर देखि वाटिका गएऊ । उठी प्राण धागे बलि धएऊ ॥१४५॥
 सिया सखी संप मइ फुनवायी । पद पकर देखि हृदय सुनारी ॥१४६॥
 सनधि सगी मुरि मदन मयंगी ।^९ ते निकर्मकि हू निर्मल मंगी ॥१४७॥

१ (घ), (ग) (ब) गुन श्री श्याम = पुत्री श्याम ।

२ (ब) अभिकारा = अभिकारी ।

३ (घ) मस्तक के टीका = मंदिर का टीका ।

४ (ब) रिखि = देखि ।

५ (ग), (ब) रिखी भवन = रिखि के भवन ।

६ (घ) (ग) (ब) पगु = तन ।

७ (घ), (ग) (ब) सुरंग = सुरेंद्र ।

८ (ब) सुनि = सति ।

९ (घ) (ग), (ब) सरि मदन मयंगी = मारि बंदन में मयंगी ।

सिमा बेसास घष घस भासे ।^१ राजा राम छत्र सिर रासै ॥१८२॥
 म्रिप नेबठा बंधु तंह भेजा । जिखि के पांठी जंघु तंह बेजा ॥१८३॥
 कलसा बिच विसा यहु मांठी ।^२ चौमुख चारि जसापा बस्ती ॥१८४॥^३
 जूष जूष गाबहि कर नारी । निठि होले मुव मंगल चारी ॥१८५॥^४
 निमु बासर निठ बाजन बाजा ।^५ करत मनंद घषघ पुर राजा ॥१८६॥
 घषमस बहुत बरास बसाया । मोजन भाव करि कुटुम सिबाया ॥१८७॥^६
 समाज राज बुबा सुत समेठा ।^७ साज बाज मुल मंगल हेठा ॥१८८॥
 यज सुरंग रंघ सम साजी । सोभा सुगंध बहुं चार छाजी ॥१८९॥
 बामन बाबे सोमु निसाना । घति धर्मब बहुं भोर पहराना ॥१९०॥
 दस वादस क एक साबा । धनी बरात भनेकहि राजा ॥१९१॥
 बाए जनकपुर निष्ठ तुलाना ।^८ दमे बरात सम सुदुधि सुजाना ॥१९२॥
 रिस्ती राम लसन तहुं भाए । सोभा समाज सु दर सह छाए ॥१९३॥
 दसरथ रिस्ति के चरन मनायो । धन्य भाग मोहि राम भेटायो ॥१९४॥
 रानी सुनि मानदिस भएऊ । घति बेसास मुल मंगल गएऊ ॥१९५॥^९
 वदि बाँधि करि बलसा घरेऊ । मोठी मांझे बहुबिधि छएऊ ॥१९६॥
 मांति भांति मनि जंम जो ठाड़े । मानो कनक नाड़ि कर काड़े ॥१९७॥

होहा

वाजन सक्ल समाज सम बाजन घति धनघोर ।^१
 नरसिंधा श्री सुरष्टी, तास छिदग संजार ॥१७॥

ईद

साज राम के वैसे बरतो सोभा सकल संचारि के ।
 सास हीरा मनि क्लवाग्नि मट्टन घति छवि छाएके ॥३॥^{११}

- १ (ग), (ब) बैसास = विद्यास ।
- २ (क) जिखा = सिद्धी । (घ) चित्र = पत्नी ।
- ३ (ङ) (च) (ब) जसापो = बराबहि ।
- ४ (घ), (ग), (ब) सुर = सुख ।
- ५ (ङ), (घ) (च) निठ = निठि ।
- ६ (क) सिबाया = सिद्ध, बा ।
- ७ (घ) राज समाज बुबो = सुत समेठा ।
- ८ (ब) तुलाना = निधराना ।
- ९ (क) वद = गएऊ । (घ), (ब) वैत ।
- १० (ब) बाजन = बाजत ।
- ११ (क) (ब) छाएके = छारई ।

क्रोध होए घनुख हाप के दीन्हा । गर्व भाजि पुद्गुमी पर कीन्हा ॥१६७॥
 प्रति होए गद गद मिलि जाई । पुर्व प्रताप राम जस पाई ॥१६८॥
 परमुपम तव भले सजाई । प्रति सकोष होए वदन धमाई ॥१६९॥

दोहा

भली बिर के मान छवि, प्रति मन मगन सोहाए ।^१
 उबमगीरि रेखा रवि, विसगि कहा गुन जाए ॥१५॥

चीपाई

रिखि के संग घाए रघुनाया । क्रिपासिम्बु मोहि कीन्हा सनाया ॥१७०॥
 तुम मुनि घाए दरस मोहि दीजे ।^२ त्रिया विवाह मूल मगन कीजे ॥१७१॥
 बिहिति विमल क सिखा बनार ।^३ लेक दूत धवषपुर जाई ॥१७२॥
 पहुँचि दूत प्रबधपुर जयहीं । पाती त्रिप कह दीन्हा ठवहीं ॥१७३॥^४
 पाती बाँचत बहुत धनदा । जल में फूँकेवो शरद जेवों खंदा ॥१७४॥
 राजा उठि भवन में गएऊ । रानिन्ह मे निनुपप सुनएऊ ॥१७५॥^५
 मई धानद कीसिखा रानी । सलफठ मीन वरला जनु पानी ॥१७६॥
 जैसे गायी सन की काड़ी । भेटिगो पिय प्रीति प्रति वाड़ी ॥१७७॥
 रानी सभे धनदित भएऊ । बिसरी मती हाय जनु भएऊ ॥१७८॥
 भवध के सोग सम भया सुखायी । कुल मेदा सुख नी अधिकारी ॥१७९॥

दोहा

हरख सकत समाज सम, गुणपद पंजज कीन्हा ।^६
 मुनि बसिए के भागे, जना कया कहि दीन्हा ॥१६॥

चीपाई

द्विप मुनि मंत्री बठे पावा । राम विवाह कीन्हा प्रकासा ॥१८०॥
 बिहित बिहित के सगन साधामा ।^७ मुदिन सुधम मुद मंगल गवा ॥१८१॥^८

१ (ब) (ग), (घ) कति = कति ।

२ (ग) (घ) तुम मुनि = तुम्हें मिल । (घ) तुम मुनि ।

३ (ग) बिहित बिहित के सखा बनार । (घ) बिहित बिगत के सिखा बनार ।

४ (घ) कह = है ।

५ (ब) रानिन्ह से भी कया सुनएऊ । (ग) रानिन्ह से निनु कया सुनएऊ । (घ) रानिन्ह से भी कया सुनएऊ ।

६ (ग) हरख की कया सम । (ग), (घ) हरखकी की कया सम ।

७ (ब) बिहित बिहित के सगन साधामा ।

८ (ब), (ग) सुध = सुख ।

गुन है पुर्ख नाम निभु हीवा । गुन औ निगुन प्रेम प्रतीवा ॥२१५॥

दोहा

मौ गुन प्यान नाम सत, करो विवेक विचारि ।^१

कहू दरिया छसगुरु मिले, तरनी क्षणनिहारि ॥१८॥

औपाई

आए अतकपुर सम नषाया । माया भेद प्यान नहि पाया ॥२१६॥

मह कौतुक माया कर चीन्हा । आगे पगु ब्रववपुर दीन्हा ॥२१७॥

आए ब्रववपुर पहुँचे राया । आनंद मंगल सम मिलि गाया ॥२१८॥

राम के देखि सम भया सुझारी ।^२ मेठा कल्पना बड़ दुख मारी ॥२१९॥

परिछन करि तब लीन्ह उवारी । रूही निहारि ब्रवव की नारी ॥२२०॥

सिया रूप देखि सम सङ्घाई । फेरि मन सम बदन छपाई ॥२२१॥^३

अप रासि है प्रति सुठि सोमा । नन कमल मनु मंमर सोमा ॥२२२॥

आए भवन में अंदल अतुरी । प्रति होए प्रेम राम चित अतुरी ॥२२३॥

साइ गिरा गुन सोई सीता । बीधे फिर कम करे बनीवा ॥२२४॥

माया अनंत है अगम अगाभी । त्रिगुन तेज समन्धि कहू वाभी ॥२२५॥

परा भवन में भर्म भूलाना ।^४ लखे सो किमि करि अमल अमाता ॥२२६॥

दोहा

मूरति में मूरति बसे नीरति रूही अमान ।^५

दिल दर्पन में देखिए, ठामें पव निर्बान ॥१९॥

औपाई

अप मुनि मंत्र कीन्ह अस भाऊ । राम तिलक दिजे अनंद बधाऊ ॥२२७॥^६

अप कहे सुगहूँ मुनि ग्याता । राम के तिमक दिअ निभु बाता ॥२२८॥

अव विरम किमि करिए कामा । बीठि सिषासन सां सीरामा ॥२२९॥^७

आए अप जहूँवा सम रानी । बोले प्रेम मधुर अिदु वाली ॥२३०॥^८

१ (ब) करी = करे ।

२ (ब) मया = मये ।

३ (ब) फेरि कपल सम नैन अगई ।

४ (ब), (प) मर्म = भग्न ।

५ (घ) (ग) (ब) मूरति में मूरति बसे ।

६ (ग) अतिरिक्त पाठ—मुनि बाठिअ बचन । अरुअ बचन ।

७ (ग) दीउमा = मियाउम ।

८ (ब) अिदु = अिदु । (प) (ब) अिदु = रत ।

बसन झलकत केसरी सभ भ्रम परिमल लाएके ।
 चारो पुत्र सुगंध सुंदर हरषि राजा पाएके ॥६॥
 सोरठा

धली बराठ विचारि, देखि जनकपुर हरल भौ ।
 पूष भूष घर नारि, रामरूप सभ देखिहीं ॥३॥
 चौपाई

परिष्कन करि भादर सब कीन्हा ।^१ जहाँ तहा ठेरा करि दीन्हा ॥१६८॥^१
 भोजन प्रकार कीन्हा बहु भावी । जेकर जैसन जह तह जावी ॥१६९॥
 माहो मंदिस रंह भति सोभा । नारि निहारि प्रेम भति लोभा ॥२००॥
 वनिता बनि बनि गावहि गीवी । रामरूप देखि भयिके प्रीती ॥२०१॥
 सीतहि राम विवाह कराया । वेद विहिति मुस मगल गाया ॥२०२॥^२
 राम छिया संग जंह चित्रकारी । संग सखी भौ सासु बियारी ॥२०३॥
 कोहबर माह रैन विवि गएऊ । तम भौ दूरि वाहर बलि भएऊ ॥२०४॥
 निव निव भाव भयिक तव कीन्हा । प्रेम प्रीति करि भादर कीन्हा ॥२०५॥^३
 दाहज दान बहुत किन्नु दीन्हा ।^४ भादर करि विदा तव कीन्हा ॥२०६॥^४
 भति बौतुक है भगम भतीता ।^५ इह परिपंच विन्ति जग डारी ॥२०७॥
 सब पुन क कन्या कुमारी । इह परिपंच विन्ति जग डारी ॥२०८॥
 सोई राम निरजन प्रहई । यह जग जानि त्रिगुन में यहई ॥२०९॥
 यह सीसा सतगुर कहि दीन्हा । यद परिपंच जानि छम चीन्हा ॥२१०॥
 भति भतीत गुन भगम प्रयाहा । कहि कवि परे त्रिगुन जलवाहा ॥२११॥
 बद समुद्र सारो जल तीता । साए न पिव देखन कह हीता ॥२१२॥
 वेद मधि भ्यान छित काड़ी । सतगुर महिमा इमि करि वाड़ी ॥२१३॥
 त्रिगुन धार बले नहि तरनी । विनु गुन भ्यान कहा कवि घरनी ॥२१४॥^६

१ (क), (घ) लाएके = लाएके ।

२ (ग) (घ) परिष्कन करि तव भादर कीन्हा ।

३ (घ) करि कीन्हा = करि तव कीन्हा ।

४ (क), (ख) निहिति = निहित ।

५ (घ) (ग) कीन्हा = कीन्हा । (घ) भादर भति कीन्हा ।

६ (घ) किन्नु = बहुत ।

७ (घ) (घ) भादर करि तव विदा कीन्हा ।

८ विशिष्ट पाठ—(ग) सतगुर बचन । (ख) लक्ष्मण बचन ।

९ (घ) विनु गुन भ्यान = बिना भ्यान ।

बोसे राजा केकई कहवा । रातिन्ह संग देसा नहि तंहवा ॥२४८॥

बोहा

करे कतपना कोह भर, सम मिसि कहा पुकारि ।

कठिन राव बिसमे भई, बसे तहवा पयु छारि ॥२१॥

बोपाई

तत्र गिरा मसि दीन्हो केरी ।^१ मन्धर्गहि भई भयस की डेरी ॥२४६॥

यह चरित्र केहु नाहीं जाना ।^२ सिया म चाहे राज भपाना ॥२५०॥

यह चरित्र सम करे भवानी । वेद लोक जेहि कहे बसानी ॥२५१॥

भसपिर इन्ह संग बिमि करि राजु ।^३ उलपति परलै इन्ह कर छाजू ॥२५२॥

कहे राजा सुनु प्रान पिपारी । कीम कस्ट उपना तन भारी ॥२५३॥

राजा प्रेम प्रीति से बोसे । नन सोसि तनिबो नहि बोसे ॥२५४॥

कर गहि रासे सीन्ह उठाई ।^४ बोली वचन कहा समुभाई ॥२५५॥

हमके वर भागे तुम्ह वीन्हा ।^५ भव भसिर एही प्रन वीन्हा ॥२५६॥

देहु वर कि सोइहु बखरा ।^६ बाते पुरकिल होए निस्तारा ॥२५७॥

केकई वचन

भरत बोसाए तिलक तिन्हे पीजे । सम विधि भानंद मंगल कीजे ॥२५८॥

राजाहि वन भरष कह राजा । सम विधि पूरन तोहरो जाना ॥२५९॥

नहि तो प्रान हम देव निकारी । करन भनंद वदी करि डारी ॥२६०॥

राजाहि सुनि हिये लागी वारी । परे मोह पृथ्वी तन डारी ॥२६१॥

राम जाहि वन प्रान ना रहई । बेबों तिलक ती यह बुख रहई ॥२६२॥

१ (क) दीन्हो मसि केरी ।

२ (क) चरित्र = परिवर्ण । कठिनिक बड—उत्तर वचन ।

३ (ग) (घ) बसिबर = बसिबत ।

४ (क), (ग) (घ) छाजू = छाजू । (घ) छाजू ।

५ (क) बोसे = बो (क) वेसै ।

६ (क) (घ), (ग) वहे = वरि ।

७ (घ) (क) भागे तुम्ह = तुम्ह भागे ।

८ (क) कठिनिक पाठ—केकई वचन ।

९ (क) (घ), (ग) वर = वचन ।

१० (घ) (घ), (घ) देबों = देऊ ।

प्रेम प्रीति करि ऐसन भाखा । राम के तिलक लगन रवि राखा ॥२३१॥
 सभ रानी सुनि भयो धनंदा । फूल लजनी सरव अनु चंदा ॥२३२॥
 सभ के मन में यह ठहराना । राम के तिलक कीन्ह मनमाना ॥२३३॥

दोहा

तिसक दिखे निमु राम कन्ह, मिनती कीन्ह प्रकास ।
 करि धनंद मुल मंगल, छिन्केवो परिमल वास ॥२०॥^१

चौपाई

जह रही केकर भवन सुक सपना । तंह जाए बोले बस वचना ॥२३४॥
 राम के तिलक तुम्हें का मीका ।^१ दिन चारि गण होइ बहु फीका ॥२३५॥
 सबति तुम्हारि है गर्व गुमानी । किन्तु बिन गए बोसहि अभिमानी ॥२३६॥^२
 पुत्र के राज सीता भी रानी । दिन दिन तोहरो डोढ़ई पुनि हानी ॥२३७॥
 कहे केकरि सुनु बेरिया भमागी ।^३ राम के तिलक हमें निक लागी ॥२३८॥
 जह मंगल तह बोलसि कृपायी । केकरि बहुत दीन्ह तेहि भारी ॥२३९॥
 तब बोए देखना बहुत पसारी ।^४ नैनन्हि तीर सुरंतहि डारी ॥२४०॥
 तुम रानी हम बेरिया तुम्हारी । हमरी बचन सागि तुम्हें चारी ॥२४१॥^५
 मन्थ के राज हमें बहुत सोहार्द । जावे ठोहरो होए अपिकार्द ॥२४२॥
 तब केकरि मन मए गी रोधा । कोह मजन में बेठी गोसा ॥२४३॥
 पति बिकरल परी तंह तानी । श्याम तिलक के कच्छिं हानी ॥२४४॥^६
 होत प्रात तिसक के साजा । बहुत धनवित वाजन वाजा ॥२४५॥
 पृथुप सुगम रगरहि पति मीका ।^७ श्याम राम के देवे टीका ॥२४६॥^८
 मुनि यदिसु श्री सिखन्ह समेता । रामा रानी मंगल मन हता ॥२४७॥^९

१ (ख) (ग) (घ) मन = मंत ।
 २. (ब) परिमल वास = प्रेम शाल ।
 ३ (ग) अतिरिक्त पाठ—मन्थरा बचन ।
 ४ (घ) देखती = बोली ।
 ५ (घ) अतिरिक्त पाठ—देख बचन ।
 ६ (अ) देखना = पचना । अतिरिक्त पाठ—मन्थरा बचन ।
 ७ (ब) सागि = साथ ।
 ८ (ख) के करिदो = के करी ।
 ९ (घ) रगरहि = रपरि ।
 १० (अ) (घ) के = कर ।
 ११ (अ), (घ) मंगल देता । (ब) मंगल लिख देता । अतिरिक्त पाठ—दशरथ बचन ।

राम के से मुनि प्रिय पंह गएऊ । देखि दसा किछु कहत न गएऊ ॥२७७॥
 राम कीन्हु तब मुनि के सेवा । जानत सकस सिद्धि सम देखा ॥२७८॥
 रानी बिकस बुद्धित महतारी ।^१ केकड़ देत सकस जग गारी ॥२७९॥^२
 मनि महिबख्त सी गई बुझाई ।^३ मत्वी विपति निकट बलि घाई ॥२८०॥
 विधि परिपक्व परा हुक भारी । रोकाहि कौंसिजा बहुत दुखारी ॥२८१॥
 गए राम कौंसिभ्या पासा । विनय कीन्हु करि बचन प्रकासा ॥२८२॥
 सीता दासी भई सुम्हारी । सुनु माता ते बचन हमारी ॥२८३॥^४
 हमके विधि धन मिला बनाई ।^५ रात्र भरव कह दीन्हु कपारी ॥२८४॥
 रही मौन मुख भाठ न बासा । रही निहारि राम मुख माता ॥२८५॥

पोहा

ठाड़ भए कर जोरि के कहे त्रिदु बचन विचारि ।
 मात भग्या मोहि दीजिए धसे पंच पगु बारि ॥२४॥

बीपारि

तब सीता बस बोसी विचारी । राम के संग हम सदा सुखारी ॥२८६॥
 हम माहि रहव भवष यह पुरी । राम चरन पद पोंछव घुरी ॥२८७॥
 मति विरह्यन होए बोसी बानी । सर्व रूप इमि बाहि भवानी ॥२८८॥
 गए राम केकड़ रह जंहा । कीन्हु प्रनाम बचन बोले तंहा ॥२८९॥
 ए माता मोहि भग्या पीजे । कोह कसपना बसु माहि कीजे ॥२९०॥^६
 कहे जाहे फेरि रहे सकोपी । मसे पर धम धाने मोपी ॥२९१॥
 के प्रनाम धसे सीरामा । गए तुरत सामिना धामा ॥२९२॥
 कर जोरि विनय कीन्हु जो ठाड़ी ।^७ उर से प्रेम प्रीति मति बाड़ी ॥२९३॥
 धोम राम सीतल त्रिदु बानी । कीन्हो बोध महा ब्रह्म ध्यानी ॥२९४॥
 प्रीबन कंचित कंचन में रता ।^८ धोम राम सामिना माता ॥२९५॥

१ (क), (घ), (ङ) रानी सम मद्र बिकस हुखारी ।

२ (ख), (घ), (ङ) केकड़ = केकड़ी ।

३ (क) (घ) मद्र = पत्नी ।

४ (क) (घ) ते = तू ।

५ (क) हम बेचन विधि सिखा बगल ।

६ (ख), (ग) बहि = बलि ।

७ (क) विपद = बीम ।

८ (क), (घ) मे = मैं ।

दोहा

राजहि मोह तन प्रसेवो, परे विकल्प तन हारि ।
मौ कल्पना महल में, रानी रखी निहारि ॥२२॥^१

शौपाई

सम मिनि गए रहे प्रिय जंहुवां । बोसी वचन प्रीति करि तहवां ॥२६३॥
राजहि सुधि बुधि एको न सुम्हे । को यह करे कौन यह बुम्हे ॥२६४॥
सुमंत मंत्री बोले विचारी । राजा विनती मुनो हमारी ॥२६५॥
प्रामपवित्र तिलक के साजा । यह परिपच कस भयो प्रकाजा ॥२६६॥^२
मुनि वसिष्ठ पंडित प्रस माला । सुफल धरी सगत रधि रासा ॥२६७॥^३
भा राजा तुम कह्यो समुझाई । सो मैं मुनि से कहा बुझाई ॥२६८॥^४
मुनि से जाए कह्यो समुझाई । विधि परिपच जानि नहि जाई ॥२६९॥
राम के वन भरय कह्यो राजा । सम विधि करते कीन्ह प्रकाजा ॥२७०॥
केकई यह परिपच जो कीन्हा । तन से प्राण होत मोर मोन्हा ॥२७१॥
प्रथ मो पै किन्हु कह्यो न भएऊ ।^५ अब वन राम प्रवसि के भएऊ ॥२७२॥
गएउ मंत्री जहु प्रिय व्यता ।^६ बोले जाए वचन विख्याता ॥२७३॥

दोहा

राजहि वन यह दीजिए, राज भग्म कर दीन्ह ।
यही वचन प्रिय बोल है, भवो रसा मति हीन ॥२३॥

शौपाई

मुनि वसिष्ठ तब कह्यो सीन्हा । कस राजा मति भए गी हीन्हा ॥२७४॥
कहां तिलक कहां वन कहि दीन्हा । यह परिपच कृमति की चीन्हा ॥२७५॥
प्रिया मंत्र राज महि नेती । ऐसे राज बुझ दहु केत्री ॥२७६॥^७

१ (ब), (ग) प्रसेवो = प्रलेख । (घ) प्रसेव ।

२ (ग) मौ = मया ।

३ (ब) कस = कस ।

४ (ब) (ग), (घ) लपाम = विसक ।

५ (ब) सो मैं मुनि से = सो मुनि से मैं । (ग) वसिष्ठ पंड—राजा दरारय वचन ।

६ (घ) प्रथ मो पै किन्हु कहि जाहि भेइ ।

७ (ब) (घ) (घ) मिर = मुनि ।

८ (ब), (घ) बुजे = बुजे ।

राम के ले मुनि त्रिप पंह गएऊ । देखि दसा किन्हु कहत न गएऊ ॥२७७॥
 राम कीन्हु छव मुनि के भेसा । जानत सकल लिखि सभ देसा ॥२७८॥
 रानी बिकल दुखित महतारी ।^१ केकड़ दत सकल जग गारी ॥२७९॥^२
 मनि महिषरु छो गई बुझाई ।^३ माधी विपति निमट छति घाई ॥२८०॥
 विधि परिपंच परा दुख नारी । रोवाहि कौसिमा बहुत दुखारी ॥२८१॥
 गए राम कौसिमा पासा । बिनय कीन्हु करि वचन प्रकासा ॥२८२॥
 सीता दासी भई तुम्हारी । सुनु माता त वचन हमारी ॥२८३॥^४
 हमके विधि बन निजा बनाई ।^५ राज भरख कहू वीन्हु भपाई ॥२८४॥
 रही मीन मुख धाउ न बाता । रही निहारि राम मुख माता ॥२८५॥

बोहा

ठाढ़ गए कर जोरि के, कहे त्रिदु वचन विचारि ।
 मात धम्मा मोहि दीजिए, जैसे पंच पगु डारि ॥२४॥

बोपाई

छव सीता भस बोसी विचारी । राम के संग हम छदा सुकारी ॥२८६॥
 हम नाहि रहू ब्रह्म यह भुरी । राम चरन पर पौछर भुरी ॥२८७॥
 भक्ति तिरछन होए बोसी बानी । सर्व रूप इमि धारि भवानी ॥२८८॥
 गए राम केकड़ रहू जंहवा । कीन्हु प्रनाम वचन बोसे तंहवा ॥२८९॥
 ए माता मोहि धम्मा दीजे । कोह कसपना बछु नहि कीजे ॥२९०॥^६
 कहे चाहे केरि रहे सकोची । बस पर मन धाने मोची ॥२९१॥
 के प्रनाम जैसे सीरामा । गए तुरत सोमिमा धामा ॥२९२॥
 कर जोरि बिनय कीन्हु जो ठाढ़ी ।^७ उर से प्रेम प्रीति छति बाढ़ी ॥२९३॥
 बोने राम सीतल त्रिदु बानी । कीन्हो बोध महा ब्रह्म धामनी ॥२९४॥
 जीवन कर्मित कंचन में राता ।^८ बोने राम सोमिमा माता ॥२९५॥

- १ (ख) (ग) (घ) रानी बन नर बिकल दुखारी ।
- २ (ख), (ग), (घ) केकड़ = केकड़वा ।
- ३ (ख) (ग) कई = गयो ।
- ४ (ग), (घ) ते = यह ।
- ५ (घ) हम बचन विधि निजा वनाई ।
- ६ (ख), (ग) नहि = बलि ।
- ७ (ख) निम = नीम ।
- ८ (ख) (ग) ये = यह ।

करि प्रनाम प्रीति प्रति भएऊ ।^१ मानस-ग्यान सपूरन रहेऊ ॥२६६॥

डोहा

पुत्र हेतु हुतसी फिरै, सखन राम परकज ।
मोह विटप धरि भजेबो, भगम ग्यान गति पुज ॥२६७॥

छंद

प्रति मोह कोह यह साक सागर तर्क तरनि न पावहीं ।^२
त्रिगुन धार हृमि तेज परवल बार पार न पावहीं ॥७॥^३
प्रवध बूढे भरमि भवन में उत्तटि सोर लगावहीं ।^४
माया मोह यह विविध बन भी अनंत मन जल छावहीं ॥८॥

सोरठा

रोदन करिहि पुकारि, प्रवध विवल मौ राम विनु ।
एक एक पर चारि, कवल सुजा मानो जल विनु ॥४॥^५

चौपाई

राम सखन सिया खली विचारी ।^६ काटेबो मोह फद सभ भारी ॥२६७॥
उतटि दसहि लो नगर प्रनामा । प्रागे पगु दीन्हा रघुनामा ॥२६८॥
क्रिद्यु बुर सोग मगर कर गएऊ । करी प्रनाम बिदा तब भएऊ ॥२६९॥
मुनि बसिष्ठ के आस्रम ठाढ़े । करि प्रनाम प्रीति प्रति धाढ़े ॥२७०॥
गुर पं पंकज हृदय लगाई । करि प्रनाम जने रघुराई ॥२७१॥
भासिबाद मुनि बहुते दीन्हा । राम सखन माय के लीन्हा ॥२७२॥
धम तुरंत विलंम ना साई । राम सखन सीता धमि जाई ॥२७३॥
बीता रैन दिवस बलि धाई ।^७ पृहमी सेज्जा कीन्ह बनाई ॥२७४॥
कंद मूल सम कीन्ह महारा ।^८ रजनी बलि भौ पष सुधारा ॥२७५॥
छोड़ा रंघ बहन सम साजा । विनु पनहीं को पाष बिराजा ॥२७६॥

१ (व) प्रीति = प्रेम ।

२ (ब), (ग) (घ) यह = सख ।

३ (व) (ग) (घ) त्रिगुन धार तेज परवल बार पार न पावहीं ।

४ (ग) भवन = मंदिर ।

५ (क) कवल = कमल ।

६ (व) (ग) (घ) राम सखन सिया खले संभारी ।

७ (ब), (ग) (घ) बीता देवस रैन बलि धाई ।

८ (ब) (ग), (घ) सम = दल ।

होत प्राप्त मुख मंजम कीन्हा । बरि असनात तिभक सिर दीन्हा ॥३०७॥^१
सिया राम पर पंकर सीन्हा । चने सुरंत पुहुमी पगु दीन्हा ॥३०८॥

होहा

प्रागे राम सिया बीच में, पीछे लखन कुमार ।

तीनों प्राण जग विदित है, जानव सम संसार ॥२६॥^२

धीपाई

राम लखन सिया बन के गएऊ । पीछे कवा भवभपुर गएऊ ॥३०९॥
बरि विसाद सभ कवा मुनाई । समन कीन्ह सवही अति धाई ॥३१०॥^३
तुरें रंघ तेजो अति गएऊ । केहु काहु के मरम ना पएऊ ॥३११॥^४
करहि कलपना नर धी नारी । सिया पुहुमी कैसे पगु डारी ॥३१२॥
राम लखन सिया बन भी जबहीं । दसरथ प्राण त्यागोवो सवही ॥३१३॥
वेगि दूत भरथ पंह गएऊ ।^५ भवभ कवा दुरंत सुनएऊ ॥३१४॥^६
कसे दूत सुनु भरथ कुमारा । चतहु दुरंत अवध पगु डारा ॥३१५॥
दूत के वदन ममिन मलाना । भरथ सोध हृदय मंह प्राना ॥३१६॥^७
धाई भवभ निकट निभराई । देखा विकस सोग सभ धाई ॥३१७॥^८
सुनि विरलेंगु ठह पडुष दुरंता । अंह वीरी कौसिला माठा ॥३१८॥
देखा विकस विपति सभ रानी । महा विसाद कलपना सानी ॥३१९॥
छुड के घरन कीन्ह परनामा । मुना भवन बिना श्रीरामा ॥३२०॥
दुरंत गए केन्द्र के पासा । बोले जाए वषन परकासा ॥३२१॥^९
सुम ओए का किमि जग कामा ।^{१०} वनहि पठाएहु सो श्रीरामा ॥३२२॥^{११}

१ (क), (घ), (ग) होत प्राप्त मुख मंजम गएऊ । बरि असनात तिभक सिर दीन्हा ॥

२. (क) (ग) तीनों = तीनु ।

३ (क) (ग) धाई = धाई ।

४ (क) केहु काहु मरम न पएऊ । (ग) केहु काहु कर मरम न पएऊ ।

५ (क) (ग) वेगि = वेगे ।

६ (क) भवभ के कवा दुरंत सुनएऊ ।

७ (क) (ग), (घ) मंह = मीव ।

८ (क) दपा = देवी ।

९. (क) (ग) वषाण = परयाणा ।

१० (क) सुम श्रीर को का जय कामा । (घ) सुम श्रीर के कवा जय कामा । (ग) सुम श्रीर का का जय कामा ।

११ (घ) वनहि पठाएहु सो निभान्ना ।

करि प्रनाम प्रीति प्रति भएऊ ।^१ मानस-ग्यान संपूरन रहेऊ ॥२६६॥

दोहा

पुम हेतु हुससी फिरै, सखन राम पदकंभ ।
मोह बिटप परि भंजेवो, भगम ग्यान गति पुज ॥२६७॥

द्वंद

भति मोह कोह यह सोक सागर तक तरनि न पत्वहीं ।^१
त्रिगुन धार इमि तेज परबस वार पार न पावहीं ॥७॥^२
धधध बूबे भरमि भवन में उलटि सोर सगावहीं ।^३
माया मोह यह बिबिध बन भौ अनत मन जल छावहीं ॥८॥

सोरठा

रोदन करिहि पुकारि, धधध विकल भौ राम बिनु ।
एक एक पर धारि, कवल सुखा मातो अस बिनु ॥४॥^४

चौपाई

राम लखन सिया जती बिचारी ।^५ कष्टेवो माह फंव सम झारी ॥२६७॥
उमटि वेसहि तो नगर घनाया । भागे पगु दीन्हा रघुनाया ॥२६८॥
क्रिछु दुर भोग नगर कर गएऊ । करी प्रनाम बिदा तब भएऊ ॥२६९॥
मूनि वसिष्ठ के प्राप्तम ठाढ़े । करि प्रनाम प्रीति प्रति वाढ़े ॥३००॥
गुर पद पंकज हृदय सगाई । करि प्रनाम जमे रघुराई ॥३०१॥
पासिबाद सुनि बहुते दीन्हा । राम सखन माय के सोन्हा ॥३०२॥
पच तुरंत विलस मा लाई । राम लखन सीसा भलि जाई ॥३०३॥
बीता रनि निवस भलि धाई ।^६ पुहुमी सेगजा बीन्ह बनाई ॥३०४॥
कंद मूल सम बीन्ह पहारा ।^७ रजनी भलि भौ पच सुधारा ॥३०५॥
धोड़ा रंघ बहल सम साजा । बिनु पनहीं को पाव बिराजा ॥३०६॥

१ (घ) प्रीति = प्रेम ।

२ (क), (ग) (ख) बह = सब ।

३ (क) (ग) (ख) त्रिगुन धार तेज परबस धार धार न पावहीं ।

४ (ग) भवन = भव ।

५ (ख) फंवत = कमल ।

६ (घ) (ख) (ग) राम लखन सिया जते संभारी ।

७ (क), (ग) (घ) बीता देवन रनि भलि जाइ ।

८ (घ) (क), (ख) सम = सब ।

भारद्वाज मुनि मँदित जँहवां । राम सखन सिप फूँचि तहवां ॥३३७॥
 करि प्रनाम मुनि प्रासिक्त दीन्हा । आदर भाँठि बहुत विधि कीन्हा ॥३३८॥^१
 प्रापन कुसल क्यो सीरामा । पढ़ो ना कुसल भवपपुर घामा ॥३३९॥
 कहो द्विप कुसल कोसिसा रानी । गदगद बोले बचन भिन्दु वाली ॥३४०॥^२
 पिता बचन हूम वन सप कीन्हा ।^३ बिधि कर सिखा सोइ फल कीन्हा ॥३४१॥
 दसरथ प्राप्त समागत कीन्हा । अथ भवति वैस जल विन्दु मीना ॥३४२॥
 सोषल रिक्ति मुनि मंत्र विचारी ।^४ राम लखन सिया जनक कुमारी ॥३४३॥
 सीतहि राक्षा बँह धिप्रसारी । सकल समाज बँह मुनि की नारी ॥३४४॥
 प्रति बिधिष सोमा अधिकारी । अन्य बहु पुर्ब जाकरि तुम नारी ॥३४५॥
 प्रति कोमल पुहुमी पगु डारी ।^५ जोबिबिभिक्षा सोकसुनहि नारी ॥३४६॥
 रथेवो बिरंजि चित्र बहु भाँती । सोइ सोहागिनि पिमा रंगराती ॥३४७॥
 कर मूल सम भवा मंगई । छुसुम प्रसार राम सिया पाई ॥३४८॥
 विक्ति विक्ति मुनि कया विचारी । भक्ति ग्यान तम हूरी चारी ॥३४९॥

पोहा

उठि प्रात सुगसरि तीर मँजन किबो बनाए ।
 मुनि पद पंज गहि कै, मास्तिर बचन सोहाए ॥२९॥

चीपाई

राम सखन सीता संग सोई । माया रूप अछ सब मोई ॥३५०॥
 शीष शीष विष सक्ति विराज । हीरा मध्य कनक जनु छाई ॥३५१॥
 उभय शीष एक सतिवा बहई ।^१ माया रूप छवि इमि कर कइई ॥३५२॥^२
 संसय मागर जात घोराई । जीव शीष एक ठौर बेलाई ॥३५३॥
 जग जननी जाने सम कोई । सो बसि कसे का करि होई ॥३५४॥
 सोइ जनक प्रिह प्रपटे भाई ।^३ रँब रूप कोइ फल मा पाई ॥३५५॥

१ (ब), (घ) आदर बहुत भाँठि विधि कीन्हा ।

२ (ब), (ग) (ब) गदगद बचन बोले भिन्दु वाली ।

३ (ब), (ग) (ब) पिता बचन हूम वन पगु दीन्हा ।

४ (ब), (ग) (ब) सोषल रिक्ति मुनि बहुत विचारी ।

५ (ब), (ग), (घ) कोमल = कोमलि ।

६ (ब), (ग) शीष = सखि ।

७ (ब), (ग) माया रूप छवि इमि करि कइई ।

८ (ब), (ग), (घ) सोइ जनक इहि जननी भाई ।

बठि रही सम राज संघारी । तुम सम सहिहा जग की गारी ॥३०२॥^१
मंघरहि बहुत प्राप्त दत्ताई ।^२ सधु भवन मुनि र्हा छनाई ॥३०४॥

गोहा

कीन्ह दाह कर्म सम, मुनि पंडित सम लोग ।
बहुरि भवन में बठिके, विरह विखार बियोग ॥३०३॥^३

चौपाई

कीन्हा साध दीन जत्र पूजा । विप्र सिपाए कुटुम भव दूजा ॥३०२॥^४
बसिष्ठ रिखि मुनि कीन्ह विचार ।^५ मंत्री सुमंत सबभ परिवार ॥३०६॥
भरष के दिजी तिलक कर साजा ।^६ करि भानंद भवभपुर राजा ॥३०७॥^७
जात नभ दुखित नहि होई । प्रजा संजन सुनइ सन कोई ॥३०८॥^८
भरष कहे सुनो मुनि म्याता ।^९ हमके तिलक ना लिखेनो विमाना ॥३०९॥
यह भयराभ परा मोहि छाया । तत्र संग ना सीन्ह रघुनाथा ॥३१०॥
हमहि भाहहि राजा सुख घामा । वन के पठाएवो सा खीगमा ॥३११॥
यह कृजोग राज ना भावे । विधि कर तिला साइ फन पाव ॥३१२॥
हयहि सोग केवइ सन साजा । त्रिप के मारि तिलक के साजा ॥३१३॥
राम बिपति मुनि म्याहुल होवे । जेवों मनि काडि नृमंगम खोव ॥३१४॥
निफति प्राप्त वधु तन के त्यागा ।^{१०} राज काज यह सम दुख भागा ॥३१५॥

दाहा

मै बिकर निभु वास हो, त्यागि सबस मूख नोग ।
कहे भरष मनवा वाषा भए मम राज न जोग ॥३१६॥

चौपाइ

घामे कया प्रयागपुर गएऊ । सब तीर्थ पद पंजज गहेऊ ॥३१६॥

१ (क) (घ) (ङ) बघ = बगत ।

२ (क), (घ) (ङ) प्राप्त = प्राप्त जो ।

३ (क) रैखि = आड़े ।

४ (क) (घ) बसिष्ठ रिखि मुनि मंत्र विचार । (घ) बसिष्ठ मुनि रिखि मंत्र विचार ।

५ (घ), (ङ), (च) दीजे = खीजे । साजा = साठ । राजा = राज ।

६ (क) करि = करही । (घ) करिही ।

७ (घ) भवभ = भुक्ति ।

८ (घ) भरष कहे भुक्त मुनि रचना ।

९ (घ) बरही पठारु को निरि रमा ।

१० (क) निधना प्राग कलु तन के त्यागी । (घ) निधनी प्राग कलु तन के त्यागी ।

राम सखन बन विपति वियोगा । बन संघ जाए भीन्ह तप योगा ॥३७२॥
 सकस समाज मिलि जली तुरंता । धरम मिलम किमि कारन बंता ॥३७३॥
 सीताराम दरस विनु देखै । मनन्ह नीद पलक नाहि पेसै ॥३७४॥
 कहू जनक मुनु प्रिया सुमायी । प्रात उठी चलव पंथ सागी ॥३७५॥
 बीता रैन दिवस भसि भएऊ ।^१ रथ बहस सम साजत भएऊ ॥३७६॥
 घन समेत नय कर सोगा ।^२ बने हृदयि लेजि विपति वियोगा ॥३७७॥
 एक-एक घर रक्षा रसवारा । नागी पुख मिलि पंथ सुषारा ॥३७८॥
 जाई भवधि निकट नियराई । कटक जहां नहां बठी जाई ॥३७९॥
 मरथ समुहून रैन समेठा । देसा अनक प्रेम निज हेता ॥३८०॥
 पंथ में भरि भरि मिने बनाई । गदगद सकस शरीर देसाई ॥३८१॥

दोहा

सैना सम बचना घति, प्रम न रखा छपाए ।^१
 एक एक बदन निहार्यहि, नम रखा जन छाए ॥३९१॥

श्रीपाई

रिखि तव मंत्र कहा समुझाई । जसी समै जहां रघुराई ॥३८२॥^४
 भाबहि मवन ठी फेरि लियार्थ । नहि तो दरस महा फल पार्थ ॥३८३॥
 उठि के मरथ मवन मं गएऊ ।^५ कोसित्या से धर्य मुनएऊ ॥३८४॥
 श्री रागी छत सखिन्ह समेता । समसे धर्य कहुत निभु हेता ॥३८५॥
 सुनत प्रम निभु हिरद जाया ।^६ जंघु विनहु जनु देखम साया ॥३८६॥^५
 सम रागी सुनि भई भनंदा । मातो उगेठ सगद जनु जंघा ॥३८७॥
 तेहि बिन नैन मीन नहि भाष । राम जरन निजु हिरा भावे ॥३८८॥
 कव होए प्रपन बसब पथ सागी । इमि करि मन नीद सम त्यागी ॥३८९॥
 उदित निवाकर अवही भएऊ । रंथ बहल सम साजत भएऊ ॥३९०॥
 मझ सोग सुनि भया सनाया । दसन जाए देखव रघुनाया ॥३९१॥
 बने समन्हि मिलि पंथ सुषारी । रामिन्ह संग सहेमी भारी ॥३९२॥

१ (क), (घ) बीता दिवस रहनी भसि भएऊ ।

२ (क) (घ), (च) मय = मर ।

३ (क) सैन्य = सवन । (ग) देव ।

४ (क) (घ) (च) जंघेउ तपी जइया रघुजई ।

५ (क) मी = मर ।

६ (क), (घ), (च) जंघु विनुन देखम जनु जाया ।

धति कोमल सुदर छवि छार्ई ।^१ बली पुहुमि पगु रेप न छार्ई ॥३५६॥
 ताकर कवि किमि करछु बसनाता । द्विष्टि त्रिष्टि माया परधाना ॥३५७॥
 बिटप जाए निष्ट निमगया । अहं तंह मुनि मदिल छबि छाया ॥३५८॥^२
 वेसि दरख मुनि हरसित मएऊ । कीन्ह प्रनाम मुनि भासित दिएऊ ॥३५९॥
 बोझे मुनि सुनु राजकुमारा । किमि कारन कानन पगु वारा ॥३६०॥^३
 पिठा वचन बन लिखेबो विषाठा । कहे राम सुनो मुनि ग्याता ॥३६१॥
 सिद्धि विहिति सम कया सुनार्ई । जो किछु भवष बिना प्रभुतार्ई ॥३६२॥
 क्यो मुनि कहू हम भासम कीर्जै ।^४ वचन ठोहार ताहां यं दीजै ॥३६३॥

कु मज वचन

कु मज रिखि सुनि बोले बिषारी ।^५ जल धल सक्षम है द्विष्टि तुम्हारी ॥३६४॥^६
 कहां तुम नाहि तहां मै कहेऊ ।^७ हृदयकमल मधि बीच रहेऊ ॥३६५॥
 राम विचारि प्रेम रस राता । मुनि है विमल सदा गुन ग्याता ॥३६६॥^८
 कोलू किरात भील सम जाए । पत्रकुटी तंह बहुविधि जाए ॥३६७॥
 कंद मूल कोड़ि कीन्ह मेहमानी । कीन्ह प्रसाद सभ तख बसानी ॥३६८॥^९
 मुनि सम कया कहहि बहु भांती । इमि करि विसेउ दिवस भौं राती ॥३६९॥^{१०}

दोहा

करीह तपस्या विटप मै, महा कठिन कवलस ।
 पुहुमी पत्र विद्याबही, सीतागम नरेस ॥३७०॥

श्लोकाई

पीछे कया जनकपुर गएऊ । सोक मोह दुख दाल भएऊ ॥३७०॥
 गए जनक यह भवन निवासा । रानिन्ह कियो वचन प्रकासा ॥३७१॥

- १ (ब), (घ), (ङ) कोमल = कोमलि ।
- २ (ब), (घ) जहां महा मुनि मदिल छाया । (घ) जहां महा मुनि मदिल छपाना ।
- ३ (ब) कजल = कजलमल । (घ) कजहूह ।
- ४ (घ) क्यो मुनि कहां भासम कीर्जै ।
- ५ (घ), (ग) सुनि = सुनि । (घ) तप ।
- ६ (घ), (ग), (ङ) दष्टि = छष्टि ।
- ७ (घ), (घ), कहां तुम नाहि तहां मै कहेऊ । (घ) कहां नाहि तहां मै कहेऊ ।
- ८ (घ) सुनि विमल महा गुन ग्याता । (ग) सुनि है विमल महा गुन ग्याता । (घ) रिखि है विमल महा गुन ग्याता ।
- ९ (ब), (घ), (घ) लव = लवु ।
- १० (ब) विसेउ = बीषा । दिवस = देवस ।

किन्ही बिसाद सभ गदगद होई । बहुत बिलाप करि मिते सोई ॥४१४॥
 बीसिसा कैरई सोमित्रा रोई । बहुत बिसाद कल्पना होई ॥४१५॥^१
 सीसाहिं शोष विविध समुझई । बिब होए ग्यान राम पद पाई ॥४१६॥
 विधि कर सिखा मेटि किमि जाई ।^२ के तेहि मेटि करे अघिकाई ॥४१७॥
 कीन्ही बिवेक ग्यान भति मीका । राम चरन पदपंकज टीका ॥४१८॥
 गई सुरत मातु जंह पीता । मिते हृदय सए रोदन कौता ॥४१९॥^३
 हमहिं बिरौच बन सिखा बनाई । सेवन बनसंड कंद मुन खाई ॥४२०॥
 सीता सती सदा सम्पानी । बोसी प्रेम सुधा रस वानी ॥४२१॥
 हमके दुख सुख किन्नु नाहिं माता । राम चरन पद पंकज राता ॥४२२॥
 प्रेम प्रीति पूज सिखा बनाई । ताके घृष कृता अघिकाई ॥४२३॥

शोदा

ब्रह्मा बुधि बांकी यही, सिखा फेन का फूल ।
 ताहिं कचस टांकी दिपी सिखेठ बिरौचि बेतूस ॥३३॥^४

बीपाई

राम दरस सभ निठि निति करई । चरन कमल पद पंकज गहई ॥४२४॥
 बिमम जो कीन्ह दोनों कर जोरी ।^५ चनहु न बहुरि बचन सुनु मोरी ॥४२५॥
 धारहु कानन सभ फन नीका । तुम ही राज मंदिस मनि टीका ॥४२६॥
 मातु पिता गुर अम्मा पाले । सदा सुखी दुख क्यहिं न सले ॥४२७॥
 पिता बचन मीहिं होए न भाना । बर्य दुयादस यह प्रन ठाना ॥४२८॥
 किन्नु निन बीठे बिदा तव कौन्हा । राम बोध सभ के करि सीन्हा ॥४२९॥^६
 जनक बोसे बहुत हितकारी । तुमके सौंपो राजकुमारी ॥४३०॥^७
 राम प्राप्त मोर सिखा दुसारी । विधि परिपंच कंद यह बारी ॥४३१॥
 मोह छोह माया मद भारी । ग्यान दिना नर सदा दुखारी ॥४३२॥
 बिना बिबेक भम जग साजा । कहैं राम सुनो रिखि राजा ॥४३३॥

१ (क) बिसाद = बिधा ।

२ (क), (ख) बिबिकर सिखा मेटि नादि जाई ।

३ (क) मीठी हृदय रोदन करि बकिया । (ख) मीठी हृदय रोदन करि कौता ।

४ (क) (ख) सिखेठ = सिखा ।

५ (क), (ख) (ख) जो कीन्ह = कीन्ह ।

६ (क) सींगल = सीन्हा ।

७ (क), (ख) (ख) तुम बेह लीने राजकुमारी ।

गए प्रयाग जह तिर्थ विरामे । गंगा जमुना सरसुति छाने ॥३६३॥
 सकल समाज मुनि वठे घामा । मुनि से भेंट कीन्ह परनामा ॥३६४॥
 मुनि सब कथा कहा विरामा । रजनी एक रहे श्रीरामा ॥३६५॥
 करि प्रदण्डिल जो चले सुरता । सुरसरि तीर जहां एक भंता ॥३६६॥
 मंजन करिह प्रेम गुर ध्याना ।^१ पाठ पुरान मक्ति भगवाना ॥३६७॥
 पाक बनाए कीन्ह एक भता । करि प्रसाद जो चले सुरता ॥३६८॥
 निम्नु वासर में पहुंचा जाई । निकट विकट बन जाए मियराई ॥३६९॥
 कोल्ह किराठ भील सब भाजे । भिप भावत कोई दस साजे ॥४००॥
 भिग पक्षी भागे सब भोग । दूटत फूटत बन भएगी सोरा ॥४०१॥
 सुना सवन भरष पलि धाए । सवन कोपि कर धनुष चढ़ाए ॥४०२॥
 इन से समर करव हम धाजू । किमि कारन भावहि दस साजू ॥४०३॥
 राम कहा सजन सुम ग्याता । भरष न होहि मोह भ्रम राता ॥४०४॥
 भरष न होहि गव उर गामी । गुर पद पंकर मक्ति निजु स्वामी ॥४०५॥
 महि जग माह कौन भस जनमा । राजकाम मद जेहि नाहि भरमा ॥४०६॥
 राम कहा श्रीरी जग कोऊ । भरष न होहि राजमद सोऊ ॥४०७॥
 भरष परै गहि राम के चरना । उपजा प्रेम मक्ति निजु बरना ॥४०८॥
 सजन क्रोध धैमा भए गएऊ । कर से धनुष जमी पर धरेऊ ॥४०९॥^२
 सजन भरष मिलै बहु भांती । उपजेउ प्रेम नैन चहु पांठी ॥४१०॥^३
 गुरपद पंकर गहेउ सुमागा । जेधौ जल कवल भंवर रस पागा ॥४११॥
 जनक अनुगुन मंत्री साया ।^४ सम से प्रेम कहेउ रघुनाया ॥४१२॥^५

दोहा

राम चरन पर पंकर, गहि लीन्हो सिर नाए ।

कटक जहाँ तहाँ वैठि के भोजन पाक बनाए ॥३२॥^६

घोषाई

सीता गई जहाँ रनिवासा । सामु चरन पद पंकर पासा ॥४१३॥

१ (ब) मंजन करिह परम गुर ग्याना । (ग) मंजन करे परम गुर ग्याना । (घ) मंजन करी प्रेम गुर ग्याना ।

२ (घ) (ग) (घ) करते धनुष विधी पर रहैऊ ।

३ (घ) (ग) उपजा प्रेम नैन चहु पांठी । (घ) उपजे प्रेम नैन चहु पांठी ।

४ (घ) (ग) जनक मन्त्रुहम मंत्री साया ।

५ (घ), (ग) (घ) मन्त्रु प्रेम कीट रघुनाया ।

६ (घ), (ग) (घ) भाजन भाव बनाए ।

उरती तेजि जस पीठे कैते । महामूढ़ जल रूप पद जैसे ॥४५०॥^१
 केहरि प्रतिमा देखैत भारी । भ्रमटि परत तन प्रान बिसारी ॥४५१॥
 काधु महन में स्वान जो पीठा । भूक्ति भवन में प्रतिमा ऐठा ॥४५२॥
 फिटिक सिता गज दसनन्हि भरई । दूटिगो मुह उरति जिमि परई ॥४५३॥
 ऐसे बेद भरम भव रासा । सतगुर म्यान समुक्ति निम्नु भासा ॥४५४॥
 गुर पद पंऊज प्रनल भनीपा । नाम बिमल निधि प्रेम सनीपा ॥४५५॥
 नाम है नीका काढ़ि मग देखे ।^२ सतगुर म्यान प्रेम रस पेखे ॥४५६॥

दोहा

कहैं हरिया निम्नु म्यान है बचन सत गुर प्रनीन ।^३
 तेजे मर्म बिमल पद बिकि बिकि कर भीन ॥४५॥^४

सेवक बचन

तुम म्यानी हो सतगुर दाता । भ्रम निगम कहेत निम्नु दाता ॥४५७॥
 जी किन्नु सुनेत समै निक सागा । भेटिगो तम मर्म नौ भागा ॥४५८॥^५
 सुर नर मुनि सम मर्म भूलाना । तुम किमि कर यह पद पहचाना ॥४५९॥

हरिया साहस बचन

सत कहों सिद्धि कागज कोरे । सत पुर्ल प्राए ग्रिह मोरे ॥४६०॥
 जीवन मुक्ति बिद जग मूसा । दसन देखि मिटा जम सुसा ॥४६१॥
 निम्नु निम्नु कया कहेत सत वानी । सुफ्रित चीन्हा सो निमल म्यानी ॥४६२॥
 माया म्यान भी भक्ति बिरागा । दया कौन्ह प्रेम निम्नु पागा ॥४६३॥
 प्रादि नषानी कन्या भहई । सोई सीवा सती यहकहई ॥४६४॥
 माया भरित्र चिन्है नाहि कोई । पंडित पढ़ि कै चसे बिगोई ॥४६५॥
 ज्ञान मंत्र मोह मल बागी । प्रह्ला बिस्तु हारे त्रिपुरारी ॥४६६॥
 चाके वेद निरजन कहई । बार बार भंजन में रहई ॥४६७॥^६
 सोई राम है किस्त कन्हाई । दस प्रौवार भरि जग में प्राई ॥४६८॥
 भूमहु म्यानी कच्छु विखेला । यह तिगु न माया कर रेखा ॥४६९॥

१ (क) (ग) (ब) महा मूढ़ मय रूप पद जैसे ।

२ (ख) (घ) (ङ) देखे = देखो । पेखे = पेखो

३ (क) प्रनीन = प्रसीन ।

४ (ख) (घ), (ङ) तेजे मर्म बिमल पद पाई । (क), (ग) बिकि बिकि कर भीन ।

५ (घ) छुटिगो तम भरम भव भासा ।

६ (घ) में = महा ।

कछु न भरष भवषपुर यजू । धानंद मंगल सदा समाजू ॥४३४॥
 हम नहिं पाहहिं राज मुस धामा । निस दिन सुमिरौं सो लीरामा ॥४३५॥
 राम चरन पद पकज टीका । राम काज मोहि भागत फीका ॥४३६॥
 कौसिसा केकई सोमिना रानी । बोले प्रेम बचन अिदु वानी ॥४३७॥^१
 कौन्ह प्रनाम मातु सिर नार्ई । सभ से विनय कीन्ह रघुराई ॥४३८॥
 सासु के निष्ठ कीन्ह परनामा । बिरह बिसाद बेला लीरामा ॥४३९॥
 समसे बोले विमल अिदु वानी ।^२ मोह भौ दूरि ध्यान मत ठानी ॥४४०॥
 गुर से विनय कीन्ह कर ओरो । सदा समास भलपमति मोरी ॥४४१॥

दोहा

गुणपद पकज प्रेम रस, गहे चरन सिर नाइ ।

विषा कीन्ह महि भांति से, राम भजन समुझाइ ॥३४॥

छंद

बसे सो सकल समान समन्हि मिसि उलटि उलटि के हेरखीं ।
 भति भयत ब्याकुल बिरह सन में सुधि बुधि सभ विसरावहीं ॥६॥
 राम चरन पद पंकज मूलकठ लोचन ललचि लगावहीं ।
 रहि रहि प्रात कठिन तन ब्याकुल फनि मनि जेवो विसरावहीं ॥१०॥

सोळा

बसे सो पंष विचारि, द्विग जीवन जग राम विनु ।

फिर फिर रहे निहारि, कव मिसिहँ मोहि प्रातपति ॥७॥

चौपाई

बसे सो वेगि विसम मन साई । क्यु दिन में निष्ठ नियराई ॥४४२॥^३
 अपने बिरह ग्रिह टिके सोगा । मरष जाए कीन्है तप जोगा ॥४४३॥
 जनक रिनी ग्रिह पहुधु तुरंठा । निसि निन भजन करहि भगवंठा ॥४४४॥
 इमि करि पाछे बहुत भुलाना । जिन्हि नाहि सतगुर पद पहचाना ॥४४५॥
 माया ब्रह्म चिन्है नाहि कौई । विना ध्यान माया बसि होई ॥४४६॥
 तियु न माया फंद धनंठा । बक सो ब्रह्म वेद भनंठा ॥४४७॥
 सेंधु धगम जत नजरि न भावे । विनु तरनी कोइ पार न पावे ॥४४८॥
 प्रथ सोधि मुनि भरम भुमाना । मिसे ना सतगुर निर्मम ग्याना ॥४४९॥

१ (ग), (घ) बोध प्रेम द्युर रस बानी ।

२ (ग) सबसे बोले बचन निज बानी । (घ) सबसे बोले विमल रस बानी । (ङ) सबसे बोले विमल निज बानी ।

३ (ग), (घ) (ङ) मम = मा । धर्म = धामा । नियरई = निमरणा ।

बोहा

सस उपवेश यह कहताहि, बूमहु दिवेक बिचारि ।^१
 अमरसाक के जाई हो, सकल मम हम जारि ॥१७॥

चौपाई

भक्ति जेवों गर्व करे नर साई ।^१ निस्वय गर्व पर मंह होई ॥४८॥
 संत डाह है कम बिचार । कन्ट नस्ट होए अमके द्वारा ॥४८॥
 भागे कथा दंडक बन गएऊ । राम लखन सीता जंह खेऊ ॥४९॥
 तपसी एक तपस्या करई ।^२ बोसै लखन ताहि के मरई ॥४९॥
 सुपनस के पुत्र पिमाग । प्राण छूटा पुहुमी तन बारा ॥४९॥
 प्राए लखन बहा रघुराई । तपसी मारि बहुत पछ्याई ॥४९॥
 यह निशिघर संका मंह खई । यह मारे कसु पाप ना सहई ॥४९॥
 मारेहु दैत पुम्य परतापू । कर्वाहि ना ब्यापु यही कर तापू ॥४९॥^३
 निगम नेति सदा गोहरावे । बैतम्ह मारि महाफल पावे ॥४९॥
 रावन महिन भई सुपनसा । करि सिंगार वह छतवस पैसा ॥४९॥
 अचस अपम चहुँ दिस हेरै । पत्रकुटी कहुँ फिरि फिरि घेरे ॥४९॥
 तुह तपसी निजु तप जो नीन्हा ।^४ तोहर चरन पद पंजन लीन्हा ॥४९॥^५
 भाबु कर इनि खव तुम पावा ।^६ तुम वरसन है प्रेम सुभासा ॥५०॥
 राम बोन्हा निशिघर नारी । छल बस बचन जो बोसे बिचारी ॥५०॥
 पकरि नाक कान धरि काटा । लकापुर के पकरिसि वाटा ॥५०॥
 रावन भागे बद्धा पुकारी ।^७ दुइ तपसी है एक नारी ॥५०॥
 पूछत बचन जो बोसे निरयटा । बही नाक कान मोर काटा ॥५०॥
 सर दूखन मुनि भागु गोहारी । मारि कटक पुहुमी तन डारी ॥५०॥^८

१ (क) (घ), (ङ) कहताहि = कहताहो ; बूमहु = बूमे ;

२ (क) (घ) (ङ) जेवों = जा ।

३ (क) (घ) (ङ) तपस्या = तपेस्या ;

४ (क), (घ), (ङ) कर्वाहि ना ब्यापु हिंसा कर पाए ।

५ (क) दुइ = दूम । (घ) (घ) (घ) निठ = डो ।

६ (क) लहर = लीहो ; (घ) तुम्ह ।

७ (क) (घ) (ङ) तुम = तुह ।

८ (क), (घ) (ङ) कथा = ऐप ।

९ (क) डारी = डार ।

दोहा

जिहा जीबहि जगत में, भवस खप निदान ।

घादि पुख बहि भ्रमर है, देखहु निमल ग्यान ॥३६॥^१

श्रीपाद

करि भ्रातर करि बहुत बखाना । पड़े जरु मह बिदित प्रधाना ॥४७०॥
 पंडित पढ़ि पढ़ि बढ पुराना । मिने ना छिन मधु छाछी बखाना ॥४७१॥
 हरिहर किति करि पय खलाई ।^२ परे भवन मन मम न जाई ॥४७२॥^३
 भीन्है न ग्यान माया कर रूपा । फिरे फिरग सकस सभ भूपा ॥४७३॥
 माया भवन है विखम विकाराग । पर पठग सकल तन जारा ॥४७४॥
 बाब कवि सभ कहि कहि बरनी ।^४ मिल न भव जल सत की तरनी ॥४७५॥
 सप्त बचन प्रेम निनु राना । सुनहु मुनि पंडित जन ग्याता ॥४७६॥
 सुर नर माने नाम विहूना । धवटि मुए जवा जन विनु मीना ॥४७७॥
 पावड कम ग्यान नहि जाना । तिर्य बरु में जाए लपटाना ॥४७८॥
 मन बांधे अंह तह से जाइ । कष्ट कल्पना बड दुख पाई ॥४७९॥
 निगुन घादि निरजन सावे ।^५ बहुरि बहुरि भव सागर भावे ॥४८०॥
 तप साधे का क्या फल पाव ।^६ तपने साध ग्यातल आवे ॥४८१॥
 तप से मिसे रात्र धी काजा । फिरि फिरि धौगुन होठ भकाजा ॥४८२॥
 माया भसाधि साधि नहि जाई ।^७ घाडो जाम खने सो घाई ॥४८३॥
 सो ठाकर तन भए गो छोना । जलटि कान तेहि कियो मलीना ॥४८४॥^८
 पीन भद्र सो होए भुमगा । करे जोग मत्तया ने संगा ॥४८५॥
 फिरि फिरि जो इनि सकट में परई । घात्रम ग्यान होए तब तरई ॥४८६॥
 एग त्रिष्टि निनु देनु भ्रमाना । मिने प्रेम पद सतगुर ग्याना ॥४८७॥

१ (क) है = रही ।

२ (क) (ग) (घ) हरिहर = हरी ।

३ (क) मम = मह । (ग), (घ) मे ।

४ (क) बडे = पाडे ।

५ (क) निरजन = निरंज ।

६ (क) तप के लये का पल पावे । (ग) तप साध का का पल पावे । (घ) तप साध के का पल पावे ।

७ (ग) (घ) (क) क्या भनाधि साधि नहि गए ।

८ (क) (ग) (घ) कियो = की-ह ।

मन माया कर ऐसल कामा । ता मे परे लखन धीरामा ॥५२२॥
 तिगु म ताहि तीनि छै रंगा । बुधि विवेक भौ काम भनगा ॥५२३॥
 सकल्प विकल्प भाषी साषा । प्यान बिराग अन बिरला हाषा ॥५२४॥
 दागव पाखंड मेस जो कीन्हा ।^१ भासित धभन सीठा कह दीन्हा ॥५२५॥^२
 मिच्छा भोजन हम कह दीन्हा ।^३ कद मूल फल भागे कीन्हा ॥५२६॥
 पगु बाहर भौ नीवर करहीं ।^४ रेखा टारि बाहर होए बलहीं ॥५२७॥
 रावन राज सभ चाहे विषसा । भनंत रूप होए बरिसि फासा ॥५२८॥
 बाहर पाव जवे उन्हा दीन्हा । सब रावन सीठा हरि लीन्हा ॥५२९॥
 कर घए रय पर लीन्हा बड़ाई । बला सुरंत लकापुर जाई ॥५३०॥
 सीता राम राम गोहरावा । भक्त अटाई मुनि के घावा ॥५३१॥
 सोचन्ह मारि उन्हा कीन्हा सड़ाई । अगिनि वान से पर जरि जाई ॥५३२॥
 लकापति संका के गएऊ ।^५ पसटि राम ग्रिह सोजत भणऊ ॥५३३॥
 पत्रकुटी देखा गुन बेझना । बहु भोर सोजि कल्पना हुना ॥५३४॥^६

छन्द

सोजि सोजि तन धरित मन भौ सिया सवेस न पावहीं ।
 ब्रह्म ब्रह्म सब विविधि बाके बठिन कल्पना भावहीं ॥११॥
 मोह कोह सम संसय सागर सीस भुनि पछटावहीं ।
 रैनि बीतेउ सोचत ऐसे उन्नटि वासर भावहीं ॥१२॥

सोरठा

सोजेउ वनखंड म्भरि, मिजि मिजि कर पछटावहीं ।
 हरेउ निसिन्वर नारि दसकंधर सिर काटिहों ॥१॥

घोषाई

बसे प्रात उठि दोनों भाई । सोजत वनखंड जह तह जाई ॥१३॥
 सुधिव देखा बुझ तन भावे । बालि के दूठ धीरि कोइ जावे ॥१४॥^७

१ (क) काम = काम ।

२ (क) भासित = भासिय । सीठा = सीमा ।

३ (क) कद = के ।

४ (क), (ग) (क) भौ = फिर ।

५ (क) के = के ।

६ (क) (ग) (क) बहु भोर सिद्धि सोजि कल्पना हुना ।

७ (क) दूठ = दूत ।

दोहा

मारा खर दूखन बहूँ, महा-महा मट वीर ।
 नो संमर भूमि भीतिहै, राम सखन रनधीर ॥३८॥

चौपाइ

फिरि धाए जहूँ भवन निवासा । राम सखन सिया घठे पासा ॥५०६॥^१
 तब बहु ऐसन कीन्ह उपाई । मरिचै मिरिगा रूप बनाई ॥५०७॥
 र्वचस अपस रहे नाहि चीग । फूलवारी में चहुँ दिस फीरा ॥५०८॥
 बनक रूप यह कठिन कठोरा ।^२ दक्षा राम जो धनुष टकोरा ॥५०९॥^३
 फिरि फिरि रहा असोप सुकाई ।^४ फिरि फिरि परगट रूप देखाई ॥५१०॥^५
 रामचंद्र भसि गए निराटा । कोह काफ जहां बन के ठाटा ॥५११॥
 सिया के मन में संसय होई । प्रति चरित्र लखि सके न कोई ॥५१२॥
 यह माया सम प्रभुता करई । भर्म भीति बहूँ कैसे टर्ई ॥५१३॥
 सिया विखाए कपि बहुत उदासा । सखन जाहु राम के पासा ॥५१४॥
 मिरिगा मारि न फिरे भुझारा । कोह काफ है घिटप विकारा ॥५१५॥
 बहूँ सखन मोहि संसय भारी । हमके छोडि गए रनवारी ॥५१६॥
 इहां रहौ सिया दुख माना । सोचहि बुधि विचारहि ग्याना ॥५१७॥
 सत की रेखा धंधु बनाई । सिया के सौपि चले सिर नाई ॥५१८॥
 सत की रेखा बठि विचारी । बाहर पाव तनिक नाहि डारी ॥५१९॥
 सखुमन रामचन्द्र के पासा । निसिचर छन बस कीन्ह तमासा ॥५२०॥^६

दोहा

राज काज मद रावना, भनि मठि गई भुलाइ ।
 सीता सती समुद्र सम, परा सहरि मंह भाइ ॥३९॥*

चौपाई

तीनि लोक महिर्मबन माया । सिया सकल गुन प्रगट देखाया ॥५२१॥^६

१ (क) (ग), (घ) राम सखन बैठ सिया पासा ।

२ (ल) (घ) (घ) यह = है ।

३ (ल) जो = तब ।

४ (क) (ग), (घ) रदा = रहत ।

५ (घ) (ग) (घ) रूप = देत ।

६ (ग) यहाँ निरचर छन बस कीन्ह तमासा । (घ) यहाँ निरचर छन कीन्ह तमाना ।

७ (ल) (घ), (घ) यह = मैं ।

८ (ल), (घ) गुन = जग ।

मन माया कर ऐसन कामा । ता मे परे सखत धीरामा ॥५२२॥
 त्रिगुन ताहि तीनि है रंगा । बुधि विवेक प्री काम प्रनगा ॥५२३॥
 संकल्प विकल्प भावी साषा । प्यान धिराग जन विरसा हाषा ॥५२४॥
 दानव पासंड भेल जो कीन्हा ।^१ भासित बचन सीता कह दीन्हा ॥५२५॥
 मिच्छा भोजन हम कह बीसै ।^२ कंद मूस फल भागे कीसै ॥५२६॥
 पगु बाहर प्री भीतर कछीं ।^३ रक्षा टारि बाहर होए बनहीं ॥५२७॥
 रावन राज सभ चाहे विधसा । प्रनत रूप होए बरिसि फासा ॥५२८॥
 बाहर पाव जब उन्हि दीन्हा । तब रावन सीता हरि सीन्हा ॥५२९॥
 कर घए रम पर लीन्ह बडाई । सता तुरंत मन्थपुर जाई ॥५३०॥
 सीता राम राम गोहरावा । भरु जटाई सुनि के घावा ॥५३१॥
 सोचन्हि नारि उन्हि कीन्ह सबाई । अगिनि वान से पर जरि जाई ॥५३२॥
 लंकापति लंका के गएऊ ।^४ पसटि राम ग्रिह सोनत मएऊ ॥५३३॥
 पत्रकुटी देसा गून देसुना । बहूँ घोर सोजि कल्पना हुना ॥५३४॥^५

धनु

सोजि सोजि तन बन्धित मन भौ सिया संदेस न पावहीं ।
 ब्रह्म बल्ल सभ बिबिधि बनि कठिन कल्पना भावहीं ॥११॥
 मोह मोह सभ संसय धागर सीस भुनि पछतावहीं ।
 रैन बीतेउ सोचत ऐसे समटि वासर भावहीं ॥१२॥

घोरठा

सोभेउ वनखंड नारि, मिजि मिजि कर पछतावहीं ।
 हरेउ निशिचर नारि दसबंधर सिर काटिहों ॥६॥

श्रीपाई

बजे प्रात उठि धीनों नारि । सोचत वनखंड जहूँ तहूँ जाई ॥५३५॥
 सुप्रिय देसा पुइ तन भावे । यासि के वूठ घोरि कोइ भावे ॥५३६॥^६

१ (क) दानव = दानो ।

२ (क) भासित = बासित । सीता = सीमा ।

३ (क) कंद = छे ।

४ (क), (ग) (ब) घौ = घिरि ।

५ (क) के = कह ।

६ (क) (ग) (घ) बहूँ निमि सोजि कल्पना कृत ।

७ (क) कृत = कृत ।

जाहु पवनसुत कछु विचारा । निरखि नोक होए कछु सुधारा ॥५३७॥^१
विप्र रूप मिसे हनुमाना । बर ओरि बचन पूछ्यहि परधाना ॥५३८॥

हनुमान बचन

की तुम देव देवन्हि महं वीर । प्रति कोमल पद सु दर सरीरा ॥५३९॥
कह्यो विरलतु सम कया सुनाई । वनसङ्घ फिरहु कौनि प्रमुताई ॥५४०॥
महा विष्ट मन किमि बर रह्यहु । कहु न सत्त बचन अनि गोवहु ॥५४१॥
मैं भधीन हूँ तुम गुन सापक । ओ कछु पूछ्यो कह्यो सम सापक ॥५४२॥

राम बचन

नप्र मनोष्या दसरथ राई । ठाकर सुत हम दोनों भाई ॥५४३॥
पिता हनुम हम वन सप कीन्हा । सुनो विप्र मह बचन प्रमीना ॥५४४॥
हरेठ निसिचर मम प्रिय नारी ।^२ सो हम वन वन खोजत मारी ॥५४५॥

हनुमान बचन

महा मोह मद सदा भग्याना । अब निश्चय प्रमु पद पहचना ॥५४६॥
रहेत भनाम मोहि कियो सनाया ।^३ धन धन दसन तुम रुपनाया ॥५४७॥^४
क्रिपा सेंधु हो मैं बपिराई । चरनकवल पद पंजज पाई ॥५४८॥
अमिय प्रेम मुक्त सागर मएऊ । प्रबल पाप दुर्मति दुरि गएऊ ॥५४९॥^५
मैं तुम दास पास निज राठा । सितल सुगन्ध सरीर सुधाता ॥५५०॥^६
अई सुधिव निज दास तोहाय ।^७ ताके बटक मर्कट अधिकाय ॥५५१॥
सीता खोज बह तुरंत बगई । जंह तह मर्कट बेगि पठाई ॥५५२॥
धसे तुरंत लिम्हु पंथ बढाई । जंह गिर बंदर रहे छदाई ॥५५३॥
बहा समोधि सुधिव से जाई । घर बठे तुम दरसन पाई ॥५५४॥
दशरथ तनय राम रुपुराई । जाके वेद सोक सम गाई ॥५५५॥
फिरि फिरि धरण बंयन पर सोटा । वाकि प्रीति मन भए गौ छोटा ॥५५६॥

१ (ख) सुधारा = विचारा ।

२ (ख) (ग) (घ) हरेठ निसिचर मम प्रिय नारी ।

३ (ख) कियो = किएऊ ।

४ (ख) तुम = तुम ।

५ (ख) प्रबल पाप दुर्मति दुरि बहेऊ । (घ) प्रबल पाप दुर्मति दुरि बहेऊ । (ग) प्रबल पाप दुर्मति दुरि बहेऊ ।

६ (ख) सितल सरीर सुगन्ध सुधाता ।

७ (ख) तोहाय = तुम्हाय ।

मन के संसम हूरि सम गण्ड । राम दरस पद पकज पएक ॥३५७॥^१

दोहा

पानि ओरि कै वितती, महा दरसन फल पाए ।^२
अधर्मजन अधमोभन, सो प्रभु भए सहाए ॥४०॥^३

बोपाई

बानि वंधु है निपट नकारा । हरे मम त्रिवा क्यट सो वारा ॥५२८॥
कीन्हो समर सन सम साबा । बाकी मित्तु है त्रिभुवन हावा ॥५२९॥
यह निजु कर धाजु औ पापो । कोटि कटक तुम संग भसायो ॥५३०॥
गिरि बंदर से बाहर भएक । सुनत खवन कोपि कर घएक ॥५३१॥
वीर भूमि पर टरत न टारी ।^४ एक से एक बोधा बल भारी ॥५३२॥^५
फिरि बहु मिय जुवा भए ठाढ़ा । कठिन कर बर्ग वान सर काढ़ा ॥५३३॥
माय राम भान उर लागे । मूरख गिरा बहुरि फिरि जागे ॥५३४॥
धर्म रूप निगम कहे क से । भायेहु माहि ब्याधा घर जसे ॥५३५॥

बासि बचन

मैं बरी सुप्रिय हितकारी । कारन कौन मोहि तुम मारी ॥५३६॥

राम बचन

कन्या भारि प्रगट अग कहई । सान वेद प्यान मठ कहई ॥५३७॥
इन्ह से कुमयि करे नर कोई ।^६ ठाहि हते कखु पाप न होई ॥५३८॥
इतना सुनि तन त्यागि सो माना । सुप्रिय राम भरन सपटाना ॥५३९॥

दोहा

घटेउ धरल पद पंकज मिटेउ सखल तन पीर ।^७
हम आए सन बटोरज, कामन्ह टिकु रघुवीर ॥४१॥

१ (क) दरस = भरल ।

२ (क) (ग) (घ) है = करि । (क), (घ) दरसन = दरस ।

३ (घ) (ग) (क) अध = अधर्म ।

४ (क), (ग) (घ) वीर = गीरि ।

५ (क) एक एक बोधा बल बभारी । (घ) एक एक बोधा है बल भारी ।

६ (घ) (घ), (क) है = संम । (क) नर = न ।

७ (क), (ग), (घ) मिटेउ = मैसा ।

छन्द

धरखा त्रिविधि प्रकाश पवन प्रति गर्जि गर्जि यहरावहीं ।
मोर सोर प्रति म्निगुर म्लकठ गिरि चङ्गि गिरा सुनावहीं ॥१३॥
विकट बन तर्ह विकट मालु कपि त्रिरह धनत तन सावहीं ।
यहि भाति बीसेठ जानकी विनु नैन नींद न भावहीं ॥१४॥

सोरठा

भरष के बड़ी तन पीर, विपति वियोग बिकार प्रति ।
हुत दास्त रघुवीर, त्रिग जीवन संसार मंह ॥७॥^१

चौपाई

धके सो नीर धीर सम मएऊ । सुमन सुग्य छोडि घर गएऊ ॥१७०॥^१
बसे पधिका सरद दिन मएऊ । राम सखन गिरि पर चङ्गि गएऊ ॥१७१॥
सुप्रिय पथ निहारहि नीका ।^२ सुनि पवन सुत भागे टीका ॥१७२॥
बसे तुरंत सब दोनों भाई । जंह सुप्रिय कर नग्र सोहाई ॥१७३॥
सुप्रिय देखा भाए रघुनाथा । कर जोरि निकट नाए निजु माया ॥१७४॥
भाए पवनसुत पावन परई ।^४ देखा राम मोद मन भरई ॥१७५॥
सकल बटक मिलि कीन्ह प्रनामा । धन धन दर्सन तब श्रीरामा ॥१७६॥^५
मंजी मत्र कीन्ह प्रस भाऊ । सुनो समन्हि मिलि बचन प्रभाऊ ॥१७७॥
बसी सुरत सम सागर तीरा । सैन समाश्र सभै बन धीरा ॥१७८॥
राम सप्रन सुप्रिय कपिराई । महावीर भट बटक देखाई ॥१७९॥
मत्री कीह जामवत से जाई । सो मुनि अर्थ सभै टहूराई ॥१८०॥^६
सकातुर जाहू बीर हनुमता ।^७ सिया संदिश से घाउ तुरंता ॥१८१॥
लेहू पान तुम कज्जु पवाना । दसकंधर के मंहू माना ॥१८२॥
अग्या कज्जु सुफन सम काजू । राम परण सिर ऊपर छाजू ॥१८३॥

१ (क) (ग) (ब) मंह = मति ।

२ (घ) (व) सुमन सुग्य छोडि कर गएऊ ।

३ (घ) निहारहि = निहार ।

४ (घ) परई = परत ।

५ (क) तब = तुम ।

६ (क) (ग) (व) मुनि = मित्र ।

७ (क) हनुमता = हनिमता । (ग), (व) हनुमता = हनिमता ।

महा पोख्य बस तुम कहे होई । दातव भीति सकी नाहि कोई ॥५८४॥
सिया संदेश सै भावहु नीका । सकल कटक मंह बंस के टीका ॥५८५॥

दोहा

राम भरन पव पंकज, गहि नीन्हो सिर नाह ।
बले प्रगट भति कोपि करि, महाबीर बन पाह ॥५८६॥

श्रीपार्श्व

भति प्रचंड होए कोपेठ वीरा । कूदि परे सम सागर तीरा ॥५८६॥^१
रहे निशिचर मगु रखवारी । हुना तेहि एक कोस पछारी ॥५८७॥
कसि पृथ्वी सम भी बिकाराय । रुधिर बने जैसे नीर के भारा ॥५८८॥^२
कूदि परा पुनि लका मझार । जंह दसकंधर के रखवार ॥५८९॥
भाग्ये ग्रिह विभीषन बेला । राम नाम सुनि स्वप्न निसेला ॥५९०॥
मिले विभीषन मगु में भाई । हृदय हसि महाफल पाई ॥५९१॥^३

विभीषन वचन

संत बरस हरि क्रिया समेठा । बडा भाग मुस मंगल हेठा ॥५९२॥
सुनो पवनसुत वचन हमार । सगरो लका वैठ पसार ॥५९३॥
ता विष संत रहनि किर्म रहई ।^४ राम नाम निजु निज दिन सहई ॥५९४॥
कहे विभीषन तुगु हनुमंठा ।^५ निजु निजु अर्थ कहे बिर्यंठा ॥५९५॥
राम मलम यह सागर तीरा ।^६ महा कटक संग बड-बड वीरा ॥५९६॥^७
राम संदेश सिया पंह भाई ।^८ सिया संदेश तुरंत ले जाई ॥५९७॥^९
प्रसोक त्रिष तद सीता सहई । कष्ट कसपना बड दुख सहई ॥५९८॥
बहुं भोग श्रीको वैठ ओ गाढ़े । सुनि पवनसुत रोस भति भाढ़े ॥५९९॥
कूदि बड़ा पुर्म ऊपर कैसे । मानो पंथी बसेरा जैसे ॥६००॥
बहुत कष्ट तन देला भारी । तुरंतहि नीन्हो मंगूठी डारी ॥६०१॥

१ (क), (घ), (च) तीरा = नीरा ।

२ (क) रुधिर बसा जैसे नीरवार ।

३ (क) हसि = हसि ।

४ (क) राम नाम निजु निज दिन सहई, ता विष संत रहनि इति रह ।

५ (क), (ग), (घ) विभीषन = विभीषन ।

६ (क) (ग) (घ) सागर = सागर ।

७ (क) महा कटक संग बड-बड वीरा ।

८ (क) (घ) पंह सार्थ = पंह सार्थ ।

९ (घ) (ग) (घ) सिया संदेश ले तुरंतहि अर्थ ।

सीता कर गहि सीन्ह उठाई ।^१ प्रथिक कष्ट तन ध्यापेठ भाई ॥६०२॥
 तुरंतहि उतरि निष्ट जति भएऊ । करि प्रनाम जमि माया नएऊ ॥६०^३॥
 मुनु माया मै राम कर वीरा । सिया सुखद भइ सबल सरीरा ॥६०४॥
 राम लखन तन विच्छ द्वियोगा । तब संदेस मिटिहैं तन सोगा ॥६०५॥
 उतरिहैं कटक समै परबारी । मकेत्वार के सीस उतारी ॥६०६॥
 भगि-भरि दैत समै सिर टुटिहैं ।^२ मुग नर बंदी तुरंत छुटिहैं ॥६०७॥

टोहा

तुहू मत्ता बह धीरजा, होए पुमल एक साथ ।
 करिहैं विषस ग्धुबसमनि, जीति बनहि रघुनाथ ॥४३॥

श्रीपाई

पाप फल तब भागे दीन्हा । बहुत प्रीति करि बालन सीन्हा ॥६०८॥
 कपि के फल मानो भस्मित रहेऊ । रोम रोम सीतल तन भएऊ ॥६०९॥
 बोसे कपि तब बचन विषारी । केहि दिस बाग लार फल भायी ॥६१०॥

सीता बचन

बहुं धीर दैत रहे रखबारा । जमि करि तुम करिहैं पैसारा ॥६११॥^३
 हनुमान बचन

तुम प्रताप समै बन सहिहों ।^४ दैतन्हि मारि समै फल लैहों ॥६१२॥
 दैतन्हि भरि-भरि समै पछारी ।^५ ब्रिद्ध उपारि सेंधु मंह डारी ॥६१३॥
 सुखक सुखक लैहों भरि पेठा । फिरि बरिछा मै तुमसे भेटा ॥६१४॥
 उठा गजि प्रबल प्रति भारी । सिय देखा जनु सब उजारी ॥६१५॥
 पैठा जाइ झपटि बयवाना । चुनि चुनि फल खाइति मनमाना ॥६१६॥^६
 किछु ब्रिद्ध ठोरि ठारि जमि पारी ।^७ किछु उपारि सेंधु मंह डारी ॥६१७॥
 घाए दैत रहे रखबारा । माइ माइ के सीन्ह पुकारा ॥६१८॥
 भरि अपेटन्हि माइ पछारी । बसे पराए टांग धरि फारी ॥६१९॥
 करिहैं सोए जंहू रावन बैठा । मरुट एक बाही मंह पैठा ॥६२०॥

१ (क), (घ), (ग) सीता = सीते ।

२ (क) टुटि है = बरि है ।

३ (क), (घ), (ग) करहि = करण्डु ।

४ (क) सहिहों = लरहों ।

५ (घ), (ग) दैतन्हि बरि बरि समै पछारी, दैतन्हि मारि कबे फल लैहों ।

६ (घ) (ग) चुनि-चुनि फल खाइति मनमाना—स्वीकृत फल ।

७ (क), (घ) किछु = कछु, कौछु = बट ।

तोरि तोरि फल माए सम भरी । त्रिछ उपारि सेंधु मंह बाटी ॥६२१॥
 कहे रावन किमो प्रभूता । जियतहि पकरि से भावहु पूता ॥६२२॥

दोहा

देखत समु बंजन बड़ा, पीरुल क्हा न बाए ।
 जो जो परे सपेट में, पटके टांग पुमाए ॥४४॥

बीपार्ई

हमसे वीर कौन बड़ भई । जो प्रभूता बल हमसे क्ही ॥६२३॥
 मुनतहि कोप सरीरहि आगा ।^१ तोरें ताग अनु बिसम न सागा ॥६२४॥
 यहा फांस तब सम मिलि जोरा । बेगि पकरि के साबहु घोरा ॥६२५॥
 छोटा करहि तब बड़ा होए जाई ।^२ बड़ा करहि तब निकसि पराई ॥६२६॥
 बहु परिपन्न फंद जब जोरी ।^३ कर गहि बेचि तुरंतहि तोरी ॥६२७॥
 राम की जिया करहु तुम घोरा । मारब तोहि नाहि कीन्ह निहोरा ॥६२८॥
 बाभे फांस दास अनु छोटा । घरि-घरि मारहि है बड़ मोटा ॥६२९॥
 पकरि से भाए रावन भागे ।^४ दसि देखि सरिका सम भागे ॥६३०॥
 फल साएहु कौन बस भारी ।^५ किमि करि त्रिछ तुम कीन्ह उंजारी ॥६३१॥
 सांभ क्ही ना तो जीव नहि बचिहों ।^६ प्रिय कर द्वारे पर भर नचिहों ॥६३२॥
 महा प्रबस है प्राप्त मारी । तोरि तोरि फल साएउ भरी ॥६३३॥
 साएउ फल सागा बड़ मीठा । तोरि तोरि सीन्ह नैनन भरि दीठा ॥६३४॥
 माय ठेका सेहि सीन्ह उपारी ।^७ इमि करि सेइ सेंधु मंह बाटी ॥६३५॥
 दानब वीरि कीन्ह बड़ रारी । तब में उमटि अचेटहु मारी ॥६३६॥
 कहे रावन बंजन है योग ।^८ बोलत बन नाहि डर तोरा ॥६३७॥

१ (क), (घ) बसे = बलहि ।

२ (क) (ग), (घ) किमो = किमिनि ।

३ (क) (ग) (घ) दुगता कोप सरीरे जाग ।

४ (क) क्यपहुं = क्यापहुं (ग) से भावहुं ।

५ (ग) (घ), (घ) करहि = करे ।

६ (क) जोरी = जोरा ।

७ (क) से भाए = क्याए ।

८ (क), (घ) (घ) डार = डारें ।

९ (क) (ग) ठेका = ठेके ।

सीता कर गहि लीन्ह उठाई ।^१ अधिक बस्त तन व्यापेत आई ॥६०२॥
 तुरंतहि उतरि निकट बसि आएऊ । करि प्रनाम त्रिमि माया नएऊ ॥६०३॥
 सुनु माता मैं राम कर वीरा । सिया सुन्दर भइ सकल सरीरा ॥६०४॥
 राम सखन तन विरह बियोगा । तव सदेस मिटिहैं तन सोगा ॥६०५॥
 उतरिहैं कटक समै परषारी । संकेस्वर के सोस उतारी ॥६०६॥
 भगि-भरि दैत समै सिर टुटिहैं ।^२ सुर नर बंदी तुरत छुटिहैं ॥६०७॥
 दोहा

तुह माता कर धीरजा, होए जुगल एक साथ ।
 करिहैं बिषस रघुवंसमनि, नीति चर्चाहि रघुनाथ ॥४३॥

शौपाइ

पाँच फन तब भागे दीन्हा । बहुत प्रीति करि जाखन लीन्हा ॥६०८॥
 कपि के फन मानो भ्रजित रहेऊ । रोम रोम सीतल तन भएऊ ॥६०९॥
 बोले कपि तब बचन विचारि । केहि दिस वाग जाउ फन भायि ॥६१०॥

सीता बचन

बहु मोर दैत रहे रखवाय । किमि करि तुम करिहैं पैसारा ॥६११॥^३
 हनुमान बचन

तुम प्रताप समै बन सहिहा ।^४ दैतहि मारि समै फन लीहो ॥६१२॥
 दैतन्हि धरि-भरि समै पछारी ।^५ ब्रिछ उपारि सेंधु मंहं डारी ॥६१३॥
 सुखक सुखक लीहो नरि पटा । फिरि करिहो मैं सुमसे भेटा ॥६१४॥
 उठा गबि प्रबल धति भारी । सिय देखा ननु सब उतारी ॥६१५॥
 पैठा जाइ भ्रष्टि बगवाना । बुनि बुनि फन लाइसि मनमाना ॥६१६॥^६
 किन्हु ब्रिछ तोरि ठारि त्रिमि पारी ।^७ किन्हु उपारि सेंधु महं डारी ॥६१७॥
 घाए दैत रहे रखवाय । मारु मारु के लीन्ह पुकारा ॥६१८॥
 परि शपेटन्हि मारु पछारी । बसे पराए टांग धरि फारी ॥६१९॥
 करिहैं सोर जंहं रावन बैठा । मकट एक बाढ़ी मंहं पैठा ॥६२०॥

१ (ब), (ग), (घ) लीता = लीते ।

२ (ब) डूनि है = बसि है ।

३ (ब) (ग), (घ) करहिं = करबहु ।

४ (ब) लीहो = लीहो ।

५ (ब), (ग) दैतन्हि धरि धरि समै पछारी दैतन्हि मारि समै फन लीहो ।

६ (ब), (ग) (घ) बुनि-बुनि फल लाइसि मनमाना—स्वीकृत पाठ ।

७ (घ), (ग) किन्हु = कहु, कीच = बट ।

दरिया-मग्नाबली

सुनहुं माता तजहुं तन सोचा ।^१ राम भरन भय पातक मोचा ॥६४१॥
 हुकुम ना मोहि कीन्ह ख्युलाई ।^२ तुम कहं लेहि तुरतहि आई ॥६४०॥
 रावन गब गर्द में बितिहैं ।^३ संभर करि सुर खेत जीतिहैं ॥६४२॥
 सुर नर बंद समै मुकुतइहैं ।^४ तुम कहूं लेइ भवघपुर जइहैं ॥६४२॥
 राजा राम रानी होए सीता ।^५ कपि के बचन करहुं परतीता ॥६४३॥
 राम भरन छुइ बिनती मोरी ।^६ साक्य तनिक नन की कोरी ॥६४४॥
 में तिरिया तन बुधि की पोरी ।^७ क्रिपा संपु से मिनती मोरी ॥६४५॥

सीता बचन

में दासी तुम त्रिभुवन स्वामी ।^८ सबव्यापिक भंतर्जामी ॥६४६॥
 मखन से कहव प्राप्तीस हमारी ।^९ बोसत वन नैन नीर ठारी ॥६४७॥
 तजहुं विश्वास कल्पना दूरी ।^{१०} रावन गब मितिहि सम पूरी ॥६४८॥
 हम कहं माता देहु प्राप्तीसा ।^{११} राम भरन जाए नावहुं सीसा ॥६४९॥
 करि प्रनाम तब धने तुरंठा ।^{१२} बूदि पटे सम सगर भंठा ॥६५०॥
 देखि कटक सम कोई ठाढ़ा ।^{१३} हूखि पवनसुत महिमा बाढ़ा ॥६५१॥

दोहा

कटक समै हूखित भयो, धीर महा पद पाए ।^{१४}
 राम भरन सपटाए के, रखा मन मुसनाम ॥४६॥

चौपाई

राम कहा सुनो कपिराई ।^{१५} सिया संदेस निमु कया सुनाई ॥६५२॥
 चरण छुइ राम पद लागी ।^{१६} बिरह विराग सदा अनुरागी ॥६५३॥
 त्रिभुवन ठाकुर राम गोसाई ।^{१७} मोहि दासी पर होहि सहाई ॥६५४॥

१ (क) (ग) (घ) सुनहुं = सुन ।
 २ (क) (घ) (ग) पातक = पातक ।
 ३ (क) (ग), (घ) हुकुम ना मोहि ख्युलाई ।
 ४ (क) (ग) (घ) में = मझ ।
 ५ (क) मने = मन ।
 ६ (ग) कतिरिण पाठ—कहै सिया तुम सम तुम क्यक, जाए तुरंत क्यो सम सयक ।
 ७ (क) स्वामी = स्वामी ।
 ८ (क) (घ), (ग) कहं = के ।
 ९ (घ), (ग) (क) देखि = देखत ।
 १० (क) कटक समै हूखित भयो महाधीर बल पाए । (ग), (घ) महाधीर बर पाए ।
 ११ (क) (ग) सुनो = सुनहुं ।

दोहा

धोर सोई चारी कर, हरे भोगि के वाम ।^१
त्रिया धोर पापी बहा, राम विमुन छिग काम ॥४५॥

चौपाइ

कड़े रावन बेषठू धरि कोरे । मारुहू अकरा अस बन जोरे ॥६२८॥
पवन तनष तन रोमा न दूटे ।^२ खसि खसि दैन घापन मुह दूटे ॥६२९॥
हारि मारि बठे सब जोबा । तन से निकलि गया सन कोषा ॥६३०॥
एक त्रिसु है निश्ट हमारी । संगुर सपटहु रूपका फारी ॥६३१॥
तन लगाए सपेटहु साता । सत्र तन के होइहैं उतपाता ॥६३२॥^३
अधिक संगुर बकाया मारी ।^४ नर के पाग राठ की सारी ॥६३३॥
भागि लगाए दीन्हू हुहूकारी । सरकि सरकि उन्हि लका जारी ॥६३४॥
सगरो सका सागी घोषा । एक विभीषन के प्रिहू बोषा ॥६३५॥
विभीषन भवन बाधि क भाई । तवहुं न अष के मन पतिपाई ॥६३६॥
अननमुता देखि हिरद हकी । मानो प्रेम सुधा सम बर्यो ॥६३७॥

द्वंद

वीर धीर अति कोपि गर्जे सकपुर धरि जारहा ।^१
साए सपेटि संगुर केरुहू दैत निश्ट न भावही ॥११॥^२
दैत दलि मसि भूत भाजे बिहुंकि चिकार मगावही ।
कठिन मकंठ निश्ट ठाड़े धीर जोर न पावही ॥१६॥

भारठा

अरठ सो मद्र अनाय राम दोहू रावन कियो ।
सिया से मिसु रघुनाथ, सरन तिय ना मारही ॥८॥^३

चौपाइ

रूति पर सम सागर मांही ।^४ संगुर बुनाए सिया पहु जाही ॥६४८॥

- १ (क) (घ) (च) इर धीरि की बल ।
- २ (घ), (च) रोमा = रोषा ।
- ३ (घ) होषई = होषई । (च) उतपाता = उरपाता ।
- ४ (क) बकाया = बकासि । (घ) बकायेचो ।
- ५ (घ) (च) (च) गर्जे = गरजि ।
- ६ (क), (घ) (घ) लार = लार ।
- ७ (घ), (घ), (क) का = कादि ।
- ८ (क) (घ) पर = परा ।

श्रीपाई

कच तिरिया बुधि बोलाहि बिकारी ।^१ मारो कटक सैन सम मारी ॥६८१॥
 इन्ह से मुक्त मैं किमि कर मोरिहो ।^२ मारि कटक सब सम मरिहो ॥६८२॥
 ये दोए तपी अलप अहारी ।^३ वान कोष के वेतं जमि जारी ॥६८३॥
 नेजा मभु वीर नका जारी । किमि नहि मारेउ दैत सम हारी ॥६८४॥
 यह मारे का का गुन नीका ।^४ नट के संग यह ग्रिह ग्रिह बीका ॥६८५॥
 मगु में मगन नाथे यह भांठी । अंधन भोर अतुर है जाती ॥६८६॥

दोहा

कहे रावन सुनु प्रिया तैं, डर मति मानसि संक ।

सिख सदा धर दिन्हेऊ, राज करो गढ़ संक ॥४८॥

छंद

सिया बुधि सुसि के भली कहा है हरि सीन्ही अपने बल ते ।
 सागर बाधि कटक सभ निरुट विरुट भयान्न सभ अलते ॥१७॥
 लंका मिमि धुनि पंकज करिहै तोहि मरिहै अपने कर ते ।
 दरिया को कहे तिरिया सिखवे तेजु बाध नहीं परलीधर ते ॥१८॥

दोहा

सुर सभ बाधि किमो वसि अपने सिख को वर कैसे हरिहै ।
 उन्ही कटक बनी मकट की सनमुख हमसो को मरिहै ॥४९॥^१
 यह दोए तपसी तम-मन ब्याकुल हमसे संबर को करिहै ।
 दरिया को कहे प्रियहीं बपटे कर जग लोन्ही समही करिहै ॥५०॥^२

सोरठा

बोसा गजि कर कोपि, प्रिया तव दूरि गई ।

दिया तेज से तोपि, मुर सभ डर अंपित भए ॥५॥

सिख बचन

कहे सिख सुनु बचन भवानी । रावन धर्म गकर भिमिानी ॥६८७॥

- १ (क), (ग) (घ) बोलाहि = बोलाई ।
- २ (ख) (ग) (घ) मोरिहो = चेरीहो ।
- ३ (क), (ख) (घ) मरुं मारि पंख सब मरिहो ।
- ४ (क) तपी = तपसी ।
- ५ (ख) वर = बोदि । (ग), (घ) बोदि ।
- ६ (ख) (घ), (ग) हमसे समुग को मरिहै ।
- ७ (ख) (ग), (घ) किमो = किं ।

लखन भागीस कहव बहु भांती । बोलत नैन सोर चहुं पाती ॥६६१॥^१
 बिक्रि बिक्रि सभ कथा सुनाई ।^२ बिरिजा घरहु मिलिहैं रघुगई ॥६६६॥
 रावन गर्व गद होए जाई । सिया से बनिहैं त्रिभुवन राई ॥६६७॥
 तजहु बिखाव घरहु मन धीरा ।^३ चरन कंबल सुमिरो रघुवीरा ॥६६८॥
 राजा राम सीता तुह रानी । कपि के बचन भ्रिया जनि जाती ॥६६९॥
 मुनेठ राम सीतल तन भएऊ ।^४ सुनेउ कंबल संमर रस पएऊ ॥६७०॥^५
 राम लखन सभ संत समेता । सभ मिलि मत्र कीह निजु हेता ॥६७१॥
 बाघेठ सागर बहु बिभि भांती । पाहन काटि ढोउ दिन राती ॥६७२॥
 नल नीस वीर सभ म्झरी । पाहन देहि कटक सभ डारी ॥६७३॥
 सछुमन लिखा सत्त की रेखा । अल मंह उपला सभे कोह देखा ॥६७४॥^६
 सत्तपुस के जानहि मर्मा । लखन प्रेम प्रीति निभु धर्मा ॥६७५॥
 यहां सेतु बांधा सभ जोए । रावन गर्व माति मद साए ॥६७६॥
 बड़े मदोन्नी सुनु पिपा स्वामी ।^७ का तुम भूसे गर्व प्रतिगामी ॥६७७॥^८
 मिनहुं सीता से सागर तीरा ।^९ कोटि गुनाह बकसे रघुवीरा ॥६७८॥
 इन्ह से संमर जीते नाहि कोऊ ।^{१०} नर नारायण है यह दोऊ ॥६७९॥^{११}
 ग्रिह में साण्ड सच्चि सख्या । राम नष्ट होए तोहरो भूपा ॥६८०॥^{१२}

दोहा

सुनहुं प्रिया पति मोर तुह, सदा कहा हितकारि ।^{१३}

सिया सुरत से मिलिए क्रोध मोह सभ डारि ॥४७॥

- १ (ब) चहुं पाती = चहुं राती ।
- २ (घ), (प) बिक्रि बिक्रि सभ कथा सुनाई । (ग) बिक्रि बिक्रि निजु कथा सुनाई ।
- ३ (ख) (प) (ब) तजहु कउपना पद मन धीरा ।
- ४ (ब) (ग) (घ) मुनेठ = मुनिठ ।
- ५ (ब), (प) (घ) सुनेउ = सुनिगौ ।
- ६ (ब), (प) कोह = बेहु ।
- ७ (ब), (प) स्वामी = समी ।
- ८ (ख) भूसे = मूख ।
- ९ (ब) (प), (ब) सीता = सीधा । सापर = सपर ।
- १० (ब) इन्ह से = उगह से ।
- ११ (ख), (ग), (ब) यह = तुम ।
- १२ (ब) (ग) (ब) राम नष्ट होइहि तोर भूपा ।
- १३ (ग), (प) (घ) सुनहु पति विद्या मोर तुह ।

तुम त्रिया तन बुधि की बोटी । कबे बचन नाहि मानहुं मोरी ॥७०६॥^१
 जब रावन सीता हरि मएऊ ।^२ तब संसय बड़ तुम कह मएऊ ॥७०७॥
 संसय सागर भगम गमीरा । बूझत मौ जब पाठ ना तीरा ॥७०८॥
 सिया रूप तुम सुदति सबाटी ।^३ बोले राम कहा दण्डकुमारी ॥७०९॥
 कौन्ह प्रनाम बोनी कर बोटी । सिव कह छोटि कहा तुम दौरी ॥७१०॥
 तब तुम साब न बदन छुमाई ।^४ बसी सुरत हमरे पंह भाई ॥७११॥
 सुनो सिव कहे भावि भवानी ।^५ तुम्हरे बर हम सदा डेरानी ॥७१२॥^६
 जब पूछहुं ती सत कस कहेऊ ।^७ नाहि तब गोप गुप्त होए रहेऊ ॥७१३॥^८
 हुंठिके सिव बोले बड़ प्रीती । जाके गुर गमि सो जब प्रीती ॥७१४॥
 सोइहुं सकोध सपत सुनु मोरी ।^९ सत बचन मंह किमि कर बोटी ॥७१५॥
 पुस एक तिरगुन ते न्याय । जाकर अलपल त्रिष्टि पसाय ॥७१६॥
 विरह विकार तन कंष भहई । सक्ति सोक दुख दाऊ बहई ॥७१७॥^{१०}
 बनकाइ जाए जोग तप कौन्हा । पिता मोह दुख दाऊन बोन्हा ॥७१८॥
 तापर नाटी निशिचर रहेऊ । भक्ति कल्पना बड़ दुख मणऊ ॥७१९॥
 तिरगुन माया ब्रह्म समता । उतपति परनी सो तन केता ॥७२०॥^{११}
 यहि तिनि सोक के ठाकुर टीका । इन्हके पारज है बति नीका ॥७२१॥
 जब हम सीता रूप धनाई । बिहिति बिहित उन्ह किया बनाई ॥७२२॥^{१२}
 सीता हंस गमन वह बसई ।^{१३} हमुके पाब जमी पर धरई ॥७२३॥^{१४}

१ (क) कबे = कहा ।

२ (क), (ग) (घ) मएऊ = बिरह ।

३ (क) सिया मरुप तुम सुदति संबाटी ।

४ (क) तब तुम साब न बदन छोडई । (ग) तब तुम साबन्दि बदन छोडई । (घ) तब तुम साबन्दि बदन छोडई ।

५ (क), (ग) (घ) सुनी सिव जब कहे भवानी ।

६ (क), (ग) हम = मैं ।

७ (क), (ग), (घ) जो पूछहुं सत कस कहेऊ ।

८ (क) (ग) (घ) तब = ती ।

९ (क) (घ), (घ) सपत = सप्त ।

१० (क) सोक = संक ।

११ (क) (घ) केता = पैदा ।

१२ (क), (घ) (घ) किया = बौद्ध ।

१३ (क), (ग) (घ) बड़ = बड़ा ।

१४ (क) (घ) (घ) जमी = सुपुत्री ।

घरि घरि ब्रह्मि खायसि भरि पेटा । सेस नाग कहि गहर सपेटा ॥६८८॥
 सहस्र फनी छित्तना पर ब्रह्मई । कोटि गहर ठेहि भीतर बहई ॥६८९॥
 यह जनि जानहुं छोट सरीरा । अनंत कला है राम रघुवीरा ॥६९०॥
 सागर भागर राम क्रियासा १ भवभर्म मंजन बुस्ट जम जासा ॥६९१॥

उमा वचन

कहे उमा मुनु त्रिभुवन स्वामी । किमि कर बर दीन्हो रजधानी ॥६९२॥
 बार बार बह सीस चढ़ायी १ तम संकापति त्रिप कहाया ॥६९३॥
 पाएसि बर भया अभिमानी । बाधेसि देव सुर सम जानी ॥६९४॥
 सीतहि हरि ने धानेउ लका । गव गामी भौ इमि करि बका ॥६९५॥
 बाकी भ्रित्तु निबट नियरानी । गद करिहि बह त्रिभुवन रानी ॥६९६॥
 एक सो अनंस सकल महिबर्ता । चर अचर पर त्रिभुवन कर्ता ॥६९७॥
 परमात्ममा है पुर्ख पुराना १ भवन भमि नहि पद पहचाना ॥६९८॥
 बस कंधर मति भम भुलाना १ भादि ब्रह्म गति भेद न जाना ॥६९९॥
 सती कह सुनो सिव म्याता १ यह ससय भम हम कह राता ॥७००॥
 भादि भनादि जाहि कह कहई । सो त्रिगुन में कैसे रहई ॥७०१॥
 दयासिधु सत कहिए बानी । क्रोध छमा करि भ्रमित सानी ॥७०२॥
 जब जब पुहुमी होखे भारा । सब-सब सीला धरे अपारा ॥७०३॥
 मुए जिए नाहि ब्रह्म सख्या १ माया त्रिगुन है भ्रमिगति रूपा ॥७०४॥
 बार बार मैं तुमहि बुझाई १ तुम कह म्यान बेतना नाहि भाई ॥७०५॥

१ (क), (ग), (घ) क्रियासा = रघुवीरा ।

२ (क) (ग) बह = उड़ि ।

३ (क) गर्भ भवा यह इमि करि बका ।

४ (क), (ग) (घ) बह = बोरा ।

५ (क) परमात्ममा = परमात् ।

६ (क) भरमि भरमि नाहि पहचाना ।

७ (घ) (ग) मति = अपमति ।

८ (क) भादि ब्रह्म नाही पहचाना ।

९ (क), (ग) सती करे रोम्मु सिव म्याता । (घ) सति करे सिव रोम्मु बह म्याता ।

१० (घ), (ग), (घ) रहई = बहई ।

११ (क), (ग) (घ) मुए ना जिए नाहि ब्रह्म सख्या ।

१२ (क) (ग) (घ) मैं = हम ।

१३ (क) (ग), (घ) बेतना = गमी ।

बोद्ध

बहे सिव सुनु वचन भवानी, गहो भयत निमु प्यात ।
 मामा बोबा बंधा जग माहि, पुर्ब पुरात प्रमान ॥५२॥
 बडी सरन अब जाएए मेढु करम को दाग ।
 ताते सेतु बंधन सिमो, सका भटकी पाग ॥५३॥

बीपाई

मानो धरती सम अस सोखा । वार पार समे मिटिगी घोखा ॥७४॥
 उवरी कटक रूही छितराई । सकट बन फल खायाहि जाई ॥७४५॥
 राम सकन गिरि पर चढ़ि वीरा । गढ़ सुमेर बहे सोतस समीरा ॥७४६॥
 प्रति सुगंध पत्त वारि बखाना । करि प्रसाद अस भयवत माना ॥७४७॥
 मंत्र मंत्री वामबंत साया ।^१ सम से वचन पूछा रघुनाया ॥७४८॥
 नल नील वीर हनुमंता ।^२ बाली सुत संग सैन समेता ॥७४९॥
 संकापुर बोट वीर बलि भाई । राम कथा रावन समुझाई ॥७५०॥
 सीतहि संग से पगु पर परई । सका राज बन्ध भरि करई ॥७५१॥
 सुर नर बंद देह सम छाड़ी । राज सकेश्वर भधिके मांडी ॥७५२॥^३
 भाइ कटक पीछे फिरि जाइहैं । रावन भागे वात जनहैं ॥७५३॥
 है कोइ वीर वीरा से भाई । बीरा से सकापुर जाई ॥७५४॥^४
 मंत्री मंत्र कहा समुझाई ।^५ प्रंगद वीरहि मानि बोलाई ॥७५५॥
 प्रंगद बीर वीर बड भारी । जर जबाब सम बात संबारी ॥७५६॥
 उत्तर के उत्तर दिहैं वहि नीका । रावन सनुमुख यह बीर टोका ॥७५७॥
 रावन बालि चिन्हारो प्रहई । बामी सुत प्रंगद वहाँ सहई ॥७५८॥
 प्रंगद बीरहि बगि बोसाई । गुप्त मंत्र सम प्रगट सुनाई ॥७५९॥
 जाहु बनक गढ़ सेहू कर बीरा । तुह सम साएक मति को घीरा ॥७६०॥
 सहस्र मुजा बल जा कहू होई ।^६ तुह पीछल बस तुमे ना कोई ॥७६१॥

१ (क) (ग) (घ) मित्र = पुत्र ।

२ (क) मंत्र मंत्री है वामबंत काया । (ग) मंत्र मंत्री वामबंत है काया ।

३ (क), (ग), (घ) हनुमंता = हनुमंता ।

४ (क) बोसी = बाली ।

५ (क) बीरा सेहू संकापुर जाई ।

६ (क), (घ) कालि = बलि ।

• (क) कह = कहा ।

हम मद मस्त पाव घरि जाती ।^१ इमि करि चाति लजा विमि भाठी ॥७२४॥
 यह भ्रिगनपनी देखत मोही । कमस नैन सीठा सति सोही ॥७२५॥
 तव उन्हि देखा ग्यान विचारी । यह सीठा नाहि सती हमारी ॥७२६॥
 कीन्ह प्रनाम दोनों कर जोरी । दध्दकुमारि विनति सुनु मोरी ॥७२७॥^२
 तुम जग जननी मातु समाना ।^३ जाहु जहां है सिव असमाना ॥७२८॥

दोहा

झई भवानी मर्म नहि, झई भर्म कर मूल ।^४
 सत पुर्ख कह समर है, प्रात पिष्ट समतूल ॥५१॥

चौपाइ

बोले सिव बचन तव नीका । भ्यान विराग नाम निजु टीका ॥७२९॥
 जोग जुक्ति भोग रस त्यागे । अनस प्रकास प्रेम रस पागे ॥७३०॥
 जहां ले गमी तहां ले घाव । सत पुर्ख का मर्म ना पाव ॥७३१॥
 बेलि बेदांत कीइ सतगुर म्पाठा । संत असंत द्विविधि मत मात्रा ॥७३२॥
 भक्तपा कप सुन भरि भ्याना । इहमंड खंड खोजि पद निर्वाणा ॥७३३॥
 निगम भिगुन कहे भविगत रूपा । अनहद भुनि सत सख्य सरूपा ॥७३४॥
 भिगुन निरास कर्म नाहि कोई ।^५ भक्ति सक्ति जग घावर होई ॥७३५॥
 भ्यान के मयु पयु धरे न कोई ।^६ धार क्रिपान निछल सति होई ॥७३६॥
 भगम भयाह याह किमि पाये । इमि करि राम भरत पद गाये ॥७३७॥
 सुनु उमा यह सगुल सरूपा । राम नाम पद विमन भनूपा ॥७३८॥
 जोगी जती जग भेल भलेखा । भक्ति भाव राम पद देखा ॥७३९॥
 महा महा भुनि पंडित म्पाठा । मोह भर्म भो सब कहू राजा ॥७४०॥
 एक पुन सत सम थे भीना । भ्यान प्रगट जय केहु केहु बीना ॥७४१॥
 सतगुर मत कहे पुयें निनारा । निराचेप है निगुन सारा ॥७४२॥
 बीव सिव संग सक्ति विराजे ।^७ भ्यापिब ब्रह्म सभै षट छाजे ॥७४३॥

- १ (क), (घ), (ङ) हम = यह ।
- २ (क), (ग), (ङ) दध्दकुमारी सुनु किली मोरी ।
- ३ (क) (ग) (ङ) तुम = तुम्ह ।
- ४ (क) (घ) (ङ) कह सत कर मूल ।
- ५ (क) निगुन निरास कपे सम कोई ।
- ६ (क), (घ) (ङ) राम के मयु पयु धर न कोई ।
- ७ (घ) बीव बीव कहे विराजे ।

प्रसस्त नाम तोर सुन्दर सरीर । रावन सुख तुह बड़ भट वीर ॥७८०॥
 भवन भिखारी तुह हम कह जाता । धरि के मरौं तोहरो माना ॥७८१॥
 प्रसस्त कुंभर सब कोप वीर । धरि के दावेद सकल सरीर ॥७८२॥
 उसटि के भंगद ठेहि पछारी । तन मरोरि पुहुमी पर बारी ॥७८३॥
 प्रात छुटा तन भौ बिकरारा । रावन भामे परा पुकारा ॥७८४॥

दोहा

महा भूबा वस वीर भति, योसा हुंक प्रभारि ।
 परा रंक गड़ लंक में नापि रहे मर मारि ॥३५॥^३

शौपाई

सुरंदाहि बलि पीरि पर गएऊ । मंदोदरी देखत सब भाणू ॥७८५॥
 राम के दूत दुमारि ठाढ़ा । रावन सुनि कोप भति बाढ़ा ॥७८६॥
 योसा भवन मंत्री से कहई ।^१ यह कौतुक सम देखन कहई ॥७८७॥
 भेजहुं दूध सुरंत बोसाई । वह जानर की दोसर भाई ॥७८८॥
 भंगद सुरत निकट बलि गएऊ ।^२ धारो नजरि वरोवरि मएऊ ॥७८९॥
 रावन उठि सिपासन बैठा । भति वन गर्भ भूबावल पेंठा ॥७९०॥^४
 कहसि ना के तुम कहां से घाई । आपन धर्य कहसि समुझाई ॥७९१॥
 की सना संग परा भुसाई । कारन कौन लकापुर भाई ॥७९२॥
 कहसि ना सोच वनचर बानी । माहिं छी मारि करों बिबहली ॥७९३॥
 भति गर्व करि योससि तैं सीता । बालि सुत में राम के हीता ॥७९४॥

भंगद वचन

रामचन्द्र भेजा तुम पासा । सो निजु वचन करब परकसा ॥७९५॥

रावन वचन

हमसे बालि सदा हितकारी । सो तुम जनमा बात बिगारी ॥७९६॥

भंगद वचन

राम चरन पद पंऊज मोही । मिगरे छी जो राम के मोही ॥७९७॥

रावन वचन

पिता बर सुत नाही माना । ठेहि लवार के कौन दखाना ॥७९८॥^५

१ (क) भवन भिखारी हमै तुम्ह जाना ।

२ (ग) रहै = रहा ।

३ (ब) (ग) बोका = बोली । (घ) बोसै ।

४ (ब) सुरंत = दूत ।

५ (क), (ग), (घ) बल = बल ।

६ (ब) ब्यमाना = डेभाना ।

पिता घैर जनि मानहु जाई । अगिसि जनम घोएन प्रमुताई ॥७६२॥
 अलि भो अंगद सीन्हो पाना । संकापुर को कीन्ह पयाना ॥७६३॥
 मैं किकर तुह दासन दासा ।^१ कृपार्थघु चरनन तुह पासा ॥७६४॥
 असत कम असत सो पावे ।^२ मातु पिता काइ काम न भावे ॥७६५॥^३
 पवनमुत मगु पूछा जाई ।^४ वनसंह गिरि सभ कहि समुझाई ॥७६६॥^५
 मैनाहि गिरि अडि पय निहारा । दक्षिण दिस हूँ संक विचार ॥७६७॥^६

दोहा

राम अरन सिर नाए के, रहे दोना कर जोरि ।
 सवा दयाल सिर अमरे, करनी किछु नहि मोरि ॥५४॥

चौपाइ

महा वीर प्रवर भट भारी ।^१ मस्त जुझार टरत नाहि टारी ॥७६८॥
 अंगद को मन संसय ब्यापे । अगुमन पाव दपटि अहुं दापे ॥७६९॥
 जो फिरो होए कुल हानी । नाम हमार अक नाहि जानी ॥७७०॥^२
 रामनाम करिहैं बीर कैता । जिन्हि जिन्ह वांघेठ सगर सेता ॥७७१॥
 पहुँचे सका कोटि निवासा । बुदि अडे सम मिटिगो प्रासा ॥७७२॥
 ऐन अरोख रह सपाई ।^३ सोर करहि मरुट एव घाई ॥७७३॥
 दौरि दूत पहुँचे सम भारी । मुह विरावहि देखेदह सारी ॥७७४॥
 अंगद सोर गोसा अडि गएऊ । अरि वात्रेऊ नीचे अलि अएउ ॥७७५॥
 सो सन भो अयंकर भारी । पाँच साउ दत अपेटन्हि मारी ॥७७६॥
 भागे दूत सब छोडू बिकारी ।^४ प्रसस्त कृ अर तव सागु गोहारी ॥७७७॥
 कहो न की तुम के कर दूता ।^५ घाएहु संका बह अजगुता ॥७७८॥
 जो बहु मांगहुं दवों मंगई । नाहि सो बुपे जाहु पराई ॥७७९॥

१ (अ) किछु = तुह ।

२ (अ) अर्म = करनी ।

३ (अ) अम = अय । भावे = भावे ।

४ (अ), (अ) पूछा = पूछा ।

५ (अ) (अ) (अ) वन संह गिरि सभ कहि समुझाई । (अ) में 'अरि' नहीं है ।

६ (अ) (अ) विपारा = पयार ।

७ दक्षिण (अ) प्रति में 'महा महावीर' है ।

८ (अ) (अ) (अ) अक = अकत ।

९ (अ), (अ) (अ) अरोख = अरोका ।

१ (अ) तव = तम । दोषु = दोषि ।

११ (अ), (अ), (अ) कहो न के तुम के कर दूता ।

सोरठा

बोसे राम प्रचारि सुनु मंत्री मति घोर तें ।
 भंगद धरन उपारि, सीता सती तब जाइहैं ॥१०॥

श्रीपाई

मर्द मस्त मस्त सम झारी ।^१ सोग एक दुई फिरि खारी ॥८१०॥
 दस बीस सागे सौ पचासा ।^२ भ्रंकि धरन सम नए निरासा ॥८११॥
 जंह सहि कटक लंका मंह रहई ।^३ सम कोइ धरन उपारन पहई ॥८१२॥
 हारि हारि बडे सम झारी ।^४ रावन गजि महा बल भारी ॥८१३॥
 बसा कोपि कर विपला बीषे । गिरा मद्रक पांव पर नीषे ॥८१४॥^५
 भंगद पांव मद्रक पर दीन्हा । रावन गव गद बरि सीहा ॥८१५॥
 मीसि मासि के दीन्हो खारी । वालीसुत महिमा भधिकारी ॥८१६॥^६
 बलसि ना गहसि राम के धरना । नाहिं तौ काल निकट होए मरना ॥८१७॥^७

रावन वचन

पह दोए तपसी धर बकाया ।^१ दूत भेजि बेसीब कराया ॥८१८॥
 भय हम संभर करब प्रचारी । देखिहैं देव सोक सम भ्रारी ॥८१९॥
 धासि के सुत तैं पूत क्यूता । हम से बर कोन्ह भजगुता ॥८२०॥

भगद वचन

तैं क्यूत त्रिया ठोर रोषे । सकल बंस जानिबे सोवे ॥८२१॥
 जइ जठर से का कहि सीजे । राम धरन पद सुमिरन कीजे ॥८२२॥

बोहा

भानव मंगल प्रेम अति, बला तुरंतहि भरि ।
 राम धरन पद पंकज मिनती मंत्र विचारि ॥८२३॥

श्रीपाई

रठि कटक सम सिर नाया । वालीसुत धन पीरल पाया ॥८२३॥
 राम धरन पद भंगद देखा । रघुकुस कमल भान छवि देखा ॥८२४॥

१ (क), (घ), (ङ) मस्त = मस्त ।
 २ (क) बडे = बडे ।

३ (क) पांव पर = पांव के ।

४ (क) भधिकारी = बलभारी ।

५ (क) (घ) (ङ) होए = भी ।

६ (घ), (ङ) बह = बोए । (ग) प ।

७ अर्थ उच्य अत्यंत है । संभवता पदभेद है । बेसीब का अर्थ अतिब अथवा अत्यंत संभव है । यदि 'बेसी बकराया' पदा अथ, तो संभवता अर्थ होगा—'और अतिब बीबलाया' ।

अंगद वचन

त्रिया जोर पापी बह भहई । सोह नवार भवन भी परई ॥७६६॥

सीताहि नेह बरन पर परई । कनक कोट राज सब करई ॥८००॥

दस सीख धरि छिनिहँ तोग । से बसु सीता कक्षा सुनु मोरा ॥८०१॥^१

धरहि जाए पाव पर परई ।^२ सका राज कल्प भरि करई ॥८०२॥

बापेठ सुर नर मुनि सम झारि ।^३ यह तपसी का क्या गुन मारी ॥८०३॥

बोहा

सिख सहाम सिर ऊपर, महा महा संग बीर ।

कर गहि बरन धुमाए के, केकिहों सागर तीर ॥४६॥

चीपाइ

जों ठे बरन उपारिछ मोरा । महा पीछ बल अनिहों तोरा ॥८०४॥^४

बरन रोपि पुहुमी पर धरिहों । ऊपर बरन ती सीताहि हरिहों ॥८०५॥

देखिहँ तोग बल वैठ समता ।^५ देखिहँ सुर नर रोपिहों खैजा ॥८०६॥

देखिहँ राम धौ पुत्र पुराना । ये दोए बीर मडे मैनाता ॥८०७॥

देखिहँ संभू धौ संग भवानी । देखिहँ नल बल पौन धौ पानी ॥८०८॥

देखिहँ सीता धौ मुज बजावा । भगद राम नाम निज दावा ॥८०९॥^६

छंद

रोपेठ बरन यह बांन बच पर प्रगट छनै पुकार्छी ।^७

दब देव धौ नुग सब लहि बीर धीर बन पावहीं ॥१६॥

कोटि कोटि सम बीर बांन भिडहि भूमि पर भावहीं ।

महा बडिन प्रन कनक कोट में गम रहि पछिनाबहों ॥२०॥^८

१ (ग), (घ) से बसु सीताहि सुनु कहा इमाय । (ख) से बसु सीता सुनु कहा इमाय ।

२ (ख) परई = परतु । कर = परतु ।

३ (क) बापेठो देव सुर सम झारि । (ग), (घ) बापेठो सुर नर सब सम झारि ।

४ (क) (ग), (घ) अनिहों = अनिलो ।

५ (क), (घ) (घ) देखिहँ = देखिहों ।

६ (क), (ग) (घ) बडिरिछ पाठ—देखिहँ रोप प्रगट संघारा, हारि जीनि दमिई की बारा ।

७ (क) बच पर प्रगट = बच प्रगट ।

८ (क) माहा बन यह कनक कोट में गम रही पछिनावही ।

पीस मुञ्जा बस पोख्त जाना ।^१ मुह दूटा नाहि मन पठियाना ॥८४१॥
 हटिके बटक लागु मुह कारी ।^२ पूज बंस महिमा बड़ भारी ॥८४२॥
 बहे मंदोदरी सुनु पिया मोटा । सिब के बर नाहि निमही बोटा ॥८४३॥^३
 मसमासुर के बर जो कीहा । मए भसम तन खाक मसीना ॥८४४॥
 हरिनाकस सिब बर जो माला । उदर फारि पुहुमी तन बांटा ॥८४५॥
 जाहां उपासिक सिब के बहई ।^४ राम मऊ बह कोइन लहई ॥८४६॥
 बेहि सिर काले कीन्ह पयाना । विपरिधि बुझी मम भौ म्याना ॥८४७॥
 मनहित हित नाहीं परतीती । बहे मंदोदरी जम बिब जीती ॥८४८॥^५
 प्रति क्रोध होए भंष सब बोना । सिब के बर जग सदा भमोला ॥८४९॥
 हरिनाकस बर सहज सखापा । हम बह तुमे प्रौरि नहि मूपा ॥८५०॥^६
 हम दस मस्तक भानि पढ़ायो । भय भटम बर संका पायो ॥८५१॥
 हमके तुम सिखावन लागी । तपसी तरफ बाठ बहुपागी ॥८५२॥
 उठा कोपि खग ले हाया । बग्निके कटिठौं ठोहरो माया ॥८५३॥
 तब मंदोदरी बहुव बरार्ई ।^७ बरल पकरि के माया नाई ॥८५४॥
 बहि भयसर विभीक्ष्ण भाए ।^८ राम बात कछु कया बलाए ॥८५५॥
 सुनि के कोपेठ सकल छरीरा ।^९ लख मारि विभीक्ष्ण सीरा ॥८५६॥
 उठि विभीक्ष्ण प्रिह मंह भाए । बहुव विखाय राम गुन गाए ॥८५७॥
 बोहा

भसे विभीक्ष्ण राम पंह, उजी सकल परिवार ।
 बहुरि भवन मंह माडके देखव लंक पुमार ॥५६॥

सतगुर वचन पुखां में तुमसे ।^{१०} सीटा सञ्चल बहो निनु हमसे ॥८५८॥
 सेयक यचन

- १ स्वीकृत (क) ब्रकि में 'धीन' के पहले 'तुम' है ।
- २ (क) हटिके = हटिदै । (ख) (ग) (घ) काण्य = कानी ।
- ३ (क), (ग) (घ) मोटा = बोटा ।
- ४ (क) (ग) (घ) जाहां उपासिक सिब कर बहई ।
- ५ (ख) (ब) म = नाई ।
- ६ (ख) (घ) बिब = तैरि ।
- ७ (क) हमके हटारि पकरि बोइ मूपा ।
- ८ (घ) (घ) तब मंदोदरि रदी डेरव ।
- ९ (क) बही = सीरी । काए = नाई । बलाए = बलाई ।
- १० (क) (ग) (घ) कोपेठ = कोपा ।
- ११ (क) तुमसे = तुमसे ।

सीतल भी तन झाठो भंगा । रोम रोम पव भी परसंगा ॥८२५॥
 रघुपति बोले विमल रस वाली । सुधा समेत प्रेम रस सानी ॥८२६॥
 छुछुम कया सभ कहा बसानी । रावन गर्ब गर्द मंह सानी ॥८२७॥
 तुम प्रताप निशिचर जीता ।^१ रावन मारि ले भायव सीता ॥८२८॥^२
 कहे राम तुम सभ गुन साएक ।^३ सुर्ज वंस छत्री बड़ साएक ॥८२९॥
 भव मोरे मन भी परतीती । सुर नर वद छोडायव जीती ॥८३०॥
 उठी कटक प्रागे शक्ति भाई । निजु निजु मत्र कहा समुझाई ॥८३१॥^४
 बनफल मरूट खावाहि जाई । भरिपेट खाहि भोछ फहराई ॥८३२॥
 निसदिन सभ के हुमा निचारा ।^५ कय गए देखन लक पगारा ॥८३३॥^६

दोहा

भस मनसूवा कटक में, महा महा बलबीर ।^७
 सुर सभ भूमि पर धारिहै, जा दिन बारीह सीर ॥४८॥

चौपाई

तुम जग जननी चीन्हा न नीके ।^८ जाके हाप जऊ सभ बीके ॥८३४॥^९
 हरि भानऊ बहुत हरबाएउ ।^{१०} भ्रमित तेनि महा बिस पाएउ ॥८३५॥
 महामाया यह जोति निरंता । जल सप्त पवन है फंद भनता ॥८३६॥^{११}
 भान कला छवि राहु प्रासा । छुटि गौ तम तिमिरि सभ नासा ॥८३७॥
 दिनमनि दिन परगट होए भाई ।^{१२} राहु केतु दहु कहा पराई ॥८३८॥
 तुम कह काल कीन्हो प्रासा ।^{१३} विपरिति धुषी तुम्है सन भासा ॥८३९॥
 जिमि कर राहु सुर्ज कह छेका । इमि करि दैतम्ह भंगद टेका ॥८४०॥

(क) तुम = तुह, (घ) तुम्ह । (ख), (ग) (घ) निशिचर = निसाचर

१ (ख) (ग) (घ) भायव = भायव ।

२ (घ) (घ) तुम = तुम्ह ।

४ (घ), (ग) निजु निजु मत्र कहा समुझाई । (घ) निजु निजु कया कइव समुझाई ।

५ (क) (ग) (घ) हुमा = परी ।

६ (क) (ग) गए = बो ।

७ (क) में = मेंह ।

८ (ख), (घ), (घ) जा = जाहि ।

९ (घ) बल = सप्त ।

१० (घ) हरबाएउ = हरबायो । पाएउ = पायो ।

११ (क), (घ) (घ) है = में ।

१२ (ख), (ग) (घ) भाई = भाए । पराई = परए ।

१३ (ख), (घ) बह = बे ।

दोहा

कहें दरिया सुनु दासहि, विवरन किया बनाए ।^१
रहनि गहनि निजु नाम है दोविधा दूरि बहाए ॥६०॥

छंद

गुर गहिर प्यान निजु नाम यह भव भम सम विसरावहीं ।
अकह अंक यह वक्र नास में पदुम म्मलाम्भसि भावहीं ॥२१॥
भरस भूरि संह अंग में निमस मोती मनि छवि छावहीं ।
मिले सतगुर सब्द के घुनि दर्स दरिया पावहीं ॥२२॥

सोरठा

ब्रह्म भेद निर्लेप, जब मिले सतगुर दया ।
सम दुख होए छनछेप, पाप पुन्य नहि ब्यापिया ॥११॥^२

शौपार्ई

गए विभीक्ष्ण बंह हनुमाना । मिले प्रेम अति सुखर सुमाना ॥८२॥^३
राजन हम बंह दीन्ह निकारी । इमि कारन इह्यां पगु बारी ॥८३॥
क्रिपासेधु से भेंट करावहुं । प्रिया प्रेम से प्यास मिटावहु ॥८४॥^४
कर गहि हनुमंत खीन्ह उठई ।^५ सनमुख राम विभीक्ष्ण पारि ॥८५॥
राम कहा संकेखर राई । तुलसीहि राम विभीक्ष्ण पारि ॥८६॥
अहं विभीक्ष्ण वासन दासा । संना निखिपर कोटि निबासा ॥८७॥^६
निसदिन मजन करिह भगवंता । सुनो श्रीराम कहे हनुमंता ॥८८॥
धुमिरन करत रही खुगई । रावन इन्ह कंह दीह दुराई ॥८९॥^७
मऊ अय के कौन है साया ।^८ अर के वचन बोलेहि खुनाया ॥९०॥
माव भक्ति बेहि मजन विगया । सो जग जनी सदा सुहाया ॥९१॥^९

१ (क) किया = करी । (घ), (ङ) किनी ।

२ (ग) होए = होत । (घ) होहि । (ङ), (ण) ब्यापिया = व्यापरी ।

३ (क) सुखर = सुर ।

४ (क) प्रिया प्यास सम अग्नि मेरावहु । (घ) (घ) प्रिया प्रेम सम प्यास मेरावहु ।

५ (क) (घ), (ङ) छत्र = शिराई ।

६ (क) (घ) अर = अर ।

७ (क), (घ) निबासा = निवास ।

८ (क), (घ) के = कर ।

९ (क), (घ) इमि करि वचन बोले खुनाया । (ग) अर करि वचन बोले खुनाया ।

१० (घ), (ङ) माव मजन बेहि भक्ति विगया ।

११ (क), (घ), (ङ) सो जग जनी सदा सुहाया ।

माया रूप सुख किमि नाहिं सहई । इन्हके संग सदा सम रहई ॥२६॥
 सुनो वचन मैं कछों विचारी । समुक्ति लेहु निजु ग्यान सुधारी ॥२७॥^१
 प्रथमे जाए जनकपुर रहई ।^२ कीन्ह परिपष बहुत कछु सहई ॥२८॥
 जनक रिली सोच बहुत विचारी । जोग छुटा दुख भए गो भारी ॥२९॥^३
 मयके चित्र समैं कीइ धया । महा महा भूपति लाज गवाया ॥३०॥
 यिष मागे जैसे सेमर भूषा । दृष्टि गो अनुत्त उठा मम भूषा ॥३१॥
 इमि करि भाभा सेठ जब छोरो । सीस पटकि वठे मुख मोरी ॥३२॥
 यह सुलभ्यन जेहि यहि पैठी । दीपक यारि भवन मंह बैठी ॥३३॥
 जंह दीपक तंह किमी धावे । परि पतंग तन प्रान गंवावे ॥३४॥
 महाभाया यह सम जग गावे । अगम धयाह धाह किमि पावे ॥३५॥
 बिनु गुन ग्यान सत नाहिं नौका । त्रिनु तग्नी भवसागर शोका ॥३६॥
 सत पतान सहा यहि आई । साजत जोजत प्रेम ना पाई ॥३७॥
 जौ सतगुर मिस बनहरिया । धरि पतवार खेवहिं तव दरिया ॥३८॥
 जीवन मुक्ति बिद गुर ग्याता । सम विधि पूरन प्रेम सुपाता ॥३९॥
 टीका मूल नाम निजु देखे । रहनि गहनि में धरि न देखे ॥४०॥^४
 जमराजा के काह बसाई । निश्चय अचल धमर होए जाई ॥४१॥^५
 धई सतपुत्र मानु परतीती । रहनि गहनि बसिहों जम बीती ॥४२॥
 त्रिगुन सरीर मोह तन ध्याये । पाप पुन्य धपन मन छाये ॥४३॥
 द्रौपति तन है माया सरुपा । पांचो भाइ जुधिस्तित भूषा ॥४४॥
 उन्ह संग पीर कछहिं नहिं पाइ ।^६ पैठि पलासहिं तनहिं गसाई ॥४५॥^७
 सो माया रावन प्रिह धाई । महाकांस जम जाल बनाई ॥४६॥
 निवट निवट निवरे भइ बाठा ।^८ धय संका होइहैं सतपाठा ॥४७॥
 नौ मन मूठ कवाहिं नहिं समूरा । धय लौ रावन रामहिं धमूरा ॥४८॥

१ (क) मैं = मम ।

२ (ख), (घ), (ण) सुधारी = सुधारी ।

३ (क), (घ), (ण) जनकपुर = जनकपुर ।

४ (ख) (घ) (ण) मए = मा । गो भारी = कपिधारी ।

५ (घ) (ग), (ङ) रहनि गहनि में धरि न देखे ।

६ (ङ) निश्चय अचल धमर धमरपुर जई ।

७ (घ) पटकि = कते ।

८ (ख) पैठि पलास हिं तनहिं गसाई । (घ) पांचो जसे ई बाध बलाह । रीइत (ङ) धनि में 'बलाह' की जगह बल' है ।

९ (घ), (ण) निवरे = निवट । (ङ) धय लौ निवट निवट कर बाध ।

दोहा

तब मोरे परतीति मयो, सही राम कर वीर ।^१

मनसा बाबा कर्मना, भए मंजन मतिधीर ॥६२॥^२

धोपाई

धार्ई कटक विकट गिरि केठा । मूर वीर सभ सैन समेठा ॥६११॥

राम लखन सुषिब कपिराई । बैठे जाए समै सिर नाई ॥६१२॥^३

दिबस बीते रैन बलि धार्ई ।^४ रघुवर त्रिस्टि दण्डिल के जाई ॥६१३॥

गजत पन प्रति होत भंदोरा । परत त्रिस्टि मानो प्रबस कठोरा ॥६१४॥

छटा बमकि बहुं भोर बसि धार्ई ।^५ अपला बमके बहुत देखार्ई ॥६१५॥^६

भजरज कौतुक बहुत मनूपा ।^७ रघुवर बोले विभीषन भूपा ॥६१६॥

होत गर्द यह भगम प्रभाटा । विभीषन भक्त कहा सम वाटा ॥६१७॥^८

जिदंग तास सम वाजु भभारा ।^९ मनि मानिक हूँ छत्र बनोरा ॥६१८॥^{१०}

बपसा बमके होत भंजोरा ।^{११} तरिजन छटा बमकि बहुं भोरा ॥६१९॥

बीका पावनी ब्रिग उरतगा । सिगासन बठा मस्त मरतगा ॥६२०॥

वीस भूजा दस मस्तक भारी । राम कटक सपु करत बिभारी ॥६२१॥

रहे प्रसोब सीव कर टीका । राम कटक सभ जानत फीका ॥६२२॥

कोये राम भर्मकर नारी । काडैत सर कर धतुक बिभारी ॥६२३॥^{१२}

मारैत वैबि बान कर तानी ।^{१३} गिरा छत्र मटुक मो हानी ॥६२४॥

तरिजन ठरकि रूहा छितपाई । बहुरि बाल राम पंह धार्ई ॥६२५॥

१ (ब) कर = को ।

२. (ब), (ग) (ब) मतिधीर = रघुवीर ।

३ (ब) (ग) (ब) बैठे वीर समै सिर बर्मा ।

४ (ब) (ग), (प) दिबस बीते रकनी बलि धार्ई ।

५. (ब) (ग), (ब) धार्ई = धार्ई ।

६ (ब) बमके = बमकत ।

७ (ब) (ग) (प) बहुत = भजव ।

८ (ब) (ग) (ब) सम = छत ।

९ (ब) तास परंग लब कत बभेरा ।

१० (ब) मनि = मन ।

११ (ब) होत = होए ।

१२ (ब) धतुक = धतुक ।

१३ (ब) मारेयो बाल वैबि कर तानी ।

सो कुल साएक कुल मह नीचा । सदा चरन पद पंखत्र टोका ॥८२॥
 सगुन निर्गुन निगम जो सोषे । कौटि कम भय पातक माषे ॥८३॥^१
 बेहि कुल भक्ति सोई कुल साएक । नग है नाम सदा माथ्याएक ॥८४॥^२
 सतमंत मोहि अंतर बैसा । ह्रिदय कमल मम मंमर बैसा ॥८५॥^३
 मधुकर मानति वास रस पाई ।^४ जौ रचना गुन गाए सुनाई ॥८६॥
 भक्ति भक्ति भगवंत विराजै । सब निकट सदा सिर छाजै ॥८७॥
 साधुदर्स जग महिमा बैसा । कौटि तीय दान पुन जैसा ॥८८॥
 वरन विवेक न ब्राह्मन छत्री । रघुकुसु कमल नाम निजु जंत्री ॥८९॥^५
 साधु सरस गुन सन नर नीचा । जेने दिनमति दिन है ऊचा ॥९०॥^६

दोहा

क्यब कठिन करनी कठिन, कठिन विवेक विचारि ।^७

गुरपद पंखत्र मजन करा यहि विधि ह्राए उवारि ॥९१॥

श्रीपाद

सुनो विभीक्ष्ण बहे रघुराई । के श्रीर बैसन कीन्ह प्रभुताई ॥९०१॥
 पवननुत महा बल भारी । लंका जागि जो विच्छ टपारी ॥९०२॥
 धरि धरि दइत अपेटन्ह मारा । तब रावन पंह परा पुकारा ॥९०३॥
 राम प्रताप सक बछु नाहीं । बोले वन समै डर साहीं ॥९०४॥
 ऐसन और निरंक भ्रमाना । रावन गर्व किया पिसिमाना ॥९०५॥
 पैठत पगद भए गौ पाये । प्रसन्न कु भ्रम बे भगवतिहारी ॥९०६॥^८
 धिरि भाए अह रावन सैठा । देखत गर्वी गर्बे ऐठा ॥९०७॥^९
 उत्तर के उत्तर उन्दि दीन्हा ।^{१०} बहुत बात बछु संक न सीन्हा ॥९०८॥
 राना चरन समै परचायी । हारे दैत नाटि सन चायी ॥९०९॥
 रावन गति कोपि कर घाबा । गिरि पड़ा तब मट्टक उठाबा ॥९१०॥

१ (घ) (ग) (ब) गलक = पाठक ।

२ (ख) मोष = लुप्त ।

३ (घ) (ग) (प) बैसा = बैसा ।

४ (घ), (ग) (ब) बस = खानी ।

५ (घ) (ग), (ब) खत्री = खत्री ।

६ (ख) है = कर ।

७ (ब) (ग) (ब) विचारि = विचार ।

८ (घ) प्रसन्न = परसन्न ।

९ (ख) देखते गति परहीं चरस ।

१० रघुसु (ब) प्रति में 'उन्दि दीन्हा' के बदले 'बहुत' है ।

उठि मंदोदरी रावन साधा । करे मुनाल माय दे ह्य्या ॥६४०॥
 कहे रावन सुनु जिया बमागी । किमि करि हाय माय तोर सागी ॥६४१॥
 नारि कुमच्छन इन्ह कर भाळ । पिया निकट है कोल सुमाळ ॥६४२॥
 कहे मंदोदरी सुनु पिया मोरा ।^१ कहीं बचन किनु मानु निहोरा ॥६४३॥
 राम बान है कठिन कठोरा । तरपि तेज घति करत प्रबोरा ॥६४४॥
 जापर परे रसातल जाई । घर घरती पर जात नवाई ॥६४५॥
 मारेठ ताबिकरहि एके धला । प्राण छुटा तन भौ विधिमाना ॥६४६॥
 सुमह जाप बड़ावन गएळ । ता दिन यक्ष पौरुष का भएळ ॥६४७॥^१
 कर गहि तानि सोरा उन्हि कैये । खेलाहि सिमु संग धनुही जैसे ॥६४८॥
 सोबहु बेर मिसहु भए सीता । निति नए बचन कहीं मी हीता ॥६४९॥
 भस कहि बचन बोला भ्रमिमाना । जिया मंत्र तंह राम बिसाना ॥६५०॥
 जिया मंत्र राज कहि टीका । तोर बचन मोहि सागत फीका ॥६५१॥
 जिया मंत्र दसरथ घति प्रीती । तन के त्यागेठ तिसक भनीती ॥६५२॥
 जिया मंत्र तपसी नहि जाना ।^२ जिगा के पीछे न्यान मुजाना ॥६५३॥

दोहा

मंदोदरी मन में सुकुम्भि के, भवने रही लजाए ।^३

कहत सुनत नहि वनि परे, भ्रमिठ तेजि बिस काय ॥६५॥

चौपाई

जाई कटक निकट निगरामा । भलकत बचन विदित बमाना ॥६५४॥
 बलि सैन मंह संघय भएळ । कल्प कठिन गढ़ इमि कर रहेळ ॥६५५॥
 राम प्रताप तब गढ़ दूटे ।^४ राम सर बल रावन सिर छूटे ॥६५६॥^५
 पन बहु बीर भगद हनुमता । जिन्हि कस काटेठ फंद धनता ॥६५७॥
 किमि गढ़ चढ़िगो दोनों बीरा । जिमि भूमि बेसत कांपु सरैरा ॥६५८॥
 कारिठ बान सुदिन दिन रांधेठ । राम नाम सिद्धि सर पर साधेठ ॥६५९॥

१ (क) मुनाल = गुलाबन ।

२ (ख) पिया = वनि ।

३ (क), (घ), (ङ) का = गाई ।

४ (ख), (ग) (घ) जाई = तब ।

५ (क) (ग) (घ) भयल बो रही लजाए ।

६ (क) दूटे = दूँदरे ।

७ (क) राम सर बल रावन सिर छूटे ।

दोहा

मारा रघुवर वान ते, सका परि गी दंक ।
लंक बंक गढ़ दूटिहै, कोइ न रहा निसक ॥६३॥^१

चौपाई

सम मिलि कीन्ह जो मंत्र विधारी । मदुक गिरौ भसगुन भी भारी ॥६२६॥^१
कोपि धोले भस कहे भनीता ।^२ मदुक गिरे का का भम बीता ॥६२७॥^३
रही भाष सम प्रिह प्रिह जाई । गवन रहा मंदोदरी ठाई ॥६२८॥
कनक पसंग पर छिरकु सुगंधा ।^४ सेज बंद मनु ममकल बंधा ॥६२९॥
हीरा साल मोती मनि लाग । करत विसास भोग रस पाग ॥६३०॥
प्रति निसक मीद तन प्रासा । मंदोदरी मन में बहुत उदासा ॥६३१॥
संग सती बोली प्रसन्नत बानी । रावन गर्ब सदा उरभानो ॥६३२॥^५
भजहुं न मानत मन परखीती । राम के धनुष वान सर जीती ॥६३३॥

पार्वती वचन

भमल खाए सम के वर देहू । क्रोध भए पीछे पिचि सहू ॥६३४॥
ऐसन वर का दीन्हो जाके । राम से बर कछुं तुम जाके ॥६३५॥
सुर नर बाधि समे बसि कीन्हो । भर्म भुलाना मति का हीना ॥६३६॥
भव नहि रचवा होए दसकंधर ।^६ भित्तु मांगि सोन्हो मति भंधर ॥६३७॥
राम दोहू किमि भक्त हमार । कटिहै माय लर्ग के धार ॥६३८॥

सिध वचन

दोहा

(कहे) सिध सुनु वचन भवानी, माया गर्ब उतपात ।
जो मम भक्त ना (दास) राम को, भमि रसातल जात ॥६४॥

चौपाई

रैन बीठि घासर बसि भाई । रवि के उगे तिमिर छुटि जाई ॥६३९॥

१ (क) (ग) दूटिहै = दूटिआ ।

२ (क), (ग), (घ) गिरौ = गिरा ।

३ (ग) कोपि वचन भस बोले भनीता । (घ) कोपि वचन भस बोला भनीता । (घ) कोपि वचन प्रति बोले भनीता ।

४ (क) का का = केका ।

५ (क), (घ) छिरकु = छिरपी ।

६ स्टील्ट पाठ में 'भानी' तथा 'वामी' है ।

७ (क), (ग), (घ) दसकंधर = दशकंधर । भंधर = भंधरा ।

फिरि मारहि फिरि बाहि पराई । मानो कस्तुरि खेलाहि बनाई ॥१७६॥^१
 पवनसुत देखाहि सम ठाढ़े ।^२ देखि भुजावत धपिके वाढ़े ॥१७७॥
 भगद सैन संग सम पासा । बड़ि गिरि देखाहि भजव तमासा ॥१७८॥
 आमबंत जानि मासु सम गर्जे । ठाढ़ाहि ठांब समी कोइ बर्जे ॥१७९॥
 इंद्रजीठ वान जब मारा । मानो बिछुसी छटा पसारा ॥१८०॥
 यहां राम वहां राजन देखै ।^३ महा महाबीर संभर लेखै ॥१८१॥
 कोइ पाएस कोइ जमी पर परई । सैन समूह सोज को करई ॥१८२॥
 तीन पहर मंडे मंदाता । एक एक वीर करे पमसता । १८३॥
 लखन धनुज वान जब परई । कोटि कटक नीचे होए डरई ॥१८४॥
 मेघनाद गढ़ भीतर गच्छ । कोटि कटक डेरवत मच्छ ॥१८५॥^४
 वासर भीते रैन खलि मारई । पवनसुत बाँकि के जाई ॥१८६॥^५
 कहे संबोदरी तेजु भी मर्मा । राम बरन पर जानहु मर्मा ॥१८७॥
 जाहि सुमिरे सम कुमति विहाई । चारो फल बँठे ग्रिह पाई ॥१८८॥
 उम्ह से संभर करे जानि कोई । जमपुर जाए महत्तम सोई ॥१८९॥^६
 को है वीर करहि प्रभुठारि । रघुबर सैन समेटि बसाई ॥१९०॥
 इंद्रजीठ के देखिसि मारो ।^७ सैन समेटि बीर भूमि टारो ॥१९१॥

राजन वचन

कु भकरन जगवे नाहि कीया । सैन समेटि जामि औ वीया ॥१९२॥
 जब मैं धनुज मद कर दूया । बाटि कटक बाँचो रघुनाथा ॥१९३॥

संबोदरी वचन

सबहीं करहु बहुत पंडितारि । उखहु साज न बदन गोमारि ॥१९४॥^८

१ (ख) कस्तुरि = कौटिल्य । (ग) कस्तुरि ।

२ (ख), (ग) (ब) पवनसुत सैना सम उड़े ।

३ (घ) देखै = देखा । लेखै = लेखा

४ (ख) (घ) कोटि = किल्ला । (घ) सिद्धी कटक डेरवत मच्छ ।

५ (ब) पवनसुत बाँके कि के जाई ।

६ (ब) जमपुर जाए महत्तम सोई ।

७ (ख), (ग) के = क्या ।

८ (घ) गोमारि = गवारि ।

बोले सखन निजु बचन विचार्यी ।^१ मुनु मंत्री तें मंत्र हुमाये ॥६६०॥
 तत पुर्ल निजु घरिके ध्याता । तव सर ठारुं मदाना ॥६६१॥^२
 माते काम सुफल सम होई ।^३ पुर्ल नाम गुन सदा समोई ॥६६२॥^४
 काके ह्म हें राम गोसाईं । जूगल जग प्रभूता बल पाई ॥६६३॥
 वष्टुमन बचन राम कह नीका । मानो सर्व ग्यान का टीका ॥६६४॥^५
 लैसा सखन पाहन दिन्हु डारो । सम के मन बट भी उत्रियारी ॥६६५॥
 दिहिन ठरावन बोले कागा । कीन्हु विचार सगुन निक सागा ॥६६६॥^६
 रावन सिर पर काग कराना ।^७ धाकी भित्तु निबट नियराना ॥६६७॥
 मुनि के बटक समै हुरखाना । करव संमर टारव मदाना ॥६६८॥
 वानर भालु कूदि सम ठाड़े । सम के तन में रोस घटि बाड़े ॥६६९॥
 सैन समाज देखहि रघुनाथा । सखन धनुष बसि सीन्हुो हाया ॥६७०॥
 रावन मंत्री जो पूछा बोलाई ।^८ भव तो सैन निबट बसि भाई ॥६७१॥
 प्रसन्न बटक लिए सुग भापे । मानो भित्तु कान जनु कापे ॥६७२॥
 मेघनाद गर्ह भीन्हुो पाना । करि सत्ताम तव कीन्हु पमाना ॥६७३॥

दोहा

ईद्रजीत सब निक्क्या, महा महावीर साथ ।^९
 सैन समै खड्गभङ्ग भई, देखहि लखन रघुनाथ ॥६६॥

चीपाइ

मोटि वान एक बेरि लडके ।^{१०} हात संदोर जिमि वादन कडके ॥६७४॥
 मरुट पाहन सीन्हु उपारी । मारुहि एक बार देहि डारी ॥६७५॥^{११}

१ (ख) विचार्यी = विचारा ।

२ (ख), (ग), (घ) तव = तवही ।

३ (घ) काम = काम ।

४ (ख) (ग), (घ) गुन = निजु ।

५ (ख), (ग) = कर ।

६ (ग), (घ) (घ) कीन्हु विचार सगुन नीक सागा । क* पाठ करपड है ।

७ (ख), (घ) कराना = दारना ।

८ (घ) (ग) रावन मंत्री जो पूछा बोलाई ।

९ (घ) महा महावीर सम साथ ।

१० (ख), (ग) मोटि-इ वान एक बेरि लडके । (घ) मोटि-इ वान एक बेरि लडके ।

११ (ख), (घ) मारुहि एक बार देहि डारी । (क) पाठ में 'मारुहि एकबार देहि सम डारी है ।

लेत जितेउ परवारि, महावीर वाके बड़ो ।
 सुर नर दर्वाह भारि, कठिन पास तने न्यापिया ॥१२॥

बीपाई

सखन सगीष पवनमुठ भाए ।^१ निरखत घंग घाव नाहि पाए ॥१००७॥
 लछुमन के उय लीन्ह उठाई ।^२ राम खरन पर पहुँचे भाई ॥१००८॥
 राम देखा अब लखन कुमारा । बडा विस्वाड तम भया विकारा ॥१००९॥
 हूँ कोह जन जो जुक्ति बतावे । बहुरि प्रान घट नीतर भावे ॥१०१०॥
 कहे बिभीषन सुनु रघुराई । सुखसैना मह जुक्ति बताई ॥१०११॥
 बढ एक बंका मंह टोका । बह सम पारख जान्न नीका ॥१०१२॥
 कहे बिभीषन मोह तन भएऊ । सकि बान तन प्रान न गएऊ ॥१०१३॥
 पर ग्रिह सम कही समुझाई । गए पवनमुठ बेगि नियाई ॥१०१४॥
 भाइ कटक मंह वीन्ह जगाई । माया पास तन बल न भाई ॥१०१५॥
 राम कहा बिप्र सुनु वाता । बर अनि खाहु महा मुनि प्याता ॥१०१६॥
 सकि बान सखन तन लहेऊ । हूँ तन प्रान विचलन प्रति भएऊ ॥१०१७॥
 बढ कहे सुनो श्रीरामा । तनिक सजीवन हूँ सम कामा ॥१०१८॥
 भबसागिरि संजीवनि भहई । जो कोह जाए प्रगट यह कहई ॥१०१९॥
 पोषा तंहां संजीवनि मूरी । तय तनके दुख होइहैं दूरी ॥१०२०॥
 राम कहा सुनो हनुमाना । तुह भस वीर कीन परधाना ॥१०२१॥
 राम काम के सदा हजुरी ।^३ गिरि सम लेउ संजीवनि मूरी ॥१०२२॥
 करि प्रणाम बिदा तव भएऊ । पवनगमन ते भागे गएऊ ॥१०२३॥
 गए पवनमुठ विलम न साई । वीर एक मगु सैकित भाई ॥१०२४॥
 करे समाधि महामुनि जैसे । पाखंड भेस धरे कलि ऐसे ॥१०२५॥
 सु दर भेल विबिधि कथे प्याना । कर में माला जपे भगवाना ॥१०२६॥
 गुर होए सीक सिखावन सागा ।^४ पाखंड मंत्र प्रेम मति पागा ॥१०२७॥

१ (क) (ग), (घ) विरिक्त = पीठा ।
 २. (क), (ग) लघीय = लघीय । (घ) नायिके ।
 ३ (क), (ग), (घ) लछुमन = लखन ।
 ४ (क) (घ) (ग) क्या विचार तन विधारा ।
 ५. (घ) (ग), (क) राम काम के शत्रु हजुरी ।
 ६ (क) वीर निद्रावन = वीर घावन ।
 ७ (घ) पाखण्ड मंत्र ब्रम्ह कति पागा ।

दोहा

बार बार छैं बोलसि, छोर मन भए गौ मर्म ।
सैन समै धरि जाटिहौं, जानति हौं तुम मर्म ॥६७॥^१

चौपाई

इंद्रजीत निकला बस भारी । बोटिन्हू बीर बटक सम झारो ॥६६५॥
एक एक वीर महाबल जोधा । बानन्हि मारि सैन सब सोधा ॥६६६॥
एक एक पाहन सीन्हू उपारी । फँकहि बोटि बटक सम झारो ॥६६७॥
फिरि बार्छहि फिरि जाहि पराई । उतटि उखारि फिरि पहुँचो घाई ॥६६८॥^२
इंद्रजीत गहि माय बाना । सकि सगा लछुमन तन जाना ॥६६९॥
इंद्रजीत गहि सैन सरुला । जमी पग जानबंत रूहा भकेना ॥१०००॥^३
रन मह मंत्र सिखावन लागे । राम चरन गहि लागु भनागे ॥१००१॥
छोठेउ तोहि तन देखत ठीसा । लागेउ बकन चाउ भनमीसा ॥१००२॥^४
बहुरि बोलसि जनि मूढ़ भग्याना । बानन्हि मारि करो पिखिमाना ॥१००३॥
रन मह वीर बोलसि परचारी ।^५ धाम काम सिंगार संवारो ॥१००४॥^६
गजि उठा ब्रह्मा नाहि माना । दुबो वीर मडे मदाना ॥१००५॥
माय जानबंत मुर्धा घाई । उतटि जागि बहुरि फिरि घाई ॥१००६॥

दोहा

सुर सर्व संग्राम में, छत्री सममुख घाए ।
राम क्रिया सिर ऊपरे सो पगु पीछे न जाए ॥६८॥

छंद

दोरि दपटि सन बीर भूमि पर लबहि सभै प्रचारि के ।^७
गजि बान जमी पर गर्द होत तटपि तेज तंह घाए के ॥२३॥
भागहि मकट निकट नाहि उलटि देखहि सभ जाएके ।
बीर बीर सन सैन बाके संसर करहि बनाए के ॥२४॥^८

१ (ब) (ग) तुम = मोरि, (घ) हमारि ।

२ (ब), (ग) परुषी = पुरुषहि ।

३ (घ) जानबंत = जानबंत ।

४ (घ), (ग) लागेउ = लागेउ ।

५ (ब) (ग), (घ) बीर = मूर ।

६ (घ) सिंगार = सागर ।

७ (ब) बीर = बीरहि ।

८ (ब), (ग) (घ) सैन = सैन । (घ) करहो = करी ।

धन्य जाण कहूँ किमि वाता । महा विघ्न होइहै निजु माता ॥ १०४४ ॥
सीन्ह उठाए सुनो हो ताता । मुख से बोनहु वनिक नहि वाता ॥ १०४३ ॥^१

दोहा

कहना करत बिसाय प्रति, भाए पवनसुत वीर ।

सजीवन रगरि पिपाइया भेटेउ सखस तन पीर ॥७०॥^२

श्रीपार्श्व

लंका के वीर संका मह गएऊ ।^३ बहुरि पवनसुत कटकहि गएऊ ॥१०४६॥
उठे ससन तन भए गो नीका । सकस कटक विच मनि औ टीका ॥१०४७॥^४
सम मिति कीन्ह जो मंत्र विचारि । होत प्राठ जिमि जुभी पसारी ॥१०४८॥^५
दसकंधर तहका भसि गएऊ । कु भजन बहू समय वनएऊ ॥१०४९॥^६
विचिष भाति करि लेहि अगई । उठी क्रोध करि प्रति मकुसाई ॥१०५०॥
पूछे यचन सुनो हो ताता । कसम लीन तोर भाठो गाता ॥१०५१॥
किमि कारन तुम्ह मोहि जगई । सो निजु भय कहो समुझई ॥१०५२॥
उपसी संमर कीन्ह बहु भली ।^७ मारेउ कटक कीन्ह उठपारी ॥१०५३॥
जगजन्ती हरि साएहु जवही ।^८ लका विपति परा मह तवही ॥१०५४॥
सिब के घर तुम रहो मसोचा ।^९ यह संकट बहु कैसे मोचा ॥१०५५॥
भय तुम भर राम से कीन्हा । दीनबन्धु करता नहि कीन्हा ॥१०५६॥
सुयावत मोहि प्राठ न भाता । सहिका मद मंगलहुँ ताता ॥१०५७॥
खाइवि मासु गर्व तज फूला । हमसे वीर कवन भय तुला ॥१०५८॥^{१०}
एक मद तन काया कतवापी । जगा कवन नहि पाठ संभापी ॥१०५९॥^{११}

१ (प) सुख से तनिके या दोकहु वाता ।

२ (क) पिपाइया = वाइया । (ख) (घ) (च) भेटे पका तन पीर ।

३ (क) (ग) (घ) मह = वी ।

४ (क) मनि औ = मनि का ।

५ (क), (घ) (घ) होत प्राठ निर जुधि पसारी ।

६ (घ) (घ) (च) वनएऊ = वनैऊ ।

७ (क) संमर = मारि ।

८ (क) साएहु = सायानहु ।

९ (क) कतिपिक वाट—उपसी करि किसे बनि तुमही । लंका करि भयम करि तवही ॥

१० (क) (घ), (च) रहो = रहहु ।

११ (क) (घ) हम कवन वीर कवन भय तुला । (च) हमसे वीर कवन भय तुला ।

१२ (क), (ख) जगा = जगना, (घ) जगो ।

पवनसुत तव धूम्र बिजारी । हूँ कोइ दत्त मोह मत्त डारी ॥१०२८॥^१
कातनेम बोचहि परि ठाटा । परि पटकेर तव छुटिगौ बाटा ॥१०२९॥

बोहा

मारैठ ठेहि पछारि के, गिरि से दीन्ह गिराए ।

असे पवनसुत रोष प्रति, पल में पहुँचा जाए ॥६६॥^१

बौपाई

तनिक संजीवनि होत सहाई । नरगहगिरि एक सीन्ह उठाई ॥१०३०॥
बिबिधि वन ताहां सुठि मारी ।^१ प्रति बस भुजातनिक नहि हारी ॥१०३१॥
रमिता राम अरु ग मिति जाई । जीब सीब मामा सपटाई ॥१०३२॥
ब्रह्म अलंबित त्रिगुन सरीरा । मामा मोह कला तन पीरा ॥१०३३॥^२
माया प्रबल जानहि गुन म्याता । राम विकल देखे मुल आता ॥१०३४॥^३
विना मोह कला नहि होई । आनंद मंगल दुख ना समोई ॥१०३५॥
मोह सत्य मिथ्या अनि जाने । सामर्थ के नर दोष न आन ॥१०३६॥^४
राम सोष तन दुख प्रति भावे । सखन बिना सीता नहि भावे ॥१०३७॥
रहेठ एक संग भएठ बिछोहा ।^५ हृदय प्रेम प्रति सागत मोहा ॥१०३८॥^६
अभंराति रही पंथ निहारी । अपि नहि आए दुखित तन मारी ॥१०३९॥
सीन्ह उठाए सखन नहि जागे । करि बिबेक कला तन सागे ॥१०४०॥
पिता मोह मोर सखन मेटावा । सदा संग सम दुख विहरावा ॥१०४१॥^७
बोसरे हरेठ निसाबर सीता । जो कछु भीर सखन पर भीता ॥१०४२॥
अव मोरे कछु कहि नहि जाई ।^८ महा मोह तन म्याकुल भाई ॥१०४३॥^९

१ (क) (ग) मर = मर ।

२ (घ) असे पवन अति रोष करि ।

३ (क) (ग), (घ) लारा = लारी ।

४ (क), (ग), (घ) माया = माया ।

५ (क) (ग), (घ) मुल = मुल ।

६ (क), (ग), (घ) रोष = रोष ।

७ (क), (ग) (घ) नरद = भद्र ।

८ (क) इरव विरह तन लप्य मोहा । (ग) इरव विरह तन लप्य मोहा ।
(घ) इरव विरह तन लप्य मोहा ।

९ (क), (ग), (घ) सदा संग सम दुख विहरावा ।

१० (क) (ग) (घ) मियु = मियु ।

११. (क), (ग), (घ) काय = काय ।

जन्म धारण तब कीन्हो जाई ।^१ माहुवि होम बहुत चित साई ॥१०७६॥
 बहुविधि कीन्हो जन्म का साजा ।^२ यहि मंह बोसे बिनीसन राजा ॥१०७७॥
 करिहँ जन्म तब जीते न कोई । मारहँ कोटि कटक बड़ छोई ॥१०७८॥^३
 बोसे सखन कोपि कर भानी । राम सपय करिहँ देखि हानी ॥१०७९॥
 गए सखन सम सैन समेठा । बहौ जन्म जिमि रोपेज खेठा ॥१०८०॥
 बानर नामु सब मारहँ बनाई । धीरि केस तब कीन्ह उठाई ॥१०८१॥
 किहँसि पुदि कोपि कर जागा । वाके तेज कटक सम भगा ॥१०८२॥
 फिरि संसर कीन्हु सौ बारा । मारा सखन उन भए गौ बारा ॥१०८३॥

दोहा

भुजा फँका उपारि के, सुसोचना के पास ।

देखत घति विसमय भई, तन में उपजी त्रास ॥७२॥^४

धीपाई

हीनि स्वाम कीन परिहरई । जाके मारि पिया मोर मरई ॥१०८४॥
 कीन्हो भुजा तब करौ उपारई । तन मन बारि पिया संग जाई ॥१०८५॥
 तुम पति मोर पत्नी पति जानी ।^५ कर गहि खरी कीन्हु तब भानी ॥१०८६॥
 तुम पति मोर हो में तु ह मारी ।^६ सिखो खरी सम मरई विचारी ॥१०८७॥
 धीरि जमी पर बँक की रेखा ।^७ ईद्रजीत तब भुजा बिसेखा ॥१०८८॥^८
 कर्दप कामनि क्यहि न रीता । भोजन मीव जानि उन्हि बीठा ॥१०८९॥
 दुषादस बरस जोग जो जाना । हीनि धरु दिख क्यहिना भाना ॥१०९०॥
 दसरप तनय सखन है माऊ । मारा मोहि भुजा बस ठाऊ ॥१०९१॥
 सनमुख नूर हीए रत मंह भुमा ।^९ निस्वय भजन सुसोचना भुमा ॥१०९२॥^{१०}
 रावन मामे दाठ बनाई । इद्रजीत रत भुमा जाई ॥१०९३॥

१. (क) धारण = रचना ।

२. (क), (ग) (न) कीन्हो = लिये ।

३. (क) कर = कर ।

४. (क) (ग) उपजी = उपजा ।

५. (क), (ग) (घ) तुम = तु ह ।

६. (क), (ग) (घ) तु ह मिया मोर हो में तु ह मारी ।

७. (क), (ग) (घ) बी = कर ।

८. (क) (घ) तब = कल, (घ) ठाऊ ।

९. (क) (घ) सनमुख दूरा रत मंह भुमा ।

१०. (क), (ग), (घ) सुसोचना = दिव्य सोचने ।

मुनो ठात में कइँ विचारी । मारो कटक सैन सम मारी ॥१०६०॥
 उठा गजि गरि तवहीं कैये । मानो कालि घटा है जैस ॥१०६१॥^१
 सुर सम कपित भए दुखारी । त्रहि त्रहि भगवान पुकारी ॥१०६२॥
 बीरभूमि बड़ा परचारी । मकट पाहन सीन्ह उपायी ॥१०६३॥
 मारहि एक बार सम जारि । घरि घरि कैंकहि कहि छिनरारि ॥१०६४॥^२
 सेइ सपेठि मुख मंह नारि । कान भाक दे जाहि परारि ॥१०६५॥^३
 परे पाहन तन दुख ना ध्यापे ।^४ गर्ने कोपि कटक सम कापे ॥१०६६॥
 नल नील बीर हनुमाना । मारहि पाहन बज्र समाना ॥१०६७॥
 धंगद भालु जामवंत बीर । कर्हि जुधी देखहि रघुबीर ॥१०६८॥

दोहा

वानन्हि मारि साहिल जिनो, ससा भरनो पर घाए ।^५
 धन धन कटक पुकारिया, प्रभुता कही न जाए ॥७१॥^६

चौपाइ

हु मकर्न जब रन में जूझा ।^७ दसकंधर तपसी बस भूम्र ॥१०६९॥
 हृदय साच मुख बाठ न घावे ।^८ प्रति होए गर्ब भंख नहि सावे ॥१०७०॥
 इन्द्रजीत कह सीन्ह बालारि । कग समर मारो दोनों भारि ॥१०७१॥^९
 वह दोता मार कटक वीरारि ।^{१०} सिव के घर तष होत सहारि ॥१०७२॥
 निघ्ना कोपि कोन्ह बड़ भूषी । टारेठ सैन महा बल भूषी ॥१०७३॥^{११}
 गजि वान प्रति होत प्रघाता । त्रिमि पर जुधी होत उतपाता ॥१०७४॥^{१२}
 रावन सैन सघारेठ केता । इन्द्रजीत तव छोड़ा सेता ॥१०७५॥

१ (क) (ग), (घ) कालि = काला ।

२ (घ), (ग), (ङ) कैंकहि = कैके ।

३ (घ) (ग) (ङ) दे = देह ।

४ (घ) (ग) (ङ) ना = नारि ।

५ (क) साहिल = साही ।

६ (घ) (ग), (ङ) कही = कहा ।

७ (घ) (ग) (ङ) में = मह ।

८ (क) हृदय दोष मुख बाठ बनारि । (ग) हृदय दोष तन बाठ म कावे ।

९ (घ) (ग) (ङ) दोनों = दोनों ।

१० (घ), (ग) (ङ) दोनों = दुनों ।

११ (क) पाठ अरुण ई अङ्ग (ग)-(घ) बाठ स्त्रीरूप दिया गया । (ङ) अरेठ सेन बने बल भूषी ।

१२ (क), (ग) त्रिमि मुनि पर होत उतपाता ।

विनय कीन्ह सुनो रघुनाया ।^१ इंद्रजीत के दीजिए माया ॥१११२॥
 बोसे राम तब वचन विचारी । कीन्ह के माया सेहुं निकारी ॥१११३॥
 मैं पसनी पतिवर्त जो ठाना ।^२ मन वच कर्म औरि नहिं जाना ॥१११४॥
 विकसा नैन मुह मुमुकाना । तब पसनी पति सीन्ह अपाना ॥१११५॥
 भर श्री माय दीन्ह रघुनाया । अरी तुरंत खसम के साया ॥१११६॥
 बन बन कहैत प्रेम प्रति सहैक । प्रीति सदा गुन पराट भएक ॥१११७॥
 साहस प्रेम भगिनि नहिं जाना । प्रति प्रेम अनु चकी विजाना ॥१११८॥

बोहा

तब रावन विसमय भए, भय किन्तु कहा न जाए ।^३
 महिरावन के सुमिरिह उमय पहर मैं भए ॥७४॥

भीपाई

तेहि सो मंत्र जो कीन्ह विचारी । भय किन्तु प्रनुठा करो संमारी ॥१११९॥^४
 हीत प्रीति कर यह बड़ कामा । यह दोनों बाधि से भावहुं भामा ॥११२०॥^५
 देवी पर सीस भानि चढ़ावहुं ।^६ तिरपित होए महाफल पावहुं ॥११२१॥^७
 रावन बहुत जो कहा बुझाई । तब उन्हेकें दिस निरुपय भाई ॥११२२॥
 बाधि सेठ सिर काटों जाई । भय प्रभूता वस कीन्ह बजाई ॥११२३॥
 सुत घर सुम वेहु देखाई ।^८ बाटो सात खण्ड तेहि जाई ॥११२४॥
 भए बिदा तब असे सुरता । खोजत खोजत भेटे भंवा ॥११२५॥^९

१ (क) विनय = विनै । सुनो = सोनो ।

२. मैं = मयं ।

३ (क), (घ) (क) औरि = पूजा ।

४ (क) (घ), (घ) कीन्ह = कीन्द्र ।

५ (घ) अनु = आयु । (क) (ग), (घ) विजाना = बेजाना ।

६ (क) (घ), (घ) मय = मयं ।

७ (क), (घ) (घ) निष्ठु = फलु ।

८ (क) यह दोनों = ए दोनों (घ) ए दो छ (घ) ए दुबो ।

९ (घ) (ग), (घ) खोज = खिर ।

१० (घ) (घ) (क) तिरपित = त्रिपिति । (क) (ग) दोए = दोहि ।

११ (क) (ग) बैर = बपर । (घ), (क) गुम = गुम्ह, (क) गुम है ।

१२. (क), (घ), (घ) भेटेउ = भेटिह ।

मैं जाइवि जहवाँ पति मोरा । बहुत बिन्य करि कीन्ह निहोरा ॥१०६४॥
 रावन सुनत सोक भति भएऊ । हिन्य दुखित मुख बात न भएऊ ॥१०६५॥
 बंध सुत नाचै तहाँ बसि गएऊ । बहुबिधि भातिन्हि वही बूझएऊ ॥१०६६॥
 तब द्विड करि अस बोसेउ बानी ।^१ इंदजीठ बस भुजा बखानी ॥१०६७॥
 ऐसन सुत मोरे ग्रिह जनमा । किहिसि जुषी जाने सम मरमा ॥१०६८॥
 तपसी बाँधि से घाएउ दोऊ । ह्रिय प्रेम मन भति छोऊ ॥१०६९॥
 जो क्यु करज समै भति मीका ।^२ बिन दीपक मंदिर हँ फीका ॥११००॥
 बाम काम कौन जग धरई । पिय बिनु जिये कौन फल लहरई ॥११०१॥^३
 दीजे हुकुम अनि बात बड़ाई । भति परिषंभ कइा गुन गाई ॥११०२॥
 तब संकिस्वर बोसा बानी । धन्य कहे जग सो मत ठानी ॥११०३॥^४
 चौपहला पर डारि घोहारा ।^५ पाँच सत ठेहि सागु कइारा ॥११०४॥
 त्यागा हित अनहित घरबारा । त्यागा कुस सकल परिवारा ॥११०५॥
 साहस करि सब बसी बिचारी । त्यागैत साल रतन सम भारी ॥११०६॥
 समै त्यागि पल मुक्त दीन्हा । ऐसो भोग जगत मह कौन्हा ॥११०७॥^६

सोहा

राम सखन सम सैन संग, यात्रिक रहे निहारि ।^७

सीताहि पठायो रावना, रहा भुजा बस हारि ॥७३॥

चौपाई

बोसे राम सुनु मंत्री ऐसे । इंदजीठ कर तिरिया जैसे ॥११०८॥^८
 सनमुत्र घाए कीन्ह प्रनामा । बदन छपाए बोसे सीगमा ॥११०९॥
 अप्या कौन कइो सति भाऊ ।^९ किमि कारन मुम ह्म पंहु भाऊ ॥१११०॥
 त्रिभुवन नाय मैं सदा मनाया । क्रिया करहुँ मैं होहि सजाया ॥११११॥

१ (क) (ग) (घ) द्विडकरि = दीकड़े । बोसेउ = बोसा ।

२ (क) क्यु = किहु । (ख) भति = भत ।

३ (क), (ग) (घ) बिनु पिया जिये कवन फल लहरई ।

४ (क) मत = मोती ।

५ (क), (ग), (घ) डारि = बाँध ।

६ (क), (ग), (घ) देखे = कएसे ।

७ (क) राम सखन संग सैन यात्रिक रहे निहारि । सीताहि पठायो रावना रहा भुजा बस हारि ।
(घ), (ग) बस यत्री कहे निहारि ।

८ (क) (ग) कर = की । (घ) के ।

९ (क) (घ) क्यु = क्यु गया ।

नामदेव कति जागे ऐसे ।^१ दास कबीर प्यान मठ जैसे ॥११३२॥
 मन्धीरि जागे सम केहु जाना ।^२ सतगुर भेद विरसे पहुषाना ॥११४०॥
 दोनों जने से कति मो कैसे ।^३ मानो मोस दास से जैसे ॥११४१॥^४
 पहुँचा ग्रिह मंह पढा जाई ।^५ सोई प्रिया तंह बात जानाई ॥११४२॥^६
 देखे प्रिया सुवर बर दोळ । राजकुमार कोमल है सोळ ॥११४३॥
 परम सुन्दर है प्रति छवि नीका । इन्ह कह्य राज लखन का टीका ॥११४४॥
 जतन करहुं जनि मारहुं मोरे । करौं विनय सुनु मानु मिहोरे ॥११४५॥
 नैन नारि नीचे ठरे पानी । पर प्रिया देखि सदा ससपत्नी ॥११४६॥
 यह माता हम सुठ करि जानी ।^७ उन्हेसे पुर्ब किमि करो बखानी ॥११४७॥^८
 इन्ह से बँर करे जनि कोई । जमपुर जाए रखातस सोई ॥११४८॥
 मंदोदरी बचन रावन नाहि माना । हमि करि पिय तुम मर्म मूसाना ॥११४९॥
 देवी भुक्ति बहुत दिन भएळ । ये दोनों माप बड़ावन चहेळ ॥११५०॥^९
 बाजन बासु देवी हरबानी । नेबज बनाए पार भरि पानी ॥११५१॥^{१०}
 मुसुक बाधि बोसे अभिमाना । भींच बग भस करे तेवाना ॥११५२॥^{११}
 का कर तुम हो को तुम जाना ।^{१२} सुमिरहुं ताहि जो इष्ट बखाना ॥११५३॥
 इन्हके मारे का फस पैहो । महा कठिन दुख वाल पैहो ॥११५४॥^{१३}
 कस प्रिया ते बोलसि घनीठी ।^{१४} इन्ह से तुम से क्य कर प्रीती ॥११५५॥
 जन्म जन्म को जानाहि मर्मा ।^{१५} कहीं भक्ति कहीं भव में भर्मा ॥११५६॥

१ (क) नामदेव कति जय जाये देखे ।

२ (क) (ग), (घ) मन्धीरि जागे सर्व जग जगना ।

३ (क) दुनो जने बतकि मो कएसे । (घ) (ग) दुनो जने से कति मो देखे ।

४ (क) कैसे = जएसे । (घ) से = लिए ।

५ (क) पहुँचा = पहुँची । मंह = मैं । प्रिय = प्रियी ।

६ (क), (ग), (घ) कह्य = के ।

७ (क) मोए मातु निहा हम छुट है जाना ।

८ (क), (ग) (घ) जतन पुर्ब किमि करो बखाना ।

९ (क), (ग) दोनों = दोळ ।

१० (घ) नेबज = मेवा ।

११ (घ) तेवाना = देवाना ।

१२ (क) (ग) तुम = तुम्ह, (घ) तुम्है ।

१३ (क) पैहो = छदिहो ।

१४ (क), (ग), (घ) ते = तुमि ।

१५ (क), (घ) जन्म जन्म = जन्म जन्म । बाजनि = बाजे ।

धीरि बसा फिरि मटका ठाढ़ा ।^१ चहुं दिशि बौरी है वड गाढ़ा ॥११०६॥^२
 हर विचार धति गर्ब गुमाना ।^३ बाधि लेउ दोनों धनुज धमाना ॥११०७॥^४
 राक्षस माया दीन्हु धति शारी ।^५ धायेउ नीद कटक सम म्छरी ॥११०८॥
 सुखमनि सापिनि वधे विकारा ।^६ जिन्हि यहु हयेउ सकल मंसाग ॥११०९॥
 म्याम बुक्ति संतन्य जो जाते ।^७ उरित ब्रह्म नी कर्कहिन धाने ॥१११०॥^८
 जगत सोषत सधु समाई । मनसा कामिनि पास न धाई ॥११११॥^९
 नन क्य महु रहा समाई । कने संतन्य विलग होए जाई ॥१११२॥^{१०}

शोधा

महिरावन तव पहुँचा, जह सोव सखन रघुबीर ।^{११}
 हनुमंत चौकी चहुं धोर, महा कटक भव भीर ॥७५॥^{१२}

श्रीपाठ

इमि करि जम जीव जो छाई ।^{१३} पर वध परे दया वड करई ॥१११३॥
 नाम प्रतीति भक्ति जी जान । धमिउ नाम मुखा सम साने ॥१११४॥
 बह मुधा तह विलि महि जाई । विमल प्रेम सदा मुक्तगई ॥१११५॥
 जगत रनि मूठे नहि बौरा । सतगुर वचन करहुं जनि भोग ॥१११६॥^{१४}
 महामोह फँस वड भारी । बाधेउ सुरंग फाँस शिव शारी ॥१११७॥
 गोरक्ष जागे साधि सरिंग । हनुमंत जागे सोबे रघुबीर ॥१११८॥^{१५}

- १ (क), (ग) बसा = बसे ।
- २ (क), (ग), (घ) दिशि = धोर ।
- ३ (घ) धति = धन ।
- ४ (क) लेउ = लेहु । (घ), (ग) दोनों = दुनो । (घ) धुसो ।
- ५ (घ), (ग) धति = तव । (घ) राक्षसी मया धति दीन्हो धारी ।
- ६ (घ) सापिनि = सापिन । वध = वधेयो । (क), (ग) (घ) विचारा = देधार ।
- ७ (क) म्याम वेतनि निरु ठुकि बव जलै । (घ) म्याम वेतनि ठुकि जो जलै ।
 (घ) म्याम वैतन्य ठुकि जो जलै ।
- ८ (क) उरित = वरम ।
- ९ (घ) धाई = धरई ।
- १० (घ), (ग) वैतन्य = वैतनी । धोर = हो ।
- ११ (क) (ग) (घ) तव = तादा ।
- १२ (घ), (ग) इतिबंध चौकी चहुं दिशि ।
- १३ (क), (ग) जो = क्य, (घ) बई ।
- १४ (घ) वचन = कल्प ।
- १५ (घ), (ग), (घ) हनुमंत = इतिबंध ।

दोहा

सखन कहा सत पुरं है, आकर मैं निजु दास ।
हमर सेवक हनुमान है, रावन मानत जास ॥७७॥^१

श्रीपार्श्व

पाएहु सुना यजावहु गासा । कर देखसइतौ तोहरे हासा ॥११७१॥^१
प्रसाद पाए जो भरि पेट बटका । उठा कोपि जमी पर पटका ॥११७२॥^२
तुभा भुमाइ तहां दए मारी ।^३ अंह नारि पुरं सेने पासा सारी ॥११७३॥^४
नम्र धनाय भोग अकुत्साना ।^५ वन पवनसुत करे बखाना ॥११७४॥
राम दोहाई तेहि छोड़ि दीन्हा । मारिब पेट बहुत खून कीन्हा ॥११७५॥^६
छोड़ि बांभ बाहर बसि आएउ ।^७ देखत बटक समं मिसि घाएउ ॥११७६॥^८
छुइ छुइ भरन श्रीगृह परनामा ।^९ भानव मंयस पूरन कामा ॥११७७॥
महिरावन के वस तुम रासा ।^{१०} सोर उषारि मरोरेख सासा ॥११७८॥^{११}
धर मा कहो नौम प्रमुताई ।^{१२} सिया से मिसहुं तुरंतहि जाई ॥११७९॥
होइई सम किन्हु तुम जो बधिहौं ।^{१३} बंका राज बहुरि फिरि मधिहौं ॥११८०॥
कहे दसानन मुख किमि मोरिहौं ।^{१४} तपसी वन जेन अनु तोरिहौं ॥११८१॥^{१५}
धीस भूजा दस मनुष जो रासा । छुटिहै बान अनेकन्हि सासा ॥११८२॥

१ स्त्रीरूप (क) प्रति में 'कहे रावन मानत जास' पठ है । (ख), (घ), (च) घोर सेवक हनुमान है । रावन मानत जास ।

२ (क) भरि देखसइतौ तोहरे हासा । (ख), (घ) भरि देखसइत तोहरे हासा ।

३ (क) (न) (ब) जमी = जमी ।

४ (क) (घ) (च) तुभा = तभा ।

५ (क) प.सा = पसा । (ख), (ग) सारी = सारी ।

६ (घ) नम = नवर ।

७ (घ) पेट = पेट । (घ) पेटिहै ।

८ (क) बांभ = बांभ ।

९ (ख), (ग), (घ) प.र.ना.मा = प.र.ना.मा ।

१० (क) (घ) (च) कीरुह = करिहै ।

११ (क) से = सर ।

१२ (ख), (घ), (च) प.रे.ख = प.रे.खि ।

१३ (घ) सम = सम । प्रमुताई = परमुताई ।

१४ (क) मोरहो सम किन्हु जो तुम बधिरो ।

१५ (क) मिसि = मिसि । (घ) बाहे ।

१६ (क) पूरी पंक्ति का पदनाश ।

दोहा

दोनों समुक्ति कर राखिए, न तो कर मिजि पद्यताए ।^१
जहां से बांधि ले भाएहुं, वहां देहुं पठुंघाए ॥७६॥

श्लोकाई

उठी कटक सब परा खंभारा । राम रूप तहि लखनकुमारा ॥११५७॥
उठी पवनसुत सुन जो देखा । चहुं ओर राम सखन कह पेखा ॥११५८॥
चहुं ओर दौरि संगुर जो पटके । बोले गजि निमि यादर सङ्के ॥११५९॥^१
दौरि बपटि खोजो चहुं जाई ।^२ महिगवन की वाध बनाई ॥११६०॥
जम कतरि तोरि पठुंघा जाई ।^३ देवी दाबि संह रहे छपाई ॥११६१॥^४
सब कह लेइ देवघर में गएऊ ।^५ नम्र लोग सब देखन गएऊ ॥११६२॥^६
सका रावन भया भ्रमिता । भति होए गव महा रन जीता ॥११६३॥
नारि पुखं मिसि बाजी साई । पासा शर्यह बहुत बनाई ॥११६४॥
मैं जीतों तपसी वन धावा । छैं जीतसि सका उत्पत्ता ॥११६५॥
सुमिरों ओ तोहरे कोइ हीता ।^७ मार्य माय विलम बहु बीता ॥११६६॥
भव तो परहुं संकट मह नीके । श्रीक हाय भजेमा जो बीके ॥११६७॥^८
मर्कट भालु कटक तुम साजा । मारल बहु सकेस्वर राजा ॥११६८॥
भव तो फं परेहुं सुम धाई ।^९ करिहों इहां कौनि प्रभुताई ॥११६९॥
मैन सुत्रा मुख वाध न धाये ।^{१०} कहुो कछु तोहरे दिस माने ॥११७०॥^{११}

१ स्वीकृत (क) प्रति में 'मिजि केरि पद्यताए' पाठ है । (क) (ग), (घ) दोनों = कुनो ।

(ख) कर = कै । संहा = तांहा (घ) तदनी ।

२ (ख) दौरि = दवरि । (क), (ग) (घ) तपके = तपके ।

३ (घ), (ग) (घ) खोजो = खोजे ।

४ (ख) कतरि = कतर । तोरि = तोर ।

५ (क), (ग), (घ) संह = तांहा । (घ) रहे = रदा ।

६ (घ), (ग), (क) कह = बोध ।

७ (क) बाएऊ । (ग), (घ) वाड स्वीकृत ।

८ (घ) सुमिरु ओ कोइ दे तोर हीता । (घ) सुमिरु ओ तोर है कोइ हीता ।

(घ), सुमिरु ओ तोहरे कोइ हीता ।

९ (घ) (घ) श्रीक के हाय भजेमा जो बीके । (घ) श्रीक हाय भजेमा जो बीके ।

१० (घ) (घ) भव तो रं परे परे तुम धाई ।

११ (क) सुत्र = कछु ।

१२. (क) दिस = जीव ।

मंघकार कछु नजरि न भाये । सुजं कला कंठ जाए खपाये ॥११६६॥
 माया राम तम सम झूटा । दसकंभर के सिर ठग झूटा ॥११६७॥^१
 पस सिध छिनि यवन पत भएऊ ।^२ सुर नर बंध समै छुटि गएऊ ॥११६८॥
 भारति मंगल सम मिलि गाया । राम प्रताप चहुँ विधि छाया ॥११६९॥
 बुधी बड़ी छनछिन बखाना । कबि भास्य से भेद भ्रमाना ॥१२००॥
 वाठ बड़ाए कहैत कवि केता । भक्ति म्यान प्रेम निजु हेता ॥१२०१॥

शोदा

भार्तव मंगल सूर नर, रहे समै हरलाए ।

सीता कसी कमल की, विकसि मानु खनि छाए ॥७६॥^३

भैयाई

कटक टिकाए अनुज सिए साया । सिय के पास भले रघुनाया ॥१२०२॥^४
 हिम के ठेग कमल जेवो पूसा ।^५ सीता बदल इमी करि पूसा ॥१२०३॥^६
 पड़ी धरम रज तिमक संबारी । सदै सिवल तम मन सम बारी ॥१२०४॥^७
 सिया सुफल धदि मिले श्रीरामा । भार्तव मंगल पूरन कामा ॥१२०५॥
 सखल प्रताप कीन्हु सिर गाई । दीन्हु धरीस भक्ति पत्र पाई ॥१२०६॥
 सिम पति प्रेम प्रिया रघुनाया । पुगल रहे जिव सिम के साया ॥१२०७॥^८
 सखि सीतल सदै भ्रमी भनूया । बल कमोद कलि विकसि सख्या ॥१२०८॥^९
 राम नाम मानो भ्रमिठ बरिधा । प्रेम प्रवाह सदा सुख बैसा ॥१२०९॥^{१०}
 सीप भिया तन सदा समेहा । पड़े बूद तम उपरै वेहा ॥१२१०॥
 सेवाती सरग संयोग बनाया ।^{११} सीप संधु मुकुटा मनि पाया ॥१२११॥
 बसरम तम तप कीन्हो पैमा ।^{१२} जगजमुठा विकसी भति प्रेमा ॥१२१२॥

१ (क), (ग), (घ) तप = सम ।

२. (क) (ख), (घ) सीस = सिर ।

३. रघीरुठ (क) प्रति में 'मायु इति धनि छाए' पाठ है ।

४ (क) कसे = मित्रे ।

५ (क) हिम = हिम । (ग), (घ) हेम ।

६ (क), (ख) सीता = श्रीमा ।

७ (क) सदै = सदा ।

८ (घ) के = एक ।

९ (क) कमोद = कमल ।

१० (क) प्रवाह = परवाह ।

११ रघीरुठ (क) प्रति में 'सेवाती सर्व संयोग' पाठ है ।

१२. (घ) पैमा = प्रेमा ।

कान व्यास फंद सम डारों । काटि कटक दोना के मारों ॥११८३॥^१
 काटि कटक सम सैन घोराणा । तबहुं न गर्व तेजहुं अभिमाना ॥११८४॥
 नावी पुत्र भाठा सम गएऊ । हमरै जिवे कौन फन लहेऊ ॥११८५॥
 भय हम संमर करव भति नीका । मोरे मारे कटक नहि टीका ॥११८६॥^२

दोहा

पेन्हि सनाह संजोर सम, उठा गजि कर कोपि ।

माया भम सम कटक में, कहुं धोर डारिसि तोपि ॥७८॥

धंद

महाभीर यह बीर बाके वान सखसन छुटिया ।
 होत गर्द यह पदस जमीं पर एक एक सिर दूटिया ॥२५॥
 कटक भागे पटकिसीस सम झटि सम भिसि जूटिया ।^३
 बाल ब्यान सम फंद डारेड सखन चर्माहि सूटिया ॥२६॥

सौरठा

पाहन सीन्ह उषारि, भरि पर्वत सिर डारिया ।

पवन तनय कीन्ह मारि, रावन रोम ना दूटिया ॥१३॥^४

कहे नारद सुनो सगराया ।^५ बाधेठ नाग फांस धरि बाया ॥११८७॥
 दौखुं बगि धोड़ावहुं जाई । राम सखन के सेहु मुकुटाई ॥११८८॥
 चले गरुड़ तब कीन्ह पढाऊ । दसठ नाग फांस छुटि जाऊ ॥११८९॥
 रावन बास धाचम्भो साई ।^६ छूटे राम सखन दोनों भाई ॥११९०॥
 बहुरि कटक सम उठि उठि ठाड़े । पवनमुठ रोस भति बाड़े ॥११९१॥
 दुर्म उषारि धुमावहि बैये । परे बख सिर ऊपर जैये ॥११९२॥^७
 रावन गजि उठा फिरि म्हारी । राम कटक कह लागी कागी ॥११९३॥^८
 राम धनुस वान जय पीषा । मारा माय परा निमि नीषा ॥११९४॥
 जाया केरि निजापर राया । बहुरिनिहिसि फिरि प्रगटीमाया ॥११९५॥^९

१ (अ) बेनी के = बुनो कर । (ग) (घ) बुननिह ।

२ (घ) अतिरिक्त पाठ—रावन बचन ।

३ (अ) (ग) सिस = सिर । (अ) (ग) धम = समै ।

४ (अ) तनय = तने । (ग) पवन = पौन ।

५ (घ) सुनो = सुन । (अ) अतिरिक्त पाठ—नारद बचन ।

६ रघुवीर्य (क) प्रति में 'धाचम्भो' पाठ है । (अ) (ग), (घ) दूटे राम सखन दोनों भाई ।
 रावन बस धाचम्भो साई ।

७ (घ), (घ) बख = बजर ।

८ (घ) (ग) (घ) कह = कह ।

९ रघुवीर्य (क) प्रति में 'दिर जाया' पाठ है । (अ) (ग) प्रगटी = प्रगट ।

सेठ बांध तंह कटक बिराजे । सेंधु उतग सहरि तंह छाजे ॥१२३१॥^१
 बंह रामेस्वर पाप बनाई ।^२ परदम्भिन करि जैसे गोसाई ॥१२३२॥^३
 कानन्ह भेटा महामुनि म्वाता ।^४ कीन्ह प्रनाम प्रेम भति रता ॥१२३३॥
 वित्रकूट कटक तब भाए ।^५ परबम बन जंह राम बोहाए ॥१२३४॥
 उठी महामुनि भासिख दीन्हा ।^६ करि प्रनाम प्रीति भति मीन्हा ॥१२३५॥^७
 कोरहु किरात भील सम भाए । राम चरन रज सीस नवाए ॥१२३६॥

रोहा

राम चरन रज प्रीति करि, भति भानन्द गुन गाए ।
 धन्य वरसन तुम राम पद, सेतन्ह सदा सहाए ॥८१॥

बोपाई

रनि रहे निम्बु मुनि के साषा । सम विरतंत कहे रघुनाया ॥१२३७॥^८
 करि प्रनाम भामे पगु दीन्हा । सम मुनि उठि परदम्भिन कीन्हा ॥१२३८॥
 भाए प्रयाग निकट नियराई ।^९ भति भानंद मी भंग न समाई ॥१२३९॥^{१०}
 सुरसरि सर्व कटक भसनाला । सिया राम पद संकज जाना ॥१२४०॥
 धरमुक्त प्रीति प्रयागपुर भाई । भारदुषाज मुनि मंदिख सोहाई ॥१२४१॥^{११}
 भासिदाद मुनि धन्य सीरामा । दैत निकरन पूरन कामा ॥१२४२॥
 रनि रहे विरतंत सुनाया । भारदुषाज मुनि गुन सम गमा ॥१२४३॥
 सिया के मिसी महामुनि नापी । भति होए मगन प्र म रस बापी ॥१२४४॥
 जनकमुठा तुम सदा सग्यानी ।^{१२} जहां मनि बरे बिमा तहि भानी ॥१२४५॥
 राजगुरु मुनि सम दिन भएऊ । भक्ति प्रेम निम्बु कथा सुनएऊ ॥१२४६॥

१ (ख), (ग) (ब) तंह = ताहां ।

२ (ब) (ग), (ब) बंह = बाहां । (ब) रामेस्वर = रामेश्वर ।

३ (ब) परदम्भिन करि तब जैसे गेसाई ।

४ (घ) (ब) कानन्ह भेटा महा मुनि म्वाता । (ब) कीन्ह भेटा महा मुनि म्वाता ।

५ (ब) (ग) वित्रकूट = वित्रकुटी । (ख) भाए = ब्याह । (ग) बोहाए = बोहाय ।

६ (घ), (ग) भासिख = भासिख ।

७ (ख) करि प्रनाम तब प्रीति भति मीन्हा ।

८ (घ), (ग) (घ) बहे = ब्याह ।

९ (घ) प्रनाम = परनाम । (ग), (ब) प्रनाम = प्रनाम ।

भानन्द = धनन्धन । (घ) भानन्द = धनन्धन । (ब) भानन्द = धनन्धन ।

१० (घ), (ग) (ब) बाहां भारदुषाज मुनि मंदिख सोहाई ।

११ (घ), (ब), (ब) तुम = तुंह ।

सम विधि प्रानंद पूरन काजा । तितक दीन्ह बिभीखन राजा ॥१२१३॥
 बिभीखन भूप मंदोदरी रानी । कहा विरंचि वेद यह वानी ॥१२१४॥
 संसय सागर सम घट भरई । राज काज मद सम बोइ चहई ॥१२१५॥
 सगरे कुल के कीन्हो नाठा । तब पाएउ राज बिभीखन पासा ॥१२१६॥^१
 माया प्रबस है फंद प्रनता । ग्यान परि माया विष तंता ॥१२१७॥^२
 कुल के घात पाप बड़ भरई । मुक्ति छोड़ि नवसागर बहई ॥१२१८॥^३
 ना पतियाउं तो साक्षी साचा । भक्ति विबेक ग्यान ते बाचा ॥१२१९॥^४
 क्रिस्ल कहा पांडव से वानी ।^५ कुल के घात पाप बड़ प्रानी ॥१२२०॥
 मोर मुक्ति कहो कैसे होई ।^६ जौ लगि प्रेम जुक्ति सहि सोई ॥१२२१॥^७

दोहा

संत दरस दिन चाहिए, बेदर्दी भेषीर ।

धन्य सोइ धन्य ग्यान है, मन माया है धीर ॥८०॥

चौसाइ

भंगद कवि जामवंत साया । लखन मैन संग रघुनाया ॥१२२२॥
 बनब कोट से बाहर भएऊ । प्रति भौ हक गुन किमि बनि गएऊ ॥१२२३॥
 जोजन चारि तहाँ सम टीका । बटक वीच राम मनि टीका ॥१२२४॥^८
 उठी प्रात सभी सिंग नाई । धीर धीर सम सैन सुहाई ॥१२२५॥
 सखन राम सिया विष सोना । प्रति होए हक राम पद लोना ॥१२२६॥
 मगु में भगन प्रानंद विराजे । राम प्रताप सिया सिंग छाजे ॥१२२७॥
 गढ़ सुमेर सह पहुँचि मारि ।^९ सम मित्र बन फल खावहि जाई ॥१२२८॥
 बडि बटक सम कोइ साया । सुप्रिय प्रेम प्रिया रघुनाया ॥१२२९॥^{१०}
 उठी प्रात तब जले तुंगता ।^{११} सागर बाधि कीन्ह एक प्रता ॥१२३०॥

१ (घ), (ग) पाए = आवे । (घ) भासो ।

२ (घ) तंता = मंता ।

३ (घ), (ग), (घ) बहई = पड़ ।

४ (ब) ते = मे ।

५ (घ), (घ) क्रिस्ल = क्रिमुन । (ब) पांडव से वानी = दंडो से वानी ।

६ (घ) (घ) (घ) होई = पड़ ।

७ (घ) (ग) (घ) बा। लमि प्रेम मति मारि कर ।

८ (ग) बटक विचारि राम मित्रु टीका ।

९ (ब) (घ), (घ) सह = टांटा ।

१० (घ) सिया = सैनि ।

११ (घ) सागर = बसाठ ।

समं बोसाए बोसे त्रिभु बानी । मौन सुमंघ सुषा सम सानी ॥१२६६॥

बोहा

तिलक वीजे त्रिभु राम कहूँ, बंठि सिंगासन जाए ।
ताद बेव सम विमल बोसत, मुनि त्रिभु कथा सुताए ॥८३॥^१

अंद

मोह कौह सम बूरि विसंगेठ धानन्द मंगल गावहीं ।^२
ससी सुगंध सम रंग सोमा बंदन चरित सावहीं ॥२७॥
भूषन बसन अडाम नलकल सुंदर कसी सोहावहीं ।^३
रूप रासि सिमा सब सुंदर भवन वीच मनि भावहीं ॥२८॥

सोरठ

भएउ संपुरन सम काज संसम सकस विहाए के ।^४
भवबपुर में राब, कुन कमस रुपवर बने ॥१४॥

चौपाई

कटक बिदा कौन्ह खीरामा । पडुषि त्रिभु सम अपने पामा ॥१२६७॥
बाममीक मुनि तुमसी मासा । राम चरित्र जगत अथि रासा ॥१२६८॥^५
कहेठ म्यान त्रिभु कथा प्रसंगा । भक्ति विवेक मोह होए मंगा ॥१२६९॥
धादि अंत पूछा सिख भाई । छुसुम कथा त्रिभु म्यान सुताई ॥१२७०॥
भक्ति विवेक भी म्यान बिरागा । आठम बरस म्यान तब आगा ॥१२७१॥^६
सप्त बसन त्रिभु करहि विवेका । निगम निखेर म्यान विच देवा ॥१२७२॥
म्यान रसिक विनु मन महि बीरा ।^७ बंधन इमि करि सकस सरीरा ॥१२७३॥
प्रसट जोग कष्ट करि बोधे । उसटि पवन प्रमूहहि छाधे ॥१२७४॥
नेतरि नट नाथे बहुतेरा । काम कठिन तन छोड़े ना बेरा ॥१२७५॥
सर्व भ्यापिक सुर नर माठा । संलित मोह मुसद तन राठा ॥१२७६॥
मोह बिटप उर पट सिए हाया । मदन मनोरम गनि गुन गाया ॥१२७७॥
भुक्ति न जोग कुजोगहि राठा । जिमि अरिभक्ति के दूटे न पाठा ॥१२७८॥

- १ (क), (घ), (च) कुनए = खेदाए ।
- २ (घ) (ग) (ङ) विवेक = विचारेयो ।
- ३ (क) (घ) (च) कसी तु वर सोहावहीं ।
- ४ (क) मयो संपुरन सम काज ।
- ५ (क), (घ), (ङ) अथि = अथि ।
- ६ (घ), (च) (ङ) आठमबरस प्रमूह तब आगा ।
- ७ (क) रसिक = रस ।

सर्व जोति जगत मनि जैसे । श्रीरि भार्जा षग बहु ऐसे ॥१२४७॥^१
 त्रिया सोइ प्रेम प्रिय मीका ।^२ मूदन बसन भक्ति विनु फीका ॥१२४८॥
 पतिवर्ता के गसे ता मोती । सम सखियन में म्भके जोती ॥१२४९॥^३
 सधु नहि बचन मोद मन भरई । सो पतनी पति पायन्ह परई ॥१२५०॥
 सनिष भक्ति सोइ नै नीठा । सिया प्रेम पद पकज हीठा ॥१२५१॥^४
 गुगल रहे षग धालर दोक ।^५ मुक्ति मांगि भञ्जित फल सोक ॥१२५२॥
 सोई सिव सोइ सक्ति बखाना । धन्य धन्य जग में परधाना ॥१२५३॥^६

दोहा

राम मुरति सुम्में बसे, तुम मन बसे जो राम ।
 सदा गुगल एक साय है, सम विधि पूरन काम ॥८२॥

शौपाई

तुम सम साएक किमि में कहेऊ । महा मुनि त्रिया म्यान पं रहेऊ ॥१२५४॥
 तुम सम सुषरि सकल गुम हीठा ।^७ मुनि पथ पंकरु सदा पुनीठा ॥१२५५॥
 करि प्रनाम शक्यपुर गएऊ ।^८ नर नारी सम हकित भएऊ ॥१२५६॥
 कौसिसा केरई सुमित्रा माता । कीन्ह प्रनाम प्रेम निजु राता ॥१२५७॥
 भारति सम मिति मंगल साजा । बहुत भनविठ बाजन बाजा ॥१२५८॥
 करहि निष्ठावरि देहि सम दाना । पाठ पुरान भक्ति भगवत्ता ॥१२५९॥
 गुह के धरन परबहुं भांसी । उपजा प्रेम मन अहुं पासी ॥१२६०॥
 मुनि के सेइ मंदिर में गएऊ । जग्य पवित्र करि पूजा करेऊ ॥१२६१॥
 भोजन करहि विप्र सम धाई ।^९ दछिना दान दीन्ह रघुपारै ॥१२६२॥
 भरत सपन अतुगुन साया । सममिति तिलक दीन्ह रघुनाया ॥१२६३॥
 राजा राम सीता भी रानी । सभषट विकसित भञ्जित धानी ॥१२६४॥^{१०}
 शक्य के सोग सम सुखद धनदा । जल में कुमुदिनी पूरन धंदा ॥१२६५॥

१ (घ) (ग), (घ) भार्जा = माता ।
 २ (क), (ग), (घ) प्रिय = प्रिया ।
 ३ (घ) (ग), (घ) मे = मैं ।
 ४ (क) (ग) (घ) प्रिया = त्रिया ।
 ५ अय = यह ।
 ६ रघुपूरु (क) प्रंत में 'जग में ही प्रपत्ता पाठ है ।
 ७ (क) हीठा = म्याठा । (घ) (ग), (घ) पाठ रघुपूरु ।
 ८ (घ) प्रनाम = परनाम ।
 ९ (घ) विव = विवर ।
 १० (क), (ग) (घ) धानी = धानी ।

दोहा

तब हूँ ममरापुर मंह, पुरुष परसंग सुखवास ।
मम्रित भरि बहु भावहि, सुनहु बभन निनुवास ॥८५॥^२

बीपार्थ

तब रहे घरती धम भी दाया । तब रहे कुम पत्र सभ छाया ॥१२७॥^१
तब रहे वेद विदित जग जानी । तब रहे संग भी सीख भवानी ॥१२८॥^२
तब रहे गंगा जमुना नीरा । तब परगट जग बड़ बड़ बीरा ॥१२९॥^३
नवो नाथ रहे गोरख जोगी । भक्त भेल मूप रस भोगी ॥१३०॥^४
जह ठह मुनि सभ अप सप करई ।^५ जय्य जोग निनु वासर सहई ॥१३०॥^६
विविध पून रहे पत्र धनता ।^७ मता सपटि धमुरे मुनिमता ॥१३०॥^८
सतगुर मत सब जग नहि रहई । आपन-आपन गुन सभ कहई ॥१३०॥^९
बीष लोक है मुक्ति के मूसा । प्रावागवन भेटे सभ सुला ॥१३०॥^{१०}
जम कागज फिरि कियो निसंका । भव में भर्म मया किला ॥१३०॥^{११}
सामर्थ सत बेहि होहि सहाई । ऐगुन गुन सभ करहु भलाई ॥१३०॥^{१२}
नह सक करनि बने तर छोई । बाह गहे मम्रित फल सोई ॥१३०॥^{१३}
त्रिविध ताप तन भेटनिहारा ।^{१४} बया करहु भव संघु उवारा ॥१३०॥^{१५}

दोहा

जग में आए प्रगट भयो, त्रिगुल सीसा संवारि ।
कयेउ ध्यान निनु निर्मल, सत सद्य निरुमारि ॥८६॥

इन्द्र

विक्रि विमल गुर कंज पद मह धानंद मंगल गावहीं ।
मुक्ति महिमा ध्यान की गति त्रिनिर सकल भेटावहीं ॥२१॥^१

१ (क) (ग), (घ) मंह = मे ।

२ (क), (घ), (च) सुनहु = सुनी ।

३ (क) दुर्म = दुल। ज = पतर ।

४ (क), (घ) तब रहे सिव भी ठप भवानी ।

५ (घ) जहाँ तहाँ मुनि जपलप करई ।

६ (क) रहे = है ।

७ (क) (ग) मुनिमता = मुनि संता ।

८ (क), (घ) मव ये भ्रम मया निरलंघ्य । (च) मया = मयो ।

९ (क) निहारा = विहास ।

१० (क) त्रिनिर = त्रिविध (क) (ग) (घ) त्रिनिरि । बरी पल स्वीकृत ।

रतन भार्जा भी भम साधा । मोर मगन वन इमि करि नाचा ॥१२७१॥
 नैन ख्य दिस्टि मंह पेख । सक्ती छवि सम व्यापिक देख ॥१२८०॥
 सुखमनि यह तन प्राचेउ जवहीं ।^१ कामिनि रूप मनि छवि घरु तवहीं ॥१२८१॥
 कंदर्प धरि के सेठ निचोरी । सुख प्रति प्रापित भञ्जित धोरी ॥१२८२॥
 सतगुर दया त्रिस्टि जब देखे । तब गति ग्यान सुधी तम होखे ॥१२८३॥

दोहा

सत गुर चरन सुधा सम, विनय कीन्ह सिर नगए ।
 ग्यान गमो निजु भाखिए, सुनो स्रवन चित साए ॥८४॥

चौपाई

तुम सतगुर हो ग्यान का टीका ।^१ भेख भम मोहि लागत फीका ॥१२८४॥
 सतगुर चरन सुधा सम सहो । विमल चरन पद पंकज पहो ॥१२८५॥^२
 महा महामुनि विमल पुनीता । वेद विदित पढ़ि गुर गमि गीता ॥१२८६॥
 इन्ह पुर्ख नहि किमि करि जाना । माया ब्रह्म नाहि पहचाना ॥१२८७॥
 तब तुम भग में रहेहु कि नाहीं । पूछे विना भर्म नहि जाहीं ॥१२८८॥
 करहु विवेक कहीं समुझाई ।^३ विमल प्रेम निजु कया सुनाई ॥१२८९॥
 जो यह देखे छोड़ सब जाने । छोई ठाकर मूल बखाने ॥१२९०॥
 तब हम रहेउ पुन के पास । पुरुष दीप जह प्रेम सुबासा ॥१२९१॥
 तख पास पुरुष की सानी ।^४ तंह रहे बठि मुक्ति सत ग्यानी ॥१२९२॥^५
 हंसन्ह पास विमोद बिनासा ।^६ भञ्जित मरि चहुँ बरिसे पासा ॥१२९३॥^७
 वेद पुरान कया सम कीन्हा । इमि करि पुन नाम नहि चीन्हा ॥१२९४॥
 ब्रह्मा वेद विदित जग जानी । तीनि लोक इमि कया बग्यानी ॥१२९५॥^८
 तीर्य बत जोग तप करई । मुनि मत प्रापन सुख सम सहई ॥१२९६॥

१ (क) भर्म = भ्रम ।

२ (क) (ग), (घ) बह = इषा ।

३ (क) (घ) (च) का = के ।

४ (क) (घ) (च) पैरो = गण्डो ।

५ (क) बहो = बहा ।

६ (क) घापी = घीनी ।

७ (क) (ग) (घ) तदां वेठ रहे मुक्ति सानी ।

८ (क) ईसर = ईश्वर । (घ) इमिदि ।

९ (ग) (ग) (घ) भञ्जित मरि बरिसे चहुँ जग ।

१० (क) टीनि = टीनों ।

इमि कर देखे बदन कर रेखा । प्रहे विदेह प्रिस्टि में पेला ॥१३२४॥^१
 जो कवि कहेउ सोइ सम साधा । जेबों छबिमानुकिरनि रचिपथा ॥१३२५॥
 निर्गुन सगुन निगम रचि राखा । दुर्म छोड़ि बरने सम साधा ॥१३२६॥^२
 ऐसो माया जळ रचि राखा ।^३ ग्रन्हा बिस्तु हँ ताकर साधा ॥१३२७॥
 कवि कलि कर्म संत जग बीना । प्रिह प्रिह वरुा कहीं प्रमीना ॥१३२८॥
 वधी मये घित बाहर भावे । इमि कर सप्त नाम निमु पावे ॥१३२९॥
 जो सगि टीका मूस न पावे । बहुरि बहुरि भव सागर भावे ॥१३३०॥
 तिरगुन घाट पठ संभारी । सखी नाम किनु तपु बिचारी ॥१३३१॥
 पारख विन हीरा विसरावे । बिनु गुर प्यान गमी कहीं पावे ॥१३३२॥^४
 कर गहि सेहि दहि जमी बारी ।^५ संप्रह माया बिसय बिभिचारी ॥१३३३॥^६
 अस कुकुबन्दि जस ही में बासा । किमि करि जाहि संघु के पास ॥१३३४॥
 जो वक साहि कुमुदक हीता ।^७ मच्छ भच्छि भच्छि गावहि गीता ॥१३३५॥
 धई मराल मति सत सुभागा । मोती मनि पित पु गन सागा ॥१३३६॥^८

दोहा

हंस बंस मति संत गति सदा सुखी मन सेत ।^९
 कहै दरिया दल कंबल पर, भौर भाब निनु हेत ॥८८॥

सेबक बचन^१

गहर ग्यान किमि मोह प्रसंगा । सतगुर बचन कहो सतसंगा ॥१३३७॥
 सुनत बचन मोहि प्रति प्रिय सागा । कटिबाए तम तिमिर सम भागा ॥१३३८॥^२

१ (क) (ग) (घ) में = मर ।

२ (ख) (ग) दुर्म = कुकुम ।

३ (क) ऐखे = पारखी । (घ) ऐखी ।

४ (क) पारख = पकख । (ख) (ग) बिनु गुर गमी ग्यान कहीं पावे ।

५ (क) (घ), (ख) जमी = ज़िमी ।

६ (क) संप्रह करै सिखे बिचारी ।

७ (क) (ग) जो बक जाहि कुमुदक हीता । 'कुमुदक' कल्पद्रुप है ।

८ (ख) मोति मनि निष्ठ पु यल लाम्प ।

९ शीरुत (क) १. त्रि में प्रस्तुत दोहा इस प्रकार है—जेबों हंस बंस मति संत गति,
 जो वरा सुखी मन सेत । कहै दरिया दल कंबल वरुा पर, भौर भाब निनु हेत ।

१ (घ) सुबन्तद बचन ।

११ (ख) कटि गो तम तिमिर तव भागा ।

भयरहित भर्म बिसाद यह सभ ठकै ठरनी पावहीं ।
संसप सब विहाए इमि कर कम कसि बटि जावहीं ॥३०॥^१

सोरठा

धसे सो भव जस नाव, सतगुर कर कनहरि गहो ।
ग्यान भक्ति निजु भाव, गुरप पकम मंजन करो ॥३१॥^२

श्रीपाद

पहिले भक्ति भाव तव कहिहा । संत होए ग्यान सब चीन्हा ॥३२०॥
होखे ग्यान कम कह नावा ।^१ समिमंढल सुण सागर वासा ॥३२१॥
सत पुर्व निजु ग्यान दिवायो । प्रगट कथा गमि केहु केहु पायो ॥३२२॥^२
संत संत कथि मुनिवर साई । मिले न ग्यान माया बसि होई ॥३२३॥
तीनि सोरु अहिमंढल माया । इद्रजान रथि भर्म वनाया ॥३२४॥
जग में कहेउ मुक्ति का मूला । ग्यान न भुके भम भव भूला ॥३२५॥
पाहसे भूने बिरंथि विघसा । जिहि यह वेद कयेउ बह ग्याता ॥३२६॥^३
भूसे सब ब्रह्मा कर जाया ।^४ कर्मनाहि जिन्हि जग कैनाया ॥३२७॥
तीर्थ वर्त कम रथि राखा । करि सटकम ग्यान नहि माया ॥३२८॥
जोगी जती भूले सभ भाई ।^५ सट दर्शन मिलि रथि बसाई ॥३२९॥
कास हिडोला सभ मिलि भूना । भेस धरी पदि पंडित फूना ॥३३०॥
सतगुर बिना कर्म नहि छुटे । परि परि कान भवन में सुटे ॥३३१॥^६
बिमन नाम मत कबहि न सागे । भो परगट परिमल रंग जाये ॥३३२॥
मिज्ञ ने पूछा गुर गमि बहेऊ । भादि संत परमारथ सहैऊ ॥३३३॥

होहा

बुझु सत सत यह, सतगुर बचन प्रवीन ।
करो बियेक बिचारि के, पुर्व माया त भीन ॥३०॥

श्रीपाद

पठि पठि कवि देखहि बसे । मकुर बीच रहे प्रतिमा जसे ॥३३३॥

१ (घ) (ग) (घ) इमि कर = इमि करि ।

२ (न) (म) (घ) पंडित = बंड ।

३ (न) कर = कर । (म) बह । (घ) बें ।

४ (घ) जिहो = जिहो । (ग) जिहो । वा = वाषा । (घ) पायो ।

५ (ब) (घ), (घ) जिहि यह वेद कथा बह ग्याता ।

६ (न) कर = कर । (घ) (घ) को ।

७ (न) बोली भूले सभ भाई ।

८ (घ), (न) परि परि कान भवन में सुटे । (घ) मरन में = मर्म बंद ।

इमि कर देखे वदन कर रेखा । अहे विदेह त्रिस्टि में रेखा ॥१३२४॥
 जो कवि कहेत सोइ सम साधा । जेबों छविमानुकिरनि रभिराधा ॥१३२५॥
 निगुन सगुन निगम रचि राधा । दुर्म छोकि बरने सम साधा ॥१३२६॥
 ऐसो माया अऊ रचि राधा । प्रम्हा बिस्तु है साकर साधा ॥१३२७॥
 कवि कसि कर्म संत जग बीना । ग्रिह ग्रिह वछा कही प्रमीना ॥१३२८॥
 दधी मये छित बाहर भावे । इमि कर सत नाम निजु पावे ॥१३२९॥
 जो सगि टोका मूस न पावे । बहुरि बहुरि भव सागर भावे ॥१३३०॥
 तिरगुन घाट पंठ संभारी । सखो नाम निजु तनु बिचारी ॥१३३१॥
 पारख बिन हीग विसरावे । बिनु गुर ग्यान गमी कही पावे ॥१३३२॥
 कर गहि सेहि दहि जमी बारी । संग्रह माया बिसय विमिचारी ॥१३३३॥
 जस कुटुखन्हि जस ही में बासा । किमि करि जाहि सेंघु के पास ॥१३३४॥
 जो यक लाहि कुसुबक हीता । मच्छ भच्छि भछि गावहि गीता ॥१३३५॥
 अहे मगस मति संत सुभागा । मोती मनि भित शुगन सागा ॥१३३६॥

बोहा

हंस बंस मति संत गति, सदा सुखी मन सेत ।
 कहें दरिया दस कंस पर, भीर भाव निजु हेत ॥८॥

सेयक बचन^१

गहर ग्यान बिनि मोह प्रसंगा । सतगुर बचन कह्यो सतसंगा ॥१३३७॥
 सुनत बचन मोहि प्रति प्रिय सागा । कटिजाए सम किमिरि सव भागा ॥१३३८॥

१ (क) (ग) (घ) में = मर ।

२ (क) (घ) दुर्म = कुटुम्ह ।

३ (क) ऐसो = सासी । (घ) ऐसी ।

४ (ब) वारख = पारख । (क) (घ) बिनु गुर यमी ग्यान कही पावे ।

५ (क), (घ) (ब) जमी = प्रमी ।

६ (क) संग्रह करे बिसे बिचारी ।

७ (क) (ग) जो बक जाहि कुसुबक हीता । 'कुसुबक' कस्यह है ।

८ (ग) मोति मनि निजु शुगन सागा ।

९ श्लोक (क) प्रति में प्रस्तुत बोहा हंस बचन है—जिबों हंस दस मति संत गति,
 जो सदा सुखी मन सेत । बहें दरिया दस कंस पर, भीर भाव निजु हेत ।

१० (ब) सुभागाह बचन ।

११ (क) प्रति जो सव किमिरि सव भागा ।

सतगुरु वचन^१

हम कह संसय कछु नहिं अहई । कोटि कर्म कलि पातक दहई ॥१३३६॥^१
 महर ग्यान मोहू किमि कहई । परम पुखै परमात्म अहई ॥१३४०॥^२
 अंह तह गए भर्म भव राता । एक एक वचन कहे सम ग्याता ॥१३४१॥
 भेला बहिर गुरू है अंधा । प्रबल माया है सब जग बधा ॥१३४२॥
 गए खगपति अंह नारद अहई । पूछाई वचन, कहो, भर्म दहई ॥१३४३॥
 अहे राम ब्रह्म की माया । सो क्रिपाल मोहि करिए दायी ॥१३४४॥

नारद वचन

बार-बार इन्ह हमहिं नचाया । सुनो ब्रिहंगपति वचन सुनाया ॥१३४५॥
 अब मो पै किछु कहि नहिं जाई । सो तुम्हरे तन ध्यापेठ भाई ॥१३४६॥^३
 अई अन्ह माया बिच रहई । अगम अयाह याह किमि लहई ॥१३४७॥^४
 बिभल म्यान अन्हा के पासा । सुनत वचन मिटा मोहू आसा ॥१३४८॥^५
 तुरंत गए अन्हा के पासा । कीन्ह प्रनाम वचन परकासा ॥१३४९॥

गरु वचन

इमि कारन हम तुम अंह भाई । महा मोहू तन अति दुख पाई ॥१३५०॥

अन्हा वचन

राम के वचन हमहिं अनि पूछहु । सिव से जाए म्यान तुम अंचहु ॥१३५१॥

दोहा

महामोह अति ध्यापेठ, विकल्प भए खगरण ।

अधकार सम छाएठ, अब किछु कहा न जाए ॥८६॥^६

बीपाइ

असे गरु तव अिद्यन तुरठा ।^७ भाग माह भेंटा सिव अठा ॥१३५२॥

करि परदक्षिण बोसे वानी ।^८ ह्रिदय प्रेम प्रीति अति आनी ॥१३५३॥

पूछी वचन सोइ कहो स्वामी । करहु दया मोहि अन्तर्जामी ॥१३५४॥

१ (क) हरिया वचन । (ग) गुण वचन । (घ) सत गुण वचन ।

२. (क), (घ), (ग) पातक = पापक ।

३ स्वीकृत अति में 'किमि कर कहई' पाठ है ।

४ (क) तुम्हरे = तोहर । (ग) तुम्हरे = तुमरे । (घ) अनापेठ = अनापे, (घ) अनापे ।

५. (क) (ग) रहई = अया । लहई = पाया ।

६ (घ) (ग) (क) मिटा = मटे ।

७ स्वीकृत अति में 'अधकार भर्म अम' पाठ है । (घ) छाएठ = छापो । (ग) छाएठ = दयाका ।

८ (ग) (क) तव = तपि ।

९. स्वीकृत अति में 'करि अरिद्यन बोसे तव वानी अठ है । (घ) तव वानी = तपि वानी ।

नाग फंस रघुनाथहि वंघा । तव ह्रम जाए ब्यास कहं संघा ॥१३५५॥
 प्रति प्रवाह पाह नहि सहर्द । महा मोह तन दांख वहरि ॥१३५६॥
 प्रस कहि सिब बोसे प्रिय बानी । मोह निष्या नहि सत ह्रम बानी ॥१३५७॥

मोह बिकल हमरूँ तन भएऊ ।^१ दू झूठ ग्याता कहं-कहं गएऊ ॥१३५८॥
 सात दीप तव बर्बाहि फीरा । तबहुं ना मिटि तन नी पीरा ॥१३५९॥
 महा जुगेस्वर जग मंह भारी ।^२ ब्रह्म निरूपनि ग्यान बिचारी ॥१३६०॥
 मोह सत तन तो नहि चारि ।^३ तव में दरस काग कर पारि ॥१३६१॥
 मुनत बचन प्रिय प्रति निक लागी ।^४ छुटि गौ मोह भर्म तन भागी ॥१३६२॥
 जागमुसु डि महा बड़ ग्याता ।^५ उन्हके भरम क्यहि नहि राता ॥१३६३॥
 उन्ह सभ ग्यान कहहि परसंगा ।^६ उपजहि प्रेम सितस होए संगी ॥१३६४॥
 पसे विहंगपति पंच जो लागी ।^७ प्रति अपसोष महानर्म भागी ॥१३६५॥
 उमा बोसि तुम्ह ते बड़ ग्याता ।^८ पूछत भेजहुं अंह निजु वाता ॥१३६६॥
 हम नरदेह बह सगपति रारि ।^९ इमिकर ग्यान प्रगट नहि गारि ॥१३६७॥
 हीनि लोक तुम्ह जिभूषन म्यानी ।^{१०} जोग विराग भक्ति सुम जानी ॥१३६८॥
 इमि नारन हम गुप्त जो राखा ।^{११} सुनु उमा सत बचन जो भाखा ॥१३६९॥

बोहा

कहे उमा सुनु स्वामी, तुम्ह उन्ह कब भी संग ।^{१२}
 सदा समो ह्रम सार्पाहि, कब भी ग्यान प्रसम ॥१३७०॥

१ (क) महा मोह दुख दखन दहरि । (ग) महा मोह तन म्बहुल बहरि ।

२ (क) पात्रमाष ।

३ (क) पूछत ग्याता कहा कहा गएऊ ।

४ (क) बलहु ना मेरुस तन कर पीरा ।

५ (क) (ग) मंह = में ।

६ (क) (ग), (घ) तन तो = तनको ।

७ (क) में = हम ।

८ (क) निब = निष्या । (घ) प्रीति ।

९ (क) म.या = भारी ।

१० (घ) (ग) (क) बड़ सम = छ सम ।

११ भर्म = भरम । (क) कति अपसोष मोह प्रस भाग्य ।

१२ (क) से = से ।

१३ (घ), (ग) (क) बड़ = बीए ।

१४ (घ) (घ) भी = सब । (क) कतिरिक्त पठ—सिब बचन ।

१५ (घ) (क) समो = समीह । समो = समय, ईसबत ।

सतगुरु वचन^१

हम कहूँ संसम कछु नहिं अहई । कोटि कर्म कलि पासक दहई ॥१३३६॥^१
 मरुत ध्यान मोह किमि कहई । परम पुर्त परमात्म अहई ॥१३४०॥^२
 जहूँ तहूँ गएँ नर्म भव राता । एक एक वचन कहूँ सम स्याता ॥१३४१॥
 बेसा बहिर गुरु है अंधा । प्रबल माया है सब जग वधा ॥१३४२॥
 गएँ खगपति जहूँ नारद अहई । पूछहिं वचन, कहो, मर्म दहई ॥१३४३॥
 अहूँ राम ब्रह्म की माया । सो त्रिपाल मोहि करिए दया ॥१३४४॥

नारद वचन

बार-बार इहूँ हमाहिं नवापा । सुनो ब्रिहगपति वचन सुनाया ॥१३४५॥
 अथ मो पै किछु कहिं नहिं जाई । सो तुम्हरे तन ब्यापेठ भाई ॥१३४६॥^३
 अहूँ अन्हूँ माया विष रहई । अगम अथाह याह किमि लहई ॥१३४७॥^४
 बिमन ध्यान अन्हूँ के पास । सुनत वचन मिटा मोह असा ॥१३४८॥^५
 सुरंत गएँ अन्हूँ के पास । कीन्हूँ प्रनाम वचन परकासा ॥१३४९॥

गुरु वचन

इमि बाल हम तुम पंह भाई । महा मोह तन अति दुख पाई ॥१३५०॥

ब्रह्मा वचन

राम के वचन हमाहिं जनि पूछहु । सिब से जाएँ ध्यान तुम बंधहु ॥१३५१॥

दोहा

महामोह अति ब्यापेठ, बिकल्प भएँ क्षगराए ।

अथकार सम छाएत, अथ किछु कहाँ न जाएँ ॥८६॥^६

चौपाई

असे गुरु तब त्रिछन सुरंता ।^१ मार्ग माहूँ भेंटा सिब अंता ॥१३५२॥
 करि परदाच्छिन बोसे वानी ।^२ ह्रिदय प्रेम प्रीति अति जानी ॥१३५३॥
 पूछौँ वचन सोई कहो स्वामी । क्यूँ दावा मोहि अन्तर्जामी ॥१३५४॥

१ (क) दरिया वचन । (ग) गुरु वचन । (घ) सत गुरु वचन ।

२ (क), (घ), (ग) पालक = पालक ।

३ स्वीकृत अति में किमि कर करई वात है ।

४ (क) तुम्हरे = तोहरे । (ग) तुम्हरे = तुमरे । (घ) अथाह = अथाह, (ग) अथाह ।

५ (क), (ग) राह = आसा । लहई = पास ।

६ (क) (घ), (ग) मिटा = मटे ।

७ स्वीकृत अति में 'अथकार मर्म कर्म' वात है । (क) छाएत = छाये । (घ) छाएत = छाये ।

८ (क) (घ) तब = तब ।

९ स्वीकृत अति में 'करि परदाच्छिन बोसे तब वानी' वात है । (क) तब वानी = तब वानी ।

समा वचन

घादि घंत सदा सिव जोगी । पाप पुण्य कर्म नहिं भोगी ॥१३८८॥
 इन्ह कर पूजा किमि नहिं साभा । भति क्रोध करि घोसे राजा ॥१३८९॥
 मूत प्रेत संग किमि गुर म्यामा । साहिं भतूर महा भमिमाना ॥१३९०॥
 नगम रहे तन बस्तर होना । भहिं लपेटि तन बिस्त्रि रहू भीना ॥१३९१॥
 घनमिल सम है उन्ह कर साभा । दरद वाष जिमि बवक वाभा ॥१३९२॥
 सो हमरे प्रिह किमि कर भाएव । भति भादर करि मान जनाएव ॥१३९३॥
 पकी घनस में तन तुम्ह टपागा । जग्य विष्वस मुनिसम कोइ भागा ॥१३९४॥
 बुद्ध गन आए उपद्रव कउड़ी । मंदिल माहू घनन जो बरही ॥१३९५॥
 जारि मारि उन्हि केहु ना बाबा ।^१ गन सम कर्म कीन्ह यहू साबा ॥१३९६॥
 कफला करठ निकट चसि भाई । गन सम धर्म कहा समुझाई ॥१३९७॥
 मते घनल तन दहउ बनाई ।^२ भति अपमान कहा महिं जाई ॥१३९८॥
 तय धूम भवन सबै करि जारा । जग्य विष्वस करि सम के मारा ॥१३९९॥

दोहा

तब मोरे तन मोह मी, महा कसपना जागि ।
 मुनि प्रिह प्रिह में फिरेउ, बिरहू घनल तन सागि ॥६२॥

सिख उवाच

जंह जंह गयो मोह परसंगा ।^१ किन्हु न सीतस कीन्हू मोर प्रंगा ॥१४००॥
 गएउ में बन खंड जिम सुमेरा ।^२ भति हेबासगिर त्रिस्टि में फेरा ॥१४०१॥
 नीस सैल एक अधिक उठगा । कहे काग कछु म्यान प्रसंगा ॥१४०२॥
 बहु प्रकार तहां चढ़ि गएऊ । भणउ भरस तव वचन सुझणऊ ॥१४०३॥
 चारि दुम सुवर बहु साभा ।^३ खग बठे कया निनु भाखा ॥१४०४॥
 अब उन्हि म्यान कीन्हू परसंगा । तव में जाए बीठों एक संगा ॥१४०५॥

१ (क), (ग) हीना = हीरहा ।

२ (क) में बरद = वाद (ख) (ग) (घ) स्त्रीकृत ।

३ (घ) भाएऊ = भाए । जनाएऊ = जकार ।

४ (क) (ग) जारि मारि मुनि कीर्त्ये मारि बंधा ।

५ (क) बह = सम ।

६ (क), (ग) (घ) दहेइ = दहेयी ।

७ (घ), (ग), (घ) अपमान = अपमान ।

८ (क) (ग), (घ) जहां जहां गएऊ तहां मोह प्रकटा ।

९ (क), (ग) (घ) में = मे । हेबास = हिमासव (संभवतः) ।

१० (घ) सुझणऊ = सुझैऊ ।

११ (क), (ग) चारि = चार ।

चौपाई

प्रथमहि दण्ड प्रिह तुम अब जनमा । सो सभ जानत हो तुम मरमा ॥१३७०॥^१
 दण्ड प्रिह क्यवा रही कुमारी ।^२ कीन्हो जम्य त्रिवाह विचारो ॥१३७१॥
 प्रति सावर करि सभ बोलएऊ । गन गधर्व मुनि सभ मिलि गएऊ ॥१३७२॥
 हमके बचन पूछा तुम प्राई । इमि करि ग्यान कहा समुभाई ॥१३७३॥^३
 धानंद मगस दण्ड प्रिह अहई । सुर समाज धनी तह कहई ॥१३७४॥^४
 हम कह नाहि बोलाइन्हि जानी । बरन हीन सिष कहा मखानी ॥१३७५॥
 प्रति अपमान हमें उन्हे भएऊ ।^५ इमि कारण नाहि तुम बोसएऊ ॥१३७६॥^६
 भासम कती समाधि सगाई ।^७ तब तुम रोदन कीन्ह बिसलाई ॥१३७७॥
 छुटा प्यल ग्यान नाहि रहेऊ । किमि कारण उमा बिससएऊ ॥१३७८॥
 तातु मातु मोहि मिरतक जाता । हित अनहित इमि सभ परधाना ॥१३७९॥
 कीन्हो जम्य विविधि मुनि गएऊ । विना बोसवमि तुम धलि भएऊ ॥१३८०॥
 बहुत भातिन्हि मैं तुमहि बुझायी । मम बचन तुम्ह प्रिय्या गंवाया ॥१३८१॥
 तुम्ह संग बुद्ध गन दीन्हों साया । पसी सुरत नाए निबु माया ॥१३८२॥
 दण्ड प्रिह आए जग्य तह देखा । सादर भाति नाहि किछु पेखा ॥१३८३॥
 किछु किछु प्रेम किमो तुम माया । पिता देखि देखि अनल उतपाता ॥१३८४॥^८
 आता प्रेम किछु नाहि कीन्हा । तन मसीन वस्तर प्रति हीना ॥१३८५॥

बोहा

राज काज जग सोमा, धानंद मंगस धार ।

सती भवन नाहि भाव, मम भौ धति बेकरार ॥११॥^९

शिष बचन

तब तुम गई जहां मर नारी । जम्य अरभ जंह वेद उचारी ॥१३८६॥

दुनों पीठि के होखे पूजा ।^{१०} दिस मैं बचन बुझा तुम दूजा ॥१३८७॥

१ (क) सो म जानति हो सभ मरमा ।

२ (घ) (ग) (ब) रही = आई ।

३ (क) इमि करि ज्ञान कहा बलि करई ।

४ (घ) (ग) सुर समाज तहां बलि करई । (ग) सुर समाज तहना बलि करई ।

५ (क) (ग), (ब) अपमान = अवमान ।

६ (क) (ग) इमि कारण नाहि तुम है बो गए ।

७ (क) कती = कति कति ।

८ (क) (ग), (ब) हीना = हीन्हा ।

९ (ब) बेकरार = बिचार ।

१० (घ) उर पीठि कर होखे पूजा । (ग) उर पीठि के होखे पूजा ।

दोहा

पड़ी उमा भरतन्ह पर, कहेउ घम्य सिव प्याम ।

भब भसधिर बर पायी, किमि करि करौ बखान ॥१४३॥'

श्रीपाई

सिग उपर एक सिग बिराबा ।^१ तंह ठड़ाण सु दर एक छाजा ॥१४१॥
 भारि पाट भारि रठ पानी । मधुर मीठ खटा तित आनी ॥१४२०॥
 भारिठ विसा भारि दुर्म छाया । सभन पसब तंह सितस यनामा ॥१४२१॥^२
 करि परदन्दिन काग तब भाए । भसधिर होए के हरि गुन गाए ॥१४२२॥^३
 दधिदल दिसा धमिठ भमराळ । माना खण बठे निजु ठाळ ॥१४२३॥^४
 गए गहर तब जगपति पासा । विनए कीन्ह बचन परकसा ॥१४२४॥
 मई विरंवि ब्रेव कर मूसा ।^५ निजु-निजु बचन कहेउ समतूसा ॥१४२५॥^६
 बँठे जहाँ बिरंवि विभसा । तंहवा पाए कहेउ निजु बासा ॥१४२६॥^७
 कहे बिरंवि हम किमि कर कहेई । सुख बचन बुल बाळ दहेई ॥१४२७॥^८
 तब बलि गमो छीब के पासा । कागमुसु डि राम कर पासा ॥१४२८॥
 भादि धंत सन कया सुनइहै । छुटि मोह म्यान निजु होइहै ॥१४२९॥^९
 कहे मुसु डि सुनो लगराई ।^{१०} जम्म प्रसंग निजु कया सुनाई ॥१४३०॥^{११}

१ (क) बब बरिबर पावसी ।

२ (क) बिराबा = बिराबी । ठड़ाण = टसक । छाजा = छाये ।

३ (क), (ग), (ब) पसब = पसो ।

४ (क), (ग) भसधिर = भसिदत । (ग) बरिबर ।

५ (क), (ग), (ब) निजु = तेहि ।

६ (क), (ग) (ब) निम्नलिखित पाठ्यपिब है—

सैल सोमै पधिकन सुल पाय । कहे कतुर छुल जगपति राभा स
 हपके मोह मरम भति मएळ । इमि बाल तुम्हरे पंद मएळ स
 रावन राम विविधि सब मापी । ता विन नाय चाँप सिव बापी स
 तब इन बचन जाए छोवाया । कहु कान कहु मोह सुम्भया स
 शहा बरत मोह तन पईळ । भति होए निजु मरम धम सुपळ स
 तब बति गएउ मारु के फसा । करि परकस बचन परकसा स

७ (क) समतूसा = समतूसा ।

८ (क) (ग) कहेउ = कहा ।

९ (क) (ग) (ब) बचन = मोह ।

१० स्वीकृत प्रति में 'दुष्टि जाए मोह' पाठ है ।

११ (क), (ग) जगपति = जगपति नई ।

१२ (क) निजु = इम ।

निम्बु निम्बु कया सुनेउ सतबानी १^१ बड़े सीव सुनु धादि मवानी ॥१४०६॥

धेद

काम सकुप सोभा धति सु दर हंस बस गति जानहीं ।
नीर क्षीर सभ बिलगि विवरन ध्यान को गुन गावहीं ॥३१॥
रोम रोम तन धमी बरखत सुमन घटा धन छावहीं ।
मुख सागर भक्ति धागर गर्व ह्मि निमि धावहीं ॥३२॥

सोरठा

ध्यान भक्ति निम्बु हेठ, गुन गंभीर ह्मि जानहीं ।
सीतल परिमल सेठ, मपट धानि धन छावहीं ॥३६॥

बीपाई

उमा बचन बड़े सुनु स्वामी १^२ तीनि लोख तुम धंतर्जामी ॥१४०७॥
को है ब्रम्ह कवन है मामा । को है ध्यान कहा धर्याया ॥१४०८॥

सिख उवाच

धादि ब्रम्ह है त्रिगुन माया । माया धनंत अरु फैलाया ॥१४०९॥^१
ध्यान सोई जो एक रस रहई । विमल प्रेम दुर्मति सभ बहई ॥१४१०॥^२
है सत पुन गुन करि रात्रा । ब्रह्म तंह बचन विविध नहि भाग्या ॥१४११॥
जब जब सुनहि महा मुनि ध्याता । सभ के मोह होए उतपाता ॥१४१२॥
वात में परगट नहि बड़ेऊ । निर्मल नाम निम्बु हिरदय गहेऊ ॥१४१३॥^३
को बहि होए अरु मंह धारी । सुनु उमा सत पुखे की धानी ॥१४१४॥
जब वह पुखे धरेना रहई । तब नहि सक्ति संग यह बहई ॥१४१५॥^४
माया निरंजन कीह प्रसंगा । त्रिगुन तीनि विविध मो गंगा ॥१४१६॥
बहुविधि बेट दोषा सत धानी १^५ धानि पूर्ण गति केहु बहु जानी ॥१४१७॥
ह्मि करि जानि गुन में रहेऊ । निख दिन जाग धुक्ति सत गहेऊ ॥१४१८॥

१ (घ), (ग) (ब) सुनेउ = सुनी ।

२ (घ) (ग) (ब) रवामी = रानी ।

३ (ब) (घ) (ग) माया धनंत उर बग फैलाया ।

४ (ब), (घ), (ग) सभ = सुरि ।

५ (घ) नहेऊ = बड़ेऊ । (ब) लहेऊ ।

६ (ब) यह = नहि ।

७ (ब) दोषा = दोषे ।

मोहै भरती पुख बनया । मोह ते करते घन उपजामा ॥१४४६॥^१
 मोहै क्रिणी खेत किसाना ।^२ सब रूप मोहै भगवाना ॥१४४७॥
 मोहै मरु पिता सुठ मारी । मोहै की बेटी सकल जग डारी ॥१४४८॥^३

दोहा

घर मंह घर करि देखिए, ग्यान दिपक कहूं वारि ।
 पांच पचीस सभ साथ हैं, सिव कहूं सकि पियारि ॥१४५॥^४

बीपार्ह

घर में घरनी मंगल चारा । दिखि भी भ्याधि भोसप मसि डारा ॥१४५२॥
 रति मति कंदर्प बीपक सोमा । पर जरि प्राण प्रीति प्रति सोमा ॥१४५३॥
 प्रकसा भौन प्रतिमा पत होई । भू कि भू कि स्वान प्राण कहूं कोई ॥१४५४॥^५
 पान फून रस दिविष सुगंधा । जेवों दुर्म कला लपटि घन यथा ॥१४५५॥^६
 दुख सख सुख इमि कर जाना । जेवों रति स्वान जमी लपटला ॥१४५६॥^७
 मूढ़ न जानहि यह भय भर्मा । स्वार्थ स्वार्थ छोड़ सतकर्मा ॥१४५७॥^८
 भीष सकल सभ सुखद बिरागी ।^९ भेखन प्रति गुन ग्यान न जानी ॥१४५८॥^{१०}
 काम क्रोध सोम भौ भर्मा ।^{११} का भव भेख विगमर कर्मा ॥१४५९॥
 मोर पच्छ सु दर प्रति नोका । ग्रहि कर भोजन ग्यान विनु फीका ॥१४६०॥
 जीव चराचर जत है चारी । पसुमत ग्यान मोह मद डारी ॥१४६१॥
 हृदय सुन ना पुन्य परतापु ।^{१२} अथ पर संग भक्ति गुन कापु ॥१४६२॥
 बिबि अछर पढ़ि पढ़ित भर्मा ।^{१३} अप सप सखम पाखंड कर्मा ॥१४६३॥
 यपने रसति आपु नाहि जाना । करि परिपंथ बिसय रस घाना ॥१४६४॥

-
- १ (ख) मोह ते = मोहै ।
 २. क्रिणी = कृषि ।
 - ३ (ख) (ग), (घ) बेटी = बेटी ।
 - ४ (ख) सभ साथ हैं = सभ संघ हैं ।
 - ५ (घ) लल = लहू ।
 - ६ (ख) (ग), (घ) जमी = ज़िमी ।
 - ७ (ख) (ग) (घ) स्वार्थ = स्वोर्थ । स्वार्थ = स्वोर्थ ।
 - ८ (ख) सकल = सुकल ।
 - ९ (घ) भेखन सिद्ध न ज्ञान न जानी । (ग) भेखन प्रति गुन ज्ञान न जानी ।
 - १० (ख), (घ) (ग) भौ = सभ ।
 - ११ (ख), (घ) न = ना ।
 १२. (घ) बिबि = सिबिबि ।

जौं असधिर चित सैन पर रहिहौं । राम चरित निजु कया सुनइहा ॥१४३१॥
 बहै गरुर सुनो हरि संता । सुम दर्सन फन महा धनता ॥१४३२॥^१
 संत दरस गुन सुखद समाजू । धानद मगस तीरयराजू ॥१४३३॥
 जौं सगि मोह भरम नहि जाई । तौं सगि कया सुनो चित साई ॥१४३४॥

शोहा

सोचन लवन ह्रिदय पद, सदा रह्यो कर जोरि ।
 निमल प्रेम पद भासिए, दिनय बचन सुनि मोरि ॥१४४॥

श्रीपाद

कहे भुमुडि सुनो सत वानी । मोह विबल फिरहुं जनि म्यानी ॥१४३५॥
 माया मोह विष म्यान रहीवा । भक्ति विषेक पान पद ईवा ॥१४३६॥
 मोह पदारथ सभ जग होता । महा महा मुनि मोह न जीता ॥१४३७॥
 मोह तड़ाग रूप जस जैसे ।^२ भरि भरि पीबहीं धमरित ऐसे ॥१४३८॥
 जस चिनु निवे न मोह विराता ।^३ मातु पिता सुख सागर राता ॥१४३९॥
 मोहै घाउम भौ प्रिहनारी ।^४ मोह बिना किमि म्यान बिचारी ॥१४४०॥

मुसु द्विषधन

माह बाटिका फून फल म्यारी । मन है मंवर सुगंभ सुषारी ॥१४४१॥
 मोह धनन सखल प्रिह जाये । फिरि फिरि मवन करे उजियारी ॥१४४२॥
 इमि करि मोह सखल जग सागा । जगिगी सहूर बहुरि फिरि मागा ॥१४४३॥
 पावक बिना पाक निमि करई । इमि करि मोह निरंतर रहई ॥१४४४॥
 मोहै दुर्म फन खग को बासा । माहै सगिवा जस मोन निवासा ॥१४४५॥^५
 मोहै धमरकोछ भ्रिग मन् सागा । ऐसो माह जक सभ जागा ॥१४४६॥^६
 मोहै जोराका एक सग जोरी । बंधन जस मोह की डारी ॥१४४७॥^७
 मोहै पुर भौ सिद्ध का भेना । मोह बिना किमि का कर बेता ॥१४४८॥^८

१ (ख) (घ) (च) दुन = दुह ।

२ (घ) तपाय = तपाव ।

३ (ख) मोह = मीन ।

४ (क) मोहै = मोह है । (ख) (घ) रहै रहत ।

५ शरीरज प्रति में 'दुर्मदस ७६ जग' और 'हरिता जस मीन' वाड है ।

६ (ख) (घ) सम = मर । बरु = जपन । जागा = लाग ।

७ (घ) डोरी = डेरी । जोराका = बंधन (ईमदत-जुराई के) ।

८ (क), (ग), (घ) चिमि = च्यु ।

बोहा

संत दरस गुन सुखर भति, हूयय बंयस परकास ।
भो पगु पड़े प्रयाग सम, पुरसरि जस पद पास ॥६७॥^१

छंद

संत घर सगुन प्यान को गति यह मंजन मैलि खोकावहीं ।^२
बरख परस मब भरम माने यह जब हरि कया परकासहीं ॥६३॥^३
भानंद मंगन रंग रहित सन सुषर संत गुन गावहीं ।
सुनत सवन हिय लोचन विच्छे मंवर भाव रस पावहीं ॥६४॥^४

सोरठा

सुन्हूँ न जगपति प्रीति, विना भक्ति भव ना तरे ।
कंह सरिदा कंह सीत, जमि कुरंग भग्मत फिरे ॥१७॥

चौपाई

निम्बु मुस सीम कीम्ह विष्पाटा । सवन सुनत लोचन मरि राता ॥१८॥^१
जाकर निर्त करम जग जला । सनकादिक सिव संघु बजाला ॥१४८॥^२
प्रकन मानु उदयगिरि जवहीं ।^३ तिमिर नामि रसनी गौ तवहीं ॥१४८॥^३
लोचन कंठ तिमि सभ छूटा । भिगा भाव प्रेमरस जूटा ॥१४८॥^४
कवि कंठ रसना गुन प्याता ।^५ सखन सिख मंज मनि रखा ॥१४८॥^५
जंह मनि मंजिल दिपक नहि वरई । जय रवि रगे ठारा का करई ॥१४८॥^६
तुम्ह हरिजन में दासन्ह दासा । सनकी त्रिपा मिटा जल प्यासा ॥१४८॥^६
बिमल प्यान वन जटा समीरा । बरखत बू व भक्तहित नीरा ॥१४८॥^७
सुमन सुगंध समी भरि परई ।^८ छोसे प्यास संघु नहि भरई ॥१४८॥^८

१ (ख) (ग), (घ) पड़े = परत ।

२ (ख), (घ) (घ) संत दरस गुन जल बी गति ।

३ (ख) (ग) (क) दरस = बरखत । बरस = परसत । प्रकासहीं = पधारही ।

४ (ख) (ग) (घ), विमलेशे मंवर भाव रस पावहीं ।

५ (ख) छो छुनि सखन लोचन जल प्रता । (ग) (घ) छो छुनि सखन लोचन मरि रता

६ (ख), (घ) उदयगिरि = उदयगिरि ।

७ (घ) (ग) कवि कंठ रस-नाम गुन जटा । (घ) कवि कवि कंठ रसना गुन जटा ।

८ (घ), (ग) (घ) प्यासा = जला ।

९ (ख) समी = समित ।

१ (ख) (ग) (घ) छोसे = नोसे ।

प्राथम दरस राम पद हीता । निरुत्थेवन निरुत्थे निहृचीता ॥१४६५॥^१

दोहा

जस पस सप्त पताल सहि, जऊ जीवन नर गुर ।

दसरथ हनय राम रंग, विमल सदा भरिपूर ॥६६॥

चीपाइ

गुर विनु भव नहिं भंजनिहारा । सत ठरनी भव सेंघु उवारा ॥१४६६॥^१
 सुनो मा लगपति सेजु पद्यताऊ । ब्रह्म जीव माया त्रिष घाळु ॥१४६७॥
 उह निर्दय मारे नहिं मरई ।^२ सप्त पताल सकल सम ठरई ॥१४६८॥
 परमात्म हूँ ब्रह्म पुराता । खोजत सुरनर मुनिभर्म भुसाता ॥१४६९॥^३
 प्राथम धरंत सखय संवारी ।^४ काय धीचि फिरि सेत संवारी ॥१४७०॥
 अनवर कर धी भयल महि जेता ।^५ राम रूप प्रतिमा सम तेता ॥१४७१॥
 यह द्विन्दांत द्विस्टि में ऐसा ।^६ ज्या जल उपल पाणा हूँ तसा ॥१४७२॥^७
 पाता पवन जव सेत उठाई । जल रंग मिसें कवन विसगाई ॥१४७३॥^८
 ऐसो राम सकल घट व्यापा । पाप पुन्य नर के नहिं तापा ॥१४७४॥
 यह विमुक्ता त्रिगुन बनाया । व्यापिक ब्रह्म निगम नति गाया ॥१४७५॥
 सेजि भव भर्म सो धमी धनीता । राम नाम पद विमल पृनीता ॥१४७६॥
 विनु हरि मक्ति हरे नहिं सोगा । तर्क कया करि करिए जोगा ॥१४७७॥^९
 पद प्रयाग सो हरि पद नोका । तीर्थ वर्त मक्की विनु फीका ॥१४७८॥
 जो पगु संत दरस कह परई । कोटि पुन्य धय पातक हरई ॥१४७९॥
 जेहि मंदिल मनि संत बिराजे ।^{१०} कोटि तीप पद पनज दाने ॥१४८०॥

१ (क) (घ) (च) निहृचीता = काहीचिता ।

२ (घ) सत ठरनी गुर हान करत ।

३ (क) (घ), (च) उह = जोए ।

४ (घ) (घ) (च) खोजत सुर नर समे भुसाता ।

५ (क) (च) प्राथम सखय करुप संवारी ।

६ (घ) जेता = जेती ।

७ (घ) ऐसा = जेण ।

८ (घ) (ग) उपल = ऊपर । (क) पाता = पता । (घ) (ग), (घ) रचीरन ।

९ (घ), (घ) मिसें = मिटा ।

१० (क) (घ), (च) तर्क = तल । (ग) (घ) करि = दे ।

११ (घ) बिराजे = विराज । द-र = दास ।

महादेव नर देवभर रहेक । प्रति पवित्र तंह मीति गुन गएक ॥१५०६॥^१
 जप तप ध्यान मंदिर में करेक । अंजन पुहुप रगरि तंह धरेक ॥१५०७॥
 मनसा ध्यान रह्यो लौलीन्हा । भाए गुर भावर नहिं कीन्हा ॥१५०८॥
 कोपि के सीव साय तब कीन्हा । मार्ग मस्टं इमि तै सठ कीन्हा ॥१५०९॥^२
 प्रति बसाधि जइ तन तुम पैहो । भरमि भरमि घोरासी जहो ॥१५१०॥

बोझा

झाप भयो तन विकल भ्रति, ध्यान ध्यान विसरए ।
 भणउ विकल भर्म उपजेउ, कहुना भ्रति तन भाए ॥१५१॥^३

जप

संभु सबै सहाए सिरपर दयानिधि सुनि सीजिए ।
 भयान बालक जानु किछु नहिं क्रोध सेमा सम कीजिए ॥१५१॥
 कीन्हु भसतुति गिसि वासर दास, तुम घर दीजिए ।
 भई यानी भकास धुनि सुनि साप अनुग्रह कीजिए ॥१५६॥

छोटा

झाप मिथ्या नाहिं मोर, किछु दिन गए उभाखिहो ।
 घोरासी के मोर, सु वर नर तन पाइहै ॥१६॥

चौपाई

किछु दिन बीते कास तन गएक ।^४ तन छूटे श्रीरासिहिं गएक ॥१५११॥
 बंहु तंह जनम भेतनि भित ग्याला । गुर के वचन पद पंकर ध्याला ॥१५१२॥^५
 श्रीरासी में दुख भति ध्यायेउ । महा पाप तन तन तायेउ ॥१५१३॥
 येसे वसन तन पेहु बनाई । होस पुरान तब देत भजाई ॥१५१४॥^६
 इमि कर जनम बिता श्रीरासी । कास कर्म द्विज कटिजाए फांसी ॥१५१५॥
 जतिम जनम फिरि मौ परसंगा । भब सु दर तन घाठो रंगा ॥१५१६॥
 किछु दिन बालक सो तन खेउ । महा धबोध मत मरम जो मएउ ॥१५१७॥
 दुभारस बरल बिता सगिकाई । फिरि निजु ध्यान भेतनि होए भाई ॥१५१८॥

१ (व), (घ) (न) प्रति पवित्र तहो तिथि गएक ।

२. (क) मार्ग सठ अष्ट तब कीन्हा । (ग) मार्ग सठ अष्ट तै कीन्हा । (घ) मार्ग अष्ट सठ तै कीन्हा ।

३ 'भणउ विकल तन भर्म स्वीकृत भति ये ।

(क) (ग) (घ) तन = तप ।

(ख), (घ), (न) वचन = वचन ।

(क) ध्याई = स्याई ।

क्या प्रीति मन निर्मल प्रेमा । अहं तह जस यस वचन प्रसंगा ॥१४६०॥
 सुनो विद्वगपति तुम गुन म्पाठा । मयेठ मोह म् माया विगना ॥१४६१॥^१
 धानि धित भी मनस प्रकासा । कांजि काशु भागु जस प्रासा ॥१४६२॥^२
 मन मंजीठि रंग सम गएऊ । उजल दसा हंस गति भएऊ ॥१४६३॥^३
 भीर छीर विद्वच्छु तुम जाना । कारि पीषि कसि दुषी भ्रमाना ॥१४६४॥
 रोम रोम भी पद परकासा ।^४ त्रिविधि ताप मिटा सन प्रासा ॥१४६५॥
 पारस परिमल पारस गुल पासा ।^५ भी बदन सन वास सुवासा ॥१४६६॥

दीक्षा

तुम्हें सदा गुरु ध्यान है, मैं किकर निजु दास ।
 जेवों धरनी जल साक्षिमा, मोह न भावत पास ॥६८॥

गहर प्रभाव

पध्विनी कृपा सुनत सम चहुऊ । हाहुं दयाल विगत सम चहुऊ ॥१४६७॥

काग वचन

प्रथम देह जब नर के पाई । संसन्ह सग सदा गुन गाई ॥१४६८॥
 सुत जित नारि भी संपति माना । वान पुन्य तीर्थ भसनाना ॥१४६९॥
 भरमस किरि बहुरि प्रिह धाई । मुख उदास तिन किछु न सोहाई ॥१५००॥

काग वचन

राम चरित जहां किछु सुनेऊ । पाप तुन्य तह एको न गुनऊ ॥१५०१॥
 विना संत मुन्य मिले न म्पाया । अप तप मल पड़ि बे पुराना ॥१५०२॥
 प्रिह तेजि दूरतर गएऊ ।^६ गुरु उपदेश तहां मोहि भएऊ ॥१५०३॥
 गुरु दयल मोहि सीष उपासी । मत्र दीन्ह सुमिगो भविनासी ॥१५०४॥
 निस दिन प्रेम इहै चित राता । गुरु के वचन भयो निजु म्पाठा ॥१५०५॥^७

१ (क) मयेरी मोह माना विगता ।
 २ (ब), (ग) मलु = माया ।
 ३ (क) उजल दसा हंस गुन मरत ।
 ४ रोम रोम पद मत्र परक परकासा । (ग) रोम रोम पद मत्र परकासा । (घ) रोम रोम भी पद परकासा ।
 ५ (क) काशु = काश्या (घ) (च) लीला ।
 ६ (क), (ग), (घ) तेजि = क्षति ।
 ७ (क) (घ), (च) मोहि = मोर । निब = निब दे ।
 ८ (क) निजु = तब ।

सदा षयो निजु वासर सोई ।^१ सिव सम हित दूजा नहि कोई ॥१५३८॥

दोहा

सोमस वचन बिचारि के, क्हा बिमल निजु गाल ।

मामा प्रहा बियेक करि, पावे पद निर्बान ॥१०१॥

सोमस वचन

भादि बनादि पुर्ख जो मर्हई । सो सुमिरे मव कदहि न परई ॥१५३९॥

निगुन नाम निम्रभ्रर नीका । सदा बिमल रस बंद का टीका ॥१५४०॥

होले मुक्ति भ्रमर पद पाव । सतगुर भिसे सत सव्य वतावे ॥१५४१॥

तव में बोले वचन त्रिदु वानी । सदा दयाल तुम्ह भन्तजांमी ॥१५४२॥^२

रुग वचन

वह सुनि वचन भर्म मोहि जागा । बिना सकप किमि मन अनुपगा ॥१५४३॥

जाके लखन नन नाहि वानी । सम गुन रहित सो क्हा बखानी ॥१५४४॥

बीपाई

सगुन सकप मे लोको भाई । करहु बया मोहि वेहु देसाई ॥१५४५॥

जाकर पव निखविन अनुपगा । उहो असोच प्रेम प्रिय पागा ॥१५४६॥

भावे जाए माया कर क्पा । होए पसन फिर भरे सक्पा ॥१५४७॥

सोमस वचन

बहुत बस्य जुग घंटे देखा । भादि भन्त ब्रिट्टि मंह देखा ॥१५४८॥

बीवन मुक्ति है सम से न्वारा । भादि ब्रम्ह है बिमल सुधारा ॥१५४९॥

सिव सनकादि भादि नहि जाना । सो में तुम्ह सों करा बखाना ॥१५५०॥

सुतहू भादि संत परसंगा । बेहि सुनि मोह सकल होए भंगा ॥१५५१॥

बीपाई

बेहि सुमिरे अक्षपासक सोये ।^३ सिव सनकादि जाहि कह सोये ॥१५५२॥

दोहा

जोग भाप तप ध्यान करि, नामा भेख बनाए ।

मरमत फिरेड भवन में, फिर फिर जाए सत्ताए ॥१०२॥

काग वचन

तव में वचन जो बोलेउ दिबाटी ।^४ सगुन सकप है मनि उजियाटी ॥१५५३॥

१ (क) (ग), (घ) निजु = निजु ।

२ (क), (घ) (क) दृग् = दृग् ।

३ (क), (घ) (क) बेहि = जाहि ।

४ (घ) (क), (घ) बीडेड = बोला ।

जंह जंह प्रंथ पड़े कोइ ग्याता । सुनत लखन बहुत धित राता ॥१५१६॥
 जंह जंह सुनेठ भक्ति सिध ग्रहई । तहवां जाए चरन धित गहई ॥१५२०॥^१
 फिदि गुर मिसे सीन्ह उपदेसा । जपहिं सो सिध सिध बचन दिनेसा ॥१५२१॥
 मैं कमल गुर बिनमनि ऐसा । विकसेठ लोचन भंवर ऐसा ॥१५२२॥^२
 धमिय धानि सीतल तन सागा । कुमति जान दुर्मति सभ भागा ॥१५२३॥

दोहा

भवजल सहरि उतग धति, गुर तरनी करि पार ।

कनहरि कर गहि सेवही, कर करता करुभार ॥१००॥

काग बचन

संत मत सुनो जस बानी । विकसेठ कमल धमिठ रससानी ॥१५२४॥
 धति प्रिय सागेठ भेख भगवाना । सादर करौं सदा गुर ग्याना ॥१५२५॥
 नित नित प्रेम भया धनुरागा । जगा ग्यान दुर्मति दुरि भागा ॥१५२६॥
 निकले प्रिह से धति धनुरागी । भेंटहिं मुनि पद पकूब लागी ॥१५२७॥
 करईहु गुस्ति निजु ग्यान विचारो । बादि बिवादि भक्ति निजु सारो ॥१५२८॥
 लोमस सुनेठ महा मुनि ग्याता । ह्रिदय प्रेम प्रीति धति राता ॥१५२९॥^३
 भयो दरस तव कीन्ह प्रनामा । परदन्दिन करि कीन्ह बिलामा ॥१५३०॥^४

चौपाई

निगुन बिन बोसहिं सत वानी ।^५ कइहिं प्रंथ कियु कया वखानी ॥१५३१॥^६
 जब मैं देखा महामुनि ग्याता ।^७ कीन्ह धनुसार घोसे कियु माता ॥१५३२॥
 सिध धबिनासि दुजा नहिं कोई । प्रगट कीन्ह सब कया समोई ॥१५३३॥
 इन्ह कर भेव सदा हम जाना । दीन्हो उपदेस प्रेम गुर ग्याना ॥१५३४॥^८
 सिध हरि राम धरिद निक सागा । सो मम ह्रिदय चरन पद पागा ॥१५३५॥
 नवधा भक्ति राम गुन ग्याना । सोई सरूप सदा सुझ जाना ॥१५३६॥
 संत दरस धो तीरय धर्मा । दान पुन्य सोई सठ कर्मा ॥१५३७॥

१ (घ), (घ), (घ) तहवां = तादां तादां ।

२. (घ) सिद्धि = विरगै । स्वीकृत प्रति में 'छोवन मम भंवर ऐश' पाठ है ।

३ (ब) कीन्ह धनुसार प्रेम धित उला ।

४ (घ), (घ) करि = कै ।

५. (घ) (घ), (घ) बिन = बचन ।

६ (घ), (घ) कइहिं = कहे ।

७ (घ) जब मैं देखा मुनि महा जागा ।

८ शीघ्र उपदेस चरन गुर ज्ञाना ।

श्रीपार्श्व

काग सख्य सुख मोहि निक सगा । दोसेउ प्रेम करि भति अनुरगा ॥१२६७॥
 पगु मगु बसत पीरा भति भएऊ ।^१ भव भी पक्ष पक्ष किमि सहेऊ ॥१२६८॥
 खग के संग निजु हरि गुन गएहों ।^२ भमर होए भन्निउ फल पएहों ॥१२६९॥
 तुम्ह रिखि परिमल पारस टीका ।^३ हम कुकाठ भौ चवन नीका ॥१२७०॥

श्लोमस वचन

सगुन सख्य सोहि भति मामो ।^४ सोई राम प्रगट जग आयो ॥१२७१॥
 नप्र भयोष्या दसरथ राई ।^५ जन्म सीन्हु संह त्रिभुवन राई ॥१२७२॥^६
 कंचित जीवन ताहि कर जाना ।^७ कीन्ह समाधि जुग जुग परमाना ॥१२७३॥^८
 जब जब जग में जनमे आई । हमसे बरस करीह रघुराई ॥१२७४॥
 सब तब ग्यान कहेउ परसंगा ।^९ जेहि सुनि मोहसकस होए भंगा ॥१२७५॥^{१०}
 तब उन्हि धात भर्षभौ आई । सब हम मुद्रा दीन्ह देलाई ॥१२७६॥
 जब जब जन्म सीन्हु रघुनाथा ।^{११} गनिगनि मुद्रा रासेउ छापा ॥१२७७॥^{१२}
 सब परतीति उन्हेँ दिस आई ।^{१३} रिखि के वचन सवा गुन गाई ॥१२७८॥^{१४}
 करौ समाधि जीवन जग चोरा । ताते नाम श्लोमस रिखि मोरा ॥१२७९॥

बोहा

जाहु धवधपुर बेगि सुम्ह, तेजहु संसय मम भीर ।^{१५}

सत वचन यह मानिदो, बरसन होए रघुबीर ॥१०४॥^{१६}

१ (क) पगु मगु = मगु पगु ।

२ (प) पएहों = पएहो ।

३ (क), (ग), (घ) रिखि = सुनि ।

४ (क), (ग) (घ) अयुन = अरुण । (क) आयो = आयो (घ) आयो ।

५ (क), (घ), नप्र = नगर ।

६ (घ) राई = राई ।

७ (घ) कर = कर ।

८ (घ), (ग) परमाना = इमाना ।

९ (क) (घ) कहेउ = कहे । (क) कहेभो ।

१० (घ) (घ) जेहि = जे ।

११ (घ) (घ) जब बर = जो जो ।

१२ (घ) मुद्रा = मुद्रा । (घ) (ग) (घ) रासेउ = रासे ।

१३ (घ) (क), (घ) गाई = गाई ।

१४ (घ) (घ), (क) के = के ।

१५ (घ), (क) सुम्ह = सुम्ह । (क) संसय = संसै ।

१६ (घ) इमान ।

हम निर्गुन कर जानु न मर्मा । भक्ति भाव जानों निम्न धर्मा ॥१५५४॥^१
 तपसी मुनि श्री देखेउ संता । राम नाम सुनि ह्रिदय भर्नता ॥१५५५॥^२
 निगम निरूपति यह जग करई । राम नाम गुन दुखा न सहई ॥१५५६॥
 रहेऊ सिव श्री शक्ति समेता ।^३ हरि पद ह्रिदय गनी गुन केता ॥१५५७॥

श्रीपार्श्व

श्री मुनि सोमस श्लोष प्रति मएऊ ।^४ भक्त समान बचन वेहि कहेऊ ॥१५५८॥^५
 तैं अइ काग कुबुधि कर मूला ।^६ ममता बसि तुम्हे तन पूता ॥१५५९॥
 होए मरान मर्म श्री जाना । सपुपतनक का म्यात बखाना ॥१५६०॥^७
 सतगुर बचन नाहि अइ माना । बैठि शिष्य पर काग कराना ॥१५६१॥
 नर के देह मएउ तय कागा ।^८ बखे प्रनाम करिसुख प्रति लागी ॥१५६२॥
 रिखि क श्लोष सितल तन मएऊ ।^९ बोलि अद्भुत बचन बोलावन सएऊ ॥१५६३॥^{१०}
 रिखि तव दया कीन्ह यह भांती । तर के देह सुदर घर कांती ॥१५६४॥
 फिरि मैं तुम्ह कहूं म्यात बुझ्छों ।^{११} 'निम्न नै ब्या मी तुम्हें सुनेहों ॥१५६५॥'^{१२}
 जेह जए तह दास सख्या ।^{१३} 'मेदि मर्जाद कम सब भूपा ॥१५६६॥

बोधा

भवन भरमि दीपक बिना, जोर छाह के शीम्ह ।^{१४}
 ह्रिदय घन बिनु म्यात ख, धित बिनु छाछी हीन ॥१०३॥^{१५}

- १ (क) भक्ति भाव व्यतिरिक्त सत धरमा ।
- २ (क) (ग), (घ) मुनि = मुनि ।
- ३ (क) बखो सिव श्री बती समेता ।
- ४ (क) प्रति = जो ।
- ५ (घ), (ग), (ङ) वेहि = तब ।
- ६ (घ) कर = कर ।
- ७ (क) (ग) (घ) जाना = जाने । (ग) बखाना = बखाने । (घ) सपुपतनक = सपुस्तनी ।
- ८ (घ) नर के = नर बए । (घ), (ग), (ङ) मएउ = मरो ।
- ९ (घ) तन = तब ।
- १० (घ) (ग) अद्भुत = अद्भुत ।
- ११ (घ) मैं = हम । तुम्हें = तुम । (घ) फिरि = फिर ।
- १२ (घ) ब्या = ब्याप ।
- १३ (घ), (ग), (ङ) जेह = जाह । तह = ताह ।
- १४ (घ) (ग), (घ) के = किरि । (घ) जोर = जोर ।
- १५ (घ), (ङ) शिख = शिखा ।

गहर गर्भ कंठर्ष मदमस्ता ।^१ काग क्यूठ नीष मन राता ॥१६१५॥^२
 विधि गो गहर संत मठ भएऊ ।^३ कठघा कर्म ठेजि हस भएऊ ॥१६१५॥^४
 मति मरास ह नर की बेसी ।^५ विवरन ध्यान सुमति बिधि लेही ॥१६१६॥
 नीष प्रसंग कर्म की रेखा ।^६ इमि भी मसिता ध्यान मम देखा ॥१६१७॥
 उभय धीष ध्यान सत कहेऊ । संत बिबेक परम पद पएऊ ॥१६१८॥^७
 चरित्र राम सो मम कहिहों । इमि करि संत ध्यान निम्नु गहिहों ॥१६१९॥^८
 इद्र जाम कोइ कर्म न पाये । मा ठ वेव विदित जग गाये ॥१६२०॥
 ऐसन मोह काग सम भएऊ । उभय घड़ी मंह सम फिरि भएऊ ॥१६२१॥
 गया कहीं मंहि ठावहि भर्मा ।^९ यह किन्नु इद्रबास कर कर्मा ॥१६२२॥^१
 सम ब्रह्म देखा फिरि भाई । धर्मत कला मन भेद न पाई ॥१६२३॥
 महा महा मुनि धी बड़ ग्याता ।^{११} मर्म काल इन्ह सम पर राता ॥१६२४॥^{१२}
 एक दुइ होए तब कहि समुझाई ।^{१३} अऊ माता किन्नु कहि नहि जाई ॥१६२५॥^{१४}
 बड़ि घरख पर धूमन जागा । उलटी बुधि भूसा मर्म कागा ॥१६२६॥
 धातु भूला फिरि धीरि भूसाया ।^{१५} पड़ा सपेट संपति जो धाया ॥१६२७॥^{१६}
 जाडू जोग में इमि मठ फिरई । बुधि सम छले फहम नहि रई ॥१६२८॥
 अक्षर लख करि मठ नर टारा । विनु सतगुर को निरति मिहारा ॥१६२९॥^{१७}

१ (अ) गर्भ = घरख । (ग), (घ) मर । (ङ) कंठर्ष = कंठरष । (च) कंठरष । (ज) कंठरष ।

२ (अ), (घ), (ङ) काग कुतुबि नीष मन राता ।

३ (घ), कएऊ = मैऊ ।

४ (घ) कर्म = कर्म ।

५ (ग) धी = डी । (ङ) नर = म ।

६ (अ), (घ) उभय धीष ध्यान सत कहेऊ ।

७ (अ) (घ) (ङ) परम = प्रेम । (ग) बिबेक = बिबेकी ।

८ (अ), (ग) (घ) १६१७ संकयक जोलाई का पाठ्यमात्र है ।

९ (अ) कहीं = कठही ।

१० (अ) किन्नु = सम ।

११ (घ), (ग), (घ) महा = माहा ।

१२ (अ) मर्म = मरम । इन्ह = इन्ही ।

१३ (अ), (घ) दुइ = दोए । (घ) तब = तो ।

१४ (अ) (ग), (ङ) जगत मैता कनु कदा न जाए ।

१५ (घ), (घ) धीरि = धारि ।

१६ (अ) (ग), (घ) धाया = परे ।

१७ (अ), (ग), (ङ) निरति = निर्गत ।

बीपाई

वसे तुरख सुनो लगरापा । देसेठ दरख राम पद पाया ॥१५००॥^१
 नित बहो र्हो निकट वसि जाई ।^२ पूठन पडे सो त्रिनि त्रिनि घाई ॥१५०१॥^३
 र्हों लोभाए दरख श्रिय सागा ।^४ निस दिन करो विवक विरागा ॥१५०२॥
 भव भति मोह सखल सन भएऊ ।^५ रिखिकेवचन त्रिप्यामोहि भएऊ ॥१५०३॥
 फिरि फिरि ऐन प्रजोर में जाई । घरि प्रसाद तब खैनहि बनार्ई ॥१५०४॥^६
 सीन्हु चौष भरि तुरखहि भागा । राम के हाय पीछे तब भगा ॥१५०५॥^७
 फिरे यह इन्द्रलंड ब्रम्हंडा ।^८ सप्त पखान पुहुमो नब संडा ॥१५०६॥
 जब में देसेठ निकट देखाई ।^९ मुदेठ पसक भवष वसि घाई ॥१५०७॥^{१०}
 बोसेठ मुख वचन जब धूसा ।^{११} तब में पंठि गए समतूला ॥१५०८॥^{१२}
 देसेठ संड ब्रम्हंड सन भाटी । कोटिह ब्रम्हा वेद विभारी ॥१५०९॥
 कोटिन्हु इद्र भीर सीव भवानी । भेल भलेष संख पुनि वानी ॥१५१०॥
 एक एक बल्प र्हैउ ब्रम्हंडा ।^{१३} राम चग्नि तंह दसेठ भग्नेडा ॥१५११॥^{१४}
 तब में तुरंत बाहर वसि भाएउ ।^{१५} उभय पहर मंह चरित देखाएउ ॥१५१२॥^{१६}
 बासक रूप देसा ठेहि जाई । यह विरतसु कया रघुराई ॥१५१३॥^{१७}

१ (ब), (घ), (ङ) देसेठ = देसेवो ।

२. (घ), (ङ) बहो = वहां । (घ) बद्र = बर्ष । अतिरिक्त पाठ—सुगुणही वचन । (घ) धग सुगुणही वचन ।

३ (घ) त्रिनि त्रिनि = पुनि पुनि ।

४ (ब), (घ), (ङ) र्हो = रहेवो ।

५. (घ), (ङ) भएउ = भेड ।

६ (घ) घैसेदि = कएसदि । (घ) येहु ।

७ (घ) के = कए । (ग) क ।

८ (ब), (ग), (ङ) बर = बी ।

९ (ब), (ग) देसेठ = देसे ।

१० (ब), (घ) मुदेठ = मुदेवो । (घ) मुदे । (घ), (घ) पसक वसि = पसकपुर ।

११ (घ) (घ), (ङ) वर = वर ।

१२. (ब) वए = वया । व = वयो ।

१३ (घ) रहेउ = वीण ।

१४ (ब), (घ), (घ) तंह = तम् ।

१५. (घ), (ग) तब में निकलि बाहर वसि कएऊ ।

१६ (घ), (घ), (ङ) वये परी में वसि पुनैऊ । (घ) वये परी में वसि देखाएऊ ।

१७ (घ), (घ), (घ) विरतन व विरतनु । (घ) विरतनु ।

धीनि मोक्ष निरञ्जन राई । राम रूप श्री क्लिप्त बन्हाई ॥१६४२॥^१
 घट पुर्न क्षम कर्वाइ न करई । माया निरञ्जन सभ बुधि छसई ॥१६४३॥

बोहा

भव जल पानी भीम जिव, महा भर्म भव जास ।
 तीनि लोक फिरि भावहीं, सीस पटक धरि कास ॥१००॥

अर

क्यों विविधि प्रकास ग्यान गमी धेहि विरला जन कोइ जानहीं ।^१
 करह विवरन ब्रह्म श्री माया इमि गुर ग्यानहि मानहीं ॥३६॥^२
 मएउ सो हंस बंस गमी सत गुर भनैत बुधि बिसरवहीं ।^३
 छुटेउ कर्म कसि भर्म नाहीं पिक मयास होए भावहीं ॥४०॥^४

सोरठा

हुम लता बहु भाँठि, सतगुर मत तहि जानहीं ।
 रहे विविधि मत भाँठि, मुनि सभ कथेउ प्रंथ भति ॥२०॥

बोपाई

बहे मनस मन बटा समीरा । पाप पुण्य बूद दोए गीग ॥१६४४॥^५
 तामें मंजन यह जय करई ।^६ बुद्ध सरिता अम इमि कर बहई ॥१६४५॥^६
 निगम मरी दोए रषि के रासा ।^७ तामें बदेउ अनेकन्हि सासा ॥१६४६॥^७
 कहि कन्हि कर्बि सभ बहुउ बनाई । नासा मदी से फुटि फुटि जाई ॥१६४७॥^८
 संत मंत बोई विरला जाने ।^९ सदा सनीप सोइ पय माने ॥१६४८॥^९

१ (क), (घ) (च) जो = है ।

२ (क) जानहीं = जावहीं । (घ) जानवहीं ।

३ (क) (घ) (च) विवरन = विवेक । (क) ग्यान न मानहीं ।

४ (क) मएउ = मयो । (घ) यो । (च) मयो ।

५ (क) (च) छुटेउ = छुटेयो । (घ) मयास = मायास ।

६ (च) दोए = दुर ।

७ (घ) तामें = तामें ।

८ (क), (घ) (च) सरिता = शक्ति । (च) कर = करि ।

९ (क) (च), (च) दोए = दुर । रषि के = रषि ।

१० (घ), बदेउ = बडे । (घ), (च) बडेयो । (क), (घ), (च) अनेकन्हि = अनेकन्हि ।

११ (घ), (घ) नासा = नास ।

१२ (क) संत मंत बोई विरला जन जाने ।

१३ (क) (घ), (च) सोइ = सो इमि ।

शोका

अनंत मन फिरि एक छै, एब अनंत संसार ।^१

उसटि के घासु विषागिए, एब रूहा तनुसाग ॥१०७॥^२

श्रीपाई

मानुख मन जब फिरे फिरंगा । नन त्रिस्टि दिस घारे रगा ॥१६३०॥^१
 पछिमक मान पूरव अनु अहरे ।^२ उखर कह दक्षिणाएन अहरे ॥१६३१॥^३
 यह अघरस वह अगम अगुहा । इद्रजाल कह जीत न जूहा ॥१६३२॥^४
 देखु त्रिस्तांत त्रिस्टि मंह भाषे ।^५ वसि राजा के नाथ नषार ॥१६३३॥^६
 कीन्हु अशमेभि जग्य बइ साजा ।^७ इमि करि गर्व भूसे तव राजा ॥१६३४॥
 बरौ संपूरन जप्य वनाई ।^८ इद्रसोक में सेउ छाड़ारै ॥१६३५॥
 भाए बावन जानु मा मर्मा । इमि करि भूसि भवन में मर्मा ॥१६३६॥^९
 बावन रूप बावन वह रूहै ।^{१०} तीनि सोक पगु इमि बन बरई ॥१६३७॥^{११}
 महा मोह के मर्म न जाना ।^{१२} यह सन निरगि कीन्हु जगवाना ॥१६३८॥^{१३}
 ऐसन कीन्हु भम कर साजा ।^{१४} ती फिरि पीठि न पाइन्हि राजा ॥१६३९॥
 घटा बड़ा नाहि पाब पयारा । तीनि सोक अर्धमो डाग ॥१६४०॥
 यह निरुधार करे नर अवहीं ।^{१५} सउगुग् भ्यान होषे निमु सवहीं ॥१६४१॥^{१६}

- १ (ख) (क), (घ) फिरि = फेरि । (ग) संसार = संवसार । (घ) दो एकडे अनंत संसार ।
- २ (ख), (ग), (घ) तनु = तनु ।
- ३ (ख), (ग) अहरे = अहरे ।
- ४ (ग), (घ) पूरवक मान पछिम अनु अहरे ।
- ५ (घ) १६३२ शौ श्री यह वंश कपटिन है ।
- ६ (ख), (घ) अर = अर । (घ) के ।
- ७ (ख) (ग) देखु = एखो । (घ) मंह = में । (ख), (ग), (घ) अर = अर ।
- ८ (ख), (घ), (घ) नषार = नषार ।
- ९ (घ) (घ) अशमेभि = अशमेभि । (घ) अशमेभि = अशमेभि ।
- १० (घ) बावन = बावन ।
- ११ (ख), (घ) वसि = वसि ।
- १२ (ख), (घ) बइ = बइ । (घ) बइ ।
- १३ (ख), (घ) (घ) अर = अर । अर = अर ।
- १४ (ख), (ग), (घ) महा = महा । (ग) (घ) क = किमि (घ) श्री ।
- १५ (घ), (घ) निरगि = निरगि ।
- १६ (ख), (घ), (घ) अ = श्री ।
- १७ (ख), (घ), (घ) नर = नर । (घ) अवहीं = अवहीं ।
- १८ (घ) १६३८ वंश का कथमान है ।

सगुन निगुन कर यह फल लेखा ।^१ सतगुर मत बिगसा जन वेसा ॥१६५१॥
 निगुन माम है पुर्स नितारा । सगुन सकल जिव करो बिचारा ॥१६६०॥
 जाते तम तिमिरि सम नासे ।^२ मानु कसा छवि इमि कर मासे ॥१६६१॥^३
 ऐसे ग्यान कर्म कसि नासा । भएउ संपूरन प्रेम प्रकासा ॥१६६२॥
 प्राण पिड बेहि होए न नीना ।^४ ऐसे सत पुख कह चीन्हा ॥१६६३॥
 निगुन सगुन यह जाकर बहई । करे विबेक ध्यान गुन लहई ॥१६६४॥^५
 सीव संग सतगुर जन बरसा ।^६ मोटी मनी जानि जिव परसा ॥१६६५॥^७
 अहं उपजे सह मौस न सहई । जाए दुरंतग गुन सम कहई ॥१६६६॥^८
 मात सरोवर घन्य गुन कहई ।^९ बेहि जमी सत सदा सुख सहई ॥१६६७॥^{१०}
 दुरि श्री पुख निकट करि निदा । ममिता बसि सदा तन बिधा ॥१६६८॥^{११}

सतगुर बचन

कैसे मंवर कंस मी रहई । संत सदा गुन इमि कर कहई ॥१६६९॥^{१२}

दोहा

सतगुर भान मिसाल सम, कमल मया संसार ।

विकसे मंवर भावगस जाखे इमि करि करो विचार ॥११०॥^{१३}

सेवक बचन^{१४}

तुम कह सतगुर इमि कर जाना । जेवो दिनेस छवि कसा बसाना ॥१६७०॥^{१५}

१. (क), (ख) (घ) बेखा = देखा ।

२. (क) (ग), (ख) तिमिरि = तिमिरि ।

३. (क), (ग) (ख) मालु = माल । (क) (ग), (ख) मालु = माल ।

४. (क) (ग) होए न नीना = होत ना नीना ।

५. (क), (घ) गुन = मत ।

६. (क), (ग), (घ) संग = सरय ।

७. (क) परसा = पठसा ।

८. (क) जाए = चर्च ।

९. (क) सरोवर = सरवर । (क), (घ) (ख) घन्य = जन ।

१०. (क), (घ) (ख) जमी = जमी ।

११. (क) (ग) (ख) बीधा = बिधा । स्पष्टता के लिए (क) पठ को लिखा गया है ।

१२. (क) कैसे = कसे ।

१३. (क) कमल = कंसल । संसार = संवसार । विकसे = तिमिसे । (ग) कंसल । तिमिसे ।

(ख) माल = मंत । संसार = संवसार । मंवर = मंसवर ।

१४. (क), (घ) में यह पठ नहीं है । (ख) में इसके स्थान पर 'सुभाषाद बचन' पठ है ।

१५. (क), (घ) कह = के । (ख) तुम = तुम्ह । कटा = काट ।

तप के तेज फूला फूलवारी ।^१ एक दुर्म लागे फल चारी ॥१६४९॥^२
 बुद्ध संग्रह दुह जिम्मा करई ।^३ इमि कारन भवसागर परई ॥१६५०॥^४
 धर्म काम चित्त निस दिन रखेऊ ।^५ मोच्छ धर्म भद्र गति सहऊ ॥१६५१॥^६
 चाधु दरस इमि त अचिकारी । अटल ग्यान निजु मुक्ति विचारी ॥१६५२॥^७
 नाम निमल जो कमे बिराया ।^८ भएउ मर्याम तेजि मति काया ॥१६५३॥
 संवित्त जल पै भीतर रहई ।^९ विवरन बिलगि संत मत कहई ॥१६५४॥
 नीर छीर सभ छीव समेता ।^{१०} बक जानहि तीनहुं कह सेता ॥१६५५॥^{११}
 माया ग्यान ओ बुधि परकाया ।^{१२} बिना ग्यान गुन सभ किछु नाया ॥१६५६॥^{१३}
 सगुन निगुन इमि करो बखाना ।^{१४} जेबो जल उपल बिसगिकिमि जाना ॥१६५७॥^{१५}

दोहा

सँधु सहरि संसल है, किमि तरली होए पार ।^{१६}

निगुन नाम जहाम है गुन गहि पीबनिहार ॥१०६॥^{१७}

श्रीपाद

एक जल क्लिप्त रक्ष्या करई ।^{१८} परे हेम जमी पर यलई ॥१६५८॥^{१९}

- १ (प) फूला = फूली, (प) फूले ।
- २ (क) दुर्म एक लागे फल चारी ।
- ३ (क) सह संज्ञि अपठित है ।
- ४ (प) सामर = साम ।
- ५ (घ) धर्म = धरम । (घ), (प) निस दिन = निवदि ।
- ६ (क) धर्म = धरम ।
- ७ (क) मुक्ति = मुक्कति ।
- ८ (क) निर्मल = निरमल । (ग) (प) निमल ।
- ९ (घ) संवित्त जल पै इमि भीतर रहई ।
- १० (क) नीर छीर बज बरदनि समेता । *
- ११ (घ) बक जानहि तीनहुं कप देता । (ग) (प) बक = कप ।
- १२ (घ) (प) परकाया = प्रकया । (घ) परकाया ।
- १३ (घ), (प) बिगुन = बगुन ।
- १४ (क) सगुन = सगुन । (ग) सगुन ।
- १५ (क) (घ) उपल = ऊपर ।
- १६ (क) (क) सँधु सहरि संसल गुन है । (क) सँधु सहरि सह सगुन है ।
- १७ (घ), (प) पीब = पीब ।
- १८ (क), (क) एक जल रक्ष्या किरवी काद ।
- १९ (घ) (प) (प) जमी = जमी ।

माजेठ मकुर साफ भी ऐना । बिमल बिमल पद घोसत बेना ॥१६८५॥^१
 भजन गुर पद लोचन विकसा । घासर मधुर मनोहर त्रिगसा ॥१६८६॥^२
 चारि भतुर्दल उष भकासा । भनि सावक भन पत्र प्रकासा ॥१६८७॥
 कूप तबाग घाटिका घट है । सीषि सुधा सम सो घट घट है ॥१६८८॥
 सामें एक फल भजव मनूपा । विना बीज है सब सख्या ॥१६८९॥
 इमि करि वा फल चाखे सोई । अब सतगुर पद प्रापित होई ॥१६९०॥
 साधु भसाधु कलि कुमति बिहाई । भी निकलक घासु फिरि जाई ॥१६९१॥
 परिमल पारस दुर्म में लागे । भयो सुगंध इमि संत सुमागे ॥१६९२॥^३
 जहां रहे सहं जग में सीसे । भी गुन प्पान नाम भनि ईसे ॥१६९३॥^४

बोहा

दरिया दरसम मकुर है, ता मह कसा प्रकास ।

भी ते गुन यह रहित है मिलि गयो प्रेम सुवास ॥११२॥^५

चौपाई

तुम सतगुर मम दास तुम्हारा । सम विधि कीन्ह मोर उपकारा ॥१६९४॥^६
 सुनेठ वैन मम भ्रिन्नत सानी । महा त्रिखा तन मिसि गौ पानी ॥१६९५॥
 महा सुगंध सितल पद पएऊ । मम त्रिखा बस धिनु मिटि गएउ ॥१६९६॥^७
 विनम करों दोनों कर जोरी । सुनो सपन भलपमति मोरी ॥१६९७॥^८
 जब तुम्ह दर्स पुर्ल के पाई । कवन सखप मम कषा सुनाई ॥१६९८॥
 गुन नौ पृच्छई तौ कहो भनंठा । सो सख्या किमि भासों संठा ॥१६९९॥^९
 निरसेप माया महि सेपा । जीवन भक्ति गुन भतीत भसेपा ॥१७००॥^{१०}

१ (क) ऐना = अएना ।

२ (क), (ग) (प) विकसा = त्रिगसा ।

३ (क) परिमल = भी परिमल । (ग) भयो परिमल । (ब) बीयो परिमल; 'पाख' और 'भी' नहीं है । इमि संत सुमागे = प्रेम रस जाग्य ।

४ (ग) (ब) भनि = मन ।

५ (क) भी ते = मम ऐमि । गुन यह रहित = गुन रहित ।

६ (क) तुम = तुमह । इस चौपाई के पूर्व 'सबक बचन' का उल्लेख । (ग) केवक बचन । (प) में सुकसास बचन ।

७ (क) त्रिखा = त्रिधी । पक्षविद प्रमथत ।

८ (ग) सुनो = सुनहुँ ।

९ (क) इस चौपाई के पूर्व 'दरिया बचन' । (ग), (ब) सतगुर बचन ।

१० (क) (ग) (ब) भक्ति = मुक्ति । (ग), (प) मुक्ति ।

जन में जन में सम जग रहई । मनि है विमल ब्रम्ह पर सहई ॥१६७१॥^१
 मुक्ति धारि है सम स नीका । सतगुरु ग्यान समन्हि ते टीका ॥१६७२॥^२
 ग्यान बसुग है धारिठ भांती । सुनि सेल जरि निमल वाणी ॥१६७३॥^३
 गुणा ब्रम्ह है अनमौ म्याना । उग्र ग्यान मुक्ति असघाना ॥१६७४॥^४
 सक्ति संसय नाहिं तामें भास । सदा प्रगट भव पासक नास ॥१६७५॥
 सग प्रसन्न मन संत विरागा । पर पंकर मन जानु प्रयागा ॥१६७६॥^५
 निज मल मजन दरस मंह करू । तजि वाचन भ्रमिंत रस भरू ॥१६७७॥^६
 नाम विमल जल वह सुधारा । रूप क्रमति मन तेजु विकारा ॥१६७८॥^७
 वह दरिया बारिज निमि कहई । को है भंवर बास निमि सहई ॥१६७९॥^८
 दगिया दिस कमल बिष पूला । मन है भंवर वास समतूला ॥१६८०॥^९
 सेंधु में सखिा सम मिलि जाई । निमि उसधि होए पार न पाई ॥१६८१॥^{१०}

दोहा

पार कहे सो पार है, बार कहे सो बार ।

बार पार सम देखिए, दरिया नील विचार ॥१११॥^{११}

चौपाइ

अंद जेवो मर पार में नएऊ । इमि करि मोह घटा मन छणऊ ॥१६८२॥^{१२}
 प्रबल भाषा भक्ति ग्यान छपाना । मकुर बीच मुखवा सपटाना ॥१६८३॥^{१३}
 उसटि समीर जेवो नीन्ह पयाना । मेटि गी मोह घटा छितराना ॥१६८४॥^{१४}

१ (क) पर = बर ।

२ (प) से = से ।

३ (ग) जरि = बरि ।

४ (क) (ग), (प) है = बई ।

५ (क) निरोग । (प) विरोग = विरगा । (प) पाठ स्वीकृत ।

६ (क) निज = निमि । मंह = मन । तेजि = तेजि । (ग) निमि ।

७ (प), (ग) (प) विकारा = विकारा ।

८ (प) (ग), (क) बह = बोर ।

९ इस चौ० के शरंभ में—(ग) में 'सतगुरु बचन' तथा (प) में 'दरिया बचन' का उल्लेख है ।

१० (प) में इस चौपाइ की पूर्व कटौती नहीं है ।

११ (क) पार = बार । बार कहे सो बार है ।

१२ (क) बई = परदा ।

१३ (क), (ग), (प) मनि में उक्तिविग्न पाठ स्वीकृत ।

१४ (प) जेवो = जी । (ग), (प) आ ।

पारस परसे कंचन होई । सो कुघालु कहि सके ना कोई ॥१७१६॥^१
रहे मसत संत नौ ऐसे । सँघु सीप मुकुटा मनि जैसे ॥१७१७॥^२

दोहा

गुर पद पदुम मन मंमर बरु, भ्रानंद मगस मूल ।
लै सपटि रखा बिमल रस, काटि कर्म कसि सुल ॥११४॥

छंद

मद भर्म भंजन पाप रंजन संजन जन मुख पावहीं ।
घरन कंज में मंजन सन कद त्रिबिधि ताप नसावहीं ॥४१॥
विमल भ्रमकत पसव पेखो भ्रमस नाम लसावहीं ।
जीवन मुक्ति जो ज़िद जग में दरस दरिया पावहीं ॥४२॥

१ (ब) सके = सकप ।

२ (ब), (घ) (ब) सँघु सीप = जैसे सीप । मुकुटा मनि = मनि मुकुटा ।

विशेष विद्वत्ति—(क) में कंज के प्रथम अक्षर में 'संजन' को 'संजन' प्रयुक्त किया गया है ।
द्वितीय अक्षर में 'पकत' को 'पसव' ।

पुस्तक (ब) में २वीं पंक्ति निम्न प्रकार है— 'जैसे सीप मनि मुकुटा जैसे ।'

पुस्तक (ब) की प्रतिलिपि में निम्नलिखित पंक्तियों का किक देखा जाती है—विमल

पुस्तक (क) की मूल हस्तलिपि में कोई अक्षर नहीं है—

दोहा

'दिव्यतीशुव सिद्ध सीप है, उद्य रई लपटीन ।
एक पकक नाहि बिहगो शुभ मति होए ना भीन ॥

चौपाई

साहा बरु में सम कोई बहरै । देखि ब्रिटि बह मनि अनु बहरै ॥
ऐसन संत मुनि मुनाला । पवन पंख न हीए इगई जाला ॥
जैसे सुर्म बंद परिग्रह रंवा । दररित बंजन पित सीतल बंवा ॥
संत सुगंध सीतल सम बानी । विकसित कती मंवर रस-बानी ॥
रत नंग बन इमि कर ऐसे । कहीं साह संक ठनि जैसे ॥
माजन एक विविधि बहु बानी । कहीं प्रिय मनु मदिप बानी ॥
रहे सुसंग संवति नाई जाला । पी बपी केर बंद पकटाला ॥
जैसे मलिका सुत निई बगई । छकि स्वाय बह सुख परई ॥
इमि करि निरहि संत कर छाया । बरु बहु म्भरि मरोरप हाया ॥
बनी बरुष चौपसिही जैसे । पकिना शुभ लव किमि कर लैहो ॥
कसप कोटि मद मरमे जार्द । किनु गुर बजल नाम नाई पार्द ॥
गुर किनु छे ना सीकुठ देवा । सम करई पुनि मुनि की सेवा ॥^१

सतगुरु बचन^१

जौं नग जग में देखि मनसा । सकल सतप महिमा सुख सता ॥१७०१॥^१
 सेस सहस्र मुख विनय विचारी । बहि गुन महिमा इमि करि हारी ॥१७०२॥^२
 ब्रम्हा बिन्दु कहैत त्रिपुरारी । भादि गनस गुन ग्यान विचारी ॥१७०३॥^३
 बिहस्वति मुख महिमा जो कहैक । भादि व्यास वेद मत सहज ॥१७०४॥^४
 कहैत संत गुन महिमा केता । प्रीति सदा गुन प्रेम समता ॥१७०५॥^५

दीक्षा

जस बल सत पखान सही किमि करि करों बखान ।

जौं प्रतिबिम्ब बट देखिए भापु अकेल प्रमल ॥११३॥

सेबक बचन^६

तब सिल कहैत बन्ध गुन ग्याता । घरठ बरन पर-मंजज राजा ॥१७०६॥
 सत दरस गुन सम त नीका । जेवा मस्तक त्रिष मनि बा टाका ॥१७०७॥^७
 तहूं दीपक के कौने कामा । कोटि तिर्य भरमे बा घामा ॥१७०८॥^८
 संत निबट पट देखु उचारी । ठामे बरिप्र धनक संबारी ॥१७०९॥^९
 बच्छु बिहून देखे नहि नना । बहिरा से कोटि कहे जो बैना ॥१७१०॥^{१०}
 ना उन्हि मुना मकुर नहि देना । इमि करि बचन मूठ करि सेना ॥१७११॥^{११}
 सत बचन बनि जानहुं भ्रिय्या । भापु सांभ नहि सकल भ्रिय्या ॥१७१२॥
 परमारम है गंय सुवासा । स्वाभ भापु तन निबट निवासा ॥१७१३॥
 परमारम जेबो पर कह दीजे । भव से काड़ि मुक्ति नहि दीजे ॥१७१४॥^{१२}
 बूझत भव जस सीन्हु निचारी । सतगुरु को गुन इमि बघिचारी ॥१७१५॥

१ (क) (ग) (ब) इतका पाठ नहीं है ।

२ (प) देखि = देखिर ।

३ (ब) देख = देख ।

४ (घ) (ब) सिखु = सिखन । गुन = गुन ।

५ (क) को = मे । सहेऊ = रहेऊ । (ग), (घ) रहेऊ ।

६ (घ), (ग) (प) संत गुन = संत मत गुन ।

७ (घ) (ग) (प) दर बल नहीं है ।

८ (घ), (ग), (प) प्रति का पाठ नहीं है ।

९ (क) कौने = कबने । (ग) कौने = कबन है ।

१० (क), (ग) बरिप्र = बिर ।

११ (ग) कहे = करा ।

१२ (क) बचन = बदन । (ग), (घ) बैन ।

१३ (घ) बर = बर ।

पसक सोसा भिमिया भरि रासा ।^१ नित नै भक्ति बीसहि सत भासा ॥१७३४॥
 गुन सग्रह ऐगुन वेहि डारी । मए मरान निर छीर सुधारी ॥१७३५॥
 विविधि फूल जैसे भक्ति ह्यागे । फल पुष वास रस पागे ॥१७३६॥
 विमल ग्यान निजु प्रेम समेता ।^२ सदा सुवास परिमल निजु हेता ॥१७३७॥
 तेजि भरम सब ग्यान विचारी । इमि करि संत सदा अधिकारी ॥१७३८॥
 जैसे दिनमति दिन है ऊंचा ।^३ इमि करि जानु जक सम नीचा ॥१७३९॥

अनुन वचन^४

क्रिस्न नाम की पुर्ल है कोई ।^५ कौन नाम निजु संत समीई ॥१७४०॥
 जति घटल मुक्ति गुर ग्याता ।^६ सब में भरमि कर्वाहि नहि जाता ॥१७४१॥^७
 संसय छागर हुरि सम डारी । बहो ग्यान निजु मय विचारी ॥१७४२॥

सिरी क्रिस्न कथाच

विमल ग्यान निजु संत है सोता । गोप प्रगट निजु कये निरोता ॥१७४३॥
 हम तिरगुन मल हमहि भगता । हम निजु ब्रम्ह सुमिरि सम संता ॥१७४४॥
 जब जब जम्म जक मंह होई । मिगुन सिता भरि सले न कोई ॥१७४५॥

शोभा

निरासेप निरमय पप, संत सदा सुख हीत ।

भय भजन भगवान हों, दनुज दैत कहू जीत ॥११६॥^८

श्रीपार्ल

निगम नेति गावहि सुर ग्याता । अपत भजन नाम मम राता ॥१७४६॥^९
 छो मम देखि जक सम भूसा ।^{१०} महा मोहू जाल सम ठूला ॥१७४७॥
 संत बुझित मुनि भरेउ सरीरा । मंजेउ दैत भेटेउ मय भीरा ॥१७४८॥
 हमहि बिसंभर हम जगदीसा । हमहि छिता भूजा बससीसा ॥१७४९॥

१ (घ) इतिरिक्त पठ—क्रिमुन वचन । (ग), (घ) विमिया = विम्या ।

२ (ख), (ग), (घ) ग्याग = नाम ।

३ (ख), (घ) जैसे दिनच गुन सग्र है ऊंचा । जक = जयत ।

४ (घ) पुषिष्ठिर वचन ।

५ (ख) मय = नाम है ।

६ (ग) गुर = गुन ।

७ (ख), (ग) (घ) जाता = रता ।

८ (ख) हो = है ।

९ (ख) रता = रता ।

१० (घ) जक = जयत । (ग), (घ) जयत ।

सोरठा

धन्य सुभ सतगुर ग्यान, सेवक धन्य पुकार्ही ।

दीन्ह मुक्ति का दान सुल सागर भी रहित है ॥२१॥

चौपाई

सतगुर वरस संत सुल हीवा । धारेठ धम्रित पत्र पुनीवा ॥१७१८॥
 पिपठ प्रेम धुरि मोह निरंता । विमल ग्यान मन एक धनंता ॥१७१९॥
 साधु संघति सभ कुमति विहाई । सुनि गुन ग्यान धम्रित फल पाई ॥१७२०॥
 संत समाज सत्ता सुल राधू । भक्ति महावम सिर पर छाधू ॥१७२१॥
 इमि करि जग में संत सुजाता । जेंबो जल पुरइनि लेप न माना ॥१७२२॥
 गुन लेहि धींचि ऐगुन देहि धारी । जेंबो मराल निर छोरे सुधारी ॥१७२३॥
 साधु मसाधु एक तन देखा । गुन होए विलगि नाम सत रेखा ॥१७२४॥
 धन्य ग्राम संत जन ग्याता । र्हे तिकट सुने सत याता ॥१७२५॥
 जलज जेंक उपजे जल साधा । रुधिर धींचि जिमि यह गुन गाथा ॥१७२६॥
 इमि करि र्हे सदा एक साधा । मुल है सवन नन है माथा ॥१७२७॥
 पसुपत ग्याम ताहि कहू जानी । जे नहि संत दरस कहू मानी ॥१७२८॥
 सुरसरि जल कुमाजन करई । कसा काटि मविरा तंह भरई ॥१७२९॥
 भति कसूत भव विलि का मूला । यह प्रसंग कुमति का सूला ॥१७३०॥

दोहा

सु दर नर तन पाएके, भक्ति न कीन्ह विचारि ।^१

भए किमी बिनु नैन को, बास बिगिधि संवारि ॥११५॥^२

चौपाई

धनु म किल्ल कया कष्ट कहिए ।^३ इमि करि भक्ति ग्यान निजुलहिए ॥१७३१॥^४
 विनय कीन्ह करन बहु भाती ।^५ कहो संत धसंत मजाती ॥१७३२॥^६
 का पद पाए भएउ भति ऊषा ।^७ देसहि द्रिस्टि सकल सभ तीषा ॥१७३३॥

१ (ब), (घ), (प) कसूत = पुनीत ।

२ (ब), (घ) का मूला = सम मूला । (ग) सम मूला ।

३ (घ) (ग) सुन्दर तन पर पाएके ।

४ (घ) (ग) भए = मयो । (घ) भे । किमी = कीम । (घ) कीम ।

५ (ब) (घ) किल्ल = किमुन । (ग), (घ) कष्ट = किष्टु । (घ), (ग), (घ) कहिए = कदि है ।

६ (घ) किष्टु = किष्टु । (घ), (ग) लहिए = लदि है । (घ) लदि है ।

७ (घ) (ग), (घ) विनय = विने ।

८ (घ) (घ) करो = कोरे । (घ) (ग), (घ) मजाती = मुजाती ।

९ (घ), (ग), (घ) मरु = मर ।

सोह भंस घरि त्रिगुन सरीरा ।^१ अनंत कला मन बहे समीरा ॥१७६३॥^१
 सगुन सरूप वह निगुन निरंता । मन सुमिरो वेहि प्रेम समेता ॥१७६४॥
 कोह कोह भई गुर ध्यानी प्यत्ता । जा पद प्रापित मर्म न राता ॥१७६५॥
 जाके रूप ना जाके रेशा ।^२ जो गुन रहित सो कसे देखा ॥१७६६॥^२
 जंह से त्रिस्टि तहां से घाये ।^३ बिनु देखे कहु कहां समाये ॥१७६७॥^३
 भविनासी गुन बिनसे नाहीं । सदा चैतन्य ब्रम्ह सम माहीं ॥१७६८॥^४
 इमि करि पुख नाम से भीना । जसो प्रतिबिम घट परगट दीन्हा ॥१७६९॥^४
 घट फूटे फेरि जाए समाई । तब प्रतिबिम सोमे नहि पाई ॥१७७०॥
 निगुनि निभच्छर इमि करि भहई ।^५ कनस सते पद प्रापित भहई ॥१७७१॥
 देखाहि मारि संह भविस अनंता । सो घुनि ध्यान प्याम सुनु संता ॥१७७२॥

बोहा

निरगुन मरि निर्बान है, दिम्बि त्रिस्टि कय प्रीति ।

तैं में तंह ना देखिए ससी मर्म नी भीति ॥११८॥

बोपाई

भक्ष्य भसोक पुख सत भहई । भजर भमर गुन इमि करि सहई ॥१७७३॥
 सुम मन भक्त सदा गुन प्याता ।^६ तुम्ह से प्र म कहीं सत बाता ॥१७७४॥^६
 सदा सुसद जन हम के नीका । भक्ति बसी में साधर बीका ॥१७७५॥
 तामो निवट निपट मोर वासा ।^७ जो अन सुमिरहि नाम सुवासा ॥१७७६॥
 सो जन बुझित महापुल पायो ।^८ संत बोह सुनि ताहि नवायो ॥१७७७॥^८

१ (ख) त्रिगुन = त्रिगुन ।

२ (ग) मन = मनि ।

३ (घ) (प) इस पंक्ति के ऊपर 'अनु' म कथन उल्लिखित है ।

४ (ङ) कसे = कोसे । (च) कसे ।

५ (छ) से = सहि ।

६ (ज) समाये = बसाये ।

७ (घ) (ग) चैतन्य = चैतनि ।

८ (घ) (ग) (ङ) प्रतिबिम = प्रतिबिम्ब ।

९ (घ) इन स्पष्ट पर 'भीष्ट' कथन का उल्लेख है ।

१ (घ) (ग) (घ) महु = मण्ड ।

११ (ग) से = से ।

१२ (घ) (ङ) ताते निपट निवट मोर बासा ।

१३ (ग) बुझित = बुझी ।

१४ (घ) नवायो = नवाये ।

हम निकलंकी बावन रूपा । हम घरनी घर घरा सरुपा ॥१७५०॥^१
 हमहि मोवर्धन कर गहि सीन्हा ।^२ हम गोपी संग क्रीडा कीन्हा ॥१७५१॥
 हम जगपासक सभ कहू पाता । गौ गोपाल हम नंद के साता ॥१७५२॥
 हमहि रमापति संत सनाया । पठि पतास माय कहू नाया ॥१७५३॥
 हम केसो धरि कंसहि मार्य ।^३ वसुदेव देवकिहि वंध उवारा ॥१७५४॥
 राधे रुकमिनि रीत कहाई । गोप सखा संग गाए चरार्ई ॥१७५५॥
 मातु जसोदा मर्म म पाई ।^४ बिष्णु दूटा भौ सर डमनार्ई ॥१७५६॥
 हम रमिता रमि रहव निरंवा ।^५ निगम निहारि मिसे महि भंवा ॥१७५७॥
 धानंद मंगल जय में होई ।^६ तब में गुन ससे नहि कोई ॥१७५८॥
 अर्जुन बचन^७ ।

करछुं ध्यान तुम काकर नाक । सुमिरन भजन प्रेम निनु ठाक ॥१७५९॥
 अंतर्धान दीपक धरि पेखा । हो तुम कर्ता दुजा हम दया ॥१७६०॥^८

दीहा

विनय कीन्ह करबोरि के, सुनो सबन चित साए ।

संत से अंतर्ग पर्दा किमि, मोहि अनि देह दुखाए ॥११७॥^९

तय हरि विहंसि बोले कछु सीबा । तुम से कह्यो ग्याल का टीका ॥१७६१॥^{१०}

सिरी क्रिष्ण उवाच^{११}

जाकर भेजस हम बलि भाई । सोइ सदा सत पूत कहाई ॥१७६२॥^{१२}

- १ (क) पारः (क) प्रति अथ पाठ उपेक्षित । (ख), (ग), (घ) पर ।
- २ (क), (ग), (घ) हमहि = हम ।
- ३ (ख) केसो = कपसो ।
- ४ (घ) (ग), (घ) बंध = बंध ।
- ५ (ख) मर्म = मरम ।
- ६ (ख) डमनार् = डमनार्ई ।
- ७ (क) हम = हमहि ।
- ८ (ख) (घ) में = मह ।
- ९ (ख), (ग) (घ) में = हम ।
- १० (ख) दुपिटिर बचन ।
- ११ (ख), (घ) हम = मादि । (घ) हो न तुम करता दुजा हमी देखा ।
- १२ (ख), (घ) अंतर = अंत ।
- १३ (ख) (ग), (घ) का = कर ।
- १४ (ख) (घ) उवाच = बचन ।
- १५ (ख), (ग), (घ) उवाच = उवाच ।

गुर विनु जप तप ध्यान न करई ।^१ भए भजन सत गुर पद गहई ॥१७६३॥
 मय ठरनी गुर ध्यान सनीपा । दया दीपक मन तेज सनीपा ॥१७६४॥^२
 प्रति अधीन सीन पद पावे ।^३ दर्पम दया सुखद गुन गावे ॥१७६५॥^४
 भीजे केस करे मख घाटा ।^५ तवपि हेतु छोड़े नाहि माटा ॥१७६६॥
 ऐसे प्रेम संतन्ह सुख दीजे ।^६ मम बासक कंह रण्ड्या कीजे ॥१७६७॥^७
 गुन ऐगुन बी सोज न कीजे । दास धंक निशि कर गाहि सीजे ॥१७६८॥^८

दोहा

धनुंन धर्म विचारिके, सिरीक्रिस्त से कीन्ह ।^१
 धव भए कोन ध्यापिहै, नाम भटल गुरु दीन्ह ॥१२०॥

श्लोक

क्रिस्त भाखैठ ध्यान गीता धर्म राखैठ द्रिठ दही ।
 गुर ध्यान ध्यान जो बिमल भक्तकठ पसक पेखैठ सो सही ॥४३॥^२
 धर्म सुनेक उर्ध सुनेक छत्र घुमि सुनि गुर कही ।
 वेसि दर्सन परमु धमपा भक्तकठ मोठी मनि कही ॥४४॥

सोरठा

गुर विनु होहि न ध्यान, ध्यान न होखे मक्ति विनु ।
 करि वेसि धनुमान दया आवे विस में वसे ॥२२॥

सेवक वचन^३

तब सिख कहैठ मुनो गुर ध्याता । कहैठ ध्यान प्रेम निजु याता ॥१७६९॥^४
 कोन नाम गुन किमि कर सहिए । जाने भजनस क्वहि न बहिए ॥१८०॥

१ (घ) ध्यान = ध्यान । अत्र-एत 'य' के स्थान में 'व' लिखित है ।

२ (घ) मग = मगनी ।

३ (घ) सीन = सीन्ह ।

४ (क) दर्पम = दर्पण ।

५ (क) कीजे = करी । (घ) दीजे ।

६ (घ) प्रेम = प्रभु ।

७ (घ) रण्ड्या = रण्डय ।

८ (घ) दास धंक कर गहि लिखि कीजे ।

९ (घ) प्रति का पाठ स्थीरुत तथा (क) प्रति का पाठ अपेक्षित ।

१० (घ) पेखैठ = पेटो ।

११ (ग) धनुंन वचन ।

१२ (घ) कहैठ = करी ।

जो धिप करिहैं संत के हांसी । तेहि धिप सहहों जम के फांसी ॥१७७८॥^१
 यह मिथ्या जति जाने कोई । दुर्जोषन सम राम विगोई ॥१७७९॥^२
 प्रंकुर बोज का फागुन यहई ।^३ साधि भ्रष्टाधि यह किमि करि कहई ॥१७८०॥^४
 मीन मानु मछे काग रूपुवा । स्वादिक स्वारथ भाठम भूटा ॥१७८१॥^५
 भरमि भवन में होहि धनीता ।^६ करिहैं पाठ पुरान भौ योता ॥१७८२॥
 ऐगुन संग्रह गुन देहि डारो । जग मंह सिख करहीं नर नायी ॥१७८३॥
 प्रति पुनीठ भापन कुल माना ।^७ द्विम भ्रष्टार बिलय रस साना ॥१७८४॥
 भेख सुभेख देखत निक सागा ।^८ ऊपर हंस मितर है कागा ॥१७८५॥
 दोहा

काग कर्म कुबुधि धरि, नाहि हंस की जाति ।

घाए कुसु मक प्रीति करि, बँटु विकन्ह की पांति ॥११९॥

श्रीपाई

प्रंकुर भग्द संत सुर ग्यानी ।^१ वोतहि विमलरस भक्ति सानी ॥१७८६॥
 भएठ मराज गुन सम मति नीका । गुर पद पंख मस्तक टीका ॥१७८७॥
 पर दुल दसि कवे नाहि हल्ले । दया समत भ्रमोषन कर्ने ॥१७८८॥
 प्रति प्रसन्न पद सो जन मुगुता । पाप पुन्य कहहूँ नाहि मुगुता ॥१७८९॥^{१०}
 भस महिमा गुन सामु बखाना । निरसनेप है पद निर्बाना ॥१७९०॥
 प्रभुन धरा धरन चित्त साई ।^{११} धम्य धम्य निजु बचन सुनाई ॥१७९१॥^{१२}
 गुर परमेस्वर गुर गुन ग्याता ।^{१३} मम तुम्ह दास धरन बित्त ग्याता ॥१७९२॥

१ (व), (प) तदि = सादि ।

२ (व) (प) दुर्जोषन = बिरजोषन । (ग) शरजोषन ।

३ (व), (प) कतिरिह पाठ—मिनय बखन करो कर बोरी । ईसय सखत मेदाबडु मोरी ।
 (व), (प) का = के ।

४ (व) कवन करि इरई ।

५ (क) (ग) (प) स्वादिक = स्वोदिक । स्वारथ = स्वोरथ ।

६ (ग), (प) भरमि = भरमि ।

७ (क), (ग) (प) ग्याना = बान्या ।

८ (प) देखत = रथ ।

९ (व) (ग) (प) भग्द = भग्द ।

१० (ग) में १७८८ चौ० से १८०१ चौ० तक का पाठ १८० ईस्वीक बीरद के बाद है ।

११ (व) धरन = धरन ।

१२ (व) धम्य रवो मम बचन सुनाई ।

१३ (व) परमेस्वर = परमेश्वर ।

रहनि गहनि यह रही निरंता ।^१ होय मुक्ति सुनो सत संता ॥१८१६॥
 चारि मुद्रा चारिठ मांती ।^२ उनुमुनि मुद्रा मनि चहु पांती ॥१८१७॥
 निरभच्छर भच्छर बुनि पाव ।^३ गुप्त प्रगट तंह द्विस्टि सगावे ॥१८१८॥
 काया भद्र भ्ररि देखे भनंता । एक सो एक बिमस गुन छता ॥१८१९॥^४
 इमि करि सदा रहे जग मांहीं । जंघो पुरइनि पर जल न रखाहीं ॥१८२०॥
 जन में रहें पै बस छे भीना ।^५ इमि करि संत जल में भीना ॥१८२१॥^६
 आके सतगुर मिसे औ ग्याता ।^७ कबे ना कास करे उतपाता ॥१८२२॥^८
 सोत्रहुं मुक्ति तेजहुं कुल लाजा । सम विधि धानंद मंगल काजा ॥१८२३॥
 मातु पिता सुत वंधु औ भ्राता ।^९ अंह अंह जनमे सम कुल नाता ॥१८२४॥^{१०}
 पसुकुस जनमे पसुकुल होई ।^{११} नर मग ब्रम पवारव सोई ॥१८२५॥^{१२}

बोहा

जनम पवार्ष पाए के, सतगुर पव छे मीन ।

भधरर सुलभ सम ब्यापिया, ऊब नीब कइ मीन ॥१८२६॥^{१३}

दरिया साहस यजन

नर होए दास नारी होए भीना । संग्रह करे बिषय रस भीना ॥१८२६॥^{१४}
 साकठ सुकट भीमती ऐसा । सर भव जन्म स्वान मति औसा ॥१८२७॥^{१५}
 इस्त्री पुर्ष ओ दुइ मत चलई । चारि चरन कुत्ती भवतरई ॥१८२८॥

१ (अ) यह = औ । (घ) (प) निह ।

२. (अ) चारिठ = चार ।

३ (अ) बुनि पावे = बुनि तहां बावे ।

४ (घ) सो = से ।

५. (अ) पै = से ।

६ (घ) (ग) जल = जल । (घ) जल । (अ), (ग) (घ) में = मंड ।

७ (अ) में औ सं १८२१ से १८२८ तक का पद्य १८२७ संस्कृत औ के अर्थ है ।

८ (अ) कबे = कबई । (घ) कबे ।

९ (घ) मातु = माता । (घ) बंधु भ्राता । (अ) बंधो भ्राता ।

१० (घ) (अ) समे कुल नाता । (घ) समे कुल नाता ।

११ (अ) पसुकुस जनमे = पशु में जनमे ।

१२ (अ), (घ) नर के जनमे पवारव सोई ॥

१३ (घ) (ग) (घ) सुलभ = मूल । (अ) मीन = मीन । मीन = मीन ।

१४ (घ) भीना = सीमा ।

१५. (घ) (घ) रवान = रवान । (घ) रवान ।

होए मुक्ति संत कर संगी । कुमति काल नहि भ्यापेठ धंगा ॥१८०१॥^१
 दुख दाखन जम जाल विकारा । नष्ट जाहि नहि जम के द्वारा ॥१८०२॥^२
 कहो गुन ग्यान प्रेम सत वानी । जेहि ते लंघिए भवजल पानी ॥१८०३॥^३
 जाते हंस बिगोए न जाई । सतगुर धरन सुधा सम पाई ॥१८०४॥
 सीख सकि रहे एक साया । किमि कणि जग में होहि सनाया ॥१८०५॥
 कहो सत परा जनि राखी ।^४ होखे मुक्ति सोई सत भाखी ॥१८०६॥
 जाते अष्ट मिटे भौराखी ।^५ काल फंद ग्रिह कटि जाए फांसी ॥१८०७॥
 मानुख जन्म दुर्लभ जग धरई ।^६ बड़े भाग मुक्ति फल लहई ॥१८०८॥^७
 भरमि भवन भौराधिहि रावा । जग में ग्यान मिसे मुर ग्यावा ॥१८०९॥
 सम तेजि करो भक्ति निदु भर्मा । पाप पुन्य नहि भ्यापे कर्मा ॥१८१०॥
 बड़े पुन्य सत गुर पद पावे ।^८ जाके सुर नर मुनि सम गावे ॥१८११॥^९

सेषक वचन

धर मोरे मन उपजा प्रभा । तिर्य वस त्यागो सम नेमा ॥१८१२॥^{१०}
 जो तुम कहो सोई चित धरिहो । सत वचन झिय्या नहि करिहो ॥१८१३॥

बोधा

सतगुर वचन दिनस सम, बिकसेठ मोचन प्रेम ।
 झिगा भाव रस भाखहि, तेजि सकल धम नेम ॥१८१४॥

हरिया साहब वचन^{११}

कहो वचन सुनो निजु दासा । बिकसेठ कमस भौर सुख दासा ॥१८१५॥^{११}
 पहुम पत्र में सुरति सवावहू । निर्मल नाम अमिठ फन पावहू ॥१८१६॥

- १ (ख) भ्यापेठ = भ्यापे ।
२. (ग) विकारा = वेद्यता ।
- ३ (ख) (ग) लंघिते लंघिए = अदिते लंघी ।
- ४ (ख) राखी = रखी । भाखी = भाखी ।
- ५ (ख), (ग) (घ) मिटे = मैटे ।
- ६ (ख) धरई = धरई ।
- ७ (घ), (ग) लहई = लहई ।
- ८ (ग) पुन्य = पुन्य । पावे = पावे ।
९. (घ) (ग) (घ) गावे = गावे ।
- १० (घ) निर्य = तीरथ ।
- ११ (ख) झिय्या वचन । (घ) वदतुर वचन ।
- १२ (ख), (ग), (घ) विकसेठ = विकसे ।

भसा मया सतगुर पव पाया ।^१ भादि भंत सम कया सुनाया ॥१८४३॥
 भक्ति म्यान श्री जोग विरागा ।^२ ह्रिय विभेक प्रेम निजु पाया ॥१८४४॥
 संसय सागर गएर विहाई ।^३ निजु गहि नाम प्रेम लौ लाई ॥१८४५॥
 परमारथ सुनि भागत मीका ।^४ मम निजु दास तुम्हें कर बीका ॥१८४६॥
 पानि ओरि के दिनय विचारी ।^५ सुनो सवन दे बचन हमारी ॥१८४७॥^६

सेवक बचन

भारि पुर्ख एके मत मासा । सो मैं सुनी ह्रिय मंह रासा ॥१८४८॥
 भारि पुर्ख नहि एक मत बलई । सो तुम्हरे घर किमि कर रहई ॥१८४९॥
 सो तुम्ह म्यान क्यो समुझई । सो मर तैसन करे जपाई ॥१८५०॥^७

सतगुर उवाच

भक्ति भाव बब माहीं करई । करो त्याग म्यान मत रहई ॥१८५१॥
 कनहरि एक बुइ छरमी कंसे । बुडि मुझाहि नव सागर ऐसे ॥१८५२॥
 छोड़ि पाठ भषपठ के बलई । परे संवर कनहरि का करई ॥१८५३॥
 छोड़े संप्रह होए रहे एका । सोवर कास क्ये नहि टीका ॥१८५४॥
 संगोट बब बब तंह बरसे । विमल प्रेम भमी घन बरिसे ॥१८५५॥^८
 नेन समान जग मजरि जो भावे । जहां रहे तंह सम को भावे ॥१८५६॥^९
 सर्ग मर्क के संसय जाई । पुरम ब्रम्ह सवा सुखदाई ॥१८५७॥

बोधा

भक्ति म्यान का यह मत, सुनो सवन बित साए ।^{१०}

भाव भक्ति यह म्यानरस, बिवरन किया बजाए ॥१२४॥

बीपाई^{११}

भरन कमल पद पंकज सेहो । महामोह पुस क्यहि म पैहो ॥१८५८॥

१ (क) पर = पुर ।

२ (क) भक्ति = भगवति ।

३ (क), (ग), (घ) गएर = गयो ।

४ (क) (ग) (घ) मति का पाठ कहीकत ।

५ (क) बान ओरि करो दिनय विचारी । (घ) के = करि । (ग) के ।

६ (क) सुनहु सवन दे बचन हमारी ।

७ (क), (घ) (ग) करे = करी ।

८ (क) (घ) बरिसे = बरिसे ।

९ (घ), (ग), (ग) बी = बी ।

१० (क) बितजाए = बिजाए । किया = कियो ।

११ (क) अतिरिक्त पाठ = सुखासाई बचन ।

नर के जन्म हेम द्यवतारा ।^१ सदा लिए सग खेसे सिकारा ॥१८२१॥^{*}
 ससगुर बचन झिम्मा जनि मानहुँ । महा बठिन दुख दाखल सानहुँ ॥१८३०॥
 मारि पुख ओ एक मठ होई । पुग जुग राम करेगा सोई ॥१८३१॥^{*}
 एके पान परवाला जाने । दास दासी निजु म्यान बखाने ॥१८३२॥
 गुर पद पंजब रहे पुनोता । सदा सुगंध संत मठ हीता ॥१८३३॥
 घरत कमल निजु प्रेम समेता । विधिनि नर्म भव छुए न प्रता ॥१८३४॥
 बम्ह संपूरन भव निर्लेपा । घाड़ घटक नहिँ जस मिन लेपा ॥१८३५॥
 पगु मगु मंगन सदा संग सोछे । विवेक विचारि आरु धित बाहे ॥१८३६॥^{*}
 धित चौरा भौमुख हू जाती ।^१ ह्रिदय प्रेम प्रिय लिखू सुपाती ॥१८३७॥
 धनबन भीन तहाँ सम देखे । सोप्रत आगत द्रिस्टि में देखे ॥१८३८॥
 तीनि भवस्या सम बहू होई ।^१ आगत सपना सुखुपति सोई ॥१८३९॥^{*}
 तूमि तेस जरि निर्मल नीका ।^१ सब सरुन नर वेद का टीका ॥१८४०॥^{*}

बोहा

एके मन एके दसा, ह्रिदय होए मनुराग ।

कहँ दरिया नर निजु पुर, मिटे कर्म का दाग ॥१२३॥^{*}

सेयक बचन

तब सीख बहेत गुर ग्यानी ।^१ मिता बिमल रस भ्रमिल सानो ॥१८४१॥

जन्म जन्म के मिटे कल्पना ।^१ सुख सागर में दुख सम सपना ॥१८४२॥^{*}

१ (ब), (घ) नरके = नारी । हेठ = संभरण; अहेर या अहेरी (शिघरी) ।

२. (घ) देखे = देखती ।

३ (घ) करेण = करणा ।

४ (ब) विवेक = विवेक । (घ) विचारि = विचार ।

५. (घ) चौरा = चौतरा । (घ) पंक्ति—म्यात्मय—दिई प्रेम प्रिया लिखू पाती ।

धित बरतण बरमुख जाती ॥

६ (ब) (घ) चररि बरस्या सम बहू होई ।

७ (घ) कल्पत = जाणति ।

८. (घ), (ग), (घ) जरि तेस जरि निर्मल नीका ।

९ (घ) सर्व संपूरन वेद का टीका ।

१० (ब) (घ) मिटे = मेटे । (घ) मेरा ।

११ (घ) (घ), (ब) तब सिख बहेत जन्म गुर ग्यानी ।

१२. (घ) के मिटे = है मिता । (घ) का मेरा । (ब) के मेरा ।

१३ (घ) सुख सागर में सुख नहीं बनता ।

काल विमंजन मैलिहि मंजन संजन अत श्री कीकरमी । ,
दरिया विस देखि बिचारि कस्य निमि घासि सुखे जल हो भरनी ॥४७॥

सोळा

जेंवो तरमी अस माह, नाम बिमल गुन रहित है ।^१
समुक्ति पकडिए वाह, मब मर्हि धूडे जहाज मह ॥२३॥

दोहा

संमत घठारहू सं सैंतिस, गए पुरख के पास ।^२
जो जन समुक्ति बिचारिहैं, मिटि जाए अमनास ॥
मादो यही चौथि दिन, गवन कियो छप सोक ।
जो जन सध्व बिबेकिमा, भेटि जाए सम शोक ॥

यह वास्ती सन २७८ साल मो ग्रंथ 'म्याल रतम' लिखल संपूरन भया, वार धुम के, महीना नाम पुस, सुक्रस पन्ध्र तीथ २१, प्रगने मन्ववघा, जिसे मोतिहारी, तपा बहास मौजे सकरार बजार मठ पर लिखल संपूरन (भया) हुमा ।

सरकार साहाबाद, नोजपुर प्रगने दलबारी, तपे वीसी मौजे शरफघा तरत जोगा सं प्रवाल समुन्ध लेना दरिया साहब का मकान अखपाल गादी दसपत कमलदास फकीर, दरियासाहब के दस्त से साहब रामचरन दासजी के भागे सेवक फकीर होंहि मा या होंहिने समी की सतनाम पहुँचे ।

दस्त जोरि के भागे यह ग्रंथ दरियापंथी सेवक फकीर छोड़ि दोसर वाणनि मति रणे, मति लिखे, का हिन्दू का मुसलमान का कोई भेद सम को सोर्गप है ।

१ (घ), (ग) (ब) नाम बिमल गुन विदित है ।

२. (घ) शर है मर्म जनि एखहु, मिटि शप्प मिठ घार ।

दुकिठ बचन बिचारिया, उतरि जाए मब पार ॥

धानंद मंगल पूरज कामा । मध्य त्रिभु मिला सुतनामा ॥१८२६॥
 धन्य भाग तुम जग में आए । पंथ बलाए बीव मुकुताए ॥१८६०॥
 खोजि यचित भए सीनिठ देवा । हठ निग्रह करि सावहि सेवा ॥१८६१॥^१
 सीनहुं सत पुर्ख माहि जाना । धन्य भाग सत पंथ बलाना ॥१८६२॥^२
 गुर बिनु भव जल मिटे न चिता ।^३ महे प्रेम नाम मनीता ॥१८६३॥^४
 जैसे मिछा मिठी जल जूडा ।^५ पिये धमी भव क्वहि न बूडा ॥१८६४॥
 संसय सागर क्वहि न भ्यापे । पाव पुन्य क्वहि नहि छापे ॥१८६५॥^६
 भव मनि मुकुता प्रति छवि सीका । घाए कक मंहगे मोल बीका ॥१८६६॥^७
 सत सिद्ध सुदिष्टि मित्रु बानी । श्रवन सुने नर बहुष बसानी ॥१८६७॥
 सुमन घटा जनु बग्गि सुगंधा ।^८ सव भ्यापि सन दुख सन रंधा ॥१८६८॥
 ऐसन विमल विरोग बिरागा ।^९ कोटि कर्म कटि जाए सुभागा ॥१८६९॥
 जैसे कदती बने कपूरा ।^{१०} विमल बहू भया भरिपूरा ॥१८७०॥
 निरादाग निर्लेप निरंता ।^{११} संस मंत मित्रु यहनि गहता ॥१८७१॥

शोहा

सतगुर धरन विमल पद, यहि सीन्हो निनुनाम ।^{१२}

मक्ति भाव दिद म्यान करि, जाए मरर पुरषाम ॥१२२॥

धर^{१३}

हो सुख सागर सभ गुन भासर निगम मति सभ बरनी ।

बल पस में सत पतान में जेवो निमिष दिन है धरनी ॥४५॥^{१४}

- १ (ख), (घ), (ङ) सावहि = सावध ।
- २ (ख), (घ) धन्य = धन । (घ) धन्य ।
- ३ (ख) (घ), (ङ) मिटे = मेटे ।
- ४ (ख), (ग), (ङ) मनीता = मनु बीका ।
- ५ (ख) बस मिछा मिठे जल जूडा । (ग) मिठी = मेटा । (ङ) मेटे ।
- ६ (ख), (ङ) पुन्य = पुन्य । (ग) पुन ।
- ७ (ख) कक जगत मर मंहगे मोल बीका । (घ) कक जगत मंहगे मोल बीका ।
- ८ (घ) प्रति का पाठ स्वीकृत ।
- ९ (ख), (घ) (ङ) प्रति का पाठ स्वीकृत ।
- १० (ख), (घ), (ङ) जैसे बेरती बन एक पूरा ।
- ११ (ङ) स्वीकृत प्रति में 'निर्लेप निर्लेप निरंता' पाठ है । (ख), (घ), (ग) निघण्टु निर्लेप निरंता ।
- १२ (ख) सीन्हो = सीन्हे ।
- १३ (ख) धरनय धर सनमय । (ग) धर नगद । (ङ) धर धर बरनय धर धर ।
- १४ (घ), (ङ), (ग) बल बल में = बल में पल में ।

गुरु पीर का क़त्तम मानना । भागे संवन्द जन से निनती मोर । छूटत
मश्वर भेव सन जोर । जो देला सा निखा ।'

१ (ख) गरब म्यान रतन ईपूरम समत सन समन सुरी रोख मुब समरत सत गरब
ईपूरम महल मौजे हरिनापुर में लक्ष्मन राय के मठ पर लिखल लीलावती दस का
कधीर दरिवा साहब का दस है साहब बिरंधी राय सरकार साहायार मौजपुर
परामे बनवायी तपे बीडी मौजे बरबंवा लखत मुकरीत साहब का बदल टखार भे परबला
भागे जो छोई देबक या कधीर हुका है कब होएग्य हो सम को सतनाम पहुँचे सतनाम
बदल साहब के निनती मेरी । टूटत कदर से सन जोरी । सतनाम सतनाम सतनाम ।

(ग) गरब ईपूरम लिखल महल म्यान सतपुर दरिया साहब जो माखल से लिखल बसत
किमुन राय दरिया साहब के कधीर कपना दस्त का साहब दकारत साहब का सतनाम पहुँचे
दस्त जोरी बका जेस कधीर साहब ब तेकत सतनाम पहुँचे बरल कुरके दौटा के सत
नाम से परबालिक तेकत पर साहब का दना हर भिति कगहन सुरी पंजम सुम दिन बुपके
पूरम गरब महल रंगारुस किरा रहली निबाँपुर बनारसाया सन् १२१६ वात
से में दखत सत किमुन राय ।

(घ) (ब) प्रति में कन्त में, होहों का जोर उल्लेख करी है ।

प्रथम-समाप्ति का ईय इक प्रथम है—

॥ प्रथम ईपूरम म्यान रतन ॥

ईसत १८३४ सत

समय नाम कालुन किमुन परत बार होमार के रोख तैयार हुका, प्रथम मनुका होहर
पुर देनात बस देबक के काल पर, दखत से दस कधीर दरिया साहब का साहायार,
मौजपुर परामे बनवायी तपे बीडी, मौजे बरबंवा मो टखत दरिया साहब का सतनाम लता,
से प्रबाल निे बाम को फिर गुला सम से बर्न हमार निनती सतनाम ।

जो देवा हो लिख, भूत बूढ़ माठ ।

संगर सप मीस दिवा ।

सतपुर का सपनेय ॥

प्रतात सप प्रथम ईन्द ।

कपम म्यान मति बुज ॥

बसत दस बदि ईस ।

ज्ञानस्वरोदय

बीपाई

धनर नाम गुन सत करदारा । धन साहब तुम्ह सिरधनिहारा ॥१॥
 धन साहब तुम्ह धवभुव बरनी । धमिगति महिमा सकी न बरनी ॥१०॥^१
 विधि सिव सेस सारदा बरही । नाम अमोल मोस बटावही ॥११॥
 प्रसी लास पैगमर भाषा । बेकीमत कर संत न पाषा ॥१२॥
 धन सतगुर भवनिधि कंड़हारा । धाए जग जिव करहि उवारा ॥१३॥^२
 नन बिहुन नहि कवन बेसासा । नाम मानु सत कोटि प्रकासा ॥१४॥^३
 सो साहब भो सतगुर मोरा । गौ दोविषा भी नन प्रंखोरा ॥१५॥
 धाधुहि हुकुम दीन्ह मोहि जानी । हरिया ग्यान सरीद बखानी ॥१६॥

साखी

उरलोचन मगु देखिए हाजिर हाल हबूर ।

प्रगट प्रताप नाम कर प्रेम भक्ति विनु दूर ॥१॥

बीपाई

बिन्दुहु न सतगुर देखि पराहु । का मद माया बिसै रस खाहु ॥१७॥^४
 एह संसार माया कलवारी । मदे मताए भरम करि बारी ॥१८॥
 सोजहु सतगुर प्रेम समोई । उज्जम दास हुँस गुन होई ॥१९॥^५
 मुरुषा मुकुर सिक्कि बर नीके । ठजि छल कपट धाफ बर हीके ॥२०॥^६
 नाम निधान देखु निबु पसके । जगमग जोति भलाभल भलके ॥२१॥
 उर संदर जव होण उजियाग । बरै जोति दिस निरमल सारा ॥२२॥
 मति कर जोर नुसुम जगमाहीं । निज स्वारथ रव एह मस माहीं ॥२३॥
 मूले पीष बघन जनि करहु । दोष कुबोल जानि परिहरहु ॥२४॥^७

साखी

जस पियार जिव आपनो, तस जिव सभै पियार ।

जानहि संत मुबुद्धि जन, जाके बिमल विभार ॥४॥^८

(७) प्रति—

१. बनावही = बरही ।

२. जग = जगत ।

३. धमिगतिवी में धम-मन्त्रयम ।

४. 'बीगहु न सतगुर दैल पराहु ।'

५. दास = दास ।

६. भीडे = भीड़े । दिवके = दीड़े ।

७. बघन = बघ येत कुबोल = बाएल क बीएल ।

८. तभै = तमहि ।

सतनाम

प्रथम ग्यान सरोदें माखल दरिया साहब
बंधीछोर हंस उचारन सतगुर नाम निसान सही^१

साखी

दरिया भगम गंभीर है, धान रखन की क्षानि ।
जो धन मीलै ओहरी, सेहि सख पहचानि ॥
सुरस भे^२ महिमा भगम चारो वेद का मूल ।^३
कहाँ सरोदें ग्यान एह, कंबल मानसर फूल ॥१॥^४

श्रीपाई

एथ भस्टदस कीन्ह बखानी । तब सरोद कइ दिस धनुमानी ॥१॥^५
ग्यान सरोदें कहेउ कबीरा । अपर छाधु निनु ग्यान गंभीर ॥२॥
छाहव मम धंतर गति खानी । बोले विहंसि मधुर भिद्रु खानी ॥३॥
दरिया करहु सरोद उचार । हंस बंस गमि करह विचार ॥४॥
भादो धन्त मध्य तुम जामी । निरगुन सरगुन सत सहि^६ ॥५॥
बाहर भीतर देहु देखाई । जिव दिइ होण भगि मन लाई ॥६॥
करै विचार मुबुधि जन छोई । जा तै धावागवन न होई ॥७॥
कीन्है सतगुर सेहि मुहुखाई । सोन जाए जिव काय न खाई ॥८॥

साखी

धंतरगति मम जानिबै, करखा बाएस दीन्ह ।
ग्यान सरोदें प्रथम, तबहि धरंमन कीन्ह ॥२॥

(क) प्रथि—

१. प्रथम ग्यान सरोदें माखल दरिया साहब सुक्ति के रत्न हंस उचारन ।
२. सुरस = सुगुम । चारो वेद = चारि वेद को ।
३. करौ = करे । कंबल = कमल ।
४. कीन्ह = कहा ।
५. तब = तबे सत ।

का मामा मद पियहु दुकानी । तेजि भन्निव बिस अणवहु जानी ॥१६॥^१
पियहु नाम भव असल करारा । रहुहु मस्त कल्पन्हि मठवारा ॥१७॥

साखी

एह भव सोग संतापना, निकलि सितावी घाए ।^२
माया कांठ भति कठिन है, भव जनि कव कैसाए ॥१८॥

चौपाई

एह भव सेंधुर कव सम साई । संवर धरंग धार कठिनाई ॥१९॥
त्रिबहि दोहाए अकोह घुमारै । घिना अहाअ पार किमि पावै ॥२०॥
तिगुन त्रिबिध धार भति बांकी । बुझि मुए भव सम पौराकी ॥२१॥
नाम अहाअ सुकित कनहारा । अइहि संतजन उत्तर्हि पारा ॥२२॥^३
करहु मान सरवर तुम बासा । मोठी मुक्ति सीप गुन बासा ॥२५॥
वरव होन हित फिरहि उदावी । एह मामा कहु का कर दावी ॥२६॥
माया काहु कर भई न होनी । नेक नाम गुन रहि गौ खोनी ॥२७॥^४
नेक नाम अग जो तुम सचहू । जोर बुनुम सम ए परिहरहु ॥२८॥^५

साखी

बदी आसिमा जोर करै एह काफर को काम ।^६
नेक मरए डरता रहै, जानै असह क्लाम ॥३०॥

चौपाई

साख छोदाए नबी सैं बरनी । धिग जीवन अग आसिम करनी ॥३६॥
पिबै सदाव पुन करि धाई । नालति नबी देहु वेहि जाई ॥३७॥^७
सैंसै क्रिस्त गति महं कहेऊ । बिरला करि बिबेक सो सहेऊ ॥३९॥
निज मुए क्रिस्त सो कहा बसानी । भीवदया गीता महं जानी ॥४२॥
सो तेजि पंडित दुख्या पाठा । मचा सकल अग भवभट पाठा ॥४३॥

(घ) भति—

- १ अत्र = जानी ।
- २ संतापना = संताप बहुत ।
- ३ कनहारा = कंदहारा ।
- ४ कर = की । यो = यई ।
- ५ सचहू = बरहू, सम ए = सब से ।
- ६ जोर = जो ।
- ७ = मरति । अर्थ—दालत ।

सोरठा

मुकुर मइल नहिं होए, निमि चसमा कहूं साफ करू ।^१
सम घट एक सोए, महन मेहरमो होए र्हो ॥१॥

शौपाई

निज जिव सम सम जिव जग माहीं। जानहिं साधु श्याम जेहि पाहीं ॥२५॥
मति कइ सुन पिबै जनि दाऊ । गर्व गहरि वूरि करि ढारू ॥२६॥
मोह माया मव तेजहु विकारा । कछु मखि सतगुर गुन सारा ॥२७॥^२
ज्यों तें चहसि मदिप संग वासा । भाय पिबो मवमय विनु कासा ॥२८॥^३
सेहु प्रेम करि छारि पिलावों । प्रीति रीति करि पियहिं मितावो ॥२९॥^४
मंजन जलनिधि संगम गंगा । सस सुक्रिष को उठा तरंगा ॥३०॥
कर भसनान विमल मन होई । वास दया दिस दीपक मोई ॥३१॥^५
कवतक दोजक भाष से डरू । भरम से भिस्ति भरोसा करू ॥३२॥^६

साखी

विनु मासुक की भास का, एह दोजक की भाष ।^७
मिति र्हना महबुस से, सोइ भिस्ति है सांच ॥३॥

शौपाई

नबी महंमद दीन पैगमर । बाहु खूब समझा दित प्रंदर ॥३३॥^८
गुजर गरीबी बुजदग होई । फाका फकर फकीरा सोई ॥३४॥
राज किया दुक्त बाहु म दीन्हा । सेकर करेद जवह नहिं कीन्हा ॥३५॥^९
खून पराज मना सम कियळ । पहिनहिं इवगहिम से भएळ ॥३६॥
तेहिं कृत्त जन्म सीन्ह उन्हिं घाई । निजु कर विसमिम कीन्ह न भाई ॥३७॥
जौ तुन्ह उमत महंमद पहहु । मानहु वचन दीन में र्हहु ॥३८॥

(क) प्रति—

- १ मरुत = मैति ।
- २ मखि = भगति ।
- ३ ज्यों = जौ ।
- ४ रीति = भीति ।
- ५ दिस दीपक = दीपक दिस ।
- ६ भरीजा = भरीजा ।
- ७ भास का = भास की ।
- ८ वबुस = समुष्म ।
- ९ करेद = करेद ।

हाग तुम्हारा सुमन वनीचा । भूसा तुम्हें आपन दिल हूँचा ॥६७॥^१
 नव बहार है बाग तुम्हारा । भरम करम में भूलि बिसारा ॥६८॥
 भव सतगुर पव परसहु भाई । दया द्रिस्टि करि बेहि लखाई ॥६९॥
 इयार भिसन की सो फुलवारी । दरसै देखहु द्रिस्टि पसारी ॥७०॥^२
 मुसाकात कर तेग परझारु । सोग दुबा हमि मारि निकारु ॥७१॥^३
 पियहु अधाए नाम भवभारा । मिट माया मव मरुत सुमारा ॥७२॥^४

साली

पुनै मुसै दिन काटिए, नुप रहो सहि सोए ।^५
 ता तर आसन कीजिए, (जो) पेड़ पावरो होय ॥१०॥

चौपाई

होहु बेहोस मस्त मतवारा । छूटि जाए जग रज परिवारा ॥७३॥^६
 माया बिसग की सोग न धारै । घास मिलन की माया न भावै ॥७४॥
 एह भव जरा मरन को देसा । छोड़ि देहु जिव कठिन कसेसा ॥७५॥
 भयै बिच्छु छपसोक नितारा । सेहि विहंग तें दुर्म के डारा ॥७६॥^७
 भवसागर में परा भुलाई । बेठहु छवहि मसा है भाई ॥७७॥^८
 ना सुख एह मुरवा के गाऊ । मरि मरि जमम होए बेहि ठाऊ ॥७८॥
 जो ना अछबट नामहि जाना । एह भव सुख निमु सपन समाना ॥७९॥^९
 बडे दरिया रहू सतगुर सरना । भवसि एक दिन आखिर मरना ॥८०॥

साली

प्रेम पियाला पाए कै, तन मन आरहु वारि ।^१
 होहु बहोस जग स रहो म्याम सरोद बिचारि ॥११॥

(७) प्रति—

१. डार = डार। तुम्हार = तुम्हारा। वनीचा = बनीचा। भूसा = भूसे। तुम्ह = तुम। दिल =
२. (७), इवार = सार, सो = सो।
३. दुबा हमि = सुलाई।
४. भवभारा = भवभारी। सुमारा = सुमारी।
५. नुप रहो छदि सोए = लुपी रहिए सोए।
६. होहु = होदि। जग = भव।
७. दुर्म की = दुर्म के।
८. परा = परहु।
९. निमु सपन = नित्र सपन।
१०. पाए के = पीए के।

जीब घघन मह पाप भतिमारी । पंडित जानु न कहूँ विषारी ॥२७॥^१
जिवन जनम द्विग पंडित केरा । भावहुँ सतगुर सरन सवेरा ॥२८॥
ओं तोहि खून साँच मन मावा । करहुँ खून हम तुमहि बवावा ॥२९॥^२

साक्षी

ग्यान खरग दिह कर गहो, कामादिक मट मागि ।

पाँच पचीसहि जीति कै, करम भरम सम झारि ॥३०॥^३

सोरठा

जीं चाहसि मदपान रहहुँ बेहोस भव सोग स ।^४

तेनि पालंठ भमिमान, नाम भमल मतवार छो ॥३१॥^५

चौपाई

जीं तुम्ह नाम भमल मुख चहहुँ । मीले तब सतगुर पद गहहुँ ॥३७॥^६

प्रेम प्रीति सै दहि पिमाई । करै कैफ निल रोसन माई ॥३८॥

दिन दिन अधिक मस्त सरसारा । रहै सो कल्प कोटि मतवारा ॥३९॥

महाप्रसै की डर माँहि भावै । जा कहँ सतगुर वारि पिसावै ॥४०॥

बठहि साधु संत बेहि धारी । इपार मिलन की साँ फुनवारी ॥४१॥^७

धुनहि फून अधिक रुचि जाही । दास भाव करि बटहुँ छाही ॥४२॥

साक्षी सतगुर प्रेम पिमाता । जो तेहि साएक तेहि छस डाला ॥४३॥

नाम ग्यान मद देहि मताई । कैफ सँ विल धंजोर भै जाई ॥४४॥

सामी

छत्र फिरि सिर मनि धरै, भलनै मोनी सेव ।

कहे दरिया दरसन सही, गुर ग्यानी बित बेत ॥४५॥^८

चौपाई

माहि यादिका के तैं माली । भूनि परा मक भरम कुषाली ॥४६॥^९

तेहि वन कर तैं चाहसि पलेह । इहा घाल जम कर बेह ॥४७॥^{१०}

(क) प्रति—

१. कपल मह पाप = कप महापाप ।

२. रवीश्ट प्रति (क) में 'तुम्हीं' पाठ है ।

३. मारि = मार । झारि = झर ।

४. मक = मी ।

५. रसे = रो ।

६. तुम्ह = तुम मुख = मुख । मीले तब न मिलै तबहि ।

७. इपार = पार ।

८. गुर ग्यानी भौ बित बेत = गुर ग्यानी का देन । रवीश्ट (क) मूल प्रति में 'जी' अक्षर है ।

९. बे = बर ।

१०. तेहि वनकर ठै = ठै तदि वन का ।

श्रीपाई

प्रसल बंदगी साधुनि आना । इयाग मिसन की बाग घमाना ॥१७॥^१
 सांघ बंदगी संतनिह बेरा । मस्त सो मगन गगन मंह बेरा ॥१८॥^२
 चहां जाए बैठहु तुम भाई । भासिक प्रेम बुनिह जेहि ठाई ॥१९॥^३
 पहिले दिल से बदी विसारो । गरब गबरि पूरि करिबारो ॥२०॥
 मरना सो पहिले मरि रह्यहु । भसनी जो हव जी तुम बह्यहु ॥२०१॥^४
 जीवत ही मुरदा होए रहना । भवधि तुमहि तब पारा कहना ॥२०२॥^५
 जेहि विधि पारा मरै न मारा । मनकल मौस छो करै बिचार्य ॥२०३॥
 कहै फिरिस्तनिह से भस दरजी । पारा जीव हुभा करि करनी ॥२०४॥

शाकी

निकट जाय जमराब नहीं सिर धुनि धुनि पछताम ।^६
 बुद सिंधु में मिसि रखा, कवन सक बिसगाय ॥२४॥

श्रीपाई

पांघ पचीस तीनु कर रोती । मन कहं भउ टि समन्हि कहं जीती ॥२०५॥^७
 भनखहक बोए कहै पुकारी । ई तेहि भाएक सो भधिकारी ॥२०६॥
 कहै जो वह में हौं मगवाना । तौ तेहि कहै ना साजुक भाना ॥२०७॥^८
 भगिनि में जाए काठ जो परई । जरि क भगिनि होए सो रहई ॥२०८॥
 भएठ भवग सो मास भंगोरा । कहै भागि में भगिनि भंगोरा ॥२०९॥
 को भव काठ कहै तब भाई । भीन्ह कवन काठ तेहि भाई ॥२१०॥^९
 कवनो जल समुद्र मे परई । दूबा नाम माहि कोइ घरई ॥२११॥^{१०}
 सम बोड जाग सिंधु भपार्य । सो जल को बिसगाबनिहाय ॥२१२॥

(ब) प्रति—

१ साधुनि = साधुन । इयाग = याग ।

२ मंह = मैं ।

३ तुम = तुम्ह । प्रेम = प्रीति ।

४ जो = से । हव व जी = हव है जी ।

५ जीवत = जीवत । होए = है ।

६ धुनि धुनि = धुनि धम ।

७ तीनु = तीन ।

८ साजुक = साजुव ।

९ तब = तब ।

१० स्मर = समुद्र ।

श्रीपाई

मि रूस सैल कहि दीन्हा । एह जहान पैदा हम कीन्हा ॥८१॥
 करे बंदगी सम दिन मेरा । सुनहु बोस्त सम उमता मोरा ॥८२॥
 लिखा नवी कोरान में आएत । मेरी उमत करे हकताएत ॥८३॥
 करहु बंदगी असन करारा । सो सेजि ना तुम्ह मकर पसारा ॥८४॥
 प्रसफ्ठी गुदरी सेली बारी । पीर कहावहु दरद विसारी ॥८५॥
 माना कंठी तिसक वताय । बुत पूजे कोइ संख यजावै ॥८६॥
 माना पालंड भेख सवारा । गुरु कहावहु एहि संसारा ॥८७॥
 गख गुमान करे मगकरी । ए नहि होइई बंदगी पूरी ॥८८॥

साल्मी

सगिष्ठ तरिबत मारफ्त, कई हकीकत जानि ।
 दरब राखे दरबेस है करे भिम्ति पहचानि ॥१२॥

श्रीपाई

मकर बंदगी छाडू सबेरा । नहि राजी कई साहब मेरा ॥८९॥
 एहि बंदगी से नहि बड़ाई । हरगिअ भिम्ति मिसै नहि भाई ॥९०॥
 दोजब भाच सही प्रति भारी । मकर बंदगी देहु विसारी ॥९१॥
 पालंड सै प्रभू मिले न काहू । कहीं सुभाव सांख पतियाहू ॥९२॥
 बरवस पालंड करहु बनाई । दरब हरहु सम अगत गिम्ताई ॥९३॥
 पालंड करम समे विसरावहु । सुनहु न सजन टेरि बहु सावहु ॥९४॥
 गफिलत कई कान में खेरा । ना दी रागु निकानु सबेरा ॥९५॥
 मकर बंदगी करि पुन होई । छोड़ि दे मकर फकर है सोई ॥९६॥

साल्मी

दरबेसा दिस दरद है, दरबेसा दरबेस ।
 दरबेसा दिस सबुर है, दरबसा नहि भेस ॥१३॥

(ख) प्रति—

- १ उमता = उम्रत ।
- २ कहावहु = कहावई ।
- ३ ए नहि = एहि नहि ।
- ४ कई = होय ।
- ५ छरी = छरी ।
- ६ करम = मकर । टेरि बहु सावहु = टेरि बहसावहु ।
- ७ गफिलत = गफलत । मी = मई । टेरि = टरे । बरेस = बरेरे ।
- ८ भेस = भेस ।

दिल ऐना होए साफ तुम्हारा । दिन दिन अधिक जोति उजियारा ॥१२६॥
ऐना सिक्किलि साफ जो करजू । तौ एहि भगु पगु मोहकम घरजू ॥१२७॥
सन मम से बिन्हि साकरनि कराई । सहि संकट होए साफ सफाई ॥१२८॥^१

साखी

पहिसे गुर सक्कर हुमा चीनी मिसरी चीन्ह ।
मिसरी से जब कंठ हुमा, एहि सोहागिनि चीन्ह ॥१७॥^२

चौपाई

जैसे बीज जमीन में परई । साक मिले साक सिर घरई ॥१२९॥^३
किछु दिन बीते सो अंकुराना । मइसि छुटा भूसा बिलगाना ॥१३०॥
जीव साफ होए भएठ निनारा । बीज एक से भएठ हनारा ॥१३१॥
ऐसी सिक्किनि जाहि घनि घाई । फेरि मुरखा नहि जाग भाई ॥१३२॥
जाम एक जमसेद बनाषा । ऐना साह सिक्कर पावा ॥१३३॥
है वूनो कर एक परमाऊ । कही सो ठाकर सुनहु सुमाऊ ॥१३४॥^४
भागो घरि जब देखै कोई । बुइ सठ जोजन घरस सोई ॥१३५॥^५
होए साफ दिल निकट निगाना । कही सिक्कर को वह ऐना ॥१३६॥^६

साखी

कही जाम जमसेद है कही सिक्कर ऐन ।
दिल बसमा घर्य ऊपर, भविगति छूक नन ॥१८॥^७

चौपाई

अंजन कही जालि कर भाई । बीदा जानो होए सफाई ॥१३७॥^८
दिस कर दीप ग्यान कर तेना । इस्क राखु दिस बदी छकेला ॥१३८॥
भाषा एक नाम सठ भरजू । तामें दोबिभा सम परिहरजू ॥१३९॥^९

(क) प्रति—

१. साकलि = सिक्किनि । स्वीकृत (क) प्रति में 'संकट' पठ है ।
२. जब कंठ हुमा = तब कंठ भी ।
३. जमीन में = भिमी मई । साक मिले = साक में मिले ।
४. वूनो = वूनहु । कही = कहा ।
५. जब देखै = देखै जो ।
६. निगाना = मगीना । ऐना = घाईना ।
७. घर = सम ।
८. कही = कहा । जानो = जहिनियि ।
९. सठ = चित । तामें = तै में ।

साक्षी

सिध निष्कट नहिं भावहु करि सियार सै प्रीति ॥^१

साधु सिध मठ सरख है, सियो मत्तगहि णीत ॥१५॥

श्रीपाई

कहा भेद एह गहिर गभीरा । ग्यान करार असल रग हीरा ॥११३॥
 गुप्त भेद सै जेहि गमि होई । सो जानै एह भवरि ना कोई ॥११४॥^२
 देखहु कोरान पुरान विचारी । सम घट असह ब्रम्ह उजियारी ॥११५॥^३
 बह मोसक्ति एह पारख बेरा । पारब्रम्ह सम घट घट डेरा ॥११६॥
 ऐसो कली अनूपम सोई । बडा बन्ट करि चुनै कोई ॥११७॥^४
 गरव गुमान भरा दिल तेरा । बिन्दू ना सम घट असह वसेरा ॥११८॥^५
 मुहवा जाहि मुकुर में सागा । प्रतिमा देखि ना परै अभागा ॥११९॥^६
 जैसे भानु तेज परकासा । नन हीन महि देखै तमासा ॥१२०॥^७

साक्षी

है मगु साक वरावरे, माझो लोपन माहि ।

ग्यान दोष मगु भानु कह, अपने सुख नहि ॥१६॥^८

श्रीपाई

माहि सुख अघरिन्ह देखलाव । महि मगु अघरिन्ह असन बलाव ॥१२१॥
 दगा बीन्ह परनाम गहरी । जीव द्रोह श्री गरव गहरी ॥१२२॥^९
 हुगवा हिगिय कामादिक जेता । पांक्ति भाइ दिल मुहवा तेता ॥१२३॥^{१०}
 ब्रम्ह साक जसे धुर्वे तारा । पार परद में दृष्टा पसाय ॥१२४॥^{११}
 संत सिक्सिगर योजो भाई । मुहवा सिक्सि करो तुम भाई ॥१२५॥^{१२}

(क) प्रति—

- १ सै = से ।
- २ गुप्त भेद = गोप भेद ।
- ३ ब्रम्ह = ब्रह्म ।
- ४ चुनै कोई = चुनै से कोई ।
- ५ गुमान = गुण ।
- ६ अभागा = अनुभागा ।
- ७ परकासा = परमात्मा ।
- ८ वरावरे = बरोवरे । भानु कह = मध्यम बह (१) ।
- ९ परनाम = ब्रह्मनाम । बी = बह ।
- १० ईया = इया ।
- ११ पांक्ति = पाँच । पार परद में = पर परद में । दृष्टा = घटा ।
- १२ योजो करै = जोडु करै । करो = करु ।

नासिका पवन तत्तु सं भएक । गघ सुगंध वास तंह पएक ॥१५३॥^१
 प्रिपी तत्तु कर मुख भो भाई । भोजन ग्रंधवन ठाकर भाई ॥१५६॥
 रसना सिंग मार तत्तु ग्रहई । मंभुम कर्म स्वाद सो सहई ॥१५७॥
 तत्तु प्रकास स सवन पनावा । सख्य कुसुम्य सुनै बहू पावा ॥१५८॥
 पित्त में अगिनि नाम में पवना । बहू सो लखहु जोहर है अचना ॥१५९॥^२
 प्रीपी हिरै नीर तत्तु भासा । तत्तु प्रकास सांस में आसा ॥१६०॥^३

साक्षी

कान नाक मुख प्राणि स्रुती, पांचो मुद्रा सांच ।

गोचरि खेचरि भोचरी, अचरी उनमुनि पांच ॥२१॥^४

चौपाई

तत्तु एक ठेहि पांच प्रक्रीटी । सखहि साधु जन ठाकर प्रीटी ॥१६१॥
 अस्ति भेद रोम तुचा नारी । प्रिपि तत्तु रोपा पांच सुवारी ॥१६२॥^५
 रक्त वीज पित्त सार पसीना । नीर तत्तु से भएउ नवीना ॥१६३॥
 आसस त्रिजा मीद मुह ठेजा । अगिनि तत्तु से पांच सहेजा ॥१६४॥^६
 असन म्यान बल सकुच विवाया । पवन तत्तु से हिस भरजादा ॥१६५॥^७
 शोम मोह संका अर साजा । तत्तु प्रकास कर सकल समाजा ॥१६६॥
 रजगुन अगिनि तमोगुन बाऊ । सतगुन प्रिपिमी नीर सुमाऊ ॥१६७॥
 अधिक पांच सं भएउ पचीसा । तिन गुन मिली तीस ठेतीसा ॥१६८॥

साक्षी

पांच तत्तु की जोठरी, सा में आस जंजाल ।

बीज तहां वासा कर निपट नगीचै काल ॥२२॥^८

चौपाई

प्राणि नाक त्रिभ्या तत्तु कान । पांचो इन्त्री म्यान प्रषाना ॥१६९॥^९

(क) प्रति—

१. तंह = तिरि ।

२. बहू सो लखहु जोहर है अचना = बहूओ लखहु बहो रहू अचना ।

३. प्रीपी = प्रिपिपी ।

४. (क) प्रतिअ पाठ अचरी = स्वीकृत । (क) में 'अचरी' है ।

५. तुचा = तत्तु । प्रिपि तत्तु रोपा पांच सुवारी = प्रिपी तत्तु से पांच सुवारी ।

६. अस्तव । (क) प्रति अ पाठ स्वीकृत । (क) में अस्तव = अस्या ।

७. म्यान = गान । तत्तु से हिस = तत्तु कर एहि । (क) प्रति में 'तत्तु' और 'खिख' बीच कर अधिक है ।

८. नगीचै = नगीचहि ।

९. तत्तु = तत्तु ।

प्रीम स्तुती वाली बर नीके । सस चीन्हि ल वाखु हियके ॥१४०॥^१
 निज दिल दीपक रोसन करई । सोइ घुघां ननन्हि भनुसई ॥१४१॥
 लोचन बिमल होए अब तोरा । प्रघपट मँटे होए भजोरा ॥१४२॥
 हे सखमां में धुन एह भाई । सो विनु सठगुर नहि कोइ पाई ॥१४३॥
 सरग नरक की सुधि विसरावै । जियतहि मरै तब धनि भावै ॥१४४॥^२

साखी

एक ग्रन्ह समे पट, अंह देखो तंह एक ।
 हिई कंवत्त रजियार भो, करु सरोद विवेक ॥११॥^३

चौपाई

इगला पिंगला सुखमन नारी । ब्रुअरु वाकर भेद विचारो ॥१४५॥
 इगला घाम चंद बर पासा । पिंगला दहिन भानु परगासा ॥१४६॥^४
 ताने मढ सुखमना अहई । बल सो दूनो सुर में लहई ॥१४७॥
 पांच तत्तु तह करे परकासा । अगिनि वाउ छिति नीर अकासा ॥१४८॥^५
 अगिनि तत्तु सुर ऊपर अहई । प्रीछन चालि पवन कर अहई ॥१४९॥^६
 प्रीषी सोई चरे अकोरा । भीषे अई नीर तत्तु जोरा ॥१५०॥^७
 छिन वाम छिन दहिन बासा । दुवो सुर चनें सो तत्तु अकासा ॥१५१॥
 पांचो तत्तु पल सुर माहीं । पारख अहै सायु जन पाहीं ॥१५२॥

साखी

अगिनि स्याम हुरियर पवन, प्रीषी पीत रंग होए ।
 अरुन नीर आकास तत्तु, सेत बरन है सोए ॥२०॥

चौपाई -

पांच तत्तु कर इन्दी पांचा । अएउ अवन एह मानहु सांचा ॥१५३॥
 अगिनि तत्तु से नैन प्रकासा । लोभ मोह तंह करे निवासा ॥१५४॥

(ब) प्रसि—

- १ तत चीन्हि से वाखु हियके = तत चिन्तनी से वाहू ही के ।
- २ सरमा = सुखमा । नदि बोई = काहु न ।
- ३ एक = एकै । देखो = देख । अरु = अरुहु ।
- ४ वाम = वाम । बासा = बासा ।
- ५ वाउ = पवन ।
- ६ चालि = चाल ।
- ७ चरे = चरी ।

साखी

पिर कारज की बंद है चर कारज की मानु ।
तहु के पारख पाए के, जग कारज करि जानु ॥२४॥^१

चौपाई

भूसन बसन विवाह विधाना । घोसघ प्राजी जोग घर ध्याना ॥१८५॥^१
ग्रथ लिखै घर महल बनाव । बाग बाटिका कूप खोवाब ॥१८६॥
गढ़पति होए सो गढ़ में जाई । घोसै घनाब कित्वात बनाई ॥१८७॥
बामें सुर में सकल संवारा । एह सम पिर कारज संवारा ॥१८८॥^२
घर कारज कछु बहो बखानी । दहिने सुर में एह सम जानी ॥१८९॥^४
देन देन धी भोजन करई । बिद्या पढ़ बहो सिखि घरई ॥१९०॥^५
हित अनहित बाहूँ तंह जाई । बुपी कर कछु मांड़ भाई ॥१९१॥^६
बाहन मोल बेइ हथियारा । भोग नेहान ग्याए धनुसारा ॥१९२॥^७

साखी

पूरख उत्तर भाइए दहिने सुर परबेस ।
बामें सुर कर जात्रा दक्षिण पच्छिम बेस ॥^८
जो सुर बसै पगु छोइ पहिले रासु संमारि ।
सीनि बेग है मानु के बंदा के पगु बारि ॥२५॥

चौपाई

प्रियमी मीर सतु बुइ घरई । पिर कारज पूरै सम लहरई ॥१९३॥
मुबन्न पच्छ मधुमास सोहाबा । किस्न पच्छ सम सीति विवाबा ॥१९४॥
प्रातहि परिवा कर विधारा । घसै बन्न सुर सतु निहारा ॥१९५॥^९
औ बंदा में प्रियमी रहई । समत सास मीक सन होई ॥१९६॥^१

(ख) प्रति—

- १ कारज की मानु = कारज करे मानु । तहु के = तहु की । कारज करि = काम करि ।
स्वीडिश मूलप्रति में "जगत" है ।
२. प्रातो = प्रीति ।
- ३ सकल = सुबल । संवारा = संवारा ।
- ४ बहो = बड़ा । सुर में एह = सुर एह ।
- ५ देन देन = सेन देन ।
- ६ मांड़ = मांगे ।
- ७ बाहन = पाहन । घन्वाए = ग्वाए ।
- ८ दक्षिण = दक्षिण ।
- ९ प्रातहि परिवा = परिवा प्रातहि ।
- १ रहई = बरह । सम = से ।

कर गुद सिग पांव मुस होई । पांचो इन्दी करम समोई ॥१७०॥^१
 एह वस इन्दी कर परकारा । बूके पंडित कर विषारा ॥१७१॥
 मन एकादस सम को राजा । जो जीते सो साधु समाजा ॥१७२॥^२
 पांच पचीस सम वस होई । मन इन्दी कहं जीते सोई ॥१७३॥^३
 सो मन खु ब्रम्हा के पास । सो मन सिव संग कर विनासा ॥१७४॥
 सो मन राम क्रिन्न संग रहेऊ । सुर नर मुनि कोई पार न सहेऊ ॥१७५॥^४
 सो मन चारो वेद विस्तारा । सो मन व्यास ग्रंथ अनुसारा ॥१७६॥^५

साक्षी

सो मन तीनी सोक मै, काहु पग माहि चीह ।
 धन साहस सतु गुर धनी, मोहि सखाए जो दीन्ह ॥२३॥^६

बीपाइ

बंद गूर कर बखु विधाना । वहिने कामे सुर धनुमाना ॥१७७॥^७
 एक मास पछ बुई समोई । क्रिन्न पच्छ मूख कर होई ॥१७८॥
 परिखा दूजि तीजि सगि भानू । तिथि बंदा भानू तिथि जानू ॥१७९॥^८
 सुक्य पच्छ बंदा कर बासा । तिथी तिथी सगि बंद प्रबासा ॥१८०॥
 तिथी सुरज तिथी है बंदा । एहि तिथि सुर दुबो बरहि धनंदा ॥१८१॥^९
 सोम बार गुष बुष सुक जानी । बंदा को दिन चारि बन्वानी ॥१८२॥^{१०}
 रवि सनि मंगस तीनु वार । सुक्य के दिन बखु विषारा ॥१८३॥
 पिर कारज दूई जग माहीं । चर मूख पिर बंदा पाहीं ॥१८४॥^{११}

(ख) प्रति—

- १ कर गुद सिग पांव मुस = कर पगु सिग गुदा मुस ।
- २ सम को = समकर ।
- ३ समे = सबै ।
- ४ (क) प्रति में 'सहेऊ' की जगह 'पैऊ' पाठ है ।
- ५ चारो = चारि ।
- ६ जो = जिह ।
- ७ बंद गूर कर काहु विधाना = बंद सुरज कर धनुष विधाना ।
- ८ तिथि बंद भानु तिथि जानू = श्री तिथि बन्द भानु श्री जानू ।
- ९ तिथि सुरज तिथी है बंदा = श्रीमती गूर श्रीमती है बंदा । तिथि गुर दुबो = तिथि दूबो ।
- १० सो = से ।
- ११ पिर कारज = पिर चर कारज ।

सौरठ

कोइ कइई मठ जाय, सुखमति के परसंग में ।
ग्यान ध्यान ली लाइ, जगत काज कइ हानि है ॥४॥^१

चौपाई

ब्रह्मिण सिध ब्रह्म मकर पुनीता । चारिउ रासि बंदा कर हीता ॥२०९॥^२
करक भेख कु म भर सूला । चारिउ रासि भानु कर मूला ॥२१०॥
कन्या मीन मिथुन घन चानी । छंकेट भाष सुखमता प्रचारी ॥२११॥^३
किन्तु पञ्च परिवा कइ भानू । प्रातहि बल साम किन्तु जानू ॥२१२॥
सुफल पञ्च परिवा कइ बंदा । भोरे बहै मो परम अनंदा ॥२१३॥^४
मास एक पख दूई भइई । अनमिन बल हानि क्यु भइई ॥२१४॥^५
प्रातहि परिवा सुखमन जाना । सो पख हानि कलह अनुमाना ॥२१५॥
पख साधु जन मे विचारी । ग्यान गमी जव भए उत्रियारी ॥२१६॥^६

साक्षी

का इ गला का विगसा, कवने सुर कइ होए ।
कइये सुर पूछै कोई, पूछ ताकर सुर सोए ॥२८॥^७

सौरठा

कारज पूरन होए, पूछ पूरन लो रही ।
सुर पुनो कइ जो होए आपन पूछ तासु कर ॥३॥^८

चौपाई

घाँ सरौद बहुत विस्तारा । ग्यानी जन निनु कइहि विचार ॥२१७॥
घसल भेर सुर कइया यक्षानी । धोरे में समुझ कोइ ध्यानी ॥२१८॥^९
घाउ जाम विगसा परगासा । सीनि बरख में नाया विनासा ॥२१९॥^{१०}

(घ) प्रति—

- १ कइ = कही ।
- २ मकर = कु म ।
- ३ (क) ब्रह्म में 'मन्त्र' है । प्रचारी = विचारी ।
- ४ भोरे = मोरहि ।
- ५ क्यु भइई = क्यु सरई ।
- ६ जव भए = जा कई ।
- ७ कवने = कवने ।
- ८ जो होए = जोय । तासु = तासु ।
- ९ घाँ = घोरहि ।
- १० विगसा = विप्लव ।

नीर खलै सो इगसा माहीं । उत्तम सम्बत सो भलि जाहीं ॥११७॥^१
 नीर भवनि पिगला परगाथा । एक मधिम है वारह मासा ॥११८॥^२
 भगिनि बाठ तसु रहिने वृत् । पर भकाल जन होए न पूरा ॥११९॥^३
 वसु भकास भसै सुर दोऊ । धन न उपजै दुरभिद्य होऊ ॥२००॥^४

साखी

सम्बत भरि को फल बहै, बेहि तसु भेद लखाए ।^५
 प्रगट कहा सरोद में, आत रंग समुझाए ॥२६॥

सोखा

गरभवती जो कोए भौषक पूछै भानि जी ।
 रहिने बटा होए, यामे सुर कथा बही ॥३॥

चौपाई

जो पूछै ताकर सुर सोई । भमत कुसल छेम सम होई ॥२०१॥
 भनमिल स्वास न मिल ठिकाना । तही हानि किछु निस्वै जाना ॥२०२॥^६
 पूरन दोठ कर दोठ सुर बहई । वृमुत होए सरोद बहई ॥२०३॥^७
 जी प्रसंग कछु पूछ कोई । करो विचार स्वास में सोई ॥२०४॥^८
 बंदा भमत जो पूछ भाई । सगन वार तिथि जोग सोहाई ॥२०५॥
 बाम सोहे ऊंचे होइ बहई । जानहु सुफन काज सो बहई ॥२०६॥^९
 नीचे पूछै रहिने भोर । सुर रहिन कोई पूछ तोरा ॥२०७॥^{१०}
 सगन धार तिथि जोग ठिकाना । सुम कारज निम्ब पख्याता ॥२०८॥

साखी

जोग सगन तिथि वार पद्य, मिम सपुरत काज ।
 इन्ह में बुझ एको न मित्त, तस तस मद्धिम काज ॥२७॥^{११}

(स) प्रति—

१. माही = माहीं ।
२. एक मधिम = एक मद्धिम ।
३. होए = होवै ।
४. दोऊ = दोइ । होऊ = होइ ।
५. सम्बत = संवत ।
६. रखास = खास ।
७. वृमुत = वृहस्पत ।
८. रचाप = रचोप ।
९. कोहे = को ।
१०. बुरी = बुरी ।
११. वरुण = वे पूरन । में = मई । एधे न = एक न ।

पवन प्रकाश तत्तु सो होई । पवन से प्रगिनि तत्तु सो सोई ॥२३६॥^१
 पावक सँ जल भयो प्रकासा । जल सँ प्रिषी तत्तु सुनु वासा ॥२३७॥^२
 प्रेम मगत सँ समै देखाई । बिनु वसै कोइ नहि पतियाई ॥२३८॥^३
 जेने क्युभा मटी समाना । प्रापु में प्रापु देखि मनमाना ॥२३९॥^४
 हसिक प्रेम धन भीषन धारा । साहब सतगुर भए हमारा ॥२४०॥^५
 नरक सरग के सुधि बिसरवाई । तन मन धारि समै क्यु पाई ॥२४१॥^६

साखी

वेवाहा के मिसम सँ नैन भया सुसिहान ।

दिल मन मस्त मतवाल हुभा, गू गा गहिर रिवाल ॥३१॥^७

बीपाई

एहि भव सोग समै बिसरवाई । कामिनि कनक न करे फँलाई ॥२४२॥^८
 तब मैं प्रापु प्रापु में देखा । समुझि परा मोहि म्यान बिसेखा ॥२४३॥^९
 मैं फरजंद पुर्न सतकेरा । रोसन दिल चिराग हूँ मेरा ॥२४४॥^{१०}
 अस मैं तब सुम देखु बिधारी । सुकै ना बिन बीपक प्रियारी ॥२४५॥^{११}
 केहि वारन भूसा सुम रदहू । एहि भव सोग महा दुख सहहू ॥२४६॥^{१२}
 देखिहि नजरि करी अनुमाना । सीसा जाकर भुगल जहाना ॥२४७॥^{१३}
 वावसाह सो साहब मेरा । दुनिया दीन दुमहुँ त हि केरा ॥२४८॥^{१४}
 तन सुम्हार जिन्हि सकप बनावा । दुख जहान जग सुमग सोहावा ॥२४९॥^{१५}

(७) प्रति—

१ तत्तु सी = तत्तु छ ।

२ मयो = मो ।

३ प्रेम = परम । कोइ नहि = कोइ नहि ।

४ मटी = मटी । मनमाना = विक्रमाना ।

५ धारा = धारा; भए = भवत ।

६ सरग क = सरग की ।

७ मन मस्त मतवाल = मन मतवाल । रिवाल = रवाल ।

८ मैं करे = ना कर ।

९ म्यान = म्यान ।

१० दुर्घ = दुर्घ ।

११ सुम = सँ ।

१२ महा दुख = बड़ा दुख ।

१३ देखिहि नजरि करी अनुमाना = देख करे नजरि अनुमाना ।

१४ सो = गोइ । दीन दुमहुँ = दीन दुमो ।

१५ तब = तब ।

साकर दुगुना सो सुर वहरै । कुसल बरल काया सो रहै ॥२२०॥^१
 उदै भानु जो होए पलबाया । धो जीवन छटमास विचारा ॥२२१॥^२
 रहनि चंद बासर होए मूरा । एहि बिधि उगै मास एक पूरा ॥२२२॥
 जिवन मास छट करुं विचारी । मेद सरौदै सेहू निहपारी ॥२२३॥
 मास एक सुर पिगसा बहरै । सब दुइ निन कर जीवन ग्रहै ॥२२४॥

साखी

गंगा जमुना सरसुती तीनो परिगौ रेत ।
 मुद सं स्वासा बसत है धविनासी ना हेस ॥२२६॥^३

श्रीपाद

चंदा निसिदिन होए परवासा । दिबस बारिबहएहि बिधि बासा ॥२२५॥
 दिन सहस्र में काया विगोई । बचन सरोद अिया न होई ॥२२६॥^४
 अस अस चंदा जग भधिकाना । तस तस काल निबट नियराना ॥२२७॥
 बासर वित उदै होए चंदा । सकहि काया परा जमफंदा ॥२२८॥^५
 एक जाम सुखमता प्रकासा । निम्बे जामहु काया थिनासा ॥२२९॥
 रजनी पिगना वहै सुधारा । वासर इंगला कर पसाय ॥२३०॥
 हंस गवन कहै दरस जोगा । काया सुती तन बांधु न रोगा ॥२३१॥^६
 घुब मंडस महि दरस भाई । दू पक्ष जगर काया नसाई ॥२३२॥^७
 पवन सापना जोगा करई । भंतहु काया पतन होए मरई ॥२३३॥

साखी

काया पतन समझी मई, छपिह गंग को संग ।

जप मरन को दस है, मोनिधि ब्रिजम तरंग ॥३०॥^८

श्रीपाद

पांच तसु एह जेहि विधि मएऊ । मेद सरोद बहि समुन्एऊ ॥२३४॥
 तसु भनास समन्हि के मूला । तासो पांच तसु समनूला ॥२३५॥^९

(*) प्रति—

१. छे = तप ।

२. छी = द्रव ।

३. सरसुती = लोहरी । तीनो = तीनिउ । धविनासी ना = काया विनासन ।

४. बरोदै = बरोद ।

५. सिठे उदै = बीच उठे ।

६. चंद राखै = को सुरि । जोगा = संयोग । बांधु = बन्धु ।

७. मंडस = मंगल । दू = दुइ ।

८. रंग = रंग ।

९. समन्हि के = समन्धि को ।

आगत रहतु सो दिन है भाई । सोबत रहतु ह्यो निशि भी भाई ॥२६२॥^१
 कुसदिस ठेरु सो भयो बिहाना । दिल में सोग सोम सो जाना ॥२६३॥^२
 सरग नरक दुइ देखु विचारी । सुख है सरग नरक दुख मारी ॥२६४॥^३
 जो नहि रोग सोग दुख सहहीं । एह तेजि सरग भिक्षि कहु कहई ॥२६५॥^४

साखी

विस समुद्र बन सोग है, सुम बिबेक समीर ।
 सं जस ऊपर सीचिमा, वरिसै मंनन्हि नीर ॥३४॥^५

चौपाई

विरह बिबेक सो बरसा होई । विहसतु दामिनि दमकै सोई ॥२६६॥
 हसतु ठठाए सो धन बहराना । उद अस्त भरि सब कोइ जाना ॥२६७॥^६
 जो पस स्वास अत ठन माहीं । दिन पख भास बरख पुग जाहीं ॥२६८॥^७
 अब जीर्वाह जमराज सतारै । तबहि काल भी प्रत जनाव ॥२६९॥
 धन धन साहब सिरजनिहारा । धुन्य एन जल सिष्टि संवाय ॥२७०॥
 दुनो बहान कामा जिन्हि कीन्हा । ठामें एह सभ उपमा दीन्हा ॥२७१॥^८
 कामा किविला सम मित्रु हेरा । मूल महंमद दिल है घेरा ॥२७२॥^९
 जिम्मा नन नासिका काना । प्रथम काया संगे चारि प्रमाना ॥२७३॥

साखी

एहि कित्ताव विचारि क कहै बोली कोइ जानि ।
 तोरेते आभीस है, जम जमूर फुरकानि ॥३५॥^{१०}

चौपाई

एहि नबी कर बाह इयाय । प्रीमस प्रसल पीर है चारा ॥२७४॥^{११}

(घ) प्रति—

- १ सोबत रहतु = सोब रहतु । निशि = निशु ।
- २ भयो = मपठ ।
- ३ दुइ देखु = दो देखु ।
- ४ सहहीं = सहई ।
- ५ सुम = सुठ । सीचिमा = सीचिया ।
- ६ कोइ = कहु ।
- ७ इयाय = सोव ।
- ८ तयै = ता मी ।
- ९ मूल = मुमुठ ।
- १० एहि कित्ताव विचारि कै = एही कित्तावे चारि है । आभीस = आभीस । स्वीकृत प्रति में 'ओ जम' पाठ है ।
- ११ बाह इयाय = बाधे मार । पीर है = पीर एह ।

साखी

गहिर भेद एह कहत है, जीव कृतारप्य होत ।

बुद्ध विवेक बिचारि क, भव जनि रहहु भवेन ॥३२॥^१

श्रीपाई

वन सरवर है जुगल जहाना । दहिने वामे भाति दुइ जाना ॥२३०॥^२

दुइ कर दुइ पग पल्लो पांठी । माया सबन नन बहु भोठी ॥२३१॥^३

रं मुन दसन क्योल उरेहा । इमि दुइ भातिन्हि सर्वस देहा ॥२३२॥

दुइ जहान एहि भाति विसाना । तामे असयन संग पनाना ॥२३३॥

पद पवान सीस असमाना । भधि भवसागर भवनि समाना ॥२३४॥

भाटि मानु गच्छ सो नीरा । नदी नार रग सकल सरीरा ॥२३५॥

दिस गरबात्र सिधु अनुमानी । गिरवर वन में असपित जानी ॥२३६॥^४

रोम बार वन ऊपर धारा । वन उपवन वाटिका संभारा ॥२३७॥

साली

दरिया भेदहि जानिए, पह तो बाया भ्रष्ट ॥

सास गिरह नव दूक वन, सात दीप नव लंड ॥३१॥

सोरठा

काया मसाका धारि, गज भेद दिस जानिए ।

म्यान सरोद बिचारि, म्यानी होए सो गुन सह ॥३॥

श्रीपाई

सून समान नासिका भहई । आवत जात स्वास जंह रहई ॥२३८॥^५

मेहर उराजू मोह बनावा । सेहि दुइ पतरा नन सगावा ॥२३९॥^६

दुइ वम धारि सुकज निति खलहीं । तापगन लिनाट में रहहीं ॥२४०॥^७

सर्व मजान भभकि तब भावै । बुन्ने भेद जो गमि करि पावै ॥२४१॥^८

(७) इति—

- १ श्रीप = शिष्य ।
- २ सरवर = सरयस ।
- ३ मया = माया ।
- ४ अहविष = अस्ति ।
- ५ सून = सुत । स्वास = श्वास ।
- ६ मोह = मोह ।
- ७ दुइ = दोउ । लिनाट = लिनाट ।
- ८ तब मजान = तबकन । एहीदुन (७) अंति में 'सर्व मजान होए अहवि' वाक्य है ।

साखी

साध आपने मुख कहा नवी से बलह बिचार ।
 बुझला भावम जाति है, जीव चराचर म्भर ॥३७॥^१

श्रीपाई

बुद्धि जोग मानस तन माहीं । बम्बूरी गुन दिन तोहि पाहीं ॥२१०॥
 भक्तिम धोजीर साध करि दीन्हा । दरस वीघार भांसि बुद्ध कीन्हा ॥२११॥
 नाम उषारम जिम्मा संघारी । सुनन नाम गुन छवन सुधारी ॥२१२॥^२
 घामि नासिधा भजव सोहाबा । पचासी पवन एह पांचो पावा ॥२१३॥^३
 हर ह्रीरीस में नवी बखाना । हाफिम फाजिल होए सो जाना ॥२१४॥^४
 पाव मोम दिल बंधा धरा । कहा भसह भसर हम मेरा ॥२१५॥^५
 बहुत सध्व नवी तुम पावा । दिल सुम्हार ख के मन भावा ॥२१६॥^६
 एह सुनि जब तुम्ह होहु सेयाना । सुरत करहु नीसाफ भमाना ॥२१७॥^७

साखी

काम क्रोध मद लोभ बत गरव गऊरी भारि ।
 विमल प्रेम मनि वारिक , रासहु दिन उजियारि ॥३८॥

श्रीपाई

बादघाह राब बुनो जहाना । ठासों मिसि खु भयहि मिसाना ॥२१८॥^८
 का भुमनी सग रहहु भुसाई । ग्यानी जन के बुद्ध नहि भाई ॥२१९॥^९
 सिह कर लोलरि से प्रीती । मरद करै दिखरमिह से प्रीती ॥३००॥^{१०}
 भपन मान मरजाव गंवाई । भस बुसंग करि भपजस पाई ॥३०१॥
 सिध ठवनि खु सिधमि पासा । मरद मरद संग मजमिस वासा ॥३०२॥^{११}

(क) प्रति—

१. आपने = आपने ।
२. जिम्मा = धीम ।
३. पचासी पवन एह पांचो पावा = पंच छीप मनि पांचहु पावा ।
४. हर ह्रीरीस = है ह्रीरीस । में = में । हाफिम ।
५. भसह = भसाह । भसर है मेरा = भसर हम मेरा ।
६. बहुत सध्व नवी = बहुत छीव परवी ।
७. जब तुम्ह = जो तुम्हें । नीसाफ = दिल शाफ ।
८. (क) रबीरुय प्रति में 'बादघाह जो ख' पाठ है ।
९. भुमनी = भुमनि । जन क = जनकई ।
१०. सेखरि से = सेपरि । संग दिखरमिह से प्रीती = दिखरमिह से प्रीती ।
११. रबीरुय (क) प्रति में 'दिपनि के पासा वाड है ।

एहि खरीखत आरो जानी । एहि बसोका चारि बखानी ॥२७५॥
 एहि फिरिस्ता चारि बहाया । एहि चारि खना तन लाया ॥२७६॥^१
 एहि चारि आरो संस छोहाबा । खाक वाउ प्री घामठ भावा ॥२७७॥^२
 एही चारि वेद पहधानो । खान नुग साम अयरखन जानो ॥२७८॥^३
 एहि अतुरमुख ब्रम्हा होई । एहि चारि मुद्रा ही सोई ॥२७९॥^४
 पावक भवनि पवन प्री पानी । चारि तखु एहि कश्च जानी ॥२८०॥
 एहि चारि है आरो कोना । एहि में खाक एहि में साना ॥२८१॥

साखी

दरिया तन से ना बुना, सम किछु तन के माहि ।
 जोग जुगिठ करि पाएए, बिना जुगिठ किछु माहि ॥३६॥^५

श्रीपाई

जो कोइ जुगिठ जोग में भावै । दीदमदीद देति सा पाव ॥२८२॥^६
 तीनि सोक गुन तन के माहीं । बूझठ संस मिमा काहु नाहीं ॥२८३॥^७
 घन कारीगर सिरिअ सवारी । मानुख तन सम ऊपर सारी ॥२८४॥^८
 हहु खरोद तोह साहव केरा । भलख ब्रम्ह गुन भेद बखेरा ॥२८५॥^९
 तुमहि सुमग मंकुर हए नाई । तोहि में साहव सुरति दगई ॥२८६॥^{१०}
 ते पंछी तेहि अन्नर अमाना । सम करत इह भाए भुलाना ॥२८७॥^{११}
 गाफिल भानि परो केहि हेतू । देति भापु होए भापु सचेतू ॥२८८॥^{१२}
 तेअहु गाफिलठ सहु वड़ाई । प्री जनि एहि भव खहु मुताई ॥२८९॥^{१३}

(*) प्रति—

- १ लमा = ब्रम्हा ।
- २ प्री = एह ।
- ३ खग = रिग ।
- ४ ई ई = सोई ।
- ५ ना = नदि । जोग जुगिठ = जगनि जोग । किछु = कसु ।
- ६ दीदमदीद = दीद बर्दद ।
- ७ तनके माहीं = तनके माटी ।
- ८ कारी = संबाध । सारी = सार ।
- ९ तोह = तुम ।
- १० हए = ही ।
- ११ ते = ते ।
- १२ जो = पाए । देति = देणु ।
- १३ जो = कर ।

एक प्रह्लाद सकल घटवासी । वेद कितोब कुनो परगासी ॥३१७॥
 वेनु अनेक घरल जिव जानी । छीर सेत एक रंग वसानी ॥३१८॥
 जो जोह सुन अर्चनौ करई । विच्छ एक सभ मेवा फरई ॥३१९॥
 कत मीठा कत खटा कथेला । कत कवमा तीसा कत मेला ॥३२०॥
 कत विख कत अन्नित सभ होई । देखहु बरि विचार भग सोई ॥३२१॥

साखी

जैसे स्वाती बुद छै, कत उपजै संसार ।
 बिसग बिसग सभ जानिए, गुन कीमत विस्तार ॥४१॥

चौपाई

सीप सिधु में मोठी भएऊ । गजमस्तक गजमुक्ता पएऊ ॥३२२॥
 केरली कभूर सुगंध कझारै । घेनी बंससोपन होए सो भाव ॥३२३॥^१
 अहिमुख विख गरल में भाई । एहि बिधि सकल जीव समुझई ॥३२४॥^२
 एक बुद से सभ संसार । भव चौरसी सख्य पसारा ॥३२५॥^३
 स्वाती अमर पुर्ष निनु मुसा । इंह भाए भव सभ जोह मुसा ॥३२६॥^४
 जहाँ तहाँ दूढ़ सभ जोई । आपु से आपु सुम्ह नहि सोई ॥३२७॥^५
 जैसे अगमद है अगपासा । आपुन दूढ़ै दूढ़त पासा ॥३२८॥^६
 भागे पीछे शौरि सो जाई । कह से अति वासना भाई ॥३२९॥^७

साखी

है दुसबोई पास में, जानि पर नहि सोई ।
 भरम सग भटवत फिरै तिरप बरत सभ जोई ॥४२॥^८

(क) प्रथि—

- १ कझारै = झझारा । ठी आपु = आपा ।
- २ में = मौ ।
- ३ से सभ = से सब । सख्यो = भयह ।
- ४ आपु = पुरख । मुसा = मूसा ।
- ५ आपु से आपु = आपु में आपु ।
- ६ दूढ़ै = बीन्दी ।
- ७ भागे पीछे = भागे पीछे । कदा से = कह से ।
- ८ भटवत = भटवा ।

प्रेम पंथ पर तन मन बाध । इयार मिलन कर रह संवाध ॥३०३॥
 जब होए प्रगट प्रेम दित मारीं । तब मगु पूछु सतगुरु पारीं ॥३०४॥
 सोइ देखाबहि सकल ठेकाना । घाघु में घाघु मजान ठेकाना ॥३०५॥

साक्षी

जैसे मनमन किछु कही, सुन बाह से कोए ।
 घाघु कबहि दस नहीं, जानै बाहस सोए ॥३१॥

श्रीपाई

किमि करि पाबं ठठर ठकाना । मनमन जगह बाह कोइ जाना ॥३०६॥
 रजवर मिन सो पशुर्षुं जाई । जिन्हि देखा सो देहि दसारी ॥३०७॥
 जैसे बीज जमीन मो परई । समै सजीब पाए प्रकुरई ॥३०८॥
 जो कोइ मदत न कर सहाई । निहफय जाए फरन नहि भाई ॥३०९॥
 तेहि बिधि प्रेम हिन मैं हाई । विनु सतगुरु फन सहै न कोई ॥३१०॥
 प्रथम प्रेम मगु माहम पाऊ । इयार मिलन कर जोरहु ठाऊ ॥३११॥
 पहिसे सतगुरु सो कर प्रीती । सुत बचन मानहु परमीती ॥३१२॥
 इसिक प्रेम पंथ बंधि कठिनारि । टा बटवार सग बहु भाई ॥३१३॥

साक्षी

दरिया ठह मत ताहिसे, पानवान सोहि पास ।
 मन्त बेबाहा साह बा, ठग बटवारन्हि नाव ॥
 एक नरोसा एक वन एक घास बिम्बास ।
 एक नरोसा नाम क, जाकर तुलसीनास ॥४०॥

श्रीपाई

हुन्छु तुलसी कर एह सागी । पतिबरता एक पति बित रागी ॥३१४॥
 यह जग बेसा बहुत मताये । एक मन्ति कर सन मन बायी ॥३१५॥
 एक नाम घासा बित घरहु । दूजा दोबिभा सब परिहरहु ॥३१६॥

(क) प्रति—

१. घाघ = बाघे । इयार = बार । मिलन कर रह संवाध = मिलन की रह संवाध ।
२. मजान ठेकाना = मजान कपला ।
३. मनमन = मनमो । देखे = दखा । जमै बाहस = जान बहन । रबीरत (क) प्रति में 'बाहस है मंग' पाठ है ।
४. जगह = जग ।
५. जमित मो = जिमी मे । जगेब = जजाबन ।
६. जो बंध = यी बंध ।
७. सोईस = मोहकम । इयार = बार ।

दरियानामा पारसी, पहिलहि कहा किताब ।

सो गुन कहा सरोद में, गहिर ध्यान गरकाव ॥४३॥^१

[प्रथम म्याल सरोद संमूरन जो बादर्स मो देखा सो सिखा प्रथम सिखन सइमार भेस सावन सुकन पख तिथी एकादसी रोज भोमबार के सवा पहर दिन उठे लिखत भेस सकल दरियापंवी साधु औ अपर साधुसंत औ^२ गुरजन जनकी सतनाम सतनाम पहुँचै ठारीख २६ सावन रोज मंगल सन १२६६ साल फसासी ।]

(ब) प्रति—

१ पहिलहि = पहिले ।

२ 'साधु औ अपर साधुसंत औ' = 'साधुसंत औ' ।

धमर सगा काया में महिमहल के पार ।
सुरति ठीर करि बेतिए, जौ मकरी मह सार ॥४२॥^१

चौपाई

जौ तुम्ह निज भावन धर चहहू । भापु में भापु देखि मिति रहहू ॥३३०॥^१
त्रिपतहि मुकुति होए तब सांषा । भुए खौराखी करिहै नावा ॥३३१॥^१
तब नहिं पार मिलन संजोगा । एहि भव खौराखी परसंगा ॥३३२॥^१
भग सै निकलि परछु मएशाना । बदी बुराई तेजहू जहाना ॥३३३॥^१
सम सोहि पास जुदा कछु नाहीं । बचन संगेद जिया न जाहीं ॥३३४॥^१
साहद भेद सरोद बतावा । गोप गुप्त कह प्रगट जनावा ॥३३५॥^१
पाप पुन्य भाखा बिसराई । प्रजपा सोह सुती समारई ॥३३६॥^१
जाति बरन कुस देह कर नाता । भुए परा करि तरिवर पाता ॥३३७॥
काया माया सकन पखारा । विजग विहरि होए रहहु नितारा ॥३३८॥^१
सुभग मनाहर सु दरगारई । महिमा नाम किछु कहि नहिं जाई ॥३३९॥^१

साखी

वरिया दित दरियाव है, धमम अपार बेघर ।
सम में तें सोहि में सम, जानु मरम कोइ संत ॥

(ख) धनि—

- १ धमर = धर्मर । काया में = कायध में ।
- ठीर = तीर । करि = करे । मह = महि ।
- वाक्यविक्रम : ४१वें श्लोक के बार—
जैम भाषा अदि मुकुट है सुन्दर साधन एत ।
जसो मकरी महि तार गये, दूरे पत कपेट ॥
२. तुम्ह निज भावन = तुम निज भावुन । दखि = देख ।
- ३ में = मनरुषा ।
- ४ इयार = यार । भव = भौ परसंगा = बच सोपा ।
- ५ परछु = परछु ।
- ६ बचन संगेद जिया न जाहीं = मानुस तन कल्प जग मोही ।
- ७ धीप गुप्त कह = जेव गुप्तनि कहि ।
- ८ बिसराई = बिसराह । समारई = समाह ।
- ९ 'बम लडत' अत बाड है ।
- १० ३३९वीं चौपाई के स्थान पर—
बत महिमा कतु कहि कहि कह । सुभग मनाहर सु दरगारई ॥
महिमा नाम ना कछु कहि जाई । सुनु सुन दिरदे बित कइ ॥

भक्ति हेतु

फनि मनि यनि जिनि भरत उतारी ।^१ भरत बरत विटि त्रिस्टि ना वारी ॥६॥
 फेरि नाहि एक पलक विसवासा ।^२ सीन्ह उठाव घरघ मुख प्रासा ॥७॥^३
 ज्यो पतय मुख मोरठ ना टारी ।^४ सन्मुख त्रिस्टि दीपक मंह जारी ॥८॥
 साहस मारि करे पिय पासा ।^५ अगिनि जरे नहि सन के प्रासा ॥९॥^६
 सनमुख छोड़ि पिया संग आई ।^७ नाम निरुसि ऐसे पित साई ॥१०॥^८
 पंद बकोर बेहि नाहीं पीठी । म्याल सुरति राखहि दिनि दीठी ॥११॥
 अकरम करम जो करम बटाई । म्याल छुरी रचि पचि यहि साई ॥१२॥

साथी

म्याल छुरी निरुसै गहो, काटि करम कसि पाप ।
 सत सरन सतगुर सेवा, मटे कसि मसि ताप ॥२॥^९

बीपारै

साधु असाधु बिसोकरहि नैना ।^{१०} सीतल भरत उरख सुख पैना ॥१३॥
 दया अंकुर दिस भक्ति विरया । पुसकित प्रमह पुनीतम आना ॥१४॥
 जाये सुरति म्याल सब साई ।^{११} अंकुर भक्ति बिछु विसगामी ॥१५॥
 दया धरे दिस करे बिबसा ।^{१२} गुर गपि म्याल रहे पित पैना ॥१६॥^{१३}
 बिनु दिस दया घरम नहि सोका । बिनु सत संग मेटे नहि सोका ॥१७॥^{१४}

१ (क) यनि = यन ।

२ (क) मूल प्रति में बलक ।

३ (क) (ब) प्राय = धर्य ।

४ (क) (क), (ग) (ब) ना = न ।

५ (प) दीपक = दीप ।

६ (क) (प) करे = करै ।

७ (क) तमके = तमिचे ।

८. (क) (ब) (ब) अन्मुख = अन्मुख । (ग) अन्मुख = अन्मुख ।

९. (ब) पित लय = पित पर्य ।

१० (क), (ग) (ब) मेटे = मेटै ।

११ (ब) बिबेदहि = बिसोदही ।

१२ (ब) लप = लै ।

१३ (क) (ब) धरे = धरै । (क) (ब) करे = करै ।

१४ (क), (ग), (प) रहे = रहै ।

१५. (ग) मेट = मेटै । (क) मेट = मेटै ।

सतनाम

भक्ति हेतु *

सत सुकित साहय ग्र थ भक्ति हतु भाखल
दरिया साहब सुक्ति के दाता भगम म्यान ।^१

साखी

म्यान भक्ति निमु सार है, सुनो सवन पितसाए ।^२
बिक्ति बिक्ति विस्मान एह^३ ग्रह्य भनूप दयाए ॥१॥

चौपाई

भक्ति हेतु है म्यान के मूला ।^४ भिगसित कमल सहस दस फूला ॥१॥^५
सत सतन प्रीति सए सार्व ।^६ निगुन निरखि विमल जस गाव ॥२॥
गहे टेक सतनाम सनीपा ।^७ दुग्मति दुरि दित कमल भनूपा ॥३॥^८
कमल भंवर जेबो बास सुवासा ।^९ रहत रहित रस करत बेलासा ॥४॥
बासर भए बिसगि विहयही । फिरि फिर बास जसटि सपटाही ॥५॥^{१०}

१ (क) सतनाम प्रथम भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सतगुर ईस बखाने सुकितदाता नाम निदान । सही ।

(ख) सतनाम गरब भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सुक्ति का दत्ता सतवर्ष ।

(ग) सतनाम गरब भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सतगुर ईस बखाने । सतनाम ।

(घ) सतनाम प्रथम भक्ति हेतु भाखल दरिया साहब सतनाम ।

२. (ग) सुनो = सुन ।

३ (ख) एह = है ।

४ (क) है = दर ।

५. (ख) कमल = करत ।

६ (क) सत = सत ।

७ (ग) टेक = टग ।

८ (क) कमल = करत ।

९. (क) (ग) (घ) कमल = करत ।

१० (क) (ग) फिरि फिरि = बेरि बेरि ।

* प्रत्युत दोरी को बँव जे दो बँव है । इनमें (क) इति को प्रत्युत बँव का अर्थार्थ माना गया ।
रह कर इति को अर्थार्थ (क), (ख) (ग) और (घ) संकेत है । —६०

हारिस टेक सकरि पर रसै ।^१ ऐसी प्रीति भन्निठ रस वासै ॥३०॥^१
ज्यों चुमक पारस गांसी पारै ।^२ छोड़ि कठिन निकट बलि भाव ॥३१॥

साली

प्रीति करो सतनाम से,^३ तेजि सकल भर्म भाव ।

मिथ्या जन्म जग जातु है^४ फिरि द्विग ऐसी नाव ॥४॥^५

चीपाई

मिथ्या जीव गए जम के द्वारा । जन्म जन्म भरमे संवसार ॥३२॥^६
मरकट मुठी ज्यों बड़ को म्माना । त्यों त्यों बधिक काम निप्रराना ॥३३॥^७
ज्यों ज्यों बृद्ध होत तन छीना ।^८ त्यों त्यों मामा बिसै रस मीना ॥३४॥^९
बकित चरन चसु बंछु ना सूझै ।^{१०} बिक्रम बान उर अंतर रूझै ॥३५॥^{११}
सर जोरि काम निकट निप्रराना । अितक भ्रम तम भीतर समाना ॥३६॥
पकरि प्राण के कस्ट प्रति दीन्हा ।^{१२} तपत सिला पर सावन भीन्हा ॥३७॥
घरहि मूलावहि फेरि देहि बारी । बहुत कस्ट वेहि तेही मारी ॥३८॥^{१३}
तहां नोई नहि राखनिहार ।^{१४} जम जीव बाधि मरक महं बार ॥३९॥^{१५}
निपुन नाह से प्रीति ना साई ।^{१६} भागत करहि ना मजन उपाई ॥४०॥^{१७}

१ (क) (ख) रासै = रसा ।

२ (क), (ख) वासै = वासा ।

३ (क) चुमक = चुमक ।

४ (क) वे = से ।

५ (क) (ख) (ग) षणु है = जात है ।

६ (क) (ख), (ग) फेरि द्विग ऐसे न बाव ।

७ (क) भरमे = भरमै । (क) संवसार = संसार ।

८ (क) (ख) (ग) त्यों = तेषों ।

९ (क) (ग) ज्यों = जेषों ।

१० (क) (ख), (ग) त्यों = तेषों ।

११ (ग) बंछु = बछु ।

१२ (क), (ख) (ग) रूझै = बरझै ।

१३ (क) वे = बर ।

१४ (ख) तैरि = ताई । (क), (ख) मारी = मारा ।

१५ (क) तहां चोई = ता चर चोई ।

१६ (क) नहि = न ।

१७ (क) वे = से ।

१८ (क), (ग) ना मजन = मजन ।

सीतल परिमल बास सुधासा । निकट द्विच्छ सम लेहि नवासा ॥१८॥
 परिमल पाख्य तामे सागा ।^१ मेटा कर्म काठ जो ागा ॥१९॥^२
 संत निकट सुम वचन वेलासा । मुनत लवन धुनि ब्रह्म नवासा ॥२०॥
 सोसल भग कमल द्विगसाना ।^३ पृहुप बास भवरा सपटाना ॥२१॥^४
 सतगुर मिसे सम सोक मेटाई ।^५ म्या करहि केरि देहि देनाई ॥२२॥
 मुक्ति पदारप भय समधारी । रहत रहित रस म्यान विधारी ॥२३॥

साक्षी

निर्मल म्यान विचारुहु, भक्ति करुहु तब लाए ।^६

सत सरन सतगुर सेवा, भाषागवन मेटाया ॥२४॥^७

श्रीपाद

ज्यों सतसंग सदा चित राखै ।^८ प्रेम सुधा भञ्जित रस खाखै ॥२४॥
 संत सुधा रस करै बिनाई ।^९ ज्या मरण नीर छीर बिलगाई ॥२५॥^{१०}
 छोड़ि छीर नीर जो पिबई ।^{११} नाम निरस ऐस चित धरई ॥२६॥
 साञ्जित अस पै भीतर रहई । बिबरन बिलगि सो इमि कर कहई ॥२७॥^{१२}
 करुहु विदक विचारुहु म्याली ।^{१३} जीवन जम सुधा रस बानी ॥२८॥
 तेजे भजेत भत सब सावै ।^{१४} ज्यों हारिल सकरी निरमाई ॥२९॥^{१५}

१ (क) तामे = तामै । (ग) तामे = तामई ।

२. (क) मैसा = मैसे ।

३ (क) (घ) (ग) कर्मल = कबल ।

४ (क), (घ) (ग) (ग) बसा = बास ।

५ (ग) मिसे = मिसे । (ग) सम = सब ।

६ (क) लए = लो ।

७ (क) मेटाए = मिटाए ।

८ (क), (घ) ज्यों = जो ।

९. (क) करै = करी । (घ) (ग) करै = करे ।

१० (घ), (ग) ज्यों = जैसे ।

११ (ग) जो = जो ।

१२ (घ) (ग) जो इमि कर = इमि कर ।

१३ (ग) विदक = विदक । (ग) विचारुहु = विचार ।

१४ (क) (ग) तेजे = तेजे । (ग) लए = लो ।

१५. (ग) ज्यों = जो ।

दोहा

परमारख के कारने^१, संत जों करीह पुकार^२।माम सुनत बिलि सागही^३, ताके वार ना पार ॥१॥^४

चौपाई

परमारख सुनो बिलि साई^५।^६ विल मंदर के कुरमति जाई ॥१२॥^७कहें दरिया सुनु संत सुजाना।^८ भक्ति हेतु सुमिरो किबु ग्याना ॥१३॥^९अइता अगत बुक्ति से रहना।^{१०} आपन सत्त आपु में गहना ॥१४॥अपने निर्मल होबु किनारा।^{११} ज्यों अन पुरइति रहत निनारा ॥१५॥^{१२}पुरइति पानी तासु नहि लागी।^{१३} ऐसे अन अगता से धागी ॥१६॥^{१४}कहें दरिया गहो सत्त संभारी।^{१५} काम क्रोध तिसुना धम जारी ॥१७॥^{१६}कामिनी कनक से रहो निनारा।^{१७} निगु न नाह बीष करीह उवारा ॥१८॥^{१८}जहां सत्त वहां चोर ना साई।^{१९} सोओ सत्त कीन्ह गिरसाई ॥१९॥^{२०}

सास्त्री

सत्त पुई निर्वान हंही, चौया सोक नेवास।

वीनि सोक पीछे हूमा^{२१}, म्यान कीन्ह परगास ॥६॥

१ (क) कारन = कारने।

२ (क) पुकार = अपुकार।

३ (क) (ख), (ग) सागही = सायै।

४ (क) ताके = ताको।

५ (क) सुनो = सुनहु।

६ (क) के = कै।

७ (क) करे = करै।

८ (क), (ख) सुमिरो = सुमिरहु।

९ (क) (ग) बुक्ति = बुक्ति। (क) से = सै।

१० (क) (ग), (ख) रहत = रहै। (क), (ख) (ग) (ख) निनारा = निनारा। यही स्वीकृत।

११ (क) पुरइति = पुरमी। (क) (ख) नाह = ना।

१२ (क) से = सै।

१३ (क) करे = करै।

१४ (क), (ख) तिसुना = तिसुना।

१५ (क) से = सै।

१६ (क) (ग) (ख) नाह = नाह। (क), (ख) करीह = करीहै। (ग), (ख) करीह = करीहै।

१७ (क) ना = न।

१८ (क) सोओ = सोओहु।

१९ (क) (ख) (ग) बीषे = बीषे।

सतगुर गुर नाही पहचाना ।^१ माहीं संत सेवा सपटाना ॥४१॥
नाहीं दाया दद दिस घाना । पर घाउम नाही पहचाना ॥४२॥^२

साम्नी

सो गए नरक की खानि में,^३ जो अस करे उपाए ।^४
जन्म कोटि भरमत फिरे मुरछि मुरछि पछनाए ॥५॥

भीपाई

भ्रिग मद माति घापु पै खोवें ।^५ काल हाथ जिव जम विगोव ॥४३॥
नामि फारि क्यतूरी घाना । एक देगि मद एक देवाना ॥४४॥
केह्कि प्रसिमा दखि मूनाना । कृदि परा पीछे पछनाना ॥४५॥^६
घाये करव भक्ति निज कर्मा ।^७ परा घचानक जानु न भर्मा ॥४६॥^८
बेस्वा मांरहि दोन्हो दाना ।^९ बेस्वा ग्नी रडे सपटाना ॥४७॥^{१०}
ना गुर सेवा ना सत पहचाना ।^{११} ना परमाग्य दिस में घाना ॥४८॥^{१२}
करहि गुमान घति ऐठे वंमा ।^{१३} संत द्रोह बंधा सुत्र पैना ॥४९॥
संत द्रोह जानि जिन्हि कीन्हा । वांधे काल नर्क तेहि दोन्हा ॥५०॥^{१४}
नरक खानि परे जीव जाई ।^{१५} करहि क्यपना कोटि उपाई ॥५१॥

-
- १ (क), (ख) (ग) नाही = नाहि ।
२ (क) (ख) (ग), (घ) मनही = मारी । घरी पाठ रक्षित ।
३ (क) में = मै ।
४ (क) (ख) (ग) करे = करे ।
५ (क) घापु = घपने । (ख), (घ) घापु = घापन । (ग) घापु = घपन ।
६ (क), (ख) पीछे = पीछे ।
७ (क), (ख) कर्मा = करमा ।
८ (घ), (ग) भर्मा = भरमा ।
९ (क) (ख), (ग), (घ) मांरहि = मांरहि ।
१० (क) (घ) (ग) रडे = रदा ।
११ (क) ना = नाहि ।
१२ (क) ना = नाहि । (घ) घाना = घना ।
१३ (क) ऐठे = ऐठन ।
१४ (घ), (ग) नर्क = नरक ।
१५ (क) (ख), (ग), (घ) परे = परा ।

मुरली टेरि गगन में भावै ।^१ बोलनिहार सो एह बजावै ॥७१॥^२
 बौ लगि काम काबू महि भाव ।^३ तब लगि मुरसि मा टेरि सुनावै ॥७२॥^४
 सोहंग सुरति घुन्य महं पेस ।^५ भजपा मूल द्विष्टि महं देख ॥७३॥
 भविगति रूप भरष महं राख । पुष्टप वास भद्रित रस भासै ॥७४॥
 सुरति सोहंग मूल मे जाई ।^६ वरसन देखि कमल त्रिगसाई ॥७५॥^७
 विष्णु सतगुर को भेद बसाव । गुपत नाम एह प्रपट देसाव ॥७६॥
 जिव के मूल गाम जो पारव । काल फास के दूरि वोहावे ॥७७॥
 काल फास जबहीं से भावै ।^८ प्याज खरग से साहि देसावे ॥७८॥^९

साखी

ग्यान खरग दिव के गहो,^१ सतगुर परत नेवास ।
 सोस पटक जम जाइहे,^२ छप सोक में याव ॥८॥

बौपाई

सेजहु बलपना दुरमति दूरी । जीवन घोर काहे मुस मोरी ॥७९॥^३
 जीवन घोर संसै महं भूसा ।^४ नाम समीप रहो समतूला ॥८०॥
 गहे बिस्वास जो भास पुचाव ।^५ पवित्रा बूद स्वाति करि लावै ॥८१॥
 पीवै बूद जो सुरति भगाई ।^६ नाम निरखि ऐसे पद पाई ॥८२॥

१ (क) टेरि = डेर ।

२. (क) (ख) (ग) (घ) एह = इह ।

३ (क) (ख) (ग) बौ = बव ।

४ (क) तब = तो ।

५. (क), (ख) (ग) मूल = मूल ।

६ (क), (ख) (ग) (घ) मेरेण = सोईयम ।

७ (क) कमल = कमल ।

८ (क) से = से ।

९ (क) से = से । (ख) देई

१० (क) (ख) के = के ।

११ (क) (ख), (ग) (घ) जाइहे = जाइ ।

१२. (क) जाइ = जाइ । (ग) मोरी = मूरी ।

१३ (क) (ख) बंधे = बंधे ।

१४ (क) (ख) (ग) गहे = गहे ।

१५. (क) पीवै = पीवै । (ख) जो = जो ।

श्रीपाई

सत सत सत करे पुकारा ।^१ सत चीन्ह सो उतरे पारा ॥६०॥^२
 सत चीन्हा बसो गुर म्यानी । सत सन् छप लोक की बानी ॥६१॥
 बिनु सतगुर नहि सत पहचानी । बिनु पद परजे कवनि गति ठानी ॥६२॥
 मनमठ ग्यान क्ये संवसारा ।^३ रूप न रंग ना रंग करारा ॥६३॥^४
 जाके पिड न जाके नएमा ।^५ पिड प्रान नाहि मुख बएना ॥६४॥^६
 जाके रूप ना जाके रेखा । धंपरे प्राणि क्वहि नाहि देखा ॥६५॥^७
 सुनो सत यह करो विचारा ।^८ सत पुन बोए सभते न्याय ॥६६॥
 जाके पिड प्रान है छाया । तिनहीं सम जगठ निरमाया ॥६७॥
 बोए सम कर्णहि निजाफ बनार्द ।^९ ऐसो सतपुन हंहि भाई ॥६८॥
 भजर काया सिग छन विराजे ।^{१०} मनहद वाजा कीटिन्ह बाजे ॥६९॥^{११}

सार्थी

सत पुन बोए भजर हही,^{१२} मरे जिव नाहि जाए ।
 कहें दरिया ऐनक मिले,^{१३} जोतिहि जोति समाए ॥७०॥^{१४}

श्रीपाई

ऐनक सुरति चंद उगों मुरा ।^{१५} मन्ने पदुम गगन भरि पूरा ॥७०॥^{१६}

१ (ग) सत=सत । (क) करे = करी । (ग) (ब) करे = करे ।

२ (क) (क) (ब) उतरे = उतरे ।

३ (क) (ख) (ग) क्ये = क्ये ।

४ (ग) रूप न रंग = रूपरेखा ।

५ (ग) नएमा = मैना ।

६ (क), (ख) (ग) (घ) बएना = देना ।

७ (क) छ परे = छ परे ।

८ (क), (ख) (ग) सुनो = सुनो । (ग) यह = इस ।

९ (ग) सत = सत ।

१० (क) (ख) (ब) निजाफ = निजाफे ।

११ (क) (ग) मन्ने = मन्ने । (क), (ख) (ग) वाजा = वाजे ।

१२ (ग) बोए = बोए ।

१३ (क) (ख) (ब) मिले = मिले ।

१४ (क) तो = तो । (ग) सा = सत ।

१५ (ग) (घ) उगों = उगे ।

१६ (क) (ख) मन्ने = मन्ने ।

[सकुच मीन पारस कही,^१ मोठी परसं सोए ।^२
 चारि चरन बुद्ध मुक्त है,^३ बुझे विरसा कोए ॥११॥^४]
 गज मुकुता बिरसा कही^५ कु जल बहु संवसार ।^६
 केहि पारस से अपणे,^७ पंडित करहु बिचार ॥१२॥

चौपाई

गज मुकुता मस्तक जेहि होई । मस्तक गए द कहांस सोई ॥१०॥
 घु गल चिरिया ठेहि भवसर भाई ।^८ मस्तक पारस दीन्ह मगाई ॥११॥
 उपजे मुकुता निर्मल सारा ।^९ है कोइ पंडित करे विचारा ॥१२॥^{१०}
 सतगुर ग्यान बुझहु त्रिभु सोई ।^{११} त्रिभु पारस मुकुटा नहि होई ॥१३॥
 मूल सोहंगम शम्भु है सारा । सतगुर सोइ जो हंस चबारा ॥१४॥
 भाके पारस मूल ठेकाना । दीवि त्रिष्टि जो गहे किसाना ॥१५॥^{१२}
 सोहंग सुरति सून्य महं पेस ।^{१३} मोठी ऋरी गगन महं देखै ॥१६॥
 सोई सतगुर जोजो म्यानी ।^{१४} मनमठ ग्यान सेजो बड़ प्राणी ॥१७॥^{१३}
 तन के प्रास जो बहुत देखाने । पंच भगिति में तनहि बरतवै ॥१८॥^{१४}

१ (क) सकुच = लकड़ी ।

२ (ग) (घ) परसै = पारसै ।

३ (क) बुद्ध = सीए ।

४ (ग) (ग) (घ) बुझे = बुझे । यह बोहा खण्डित है । अरु कोउक में ।

५ (क) कही = कोई ।

६ (क), (ग) संवसार = संसार ।

७ (क) (घ) (ग) (घ) ऊपरसे = उपरसे ।

८ (क) (ग), (घ) अतिरिक्त पाठ—स्वाती ऋरि बरतवै जल खना ।

मस्तक बुद्ध जो भाए तुलना ॥

९ (क), (घ) (घ) ठाजे = उपजे ।

१० (क), (घ) करे = करै ।

११ (घ) त्रिभु = त्रिभु ।

१२ (क), (घ) परे = परै ।

१३ (क) (घ) (ग), (घ) मूल्य = मूल ।

१४ (क) (घ) जोजो = जोगहु ।

१५ (क), (ग) सेजो = सेजहु ।

१६ (ग) अतिरिक्त पाठ = अतिरिक्त ।

बरिसे बुध गगन सममाना ।^१ जल में सीप सूरुति जो ठाना ॥८३॥
 सेवाठ सीप की एही प्रीती । सुपट खोलि मिसे बुध से सीती ॥८४॥^२
 बुध समान निर्मल मोती ।^३ निर्मल म्यान बरे जंह जीती ॥८५॥^४
 सीप के घास पुखनिहारा ।^५ पूजे भास जो रहे करारा ॥८६॥^६

साक्षी

सकुष मीन पारस कही* मोती परसे साए ।
 पारि परल बुध मुस धई बुझ विरला कोए ॥९॥

चौपाई

अपरि संत सम सोप समाना ।^७ सतगुर पारस मूस ठेकाना ॥८७॥
 पारस परसे मोती होई ।^८ कहे दरिया सतगुर है छोई ॥८८॥
 सीप बेता पिर रई इमाना ।^९ सेवासी गुर जो भाए सुलाना ॥८९॥^{१०}

साक्षी

बिनु पारस मोती नहीं,^{११} सेवासी गुर है म्यान ।
 सीप पारस अबही मिसे,^{१२} तब माली होए समान ॥१०॥

- १ (क) (ख) (ग) बरिसे = बरिसे ।
- २ (क) (ग) मिसे = मिसे । (क) (ख) (ग) (घ) ठे = ठे ।
- ३ (ख), (ग) निर्मल = निर्मल ।
- ४ (क), (ग) बरे = बरे ।
- ५ (ख) (ग) सीप के घास = सीप कास ।
- ६ (क) (ख), (ग) पूजे = पूजे । (क) (ख) (ग) रहे = रहे ।
- ७ (क) (ख) (ग) (घ) में यह कधी कहा नहीं है । इसका पाठ ११ संस्करण चौपाई के बाद है ।
- ८ (ग) सम = सम ।
- ९ (क), (ख) (ग) बरसे = परसे ।
- १० (ग) रह = रहे ।
- ११ (ग) जो = ज्यों ।
- १२ (क) बरि = बरी ।
- १३ (क) अबही मिसे = अब मिसे । (ग) बरही मिसे = अब मिसे । (ख) मिसे = मिसे ।

महरि जोगाए ममी जो साई । संतहु गहिर रई उखई ॥११०॥^१

साखी

कहैं दरिया निनु सार है, गहिर म्यान निनु भेद ।

उसटि मूस बंह देखिए,^२ ब्रह्म मनूप निषेद ॥१४॥

पीपाई

सम को म्यान दुस्त के भाव ।^३ कुमति रहे उर निर दिन दावै ॥१११॥^४

घोषहि कंट विष कं मूसा ।^५ भवसर परे भया तिरसूसा ॥११२॥^६

भवसर परे पीछे पछटाई ।^७ विसि बोक तेहि विसि सपटाई ॥११३॥^८

संत के विसि मन्त्रित होए जाई ।^९ उलटि विखी फेरि विन्निहि समारै ॥११४॥^{१०}

संत ब्रह्म करे मूढ़ गंवारा ।^{११} अपने हाथ भापु पगु मारा ॥११५॥

मारहि पगु पीछे पछटाई ।^{१२} मेटे कुमति अब सुमति समारै ॥११६॥^{१३}

सुमहि कछु निनु संत के सेवा । सफल मही का पूजहु देवा ॥११७॥

पन्य सो प्राप्त जहा संत के बासा ।^{१४} जहा साहब निधि सेहि सेवासा ॥११८॥^{१५}

१ (क), (ख) रहे = रई ।

२. (क) (घ), (ग) देखिए = देखिरे ।

३ (क) (ग) के = के । (घ) के = कर ।

४ (क), (ख) (ग) रहे = रई ।

५. (क) घोषहि = बोही ।

६ (ग) परै = परा ।

७ (क), (घ) (ग) परे = परै । (ख), (ग) पीछे = पीछे ।

८ (क) विसि = विष ।

९. (क) विसि = विष ।

१० (क) फेरि = फेर । (ख) विन्निहि = विन्निहि ।

११ (क), (ख) (ग) करे = करै ।

१२. (क) पीछे = पीछे । (ख) पछटाई = पछटाई ।

१३ (क) मेटे = मेट्टे । (ख), (ग) मेटे = मेट्टे । (घ) (ख) (ग), (घ) अब = अब ।

१४ (क), (ख) (ग), (घ) पन्य = पन ।

१५. (क) निधि = निधि ।

ऊरुय मुल भूसे दिन राती ।^१ जल के निकट सएन बहु माती ॥ ६१ ॥
 पए पीबहि फल करहि प्रहार । लगा किरे तन रहे उपाय ॥ १०० ॥^२
 प्रगट भनूति मरी मुख धार ।^३ काम क्रोध निख दिन बेपार ॥ १०१ ॥
 भ्रिगत्रिमुना मर माया ना त्यागे ।^४ प्रंतहु बपट बिखै रस सागे ॥ १०२ ॥^५
 पालक कर्म करहि सम जानी ।^६ ताते जीवन जम भव हानी ॥ १०३ ॥^७

साखी

उलटि मूल बह सीचिरे, ली करे फूले सोहाए ।^८
 सुरति साबही देवा (बिवा बसे) बसे,^९ दुरमति सम दुगि जाए ॥ १०४ ॥^{१०}

बीपाइ

जी लगि सुरति साब नहि प्राबे ।^{११} ली लगि भक्ति ना दास बहाव ॥ १०५ ॥^{१२}
 बांधहि भेल बपट नहि छूटा । बठिन जान तन मीनर लुटा ॥ १०६ ॥
 बांधहि भेल तिलक प्रव माया । सीगी सेली बहुत गिसाना ॥ १०६ ॥
 दाढ़ी भेल व्याधा ज्यों बीन्हा ।^{१३} बांधहि भेल बिख रस बीन्हा ॥ १०७ ॥
 सतगुर ग्यान है भयम प्रपारा । ज्यों दरिया जल रहे बरार ॥ १०८ ॥^{१४}
 उलटि सहरि फेरि साहि समाई । जग के सहरि जोगाबहु भाई ॥ १०९ ॥^{१५}

१ (क) (प) मूसे = मुसे ।

२ (क) किरे = किरि । (ख), (ग) किरे = किरै । (क) (ख), (प) रहे = रई ।

३ (क) भनूति = भनूत ।

४ (ग) (प) त्रिमुना = त्रिमुना (क) त्यागे = त्याग्य । (ग) (प) त्यागे = त्यागै ।

५ (क) सागे = सामा (ख) (ग) (प) सागे = सागै ।

६ (क) (ग) कर्म = कर्म ।

७ (क) ताते = तानै । (क) (ग) भव = भौ ।

८ (क) ली फूले करे सोहाए । (ख) 'ली करे फूले सोहार' (ग) लव फल फूले सोहाए । (ग) 'करे फूले सोहार' ।

९ (ग) (ग) देवा बसे = देवरी ।

१० (क) (ग) दुरमति = ली दुरमति । (ख) दुरमति = लव दुरमति ।

११ (क), (ख) (प) जी = जव । (ग) जी = जी ।

१२. (ग) लगि = लगि ।

१३ (क) (ग), (ग), (ग) दाढ़ी = दाढ़ी । (क) व्याधा = व्याधे । (क) (ग), (ग) ज्यों = ज्यौ ।

१४ (ग) ज्यों = ज्यौ । (क) (ख), (ग) रई = रई ।

१५. (क) क = के ।

छोड़ि कर्म मिहकर्म कहावै । जाति प्रजाति नाम सो पावै ॥१२७॥
 वह धरे सम जाति प्रजाती ।^१ बोलनिहार बोले बहु भाती ॥१२८॥^२
 बोलनिहार समे मंह धोन ।^३ एके प्रमह सम घट डोल ॥१२९॥^४
 दरपन फूटा कोटि पचासा ।^५ दरसन एक सम मंह वासा ॥१३०॥^६
 एक दरस दिस सम माही ।^७ हिंदु तुर्क दोविधा चित नही ॥१३१॥
 पुर्छ एक समन्हि ते न्यारा ।^८ जाको तेज बरत संसारा ॥१३२॥^९
 ताके प्रंस जीव सम प्रहई ।^{१०} बोलनिहार बोले घट कहई ॥१३३॥^{११}
 म्यानी होए सो करे विचार ।^{१२} प्रमह एक ई पुस निनारा ॥१३४॥

साक्षी

एक प्रमह समे घट,^{१३} देखो सब्य विचारि ।^{१४}

सब्य दुराएन ना करौं^{१५} कहौं समे परचारि ॥१३५॥^{१६}

बीपाई

सून करे मद मासु जो खाई ।^{१७} बीरासी जिव जन्म जाई ॥१३५॥^{१८}

१ (क) (ब) धरे = धरै । (क) सम = सब ।

२ (क) (ख), (ग) बोले = बोले ।

३ (ग) समे = समे । (क) (ख) (ग) (ब) बोले = बोले ।

४ (क) (ग) एके = एकै । (क) समे = समे । (ग) समे = समे । (क) (ग) घट = मई ।

५ (क) फूटा = फूटे ।

६ (क) समे = समन्हि । (क) मंह = मी ।

७ (क) (ग) एके = एकै । (क), (ब) दरस = दरसन । (ग) सम = सब ।

८ (ग) समन्हि = समन्हि । (क) ते = तै ।

९ (क) (ख) (ग) (ग) जाको = ताको । (क) बरत = ऋत । (क), (ग), (ब) संसारा = संसारा ।

१० (क) (ग) (ब) ताके = ताको । (ग) मम = सब ।

११ (क), (ब) बोले = बोले ।

१२ (क) (ग) धरे = धरै ।

१३ (क), (ग) एक = एकै । (ख) (ग) एक = एकै । (क) समे = समे । (ग) समे = समे ।

१४ (ग) विचारि = विचार ।

१५ (क) कहौं = करी ।

१६ (क) कहौं = करी । (ग) परचारि = परचार ।

१७ (क) (ब) कर = करै ।

१८ (ग) (ग) जन्मे = जन्मे ।

साखी

धन सी ग्राम षोए ठांव है, जहा मजन निर्वान ।^१
मसयागिर के मस में^२, बेधेवो काठ मजान ॥११॥^३

चौपाई

सुसबोई षहु प्रोर नेवासा । संत निकट निजु कछु बेलासा ॥११६॥^४
सव साहब सामरप मुजाना । दुरमति दुरि होए साहब घ्याना ॥१२०॥^५
पारस मिसे तौ कचन होई ।^६ तामा बाके कहे ना कोई ॥१२१॥^७
हाट बिके केरि मंहगे मोला ।^८ सनिक कपूर नहि तजविज तोला ॥१२२॥^९
ऐसो पारस सत समाना ।^{१०} संत साहब कह एन जाना ॥१२३॥^{११}
तित पेरे केरि तेल कहाव ।^{१२} पून पारस पुनेस सोहाव ॥१२४॥
पारस पून से कर्म कटाव । नाम सजीवन पारस पाव ॥१२५॥

साखी

जाति पाति माहि पूछिअ^१ पूछहु निर्मल ग्यान ।^२
संत के जाति मजाति है^३, जिन्हि पायो पद निर्वान ॥१६॥^४

चौपाई

सेवाती मुद केदति मे प्राव ।^५ पारस पाए कपूर कहाव ॥१२६॥

- १ (क) मजन = पुर्ण ।
२. (ग) (प) मसया = मसैया । (क) गिर = गिरि ।
- ३ (ग) बेधेवो = बेधव ।
- ४ (क) कछु = कटे ।
५. (क) साहब = साहेब ।
- ६ (क), (ख) मिल = मिलै । (क) तौ = तो । (म) तौ = तव ।
- ७ (क) बाके = बाधो । (क) कहे = कई ।
- ८ (क) (ख), (प) बिके = बिकै । (क) केरि = केर ।
९. (क) कपूर = कबर । (ख) तोला = तोला ।
- १० (क) ऐसो = ऐसे ।
- ११ (क) कह = कै । (ख) (प) पर = वे । (म) दके = एक ।
१२. (क), (ग) मिल = मिलि । (क) (ख) (प) पर = परै । (क) केरि = केर ।
- १३ (क), (म), (ख) पूविर = पूर्वारे । (ख) पूवए = पूव ।
- १४ (प) पूछहु = पूछ ।
१५. (क) (ख) (ग) (ख) के = की ।
- १६ (क) जिन्हि = जिन्ह ।
- १७ (ग) मे = मंह ।

जब लगी थी व दरद नहि भाव ।^१ तब मगि नाम बरस नहि पावै ॥१४३॥
संमुखु संतहि भेद निर्बाना ।^२ निरकेशन निरक्षेप पद म्याना ॥१४६॥

साखी

जीवदया दिस में धरो, भक्ति करो कत नेम ।
कहैं हरिया कुर्मति तेजो, चरन कंबल पद प्रेम ॥१६॥^३

चौपाई

विना प्रेम नहि भक्ति विवेक्षा । होए प्रेम एह गुरगमि पेक्षा ॥१४७॥
प्रेम हि प्रेम मिस निनु बना ।^४ क्यों जस कमल र्हो सुख घमा ॥१४८॥^५
ऐसो प्रेम प्रीति गहि लाव ।^६ नाम सजीवनि ता सुख पावै ॥१४९॥^७
प्रेम प्रीति गहि गांठि लगवै । करे भक्ति निनु प्रेम सो पाव ॥१५०॥^८
करहु प्रेम पद पंकज प्याती । जीवन धोर तेजहु बहु बाती ॥१५१॥
जीवन धोर मामा मद लोभा । देखि कुसुम रंग ता पित सोभा ॥१५२॥
चित्र विचित्र रधो चित्रसारी ।^९ नट नागरि पट बत हूँ ठापी ॥१५३॥
बेस्या मांड करीहु सतकाला । भूले गुमान सो मद मतवाला ॥१५४॥^{१०}
संत सेवा नहि गुर गमि म्याना ।^{११} अंतर अंधपट र्हो मुदाना ॥१५५॥^{१२}

साखी

चारि पधारम पाएके^{१३} क्यों ना भजो सतनाम ।^{१४}
साई द्रोह जस सेवका, कंठ पावै विसराम ॥२०॥

(५) जब = जो ।

१ (क) (घ) समुच्छ्रु = समुच्छ्रे । (ङ) (च) संतहि = सत एह । (प) संतहि = संत ।

२ (ग) कंबल = कमल ।

४ (ख) मिलै = मिठा । (ग) मिलै = मिले ।

५ (क) (ख) (ग) रहा = रहै । (ङ) (च) (प) कमल = कंबल ।

६ (क), (प) लोभे = लोभे ।

७ (क), (ग), (प) सजीवनि = सजीवन ।

८ (ख) भक्ति निनु प्रेम = भवती प्रेम ।

९ (ख) (च) विचित्र = बेचित्र ।

१० (ख), (च) मुझे = मुझे ।

१ (ङ) नहि = नही ।

१२ (ङ) अतः अंध पट रहा सुदाना । (ख) 'अंतर अंध पट रहै सुदाना । (ग) अंध पट रहा सुदाना । (प) अंतहु अंध पट रहै सुदाना ।^१

१३ (ङ) (प) पाएके = पाएके । (ङ) (ग) पाएके = पाएके ।

१४ (ङ) भजो = भजे । (ङ) भजो = भजे ।

खून करे खून सो पावें ।^१ बोएल क बोएल ताहि भरमावें ॥१३६॥^२
बोएल बिना कोइ जाए ना पावें । कर्म इट परि ताहि भरमावें ॥१३७॥^३

सखी

कहैं दरिया नाहि बाँचिही^४, त्रिनु दीए कम इड ।^५
कहाँ भागि जीव जाइहो^६, सख दीप मव खंड ॥१८॥

चौपाई

तीनि सोव जाकरि ठजुराई । बोएल दीन्ह तीनहु जग घाई ॥१३८॥^७
पहिले बोएल आपन दही ।^८ जठ सीबन्ह को घक लिगि लेही ॥१३९॥^९
राम क्लिख बोएल जग दीन्हा । जाकर बोएल ताहि लिखि सीन्हा ॥१४०॥^{१०}
राम क्लिख लँ कवन कहावै ।^{११} करे खून बोएल सो पाव ॥१४१॥
जीव के दरद बुझहु रे भाई । दरदभद के दरद समाई ॥१४२॥^{१२}
जो यह दया दरद दिस माने ।^{१३} दरदभद सो जगत बलाने ॥१४३॥^{१४}
एके भ्रम्ह समैं घट मूकै ।^{१५} ग्यानी होए सख एह मूकै ॥१४४॥

१ (घ), (ग) करे = करे ।

२ (ब) बोएल = बोले ।

३ (ग) केरि = करि ।

४ (ब), (घ) (ग) बाँचिही = बाँचिहो ; (क) बाँचिही = बाँचिहो ।

५ (क) त्रिनु = त्रिना ।

६ (क) जाइहो = जाइये ।

७ (क) (घ) तीनहु = तीगहु ।

८ (क) आपने देही = आपन दीहा । (क) (ग), (ग) आपन = आपनी । (घ) आपन = आपनी ।

९ (क), (घ) लेही = लीहा ।

१० (क), (घ) (ग) जाकर = ताकर ।

११ (घ) (ग), से = से ।

१२ (क), (घ), (ग), (ब) दंद = दंद ।

१३ (क), (घ) 'जो यह दया दरद दिस माने ।' (क) (ग) 'जो यह दया दरद दिस माने ।'

१४ (क) (घ) (ग) (घ) दरद दंद = दरद दंद । (ब) जो = से । (क) (घ) बलाने = बलाना ।

१५ (क) मूकै = मूक ।

शौपाई

माया रूप बलि छरै वनाई ।^१ माया ते जग मुनि मुनि छाई ॥१६२॥
 माया रूप कंस बध कीन्हा । एह भेद विरला केहु कीन्हा ॥१६६॥
 भावै जाए जगत उपजावै । मन माया फेरि जोति समावै ॥१६७॥^२
 मन के रंग विरला केहु जाना । जाके सुरति सांघ है ग्याना ॥१६८॥
 एह मन बंधन चतुर है जोरा । मन सुरीद है मनहि कठोर ॥१६९॥^३
 मन बुधि बल कर्म एह ग्याना । मन भ्रंतत रूप धरे जहाना ॥१७०॥
 एह मन काम क्रोध सुख भोगा । मन जोगी है मन है रोगा ॥१७१॥^४
 मन ही विगुन धरे एह छात्रा ।^५ सुर मर मुनि परे मन के फंदा ॥१७२॥^६
 एह मन भावै एह मन जाई ।^७ एह मन एह जग जिव सम साई ॥१७३॥^८
 ब्रह्मा बिस्तु एह मन धरा ।^९ मनहीं राखन भए विधंसा ॥१७४॥

बोहा

कंधन कोट संका बमो^१ जादि कीन्ह घुरि घाम ।
 धोरे मह जनि मातहु^२, भजन करहु सतनाम ॥११॥^३

शौपाई

राजा प्रियु प्रियिमी सम लीन्हा । धति बस जोर समै बसि कीन्हा ॥१७५॥^४
 जर जराव समै रजधानी ।^५ सम मिसि गए नरक नी खानी ॥१७६॥

-
- १ (क) (ग) (ब) छरै = छरो ।
 २ (क) फेरि = फेर । (ग) फेरि = फिरि ।
 ३ (क), (ग) (प) सुरीद = मोरीद ।
 ४ (क) है = यह । (ब) जोरि है मन = जोयी मन ।
 ५ (क) (ब) ही = ई । (प) मरही = मर ।
 ६ (क) (प) परे = परै ।
 ७ (क) जाई = जाये ।
 ८ (क) खाद = खाये ।
 ९ (क) बिस्तु = विगुन । (क) (ब), (ग) (प) एह = इही ।
 १० (ब) कोट = कोटि । (क) बमो = बनी ।
 ११ (प) धोरे = धोरै । (क) (ब), (ग), (प) मह = मर ।
 १२ (क), (प) (प) करहु = करो ।
 १३ (क) बसि = बध ।
 १४ (ग) समै = सरै । (क) (ब) रजपाली = रजधानी ।

चौपाई

विलै बिकार तेजहु अइ प्रानी ।^१ सुमिरहु नाम धनुषम धानी ॥१५६॥^२
 एह माया बहु केहू की खेरी ।^३ सुर नर सम बाधेनो खेरी ॥१५७॥^४
 सुर नर मुनि भव तपे सन्यासी ।^५ मन माया प्रिय डारे फांसी ॥१५८॥^६
 कंचन कोट सका बहु भांती ।^७ चित्र विचित्र रचो चहुं नांती ॥१५९॥^८
 चित्र विचित्र सम बनक उदेहा ।^९ पल में गर्द भया सम खेहा ॥१६०॥^९
 सीता मोहनी रही भवानी । रावन हरि अपने प्रिहू धानी ॥१६१॥^{१०}
 मन माया नाहि चीन्हे गवारा ।^{११} काल कठिन चाहे सम मारा ॥१६२॥^{११}
 मन की धाजी समै यथावै ।^{१२} बाजीगर का भेन न पावै ॥१६३॥
 बाजीगर ज्यों सिद्धि न भावै ।^{१३} चित्र वाध के घानि देगावै ॥१६४॥^{१४}

दोहा

बाजीगर की येसि एह^{१५}, कहे कवन पनिभाए ।^{१६}
 कहें दरिया मन समै तचावै^{१७}, युक्ति परे पछताए ॥

- १ (क), (ख), (ग), (घ) बिकार = बेधर ।
२. (क) सुमिरहु = सुमरहु ।
- ३ (क) (ख) बहु = बह ।
- ४ (क) बाधेनो = बाधित ।
- ५ (क) भव = भौ । (ख) भव = भतर । (घ) तपे = तपे ।
- ६ (क) (घ) डारे = डारें । (ख) डारे = डारेयो । (ग) डारे = डारेव ।
- ७ (घ) कोट = कोठि ।
- ८ (ख) (ग), (घ) विचित्र = बे चत्र ।
- ९ (ख), (ग) (घ) विचित्र = बेचित्र ।
- १० (ग) सम = सव ।
- ११ (घ) प्रिहू = प्रिदि ।
- १२ (क), (ख) (घ) प्रिहू = चिहूरे ।
- १३ (क) (ख) (ग) बादे = बादे ।
- १४ (क) (घ) समै = समे ।
- १५ (घ) (घ) ज्यों = ज्यो ।
- १६ (घ) घानि = घान ।
- १७ (क) (ख) पर = मर । (क) (ख), (घ) येसि = येसि ।
- १८ (क) चरे = चरो ।
१९. (ग) समै = समे ।

सत पुर्षं समन्धि ते न्यारा ।^१ चौषा लोक जंह रंग करारा ॥१८७॥^२

दोहा

चौष लोक सम ऊपरे,^३ जहां पुष निर्वान ।

उचित कला परगास है,^४ करो भजन निबु म्यान ॥१३॥

चौपार्ह

सत पुर्षं हंहि भजर भकेना ।^५ सत सुकित उनहों मह मेला ॥१८८॥^६

बुम्हु ग्यानी करहु बिबेजा । नाम निरखि यह गुर गमि पेखा ॥१८९॥

सतनाम निबु भगम भपारा । निर्मल नाम है तिगुम सारा ॥१९०॥

नाम पिऊलन भजित धानी ।^७ बुम्हु संत सत सहिवानी ॥१९१॥^८

वेहि दिन नहि मंडल नहि टारा ।^९ वेहि दिन ब्रम्ह न वेद विचारा ॥१९२॥^{१०}

वेहि दिन कर्म धर्म नहि जानी ।^{११} वेहि दिन सीव छक्ति नहि ग्यानी ॥१९३॥^{१२}

वेहि दिन नीर ना बहे बतारा ।^{१३} वेहि दिन ब्रंर ना मेघ परगास ॥१९४॥^{१४}

वेहि दिन विस्त ना दस भवतारा ।^{१५} वेहि दिन कम ना धर्म पसारा ॥१९५॥

वेहि दिन पुर्षं षोए रहे निनारा । निरजन लिए बंबर छिर डारा ॥१९६॥^{१६}

रहहीं संग हुकुम नहि टारा । सुनहु संत यह करहु बिचारा ॥१९७॥^{१७}

१ (ख) समन्धि = समानि ।

२ (घ) (ग), (घ) चौषा = चौष । (ङ) जहां = जहां ।

३ (ख) ऊपरे = ऊपर ।

४ (घ) कला = कला ।

५ (ङ) (घ) हंहि = है ।

६ (ङ) (ख) (ग) (ङ) बनहीं = बम्हरी ।

७ (ङ) पिऊलन = वेङ्गलन ।

८ (ङ) 'बुम्हो संत एह सत सहिवानी । (ग) बुम्हु = बुम्हो ।

९. (ङ) 'पठ नहि' के स्थान में 'नहि' — अस्वीकृत ।

१० (ङ) ब्रम्हो = ब्रम्हा । (ग), (ङ) ब्रम्हो = ब्रम्ह ।

११ (ख) जानी = जाना ।

१२. (ङ) ग्यानी = ग्याना ।

१३ (ङ) (ख) बहे = बह ।

१४ (ङ) ना = न ।

१५. (ङ) विस्त = विस्तु । (ख) विस्त = विस्तु । (घ) भवतारा = भौतारा ।

१६ (ङ) (ख), (ग), (ङ) छिर = छिरे ।

१७ (ङ) रह = रह ।

चौपाई

जर पुराव समे घटि कीमूहा । बिना भजन किछु संग न सीन्हा ॥१७७॥
 मन की ममिता समे बहावै ।^१ बिना भजन कछु काम न भावै ॥१७८॥^२
 संग सना पुरजोधन ठाना ।^३ छन मह परन समे बिलाना ॥१७९॥^४
 भगत पण्ड सदा उन्हि राता ।^५ निर्मल म्यान नेर यह भाता ॥१८०॥
 बड़ो पर्न राखा उन्हि जानी ।^६ पुरजोधन के नजहि निसानी ॥१८१॥^७
 राए पुषिस्त्रिल क्रिस्त पियारा । राखिह प्रन तेहि भक्ति बिघारा ॥१८२॥^८

श्लोक

रासेषो प्रन तेहि जानिके^९ क्रिो भक्ति प्रतिपास ।

धपने पछ न कारन, काटो जम के जान ॥१२॥^१

चौपाई

संत महिमा किछु कहि नहि जाई ।^१ जिन्हि जिन्हि भजन नाम सबसाई ॥१८३॥^२
 नाम निरखि जिन्हि करहि बिबेधा । सतनाम निस्वै निस देखा ॥१८४॥
 राए निरजन निरहूँकारा ।^३ तीनि सोक ताको पैसारा ॥१८५॥^४
 प्रमूहा बिस्त महेसर देवा ।^५ सम मिति करहि जोति के मेवा ॥१८६॥^६

१ (क), (ख) (घ) समे = समै । (ग) समे = सबै ।

२. (क) काम न भावै = संग न भावै ।

३ (क) देमा = दैम । (ख), (ग) पुरजोधन = त्रिजोधन ।

४ (क) (ख) परन = परसै । (घ) जो समै = सबै ।

५ (क) (घ) भगत = भक्ति ।

६ (क) बड़ो = बड़ी । (ख) बड़ो = बड़ो । बड़ो = बड़ा ।

७ (क) (ग) पुरजोधन = त्रिजोधन । (क) दे = दी । (ख), 'घ' दे = दै । (क) (ग) (घ) नरही = नारी ।

८ (क) (ग) राखिह = राखिहि । (घ) (घ) बिघारा = बेकारा ।

९ (क) (ख) (घ) रासेषो = रासो । (ग) रासेषो = रासेप । (क), (घ) जानिके = जानिदैं ।

१० (क) धपनो = धपनी ।

११ (क) नाहि = नदि । (ग) नाहि = न । (घ) नाहि = ना । (घ) कही = कहा ।

१२ (ग) लख = ली ।

१३ (क) निरजन निरहूँकारा = निरजन है निरकारा ।

१४ (घ) पैसारा = परसारा ।

१५ (क) महेसर = महेश्वर ।

१६ (क), (ख), (घ) दे = दै ।

अगम पुर्ष वोए सम से स्यारा ।^१ ठेहि सुमिरे जीब होए उबाटा ॥२०८॥^२
 ताके सोअहु पंडित ग्यानी । सत्तपुर्ष वोए हहि निर्बानी ॥२०९॥
 अन्हु बिन्हु अन्हु को आया । बिन्हु प्रादि अंत जिन्हि निर्माया ॥२१०॥
 ताही बिन्हे विनु कहवां अइहो ।^३ कवन ठौर जंह जाए समइहो ॥२११॥^४
 अन्हु लोक भोला है भाई । इन्द्र लोक तहां कास समाई ॥२१२॥

साखी

कहैं दरिया वोए अजर है^५ सपलोक महं बास ।^६
 तहवां कास ना भावहीं बहु विधि करहि घेनास ॥२२॥^७

श्रीपाई

एक अन्हु ते अन्हु भौ चारी ।^८ बारि घरत ते जक्त पंखारी ॥२१३॥^९
 एके अह्य सम बट छाया ।^१ अन्हु वेह सुम कते पाया ॥२१४॥^{१०}
 एके पिड एके है प्राता ।^{११} एके भुस रसता है कामा ॥२१५॥^{११}
 एके हाय पाय है पेटा ।^{१२} पुइ कपटा कते तुह भेटा ॥२१६॥^{१२}

१ (क) अगम = अग्र । (ख) समते = सते ।

२. (क) (ख) (ग) (घ) ठेहि = ठहि ।

३ (क), (ख), (ग) बिन्हे = बिहै । (घ) (ङ) जइहो = जैहो ।

४ (ख), (ग) समइहो = समैहो ।

५. (क) (ग) (घ) है = हरी ।

६ (क) (ख) (ग), (घ) महं = मे ।

७ (घ) करहि = करत ।

८ (क), (ख), (ग) (घ) एक = ऐक । (घ) अन्हु = अर्ध ।

(क) (ग), (घ) भौ = भव ।

९ (क) ते = ते । (क), (ख), (ग), (घ) जक्त = जगत ।

१० (ग) समै = सफल ।

११ (क), (ख) कते = कैते । (ग) कते = करते ।

१२. (घ), (ङ) एके = एकै । (ख), (घ) एके = एकै

१३ (घ) एके सुख = एकै है सुख ।

१४ (क) में 'पाय' है अरबीयत ।

१५. (क) कैते = कैते । (ख) कैते = करते । (ग) कैते = करते । (क) (ग), (घ) एके = सुख ।

सत पुर्ख बोए भगम भपारा ।^१ धननोक जहाँ तख्त सवारा ॥१६८॥

साथी

पीछे सम पैदा कियो,^२ मन भाया एक संग ।^३

कहँ दगिया निर्माण,^४ प्रेम प्रीति बहु रग ॥२१॥

चौपाइ

कुम जोति ते कन्या भएऊ ।^५ ताते निर्गुन रूप होए टएऊ ॥१६९॥^६

ब्रह्मा विस्न महेश्वर जोगी । सीनि कन्या तीनिउ रस भोगी ॥२००॥

रजगुन तमगुन तामस कीन्हा । तेअ वेद विषय रस भीन्हा ॥२०१॥^७

त्रिमुन फंड रचा संवसारा । जम जाल वा कीन्ह पसारा ॥२०२॥^८

जोग जाप यह जग में दीन्हा ।^९ मत्र गाइत्री ब्रम्हे कीन्हा ॥२०३॥

गाइत्री कन्या ब्रहे भवानो ।^{१०} ताको जाप मुक्ति फल ठानी ॥२०४॥^{११}

गाइत्री स्नापित ब्रजनहि भर्मी ।^{१२} ताते घाए जगत महँ जमी ॥२०५॥^{१३}

भापन मुक्ति न पाव बचारी ।^{१४} सो बैसे जन जन्म उपायी ॥२०६॥^{१५}

नारी ध्यान सन करुहँ समाधी ।^{१६} अह महँ जानहि भगम भगाधी ॥२०७॥

१ (ग) भगम = बसते । (घ) भपारा = म्यारा ।

२ (क) कियो = किया ।

३ (क), (ख) (ग), (घ) एकसंग = एकसम ।

४ (क) निर्माण = निरमाप्तो । (ख), (ग) निर्माण = निरमारथो । (घ) निर्माण = निरमाप्तो ।

५ (क) कुर्म = कुरम (घ) कुर्म = कुरम । (ख) (ख) ते = ते ।

६ (क) ताते = ताते । (ख) (ख) होर = बौर । (ग) होर = पर । (घ) टएऊ = ठेऊ ।

७ (क), (ख), (घ) विषये = विषया । (ग) विषये = विधि ।

८ (क) (ख) जाल = जालिम ।

९ (क) में = मे ।

१० (क) गाइत्री = पारत्री । (ख), (घ) ब्रहे = ब्रह्म ।

११ (क), (ख), (ग), (घ) ताको = ताके । (घ) (ग) मुक्ति = मुक्ति ।

१२ (क), (ख), (घ) ब्रजनहि = ब्रजमें ।

१३ (क) जामे = जामे ।

१४ (ख), (घ) भापन = भापनी । (क) (ख), (ग), (घ) बारी = बारी ।

१५ (क), (घ) उपायी = उपायी ।

१६ (घ) अह = अह । (ख) जानहि = जाने ।

काम क्रोध निसदिन चित रासै । मवग्रह साह ठगीये भासै ॥२३०॥^१
करम भनेक करावहि जानी । ग्रह न चीन्हे सो भ्रम्यानी ॥२३१॥^२

साखी

ग्रहन सो जो ग्रहहि चीन्हे,^३ करे मक्ति लवनीन ।^४
कहै दरिया सोह बाधिहैं^५ पबित परम अमीन ॥२३॥^६

बीपाई

सरव मासु छाठ भ्रम्यानी । करहीं बीम अमार बसानी ॥२३२॥^७
घाठ में नावहि सो वगभ्यानी ।^८ रहै बिसै रस लीन सो प्रानी ॥२३३॥^९
साहि निसै रस कर्हि बसानी ।^१ अंतहु घुड़ि मरे विनु पानी ॥२३४॥^{११}
क्या नाही दिन करहि बियेसा ।^{१२} म्यान निसेव नहीं चित पेसा ॥२३५॥^{१३}
मव गुन कांभ तिलक धनुमाना । पड़ि पोषी सम करहि गुमाना ॥२३६॥
एहि विधि मनाहि बोलाहि बहु वानी ।^{१४} संत द्रोह निस दिन विल भानी ॥२३७॥

साखी

संत द्रोह नहि करिए पबित,^{१५} देसहु सन्द अमोल ।^{१६}
कहै दरिया बुर्मति तेजो,^{१७} साहव अजर अमोल ॥२४॥

- १ (क) नव = नी । (ख) (ग) (घ) सप्त = सेह ।
- २ (घ) बीगरे = बीगरेह ।
- ३ (क) ची = चीह ।
- ४ (क) (घ) कर = करै । (ख) (ग) (घ) लव = लो ।
- ५ (क) (ख) (ग) (घ) बाधि = बाधि । 'क' बाधिहैं = बाधिहैं । बाधिहैं = बाधिहैं ।
- ६ (क) (ख) पबित परम अमीन = पबित परम अमीन ।
- ७ (क) (ख) (ग) (घ) अमार = अमार ।
- ८ (क) (ग) बग = बग ।
- ९ (ग) रहै = रहे । (ख) लीन = लीनह ।
- १० (ख) (ग) कानि = कानि ।
- ११ (क) मरे = मरै । (घ) मरे = मरे ।
- १२ (क) करहि = करै ।
- १३ (क) (ख) (ग) (घ) नहि = नाहि ।
- १४ (क) (ख), (ग), (घ) मनाहि = मनाहि ।
- १५ (घ) (ग) (घ) नहि = नाहि ।
- १६ (ख), (ग) देसहु = देसो ।
- १७ () (घ) (ग) बुर्मति = बुर्मति ।

एके जोइनि सने जनमाया ।^१ तुम ना कही क्वम दे मत्या ॥२१७॥^६
 नौ हिङ्ग को सुदक क्हाई । एके ब्रम्ह मोसन्नम भाई ॥२१८॥^७
 मटी एक बरतन बहुरेरा ।^४ भनसल ब्रम्ह तेहि भीतर डेरा ॥२१९॥
 हिङ्ग तुस्क दुई भरमाई ।^५ एके कर्ता कइसे ठहराई ॥२२०॥^६
 एके कर्ता सिन्धि पसाग ।^७ एके जोति करे उजियाग ॥२२१॥^८
 पांष तसु एके परगासा ।^९ छव दरसन सहं सेहि मेवासा ॥२२२॥
 ब्राम्हन वेद भने परपंची । मूठी बात कहे सम कंची ॥२२३॥^{१०}
 होम जग्य सम प्राकृति करावहि ।^{११} यकरा खसी जीव मगावहि ॥२२४॥
 धपने खाहि केरि भवरि सिधावहि ।^{१२} सासतर पोपी गीठा मुनावहि ॥२२५॥^{१३}
 हंडी हाइ छट करम भवारा ।^{१४} विख्या से क्वहों महि न्याग ॥२२६॥^{१४}
 संभ्र गाइत्री ध्यान सगावहि ।^{१५} सुरती म प्रिसुना पर धावहि ॥२२७॥^{१५}
 भंषल भोर बसुर पासंडा ।^{१६} कास लिए सिर ऊपर डंडा ॥२२८॥
 कहे दरिया सत सम न भीन्हे ।^{१७} काम क्रीष ममिता रस भीन्हे ॥२२९॥^{१६}

१ (क), (घ) एके = एकै । (क) जनमाया = जन ज्ञाना ।

२ (ग) द्रुम = द्रुम्ह । (क) ना = नै ।

३ (क), (ग) एके ब्रम्ह = एक तो ब्रम्ह ।

४ (क) मटी एक = माटी एक ।

५ (क) दुई भरमाई = दुइ सम भरमाया ।

६ (क) ठहराई = ठहराया ।

७ (ग) सिन्धि = सब सिन्धि ।

८ (घ), (ब) एके = एकै । (क) (घ) (ब) करे = करी ।

९ (क) (घ) एक = एकै ।

१० (क), (घ) कहे = कई । (ग) मम = मम ।

११ (घ) प्राकृति = प्राकृति ।

१२ (ग) केरि = करि ।

१३ (क) (क), (घ) सासतर = सत्र ।

१४ (क) (घ) (ग) (घ) हंडी = हंडी ।

१५ (क) से = से ।

१६ (क) गाइत्री = गाइत्री । (क) (घ) मगावहि = मगावै ।

१७ (क); (घ) से = से । (क) (घ) धावहि = धावै ।

१८ (घ) पासंडा = पैसंडा ।

१९ (क) (घ) (ग), (ब) भीन्हे = भीन्दै ।

२० (क); (घ) (ग), (घ) भीन्हे = भीन्दै ।

साहव भगम जो दीन्ह देखाई ।^१ भगम रूप दरखन हम पाई ॥२४९॥
 मजर जोति सेत सम छाया ।^२ परिमल वास सोषा सम घन्या ॥२५०॥^३
 देखि भर्षे जंह सेत निघाना ।^४ अहुं भोर चमकि षटा घहरना ॥२५१॥
 निम्नै जिदा भगम भसि भाए ।^५ भगम तीसा केहु भेद ना पाए ॥२५२॥^६

दोहा

चरन घरो बहु भांति से,^७ निर्दोषल निर्मे म्यान ।^८
 प्रेम प्रीति के कारने, भाए पुर्न भमान ॥१३॥^९

श्रीपाई

दयानिधी भस घोसे बिचारी ।^{१०} तुम्ह कारन इहवां पगु डारी ॥२५३॥^{११}
 तुम्ह कारन हम जग में भाए ।^{१२} प्रगट रूप हम तुमहि देखाए ॥२५४॥^{१३}
 मजर सोक उक्त छोडि भाए । दीप दीप जहां पृहुप बिछाए ॥२५५॥
 तुह सुकित हहु भंस हमारा ।^{१४} तुम्ह कारन इहवां पगु डारा ॥२५६॥^{१५}
 दयानिधी भस घोसे बानी ।^{१६} सुनी बचन गदगद विल भानी ॥२५७॥
 सगी सुरति ज्यों पद अकोरा ।^{१७} सागी बिष्टि प्रेम रस भोरा ॥२५८॥

१ (ख) साहव = साहब ।

२ (ग) सम = मम ।

३ (ग) सम = मम ।

४ (घ) निम्नै = निम्नै ।

५ (क), (ग), (घ) ना = न ।

६ (क) से = से ।

७ (क) निर्दोषल = निरदोषल । (क) निर्मे = निर्मे ।

८ (क) (क) (ग) (घ) भाए = भाए ।

९ (ग), (घ) घोसे = बोसे । (ख), (ग) बिचारी = बिचारा ।

१० (ग) (ग) तुम्ह = तुम । (घ) (घ) डारी = डार ।

११ (ग), (ग) तुम्ह = तुम ।

१२ (क) (घ) तुमहि = तुम्हदि । (ख) देनाए = देनाए ।

१३ (क) तुह = तुम्ह । (ग) तुह = तुम ।

१४ (घ) (ग) तुम्ह = तुम । (घ) तुम्ह = तुम्ह ।

१५ (क) घेन = बलदि । (घ) बोसे = बोसे ।

१६ (क) (घ), (ग) सागी = सागी । (घ) पयो = जेरो । (ग) पयो = जेव । (घ) प्यो = बोधे ।

चीपाई

भजर लोक से साहब भाए ।^१ भगम सीता केहु भेद ना पाए ॥२३८॥^१
 भापुहि उचित धरा है काना । भापुहि पुत्र धरति सन बेला ॥२३९॥
 भापु परगट जग में भक्ति भाए ।^२ सकलो दोषिया हूनि बोहाए ॥२४०॥
 जिनद रूप बोए पुत्र पुराना ।^३ भजर सीता बोए धर निसाना ॥२४१॥^४
 सस बचन निस्वै निर्बाना ।^५ स्त्रीमुख बचन तिया निजु म्याना ॥२४२॥^६
 सस कथा धूमै कोइ म्यानी ।^७ साहब कथा सस सहिदानी ॥२४३॥
 भगम सीता बोए भेद निनारा । साहब भाए इहा पगु बारा ॥२४४॥^८
 सहर धरकथा ध परवाना । तहवा साहब भाए गुलाना ॥२४५॥^९

दोहा

सहर धरकथा ध कीहो, भाव भजन निर्बान ।^{१०}
 सस पुत्र भक्ति भाएबो ^{११}सीता भगम निमान ॥२४६॥

चीपाई

व्यापत दया बहु कीन्हा ।^{१२} दया करी तब दरसन दीन्हा ॥२४६॥
 देखि दरसन त्रिव बहुत भनदा ।^{१३} त्रिगसित कमन मेटा दुन दंदा ॥२४७॥^{१४}
 माया भाए धरज जो कीन्हा ।^{१५} सीतल भंग प्रम रस भीन्हा ॥२४८॥^{१६}

- १ (क) से = ते ।
- २ (क), (ख), (ग), (घ) ना = न ।
- ३ (क) (ख) (ग) (घ) भापु = भापुही ।
- ४ (क) (ख) (ग) (घ) त्रिब = त्रिधा ।
- ५ (क), (ख) (ग) (घ) धर्य = धरय ।
- ६ (ख) निस्वै = निस्वै । (क) (ख), (घ) निर्बान = निरवाना ।
- ७ (घ) स्त्री = स्त्री ।
- ८ (क) धारा = धर ।
- ९ (ख) (क) इहा = इहवा ।
- १० (क) ताहा ।
- ११ (क), (ख), (ग) निर्बान = निरवान ।
- १२ (क) धारबो = धारय । (घ) धारबो = धर ।
- १३ (क), (ख) (ग) (घ) दया धन = दयाधन । (ख) (ग) बहु = बन्धि ।
- १४ (ग) दरसन = दरस ।
- १५ (क) धमन = धरन ।
- १६ (क) माया = माय । (घ) माया = मया ।
- १७ (ग) भीन्हा = भीना ।

करहि सनाम भरज सब लार्ह ।^१ छपसोक कै कया सुनाई ॥२६८॥^२
 छपसोक कै कवन सुभाऊ ।^३ कवन बेलास छहर कै ठाऊ ॥२६९॥^४
 सहर अमर अंह सभे बेलासा ।^५ पुहुप बेवान है अमर सुवासा ॥२७०॥^६
 ममिठ अरि अहुं ओर ते प्रावै ।^७ चासै प्रान बहुत सुख पावै ॥२७१॥^८
 दयारीप अंह पसंग सुवासा ।^९ बेटे जिव सभ करहि बेसासा ॥२७२॥^{१०}

बोहा

सोंधा अमर परिमल की अरिछै, सुनहु संत सुवान ।^१
 जुग जुग अमर होए रहा, प्रेम प्रीति निर्वाण ॥१७॥^२

चौपाई

दयानिधी अंह बोले विचारी ।^१ भरज कीन्ह सब सुरति संमारी ॥२७३॥
 कया अजर देसा निर्वाणा ।^२ निगुन कवन रंग सहिवाना ॥२७४॥^३
 कवन सख्य अमरपुर गाऊं ।^४ कवन रंग रहे तेहि ठाऊं ॥२७५॥^५
 करता अजर अमर तुह मूला ।^६ प्रान पिढ रही समतूसा ॥२७६॥
 अडोल न डोलहि जुग जुग रहहीं ।^७ जिदा रूप भेव पह कहहीं ॥२७७॥^८
 तव साहब अस बोले बना ।^९ सुनत सबन सीतल भी मीना ॥२७८॥^{१०}

१ (ग), (घ) सब सार्ह = सी सार्ह ।

२ (क) (ग) है = हे ।

३ (क), (ख), (ग) है = हे ।

४ (क), (घ), (ग) है = हे ।

५ (क) (घ) सभे = सभै । (ग) सभे = सभे ।

६ (क) बेवान = बैवान ।

७ (क) ते = ते । (ग), (घ) ते = ते । (ख) अहुं ओर से = अहुंरसे ।

८ (क), (घ) प्रान = ईस ।

९ (क) जीव = ईस ।

१० (क), (घ) सुनहुं = सुनी ।

११ (क) प्रीति = प्रीत ।

१२ (क), (घ) बोले - बोले ।

१३ (क) रंग = मंग ।

१४ (क) कवन = कवन । (क) (ग) (घ) रहे = रहे ।

१५ (घ) न = ना । (घ) (ग), (घ) रहहीं = रहुंहीं ।

१६ (घ), (ग) (घ) कहहीं = कहुंहीं ।

१७ (घ) साहब = साहब । (घ) बोले = बोले । (घ) बोले = बोलेही ।

१८ (ग) भी = मव ।

हीं सेवक निजु दास तुम्हारा ।^१ रात्रो हुकुम दिस परो करारा ॥२५६॥^२

दोहा

रासो बचन कर जोरिह,^३ सुना सवन पित लाए ।

दयानिधि तुब दर्शन में,^४ दुर्मति सम दुगि जाए ॥२६॥^५

चौपाइ

दयानिधी अस कहा बुझाई ।^६ करहु भक्ति निजु प्रेम सगारै ॥२६०॥^७

भसल भकूफ सुनो निर्बाना ।^८ नित के कंठी भसल इमाना ॥२६१॥^९

भसल भकूफ करहु तुम्ह दासा ।^{१०} देखत जम बह उपजी प्रासा ॥२६२॥^{११}

मूल भकहू है ऐनक सारा ।^{१२} बहुघोर दीसे रंग करारा ॥२६३॥^{१३}

भरज करहि चरल सिर नाई । भरजर लोक सम बहि समुझाई ॥२६४॥

छापा समहि गहो चितलाई ।^{१४} तन छूटे छपनोक समाई ॥२६५॥^{१५}

सहज जोग निजु सभ है सारा ।^{१६} छापा सनदि मोहर टकसाग ॥२६६॥

जाके छापा मूल निसाना ।^{१७} सो जीव जाए छपनोक समाना ॥२६७॥^{१८}

१ (अ) हो = हो । (ग) हो सेवक तुम हुए तुमारा । (घ) तुम्हारा = तुमारा । (प) तुम्हारा = तोहारा ।

२ हुकुम = हुक्म (क) बरो = बरो ।

३ (क) (ख) जोरिह = जोरिहै ।

४ (क) (ख), (घ) तुष = तुष । (ग) तुष = तुष । (ङ) मे = मै ।

५ (ग) मम = मम ।

६ (क) (ख) (घ) तुम्ह = तुम्हारा ।

७ (ख) (घ) भक्ति = भक्ति ।

८ (क), (ख) निर्बाना = निरवना ।

९ (क) के = की ।

१० (क) (ख) तुम्ह = तुम । (ङ), (घ) तुम्ह = तुम्ह ।

११ (क) बह = बे । (ख), (घ) (प) बह = बे । (ङ) उपजी = उपजिहै । (ग), (घ) उपजी = उपजिहै ।

१२ (क) सारा = सारा ।

१३ (क) दिसे = दिरिहै । (घ) दिसे = दिरिहै ।

१४ (ख) गहो = गहो ।

१५ (क), (ख) (ग) छूटे = छूटे ।

१६ (ग) निजु = निजु ।

१७ (क) निसाना = निशाना ।

१८ (ख) समाना = समाना ।

धरग नरक क भास ना बरेऊ ।^१ जुग जुग दास साहब चित गहेऊ ॥२८८॥^१
 तब साहब भस बोसे बानी ।^२ तुह सुकित छु निमस ग्यानी ॥२८९॥^२
 लोहरे मजीक भम नहिं भाई ।^३ से उहो छपलोक समाई ॥२९०॥^३
 तुम्ह बह का डर एह संसारा ।^४ भसल बचन यह भजर हमारा ॥२९१॥
 दरिया सुनहु बचन हमारा । लोहरे छाप पलहिं संसारा ॥२९२॥^४

साखी

तुम्ह बह दीन्हो छपा मोहर^५, ससनाम टकसार ।^६
 लोहरि बाहि ओ जिव भावहीं, सेह उठारों पार ॥१९॥^६

चौपाई

लोहरी बाहि ओ जिव भावहीं ।^७ सल शम्भ परपाता पावहीं ॥२९३॥^७
 करे ततु प्रेम भव साई ।^८ तन छुटे छपलोक समाई ॥२९४॥^८
 धन भाग एह जीवन हमारा । साहब बोसे बचन कटारा ॥२९५॥^९
 बिल में भरब कीन्ह एक बानी । अंतरजामी अंतरगति बानी ॥२९६॥^९

१ (क), (ख) (ग) डै = के । (घ), (ङ) ना = न ।

२ (ख) साहब = साहेब ।

३ (ख) साहब = साहेब । (घ) भस = भसल । (ङ), (च) बोसे = बोसे ।

४ (ख), (ग) तुह = तुम । (घ) निमस = निरमस ।

५. (ख) लोहरे = तुम्हारे । (ग) लोहरे = तुम्हारे । (ङ), (ग), मजीक = मजीब । (ख) भम = भमई । (ग) बाहि = न ।

६ (क) से = सी । (ख) से = सेह ।

७ (ग) तुम्ह = तुम । (क) (ख), (ग) बह = के । (घ) बह = डै । (क) (ख) (घ) (ङ) एह = एहि । (ङ), (घ) संसारा = संसारा ।

८ (क) चलाई = चलाई । (ख), (घ) (ङ) चलाई = चलाई । (ख), (घ), (ङ) संसारा = संसारा ।

९ (घ) तुम्ह = तुम । (ख) (ग) छपा = छपा ।

१० परसोहर (क) प्रति में 'टकसार' के बरते मरकसार है । ।

११ (ख) लैर = ल ।

१२. (क) (घ) भावहीं = भावे ।

१३ (क) (घ) पावहीं = पावे ।

१४ (क) (घ) कर = करे । (ख) (ग) (घ) लाई = लाये ।

१५ (क), (ग) (ग) लूटे = लूटे । (क), (ख) (घ), (ङ) ललाई = समारै ।

१६ (घ) (घ) बोसे = बोसे ।

१७ (ख) बानी = बानी ।

एक निगुन वोनता है भारी। ग्यानी जन बुझा भरमाई ॥२७१॥^१
 दोसर निगुन पवन कहाई।^२ वहे भगम कोइ मत ना पाव ॥२८०॥^३
 तीसर निगुन है निरकारा।^४ जाके भजे सकस संवसारा ॥२८१॥^५
 चौथा निगुन प्रथम है भारी।^६ जहवां भजरा जोति बर्याई ॥२८२॥^७
 सेत सिगासन सेत सम ठाऊं।^८ सेते दीप प्रमत्पुर गार्क ॥२८३॥^९

दोहा

सुनहु सुफिठ बधन एह जुग जुग प्रमर बेसास ।
 सेत सेत सम हाए रूहा^१ उदित क्वा परगास ॥२८४॥^२

चौपाइ

धन साहब बोसे सतवानो।^३ निगुन सगुन की सहिदानी ॥२८५॥^४
 उदित क्वा प्रमर के रगा।^५ सुरनि साब मजरि मरि देखा ॥२८६॥^६
 सुह साहब हम नाम सोहाय।^७ दरसन दति मो बन्ह उनिभाय ॥२८६॥^८
 दुरमति दिन के दुगि सम गएऊ।^९ अरन बंसल बवहीं चित टएऊ ॥२८७॥^{१०}

- १ (ग) बुझे = बुझु । (घ) बुझे = बुझै ।
- २ (क) दोसर = दोसरी । (घ) दोसर = दूसर ।
- ३ (क) बड़े = बड़े । (क) भंज = बाह । (क), (घ), (ग) ना = न ।
- ४ (क) तीसर = तिसरी ।
- ५ (क) भजे = भजे । (क) संवसारा = संसार ।
- ६ (ग) चौथा = चारवा ।
- ७ स्वीकृत 'क' प्रति में 'कनइ' पाठ ।
- ८ (क) (ग) सिपसन = सिपसन ।
- ९ (क), (ग) डेरे = डेरे । (घ) सेते = सेते ।
- १० (क) होद = हो ।
- ११ (घ) प्रमत्त = प्रमत्त ।
- १२ (घ) बरव = बरव । (घ) (घ) बोने = बोसे ।
- १३ (ग) निगुन = निगुन । (ग) सगुन = सगुन ।
- १४ (घ) क्वा = क्वा ।
- १५ (क) सुरनि = सुरनि ।
- १६ (घ) (घ) दुँद = दुँद । (घ) बरव = बरव । (क) दोहाय = दोहाय । (घ) चौहाय = चौहाय ।
- १७ (क), (घ) मो = मो ।
- १८ (क) (घ) डे = डे ।
- १९ (घ) बंसल = बंसल । (घ) (घ) डूक = डूक ।

तरल नरक के भास ना बरेऊ।^१ पुन पुग दास साहब चित गहूऊ ॥२८८॥^२
 तब साहब भक्त बोले बानी।^३ तुह मुक्ति हउ निमत ग्यानी ॥२८९॥^४
 तोहरे नबीक उन नहि जाई।^५ त ठहो छत्रोक समारि ॥२९०॥^६
 तुन्ह कह का डर एह सकार।^७ भक्त बचन यह भवर हमार ॥२९१॥
 दरिया सुन्दु बचन हमार। तोहर धान बनिहि सकार ॥२९२॥^८

सारी

तुन्ह कह दीन्हा धाना मोहर^९ सतनाम टकरार।^{१०}
 तोहरि बाहि जा जिब भावही सेइ वतारो पाग ॥२९३॥^{११}

पौनाह

तोहरि बाहि जो जिब भावही।^{१२} तब रज्ज नखाना पावही ॥२९३॥^{१३}
 कर ठसु प्रेम सब साइ।^{१४} तन छुटे छत्रोक समारि ॥२९४॥^{१५}
 इन नाग एह जीवन हमार। जारुब बोले बचन करार ॥२९५॥^{१६}
 दिस में भरज कीन्ह एक बानी। अंतरवामी अंतरगति जानी ॥२९६॥^{१७}

१ (क), (ख) (ग) के = के। (घ) (ग) थ = थ।

२. (क) साहब = साहेब।

३ (क) साहब = साहेब। (ग) भक्त = भक्त। (ख), (घ) बोले = बोले।

४ (क), (ग) टुह = तुम। (ग) निमत = निमत।

५ (क) तोहरे = तुम्हारे। (ग) ठहो = ठहारे। (ख) (ग), नबीक = नबीक। (क) बचन = बचन। (ग) नहि = न।

६ (क) ते = ते। (ख) ते = ते।

७ (ग) तुन्ह = तुम। (क), (ख), (ग) कह = के। (घ) कह = के। (क) (ख) (ग) का डर = डर। (ख), (घ) सकार = सकार।

८ (क) बनिहि = बनिहि। (ख) (ग) (क) बनिहि = बनिहि। (ख) (क), (घ) सकार = सकार।

९. (ग) मोहर = महर। (ख) (ग) धाना = धान।

१० अंतरवामी (क) पत्र में 'टकरार' क ब-ते 'मरकमार' है।

११ (क) पाग = पै।

१२ (क) (घ) भावही = भावे।

१३ (क) (घ) नखाना = नखे।

१४ (क), (घ) तब = तब। (ख) (ग) तब = तब।

१५ (क), (ख) (ग) छुटे = छुटे। (क), (ख) (ग) (घ) समारि = समारि।

१६ (क) (क) करार = करार।

१७ (क) जानी = जानी।

धरज कीन्ह चल सिरनाई । साहब सुनयो द्रिस्टि सगाई ॥२६७॥^१
 कवनी जुगुति जम जिब तरई ।^२ कवने नाम कान एहु हरई ॥२६८॥^३
 तब साहब भस बोले वानी ।^४ सत्तनाम छापा सहिदानी ॥२६९॥^५
 सत सुक्रिठ से प्रेम बढाव ।^६ करे सुरति प्रेम सोद पावै ॥३००॥^७
 प्रिही माह जुक्ति से रहना ।^८ निसरनि नाम प्रेम से गहना ॥३०१॥^९
 बेबाहा के देह दीहार्ई ।^{१०} सुनत काल तब दूरि पराई ॥३०२॥
 नित्बे गहे डगमग नहिं होई ।^{११} एक भरत सतनाम है सोई ॥३०३॥
 धरज कीन्ह जो तंतु सगाई ।^{१२} धन साहब सामय सहाई ॥३०४॥^{१३}

बोहा

धन साहब सामर्य है,^{१४} जिना धरज धमान ।
 दयालत शायनिधी प्रेम प्रीति निरखान ॥२०॥

चौपाई

धन साहब सुम्ह भगम भपारा ।^{१५} सम विधि करता सिर्जनिहार ॥३०५॥^{१६}
 तुव गति सीसा सखि नहिं भावै ।^{१७} वडा भाग दर्शन जो पावै ॥३०६॥^{१८}

- १ (ख) साहब = साहेब । (क) सुनेयो = सुनी । (ख), (ग) (घ) सुनेयो = सुना ।
२. (ग) कवने = कौनी । (घ) कवने = कवम । (क), (घ) जुगुति = जुगुति । (क), (ख), (घ) कन्म = जग । (ग) कन्म = जगत ।
- ३ (क) कवने = कवनी । (घ) कवने = कवम ।
- ४ (ख) साहब = साहेब । (ग) भस = भसल । (ख) (घ) बोले = बोले ।
५. (ख), (घ) (घ) छापा = छापा ।
- ६ (क) से = से ।
- ७ (क) (घ) करे = करे ।
- ८ (क) से = से ।
- ९ (क) नाम प्रेम = प्रेम नाम । (क) से = से ।
- १० (घ) के = के ।
- ११ (क) (घ) गहे = गहे । (क) गहि = गहि ।
१२. (घ) तंतु = तंतु ।
- १३ (ख) साहब = साहेब । (क), (घ), (ग) सामर्य = सामर्य ।
- १४ (क) (घ) है = है ।
१५. (ख) साहब = साहेब । (क) (घ) सुम्ह = सुम । (ग) (घ) सुम्ह = सुम ।
- १६ (घ) धन = धन । (क) सिर्जनि = सिरजनि ।
- १७ (क) (ख) (घ), (घ) सुख = सुख ।
- १८ (क), (ख) (घ), (घ) दन = दन ।

ब्रह्मा विस्त महेश्वर देवा । जुग जुग सोजो न पाइन्हि मेवा ॥३०७॥^१
 सांघ भक्ति निम्नु जन सै राजी ।^२ प्रेम सुरति निस्वै सिर छाजी ॥३०८॥^३
 जहां सांघ तहां साह्य वासा ।^४ सांघ सुरति निम्नु खेहि नेवासा ॥३०९॥^५
 दयानिधी प्रस घोसे विचारा ।^६ दरिया दास तुह प्रंस हमारा ॥३१०॥^७
 हंसि के साह्य घोसे बानी ।^८ का मांगहु देठ सम जानी ॥३११॥
 हाषी बोझा सम समाजा ।^९ फरो छल करौ सम काजा ॥३१२॥^{१०}
 सांघ वचन बोलहु निम्नु बना । जसै तुम्ह पावहु सुख मैना ॥३१३॥^{११}

दोहा

दयानिधी सुनि सीजिए, सांघ कहौ सिर नाए ।^{१२}

मैं हाषी नहि मांगिहौं^{१३}, जुग जुग वास सहाए ॥२१॥

श्लोकार्ध

माया मन लौ समे मचाव ।^{१४} सीस पटक के जिव बंधवाव ॥३१४॥^{१५}

प्रसन्न मरे सम भूपति राजा ।^{१६} भक्ति भाव नहि एको काजा ॥३१५॥

मए म्याम नहि भावै हाया ।^{१७} सीस पटक जस जम साया ॥३१६॥^{१८}

१ (क) जुग जुग जोजिन्ह पाइ नै मेवा । (ख) जुग जुग जोजि ना पाइन्ह मेवा ।
 (ग) (घ) जुग जुग जोजिन्ह न पाइन्ह मेवा ।

२. (क) सांघ = साधु । (ख) निष्ठ = निष्ठ । (ग) (घ) सै = से ।

३ स्वीकृत । (क) प्रति में 'सुरति' पाठ है । जहाँ (क) (ख), (ग), (घ) प्रतिमें अ पाठ 'सुरति'
 स्वीकृत ।

४ (ख), साह्य = साह्य ।

५. (क) निष्ठ = निष्ठ ।

६ (ख) बोझ = बोझ । (क) विचारा = विचारी ।

७ (ख) (घ) तुह = तुम । (ग) हमारा = हमारी ।

८ (ख) साह्य = साह्य । (ख), (घ) घोसे = बोझ ।

९ (क) (ख) बोझा = बोझ ।

१० (क) फरो = फेरो । (क) करौ = करौ ।

११ (ग) तुम्ह = तुम ।

१२ (क) कहौ = कहौ ।

१३ (क) नहि मांगिहौं = मांगी नहीं ।

१४ (ख) माया मन = मन माया । (ग) लौ = लय । (क) (ख) (ग), (घ) समे = समी ।

१५. (ख), (घ) बंधवावै = बंधवावै ।

१६ (ख) मरे = मरै । (ग) सम = मय ।

१७ (क) नहि = न ।

१८ (क), (घ) जसै = जसै ।

परज कीन्ह करन सिगनाई । साहब मुनयो द्विष्टि सगाई ॥२६७॥^१
 खनी जुगुति धम्म जिव तरई ।^२ करने नाम काज एहु इरई ॥२६८॥^३
 जब साहब प्रस बोने यानी ।^४ सतनाम छाना सहिगानी ॥२६९॥^५
 उठ सुकित से प्रेम बडाव ।^६ करे सुरनि प्रेम साह पावै ॥२७०॥^७
 प्रेही माह बुक्ति से रूना ।^८ निसनि नाम प्रेम मै गहना ॥२७१॥^९
 बिवाहा के देइ दीहाई ।^{१०} मुनउ काज तब हरि पराई ॥२७२॥
 निर्व गहे इगमग नहि होई ।^{११} एक बरत सननाम है सोई ॥२७३॥
 परज कीह जो तंतु मगाई ।^{१२} धन साहब सामय सहाई ॥२७४॥^{१३}

दाहा

धन साहब सामय है,^{१४} जिना भजर प्रमान ।
 दयावंत दायानिधी प्रम प्रीति निग्मान ॥२७॥

गीतार्द्र

धन साहब सुम्ह भगम भपारा ।^{१५} सम बिधि कृता सिर्जनिहार ॥२७५॥^{१६}
 तुव गति सीता सनि नहि प्राव ।^{१७} बडा भाग रसन जो पाव ॥२७६॥^{१८}

- १ (क) साहब = सादेव । (क) मुनेयो = मुनो । (ख), (ग) (घ) मुनयो = मुना ।
२. (ग) करने = करनी । (घ) करने = करन । (ङ), (ग) जुगुति = जुगति । (क) (ख), (घ) धम्म = धम । (ग) धम्म = धमन ।
- ३ (क) करने = करनी । (ग) करने = करन ।
- ४ (क) साहब = सादेव । (ग) सत = सतन । (घ) (घ) बोने = बोनी ।
५. (क), (ग) (घ) छाना = छाना ।
- ६ (क) दे = दे ।
- ७ (क) (घ) करे = करे ।
- ८ (क) दे = दे ।
९. (क) नाम प्रेम = प्रेम नाम । (क) दे = दे ।
१०. (घ) दे = दे ।
- ११ (क) (ख) परे = परे । (क) हरि = हरि ।
१२. (घ) तंतु = तंतु ।
- १३ (क) साहब = सादेव । (क), (घ) (घ) सामय = सामय ।
- १४ (क) (घ) है = है ।
१५. (क) करन = सादेव । (क) (घ) सुम्ह = सुम । (घ) (घ) सुम्ह = सुर ।
- १६ (ग) मन = मन । (क) निरनि = निरनि ।
- १७ (क) (ख), (घ), (घ) तुव = तुव ।
- १८ (क), (ख) (घ), (घ) दवन = दवन ।

ना मांगों ना जाचों जाई ।^१ जो भोजहु सो तुमहि बडाई ॥३२३॥^२
 जो दफा संग जमा कीजै ।^३ मन कपरा इन्हु सम बंधु दीजै ॥३२४॥^४
 जाति पाति कुस नाहि बडाई ।^५ भवन करो बिच जग भुक्ताई ॥३२७॥^६
 साहब सुख विन बहूष बखानी ।^७ तुह सुकित हट्ट सत सहिदानी ॥३२८॥^८
 सहिजाता तुम्ह मनसफातरा ।^९ करहु बछाही दीन करारा ॥३२९॥^{१०}
 भसल बछाही दीन कै दीन्हा । सत बचन निस्वै लिखि सीन्हा ॥३३०॥

दीहा

सतरहु सहिजवा दीप मह^{११}, समै तवीन तोहार ।^{१२}

छापा एहि बसाइहो^{१३}, बोसे बचन करार ॥३३१॥^{१४}

बीपाई

मन कपरा हम वेहि भेजाई ।^{१५} जो दाफा सामिल होए जाई ॥३३१॥^{१६}
 जो बिच लागे तुम्ह के जाती ।^{१७} ताम्रि मेटो मरक की खानी ॥३३२॥^{१८}
 ताहि सेइ छससोक बसावो । पुहुप पसग पर तेहि बससावो ॥३३३॥^{१९}
 सुख सागर दमा दीप तोहारा । बेटे हंस सुख रंग करारा ॥३३४॥

१ (घ) ना = नादि । (ख) ना = न । (ग) ना = नदि ।

२ (क) (ख) भोजहु = भोजे । (ख) तुमहि = तुम्हरी । (घ) तुमहि = तुमरी । (ग) तुमहि = तुम्ह ।

३ (क), (ख) (ग) जमा = जामा ।

४ (घ) सम = सम ।

५ (क), (ग) नाहि = नहि ।

६ (ग), (ख) बिच जग = जग बीच ।

७ (ख) कतिरिक्त पाठ—'साहब बचन' । (ख) साहब = साहेब ।

८ (क) (घ) टट्ट = टुम । (ख) (ग) टट्ट = टुम्ह ।

९ (क) (ख), (ग) टुम्ह = तुम ।

१० (क) बछाही = बल्खाही ।

११ (क) (ख), (ग) (घ) छतरहु = छतरह । स्वीकृत (ख) प्रति में 'दीप दीप मह' पाठ है ।
 यहाँ 'क' प्रति का पाठ 'दीप मह' ।

१२ (क), (ख), (ग) तवीन = तापीन ।

१३ (क) (ख) (ग) (घ) बसावो = बसाव ।

१४ (ख) बोसे = बोझे ।

१५ (क) (ख) (ग) (घ) वेहि = वेव ।

१६ (घ) दाफा = दफा ।

१७ (क) (ख), (ग) जाती = जागी । (क), (घ) टुम्ह = तुम । (क) (ग) के = कर ।

१८ (क) मेटो = मेठी । (क), (घ) मरक = मरक ।

१९ (क), (ख), (घ) (ग) ताहि = तदि । (क) बससावो = बिससावो ।

मन नाना सु नर नुनि नोहे ।^१ सावध बाग्न तिव सन जेहे ॥३१७॥^१
 सु नर नुनि श्री सन सन्नासो ।^२ मन नाया प्रिय ठारे फासी ॥३१८॥^२
 माना न्निदि नोडुनि रत्र भावै । बधि बेरी सने नषावै ॥३१९॥^३
 नाना गंडि रजन बनि रानै ।^४ पारवड मेव ग्याल सन भावै ॥३२०॥^४
 सावध बाग्न बान सन साग ।^५ रडो बान बर्वाह नहि त्यागो ॥३२१॥^५

दोहा

(एसो) गुरू ठगोरौ जगत मह^६, दिधुला दहि सन टाव ॥^६

गुरू सिध सग बुद्धि मरै^७, बहां बने निगु गाव ॥३२२॥^७

बीनाई

पराणिपि हन दास ठोशाय ।^८ बहौं वचन मुनो एक वाय ॥३२२॥^८
 त्यागो बान नाना कर फज्जा ।^९ भद्रव करौं तेसो जमभाता ॥३२३॥^९
 सिद्धा इती म्या सन नाचो ।^{१०} बामिनि बनक न हाय पसायो ॥३२४॥^{१०}

१ (क) मन म्या = मन्मया टे । (ख), (ग) (घ), (ङ) मरे = मरे ।

२ (द) मन = मर । (क), (ख), (घ) मरे = मरे ।

३ (क) (ख), (घ) (ङ) मरे = मरे ।

४ (क) (ख) मरे = मरे ।

५ (क) (ख) मरे = मरे । (ङ) मरे = मरे । (ग) (घ), (ङ) मन = मने ।

६ (क) (ग) (घ) मरे = मरे ।

७ (ग) मन = मर ।

८ (ग) मन = मर ।

९ (क) (ख) (ग) (घ) मरे = मरे ।

१० (क) मरे = मरे । (ख), (ग) ठगोरौ = ठगोरौ । (घ) मर = मरे । (ख), (घ), (ङ) मर = मरे ।

११ (क) सिद्धा = सिद्ध । (घ) बहि = बहि ।

१२ (क) मरे = मरे । (ग) (घ) मरे = मरे ।

१३ (क) (ख) मरे = मरे ।

१४ (घ) घोरय = घोरय ।

१५ (क) बहो = बहो ।

१६ (क) त्यागो = त्यागो ।

१७ (क) बहो = बहो । (ङ) तेसो = तेसो ।

१८ (क) मारो = मारो ।

१९ (क) म = म ।

ना मागों ना जाचों जाई ।^१ जो मेमहु सो तुमहि धडाई ॥३२३॥^१
 जो दफा संग जमा कीजे ।^२ मन कपरा इन्ह सम कहू दीजे ॥३२६॥^२
 जाति पाति कुल नाहि बडाई ।^३ भदम करों जिव जग मुकुटाई ॥३२७॥^३
 साहज सुस दिन बहुत दसानी ।^४ तुह सुकित हहु सत सहिदानी ॥३२८॥^४
 सहिजादा तुम्ह मनसफारा ।^५ करहु बछाही दीन करारा ॥३२९॥^५
 भसम बछाही दीन कै दीन्हा । सत बचन निरुपै सिधि लीन्हा ॥३३०॥

बोहा

सतरहु सहिजादा वीप मह^{११}, समै तवीन तोहार ।^{११}

घापा एहि पलाइहो^{१२}, बोसे बचन करार ॥३३१॥^{१२}

बीपाई

भन कपरा हम देहि मेजाई ।^{१३} जो दाफा सामिल होए जाई ॥३३१॥^{१३}
 जो जिव सागे तुम्ह के जानी ।^{१४} वाकी भेटो नरक की जानी ॥३३२॥^{१४}
 ताहि सेइ छ्यसोक बसावो । पुहुप पलंग पर तेहि बेसबावो ॥३३३॥^{१५}
 सुख सागर दया वीप तोहारा । बैठे हंस सुख रग करारा ॥३३४॥

१ (क) ना = नादि । (ख) ना = न । (ग) ना = नहि ।

२ (क) (ख) मेमहु = मेमो । (ख) तुमहि = तुम्हरी । (ग) तुमहि = तुमरी । (घ) तुमहि = तुम्ह ।

३ (क), (ख) (ग) जमा = जमा ।

४ (घ) सम = सम ।

५ (क), (ग) जाई = जाई ।

६ (ग), (घ) जिव जग = जिव जग ।

७ (ख) अतिरिक्त पाठ—'साहज बचन' । (ख) साहज = साहज ।

८ (क) (ख) तुह = तुम्ह । (ख) (ग) तुह = तुम्ह ।

९ (क) (ख) (ग) तुम्ह = तुम्ह ।

१० (क) बछाही = बछाही ।

११ (क) (ख), (घ), (ग) सतरहु = सतरह । स्वीकृत (क) प्रति में 'वीप वीप मह' पठ है । यहाँ 'क' प्रति का पाठ वीप मह ।

१२ (क), (ख) (ग) तवीन = तवीन ।

१३ (क) (ख) (घ) (ग) घापा = घापा ।

१४ (ख) बोसे = बोसे ।

१५ (क) (ख), (ग) (घ) देहि = देहि ।

१६ (ग) दाफा = दाफा ।

१७ (क) (ख), (घ) सागे = सागी । (क) (घ) तुम्ह = तुम्ह । (क) (ग) के = के ।

१८ (क) भेटो = भेटो । (क), (घ) नरक = नरक ।

१९ (क), (ख), (ग) (घ) ताहि = ताहि । (क) बेसबावो = बेसबावो ।

पुत्रप पनग करीह सुख पैना ।^१ प्रति बेसास मुन अत्रित बना ॥३३१॥^२
 वहाँ न राव न रक की बानी ।^३ एके रूप गति सम बानी ॥३३६॥^४
 चांद सुख नहि करीह निमेरा ।^५ एके रूप उदित चट्टु फेर ॥३३७॥
 पवन संचार वहाँ नहि जाई ।^६ अप्र वास सत सन छाई ॥३३८॥

श्रीक

भइसन सुख सहर में^७, हस करीह सुख राज ।
 भावापवन रहित भयो, मटल समर सम बाज ॥२३॥^८

श्रीगड

दासानियि दाया बहु कीन्दा । जा किछु दिस में सा सन दीन्दा ॥३३९॥^९
 साहित वहाँ वहाँ निनु बना ।^{१०} व कीमति (मगम) दखा निनु बना ॥३४०॥^{११}
 बेकीमति किछु वरनि ना जाइ ।^{१२} म्यानों किय किय मंत ना पाई ॥३४१॥^{१३}
 चारि बेद क्यहि विस्तार । किय किय नाही पाइन्हु पार ॥३४२॥^{१४}
 सेस सहस्र मुग कही खो भाना ।^{१५} ताकर चादि ठह नहि जाना ॥३४३॥^{१६}
 द्वारि द्वारि सन वोनहि बानी ।^{१७} नाही रेख रूप सहिदानी ॥३४४॥
 छिरि पटतर बस वोनहि बानी ।^{१८} टेनी म्य जोति सहिदानी ॥३४५॥

- १ (क), (ग) पुत्रप पनग पर करीह सुखपैना ।
- २ (क) सुख = सुख ।
- ३ (क) (क), (ग), (घ) राव न रक = राव रक ।
- ४ (ग) सम = पर ।
- ५ (क), (ग) एके रूप = एके । (घ) एके रूप = एके ।
- ६ (क) नहि = नहि ।
- ७ (क), (ग) म्यम = देव । (क) में = दे ।
- ८ (क) (क), (ग), (घ) मटल = मगम । (ग) सम = पर ।
- ९ (ग) किछु = कुछ । (क) में = मैं ।
- १० (क) कीमति = मूल्य । (क) वहाँ = वहाँ । (क), (ग) वहाँ = वहाँ ।
- ११ (क), (क), (ग) बेकीमति देखा निनु देखा ।
- १२ (ग) किछु = कुछ । (क), (क) ना = न ।
- १३ (क) (क) (ग), (घ) ना = न ।
- १४ (क) (ग), (ग) बइन्ह = बइन्हि ।
- १५ (क) सेस सहस्र सुख किय खो बानी । (ग) (ग), (घ) सेस सहस्र सुख किय खो बानी ।
- १६ (क) बाना = बानी ।
- १७ (ग) सम = पर ।
- १८ (क), (क), (ग) (घ) छिरि = छेरी ।

बाकर प्रादि अंत सम रचना ।^१ ताके टेभी अस धोर्लहि वचना ॥३४६॥^२

दोहा

धादि पूर्व तरेगन^३, एता जिव विस्तार ।

ताके ख रेखा अहै^४, दिन्दि द्रिस्टि उजिमार ॥२५॥

चौपाई^५

म्यानी सो बोधारा बुझै । प्रादि अंत अगम सम घुमै ॥३४७॥

पारब्रह्म जाके सम भासै । अजर काया महि अग अग रासै ॥३४८॥^६

म्यानी होए सो करे विभाग ।^७ पारब्रह्म है अपरंपाग ॥३४९॥^८

निर्मल काया बोए पुर्स पुराना ।^९ संस समुक्ति के करहु यज्ञाना ॥३५०॥^{१०}

कवने जोग अगुति से पाव ।^{११} कवन ध्यान लै निचिदिन भावै ॥३५१॥^{१२}

कवन मजन मुख टेरि सुनावै । कवन सुरति छपसोक सिधावै ॥३५२॥

कवन बरत करे जिव जानी ।^{१३} जति मेटे नरक नी सानी ॥३५३॥^{१४}

जावे मुक्ति पवारथ पावै । एहि संसार बहुरि नहि भावै ॥३५४॥^{१५}

सुनहु संत में करौ बसाता ।^{१६} समुमदु भेद यह निर्मल म्याना ॥३५५॥

केतनो कस्त जो तन कह्य देखै ।^{१७} मम मत म्याम कतनी गहि लेई ॥३५६॥

१ (ब) सम = सव ।

२ (ग) कवना = कवनाया ।

३ (ब), (ग) (ब) पूर्व = पूर्व । (क) तरेगन = तरैगन ।

४ (क) रेखा = रेख ।

५ (क) स्वीकृत प्रति में 'चौपाई' अलिखित ।

६ (क), (ब) (ब) महि = छै ।

७ (क) (ब), (ब) करे = करै ।

८ (क), (ब), (ग) (ब) है = रहि ।

९ (क) ३५१—३५० चौपाईयों के बीच अतिरिक्त पाठ—हरिया वाच । (ब) (ब) बोए = बह । (ब) बोए = छ ।

१० (क), (ब) के = कै ।

११ (ग) कवने = कवन । (क) छै = छै ।

१२ (ब) (ग), (ब) लै = लै ।

१३ (क) (ब), (ब) करे = करै ।

१४ (क) मेटे = सिटै । (ब) (ब) मेटे = मेटै । (ग) मेटे = मेट ।

१५ (ब) (ग) (ग) संसार = संवसार ।

१६ (ब) सुनहु = सुनो । (क) (ग) में = रह । (क) करौ = करो

१७ (क) (ब) (ग) (ब) केतनी = कतनी । (क) (ब) (ब) कह्य = के ।

पुहुप पलंग करिहँ सुख पैना ।^१ अति बेलास मुस अत्रित वंन ॥३३५॥^२
 तहां न राष न रंक की बानी ।^३ एकै रूप राति सम सानी ॥३३६॥^४
 चांद सुख नहिँ करिहँ निमेरा ।^५ एके रूप उचित अहुँ फेरा ॥३३७॥
 पवन संभार उहाँ नहिँ जाई ।^६ अन्न बास सेत सम छाई ॥३३८॥

दोहा

अइसन सुख सहर में^७ हस करिहँ सुख राज ।
 अत्वागवन रहित मयो अटल अमर सम काज ॥३३९॥^८

श्रीपाई

बायानिधि दायो बहु कीन्हा । जो किछु दिन में सो सम दीन्हा ॥३३९॥^९
 सीफित कहां कहीं निम्न बना ।^{१०} व कीमति (अगम) देखा निम्न नना ॥३४०॥^{११}
 बेकीमति किछु अरति ना जाई ।^{१२} म्यानी कधि कधि अंत ना पाई ॥३४१॥^{१३}
 पारि बेद कर्पाहिँ विस्तारा । कधि कधि नाहीं पाइन्ह पारा ॥३४२॥^{१४}
 सेष सहस्र मुस कही सो आना ।^{१५} ताकर भावि सेहु नहिँ जाना ॥३४३॥^{१६}
 हारि हारि सम बोलहिँ बानी ।^{१७} नाहीं रेख रूप सहिदानी ॥३४४॥
 फिरि पटतर कस बोसहिँ बानी ।^{१८} टेभी रूप जोति सहिदानी ॥३४५॥

१ (क), (प) पुहुप पलंग पर करी मुखपैना ।

२ (क) सुख = सुख ।

३ (क) (ख), (ग), (घ) राष न रंक = राष रंक ।

४ (प) सम = सम ।

५ (क) (ग) अन्न = अन्न । (प) सुख = सुख ।

६ (क) नहिँ = नहि ।

७ (क) (प) अइसन = ऐसन । (क) में = मे ।

८ (क) (ख), (ग), (घ) अटल = अटल । (प) सम = सम ।

९ (ग) किछु = किछु । (क) में = मे ।

१० (क) सीफित = सिफित । (क) कहां = कहाँ । (क), (प) कहीं = कहीं ।

११ (क), (ख), (घ) बेकीमति देखा निम्न पैना ।

१२ (ग) किछु = किछु । (क), (ख) ना = न ।

१३ (क), (ख) (ग), (प) ना = न ।

१४ (क) (ग), (प) पाइन्ह = पाइन्हि ।

१५ (क) सेष सहस्र मुस कधि जो आना । (ख) (प), (प) सेत अरस मुख कधि जो आना ।

१६ (क) जाना = जानी ।

१७ (प) सम = सम ।

१८ (क), (ख), (ग) (प) फिरि = फेरि ।

बिना भक्ति कछु काम न भावै ।^१ नम जम ऐसे बहडावै ॥३६८॥
 जे सिरिआ एह तम मन म्याना ।^२ सिफित करजु निसदिन विरसाना ॥३६९॥^३
 तन के छुटे टवर करि सीअै ।^४ प्रेम भक्ति निस्वै दिल दीअै ॥३७०॥^५
 निर्मस म्यान डुमडु चित साई ।^६ जाते भावागवन भेटाई ॥३७१॥^७
 करहु भक्ति मर्म सम बारी ।^८ करम काम निस्वै सम मारी ॥३७२॥^९
 माया मोह बधु सुत मारी ।^{१०} बाटहु बोरि सम जगत पुकारी ॥३७३॥
 माया बिदेह हाप नहिं भावै ।^{११} सीस फटक के समए नबावै ॥३७४॥^{१२}
 जैसे दरपन भाइ देखावै ।^{१३} विरसा जन कोइ पारख पावै ॥३७५॥
 जैसे चित्र लिखे यहु भांती ।^{१४} देखत हित भागे यहु पांती ॥३७६॥^{१५}
 महे बिदेह हाप नहिं भावै ।^{१६} लालष करिके समे तरसावै ॥३७७॥^{१७}
 भीन्हहु सत मुक्ति चित साई ।^{१८} (बिन्दि) मुक्ति पदारथ भेद बटाई ॥३७८॥^{१९}
 बिन्दि एह जिव के मूल बटाई ।^{२०} तासो प्रेम सुरति नव साई ॥३७९॥^{२१}

दोहा

ताके खोजहु ध्यानी, जो समय के हहि मूल ।
 डार पात सम छोड़िके^{२२}, गहो फेड़ प्रसधूल ॥२७॥

- १ (क) (ख), (ग) कछु = किछु ।
- २ (क) ऐसे = ऐसै । (ख), (ग) ऐसे = अइसे ।
- ३ (क) (ग) जे सिरिआ = जे सिर्वा ।
- ४ (क) (ख) (ग), (घ) विरसाना = बसाना ।
- ५ (क) (ग) तनके छुटे = तन छूटै ।
- ६ (ग) निस्वै = निस्वे ।
- ७ (क), (ग) डुमडु = डुमो ।
- ८ (क) बाण = बाणै ।
- ९ (ग) सम = सव ।
- १० (ग) सम = सव ।
- ११ (क) के = कै । (क), (ख) (ग) समए = समै । (ग) समए = समै ।
- १२ (क) जैसे = जैसै । (ख) (ग) जैसे = जैसे ।
- १३ (क) (ख) (ग) जैसे = जैसै । (ग) जैसे = जै । (क), (ख), (ग) (घ) बिदेह = बिद्वै ।
- १४ (क), (ख), (ग) लालष = लालष । (ग) लालष = लालष । (ख) लालष = लालष ।
- १५ (क), (ख) लालष = लालष ।
- १६ (क), (ख) करिके = करिकै । (क), (ख) (ग), (घ) समे = समै ।
- १७ (क) (ख) (ग) (घ) (बिन्दि) मुक्ति = बिन्दि यह ।
- १८ (क) तासो = तासै । (ख), (ग) तासो = तासै ।
- १९ (ग) सम = सव ।

सहज सुरति मूल सै लावै ।^१ ऊरत दइउर द्रिस्टि ठहरावै ॥३५७॥^१
 सहज सुन सुमिरे सो ग्यानी ।^१ प्रेम प्रीति मूल पर ठानी ॥३५८॥
 काया दिहाए कहां से राख ।^१ जोगी जोग काया से भाखै ॥३५९॥^१
 काया भजर केहू की ठहराना ।^१ जोगी बती सम माटी समाना ॥३६०॥^१
 हठ निग्रह जोग संकर (जो) ठाना ।^१ धंतहु काया माहि ठहराना ॥३६१॥
 गोरख जोग काया जो साषा ।^१ हठ निग्रह के भासन बाषा ॥३६२॥^१
 निद्रा साधि पवन जो पीवै ।^१ सो ठो धुग धुग कवहि न जोवै ॥३६३॥^१
 केते जोगी हठ निग्रह कीन्हा । रज वीर होखे फेरि छीन्हा ॥३६४॥^१
 जो जोइनी मह जनमे भाई ।^१ मजर काया कहु केहू की भाई ॥३६५॥^१
 काया पतन सम की होए जाई । महा महा मुनि गए नखाई ॥३६६॥

साखी

काया पतन सम की भाई (सुम) भाए गए कइ बार ।^१

एक भजर सत पुखै हही, सोई रंग करार ॥३६६॥

चौपाई

कहु भक्ति जीवन है पोर । मानहु सब कहा सुन मोर ॥३६७॥^१

- १ (क), (ख) सै = सब ।
- २ (क), (ख) दइउर = दइउर ।
- ३ (क) (ख) मूल = मूल्य । (क) (ख) सुमिरे = सुमिरे ।
- ४ (क) से = है ।
- ५ (क) (ख), (ब) से = है ।
- ६ (क) केहूषी = केहि के ।
- ७ (ख) माटी = मीठी ।
- ८ (क) जोग = जो । (क) भजर (बो) कला = संकर जग ।
- ९ (क) जोगे = से ।
- १० (क) (ख) (घ) के = है । (ग) के = करि । (क) भासन = जोय भासन ।
- ११ (ख) साधि = सधि ।
- १२ (क), (ख) (ग) (घ) तो = तो । (घ) न = नहीं ।
- १३ (क), (ख), (घ) (ग) होखे = होखे । (ख) फेरि = फिरि ।
- १४ (क) निम्नलिखित पाठ्ये है—
 भजर काया कहु केहि की भाई । काया पतन सम की होए जाई ॥
 (ख) जो जोइनी = जो जो जइनी । (घ) मह = में । (ख) जनमे = जन्मे ।
- १५ (क) केहू = केही ।
- १६ (क), (घ) दम = दम । (ख) (घ) बर = है ।
- १७ (क), (ख), (घ), (ग) सुन = सुन ।

काया धर त्रिस्टि सब लाई ।^१ गगन सुरति भगम के आवै ॥३१२॥^२
बन्ध विटाए होए उजिधारा । बने जोति तहं निर्मल छाया ॥३१३॥^३

दोहा

भंवर गोफा के भीन्हिके^४, बने कमल उजिधार ।^५
कन्हे हरिया म्यानी होसे^६, (सी) राखे त्रिस्टि करार ॥२८॥

चौपाई

जनम दुरलभ नहिं बारम्बारा ।^७ करहु भक्ति निधु नाम पिधारा ॥३१४॥^८
सतगुर सेवा करो पहचानी ।^९ सुजस गहो अस निर्मल घानी ॥३१५॥^{१०}
पारस करिके सेवा ठाने ।^{११} सांच सम्य मुकुति जो जाने ॥३१६॥^{१२}
बोर छाहु भीन्है पित लाई ।^{१३} सेवा करे सुरति सब लाई ॥३१७॥^{१४}
वंदीछोर तुह बंद छोडावहु ।^{१५} भाए जगत में जीव मुकुटावहु ॥३१८॥^{१६}
दयावंत तुम्ह होहु दयाला ।^{१७} नाटहु जम फाँस जम जाला ॥३१९॥^{१८}

१ (क) (ख), (ग) छत्र = छत्र ।

२. (क) भयम = भय । (क) है = है ।

३ (क) (ख), (ग) बने = बने ।

४ (क), (ग) भीन्हिके = भीन्हिके । (ख) भीन्हिके = भीन्हिके ।

५. (क), (ग) बने = करे । (क) कमल = कमल ।

६ (क) (ख), (ग), (घ) होसे = होवे ।

७ (क), (ख), (ग) जनम = जन्म । (क), (ग), (घ) दुरलभ = दुर्लभ ।

(ख) दुरलभ = दुर्लभ ।

८ (क) (ग) भक्ति = भक्ति ।

९. (क) करो = करहु ।

१० (ग) निर्मल = निर्मल ।

११ (क), (ख) करिके = करिके । (क) (ख) (ग) सम्ये = सम्ये ।

१२. (क) (ख), (ग) जाने = जाने ।

१३ (क) बोर छाहु के करे निर्मल । (ख) बोर छाहु का करे निर्मल । (ग) बोर छाहु बीगडे पितलार्ह । (घ) बोर छाहु के करो निर्मल ।

१४ (क) (ग) करे = करे ।

१५. (क) (ग) वंदीछोर पद—वंदी छोर तुम्ह बीग देवाला । संतनि केर करो प्रतिपादा ॥

(घ) वंदी छोर तुह बीग देवाला । सतगुर केर करो प्रतिपादा ॥

१६ (ग) में = मर ।

१७ (क) तुम्ह = तुम । (ग) तुम्ह = तुम । (क) (ख), (ग) दयाला = देवाला ।

१८ (ग) जम जाला = जम जाला ।

श्रीपाई

अथम मदिम उक्तिम मूला ।^१ पाखंड कर्म काल सम तूला ॥३८०॥
 छव दर्शन ध्यानबं पखडा ।^२ ठामे अगत मूला नव खंडा ॥३८१॥^३
 छव गुर छव घर छव उपदेसा ।^४ गुर घर एक भेद विषवासा ॥३८२॥^५
 पाखंड ध्यानबं काय जनऊ ।^६ पाखंड कर्म पूजहि सम देऊ ॥३८३॥^७
 भगिनि पवन पानी परगासा । चांद सुख्य घरती निनु वासा ॥३८४॥^८
 छव दर्शन जगत सम सागे ।^९ पाखंड कर्म समन्हि मिति आगे ॥३८५॥^{१०}
 छव गुर छव दर्शन सम गावै ।^{११} भगम भेद विरसा कोइ पावै ॥३८६॥
 भगम भेद ब्रूमहु रे ग्यानी ।^{१२} छव के तेनु गहु मुक्ति की खानी ॥३८७॥^{१३}
 ई सम भगम पुरुष की छाया ।^{१४} बुक्ति बुक्ति सम जगत बनाया ॥३८८॥^{१५}
 जोगी जागे जोग बखाना ।^{१६} पाखंड कर्म सम पढ़हि पुराना ॥३८९॥^{१७}
 बुक्ति जाने ती जोगी होई ।^{१८} चेतनि ब्रम्ह सदा है सोई ॥३९०॥^{१९}
 तम समारि बुक्ति ओ रावै ।^{२०} मन के चीन्हि मूस के सावै ॥३९१॥^{२१}

- १ स्वीकृत (क) प्रति में 'भौमय' अनुस्तिष्ठित ।
- २ (क) छलवै = क्षेपलवै ।
- ३ (क) ठामे = ठामे ।
- ४ (क) गुर = गुर ।
- ५ (क) (ग) मेर = मेर ।
- ६ (क) धानवै = ध्यानवै । (ख) धानवै = धाने । (ग), (घ) धानवै = धानवे ।
- ७ (घ) सम = सव ।
- ८ (क) (घ) छरज = सुख ।
- ९ (क) (घ), (ख) सागे = सागे ।
- १० (क) समन्हि = समे । (ख) (घ) समन्हि = समे ।
- ११ (क) पल में 'सम कोई पावै है ।
- १२ (क) (ख) ब्रूमहु = ब्रूमो ।
- १३ (क) बर ठकि गहनु मुक्ति की खानी । (ख) (घ) तेहु = तेत्रि ।
- १४ (ग) सम = सव । (क) (ख), (घ) (घ) पुरुष = पुरुष ।
- १५ (घ) सम = सव ।
- १६ (क), (ख) आगे = आवै ।
- १७ (घ) सम = सव । (क), (घ) पढ़हि = पढ़ै ।
- १८ (क) (ख) (ख) जाने = जानै । (ग) ती = तव ।
- १९ (घ) है = हए ।
- २० (ग) रावै = रावे ।
- २१ (क) (ख) (घ), (ख) का पठ 'मन के चीन्हि' स्वीकृत ।

पहिसे पुर्न तब पीछे मारी ।^१ भई जोति तब जगत पसारी ॥४०६॥^१
पहिसे भकह तब कहे में भावै ।^२ होए ग्यात तब जग समुझाव ॥४१०॥

साक्षी

भकह मूल निधु नाम छै, जोग बुक्ति पग्दान ।^५
बेतनि रहे जीव जानिके^६, मरतो जमके मान ॥४०॥^६

श्रीपाई

जो जीव करे नाम कर भासा ।^७ ताके काल ना डारे फासा ॥४११॥^७
ज्यो डारे तो सेठ छेडाई ।^८ जतम करो जिव जम नहिं लाई ॥४१२॥^८
भन साहब तुह किपानिधाना ।^९ प्रावि भंत तुहई परवाना ॥४१३॥^९
देसा मूम डार सभ छाया ।^{१०} प्रावि भंत तुह सभ बनाया ॥४१४॥^{१०}
तुम्हते जमी तुम्हते भसमाना ।^{११} तुम्हते हव बेहव परवाना ॥४१५॥^{११}
तुम्हते भाव सुभ भववारा ।^{१२} तुम्हते जिव एह जगत पसारा ॥४१६॥^{१२}

१ (क) पहिसे = पहिले । (ख) पीछे = पीछे ।

२ (ब) तब = मग ।

३ (क) पहिले कह तब भकह में भावै ।

४ (ब) बुक्ति = बुद्धि ।

५ (क) रहे = रहो । (ख) रहे = रई ।

६ (क) (ग) के = के ।

७ (ख) श्रीपाई के प्रारंभ में अतिरिक्त पाठ—दरिया बचन ; साहेब बचन । (क), (ख) (ग) अतिरिक्त पाठ—श्रीपाई । (क) (ख), (ग) करे = करै । (क) कर = करे । (ख) (ग) कर = के । (ब) कर = कै ।

८ (क) तबे = तबो । (क) गा = गै । (ब) बा = म । (ब) ताके काल डारे नहिं लाई ।

९ (क) ज्यो = जो । (ब) ज्यो = ज्यो । (क) (ख), (ग) डारे = डारै । (ख) (ग) तो = तब । (क) सेठ = सेव । (ख) सेठ = सेवो ।

१० (ब) भन = बन् ।

११ (ख) साहब = साहेब । (ख) (ग) तुह = तुम ।

१२ (क) (ख) (ग) तुम्हरे = तुम्हरी । (क) तुम्हरे = तुम्हरी ।

१३ (क) डार = डार पाठ ।

१४ (ग) तुह = तुम ।

१५. (क) ते = तै । (ब) तुम्ह = तुम ।

१६ (ब) तुम्ह = तुम ।

१७ (ब) तुम्ह = तुम ।

१८ (ग) तुह = तुम । (क) ते = तै ।

जमुदीप है काल सनेही ।^१ कठिन काम व्यापत है देही ॥४००॥^२
 रहे समीर काल सम पास ।^३ देह प्रधानक जीव कह जासा ॥४०१॥^४
 षट षट धोले सभे डोनावे ।^५ वाजोगर यों हुकुम पसावे ॥४०२॥
 ऐसन सुरति प्रवेत के लावे ।^६ प्रवरि कहन क प्रवरि कहावे ॥४०३॥^७

दोहा

ऐसन भाली जगत में^८, बारे फास भनत ।^९
 ब्यापत तुम दरस में^{१०}, तोरो नाम के पत ॥२६॥^{११}

चौपाह

तब साहब भस बोले बानी ।^{१२} कहीं नेद सुनो सुन्द म्यानी ॥४०४॥^{१३}
 कहीं नेद की करि देखसायो ।^{१४} भाषे सरन ताहि मुकुटायो ॥४०५॥^{१५}
 सम पर भमत हमारा धरई ।^{१६} देखत काल कुपित होए बरई ॥४०६॥^{१७}
 भादि भत हमहीं हहि मूला । भवरि डार हमहीं प्रसयूला ॥४०७॥
 पहिसे मूल तब पीछे डारा ।^{१८} मया मूल तब डारूह पसारा ॥४०८॥

- १ (क) सनेही = समेही ।
- २ (क) व्यापत है देही = व्यापे देही । (ख) व्यापत है देही = तन व्यापे देही । (ग) व्यापत है देही = तन व्यापत देही । (घ) व्यापत है देही = व्यापे देही ।
- ३ (क) (ख) (ग) रहे = रई ।
- ४ (क) (ग) कह = के । (ख) कह = कै । (घ) कह = कम जीव के ।
- ५ (क) (ख), (ग) सभे = सभे । (घ) सभ = सबे ।
- ६ (क) के = करि ।
- ७ (क) के = कै ।
- ८ (क), (ख) में = मै ।
- ९ (क) बारयो पंद भनत । (ख) बारे = बारी ।
- १० (क) (ग) (घ) तुम = तूम ।
- ११ (ग) तोरो = तोरहु । (क) के = को । (ख) के = कै ।
- १२ (ख) साहब = साहेब । (ग) (घ) बोले = बोले ।
- १३ (क) बरौ = बरौ । (ख) सुनो सुन्द = सुन सुन्द ।
- १४ (क) बरौ = बरौ ।
- १५ (क) भाषे सरन मौ ताहि मुकुटायो । (ख), (घ) भाषे सरन मौ ताहि मुकुटायो । (ग) भाषे सरन मे ताहि मुकुटायो ।
- १६ (घ) सम = सब । (ख) हमारा = हमारे । (क) धरई = रहर ।
- १७ (क), (ख), (ग) कुपित = क्रुपित ।
- १८ (क) पहिसे = पहिले । (ख) पीछे = पीछे ।

करहि कोलाहल बहुविधि वानी ।^१ मलयकरि नाल जवाहिर खानी ॥४३०॥^१
 नलसिख सोभा बहुत बनारि । निरखत नैन रूप छवि छारि ॥४३१॥^१
 वलि भगन भए हस सम सोभा ।^२ सहां न काम क्रोध मद सोभा ॥४३२॥^१
 बीकी वाला निकट बोत्तारि ।^३ मंगस सप कामिनि सम गारि ॥४३३॥
 छापा सनवि देसहि देहि भंगा ।^४ सतगुर छापा असल निजु रंगा ॥४३४॥
 बीकी वाला बोले बानी ।^५ जाहु हंस जहवां निजु खानी ॥४३५॥^१
 भागे सहज दीप जो देखा । मलयकर पदुम भजर नै देखा ॥४३६॥^१
 बेसे हंस प्रथ की छाया ।^६ सोषा भगर डाक सम घाया ॥४३७॥^१
 अमित आसन सहां बसाया । अधिक रूप दिवि ताहां प्राया ॥४३८॥
 चमके जोति होण उजिभारा ।^७ अमित आसहि हंस पिभारा ॥४३९॥
 देखा कौतुक भागे बनि मएऊ ।^८ पूहुप दीप जहवां निरमएऊ ॥४४०॥^१
 पूहुप दीप हंसन्हि कै बासा ।^९ बहुविधि हंसा करहि बिसासा ॥४४१॥^१
 पूहुप बेवान छन सिर धामै ।^{१०} बैठे हंस बहुत सुख राज ॥४४२॥^१

- १ (क) कोलाहल = कुटीहल । (ख) (ग) (घ) कोलाहल = कोलहल ।
- २ (क) मलयकरि = मलयकै । (ख) मलयकरि = मलयके ।
- ३ (ग) निरखत = देखत । (क) (ख) नैन रूप = रूप नएन ।
- ४ (क) मए = मी । (ग) सम = सम ।
- ५ (ख) न = ना ।
- ६ (ख) बीकी = बीकी ।
- ७ (क) (ख), (घ) (ग) देवि = देवि ।
- ८ (ख) बीकी = बीकी । (क), (ख) बोले = बोले ।
- ९ (ग) जहवां = जहां ।
- १० (ग) कै = के ।
- ११ (क) बैठे = बैठे । (ख) बैठे = बैठे । (क) (ख) (ग) (घ) प्रथ = प्रथ ।
- १२ (ख) सम = सम ।
- १३ (क) (ख) चमके = चमके ।
- १४ (क) (ख) (घ), (ग) देखा = देखि । (ख) (घ) कौतुक = कौतुक ।
- १५ (ख) जहवां = जहां । (क) (ख), (ग), (घ) निरमएऊ = निर्मएऊ ।
- १६ (क), (ग) कै = के ।
- १७ (क), (ख) (ग) (घ) बिसासा = बिसासा ।
- १८ (क) बेवान = बैवान ।
- १९ (ग) बैठे = बैठे । (ख) बैठे = बैठे ।

पन साहव कुह सिरजनिहार ।^१ करों भरज सुनो एव वार ॥४१७॥^१
 जवहीं हंस ग्याल के घाबे ।^२ क्यनी सुरति सहर के घाबे ॥४१८॥^२
 सुनहु संघ में करों बखाना ।^३ मूस सन्द है प्रगम निसाना ॥४१९॥
 मूस भकह सस है छापा ।^४ देखत कान सुरतहि क्यंवा ॥४२०॥
 छपनोऊ तीनि लोक ते न्यारा ।^५ बुझे भेद जो हंस हमार ॥४२१॥^५
 उतर दिख एक पांजी प्रहई ।^६ बने हंस सुरति करि सहई ॥४२२॥^६
 धरे तेज प्रति होए उभिधारा ।^७ बुमुति ना खावी काल बेधारा ॥४२३॥^७
 जमुदीप से भागे गएऊ ।^८ सिलिमिलि दीप दसत तव भएऊ ॥४२४॥
 भागे सरवर प्रगम गंभीरा ।^९ गए हंस वाही के तीरा ॥४२५॥

दाहा

गए हंस सरवर के तीर, निर्मल जल एक रंग ।
 भक्तक्य मोठी सेत सम, उद्वलत हरित तरंग ॥३१॥^{१०}

श्रीपाई

माल सरोवर मोठी खानी ।^{११} बुगहि हंस बोसहि बहु वानी ॥४२६॥
 भागे सिम है पाएर दीपा ।^{१२} निरजन शोकी रहे सनीपा ॥४२७॥^{१२}
 पसा हंस सहवा जो जाई ।^{१३} देखत रूप छबि दरनि न जाई ॥४२८॥^{१३}
 क्यमिनि चिर सोमिठ सम प्रंगा ।^{१४} मानहु मुर्ख किरति को रंगा ॥४२९॥

- १ (क) दुर = दृग् । (ख) मन दुर साहव विभक्तिहारा ।
- २ (क) करों = करी ।
- ३ (क), (ख), (ग) (घ) ग्याल = गयन । (ङ) (च) के = की ।
- ४ (क), (घ) क्यनी = क्यन । (ङ के वाने = की वाने ।
- ५ (क) करों = करी ।
- ६ (क), (ख) (ग) बुझे = बुझै ।
- ७ (क) बने = बसै ।
- ८ (क) (ग) घरे = वरै ।
- ९ (क) (ख), (ग), (घ) खावी = खावहि ।
- १० (क) से = से ।
- ११ (क), (ख), (ग) (घ) उद्वलत हरित तरंग = उद्वलत हरित तरंग ।
- १२ (क) मानसरोवर = मानसरोवर ।
- १३ (क) शोकी = शोकी । (ङ) (ख) (ग) रहे = रई ।
- १४ (क) पसा = पसे । (ख) पसा = पसे ।
- १५ (क), (घ) (ग) (घ) पाठ स्वीकृत ।
- १६ (क) सोमिठ सम प्रंगा = सोमिठ प्रंगा ।

चीपाई

धमरपूर तसत के ठाँक ।^१ छत्र फिरे कोटिन्ह सिर नाळ ॥४४९॥^१
 गए हंस साहब के पासा ।^२ करि सनाम तहुं सेहि नेवासा ॥४५०॥^२
 तसत सेत सेत सम छाया ।^३ चहुं धोर वास सुवास सम भाया ॥४५१॥^३
 प्रबर धमर सहवां होए पाई ।^४ भावागवन के सरी मेटाई ॥४५२॥^४
 साच जाने सो पहुँचि पासा ।^५ भेटि जाए जग जम के भासा ॥४५३॥^५

बोहा

ऐसन सुख सहर में,^६ जो कोह झुके भाए ।^६
 सचनाम के जानवे,^७ प्रसयिर बैठे जाए ॥३४॥^७

चीपाई

निर्मल प्यान बूमहु चित साई ।^८ तेजहु दुरमति बुरि सम जाई ॥४५४॥^८
 दुरमति ते ब्रम्ह भी छीना ।^९ बँधो सेवार बल करे मसीना ॥४५५॥^९
 निमल बस जेवों वहे सुभारा ।^{१०} ऐसो प्यान मजहु निदु सारा ॥४५६॥^{१०}

१ (क) के = है ।

२ (क) सिरि = सिरै । (क) कोटिन्ह = कोटिन्हि ।

३ (क) साहब = साहेब ।

४ (क) तई = तैहि ।

५ (क) सम = सब ।

६ (क) (ग) सम = सब ।

७ (क) (ग) (ब) के = है ।

८ (क) (ख) (ग) जान = जाने । (क), (ख) (ग) पहुँचि = पहुँचै ।

९ (क) (ग) के = है ।

१० (क) (ग) ऐसन = इससन । (क) में = मैं ।

११ (क) (ख), (ग) ब्रम्ह = ब्रह्मै ।

१२ (क) (ख) जानवे = जानवै ।

१३ (क) बैठे = बैठै । (ग) बैठे = बैठे ।

१४ (क), (ग) निर्मल = निरमल । (क) (ग) बूमहु = ब्रह्मै ।

१५ (क) (ग) (ब) दुरमति = दुर्मति । (ग) सम = सब ।

१६ (क), (ग) (ब) दुरमति = दुर्मति । (क) ते = तै । (ख) ते = ते । (ख), (ग) मस = मी ।

१७ (क) सेवार = सेवारा । (क) करे = करे ।

१८ (क) (ख) बहे = बहै । (ग) बहे = बहूत ।

१९ (क), (ख) (ग) (ब) मजहु = मजहु ।

रोडा

बेलाहि हंसा प्रेम से^१, लेइ बरसावहि पास ।^२
पस बिलस एह कीजिरे^३, पुगहुं बास सुबास ॥४२॥^४

भौपारि

अमित पोखन पिबहि मपारि । सोइस मान हुती छवि छारि ॥४४३॥^५
पगो हंस गीत जो कीन्हा ।^६ दयादीप तहाँ पगु दीन्हा ॥४४४॥^७
कोटि कसा तहुं होए उजिमार ।^८ बैठे हंस समे सुख सारा ॥४४५॥^९
परंग बिछाए सोबन्हि कै माथा ।^{१०} अत्रिपति भंवर जोती बडुं पासा ॥४४६॥^{११}
पस पस बंदाहि ठाकर पाऊ ।^{१२} जिन्हि संघारहि सभ्य सुनाऊ ॥४४७॥^{१३}
बैठे हंस हंसन्हि कै पासा ।^{१४} अमित पोखन पास सुबासा ॥४४८॥^{१५}

रोडा

अत्रिपति रुन मपार हु, जो बरने तेहि ठांव ।^{१६}
सस सभ्य पहचानिहें,^{१७} सोइ बरसहि निगु गाव ॥४३॥^{१८}

- १ (क) ईसा = ईस । (ख) से = जो ।
- २ (क) लेइ बैसावहि पास । (ख) से बैसावहि पास । (ग) से बैसावहि पास । (घ) से बैसावहि पास ।
- ३ (क), (ख) बिलस = बिलस । (ग) (घ) कीजिरे = करिरे ।
- ४ (क), (ख), (ग) पुगहुं = पुग्यौ ।
- ५ (क) मान = माणु ।
- ६ (क) (ख), (ग) (घ) गीत = गयन ।
- ७ (क), (ख), (ग) तहाँ = तहाँ ।
- ८ (क) बैठे = बइठे । (ग) समे = सबै ।
- ९ (क) सोबन्हि कै = सोबनि के । (ग) सोबन्हि कै = सोबन्ह के । (ख) (घ), (ग) (घ) पासा = पासा ।
- १० (क), (घ) भंवर = भौर । (ख) जोती = जोतिहि ।
- ११ (ख), (ग), (घ) संघारहि = संघारहि ।
- १२ (क), (घ) बंदाहि = बंदाहि । (ख) हंसन्हि = हंसन्हि ।
- १३ (क) सभित = सभित ।
- १४ (क) बरने = बरने । (ख) बरने = बरने । (घ) ठांव = ठाव ।
- १५ (क) पहचानिहें = पहचानै । (ख) पहचानिहें = पहचानिहें । (ग), (घ) पहचानिहें = पहचानिहें ।
- १६ (क) सेइ = से ।

पहिसे सांच तब होए उबिघारा । सांच सख बरे जय साय ॥४६७॥^१
 सांचो चांद सुर्ज भवतारा ।^२ रानी बेकस होए उबिघारा ॥४६८॥
 सांच समुद्र सवा भरिपूर । ऐसो सांच संत होए पुर ॥४६९॥
 बहे हरिया ऐसो सांच सफाई । कवन मनीम करे ठेहि भाई ॥४७०॥^३
 सांच दीस सांचो सो सागा ।^४ कहे हरिया कोइ संत सुमाया ॥४७१॥^५
 सांचा सुमति कुमति के मारे ।^६ रहे सांच कुमति बुरि बारे ॥४७२॥^७
 होए सुबुधि कुबुधि के नासा ।^८ काल कुबुधि न भावै पासा ॥४७३॥^९
 गूगा होए मीठा सो पाल ।^{१०} प्रापु पल फेरि भवरि चाल ॥४७४॥^{११}

दोहा

पची मुभा रेली हुभा, विनु बेरी हुभा बंद ।^{१२}

कव सेवा सतगुर की, ^{१३}काटि कर्म मिहफंद ॥४९॥^{१४}

श्रीपाई

कव सेवा सत संजति सरना । भेटे जग में जय मरना ॥४७५॥^{१५}
 बी मीसे सतसंग सुमागा ।^{१६} होए विबेक भवित (भव) वएरागा ॥४७६॥^{१७}

१ (क) बरे = बरै ।

२ (क) (प) (ब) सुर्ज = सुख ।

३ (क) (ख), (प), (ब) प्रतिबों में पठित 'मनीम' पठ स्वीकृत । स्वीकृत प्रति में 'मिसे न' पठ है ।

४ (क) (ब) सांच = सांचो । (ख) सांचो = सांचा । (प), (ब) सो = से ।

५ (क) कोइ = सो । (ब), (ब) कोइ = सोई ।

६ (क), (ख), (ब), (ब) कुमति = कुमति । (क) (ख) के = कै । (क) (ख), (ब) मारे = मारै ।

७ (क) (ख) (ब) रहे = रई । (ख) कुमति = कुमति । (प) कुमति = कुमति । (क) बरे = बरै ।

८ (क), (ब) के = कै ।

९ (क) (ख), (ब) (ब) न = ना ।

१० (क) गूगा = गौया ।

११ (क) (ग) फेरि = फिरि ।

१२ (क) बेरी = बैरी ।

१३ (ग) बी = बी ।

१४ (ख), (ग) कर्म = करम । (क) मिहफंद = मीहफंद ।

१५ (क) में पठित 'मनीम' 'मिसे जग में जय बर मरना' स्वीकृत । स्वीकृत (क) प्रति में 'मिसे जग में जय मरना' उचित पठ है ।

१६ (क) बी = बी । (क) (ब) मीसे = मिसे ।

१७ (ख), (ब) वएरागा = वैरागा ।

पहिले ग्यान तव पाछे मुक्ती ।^१ पाछे अोग हूँ पहिले मुक्ती ॥४३७॥^१
 पहिले बनक तव गहना हो^२ ।^१ पेन्ह सिंगार कामिति रूहे सोई ॥४५८॥^१
 पहिले सेज तव पीछे सएना ।^३ उठी प्रात मुख मीज नएना ॥४५९॥^१
 पहिले मूख तव पीछे साव ।^४ पहिल राग तव पीछे गाव ॥४६०॥^१
 पहिले पुहुप तव भंवर भाव ।^५ पहिले फूल वाम तव धार ॥४६१॥^१
 पहिले अल पुहुमी में भाव ।^६ होए अंकुर वीज जनमाव ॥४६२॥^१
 पहिले अकह तव कहे में भाव ।^७ होए ग्यान तव अग समुझव ॥४६३॥
 पहिले क्रिमि तव बोभा होई ।^८ अपने आपु वनाव सोई ॥४६४॥
 तैमे ब्रम्ह नाया के कीन्हा । महल बनाए रूहे रग मीन्हा ॥४६५॥^१

दोहा

आपन ब्रम्ह विचारि के^९ मजहु सो निर्मस ग्यान ।^{१०}

पहिले अपने वास होए,^{११} पीछे संत मुजान ॥३५॥^{१२}

चौपाई

पहिले भक्ति प्रेम की बानी ।^{१३} करे सुरति मिल तेहि ग्यानी ॥४६६॥^{१४}

१ (क) पहिले = पहिले ।

२ (ब) पाछे = पीछे । (क) पहिले = पहिले ।

३ (क) पहिले = पहिले ।

४ (क), (ख) (ग) (घ) रहे = रह ।

५ (क) (ग) (घ) पीछे = पीछे । (क), (ख) (घ) सएना = सेना ।

६ (क) मीज = मीज । (क) (ख) (ग) नएना = नैना ।

७ (क), (ग) पीछे = पीछे ।

८ (क) पहिले = पहिले । (ख), (ग) पीछे = पीछे । (घ) पीछे = पीछे ।

९ (क) पहिले = पहिले ।

१० (क) पहिले = पहिले ।

११ (क) पहिले = पहिले । (ख) (ग) (घ) में = पर ।

१२ (क) (घ) मीज = तव मीज ।

१३ (क) पहिले कह तव अकह में भाव ।

१४ (क) (ब) रहे = हीए । (ख) रहे = रहे । (घ) मीगहा = मीना ।

१५ (क) (घ) विचारि के = विचारि के ।

१६ (क) मजहु = मजो । (ख) निर्मस = निरमस ।

१७ (क) पहिले = पहिले ।

१८ (क) पीछे = तव पीछे ।

१९ (क) पहिले = पहिले ।

२० (क) (घ) करे = करे । (ख) (ब) (घ) मित्र = मित्रे ।

नदी मिलै ससिता भैं आई ।^१ सारो जल संघति सो पाई ॥४७७॥^२
 पारस मूल सभ्द ओ पावै ।^३ भक्तमक धित्तु बुमुकि ली लावै ॥४७८॥^४

दोहा

मन पबना का साधिरे,^५ साधो सभ्दहि सार ।^६
 मूल भक्त में गमि करो,^७ मोती बना पसार ॥३७॥
 दरिया अगम गंभीर है,^८ साल रतन की क्षानि ।
 ओ मीलै जन गीहरी, लोहि सभ्द पहचानि ॥३८॥

प्रथम संपूर्ण भक्ति हेतु मइल सो सही भासल दरिया साहब निखल
 मइस दिन सोमार के बसहत जैरामदास सोकराजदास जो देखा
 सो निखा मम बोस ना दीए तु सम साधुन के सत्तनाम ।^९

१ (य) मैं = मई ।

२ (अ) (ग) (ब) सो = से ।

३ (ग) लो = ली । (ब) लो = ले ।

४ (क) लो = लि ।

५ (), (य) अ = के । (क) (अ), (ग) साधिरे = साधिए ।

(ब) अतिरिक्त पाठ—

हीरामनि निष्ठु राग है सम दामनि को राग ।

सतगुर से परपै मई, जिगसा प्रेम प्रगस ॥

स्वीकृत प्रति में इन दोहे से प्रत्यक्ष की समाप्ति हुई है ।

६ (ब) सार = कार ।

७ (य) भक्त = भक्त ।

८ (क), (अ) (ब) (ग) प्रतिभों में सत्ती-संख्या २४ से २२ तक की संख्याओं प्रत्यक्ष के अन्त में हैं ।

९ (क) प्रथम भक्ति हेतु संपूर्ण जो अक्षर समो देखा सो निखा साधु संघत सीध सो मीनती
 मोरी कुन्त अक्षर मात्राहीन पढ़न सम खेरि प्रथम भक्ति हेतु निखल तय्यार मेस
 साधन सुदी सतमी रोज सुकर बेर मगत दिन शोते अक्षर दरिया पंथी साधु को सीध को
 सतनाम सतनाम पढ़्ये तापीस १२ सावन सन् १२९९ साल कसली ।

(अ) प्रथम संपूर्ण भक्ति हेतु हुआ इयारिवास्ती संघत १८६३ साल मिथि मादो सुदि
 ता० बीसी ४ बार बुब के प्रथम स्वीकृत तेषार हुआ मद्रकपुर मे काश्री का मन्थन पर
 बसहत विरंमरसाम दरिया साहेब के कबीर दस्तवे साहेब बसहतदासजी साहाबा
 धोकपुर परफने बनवायी तये बीसी मौजे पररंधा तप्यत बीठ दरिया साहब का सुमुक्ति
 सेना साहब के साहाय कोमिनि सप्त सुष अक्षर अक्षर से तप्यत बीठ पर सतनाम
 कोमिनि अक्षर अक्षर से सम साधुगृह से के सतनाम बतनाम सतनाम ।

ब्रह्मविवेक

दूरि कहीं ली कहि नहि जाई ।^१ सुरतिवत के निकट है भाई ॥१०॥^१
 निकट रहे सो मखि नहि पावै ।^२ भगम प्याल गमी सो पावै ॥११॥
 सत पुसै निम्ब निरखाना । निरकेवल निरलेप है प्याला ॥१२॥^३
 विमा विवक भेद नहि पावै । करे विवेक चरन चित भावै ॥१३॥^४

सत्सी

सतगुर सत सुगंध रस, परिमल पारस सार ।
 सत श्री तपत सब दुरि भटे^५ अग त्रिष होए निनार ॥२॥^६

बीपाई

भञ्जित नाम सुवन निमेरा ।^७ विना विवेक भेस बहुवेरा ॥१४॥
 सस सुकित जो कर बसाती ।^८ सुले सुपट पुहुप की खाली ॥१५॥^९
 बेधो जल कमल मंवर रस सोभा । रहे समीप जाए चित सोभा ॥१६॥^{१०}
 भञ्जर नाम बोए अरे न जारा ।^{११} भई त्रिचक्र बोए पुसै निनारा ॥१७॥
 भञ्जित सुधा प्रेम रस पाई । मन मोविक के मुख झुटाई ॥१८॥^{१२}
 दुर्मति लेखि सुमति रस बैना । निरगुन निरखि नाम पुक बना ॥१९॥^{१३}
 रूप रस उचित उभिभारा । भञ्जित भरे सो निगुन छाटा ॥२०॥
 सुले कमल त्रिपि मह देखा ।^{१४} भगम रूप एह भेद विदेखा ॥२१॥

१ (क) 'दूर कहीं तो कहि नहि जाई ।' (ग) ली = लो ।

२ (ब) भट = भट ।

३ (क), (ग), (घ) रहे = रहै ।

४ (ब) है = यह ।

५ (क) (घ), (ग) अरे = करै ।

६ (क) 'सत श्री तपत दुरि भम भेटे ।' (घ) 'सत श्री तपत भेटे भम ।' (ब) 'सत श्री तपत भम दुरि भेटे ।'

७ (क) बोए = खो ।

८ (घ) निमेरा = निवेरा ।

९ (क) (ग) अरे = करै ।

१० (क) (घ) (ग) खली = खले । (ग) (ब) खाली = खाली ।

११ (घ) जाए = तपि ।

१२ (घ) अरे = करै ।

१३ (घ) के = कहि ।

१४ (क) निरखि = निरखे ।

१५ (क) सुले त्रिपि भंरस में देखा । (ब) (ग) अरे = खले । (घ) भई = भै ।

सत्तनाम

प्रथम ब्रह्म विवेक माखल दरिया साहब

साखी^१

ब्रह्म विवेक ग्यान एह, खोटा सुमति सुधार ।^१
ग्यानी समुक्ति विषारखी, उतरहि मो जस पार ॥१॥^१

खीपाई^४

भादि भंत मधी रचि रक्षा ।^१ सुमति धार ग्याल एह भाखा ॥१॥
जस भस् चरती पवन भष पानी । भादि भंत है सत सहिदानी ॥२॥^१
पूरत ब्रह्म पुरान बखाना ।^१ सिब सनकादि भादि नहि जाना ॥३॥^१
पुर्व पुरान बोए हहि भनिनासी । जानी काया जान नहि प्रासी ॥४॥^१
आकी ब्रह्म है पिड पुराना ।^१ उचित कसा जग रची निधाना ॥५॥
एक निरंजन करहि विचारा ।^१ भतुरानत खी पाठ न पारा ॥६॥
सत कहा मूठ जनि जान । सतगुर सत खोजि मनमान ॥७॥^१
हिल्य कमल यह नाम समीपा ।^१ भगम गमी हुए कमल मनूपा ॥८॥
भई जेघंत बेकीमति करारा । जिदा नाम है भजर विधारा ॥९॥

१ (क) सत्तनाम प्रथम ब्रह्म विवेक माखल दरिया साहब मुक्तिदाता सतगुरु बंदी खोर
ईस उदारम नाम निधान मधी साखी । (ग) सत्तनाम—बेबादा साहब मुक्तिरिद दरिया साहब
परम ब्रह्म विवेक माखल साखी । (ब) सत्तनाम—प्रथम ब्रह्म विवेक माखल दरिया साहब
मुक्ति के दाता ईस उदारम साखी ।^१

२. (क) सुधार = धार ।

३ (क), (घ) मौ = मय ।

४ (ग) में अपठित है ।

५. (क) मधी = मय ।

६ (क) (ग) भंत है = भंत ।

७ (क), (घ) बखाना = बखानी ।

८. (क) (घ) जाना = जानी ।

९. (क) प्रणी = नानी ।

१० (ग) (घ) आखी = आखे ।

११ (क) (ग) (घ) करहि = करे ।

१२. (क) (घ) खोजि सत मन माने ।

१३ (क) परे = ररे ।

कर्म अनेक कपट का मूसा । सटपट ग्यान बिभ धरि फूसा ॥३२॥^१
 बीं लगि सुष्ठुम भेद नहिं जाना ।^२ पंडित पढ़िके गरम भुसाना ॥३३॥^३

साली

सुष्ठुम भेद निष्ठु ग्यान छै^४ चारि वेद को मूस ।^५
 कहें दरिया मगु साफ है, पंडित ताहि न सूत ॥३४॥

चौपाई

पढ़े गुने कछु करि खे साजा । सोजु मुकुटि सेजु पासंड जाना ॥३४॥
 पासंड भगति जीव के नासा ।^६ जाए जीव कान के भासा ॥३५॥
 बीं लगि सत्त संदेस न पाव ।^७ तीं लगि जीव शोक नहिं जाव ॥३६॥
 जब सागि सतगुर मिल न म्यानी । तब सागि कमल न बिगसे बानी ॥३७॥
 पूर्व तेज कमल में प्राव ।^८ दरसन देखि कमल बिगसावै ॥३८॥
 कहें दरिया कइ सख्य बिबेसा । प्रस्टदल कमल सुरति निष्ठु देखा ॥३९॥^९
 सत्त सुकित एह मुकुटि बखाना ।^{१०} संग समुक्ति के सुरति समाना ॥४०॥^{११}
 सहस्र जीव निष्ठु सख्य बिबेसा । निरखर नाम सुरति सत देखा ॥४१॥^{१२}
 बिगसे कमल बीं भजित बानी ।^{१३} सुसे सुष्टु पुरुष की खानी ॥४२॥^{१४}
 अखंडित ब्रह्म ग्यान नहिं बोला ।^{१५} जोग जुगुति नब संड जो खोला ॥४३॥^{१६}

१ (ब) बिभ = बिभि ।

२ (क) नहिं = ना ।

३ (क) (ग) पढ़ि पंडित का वर्ष मुठाना । (क) (ग) (ब) गर्म = वर्ष ।

४ (क) ग्यान = शर ।

५ (क), (ब), (ग) को = का ।

६ (ग) (ब) के = कर ।

७ (क) संदेस = सख्य ।

८ (ग), (ब) पूर्व = प्रथम । (क) (ब) में = मह ।

९ (क) सुरति निष्ठु = सुरति सत ।

१० (क) (ब) बखाना = बखानी ।

११ (क), (ब) समान्य = समानी ।

१२ (क) सत = सह ।

१३ (क) बीं = से ।

१४ (क) सुष्टु = सुशुभ ।

१५ (क) ग्यान = ग्यामी ।

१६ (क) खंडजो = कहरि ।

ठाके कहे बेभूत घटगूना ।^१ रूप रेख नहिं भहे नमूना ॥२२॥^१
नर के रूप जो मख सिख दीन्हा ।^२ एता रूप जगत रचि सीन्हा ॥२३॥

साखी

जल घस घरती पवन भव पानी,^३ भाव सृज निजु वास ।

ठाके रूप रेखा सब कइहीं,^४ पुरुष के क्यहिं निरास ॥२४॥^५

चौपाई

कये निरास भास कहा पावै । विना ठपर कइँ ठवर बतारै ॥२४॥
मरमि मरमि फिरि भवजल भावै ।^६ विनु सतगुर कोइ मुकुति न पावै ॥२५॥^६
भारि भरन मुख धरिहैं देहा ।^७ जारि मारि तन करिहैं लेहा ॥२६॥^७
बहुत कष्ट तन सहहीं मारी ।^८ फेरि फेरि बेहिं गर्भ मह डारी ॥२७॥^८
क्यहिं के गरमे होए विनासा ।^९ फिरि फिरि जन्म काय के बासा ॥२८॥^९
सीरस धरत सब करे बखानी ।^{१०} भीव के दरद बुझे नहिं प्राणी ॥२९॥^{१०}
गुर नहिं कीन्हो करी विवेका ।^{११} विना विवेक बहु कौने सेखा ॥३०॥^{११}
देह चिन्हि गुर करिहैं बखानी ।^{१२} भीतर मूरि भरम की खानी ॥३१॥^{१२}

१ (क), (ग), (घ) घटगूना = चौगूना ।

२ (क) मखि = मख ।

३ (क) जो = जे । (ग) 'नर के रूप मख सिख बा दीन्हा ।'

४ (क) पवन भव पानी = पवन है । (ग) पवन भव पानी = पवन कवर पानी ।

५ (क) 'ठाके रेख रूप है ।' (ग) 'ता कइ रूप रेखा है ।' (घ) सब = सम ।

६ (ग) 'पुरुष कये निरास ।' (घ) पुरुष के कये निरास ।'

७ (क) फिरि = फेरि ।

८ (क) 'विनु सतगुर को मुक्ति बतारै ।'

९ (क) (ग), (घ) करिहैं = करिहैं ।

१० (क), (ग) (घ) सहहीं = सहिहैं ।

११ (क) देहि = देत ।

१२ (क), (ग) गरमे = गरम ।

१३ (ग) जन्म = जन्म होए ।

१४ (क) (ग) करे = करै ।

१५ (ग) के = के । (घ) क = कर । (क) (ग) (घ) बुझे = बुझै ।

१६ (क), (ग), (घ) कौने = कवन ।

१७ (क) देह चिन्हि = चीन्हि ।

१८ (क), (ग) (घ) मूरि = मरी ।

सहज सोक छव सोक सो पावै ।^१ पृष्ठप पतग पर खेव बड़ाव ॥१५॥^१
 तहां कितान करे नहि खेती ।^२ भोजन पोखन पावहि सेती ॥१६॥
 तहां न भीमि खेह कबलेसा । चांद सूर्ज नहि बोही देसा ॥१७॥
 तहां ना बाए भनस परगासा । तहां ना बाल कुबुधि के प्रासा ॥१८॥
 तहां ना होखे सोग संतापा ।^३ पूरन प्राण तहां भापे भापा ॥१९॥^२
 भवि बेलास तहां सीतल बानी ।^४ भाव बाक पुठुप के खानी ॥२०॥^३

साक्षी

सो मगु परबत पार है, सत्त सुकित है सार ।^४
 कहे दरिया सतगुग मिते, होखे मुकृति करार ॥२॥

चौपाई

पश्चिम पुरव काल के मूजा ।^५ उत्तर सरव बंवलदल फूसा ॥२१॥
 उत्तर अर्धे त्रिन्द है सारा ।^६ बुके भेद जो हंस हमार ॥२२॥^४
 करे गमी मूल कहे देख ।^७ सेत सवा तहवां गमि पेख ॥२३॥^५
 छापा सनदि गोप करि रास ।^८ जोग सुमुति अमित रस बास ॥२४॥
 देवा देह त्रिगुन है फंदा ।^९ सेबि अमितर है मिरदंदा ॥२५॥^६
 सत्तनाम सब को चिरतावा ।^{१०} भावी भव मधी है छाया ॥२६॥^७

- १ (क) (ग) सहज सोक = सहज खेप ।
- २ (क), (ग) खेव = खेव । (ब) खेव = खेव ।
- ३ (क) (ग), (ब) करे = करे ।
- ४ (ग) होखे = होए ।
- ५ (ग), (ब) भापे = भापहि ।
- ६ (ब) सीतल = सीतलि ।
- ७ (क) पुठुप = छोटा । (क) (ग) (ब, के = की । (क), (ग), (ब) खानी = खानी ।
- ८ (क) (ग) सत्त सुकित = सत्त सुरति ।
- ९ (ग) पश्चिम पुरव = पूरव पश्चिम । (क) है = के । (ग) है = के । (ग) है = कर ।
- १० (ग) त्रिन्द = त्रिदिश ।
- ११ (क) जो = जो ।
- १२ (क) कब = के ।
- १३ (ग) तहवां = तहां ।
- १४ (ग) गोप करि = गुप्त है ।
- १५ (क) त्रिगुन है = है त्रिगुन । (ग) (ब) त्रिगुन है = त्रिगुन फंदा ।
- १६ (ग) अमितर = अमतर ।
- १७ (क) (ग), (ब) सभावे = समझे ।
- १८ (क) मधी = मध । (ग) मधी = मध ।

द्विष्टि देखि के करे विचार ।^१ म्यानी समुक्ति के उतरहि पार ॥४४॥^१

साक्षी

जो दिल दया दरद बसे, सगे सुरति सर छाहि ।^१
पुष्टप वास सुगध रस,^२ विस्ई बकार न भाहि ॥४५॥^२

चौपाई

जो नर तेनिहै पारख करमा ।^३ पासब तेजि करहि निजु भरमा ॥४६॥^३
जो जन सुरति सनमुख रखा । भ्रमित नाम प्रेम रस भाखा ॥४६॥
करे विचार सतसंग विवेका ।^४ मिगुन तेनि नाम सत देखा ॥४७॥
सो जन सीतल सख वखाना । तेजि विस्ई रस भ्रमित पाना ॥४८॥
सो जन माया बसि विलाव ।^५ जो मथनी महि घीत बलोष ॥४९॥^५
सुबन बचन सुगध नेवासा ।^६ सो जन बसहि दयानिधि पासा ॥५०॥
सतगुर बचन करहि परखाना । रूहि विबेक भेद रस म्याना ॥५१॥^६
कर भगति सब कर्म दिगोई ।^७ पर भासम दया दरद जेहि होई ॥५२॥
जिभ्या स्वाद इंद्री रस नाला ।^८ तेजे भोग कर्म सब काला ॥५३॥^८
निसदिन जोग भुगुति सत बानी । सहजहि मेटे नरक की सानी ॥५४॥

१ (क), (ग), (ब) देखि के = देखि के ।

२. (क) (ग) उतरहि पार = होए निजाए ।

३ (क) बसे = बसै । सगे = सागरी । (ग) सागै छमति सर छाहि । (ब) सगे सुरति सर छाहि ।

४ (ग) पुष्टप सुगध सुवास रस ।

५. (ग), (ब) बेकार = विकार ।

६. (क), (ग) नर = जन ।

७ (क), (ब) करहि = करै ।

८ (ग) करे विचार = करहि विचार ।

९. (क), (ग) (ब) सो जन = जो जन ।

१० (ब) जे = ज्यो ।

११ (क), (ग), (ब) नेवासा = सुवास ।

१२. (क) रूहि = करहि ।

१३ (क) (ग) करे = करै । (क) (ग) (ब) सब = सब ।

१४ (क) स्वाद इंद्री = स्वाद जो इंद्री ।

१५ (क) (ब) तेजे = तेजै । (ग) तेजे = तेती । (क) भोग = भर्म । (क) (ग), (ब) सब = सब ।

जौं सगि बंदन रगरि ना घावै । कसे भरषित भंग बदावै ॥८२॥
 औ सगि हीरा ना हने निनाई । सरा सोबा कसु कैसे बुझाई ॥८३॥^१
 जौं सगि चांदी ठाष ना दीवै । तौं सगि भोल जगत ना लीवै ॥८४॥^२
 कहै दरिया निमु सन्द है चारा । छुटि गो तिमिरि भयो उजिझारा ॥८५॥^३
 मोती पारस सब कोइ जाना । हीरा पारस सब जगत वसना ॥८६॥^४
 कंभन पारस करे बनाई । चांदी पारस सब जग साई ॥८७॥
 भवरि नग सब करे वसना । जवाहर जाहिर सब जग जाना ॥८८॥
 सतनुर पारस विरले केहु जाना । चाके सुरति साँष है ग्याना ॥८९॥
 सत रज्जुगि सत करे बनाई । मुकुति महातम औ जन पाई ॥९०॥
 सो हीरा है प्रसन्न करारा । मनबधित जग में उजिझारा ॥९१॥
 चाके संसे काल न घावै । भ्रम नगम मूल गमि पावै ॥९२॥
 हरि भगतन्हि औ ग्यान बसना । त्रिगुन फँस तेहु नहि जाना ॥९३॥^५
 मन बंदीहि फिरि निर्दहि जाई । सत करता मन के ठहराई ॥९४॥^६
 मनही बोलवा ब्रह्म वसना । मनही मन सुमिरन जग ठना ॥९५॥^७
 सत पुर्स बोए भापुहि भहई । पूजे माया निरंजन कहई ॥९६॥^८
 लीजे बोसता ब्रह्म विचारा । सुकित भँस सकल सवारा ॥९७॥^९

१ (क) ना हल = हने ना । (क) (ग) (ब) निनई = निनाई ।

२ (ऽ), (ग) (घ) सोबा = सोटा ।

३ (क), (ग) (ब) ना = नाई ।

४ (क) (ब) मौ = जाए ।

५ (क) (ग) (ब) सव = सम ।

६ (क), (घ) (ब) सव = सम ।

७ (क) (ग) करे = करै ।

८ (ग) चाके = चाक ।

९ (घ) ग्याना = मज्जा ।

१ (क) तेहु = केहु । (घ) ठेहु = तिगुह ।

११ (क) 'मन बंदीहि फिरि निर्दहि जाई ।' (ग) 'मन निर्दहि तुमि बंदीहि जाई ।'

१२ (ब) मनके = मन के ।

१३ (क) (ब) मनही = मनही के । (घ) मनही = मनही के ।

१४ (घ) भापुहि = भाते ।

१५ (क) पूजे = पूजा । (ब) पूजे = पूजे ।

१६ (ब) संवारा = संवारा । (घ) संवारा = संवारा ।

सोई सत गहो चित लाई ।^१ सत नाम निजु प्रेम बढ़ाई ॥६७॥
 गुरु गुरु में नेद बिषाय । सतगुर सोज करहु निदपारा ॥६८॥^२
 सुससी धारक मंत्र बखाना । राम धारक से सुमिरन ठाना ॥६९॥
 प्रांबर गुर बहिर है बेसा ।^३ पाखंड कर्म सबन्हु मिलि बेसा ॥७०॥
 जो मुख मंत्रे सिद्धि से पावै । सो सुमिरन वे सीख बिठावै ॥७१॥
 वह ठो नेद भगम है मूला । सत गहे सो होए असभूला ॥७२॥
 वह सो मुख रसने नहि कहिया ।^४ गहै सत परगट होए रहिया ॥७३॥^५
 वह सो भ्ररि है हृद बेहुंदा । होए साफ तेवै सब धंदा ॥७४॥^६
 मूठा पाखंड सब मिलि रबिया ।^७ पाखंड कर्म जीव कहु कहिया ॥७५॥
 मूठा जोग जुगुति नहि जाना । जोग जुगुति बिना कैसे माना ॥७६॥^८
 मूठा मद ब्याभि नहि चीन्हा ।^९ भवरी भोसध भौरि कहि दीन्हा ॥७७॥^{१०}

दोहा

सोइ दरद सोइ दाऊ, मिले हकीम जो भाए ।^{११}
 हर दम दाऊ नाम है, सतगुर दियो दिवाए ॥७८॥

श्रीपाई

जाते कफा कतस करि डारे ।^{१२} साफ मूर द्विस्टि नहि टारे ॥७९॥^{१३}
 पूष घट क्यहीं नहि डोरी । भ्यान रतन जुगुति जग खोली ॥८०॥
 औ लागि महस को खरि न पावै ।^{१४} कौन टहन कहु कासे सावै ॥८१॥
 औ लागि पुहुप गुये नहि माली । ती लागि हार क्यसे पिय डारी ॥८२॥

- १ (ग) प्यो = पश्यु ।
- २ (क), (ग), (घ) करहु = करी ।
- ३ (क) बहिर = बधिर ।
- ४ (क) कहिया = कहियै ।
- ५ (क) रहिया = रहियै ।
- ६ (ग) तेवै = तैवै । (क) (ग), (घ) सब = सम ।
- ७ (ग) सब = समग्रि ।
- ८ (क) 'मूठ लुकि बिना कहु कैसे माना ।' (ग) लुकि बिना कहु कैसे माना ।
- ९ (ग) बेद = वेद ।
- १० (ग) 'भवकदि भवरी भवरी कहि दीन्हा ।'
- ११ (ग) मिले हकीम = हकीम मिले । (क), (ख) (घ) जो = जो ।
- १२ (क) जाते = जाती ।
- १३ (क) डारे = डारी ।
- १४ (क) जो = जो ।

चौपाइ

यह तो नेद सबन्हि ते म्यारा ।^१ सत रूनि ई भसल करारा ॥१०७॥^१
 जो चाही मित्रु मुकुति करारा ।^२ तो मानो सत सभ्य हमारा ॥१०८॥^४
 सत सभ्य मुस भन्नित धानी । ब्रह्म अनूप प्रेम पद ग्यानी ॥१०९॥
 सुमिद नाम पित्त गहि सोई ।^३ वेद पढ़े का पंडित होई ॥११०॥
 सास्तर गीसा ग्यान धर्यावी । जीव के बया दरद नहि धावी ॥१११॥^५
 संझा छरपन करहि बसाना ।^६ भन्नित तेजि विसै रस पाना ॥११२॥^६
 मुभमा पितर के सेवा ठानै । बई बस पितरपछ मानै ॥११३॥
 मंजन संजम करे जिति नेमा ।^७ छोड़ि भगि पचल से प्रेमा ॥११४॥
 मुदहि भाख बजावहि धंटा ।^८ जी बाजीगर सेवरही बटा ॥११५॥^९
 ऐसो पाखंड करे बनार्ई ।^{१०} याउर लोग सम करे बडार्ई ॥११६॥^{१०}
 प्रंत क्हां देखहुं सो म्याना ।^{११} धादि क्हो ब्रह्मा परवाना ॥११७॥^{११}
 ब्रह्मा पूछा जोति से जाई ।^{१२} पुर्ष कवन क्हो समुझार्ई ॥११८॥^{१२}
 नित्रु गहि भर्ष मम क्हो बुझार्ई ।^{१३} धादि संत सब देहु वेसाई ॥११९॥^{१३}

१ (क), (घ) ते = तो । (क) ते = ते । (घ) ते = ते ।

२ (क) (घ) है = वह ।

३ (घ), (ङ) चाही = चाहे ।

४ (क), (ग) मानो = मानै ।

५ (क) सुमिरहुं भाम प्रेम पित्त सार्ई ।

६ (क) (घ) (घ) के = के ।

७ (क), (घ), (ङ) करहि = करे ।

८ (क) पाना = पाना ।

९ (क) (घ) प्रति अथ 'मंजन' पाठ स्वीकृत ।

१० (क) (घ), (ङ) भाख = भाखि ।

११ (क) (ग), (घ) सेवरही = सेवार्ई ।

१२ (क) करे बनार्ई = सम करे बनार्ई ।

१३ (क) सम धरै बनार्ई ।

१४ (ग) क्हा देखहुं = क्हा सो देखहुं ।

१५ (ग) धादि कंवर हम जो है परवाना ।

१६ (घ) 'ब्रह्मपूछा' अथ उच्यते है । (क) 'ब्रह्मा पूछहि मत्ता से जाई ।

१७ (घ) पुर्ष = पुंस ।

१८ (क) (घ) मम क्हो = मम क्हो । (घ) मम क्हो = क्हो ।

दोहा

सत असत चीन्हे नाहीं, मन बांधे परतीत ।^१
करामाति काएल करे^२, से बाजीगर जीत ॥८॥^३

चौपाई^४

करामाति सो सब वसना ।^५ नाटक देखि सब जगत मुलाना ॥६८॥^६
बाजीगर एक तमासा कीन्हा । सन की मुक्ति भरम करि सीन्हा ॥६९॥^७
नाटक नेदमा सबे देखावै ।^८ कडो मुक्ति काहे नहि पावै ॥१००॥^९
सो बाजी हरिभगत वसना ।^{१०} इष्ट पूजि सुमिरिह सब ग्याना ॥१०१॥^{११}
गुरु देखाए ऐंठि अस भाखा । पारखि कम सकल रषि राखा ॥१०२॥
रीषि सीषि के इष्ट जो रावै ।^{१२} मैरो मृत भोग जो सावै ॥१०३॥^{१३}
ठाकी मुक्ति क्वहि नहि होई । जम जन्म अहंदावै सोई ॥१०४॥
खसम छोडि अबरि लग लागी ।^{१४} उलटी चाम ग्यान सो पावै ॥१०५॥
ममिठ त्रिषि सब करे लमीरा ।^{१५} उलटी चाम अपत नहि पीरा ॥१०६॥

दोहा

जागो मैरो मृत यह, इष्ट पीर की साधि ।^{१६}
ठाकी मुक्ति क्वहि नहि,^{१७} जम जिब करी उपाधि ॥११॥^{१८}

- १ (क) (ग) बधि = बांधे ।
- २ (क) काएल = कपल । (क), (ग), (घ) करे = करे ।
- ३ (क) से = से ।
- ४ (ग) पात्रमात्र ।
- ५ (क), (ग) सबै = समै । (घ) सबै = समी ।
- ६ (क) (ग), (घ) सब = सम ।
- ७ (क) की = करे ।
- ८ (ग) सबै = समधि । (क) (घ) सबै = समै । (क) देखावै = देखानावै ।
- ९ (क), (ग), (घ) पाठ स्पीकत ।
- १० मय्यत = मरि ।
- ११ (क) (ग) (घ) सब = सम ।
- १२ (ग) के = को ।
- १३ (क), (ग), (घ) जो = सम । (क) रावै = राभा । (क) सावै = साध ।
- १४ (ग) 'अबर के लागी ।' (क) 'अबरि कह सवै ।' (घ) 'अबरि के लागी ।'
- १५ (क) १ १ संस्कार चौपाई अर्थगत है ।
- १६ (ग) पीर की = पीर कै ।
- १७ (क) क्वहि = कबै ।
- १८ (क), (ग) (घ) करि = करे ।

फूल प्रागे धरि कीन्ह समाधी । निनु वासर ध्यान रहे ओ राधी ॥११०॥
 धहुत समाधि कीन्ह ओ जोगा ।^१ सटा मिठा तेजा रस भोगा ॥१११॥
 प्रासि मूदि के करहि समाधी ।^२ प्रासन पवन जोग ओ साधी ॥११२॥^३
 धरहि ध्यान भस करहि विवेका ।^४ धपने क्यहि पुर्स नहि देखा ॥११३॥
 करि करि जोग कस्त तन भावै । पुर्स दस क्यही नहि पावै ॥११४॥
 तुखाहि पासं करम ओ कीन्हा । ताते पुर्स धरस माहि दीन्हा ॥११५॥^५

वेदा

कीन्ह पुर्स कुर्म के कीन्हा^६, रचा भवानी जानि ।
 ताके सोजहि ब्रह्मा^७ रहा हारि बिभ मानि ॥११॥^८

श्रीपाई

बहुत देवस भीति जव गएऊ ।^९ प्रादि भवानी सोजत अएऊ ॥११६॥^{१०}
 प्रादि भवानी बोलि बिचारी । गाइत्री से भस कहा पुकारी ॥११७॥
 जाहु गाइत्री ब्रह्मा के पास ।^{११} जाइ वचन करिहो परगासा ॥११८॥^{१२}
 ब्रह्मा से वचन क्यहि समुझई ।^{१३} बसो सुरत तुम्हे जोति बोसाई ॥११९॥^{१४}

गाइत्री वचन^{१५}

जाइ गाइत्री ब्रह्मा के ठाँक ।^{१६} बौसी वचन कहा ओ नाँक ॥१२०॥

- १ (प) ओ = वे ।
- २ (क) (घ) के = कै ।
- ३ (क) प्रासन = ऐसन ।
- ४ (ब) धरहि ध्यान = धरि धरि ध्यान ।
- ५ (ब) धरस = धरसन ।
- ६ (घ) कुर्म = कुम्ह ।
- ७ (घ) ब्रह्मा = बरमाहा ।
- ८ (क) (ग) रहा = रहे ।
- ९ (ब) 'जोतिबोधाव' उल्लिखित है । (क) (घ) अएऊ = गैऊ ।
- १० (क) (घ) अएऊ = गैऊ ।
- ११ (घ) ब्रह्मा के पास = ब्रह्मा पास ।
- १२ (क) (ब) (ब) करिहो = कहिहो ।
- १३ (क) (ग) से = सै । (क) क्यहि = क्यहै । (ग) (घ) क्यहि = कहिहो ।
- १४ (क) सुरत = तरित । (घ) सुरत = सुर्त । (क) तुम्हे = तुम्ह । (ब) तुम्हे = तुम्है ।
- १५ (क) (घ) में अपठित है ।
- १६ (घ) ब्रह्मा से ठाँक = ब्रह्मा ठाँक ।

को है पुर्ख का करि तुम नारी ।^१ बहु माया ते भरप विचारी ॥१२०॥^२
 तव तो हम तुम प्रवरि न कोरि ।^३ तुमहीं पुत्र हमहि हहि जोरि ॥१२१॥^४
 विना पुर्ख कहु कएसन नाऊ ।^५ पूछिजे कहां यताइव ठाऊ ॥१२२॥

बोहा^६

कहे जोति सुनु प्रह्ला^७, तुम जेठो पुत्र हमार ।^८
 पिता खोज कहां खोजहु^९, हम से यह संसार ॥१०॥^{१०}

धीपाई

कहे प्रह्ला सुनु मातु भवानी ।^{११} पिता खोज करव हम भानी ॥१२३॥^{१२}
 पुर्ख दरस देखव हम पांखी ।^{१३} तुमसे वचन बोलव एह साखी ॥१२४॥^{१४}
 करि परनाम जो बसे तुरता ।^{१५} परवत मार जहां एकता ॥१२५॥^{१६}
 तहां जाए भसोकरहि श्याना ।^{१७} करहि तपेस्या जोग जो जाना ॥१२६॥^{१८}
 करो ध्यान समाधि लगई । होइहैं पुर्ख मिलिहैं मोहि मारि ॥१२७॥^{१९}
 सुरंतहि मनमत उपजा भाऊ । पाखइ करम काल के नाऊ ॥१२८॥^{२०}
 ऐसो पाखइ कियो बनाई । पपस पूज जो चंन चढ़ाई ॥१२९॥^{२१}

- १ (क), (ग) (ब) तुम = तुम्ह ।
- २ (ग) 'बहु माया निरु अर्थ विचारी ।'
- ३ (ब) 'ज्योतिबोवाच पठित है ।
- ४ (ग) (ब) हमहि हहि = हमही हैं ।
- ५ (ब) 'प्रसाधाच' का उल्लेख है । (क), (ग) कएसन = बैसन । (ब) कएसन = करसन ।
- ६ (ब) 'ज्योतिबोवाच उक्तिवित है ।
- ७ (ग) कहे जोति प्रह्ला ।
- ८ (ग) जेठ । (क) (ब) तुम = तुम्ह ।
- ९ (क) कहा = क्या ।
- १० (ग) हमसे = हम से ।
- ११ (क) (ग) कहे प्रह्ला पुत्र माता भवानी ।
- १२ (क) (ग), (ग) पाठ स्वीकृत ।
- १३ (क) देखव = देखा । (ग) हम = निरु ।
- १४ (ग) बोलाव = बोली ।
- १५ (ग) जो बस तुरता = तब बड़ा तुरता ।
- १६ (क) 'मारि तहां ए र्थता ।
- १७ (क) अशोकहि = अशोकनिहि ।
- १८ (ग) करहि = करो । (क) जो जाना = जो ठाना ।
- १९ (ग) मिलिहैं मोहि मारि = मारम पीदि = म ।
- २० (क), (ग) काल के नाऊ = काल कर नाऊ ।
- २१ (ग) चंन = चतन ।

कहे गाइत्री बोलव हम साखी ।^१ पुर्ख भरस देखा निजु भांखी ॥१४८॥
 मुनि के ब्रह्मा भए उदासा ।^२ बेगि खसे ओठी के पास ॥१४९॥^३
 जहां घटि रहि प्रादि भवानी ।^४ करि प्रनाम प्रेम की वानी ॥१५०॥^५

ओठी बचन^६

हंसि के बचन जो बोलि सुरंता ।^७ कह्यो दरस पुर्ख के संता ॥१५१॥^८

ब्रह्मा बचन^९

तव ब्रह्मा भस बोसे बानी ।^{१०} कह्यो भेद गाइत्री जानी ॥१५२॥

गाइत्री बचन^{११}

बोली गाइत्री बचन विचारा ।^{१२} सत्त पुर्ख देखा करखारा ॥१५३॥^{१३}

ओठी बचन^{१४}

मुनु गाइत्री मूठ में बोसी ।^{१५} दीन्हो स्याप ममित हें बोसी ॥१५४॥^{१६}

गाइत्री बचन^{१७}

कोन कर्म कीन्ह हम पापा ।^{१८} जो तुम्ह हमके दीन्हो स्यापा ॥१५५॥^{१९}

१ (क) 'गाइत्री बोलवे साखी' ।

२ (क) के = के । (ग) भए = भया ।

३ (क) (ग) कहे = बखी ।

४ (क) रहि = रहे ।

५ (ग) (ब) प्रनाम = परनाम ।

६ (क), (ग) में अस्पष्टि है ।

७ (क) सं = सं ।

८ (क) (ब) के = के । (ग) के = के ।

९ (क) (ग) में अस्पष्टि है ।

१० (ग) बोसे = बोसे ।

११ (क) (ग) में पाठ नहीं है ।

१२ (क) गाइत्री = गायत्री ।

१३ (ग) पुर्ख = पुख्त ।

१४ (क) (ब) अस्पष्टि है ।

१५ (क) (ग) (ब) मूठ में = मूठ में ।

१६ (क) 'दीन्ह स्याप ममित बोसी' । (ग) 'दीन्ह स्याप ममित से बोसी' । (ब) 'दीन्ह स्याप ममित से बोसी' ।

१७ (क) (ग) अस्पष्टि है ।

१८ (क) 'कर्म कर्म हम कीन्हो पापा । (ग) कर्म कर्म हम कीन्हो पापा ।' (ग) 'कर्म कर्म कीन्हो हम पापा ।

१९ (क) 'जो तुम्ह कीन्हो हम कई पापा ।' (ग) हमके = हम कई ।

अलो वेगि जोति के पासा ।^१ कछो वचन तुम्ह सुनो सनेसा ॥१४१॥^२
 तुम्हें बोलावन हम जो भाई । जोति सदिस सुनी चिठि लाइ ॥१४२॥^३
 तुम्ह विनु होत है जय्य भसायी ।^४ अना तुरंत तुम्ह छोडो समाधी ॥१४३॥^५

प्रह्ला वचन^६

कोपि के प्रह्ला बोसे दानी ।^७ ते गाइत्री सदा भग्मानी ॥१४४॥^८
 बिना दरस क्यसे मिह जाई ।^९ पिता खोल करन हम भाइ ॥१४५॥^{१०}
 प्रब तो तन में सागी लामा ।^{११} बिना दरस कहु कइसन कावा ॥१४६॥^{१२}

गाइत्री वचन^{१३}

दोहा

कहु गाइत्री सुनु प्रह्ला^{१४} मानहु कहा हमार ।^{१५}
 पिता दरस कहा पाइहो^{१६}, माता दरस है सार ॥१४७॥^{१७}

प्रह्ला वचन^{१८}

श्रीपाइ

पूछे बोलेव कवन ओ दानी ।^{१९} कवन भेद कहुव सहिदानी ॥१४७॥^{२०}

- १ (ग) बसो = बसतु ।
२. (ब) 'कछो वचन सुनी सनेसा ।'
- ३ (म) संदेश सूत्री = संदेश सूत्रतु । (क), (ग) (प) चिठि लाई = चिठि लाइ ।
- ४ (क) होत है = होतु है ।
- ५ (ग) बसो = बसतु । (क) तुरंत = तुरित । (ब) छोडो = छोडो । (ग) छोडो = छोडतु ।
- ६ (क) (ग) में यह अपठित है ।
- ७ (क), (ग) के = कै ।
८. (क), (म) ते = तै ।
- ९ (ग) मिह = मिरिहि ।
- १० (म) करन = करव ।
- ११ (ब) तो = तौ ।
- १२ (क), (ग) कइसन = कैसन ।
- १३ (क), (ग) (म) में अरुजित है ।
- १४ (क) कहे = कहे ।
- १५ (क) 'मानहु वचन हमार' । (ग) 'तुम मानहु कहा हमार' ।
- १६ (क) (ग) पाइहो = पाइहौ ।
- १७ (क) (ग) (प) प्रति वा 'माता दरस' पाठ रहीहत ।
- १८ (क) (ग) में अपठित है ।
१९. (क) (ब) पूछे = पूछै ।
- २० (क) कहुव = कहेव ।

धमराए जिव करहि बिनासा ।^१ विनु चीन्हे प्रिय बाराहि फासा ॥१६५॥^१
 जैसे मारे गाए कसाई । बेदरए धून करे जिव बारी ॥१६६॥
 प्राप्तिह पहरे चोर है सोई ।^२ ठग ठाकुर जग भूजे बोई ॥१६७॥^२
 प्राणि जगाए घर घूटे ठानी ।^३ कएसे जखत दुसाबहि पानी ॥१६८॥^३
 जाके कारन जोगी जागै ।^४ उसटि सांप संपहेरिप्रहि सागै ॥१६९॥^४
 जाकर मछ सो करे प्रहारा ।^५ धीमर जाल मीन कहू बारा ॥१७०॥^५
 सीनि लोक है जास जंजाना । विरला बूझै भविगति कान्ना ॥१७१॥^६
 एके चोर सकल जग बंटे ।^७ बिना तेग कएसे रज मंटे ॥१७२॥
 प्राति बचस छीन है माई ।^८ बच देखे तब करे सराई ॥१७३॥^८
 मित्रक प्रिय है काल विकारा ।^९ मय भूजे जिव करे प्रहारा ॥१७४॥
 जमि करि कल्पे बस विनु मीना ।^{१०} धवरी प्राण काल न छीना ॥१७५॥^{१०}
 छस बस बुधि सबकी जो हरई ।^{११} बिसम वान उर अस्तर पहई ॥१७६॥

१ (ग), (घ) (ब) करहि = करे ।

२ (क) (ग) (ब) बाराहि = बारी ।

३ (क) प्राप्तिह = प्राप्ते ।

४ (क) 'ठग ठाकुर जग भूजे बारी' । (ग) (ब) 'ठग ठाकुर जग भूजे बोई' ।

५ (क) घूटे = छुपहि । (ग) घूटे = घुँटे ।

६ (क) कएसे = कैसी । (ब) कएसे = कैसी । (ब) कपडे = कपडे । (क) कुटाबहि = बोटाबहि ।

(ग) कुटाबहि = कुटाबै । (ब) कुटाबहि = कपडे ।

७ (क) जागै = जागे ।

८ (क) संपहेरिप्रहि = संपहेरिपै ।

९ (क), (घ) करे = करे ।

१० (क) (ग) (ब) प्रीति का 'धीमर' पाठ स्वीकृत ।

११ (ग) बूझै = बूझहि । (घ) कान्ना = कानसा ।

२. (क), (घ), (ब) बंटे = बंटे ।

१२ (क) है = करे ।

१३ (ग) (घ) जो = ज्यो । (क) (घ) (ब) देखे = देखै । (ग), (घ) तब = तबो । (क)

(घ), (ब) करे = करे ।

१४ (क) (ग) (ब) निप्ररा = निप्ररा ।

१५ (क) जैसे कल्पे बस विनु मीना । (ग) 'ज्यों जिव कल्पे बस विनु मीना' । (ब) 'जिमि करि कल्पेयो' ।

१६ (क) 'धवरीक प्रलमि काये छीना' ।

१७ (क) बचसै जो हरई = छमे के हरई । (ग) (घ) छब = छब ।

सतगुर वचन^१

बोप्लक बोएल तुम्हे तन सागै ।^१ जाकर कर्म सोइ संग जाग ॥१५६॥^१
त्रिमदेवा त्रिमर्मन जो भाखा ।^२ त्रिविधि ग्यान जगत मंह राखा ॥१५७॥^२
सतर मंतर नाटक जोगा । सास्तर वेद कथा रस भोगा ॥१५८॥^३

विस्नो वचन^४

विस्नो बौसै ब्रह्मा से बानी ।^५ घादि पुर्त निगुन तुम जानी ॥१५९॥
तब ब्रह्मा भस बोलै वचना ।^६ हाथ पांव नाहीं मुख रसना ॥१६०॥
सब ते भीन बोए रहै निरकार ।^७ 'सवि तिरछन नहि रूप प्रकार ॥१६१॥
जेठ जुगाधि समं तुम्ह जाना ।^८ 'तुम्ह ब्रह्मा भौ भविगति ग्याना ॥१६२॥^९

बोहा

मनकी प्रतिमा देखिके^{१०}, मानेबो बीत करार ।^{११}
एह मंत्र त्रिम देव का, बारेबो सकल पवार ॥१६३॥

बौपार्ई

गुरु सिद्धि के ब्रह्मा भूसै । विसम सरोवर सब मिति भूसै ॥१६४॥
बोगी बती यही मत छएऊ । भगम ग्यान भेद नहि पएऊ ॥१६५॥

१ (क), (ग) अपठित है ।

२. (ग) तुम्हे लन सागै = तुम्हें ली जाय ।

३ (ग) जागै = जाग्य ।

४ (क), (ग) त्रिम देव = त्रिदेवा ।

५. (ग), (ब) मह = मे ।

६ (क) कथा = गथा ।

७. (क) (ग) अपठित है ।

८ (क), (ग), (ब) विस्नो = विस्तु ।

९. (क) बौसै = बोसै । (ग) 'तब ब्रह्मा बोस बचना ।'

१० (क) 'समते भीन रहै निरकार ।' (ग) 'समते भीन रहै निरकार । (ब) 'समते भीम्य रहै निरकार ।'

११ (क) (ग) (ब) समे = समै । (क), (ग) (ग) तुम्हे = तुम्ह । (क) जाना = जानी ।

१२ (क), (ग) नौ = हूँ (ब) नौ = हो । (क) ग्याना = रबायी ।

१३. (क), (ग) देखिके = देखिडे ।

१४ (ब) मानेबो = मानो ।

अजर काया जिन्हि जुग भुग रासा ।^१ असल नाम ठाही को भासा ॥१८१॥
 ऊ नाहि बिनसहि मरन न जारा ।^२ हाथ पांव मुस वचन पिमारा ॥१८०॥
 सोई सस अजर करतारा ।^३ सत्तनाम है असल करारा ॥१८१॥
 बरनों अजर सोक परखाना । जहाँ बैठे सय हंस सुजाना ॥१८२॥
 अहवां मलके अजरा जोती । सेत मंडल मलके निजु मोती ॥१८३॥
 अजर सोक उदित उजिमारा । जहाँ पुर्ख है अछे करतारा ॥१८४॥^४
 जहाँ परलग है पुहुप विख्याया ।^५ भरे गुलाव मुख अमित पाया ॥१८५॥^६
 छत्र मनोहर सब सिर छाया ।^७ त्रिगसे पुहुप अंक सब घाया ॥१८६॥^८
 अमर कहा हस जहाँ पाई ।^९ 'बोलाहि वन सुगंध सोहाई ॥१८७॥
 अमर बस्तर महलि न होई ।^{१०} 'दूटे फटे कर्वाहि नाहि सोई ॥१८८॥^{११}
 घोबी घोए ना करे पकारा ।^{१२} 'दिन दिन सेत उदित उजिमारा ॥१८९॥^{१३}

बोहा

असल पदुम परकास है^{१४} 'तहाँ जिमी नाहि भोर ।'^{१५}
 अजिगति अगम अपार है, तीनि लोक के भोर ॥१५॥

- १ (ग) जिन्हि = जो ।
- २ (क) (ग) (ब) का प्रति का पाठ असल स्वीकृत ।
- ३ (क) (ग) ऊ = बोए । (क) (ग) मरन = मरै ।
- ४ (क), (ग) (ब) अछे = अजर । यही पाठ स्वीकृत ।
- ५ (क) (प) (ब) सब = सम ।
- ६ (ग) 'अहवां पुख अछे करतारा ।' (क) अहवां = अहवां ।
- ७ (ग) अहवां = अहवां ।
- ८ (क) (प) मर = मरै ।
- ९ (क), (ग), (ब) सब = सम ।
- १० (क) (ग) त्रिगसे = त्रिगसे । (क) ग), (ब) सब = सम ।
- ११ (क), (ग), (ब) कहा = कहा ।
- १२ (क) न = नि । (प) न = ना । (ब) न = नाहि ।
- १३ (क), (ग) दूटे = दूटै । (क) (ग) फटे = फटै । (प) कर्वाहि = कर्वाह ।
(क) नाहि = ना ।
- १४ (ग), (ब) पाए = बोई । (ब) ना = न । (क) करे = करहि । (ग) करे = करै ।
- १५ (क) उदित = उदित ।
- १६ (क) (प), (ब) असल = अरसल । (क) परकास = परकास ।
- १७ (क) जिमी = जामिनि ।

श्लोक

विषम सरोवर नम जल, धरि धरि जाने नाम ।
सुख सागर त्रिव द्योति क, धरु मनुष्य क जान ॥१४॥

श्लोकाः

मनुष्य जल सकल त्रिव फांग ।^१ पहरि प्रान नाम न रांग ॥१७७॥^२
कोटि जठन क वांभे गांठी ।^३ पहरि प्रान के सेन ही बाठी ॥१७८॥
मालहु सत सव्य हम माता ।^४ श्रीगुरु सुक्रिज जा त्रिव राता ॥१७९॥
बीन्हु तेहि कर प्रतिपाता ।^५ सत तुक्रिज ही म्यान विद्याता ॥१८०॥^६
छपलोक से हम धमि भाई ।^७ सत क्या जो इहा सुनाई ॥१८१॥
सुख परवत जल बहु सरारा ।^८ तेहि त्रिव सीढ़ी सत बरारा ॥१८२॥
वेद कितेव दुद फंद पसाग ।^९ तेहि फंद महु जीव वेसाग ॥१८३॥
पोता देह जीव सव राता ।^{१०} कर्म मनग वेद जो माता ॥१८४॥
कहे दरिया बिन्दु निर्मल वानी ।^{११} जाते मेटे नक की खानी ॥१८५॥^{१२}
जग में जस ही नाम परताना ।^{१३} मटेहि सकल दुख जम क ताता ॥१८६॥^{१४}
नाम विमल सत करे वलानी ।^{१५} ब्रह्मा विस्र से प्राये जानी ॥१८७॥^{१६}
उपये बिनसो अजर ना कहिया ।^{१७} धरि धरि देह बिनसि किरि रहिया ॥१८८॥^{१८}

- १ (क) (ग) (घ) 'वे वे वारे बाल ।'
- २ (क) कोटि क = कोटि है ।
- ३ (क) त्रिव = त्रय । (क) (ग), (घ) फांदा = फंद ।
- ४ (क) म = मै । (क) (ग) (घ) रांग = रं ।
- ५ (क) बांभ = बांभे । (घ) बांभ = बांभेहि । (घ) बांभ = बांभ ।
- ६ (क) 'बीन्हु तेहि जो करे प्रतिपाता । (ग) श्रीगुरु तहा करहि प्रतिपाता ।
- ७ (क) विद्याता = विद्याता ।
- ८ (क) (घ), (ग) से = सी ।
- ९ (क) दुद = दोह ।
- १० (क), (घ) (ग) सव = सम ।
- ११ (घ) कहे = कह । (क) बिन्दु = बिन्दु ।
- १२ (क), (ग), (घ) जाते धरि पाठ मेरे स्फुट । (घ) धरि में 'धरि पाठ ।
- १३ (घ) (घ) मेरहि = मेरे । (क) ताता = ताता ।
- १४ (क) 'नाम वि-ये करे बखानी । (ग) 'नाम विदोएक करहु बखानी ।'
- १५ (घ) विस्र = विमुन । (ग) कये = काली ।
- १६ (क) 'उपये बिनसो अजर ना कहिये ।' (घ) उपये बिनसे अजर ना कहिया । (घ) 'उपये बिनसे अजर ना कहिया ।'
- १७ (क) (घ) धरि = धरि । (क) रहिया = रहिये ।

चौपाई

ब्रह्म लोक ब्रह्म जो कीन्हा ।^१ बिस्त लोक बिस्तु रचि सीन्हा ॥२११॥^२
 सीबलोक सिब का प्रसयाना । एहि बिष भ्ररि लोक परवाना ॥२१२॥^३
 स्त्रिय स्त्रिय परवत है भाई । तहां घाम जो रखा बनाई ॥२१३॥^४
 एता लोक नाहि विस्तारा ।^५ रघो घाम तहां मंदिर सवारा ॥२१४॥^६
 यह सब कित्तम कियो बनाई ।^७ तहवां समत कास का भाई ॥२१५॥^८
 यह किर्म बिरसा केहु जाना । तहां पयल है जिमी बनाना ॥२१६॥
 तहवां बाद सूर्ज दिन राती ।^९ अग मग तारा उगे बहु भांती ॥२१७॥^{१०}
 तहां न परलंग है पुहुप विद्याया । तहां न फूल मंदिर है छाया ॥२१८॥
 तहां धन नाहि पुहुप बेवाना ।^{११} तहां चौर नाहि भविगति दाना ॥२१९॥^{१२}
 तहां पिठख ना भन्निठ बालै ।^{१३} बन सुवन तहां नाहि भाँवै ॥२२०॥
 समर काया तहां हंस नाहि पावै ।^{१४} फिरि भरमे चौरसी भाँवै ॥२२१॥^{१५}
 तीनि लोक है कास के हाया ।^{१६} घरि घरि ठोके सबके माया ॥२२२॥^{१७}
 परदा एक निरजन डारा ।^{१८} तीनि लोक मो मन करताय ॥२२३॥^{१९}

१ (क) ब्रह्म = ब्रह्मा ।

२. (प) बिस्तु = बिस्तुन ।

३ (ग) सिब = सिब ।

४ (क) (घ) भाई = भाई ।

५. (घ) तहां = तहां ।

६ (क) (घ) (ग) सब = सम ।

७ (घ) (ग) तहां = तहां । (क) का = के । (ग) का = के । (घ) का = के ।

८. (ग) सूर्ज = सूर्य ।

९. (क) तारा = तारा । (क) (ग) उगे = उगे ।

१० (घ) 'तहां धन नाहि पुहुप बेवाना ।'

११ (क) तहां = तहां । (क) (ग), (घ) चौर = चौर । (क) दाना = दाना ।

१२ (क) (ग), (घ) तहां न पिठख न भन्निठ बालै ।'

१३ (क), (घ) समर = समर । (क) भाँवै = भाँवै ।

१४ (क), (घ) फिरि = फिरि । (क), (घ) (ग) भरमे = भरमे । (क), (घ) (ग) चौरसी = चौरसी । (क) भाँवै = भाँवै ।

१५. (ग) के = के ।

१६ (क) घरि घरि = घरे घरे । (क) (घ) ठोके = ठोके । (ग) सबके = सबके । (घ) सबके = सबके ।

१७ (क) एक = डारि ।

१८. (क) मो = मैं । (घ) मो = मनो । (क) मन करताय = मन करताय ।

श्रीपार्श्व

प्रविगति श्रीं सवे सिन राग ।^१ प्रविगति पृहप पनंग है राग ॥२००॥^२
 प्रविगति प्रविग सव कोइ चार्लै ।^३ पन पल सुरनि प्रेम स गल्लै ॥२०१॥
 सुख सागर है प्रविगति वानो ।^४ जो जिव जाए होए निग्वानी ॥२०२॥^५
 जो त्रिव जान सव्हि मान ।^६ सोई लोक पेघाना ठान ॥२०३॥
 हिरए मुख बोले समवानो ।^७ पिबै प्रेम तहाँ प्रविगति त्वानी ॥२०४॥^८
 मर्ताह विलाए तजे सत्र घोला । सीन संनाए प्रगम गमि पला ॥२०५॥
 तेजे भोग रस गेग विकारा ।^९ जोग जुगति रस रूँ करारा ॥२०६॥^{१०}
 पहिले सत तन भूल दिहाई ।^{११} त्रिना मस मूल नहि पाई ॥२०७॥
 जीव के पूजि नाम गहि रखै ।^{१२} बह्य दिवाए प्रविगति रस चार्लै ॥२०८॥^{१३}
 दिम्बि दिस्ति मगन है बोरी । प्रेम प्रीति प्रविगति रस बोरी ॥२०९॥
 मंपूरन कना ब्रह्म उजिभाए । तन बी तपन मेटा जम जाए ॥२१०॥^{१४}

श्रीश्या

करें दरिया बूमरु गमी,^{१५} मेद ब्रह्म निरु ग्यान ।
 प्रगम गमी कर ग्यान में,^{१६} पूरो पद निरवान ॥२१॥

१ (क) (ग) शौर = संहर । (क) (ब) सवे = समष्टि । (ग) सवे = समै ।
 २ (क) (ग), (ब) 'प्रविगति पृहप है राग ।'
 ३ (क), (ग), (ब) सव = सम ।
 ४ (क) प्रविगति = मुख ही । (ग) प्रविगति = मुख है । (क) (ग) (ब) वानी = बानी ।
 ५ (क), (ब) जाए = जाहि । होए = होहि ।
 ६ (क) जो जीव जो कन सव्हि मानै । (ग) जो जीव सत सव्हि मानै ।
 ७ (ग) दिवर = दिव्या । (क), (ग), (ब) बोले = बोले ।
 ८ (ग), (क) पिबै = पाई ।
 ९ (क), (ग) (ब) विघरा = वेधरा ।
 १० (ग) जुगति = जुगति ।
 ११ (क) पहिले = पहिले ।
 १२ (ग), (ब) के = है । (ग) रखै = रखी ।
 १३ (ग) चार्लै = चली ।
 १४ (ग) मेटा = मेरे ।
 १५ (क) (ग) 'करें दरिया बूमरु ।' (ग) 'करें दरिया बूमरु मानी ।'
 १६ (क) (ग), (ब) में = है ।

अवन सिखावहि भोग बेसासा ।^१ एहि करता रे मखव तमासा ॥२३३॥^२
 अनक रिखी घर रही कुमारी ।^३ रत्ना सुधमर जग परचारी ॥२३४॥
 यरा धनुस सही बड़ा कठोरा ।^४ एके मोहनी जगत बठोरा ॥२३५॥^५
 रिखीराज तहवां खलि गएऊ ।^६ अनक सुधमर बहुवां ठएऊ ॥२३६॥^७
 त्रिस्वामिज ओ मत्र विचारा । रामचन्द्र तहवां पगु डारा ॥२३७॥^८
 रिखि के संग अनकपुर गएऊ ।^९ अनक सुधमर देखत भएऊ ॥२३८॥

बोझ

देखहि कौतुक नर नारि सब^१ कोमल राजकुमार ।^२
 सीता उठि ऋगेशी भयकहीं सुंदर प्रम पिमार ॥१८॥^३

भीषाई

मोहनी दान राम कहू सागा । मए बिकल मनमठ होए जागा ॥२३९॥^४
 रगभूमि धनुस जहां राखा । तोरा भनुस तब जए जए भाखा ॥२४०॥^५
 गावहि मंगल सब नर नारी ।^६ कीन्ह ब्याह सब जग परचारी ॥२४१॥^७
 त्रिमुधन आके सम कोइ जाना ।^८ सो मोहनी के हाप विकाना ॥२४२॥^९

१ (क) (ब) बेसासा = बिसासा ।

२ (क) रे = के (ग) रे = कै । (ब) रे = कए ।

३ (ग) घर = बिति ।

४ (ग) बरा = भार ।

५ (ग) एके = एकै ।

६ (क) (ग) (ब) राख = राखा ।

७ (क) ठएऊ = रहैऊ ।

८ (क) डारा = डारी ।

९ (ब) गएऊ = कएऊ ।

१ (क) नर नारि सब = नर श्री भारी । (ब) नर नारि सब = नर नारि सम । (ब) नर नारि सब = नर नारी ।

११ (ग) कोमल = कमल । (क) राज = राज । (क) कुमार = कुमार ।

१२ (क) सु बर = सु दर । (क) पिमार = विपारि ।

१३ (क) 'जे बिकल होए मनमठ ज पा ।'

१४ (क), (ग), (ब) जए जए = जै जै ।

१५ (क) (ग) (ब) सब = सम ।

१६ (क) ब्याह = विवाह । (क) (ग), (ब), सब = सम ।

१७ (ग) (ब) कोई = कय ।

१८ (ग) क = कै ।

वेद क्लेश वहाँ से जाना ।^१ भागे गमी म्यान नहिं घाना ॥२२४॥^१
 छपलोक सहि कीन्ह पमाना ।^२ एह भेद विरला केहु जाना ॥२२५॥^२
 छनलोक सहि हुम बलि भाइ ।^३ जमूनीप जिव ब^४ छोड़ाई ॥२२६॥
 सत्त पुर्य किरि भाजुहिं भाए ।^५ निबू भे^६ सब हमाहिं मुनाए ॥२२७॥^७
 धारि संत सब परवाना ।^८ सोच वग्न क्या सब म्याना ॥२२८॥^९
 सब बीष छपलोक की वानी ।^{१०} बूमहु सत्त सत्त यह वानी ॥२२९॥^{११}

श्लोक

सतगुरु मानिक जीष के^{१२} देखहु निगमन म्यान ।
 कहें दगिया धोना सजो^{१३} देखहु सत्त निमान ॥२३०॥^{१४}

चौपाइ

रामब्रह्म दसग्य पिह बहल ।^{१५} तासो गुरु बसिष्ठ जो रूळ ॥२३०॥
 राम नाम जो मत्र बखाना ।^{१६} विदित बिन्ति मुमिरहिं सज गाना ॥२३१॥^{१७}
 स्वादिक रामस एह सब भाखै ।^{१८} राज काय रिनि मन मह रामै ॥२३२॥^{१९}

- १ (क) वहाँ = एतना । (ब), (घ) से = सै । (ग) से = सेहि ।
- २ (क) घाना = जाना ।
- ३ (क), (घ) सहि = सै । (ग) सहि = सेहि ।
- ४ (ग) बेटु = बेटा ।
- ५ (क) (ब) सहि = सै ।
- ६ (क) भाए = भाइ ।
- ७ (क) मुनाए = देखाए ।
- ८ (क), (ग) (ब) वग्न = वगै ।
- ९ (क) 'बरनौ लीक क्या मगबला' ।
- १० (क) (ब) छप = छप । (घ) छप = छपै ।
- ११ (क), (घ) बूमहु = बूमै । (ग) 'बूमहु संत सत्त महिरानी ।'
- १२ (क) (घ) जीष के = जीष कै ।
- १३ (क), (ग) तेजो = तेजहु ।
- १४ (क) देखहु = निरखहु ।
- १५ (क), (ग), (घ) बहल = भैल ।
- १६ (क) राम नाम = राम राम । (ब) बखाना = बखाना ।
- १७ (क) सज गाना = सजाए । (घ) सज गाना = गाना । (ब) सज गाना = सज गाना ।
- १८ (क) (घ) (ग) पष = पष ।
- १९ (क) काय रिनि = काय बय रिनि । (क) (घ) (ग) मंद = मंदै ।

सिया राम सखन संग भाई । तीनिउ प्रात जंगल बंहे जाई ॥२३३॥^१
 पत्रकुटी जो तहां सभारा । क^१ मूल सब बीन्ह महारा ॥२३४॥^२
 करहि तपस्या संग सिए नारी ।^३ रहहि जगल दुख सहहीं भारी ॥२३५॥^४
 मन ने एक परिपथ लगार्ई ।^५ माया भ्रिषा तहां बलि घार्ई ॥२३६॥
 कलक रूप बंधल है चोरा । देखा राम जो घनुख टंकोरा ॥२३७॥^६
 सून मह निकट धूरि बलि जाई । पीछे राम सगे तव घार्ई ॥२३८॥^७
 पागे ती जंगल जहां भारी ।^८ कोह काफ जहवां प्रधियारी ॥२३९॥

सीता बचन^९

रोषहि सीम बहुत बिसवार्ई । सखन जाए दसहुं तुम भाई ॥२६०॥^१
 की तो बाध सिध ने मारा ।^२ की मिर्गा नहि हृष्यो भुधारा ॥२६१॥^३

अशुभन बचन^४

लखन विचारहि मन पछताइ ।^५ दुई दुख मोही व्यापेवो भाई ॥२६२॥^६
 इहां रहो सीता दुख माना ।^७ रोषहि बचरि विचारहि घ्याना ॥२६३॥^८

१ (क), (घ) तीनिउ = तीनो । (ङ) (च) (ब) मूल = मानि । (क) बंहे = बँडे । (ग) (घ) बंध = बँडे ।

२ (क), (घ) सब = सम । (घ) सब = करत ।

३ (क) (घ) (च) तपस्या = तपेस्का ।

४ (क) रहहि = रहे । (क) सहहीं = सहैवो ।

५ (क) ने = नै ।

६ (ग) देखा = देखी ।

७ (क) पीछे = पीछे । (क) सगे = लगा । (ग) सगे = साथे ।

८ (क), (ग), (ब) ती = प्ये ।

९ (क), (घ) (ब) अपठित है ।

१ (ग) बखन = सखन । (ग), जाए = जाइ । (ग) दसहुं = दसो ।

११ (क) (घ) की तो = की तो ।

१२ (क), (ग) (ब) हृष्यो = हरेवो ।

१३ (क) (ग) (ब) में अपठित है ।

१४ (घ) लखन = लखन । (क) पछताई = पचताइ ।

१५ (क) व्यापेवो = व्यापल । (घ) व्यापेवो = व्यापेवो ।

१६ (क) रोषो = रोषी । (क) घ्याना = छीना ।

१७ (क), (ग), (ब) बचरि = बुची ।

तीनि लोक जाके परवाना ।^१ ता सिर कावे कीन्ह पवाना ॥२४९॥^१

दीहा

तीनि लोक के ठाकुर^२, मुनि परा भव ग्याल ।^३

ओ मोहनी सुरनर मुनि हव^४, सो न परा पहचान ॥१६॥

चीपाइ

मन बरित्र उन्हई नहि जाना ।^५ जा ठाकुर तिनि लोक बखाना ॥२४४॥^६

एक निरंजन सब कोइ चावै ।^७ प्रबिगति की गति पाग ना पावै ॥२४५॥

ओ ठाकुर करता है रामा । ताके भोग बखन हए जाना ॥२४६॥^८

ताके राज काज का सोगा । ताके नागि पृथ का नोगा ॥२४७॥^९

मोहनी माया धुमुकि विष सोम्हा । ठारि ठारी ते नहि चीन्हा ॥२४८॥^{१०}

सोठा मबानी प्रिहि से भाए ।^{११} राज काज सब मंत्र सुनाए ॥२४९॥^{१२}

प्रबिगति की गति जानि न भएऊ ।^{१३} राज छोड़ाए जंगल क गएऊ ॥२५०॥^{१४}

सोठा उठिके संग जो लागी ।^{१५} काम दगा नीम्हो सिर मांगी ॥२५१॥^{१६}

गेवाहि बखपहि सोग सतापा ।^{१७} बखन कम कीन्हो विधि पापा ॥२५२॥

१ (ग) जाके = जाके ।

२ (ग) चावे = कावे ।

३ (ग) के = है । (ग) के = कर ।

४ (क) 'मुनि परे मगवान' । (ग) 'मुनि परा मो ग्याल' ।

५ (क) हवे = है । (ग) हवे = हवे ।

६ (क) मन बरित्र = मन के बरित्र ।

७ (क) (ग) तिनि लोक = तिनि लोक ।

८ (क) (ग), (ब) । पर = पर । (क) कोर = कर ।

९ (क) (ग) हए = है ।

१० (ग) पुख = पुख ।

११ (क), (ग) ते = ते ।

१२ (क), (ग) से = से । (ब) से = से ।

१३ (क), (ब) सब = सब । (ग) सब मंत्र = सब मंत्र ।

१४ (क) बखि = बखि ।

१५ (क), (ग), (ब) छोड़ा = छोड़ा । (क) ख = है ।

१६ (क) उठिके = उठिके । (ब) उठिके = उठिके ।

१७ (क), (ब) सोम्हो = सोम्हो ।

१८ (ब) रोवाहि = रोवाहि ।

बाहर भीतर खोजहि आई । रोवहि राम नखन दुनो भाई ॥२७५॥^१
 रोवत खोजत मया विद्याना ।^२ खोजत बन अही सकल निगना ॥२७६॥^३
 प्रागे होए गमी जो खिन्हा । सीता ती रावन हरि सीन्हा ॥२७७॥^४

दोहा

इहां राम उहा रावना^५ वाजी रचो बनाए ।^६
 मन परिपंच जानेवो नही^७, सीरे रन में आए ॥२१॥^८

चौपाई

राम किया रावन सकुचुना ।^९ मया गर्भ नहि रखा नमूना ॥२७८॥^{१०}
 तीनी भूमन राम जो राजा ।^{११} संग सिधा लिए मया भकाबा ॥२७९॥^{१२}
 करे विबेक विचारे कोई ।^{१३} सस सख्य यूझे नर सोई ॥२८०॥^{१४}
 नारी संग होसे रस भोगा ।^{१५} नकि भाव होसे नहि भोगा ॥२८१॥^{१६}
 नारी रन है संग विचार ।^{१७} जानि के पाव भगिति में डारा ॥२८२॥^{१८}

१ (क) दुनो = दोन ।

२ (क) मया = मयी । (प) मया = मण्ड । (क) पञ्चि-भ्रम-वय—

‘खोजहि बनखंड एकस निगना रोवत खोजत मनो विद्याना’ ।

३ (ग) खोजत = खोजा ।

४ (क) ती = तो । (क) ती = तब ।

५ (क) इहां = इतल (ग) इहां = जोइ ।

६ (प) रचो = रची ।

७ (क) परिपंच = इपंच । (क) जानेवो नहीं = जानै नहीं । (ग) जानेवो नहीं = जानै नहीं ।

८ (क) में = मेंह । (क) में = मेंह ।

९ (क), (ग) सकुचुना = उकुचुना ।

१० (क) नमूना = अनुमाना ।

११ (क) (ग), (क) तीनि भूमन के राम जो राजा ।

१२ (क) लिए = ले ।

१३ (क) (क) करे = करै । (क) (ग) विचारे = विचारै ।

१४ (क) यूझे = यूझै । (ग) (क) यूझे = यूझु । (क) (ग) विचारे = विचारै ।

१५ (क), (क) होसे = होखै । (ग) होखे = होए ।

१६ (क), (ग) होसे नहि भोगा = नहि होखै भोगा ।

१७ (क) (ग) (क) विचार = बेचारा ।

१८ (क) (ग), (क) जानि के = जानि के । (क) में = में । (क) में = मेंह ।

मह परिपंष लखन ने जाना ।^१ सोने भ्रिगा नहिं मह्य समाना ॥२६४॥^२
सोने भ्रिगा बोसे नहिं चलई ।^३ माया रूप देह एह घरई ॥२६५॥

दोहा

सत के रेखा पंखि के^४, सिम सीपा छेहि जानि ।^५
जौं सगि राम पलटि हम भावहि^६, सीम बचन सेहू मानि ॥२०॥

बीपाई

एल बल बुधि कोई जो छरई । रेखा से बाहर नहिं टरई ॥२६६॥
सस के रेखा बँटु बिचारी ।^७ बाहर पाव तनिक नहिं बारी ॥२६७॥
ससन क सस जिव बसे सरीरा ।^८ सब परिपंष जानु मति धीरा ॥२६८॥^९
ससन गए राम के पासा ।^{१०} इहवां कासे कीन्ह तमासा ॥२६९॥^{११}
गेषमा मस्तर भेस जो कीन्हा । भाए सीता कहू भासिस दीन्हा ॥२७०॥^{१२}
दामो रूप सीता नहिं कीन्हा ।^{१३} ससन कहा कछु गमि ना कीन्हा ॥२७१॥^{१४}
नारीचोर परिपंष जो कीन्हा ।^{१५} बुधि के बल सीता हरि सीन्हा ॥२७२॥
संकापति लका के गएऊ ।^{१६} पलटि राम प्रिहि लोजस भएऊ ॥२७३॥
पत्रकुटी देखा धंधिमारा ।^{१७} सोजहि चहुं दिशि करई पुकारा ॥२७४॥^{१८}

१. (य) लखन = लखन । (क) ने = नहि । (ग) ने = ने ।
२. (क) के = का । (क) नहिं = कहि ।
३. (क), (ग) (ब) सोने भ्रिगा = सोने का भ्रिगा । (ग) बोस = बोसै ।
४. (ग) पंखि के = लौंखिंके ।
५. (क) सीपा = सीपी । (ग) सीपा = सीपे ।
६. (ग) राम पलटि = लपटि ।
७. (ग) के = कै । (ग) रेखा = रेखे । (ग) बँटु = बँटे ।
८. (य) लखन = लखन । (ग) सत जिव = सत ।
९. (क), (ब) सब = सम ।
१०. (ग) कएन = लखन ।
११. (क) इहवां = इहाँ । (क) (ग) काल कीइ = काल चल कीइ ।
१२. (ब) कहू = के ।
१३. (क) दामो = दामो ।
१४. (ग) लखन = लखन । (ग) (य) कछु = कछु ।
१५. (क) नारीचोर = नारी चोर ।
१६. (क) के = कै । (ग) के = कै ।
१७. (ग) देखा = देखि ।
१८. (ब) देखा = देखे ।

जों भगि सतगुर मिले न दाता ।^१ तौ भगि काम करे उरपाता ॥२१३॥^२
 खोजहुं सतगुर जो जिय बाँधै । नाहिं तौ काम सदा छिर भाँधै ॥२१४॥
 नाहिं तौ बन्हू के हाथ बिकाना ।^३ खोजहुं सतगुर निर्मल ग्याना ॥२१५॥
 चीन्है विना सुर नर मुनि गएऊ । मन परिषंभ जानि नहिं भएऊ ॥२१६॥
 रिखि जो जाए तपस्या कीन्ह्या ।^४ विन्नि त्रिस्टि माहीं चित वीन्ह्या ॥२१७॥
 कुदिरिस्टि नारि तासु चित लागे ।^५ मछोवरि वलि काम जो लागे ॥२१८॥
 सो रिखि काल के हाथ बिकाना ।^६ ठाकर सिपिख जो करे बखाना ॥२१९॥^७
 जो इन्दी ग्रहि राखिन्हू जोगे ।^८ सो जन छल बस कीन्हो भोगे ॥३००॥^९
 तासु नारि सो भए जो ब्यासा ।^{१०} कीन्हो बेव ग्यान परगसा ॥३०१॥
 ताके सब ब्रह्मा करि भाँधै ।^{११} छोई बेव जगत सब राँधै ॥३०२॥
 पाखंड करि के ग्यान सुनावै ।^{१२} असस जोग कुगुति नाहिं भावै ॥३०३॥
 सस बिबेक बिरजा केहु भएऊ ।^{१३} सोह मता मुनि ब्यानिन्हू ठएऊ ॥३०४॥^{१४}
 सो भगु बसत सुगम सब भागी ।^{१५} मनमत्त ग्यान भोग रस पागी ॥३०५॥
 ब्यासधुन सुखदेव जो भएऊ ।^{१६} जोग कुति ब्यास मत ठएऊ ॥३०६॥
 प्रस्य दिबेक भगि उन्हिं जाना ।^{१७} एके बन्हू त्रिस्टि मँहू जाना ॥३०७॥^{१८}

१ (क) न = नहिं । (ख) (घ) मिले = मिलै ।

२ (क), (ग) (ब) करे = करै ।

३ (ग) तौ = त । (क), (ग), (ब) बन्हू = बम ।

४ (क) जो = जो । (क) (ग) (ब) तपस्या = तपेस्या ।

५ (क) तसु = तसो ।

६ (क) जो करे = जय करै । (ब) पंक्ति-प्रत्यय—

ता करि सिपिख करै बखाना ।

छे रिखि जग है हाथ बिकाना ॥

७ (क) राखिन्हू = राखै । (ग) राखिन्हू = राखिनिहू ।

८ (क), (ग) (ब) जम = मन ।

९ (क) तसु = तसो । (क) सो भए जो = सो मनो । (ग) सो भए जो = सो मैह जो । (ब) सो भए जो = सो भएयो ।

१० (क) ताके सम खोह ब्रह्म करि भाँधै । (ग) 'ता कह सम ब्रह्मा है भाँधे ।' (ब) 'ताके सम ब्रह्मा करि भाँधै ।'

११ (क), (ग) करि के = करि कै ।

१२ (क) केहु = कै । (ग), (ब) केहु = कहै ।

१३ (ग) सोह = सो । (क), (ग) (ब) ब्यानिन्हू = ब्यानी ।

१४ (क) (ग) (ब) सब = सम ।

१५ (क) एके = एक । (ग) एके = एकै । (क) मँहू = मैं । (ग) मँहू = मैं । (ब) मँहू = मँहू ।

अनल तून के होए परसंग ।^१ पल में जारि करे सब भंग ॥२८३॥^२
 आपर दिस्टि भारी की सागी ।^३ सीतल तन अगिनी होए जागी ॥२८४॥^४
 जैसे हँडिया भदहन दीजै ।^५ प्रागि लगाए गर्म करि सीजै ॥२८५॥^६
 प्रागी भान बाफ ओ भाई ।^७ कामिनि सग काम ओ भाई ॥२८६॥
 होए परसंग जहाँ तप मलीना ।^८ जैसे छीर - टाई मीना ॥२८७॥^९
 जैसे घून काठ के सीन्हा ।^{१०} सन रस लेह छाहि ओ दीन्हा ॥२८८॥
 निति निति हीरा म्भरे जो कोई ।^{११} भ्रगत भारत घुनि घुनि सेई ॥२८९॥
 जैसे ब्रह्म भया ओ छोना ।^{१२} गया तप जिव भया मसीना ॥२९०॥^{१३}
 बिना काम तप नाहीं जागी ।^{१४} जोगी जुगुति अतम से पागी ॥२९१॥^{१५}

श्लोका

कहँ बरिया समुच्छ्रु स्यानी^{१६} जोग जुगुति निगु स्यान ।
 मानहुँ सध्व हमार^{१७} जो जिव रहे प्रमान ॥२९२॥^{१८}

श्लोका

जुगुति बिना सब जोग बौराना ।^{१९} जौ सगि जुगुति स्यान नहि जाना ॥२९२॥

१ (क) तून के = तुले के । (ग) तून के = तून का ।

२ (क) में = माँ । (क), (ग) (ब) करे = करै ।

३ (क) आपर = अहाँ पर ।

४ (ग) तन = तन ।

५ (ब) जैसे = जैसे ।

६ (घ) गर्म = गरम ।

७ (क) (ब) प्रागी काँब = कापी काँब । (घ) कापी काँब = कापी प्रागि ।

८ (क) 'होए परसंग तहाँ करे मलीना । (घ) 'होए परसंग ओ तप मलीना ।'

९ (क) (ग), (घ) टाई = बटाई ।

१० (क), (ग), (ब) जैसे घून काठ का लीन्हा ।

११ (क) हीरा म्भरे जो कोई = हीरा म्भरे कोई । (ग) हीरा म्भरे जो कोई = हीरा म्भरे का
 कन कोई । (घ) हीरा म्भरे जो कोई = हीरा म्भरे जो कोई ।

१२ (क) जैसे = देखियो । (घ) जैसे = तइसे ।

१३ (क) जिव = जो ।

१४ (क) जागे = जागे । (ग) जागे = जागी ।

१५ (क) पागे = पागे । (ग) पागे = पागी । (क) (ग) से = से ।

१६ (ग) समुच्छ्रु = सुनु । (ग) स्यानी = स्यान ।

१७ (क) हमार = हमार ।

१८ (क) ओ = जो ।

१९ (क) 'जुगुति बिना जोरी बौराना ।'

मनसा दूत वहां ले गएऊ ।^१ इद्र समाज जहां सब रहेऊ ॥३२०॥
 इद्र ऊठि के पासन दीन्हा ।^२ बहुत भाति सो भावर कीन्हा ॥३२१॥^३
 तब रिखि ऐसन बोलि बिचारी ।^४ नाच देखा बहु सुवर नारी ॥३२२॥^५
 सब उरमसि के बेगि बोलार्ई ।^६ सग समाज वहां बलि भाई ॥३२३॥
 उमटा पमटा कीन्हो साबा ।^७ रिखि के मन में सागी साबा ॥३२४॥^८
 कान रूप उर में भसि भाई । रिखि के मन में क्रोध खगाई ॥३२५॥^९
 कान रूप रिखि माहीं कीन्हा ।^{१०} ठाके रिखी खान जो दीन्हा ॥३२६॥^{११}
 वीन सुरगिनि निमु होए नारी ।^{१२} सवा पास जिब घात सुबारी ॥३२७॥^{१३}
 कीन्हु तपस्या उन मन पारी ।^{१४} सो कोतुक का देखी नारी ॥३२८॥
 प्रान छोटि बुवि करे प्रहारा ।^{१५} ता सिर कान लेने बरिभारा ॥३२९॥^{१६}

दोहा

देखहु बौतुक सब मिलि^{१७} मनमठ भाव प्रनंग ।^{१८}
 सस सख बिन्हे बिना काल करे जिब मंग ॥३३॥

१ (क) ले = ले ।

२ (क) इन्द्र समाज जहां सब रहेऊ । (ग) 'इन्द्र समाज जहां सब रहेऊ । (ब) 'इन्द्र समाज जहां सब रहेऊ' ।

३ (ग) इन्द्र ऊठि पासन दीन्हा ।

४ (क) (ग) (ब) से = क ।

५ (क) (ग) (ब) बोलि = बोले ।

६ (ग) देखा = देखी ।

७ (क) (ब) उरमसि के = उरमसि के । (ग) उरमसि के = उरमसि के । (उर्भरी)

८ (क) (ब) कीन्हो = कीन्ही ।

९ (क) (ग) (ब) मन में = मन में ।

१० (क) (ग) (ब) मन में = मन में ।

११ (ग) कान रिखि माहीं कीन्हा ।

१२ (ग) खान = खान ।

१३ (क) निमु = सो ।

१४ (क), (ग), (ब) सुबारी = सुबारी ।

१५ (क) (ग) (ब) तपस्या = तपस्या ।

१६ (क), (ग) (ब) छवि = बुवि । 'बुवि रबीकृत ।

१७ (क) पास = पास ।

१८ (क) (ग), (ब) मन = मन ।

१९ (ग) मनमठ = मनमठ । (क) भाव = भाव ।

उलटि यास नहि कहे समुझई ।^१ ऐसो ब्रह्म म्यान उन्हि पाई ॥३०८॥
मए सिद्ध ओ ब्रह्म पुतीता ।^२ सास्तर वेद पढ़ा नहि गीता ॥३०९॥^३
ब्रह्म सख्य म्यान उन्हि जाना ।^४ जोगी सो ओ मन पहचाना ॥३१०॥

बोहा

मन परबे विनु जोगी^५, बारे मोहनि मारि ।^६
कहें दरिया परगट देखो, सत्त सख्य निरुवारि ॥३११॥

जीपाइ

राम रिखी दुर्वाता रहेक । जहवा जन्म फिस्त के मएक ॥३११॥^७
बीन्हो जोग जो भावम जारा ।^८ कंद मूल दुबि कीन्ह बहारा ॥३१२॥
भाषन बाधि के जोग समाधी ।^९ जोग जुगति रहे तन राधी ॥३१३॥^{१०}
निरकार के सुमिर्छि म्याना ।^{११} रच्छक मच्छक नहि पहचाना ॥३१४॥
कवन पुस करे प्रतिपाना ।^{१२} कवन मारे वान विशाला ॥३१५॥^{१३}
को मानिक को खरबनिहारा ।^{१४} ग्यान गमी नहि कीन्ह विचारा ॥३१६॥
मन झकार तपस्या किएक ।^{१५} कन्ना एक निरजन ठएक ॥३१७॥
मन्सा वृत्त जो तन में सागा । इंद्री काम रसना रस जागा ॥३१८॥
नासा बच्छु बाहि रस भोगा ।^{१६} पांचो इंद्री सटरस रोगा ॥३१९॥^{१७}

१ (ग) कहे = के । (क) कहे = कहै । (घ) कहे = कहा । (ङ), (ग), (घ) समुझई = समुझई ।

२ (क), (ग) मए = मया । (ब) मए = मयो । (ग) ब्रह्म = ब्रह्म ।

३ (क) सास्तर = सास्त्र ।

४ (क) 'ब्रह्म निरख्य म्यान समाना ।' (ग) 'ब्रह्म संपरम म्यान उन्हि जाना ।'

५ (क), (ग), (घ) परबे = परबे ।

६ (क), (ग) बारे = बारी ।

७ (घ) फिस्त = फिस्त । (क), (ग) (घ) के = कै ।

८ (क) 'बीन्हो जोग भावम कह जारा ।' (ग) (ब) बीन्हो जोग भावम जारा ॥

९ (क) 'भाषन बाधि जोग जो साधी ।' (ग) — 'भाषन बाधि कियो जोग समाधी ।'

१० (घ) 'जोग जुगति रहे तन राधी ।'

११ (घ) के = कै ।

१२ (क) (घ) (घ) करे = करै ।

१३ (घ) कवन मारे = कवन जो मारे ।

१४ (ग) को = की ।

१५ (क) (घ), (ब) तपस्या = तपस्या ।

१६ (क) (घ), (ब) बाहि रस = बाहै रस ।

१७ (ग) पांचो = पाँच ।

करे भगति निम्नु प्रेम सुधारा ।^१ ताको सेह उतारहि पारा ॥३४४॥^१
सत्त नाम खानी नाहि भासी ।^२ सत्त सुरति निस्वै पित रासी ॥३४५॥^२

बोझा

कहैं दरिया सिर ताज है, सब विधि पूरत राज ।^३
ताते सेह उतारही, सुफ्त होत सब काज ॥२५॥

धौपाई

संत सोइ संतोख में धारै । सीत संतोख प्रेम रख पारै ॥३४६॥
साइव सत्त जो हमहि देखावा ।^४ भसस ग्यान कहि जग समुझावा ॥३४७॥^४
सत्त ग्यान कथा यह खानी । समुझई संत प्रेम रख खानी ॥३४८॥^५
जो कोइ समझि करे बिदखा । सत्त नाम ग्यान गमि पेखा ॥३४९॥
सत्त कदा घोसा मति मान ।^६ एह नेद ससगुर सब जान ॥४९०॥
करता कीतम करहुं बिषारा । सत्त पुख दन्हुं सबत न्यारा ॥४९१॥
दुषापर जन्म क्रिस्त के भएऊ ।^७ राम क्रिस्त बोए एक रहेऊ ॥४९२॥^७
एक प्रह्व दुइ धरा सरीरा ।^८ भगम ग्यान कछो मति धीरा ॥४९३॥
वासुदेव के प्रिहि जग्मे धारै ।^९ नंद सुत जो जाए क्यारै ॥४९४॥^९
कंस मिश्रवन मरवत भूला । धर्मत रूप बिसंभर पूठा ॥४९५॥
संत के संत दुष्ट के घुरा ।^{१०} तस सितस तन धरा सरीरा ॥४९६॥^{१०}

१ (क) (ग) करे = करै ।

२ (घ) ताको = ताकई ।

३ (घ) सत्तनाम = सत्तनाम ।

४ (क) (ग) सत्त सुफ्त निस्वै पित रासी ।

५ (क) (ग) राम = काज । (क), (ग) (घ) सज = सज ।

६ (क) देखावा = देखावै । (घ) देखावा = देखावा ।

७ (क) समुझावा = समुझावै । (ग) समुझावा = समुझावा ।

८ (क) 'समुझइ प्रेम तत्त रख खानी ।' (घ) (क) समुझइ = समुझाई ।

९ (क) कदा = कदा ।

१० (घ) क्रिस्त के = क्रिस्त कर ।

११ (ग) राम क्रिस्त = राम क्रिस्तन ।

१२ (क) एक = एके ।

१३ (घ) वासुदेव के प्रिहि = वासुदेव प्रिहि । (घ) (क) जग्मे = जग्मेरो ।

१४ (क) नन्द के सुत जो जाए क्यारै ।' (ग) नंदसुत तन जाए क्यारै ।'

१५ (ग) दुष्टके = दुष्टकै ।

१६ (क) 'तस सिता तन बरै धरीरा ।' (ग) 'तपत सिद्धी तन बरे धरीरा ।' (घ) 'तपत सि
तन बर धरीरा ।'

घोषाई

मिनि काम सेसे परखंडा ।^१ सात वीप कहिए नव खंडा ॥३३०॥
 गी जोग बहुत जो कीन्हा । कामिनि काल घेधि जिव लीन्हा ॥३३१॥
 व भीन्हे सत सभ्द की यत्नी । मंडे लोहा बने सो प्रानी ॥३३२॥^२
 ब्र सागि रन करे सुघारा ।^३ काटे काल कुबुधि कर घारा ॥३३३॥^४
 ओ हिरमर निरमल ग्याना । क्हो अम के काह बसाना ॥३३४॥^५
 ग्नि गहा सतगुर परवाना । अग में परगट उन्ति अमाना ॥३३५॥^६
 ठ साहब कर्ही प्रतिपासा । काटहि काल कुबुधि के बाला ॥३३६॥^७
 के लेह अपने प्रिहि राखा ।^८ सत सभ्द निस्सै हम भाखा ॥३३७॥
 पोष माने तब करहु विचारा ।^९ साके सेठ उठारो पारा ॥३३८॥^{१०}
 टि अन्म के कागज कीरा ।^{११} नाहि बस्ट कान की पीरा ॥३३९॥^{१२}
 त नाम सामर्थ्य हहि भाई । तासो काल सदा डर खाई ॥३४०॥^{१३}
 छपुर्स से करे ना जोरा ।^{१४} बरे तेज तब करे निहोरा ॥३४१॥^{१५}
 तुख बान नहि देखा हापा । कांपहि काल ठेठावहि मापा ॥३४२॥
 तो जन हुकुम सत के राखै ।^{१६} तासो काल जोर नाहि भाखै ॥३४३॥^{१७}

- १ (क), (ख) सेसे = सेसै ।
- २ (क) मंडे = मंडै । (ख), (घ) बने = बाबै ।
- ३ (क), (ग) करे = करै ।
- ४ (क) काटे = काटै । (क) (घ) कुबुधि कर = कुबुधि कै
- ५ (क) क्हो अम के काह बसाना । (घ) 'क्हो ना अम कै काहा बसमाना' ।
- ६ (क) (घ) (प) अमाना = विमाना ।
- ७ (ग) के = को ।
- ८ (ग) प्रिहि = परि । (ग) ताके लेह = ताकाई लेह ।
- ९ (क), (घ), (ब) माने = मानै । (घ) तब = त । (घ) तब = तो । (ब) करहु = करो ।
- १० (ग) 'ताकाई सेठ उठारहि पारा' ।
- ११ (घ) के = कै । (क) (ग) कागज = कापज ।
- १२ (क) कै = को (ग) । कै = के । (ब) कै = कर ।
- १३ (क) तासी = तासै ।
- १४ (क) (ग) से = सै । (क), (घ) करे = करै ।
- १५ (क) बरे = बरै । (ग) बरे = बरहि । (क) (ग) करे करै ।
- १६ (क) (ग) कै = के ।
- १७ (ग) तासी = तासै ।

कुवरी लेह अपने गिह घाई ।^१ सो करता की कर्तम भाई ॥३७२॥

साली

सत पुर्ख पासंठ नहीं यह कर्तम को नाम ।

छन वन दुषि के मारे, छोट किस्ल छोट राम ॥२६॥^२

चौपाई

सत पुस मत करो बिभारा । सतगुर सव्य करहु निरभारा ॥३७३॥^३

बाके वरव जीव कए होई ।^४ सत सव्य विभारे सोई ॥३७४॥^५

पाछे किस्ल मनसा जो कीन्हा ।^६ छन बल से खुमिनि के सीन्हा ॥३७५॥^७

सतमामा खुमिनि जो रानी ।^८ कीन्ह ध्याह स्वादिन सब जानी ॥३७६॥^९

तिन्हके गर्भ जो रूहा संजोगा । मया पुस जाने सब लोगा ॥३७७॥^{१०}

बिना बीज महि होए संजोगा । मारी पुर्ख करे रस भोगा ॥३७८॥^{११}

इधिर नीर होए एक सगा ।^{१२} परे धीज तब उपजे घंगा ॥३७९॥^{१३}

ठाके अघुतानस सम भास । कामिनि काम सदा चित रास ॥३८०॥^{१४}

बिना स्वाव का भोग बखाना ।^{१५} सटरस मोजन रसमा जाना ॥३८१॥

बिना काम कामिनि का नेहा ।^{१६} बिना बीज किमि उपज देहा ॥३८२॥^{१७}

१ (ग) कुवरी = कवरिही ।

२ (प) किस्ल = किस्ल ।

३ (ग) सत सव्य करहु निरभारा ।

४ (क) कए = करे ।

५ (क), (ग) (प) विभारे = विभारै ।

६ (क), (ब) बाके = पाछे ।

७ (क) के = करे । (प) के = करे ।

८ (क) सतमामा खुमिनि जो रानी । (ग) सतमाव जो खुमिनि रानी । (ब) सतमाव खुमिनि जो रानी ।

९ (क) कीन्ह ध्याह स्वादिन सब स्वादिन जानी । (ग) (ब) कीन्ह ध्याह सब स्वादिन जानी ।

१० (क), (ग) (ब) सब = सम ।

११ (क) (ग), (ब) करे = करे ।

१२ (क) होए = होई ।

१३ (क) परे = परे । (क) उपजे = उपजै । (ग) परे धीज उपजे तब घंगा ।

१४ (क) (ग) 'कामिनि इन सदा चित रास' ।

१५ (क) का = को । (ब) मोज = काम ।

१६ (क) 'बिना काम कामिनि महि नेहा ।' (ग) बिना काम का कामिनि का नेहा । (ब) बिना काम का कामिनि नेहा ।

१७ (ग) 'बिना बीज का उपज देहा ।'

प्रनत रूप जो ब्रम्ह कहावै । मनमत्त भाव सबन्हि के भावै ॥३५७॥^१
 जोषी अति सब ध्यान लगावै । सो गोगस रस घर घर लावै ॥३५८॥^२
 बाल सकुण नंद घर होसै ।^३ मधुरी बानी रंग रस घोसै ॥३५९॥^४
 बाल सकुण फिरि भया सेमाना ।^५ प्रिदावन रस रंग जो ठाना ॥३६०॥^६
 मुस मुरली लिए धातु बजावै । पर बुवतिन्हि से प्रेम बढ़ावै ॥३६१॥^७
 बमुना बस छेके जो घाटा ।^८ सेइ दान छोड़ सब वाटा ॥३६२॥^९
 रही ब्रूम सब जग्य भोराई ।^{१०} माखन महि बाषे नहि भाई ॥३६३॥
 सो ठाकुर को चोर कहाव । धोरी करि भयने प्रिहि भाव ॥३६४॥^{११}
 रई निरंतर सब घर दोसै ।^{१२} बाल गोपाल लिए संग होसै ॥३६५॥
 मीर पीठि पेन्हावै सारी । छे राधे दधि कुजबिहारी ॥३६६॥^{१३}
 नारद धेठे करहि विचारा । मन भरिय कहु के निरभारा ॥३६७॥^{१४}
 कंस हुंकार गर्व जो कीन्हा । मन भरिय उन्हु महि भीन्हा ॥३६८॥
 देवता दैत के करती भीना । जसन करती सो फल लीन्हा ॥३६९॥
 कंस दैत छे परषंठा ।^{१५} मारेको माय भया सतलंडा ॥३७०॥^{१६}
 माहि मारि कुमारी के लीन्हा ।^{१७} क्रिस्त भरिय विरला केहु भीन्हा ॥३७१॥^{१८}

- १ (क) भाव = रूप । (क), (ग), (ब) सबन्हि के = समन्धि कर ।
- २ (क), (ग), (ब) रस = बह ।
- ३ (ग) होसै = होला ।
- ४ (ग) होसै = होला ।
- ५ (क), (ग) बाल सकुण = बालककण ।
- ६ (ग) रस रंग = रंग रस ।
- ७ (क) 'पर बुवती है प्रेम बढ़ावै' । (ग) से प्रेम = से प्रेम रंग ।
- ८ (ग), (ब) जो = से ।
- ९ (क) छोड़ै = छोड़ै । (क), (ग), (ब) सब = सम ।
- १० (क) बाए = बाए ।
- ११ (क) चोरि करिके भयने कर भावै । (ग) भावै = ध्यवै ।
- १२ (क), (ग) (ब) सब = सम ।
- १३ (क) रई = रई । (ग), (ब) रई = रहु ।
- १४ (क) कहु के = केहु केहु । (ग) निरभारा = भेदभारा ।
- १५ (ग) रई = रहा ।
- १६ (क) मया = करै ।
- १७ (क), (ग) (ब) माहि = ताहि ।
- १८ (ग) क्रिस्त = क्रिस्त ।

पौपाई^१

क्रोध नाम केह का हए भाई ।^१ कवन क्रोध से तप मसाई ॥४०४॥
 सप्त सभ्य कहबे निरुधारी ।^२ भारी लोहा कहव परचारी ॥४०५॥^३
 सप्त सभ्य जो उलटै भाई ।^४ ठोरव मात कहव समुभाई ॥४०६॥
 संतनिवा सुनब नहि काना ।^५ मरदब मात कि छोड़व ठेकामा ॥४०७॥
 नेकी कारन कहव मुभाई । जाते काल कुसुधि नहि साई ॥४०८॥^६
 काम अगावन नारि जो भाई । म्यान त्रिष्टि से दूरि मजाई ॥४०९॥
 वाके नाम क्रोध नहि भाई । म्यान लोहा मंडे चित साई ॥४१०॥
 बुधा वेदुधा देव नहि सापा ।^७ सोइ सभासब मन के वापा ॥४११॥^८
 निसाफ देखिके बोलव बानी ।^९ एहि में दोख न लागे म्यानी ॥४१२॥
 सत में काह न भागै पापा ।^{१०} सत्तनाम साको पखापा ॥४१३॥
 क्रोध इम बसे जो पासा । कर्वाहि के कसन करे तमासा ॥४१४॥
 कर्वाहि के इगमग बोल बानी । सामरप भापु बचावहि ग्यानी ॥४१५॥^{११}
 मन के सुमिरहि तपसी जोगी । मनसा बूठ कर रस भोगी ॥४१६॥
 मन के लागे करे विनासा ।^{१२} सुर नर मुनि चिव डारे कासा ॥४१७॥
 स्त्रिगी रिखि जो मन के सागै । मनमत म्यान जोग जो जाग ॥४१८॥
 बस्ती छोड़ि बंगल के गएऊ । जोगमाता तहां जो ठएऊ ॥४१९॥^{१३}
 फंद मूस जो कीन्हु भहारा ।^{१४} प्ता फस्ट जो उन के भार ॥४२०॥^{१५}

१ (य) अपठित ।

२ (क) केह का हए = केहि करियै । (ग) केह का हए = केहि कहा है ।

३ (क) कहबे निरुधारी = कहव निरुधारी । (य) सप्त सभ्य एह करी निचारी ।

४ (य) भारी लोहा कहै निरुधारी ।

५ (य) सत = सत्य ।

६ (य) संत = सत ।

७ (क) कस = कीच ।

८ (क) (य) बुधा वेदुधा = बुधा वे वेदुधा । (क) (य) देव = देह । (य) सापा = सरपा ।

९ (क) सभासब = सम्भारब । (ग) सभासब = समारब । (क), (ग) के = कै ।

१० (क) दोख = दोहै ।

११ (क) में = मइ । (क) न लामे = जगै नहि । (य) न लागे = जगु न । (य) न लागे = ना लागइ ।

१२ (क), (ग), (य) ग्यानी = जाली ।

१३ (क) के लागे करे = के लागे सम करे । (य) के लागे करे = के लागै करे ।

१४ (क) (ग) (य) तहां = तहवा ।

१५ (क) जो = सम । (ग) जो = जस ।

१६ (य) जो = करी ।

बिज छोटि दवारिका गएऊ । नंद कखणि अपने छिहि रहेऊ ॥३८३॥
 जाए दवारिका मंसि संबारी । कीन्ह भोग सब सुन्दरि नारी ॥३८४॥
 कंचन मंसि जो तहां सवारा । उपजत बिनसत लागु न वारा ॥३८५॥
 दुर्वासा क्षाप पर तेहि भाई । जादो सपी मरे सब भाई ॥३८६॥
 पक्षिना बोएल जानिके दीन्हा । कालरूप ब्याधा जो कीन्हा ॥३८७॥
 मारा ब्याधा बान विसासा ।^१ निहरा तन में दुख जो सासा ॥३८८॥^२
 निकना प्रात ओ तन के त्यागा । दुर्वासा क्षाप क्रिस्त कह सागा ॥३८९॥

साक्षी

छपन कोटि जादी गए, काल कुमुधि के पास ।

उपजि बिनसि मरि जात है, भर्मराए के पास ॥२७॥

शोपाइ

एक तन छूटै भक्ति विवेखा । सो जिव परे साहब के सेवा ॥३९०॥
 ओ जन भग्वी तन मन लागे । सत सख से भौ धनुरगा ॥३९१॥
 ताकर जीवन जम सुधारा । ओ निमु मान सख हमारा ॥३९२॥
 सत धरन निमु करे नेवासा । ताके विभिनि ना भाई पासा ॥३९३॥
 सतनाम में रहे समाई । पीन्ह काल कुमुधि के भाई ॥३९४॥
 सामरथ हमके कहा बुझाई । पीन्हो सत जिव याचे भाई ॥३९५॥
 सत सुवास भ्रमित रस बाल ।^३ सजीवनि नाम सुरति तह रास ॥३९६॥^४
 उरुल भगिनि जल जावन दीन्हा । प्रात पिइ तहवां रचि लीन्हा ॥३९७॥
 जठर भगिनि तहवां उदगाए । जस पवन तेहि भीतर सारा ॥३९८॥
 ता बिष नाम कमल को डारा । ऊपर मूल हेठ बाह पसाए ॥३९९॥
 तामें पवन संधारा करई । धरुदल कमल फूल तहां रई ॥४००॥
 कमल बीष उनुमुनी दुमारा । संचरे जोति होए उजिमारा ॥४०१॥
 करे विवेक म्यान जो पाव । भंवर जो फांकी पाटे भावै ॥४०२॥
 सत पीन्है सब घोखा त्याग ।^५ सत बिचारि सोइ निमु पाए ॥४०३॥

साक्षी

क्रोध भगिनि छेमा करो, सीतल परिमल पास ।

भ्रिगा प्रापु दूखे नहीं दूखन पीरे पास ॥२८॥^६

१ (ग) (ब) ब्याधा = व्यापे ।

२ (क) निहरा = निकलत । (क) (ग) (प) जो = धनि ।

३ (प) भ्रमित = भ्रमिरित ।

४ (क), (ग) (ब) सजीवनि = सजीवन ।

५ (क) (ग) (प) सख = सम ।

६ (क) (ग) धरि = धरै ।

चिन्हहुँ म्यान निजु सख्य हमार । जो चाहो निजु मुक्ति करार ॥४३४॥^१
 गौतम रिखी विगुरने जानी ।^२ बाधि कस्त जिब कीन्हो हानी ॥४३५॥^३
 बिलम धान उर गहि के मार ।^४ सत्त सख्य विनु कएसे तार ॥४३६॥^५
 पंडु के पंडुता मया जो रोगा ।^६ ता सु मारि पाप से भोगा ॥४३७॥^७
 कीन्हो कर्म जो कुंठा नारी ।^८ एक नारी है पांच भठारी ॥४३८॥^९
 पांचो पांचो पांच से भएऊ । कुंठिन के कन्या सब कहेऊ ॥४३९॥^{१०}
 पांच भठारी शोपति भएऊ । पांचो जने के सेवा ठएऊ ॥४४०॥^{११}
 देखो सब मिमि करो बिचार ।^{१२} एक नारी है पांच भठार ॥४४१॥^{१३}
 काकर पुष कवन है नारी ।^{१४} पांच पिता है एक महठारी ॥४४२॥^{१५}
 ऐसन बोलुक सम मिलि जानै ।^{१६} ताके सब कन्या के मान ॥४४३॥^{१७}
 एक एक वाग सबान्हि कहू दीन्हा ।^{१८} बहुत जतन के सेदहि भीन्हा ॥४४४॥
 पीडित बेदहि सब केहु जूहा ।^{१९} रसमा इ प्री सब रस वूहा ॥४४५॥^{२०}

१ (ग) ज्यो चाहहु । (क) जो चाहहु ।

२ (क) (र) (ब) विगुरने = विगुरने ।

३ (क) (ब) बाधि कस्त जिब कीही हानी । (ग) बाधि कस्त करे बिचहली प

४ (क) उर गहि के = उर गहि । (क) मारै = मारे ।

५ (क) तारे = तारे ।

६ (ग) मया = मैठ ।

७ (क) (ब) पाप से भोगा = पांच रस भोगा । (ग) पाप से भोगा = पांच रस भोगा ।

८ (क) कीन्हो = कीन्हा ।

९ (क) (ग), (घ) कुंठिन के = कुंठा के ।

१० (क), (घ) (ब) जने = पंडो ।

११ (ग) देखो = देखहु । (ग) (ब) बिचार = बिचारी ।

१२ (ग), (घ) भठार = भठारी ।

१३ (क) काकर = केकर । (ग) कवन = क्वारि

१४ (क) पांच पिता एके महठारी ।

१५ (क) सम मिमि = सम खेर । (घ) सम मिमि = सम बेहु । (क) (ग) जानै = जाना ।

१६ (क) मानै = माना । (ग) मानै = मानौ ।

१७ (क) कहू = के । (ग) 'एक एक वाग कह सम कह दीन्हा' । (घ) 'एक एक वाग इन्हि सम कह दीन्हा ।'

१८ (क) सब केहु जूहा = सम खेर जोहा । (घ) केहु = खेर ।

१९ (क) सब = समै ।

मोहनी एक ओ कीन्ह सिगारा । नख सिख सु दरि रूप संवारा ॥४२१॥^१
 सीन्ही भेषा फल दुइ चारी ।^२ खती डगावन रिखि के नारी ॥४२२॥
 फल सेई रिखि धामे दीन्हा ।^३ मोहनि रूप होए वमि कीन्हा ॥४२३॥
 करे डडवत दोस यानी । घन परिपंथ रिखी नाहि जानी ॥४२४॥
 दोसे रिखि तव छोटा मवमा । कहवा त तुम्ह कीन्ही गवना ॥४२५॥
 फल लेई रिखि मुखि में दीन्हा ।^४ बहुत प्रेम करि धायन लीन्हा ॥४२६॥^५
 तव रिखि ऐसन दोस विचारी । कहवा फल फूले फुलवारी ॥४२७॥^६
 पई वाटिका मन्सि हमार । तहां भेषा सम खानि संवारा ॥४२८॥^७
 रिखी तपस्या पूरल कीन्हा । इन्द्र सेवा हमें कह दीन्हा ॥४२९॥^८
 बसे सुरत कामिनि के धामा ।^९ जहा वाटिका सब सुगकामा ॥४३०॥

साली

सो रिखि खूटा काम न, भया कामिनि परसंग ।^{१०}
 सत सल चीन्ही बिना, बाल बरे जिव भंग ॥४३१॥^{११}

श्रीपाद

मन की झई काम विगारे । बीच सेइ परले तर डारे ॥४३१॥^{१२}
 मया छोड़ि मोहनी सग जागै ।^{१३} मोहनी छोड़ि माया संग साग ॥४३२॥^{१४}
 मोहनी माया होए परसंगा ।^{१५} बचहि के काम बरे जिव भंगा ॥४३३॥

१ (ग) सुदरि रूप = सुन्दर रूप ।

२ (ग) सीन्ही = सीन्ही ।

३ (क), (ग) 'रखि से रिखि के धामे दीन्हा । (घ) फल के सेइ रिखि धामे दीन्ही ।

४ (ग) रिखि मुखि में = रिखि तप मुख में ।

५ (क) (घ) प्रेम = प्रीति ।

६ (क) फल = फूल । (घ) फल = करे । (क) बसे = पूजा ।

७ (क) तहां = तहवा । (क) सम खानि = सम मनि ।

८ (घ) इ पर हम सेवा कहि दीन्हा ।

९ (ग) के = कै ।

१० (क) (घ) (च) भया = भौ ।

११ (क) (घ) बरे = बरै ।

१२ (क) (घ) (च) विगारे = विपरै । (क) (घ) परल = परसै ।

१३ (घ) माया छोड़ि मोहनी लायै ।

१४ (घ) मोहनी माया छोडा रूप जायै ।

१५ (घ) मोहनी माया दुई परङगा ।

कहीं मकर कहि बंग पुकारा ।^१ कहि भारति कहि संस मुषारा ॥४३७॥
 कहि तसविह कहि माना डाला ।^२ कहि भसफी कहि धोकि दोसामा ॥४३८॥^३
 विल में धरद राखो नरबेसा ।^४ बेदरदी सो कहा सदिसा ॥४३९॥^५
 मोमना सो ओ मरहि बिषारा ।^६ हक हराम करे निरुभारा ॥४४०॥^७
 खून सराव कबहि नहि करई ।^८ नेकी बंदगी निस दिन धरई ॥४४१॥^९
 पाक होए पाक में भीना । भसल भसाह ताहि को चीन्हा ॥४४२॥^{१०}
 बेबाहा ओ नाम बसाना । बकीमति सिपित मो जाना ॥४४३॥
 भसल नाम पाक है सोई ।^{११} बेबाहा नाम सल है सोई ॥४४४॥
 गोसा गमी दुनहू के त्यार ।^{१२} हुनोज जिकिर दिन बंदर पार ॥४४५॥
 खून सराव दुनो से प्यारा । सो दरबेस भसाह का प्यारा ॥४४६॥
 खून सराव एहि मंह भुना ।^{१३} दोनक द्वार जीव सो भुना ॥४४७॥^{१४}
 पकरि ओष खून करि साई । सो सिताब दोजक के जाई ॥४४८॥^{१५}
 हुकुम साई का नाहीं मामा । पड़ी कोरान का सिपित बसाना ॥४४९॥^{१६}
 मुक से सिपित बहुत ओ जाना ।^{१७} दिन में दरद कबहि नहि भाना ॥४५०॥^{१८}

१ (क) कहीं = कपी । (क) पुकारा = पुकरी ।

२ (क), (ब) (ब) तसविह = तसवी ।

३ (क), (ग) (ब) धोकि = धोई ।

४ (क), राखो = रखी ।

५ (क), (प) बेदरदी सो कही सदिसा ।

६ (क), (प), (ब) ना सो = ना मो ।

७ (क), (प), (ब) करे = करै ।

८ (क) कबहि = कबे ।

९ (क) (ग), (ब) का पठ स्वीकृत ।

१० (क) ओ = है ।

११ (क) (ब) सोई = सोई । (ब) पंक्ति-भस्वर है—बिनाहा नाम सल है सोई । भसाह नाम पाक है सोई ॥

१२ (क) (ब) हुनहू = हुनो ।

१३ (क) मह = में ।

१४ (प) द्वार = दुवार ।

१५ (क) के = है ।

१६ (क) सिपित = छिपत ।

१७ (क) से = से । (क), (ग) से = से ।

१८ कबहि = कबे ।

स्वादिक पढ़ाई भगति नहि जाना ।^१ ताके बाल बने पिसमाना ॥४४८॥^२
 रिखी मुनी सब रहै अरुभाई ।^३ मन की प्रतिमा भगति न भाई ॥४४७॥^४
 पारा रिखि पाय जो जारा ।^५ काम बना जिव कीन्ह संघारा ॥४४८॥
 गनिका रूप दीवि जो कीन्हा ।^६ वा संग काम करला सीन्हा ॥४४९॥^७
 वा संग भोग जो कीन्ह बेसासा । गया तप जानी जिव नासा ॥४५०॥

साखी

सन्द हमारा मानहु करो विवेक विचारि ।^८
 सत सन्द यह चीन्हहु^९ उतरहु भी जन पार ॥३०॥
 जो हजर सो हरि है (बोए) गीता पडा कारान ।^{१०}
 बोए कहे मलेछ है (बोए) कर कितम जो ग्यान ॥३१॥^{११}

बीपाइ

दुष्ट बाजी हूतो निसि मामा ।^{१२} कहि हिहू कहि तुक कहाया ॥४४१॥
 कहि निमाअ कहि पूरा करावै ।^{१३} कहि तीरथ कहि बरत निहावै ॥४४२॥
 कहि भादम कहि अन्हा होई । कहि पंडित कहि राजी सोई ॥४४३॥
 कहि कोरान कहि पड़े पुराना ।^{१४} कही पीर कहि गुरु का रमाना ॥४४४॥^{१५}
 कहि मुर्गा कहि खसी मरावै । कहि मोरिद ततबीर दिहावै ॥४४५॥^{१६}
 कहि अंतर सिजरा लिखि दीन्हा । कहि वादो कहि भरो कीन्हा ॥४४६॥

१ (क) भगति = मेर ।

२ (ग) ताके = ता बँह । (क), (ग) (घ) पिसमाना = पिपिमाना ।

३ (क) रहै अरुभाई = रहै हमै अरुभाई । (घ) रहै अरुभाई = रहै हमै अरुभाई ।
 (घ) रिखी मुनी = रिखि रूप मुनि ।

४ (क) जारा = पाइ । (घ) जारा = जाला ।

५ (क) पाय = पारस ।

६ (घ) गनिका दिम्बरु जो कीन्हा ।

७ (क), (ग), (घ) वा पल रबीहल । अ प्रति में 'संग बँदल' ।

८ (घ) करो = करहु ।

९ (घ) चीन्हहु = चीन्है ।

१० (क) पडा = बसा । (ग) पडा = बँहै ।

११ (घ) बोए = बोह ।

१२. (घ) मामा = लामा ।

१३ (क) (ग) (घ) पूरा = पूया ।

१४ (क) पड़े = पडा । (घ) पड़े = पड़े ।

१५. (क) वा = वै ।

१६ (क) करि ततबीर सुटीर रिहावै ।

सप्तपुर्ष के पुत्र जो बहई । सत्तरि जूग सेवा जो बरई ॥४८०॥^१
 कीन्ह सेवा पुर्ष के भाग ।^२ बहुते जूग जोग जो जागै ॥४८१॥^३
 तब पुर्ष भ्रष्ट बोले बानी ।^४ निरंजन सेवा बहुत बसानी ॥४८२॥
 पुर्ष कहा मागहुं कस्तु दीजै ।^५ सत्त बचन माया नाए लीज ॥४८३॥
 तीनि लोक यह हम कह दीजै ।^६ जहवां हाट बसावन कीजै ॥४८४॥
 तीनि लोक का रचना कीन्हा ।^७ पुहुमी सर्ग पठास जो सीन्हा ॥४८५॥^८
 परदा डारि भापु होए बैठे ।^९ भापुहि तीनि लोक मंह ऐंठे ॥४८६॥
 जाकर जिव यह सकल पसारा ।^{१०} सत्त पुर्ष से छोडा कयरा ॥४८७॥^{११}
 छपलोक छपाए जो सीन्हा ।^{१२} तीनि देव परिषद जो कीन्हा ॥४८८॥
 उपजे बिमसे इहवाहि डारै ।^{१३} इहवाहि जेहि फिरि इहवाहि मारै ॥४८९॥
 केते जूग बीनि जब गएऊ ।^{१४} दयार्थ के दरद जो मएऊ ॥४९०॥
 निरंजन हम से हुकुम जो सीन्हा ।^{१५} तीनि लोक के ठाकुर कीन्हा ॥४९१॥
 परदा डारि निरंजन राखा ।^{१६} मूस खोजि दूढ़े सब साखा ॥४९२॥
 तब पुर्ष सुकित के कीन्हा ।^{१७} आपन भंश रची जो सीन्हा ॥४९३॥
 सुकित जाए लेहु भबतारा ।^{१८} जमूवीप के मधि बिस्तारा ॥४९४॥^{१९}
 सत्त पुर्ष से बचन जो सीन्हा ।^{२०} भाए पयाला जग में कीन्हा ॥४९५॥^{२१}
 जमूवीप जो जम क देसा ।^{२२} तहवां सत्त जो कहा संदिहा ॥४९६॥^{२३}

१ (ग) बरई = बहई ।

२ (ग) कीन्ह सेवा = सेवा कीन्ह । (ग) पुर्ष = पुत्र । (क), (ख) (ग) बानी = भाषे ।

३ (घ) (ग) बानी = जाते ।

४ (क) तब पुर्ष = सत्तपुर्ष ।

५ (क) कस्तु = किस्तु ।

६ (ग) तीनि लोक = तीनि लोक । (घ) कह = के ।

७ (ग) का = के ।

८ (घ) पठास = पठासो ।

९ (घ) भापुहि वाट— सत्तपुर्ष से हुकुम जो कीन्हा । भाए पयाला जग में कीन्हा ॥^{२०}

१० (क) (घ) से = से ।

११ (क) तब = तबहि । (घ) तब = तब सत्तपुर्ष ।

१२ (घ) छपाए = बत ।

१३ (ग) मधि = मध्य ।

१४ (ग) भाए = भाई ।

१५ (घ) जम = जग । (क) (घ) दे = दे । (ग) दे = के ।

१६ (घ) तहवां कहा जो सत्त संदिहा ।

बेषुन बीगुन करे नखाना ।^१ पकी कोरान नाहि पहचाना ॥४७१॥

साक्षी

भसल भलाह बोए पाक है, सफ़्त सफा उजिभार ।

हाष पाव मुख सीस है^२ रसना दीदमनार ॥४७२॥^३

बीपाई

नकी बरी हाम सो पावै । दरबन्द के मिस्ति वतावै ॥४७३॥^४

केत पैमर भए जहाना ।^५ मरी मुए सब मिटी समाना ॥४७४॥^६

मंजिल भगम मरम नाहि पावै ।^७ कर खून दोमक के जाव ॥४७५॥^८

पड़े क्तिजाव करे सएनानी ।^९ पिवै सजव खून खाए बपानी ॥४७६॥

साक्षी

सीनि लोक निरजन, बारी ठगौरी मारि ।^{१०}

जो जीव घाए लोक से, ताहि भरम बरि डारि ॥४७७॥

बीपाइ

जो बिब बेते करे भवेता ।^{११} भपन ग्यान से करे सवेता ॥४७८॥^{१२}

भपनी घोर सदा से रावै ।^{१३} गजगुन समगुन तामस भावै ॥४७९॥

दुर्ग दानि है घोर धेकारा ।^{१४} सीनि लोक ठगौरी डारा ॥४८०॥^{१५}

काके हुकुम से पृथ्वी कोन्हा ।^{१६} बौन हुकुम तिन लोक जो सीन्हा ॥४८१॥^{१७}

१ (क), (घ), (ङ) बीगुन करे = बीगुन को कर ।

२ (क) सीस = सीर ।

३ (ग) बार = सार ।

४ (घ) मिस्ति = मिस्त ।

५ (क) (घ) (ङ) पैमर = पैगमर ।

६ (क) मुए = मुखा । (ग) मिटी = मटी ।

७ (क) मंजिलि = मंजलि । (घ) (ङ) मंजिलि ।

८ (क) (ग) करे = करै ।

९ (क) (घ) करे = करै ।

१० (क) (ङ) ठगौरी = ठगउरी ।

११ (क) (ग) करे = करै ।

१२ (क) (घ) करे = करै ।

१३ (क) भपनी घोर = भपन घोर । (ङ) ठे = तै । (घ) ठे = थै

१४ (क) (घ) (ङ) दुर्ग = दुरग ।

१५ (क) (ङ) ठगौरी = ठगउरी ।

१६ (क) बौन = बाबे ।

सामर्थ नाम है बंदी सोरा । बाबे जीव जो नरक भयोरा ॥११४॥
सतनाम सत पुर्व जो कहिया । अजर कामा सो जुग जुग रहिया ॥११५॥

साक्षी

जुग जुग हम बसि भ्राएउ, म्यान जो कहा बसानि ।
जो ब्रह्म निमल होखै, भेटे नरक की खानि ॥११६॥
ब्रह्म विबेक म्यान एह, पड़े गुने बित साए ।^१
मुकृति पवारण पाइहै^२, सदा रहै सुख पाए ॥११७॥

× × × ×

गर्व संपूरन^४ ब्रह्म विबेक यह

सत पुन मुक्ति हरिया सखेय के कोनिधि सतनाम ।
जो कोई चिर सुमा चिर जमाहै सो सबसे सतनाम ।

संमत सन् १२८६ साल में संसार हुआ दसखत हीरादास के समुक्ति सेना समेनाम
भासिन महीना क्रिस्त पक्ष एकादसी रोज सोमार पटने जिला मौजे मनपुरा का मठ
पर हुआ संसार सो सही ॥

१ (क), (ब) सतपुर्व = पुर्व ।

२ (क), (ब) पड़े = पड़े ।

३ (ग) पड़ है = पावप ।

४ (क) प्रथम सम्पूर्ण ब्रह्म विबेक जो अजर समो देखा से सिखा सखे संतपुर अथ अथ से
मिनती मेरी ब्रह्म अजर मत्वाहीन पदम सम जोरी प्रथम ब्रह्म विबेक सिखाय तेनार
भेक माधो सुदी एकादसी रोज जुग परमान बैल हुपहर दिन ठठे जकार भेक तापीस
१६ मार्च सन् १२६६ साल आसी ।

(ख) प्रथम ब्रह्म विबेक सम्पूर्ण जो देखा से सिखा दसखत काजगारी सखे अखीर हरिया-स
मो मौजे देवही मठपर सुबिबा साहेब निरबीराय जी के ।

(ग) प्रथम ब्रह्म विबेक सम्पूर्ण अथ मत्वा हरिया साहेब मुक्ति नाम दिनदेयास जेय जीत
सम्मत हैस ठकारन साहेब के मोक्षम साहायस मौजपुर परमने बचारी ठपे बीपी मौजे
बरकबा साहेब के ठखत समुक्ति सेना अथ परमान बरकबा अथ साहेब हरिया के
संमत १६१६ साल समे नाम मिति अर्थ सुदी अथोपी दूज के दिन सोमार के सिखाय
मठ परसखत सोकरान सखे अखीर हरिया साहेब से अथो अखीर देवक होए मा होखे
सम से सम मा (1) अथ सुके सिखा मठवा विषयनिष्ठा का मठ पर अथो संतपुर अथ
से मिनती मेरी ब्रह्म अजर सेवक जोरि । सतनाम ।

प्रथमहि सत सुग में अति धार ।^१ सुकृति नाम जो इहाँ कहाए ॥४६७॥
 सतसुग में सत सख बसना । सत सोक का कही ठेकना ॥४६८॥
 प्रीय संताएन नाम कहाया । सतनाम कहि म्यामहि दाया ॥४६९॥
 छुसुम भेद म्याम कहि दीन्हा । जो भीन्ही भापन करि सीन्हा ॥४७०॥

साखी

कहनामे के रूप धरि, मुनीन्द्र धार कहाइयो ।
 जोगजीत है नाम,^२ जग में म्याम दिहाइयो ॥४७१॥

बीपाई

कसत कबीर कासी असपना । नाम संताएन पंच वसना ॥४७२॥
 सत सुकृति का घरको सरीरा । निर्मल म्याम कवि कहेवो कबीरा ॥४७३॥^३
 असा पंच जग मंह उजिभारा ।^४ सतनाम एह सभ ते म्यारा ॥४७४॥
 धर्मराए काहु करि डारा । एको बीभन होहि सुधारा ॥४७५॥^५
 सत रहनी संतोस जो छूटा । सो जिव धर्मराए ने सूटा ॥४७६॥
 सट दरसन जो भेल जो कीन्हा । असल म्याम सतनाम हि भीन्हा ॥४७७॥
 फिरि कसऊ मंह धरा सरीरा । प्रथम म्याम असल रग हीरा ॥४७८॥
 सतनाम का कीन्हु बिचारा । दरिया नाम से पंच सुधारा ॥४७९॥
 कर विवेक जो सख हमार ।^६ सो जिव बचे नरक के धारा ॥४८०॥^७
 मया टकसार जो म्याम बसना ।^८ दुसरे भेद जो निरमल म्याना ॥४८१॥^९
 दयार्थत जो नाम बसना । दीन दयास है क्रिया निधाना ॥४८२॥
 बेबाहा नाम है सदा सहाई । सतनाम गही चितमार्ई ॥४८३॥
 बेबाहा नाम निरकेवल भेटा । आते धरा मरन भय भेटा ॥४८४॥^{१०}

१ (क) प्रथमहि = प्रथमै । (ग) प्रथमहि = प्रथमे ।

२ (क) नाम = नाम एह । (ग) नाम = नाम तब ।

३ (ग) अय = अयत ।

४ (क), (ग) (ब) कहेवो = कहा ।

५ (क) (ब) मंह = में (ग) मंह = मया ।

६ (ग), (ब) होहि = होदि (क) होहि = होए

७ (क) कर = करै ।

८ (क) (ग), (घ) बचे = बचि ।

९ (ब) मया = माया ।

१० (क), (ग), (ब) भेद = भेद । (ग), (ब) जो = जो ।

११ (ग) मय = मय ।

ग्यानमूल

साक्षी

बोए साहब भतित प्रपार है, तिगुन गुन से पार ॥

उपजि विनसि रहि जात सब, बोए तो रंग करार ॥२॥

चौपाई

राग रोग भोग सब भागा ।^१ नीच ऊँच सक्ति सुख पागा ॥११॥
 त्रिप मंविम मंह एह सुख भळ ।^२ प्रंतकाल दुख वाखन विएळ ॥१२॥^४
 भूठ सो मीठ सांच गुन तीसा ।^३ त्रिद्व भये भ्यापी ठन कीता ॥१३॥
 सतगुर मंत प्रंत के कामा । ठन छूटे पहुँचे निज घामा ॥१४॥^५
 फरे बिलास पुहुप की सानी ।^६ पुहुप बिवान भञ्जित रस सानी ॥१५॥^७
 कहे विबक विचारहु म्यानी ।^८ सार सब्य है भञ्जित वानी ॥१६॥
 छपलोक छहर गुलजारा । साहब बचन मम कीन्ह विचारा ॥१७॥^९
 है एह सांच भूठ अनि जाने । भूठ बुझे तोहि बम्ह घरि ताने ॥१८॥^{१०}
 छपलोक से मम जसि प्रएळ । पीछे साहब दरख मोहि विएळ ॥१९॥^{११}
 बिदा रूप गुन गहिर गंभीरा । बयावत निर्मल गुन धीरा ॥२०॥
 प्रेम सुधा रस बोलाहि वानी । सागी भरि भञ्जित रस सानी ॥२१॥
 हम से सुखी बचन प्रस कहेळ ।^{१२} सहजादा निर्मल गुन गहेळ ॥२२॥

साक्षी

छपलोक है छहर हमारा, अमूवीप पगु डारि ।

तुम कारन इहाँ प्राइया, बोने बचन विचारि ॥३॥^{१४}

- १ (अ) (ग) सब = सम ।
- २ (अ) (घ) सब = सम ।
- ३ (अ) (ग) मंह = मे ।
- ४ (अ), (घ) विएळ = बड़ेछ ।
- ५ (अ) (ग) भूठ सो मीठ = भूठ मीठ ।
- ६ (अ) (ब) पहुँचे = पहुँचे, (ग) पहुँचे = पहुँच्य ।
- ७ (अ) (घ) फरे = फरी । (अ) बिलास = बेलास ।
- ८ (अ) (ब) विबल = बेवाल ।
- ९ (अ) (ग) कहे = कहेह ।
- १० (अ), (घ) मम = मैं ।
- ११ (अ) (घ) बम्ह = बम ।
- १२ (अ) (ग) मोहि = मम ।
- १३ (अ) (घ) घम = इमि ।
- १४ (अ), (घ) बोने = बोनी ।

सतनाम

प्रथम ग्यानमूल भाखल दरियासाहब
सुक्रित साहब सतनाम^१

साखी

सतनाम सत ऊपरे, सखा पत्र सम जीव ।^२

जल बल सम में ब्यापिया, सांख सुधारख पीव ॥१॥

बीपाई

भादि मंत्र के ऊपर मूला । डार पाठ विविधि जग फूला ॥१॥

भख विन्ध खे होत न क्वहीं । सार सख कहत हा भवहीं ॥२॥

भादि भबानी मेदनी माया । बाके वीख समो गुन गाया ॥३॥^३

एहि भरनी कवि केते मएऊ ।^४ भादि मंत्र के पार न कहेऊ ॥४॥^५

भेख भनेख भगत बरागी । तिगुन गुन मे सम केहु जागी ॥५॥

पार केहे फिरि पार बलाना । है उन्ह प्रह भनेप भमाना ॥६॥^६

सक्ति माया है समके पास । भोजन भाव ध नींदी प्रासा ॥७॥^७

ब्रम्ह प्रसंग खंडित नहि कहई ।^८ सी जिदा जग जाप्रित बहई ॥८॥

उन्हके कबहि सक्ति नहि साया ।^९ जो जन सुमिर्यह होहि सनाया ॥९॥

(बोए)बोइनी संकट कबहि मा प्राव ।^{१०} एह भेद बिरसा कोइ पारै ॥१०॥^{११}

१ (क) सतनाम—बेवाहा साहेब मैत्रीमति मंत्र मूल ग्यान भाखल दरियासाहब गरीबनेवाज बंदिछोख-साखी । (ग) सतनाम—नाम निघण्टु सुकृत दरियासाहब प्रथम भाखल ग्यान मूल सत बरग नाम निघण्टु ईस उदारल-साखी नाम ।

२. (क) सखा पत्र सम जीव = सखा पत्र समीव । (ख) सखा पत्र सम जीव = सखा पत्र सम जीव ॥

३ (ग) बाके = बाके ।

४ (क), (ग) एहि = एह ।

५ (ख) कहेऊ = कहेऊ ॥

६ (ग) उन्ह = उह ।

७ (क) ध नींदी प्रासा = धो नींदी परप्रा । (ख) भोजन न भाव सम नींदी प्रासा ।

८ (ख) बोए ब्रह्म खंडित खंडित नाहि कइर । (ग) बोए ब्रह्म खंडित नाहि कइर ।

९ (क) कबहि = कबे ।

१० (क) बोए = बोए ।

११ (क) (ग) बोए = जन ।

इमि करि बलि तुम्हरे पंह अपक । बहुते घफा तुम्ह तन सहेक ॥३८॥^१
 अकुफ दीन्ह तुम्ह के बहु भांठी ।^२ राति कगे देखो दिन राती ॥३९॥
 निमेरा करी निगम कंह साधा ।^३ गदि में भास समन्हि कह बांधा ॥४०॥^४
 अस्ती ह्मार कौद बनि भाई । गढ़ी ढाहि सम गद मिलाई ॥४१॥^५

सखी

कारन कीन्हो तुमसे, गिर्द परा चहुं घेरि ।

बान बुद छुटा हुमा, क्हा बचन तुम टेरि ॥४१॥^६

चौपाइ

तख्त बठाए इहां तुम्हें राखा । बलिहूँ पय कुमारे साखा ॥४२॥^७
 अहे भगम तुम्ह जिव के राखो । इभादि वचन भागे निज भाखो ॥४३॥^८
 छपसोक अहां हंस बिराजै । छत्र मनोहर बहु विधि छाजै ॥४४॥
 प्रभित भरि में पावहु भांठी ।^९ लागी भरि बरिसे चहुं पांठी ॥४५॥
 उहां किसान खेती महि करई ।^{१०} मरि मरि पिये सदा सुख लहई ॥४६॥^{११}
 हृद पर अष रस देठ बेसाई । अषा लोक कसमीर कहाई ॥४७॥^{१२}
 अहे मेवा की बहु विधि खानी ।^{१३} हूँ सुगध मुल फूल बखानी ॥४८॥^{१४}
 वाण्ड कोस सहर बोए रहेक ।^{१५} मला हृद मोग सांध सम कहेक ॥४९॥
 बहुत गुनाब अठर तहां भएक । प्रति सुगंध साधु गुन लहेक ॥५०॥^{१६}
 जन्म मया फिरि मरि मरि गएक । कंधा पिड अमर महि रहेक ॥५१॥

१ (ब) (ग) तन = तन में ।

२ (ब) दीन्ह = दीन ।

३ (ब) निमेरा = निमेरा ।

४ (ब) (प) में = मी ।

५ (ग) अस्ति = अस्ति ।

६ (ब) (ब) टन = टन ।

७ (ग) हुमा = हुमा ।

८ (ब), (प) इभादि = इभादि ।

९ (ब) (प) पावहु भांठी = पावहु विधि भांठी ।

१० (ब) करई = करी (ग) लहई = लही ।

११ (ब), (ब) विने = विने । (ब) लहई = लही ।

१२ (ब) अषा लोक = अषा लोक ।

१३ (ब) अहे = अहे ।

१४ (ब) (ग) मुल फूल = फूल गुल ।

१५ (ब), (ग) बोए = बोए ।

१६ (ग) लहेक = लहीक ।

दुइ सहिवावा भई हमारा । असो विचारि म्यान उपकार ॥६३॥^१
 चंचल मन एह धिर करि लीजै । गुणत भाव भ्रमिति रस पीजै ॥६४॥^२
 रहनि गहनि है सख्य भमोला । वन विचारि हस सो बोला ॥६५॥
 जीवन मरत हए या तन बेहा । करो प्रेम सतगुण से नेहा ॥६६॥
 हात हनुर्छह कहि समुझाया ।^३ भभुरल भेसत ठाहि भूसरया ॥६७॥^४
 हुकुम बिसारे सो कम जाती ।^५ हुकुम जो होए दिन भव राती ॥६८॥^६
 बिना हुकुम पग क्यहि न बीजै ।^७ कोनिसि किए प्रेम नहि छीजै ॥६९॥
 हंस बसा धुन सेत सोहावै ।^८ सेते भमरपुर बुझा नहि भावै ॥७०॥^९
 गुन गमीर गुन सब मति धीरा । नैन भ्रमके मनि अनु हीरा ॥७१॥

साखी

पटवर धीन्हो मनि के, मनि बरोबरि नाहि ।

माने मरुर साफ होउ धीवम^१ मम फरियो तुम बाहि ॥८॥^२

चोपाई

बाह बोस सतगुर कन्हरिया । खेद उठारिह कन्हर है दरिया ॥७२॥^३
 दरिया वारे पारे भहई । दरिया बीच भगत यह कन्हई ॥७३॥
 दरिया में ज्ञान बवाहिर भहई । मरबिउभा एह बुद्धि के गहई ॥७४॥^४
 खेद निकसि बाहर फेरि वेसा ।^५ घन घन समन्हि मिलि पेसा ॥७५॥
 दरिया नाम साहब का भहई । बेसुमार कया किमि कन्हई ॥७६॥
 साहब दरिया मम दास कन्हई । भिगसा कनल भमीरस पाई ॥७७॥

१ (क) विचारि = विविचारि ।

२ (क) भ्रमिति = भ्रमी ।

३ (क) (ग) हनुर्छह = हनुरे ।

४ (क) (ग) भेसत = भ्रमल ।

५ (क) (ग) जाती = जाती । (क) (ग) पाठ स्वीकृत ।

६ (क) (ग) होए दिन = होए एह दिन ।

७ (क) (ग) पग = पगु ।

८ (क) (ग) बसा = सदा ।

९ (क) भमर = भमरपुर ।

१० (क), (क) माने = मारी । (क) (ग) रोउ = हुआ ।

११ (क) (ग) मम फरियो तुम बाहि ।

१२ (क) उठारिह = उठाये । (ग) उठारिह = उठारी ।

१३ (क) मरबिउभा एह बुद्धि के गहई । (क) मरबीभा एह बुद्धि के गहई ।

१४ (क), (ग) खेद = खे ।

सास्त्री

धवनी धमर दोनैषा कहिए, विनसि कन्हि नहि जाए ।

जो धाया सो लपि गया, बहुरि जन्म फेरि पाए ॥६॥^१

चौपाई

धवनि सिक्किति सभ जीव बनाया ।^१ प्रथ रस भेद सुन्है समुझाया ॥५२॥
 हम धंडोस मंहि डगमग भएऊ । केवा जूग कर्य विति गएऊ ॥५३॥^२
 धावमी नाएव उलटि के पेखै । अविगति धगम तहां एह देखै ॥५४॥
 बाहर भीतर भरि धमर धनुषा ।^३ पूछै बोले रहे एह चुषा ॥५५॥
 धगम निगम भेद कहि लिएऊ । गूगा होए अमित रस पिएऊ ॥५६॥
 सास्त्री वक्त बके अनि एता ।^४ पूछै बोले प्र म निजु हेता ॥५७॥
 डोसे जग मह जंह तंह जाई ।^५ प्रकृफ हमार कहे समुझाई ॥५८॥^६
 धुनि धुनि हुंसा सेव निकारी । कुबुधि काल सभ दूरी डारी ॥५९॥^७
 तुमसे भेद कहा सभ नीका ।^८ बिमल विरोग म्यान का टीका ॥६०॥
 तुम कह चीन्हि सब पहचान ।^९ धमर लोक पेमाना ठरै ॥६१॥

सास्त्री

मय जल में सम काग है,^१ धम धग बाउर धम ।^२

मीन मासु कह सासु है, दू डत बाकी गंय ॥७॥

चौपाई

साहब धाए धगम फेरि भएऊ ।^३ कहा बोए जाहि ह्रिदय में रहेऊ ॥६२॥^४

१ (ब) (ग) फेरि = छिरी ।

२ (ग) सभ = सब ।

३ (ब) (ग) कर्य = कलाप ।

४ (ब) (ग) धमर = धमर ।

५ (ग) बके = बक्य ।

६ (ब) (ग) मंह = मैं ।

७ (ग) कहे = कहे ।

८ (ग) कुबुधि काल है दुरि करि डारी । (ग) काल कुबुधि नव दुरि करि व

९ (ब), (ग) तुमसे = तुम्ह से ।

१० (ब) तुम कह = तुम्हें के ।

११ (ख) (ग) मय = मौ ।

१२ (अ) धम धग = धौ धड । बाउर = बाउर । (ग) धड बाउर है धंय ।

१३ (ख) (ग) फेरि = छिरी ।

१४ (ब) मैं = मंद । (ग) कहा जाहि ह्रिदय भेद रहेऊ ।

साली

करहा कर कह् बीबिया^१, धोम बड़ा घर दूर ।
सबही कस न समारहू^२, जब ग्रहन गरासेषो सूर ॥१०॥^३

श्रीपाई

साहिबादा मम कहा दिचारी । चलो पंष ग्याम निरुमारी ॥१२॥
रफा समेत मक्ति निजु हेता । म्यान सनीप प्र म निजु एता ॥१३॥
मपन बोधि धान कह् बोधै ।^४ करि दिवि द्विस्ति गगन में सोधै ॥१४॥
सुखुम क्षेमा होए परमीना । इमि करि साधु जगत में बीना ॥१५॥
खग भव मीन बंचस है भाऊ ।^५ बंचल लोचन चहुं दिसि घाऊ ॥१६॥^६
द्विस्ति भीतर सब द्विस्ति समोवै ।^७ सागी भरी भमी रस पोवै ॥१७॥
इमि करि हंस होए उजिधारा । ममिता म सबे मेदि डारा ॥१८॥^८
सांच गोसेभहि कस्तु नहि बीचा ।^९ भमी प्रेम रस सेजि दे मीचा ॥१९॥
लघु बहु बम बेकारा भरई ।^{१०} टूटि गौ हार गावन फिरि चरई ॥२०॥^{११}
प्रेम सुधा गहि निर्मल गाथो ।^{१२} काम क्रोध कह् इमि करि नाथो ॥२१॥^{१३}
सब्द संगी त्दि ग्यान हमार ।^{१४} तुमसे कहि विन्ह वारमवार ॥२२॥

साली

साहिबादा सुमि लीजिए, हस बंस सुखराज ।
ग्यान विरह एह दीजिए क्वहि न होत प्रकाज ॥२१॥

- १ (क) करहा कहां कर बीबिया । (ग) बीबिया = बीबिया ।
- २ (क) सबही कस न समारहू । (प) सब गहरी कस न समारहू ।
- ३ (क) गरासेषो = गरासेषी ।
- ४ (क) (ग) बोधै = बोधो । सोधै = सोधो ।
- ५ (क) (ग) बम = बम ।
- ६ (ग) पाऊ = पाऊ ।
- ७ (क) (ग) सब = सब । (ख) समोवै = समोवै । (क) पोवै = पोवै ।
- ८ (क), (ग) सबे = सबे ।
- ९ (क), (ग) गोसेभहि = गोसेभहि ।
- १० (ख) (ग) बम बेकारा = बमन निकारा ।
- ११ (ख) (ग) पावन फिरि चरई = पावन फिरि चरई ।
- १२ (क) (ग) सुधा = सुधा ।
- १३ (क) (ग) करि = कर ।
- १४ (क) (ग) सब = सबे । (क), (ग) संगी = संगी ।

भीतर हंस बस एह सहेऊ । बाहर नाम सबे केहू कहेऊ ॥७८॥
 बहुविधि बासन गढ़े कुभारा ।^१ ठीकि ठीकि बाहर करि डारा ॥७९॥^२
 घाम नर सम मोल मंगाए । कहीं सुगंध बासना नाए ॥८०॥
 कहीं रस गोरस भरि सीन्हा । तामे दधी धीत ओ कीन्हा ॥८१॥

साखी

कहीं कंभन मानिक मरा^३ कहीं तमा है रूप ।
 धोवन आम बनाइया, राव रक भव भूप ॥८॥^४

पौपाइ

कहि मदिरा मदपी भरि नीन्हा ।^५ सोई बोए बसना कीन्हा ॥८२॥^६
 कसाई करम रुधिर भरि किएऊ । परमकार मासु गिधि किएऊ ॥८३॥^७
 ऐसे तन रभा बहु भांग्री । भीतर बाग मुक्करी जी जानी ॥८४॥
 कहीं मोति मनि मानिक छाया ।^८ कहीं रोद यह सोर लगाया ॥८५॥
 तीनि सै साठि बचन ठेहि लागे । तामे हंस कहीं भव बागे ॥८६॥^९
 एहि विधि भरमहि भव में जाई ।^{१०} चारि चरत बुइ सीध बनाई ॥८७॥
 आश्रमि सकट में फिरि फिरि जावै ।^{११} साधु संघाति कर्ताहि नहि पावै ॥८८॥
 पसुपत ग्याम ताहि भरि बाध । धारि छपाए केहेहू में नाथ ॥८९॥
 कहीं रहत म गिद फिरावै । कहि वनियाँ बहु योग्य परावै ॥९०॥^{१२}
 परा चक्रोह बाक में धूमा ।^{१३} भेड़ि बाध कहि भए गो दूमा ॥९१॥^{१४}

- १ (क), (ग) मरै कौभारा ।
- २ (ग) करि = कर ।
- ३ (क), (ग) मरा = मरी ।
- ४ (क) भव = धी ।
- ५ (क) मदपी = मदपिथ ।
- ६ (क) (ग) बसना = बसना ।
- ७ (ग) परमकार = परमकरम ।
- ८ (ग) कहीं मानिक मोती मनि छाया ।
- ९ (ग) भव = मरणी ।
- १० (क), (ग) भव = भवन ।
- ११ (क) (ग) जावै = जावै ।
- १२ (क) (ग) योग्य = योग्य ।
- १३ (क) बाक में = बाक भरि ।
- १४ (ग) भए = मर ।

कमिऊ बरा मरन निभराना ।^१ केस सेत भव भगि म जाना ॥११८॥^१
 बारू पन ऐसे विति गणऊ ।^२ कान्त ढंठ सिर ऊपर भणऊ ॥११९॥
 प्रणहुं सेत सेतनि चित भाई । दयावत गुन क्हा ना भाई ॥१२०॥
 मीन मासु त्यागु रस भोगा ।^३ सतगुर प्रेम सुमिऊ निजु नोगा ॥१२१॥^२
 मानुष अम्य दुर्मम है नीका । तेजहुं भरम म्याम गुन जीका ॥१२२॥

साखी

साधु भोजन नहि मदन में, नहि सतगुर से प्रीति ।
 सागर का जल मंचवन,^४ धारुत जाहृत नीति ॥१३॥

चौपाई

खाल रतन गरबाव क्वीरा । पुरन द्रम्ह गुन गहिर गमीरा ॥१२३॥^३
 धर्मदास हंस उजिभारा । नीर छीर बिबरन करि बारा ॥१२४॥
 दुई भाग छीर यह भहई ।^५ एक भाग जल भीतर क्हुई ॥१२५॥^४
 छीर से नीर ओ लीन्हु निकारी ।^६ बिभगि भयो सभ बुद्धि बेकारी ॥१२६॥^५
 वरिया विल सबको यह भहई । दरपन दरस सदा सुख लहई ॥१२७॥^६
 वारे वारे देखु बिचारी ।^७ बारिष वारि गुन है भधिकारी ॥१२८॥^६
 बिना जहाज किमि हासे पारा ।^८ बेबाहा गुन यहचन्हिहाय ॥१२९॥^७
 क्षारो वरिया जल धन भहई । दीप दीप गुन परगट क्हुई ॥१३०॥

-
- १ (ख) (ग) कमिऊ = कलऊ ।
 २ (ख) (ग) सेत = सेत । (ख) (ग) मव = मौ ।
 ३ (ख) (ग) बारू = वारो ।
 ४ (ख) (ग) त्यागु = त्यागो ।
 ५ (ख), (ग) प्रेम = प्रेम ।
 ६ (ख) (ग) भव बत = को बत ।
 ७ (ग) गमीरा = पम्पीरा ।
 ८ (ख) (ग) भहई = बहई ।
 ९ (ख), (ग) बत = बत । (ख), (ग) बहई = बहई ।
 १० (ख) (ग) से = से ।
 ११ (ग) प्रति का पाठ स्वीकृत ।
 १२ (ख) (ग) दरस = दरसन ।
 १३ देख = देखु ।
 १४ (ख) (ग) हीये = हासे ।
 १५ (ख), (ग) यहचन्हिहाय = यैचनिहाय ।

श्रीपाद

साहि फजर भव बस्ती दासा ।^१ तुमये कीन्ह ग्यान पग्गासा ॥१०३॥
 निरंकार अकारन अहई ।^२ सगुन विनसि गुन निमि करि कइई ॥१०४॥^३
 निर्गुन गुन है निर्गुन निरपसा । निरासेप गुन तरनी पासा ॥१०५॥
 असे असोय राग नहि रोगा । विमल बिरोग थाप नहि सोगा ॥१०६॥
 एक त्यागे एक संप्रह मीका । सक्ति के संग रंग है फीका ॥१०७॥
 मीष तीक्ष्ण चाक्षे मरि गएऊ । प्रम सुधा सुख सागर पएऊ ॥१०८॥
 नकर गुन तस कीन्ह बखाना । वेवाहा नाम अमित सम जाना ॥१०९॥
 वेवाहा नाम है अजर अमाना । का कवि कहे भेद को जाना ॥११०॥^४
 महि मंडस अष ससि है मुरा ।^५ जगत ईस छवि है भरिपूरा ॥१११॥
 चारि करी गुन ओग बखाना । पषए अविगति पुख अमाना ॥११२॥^६

साखी

अविगति पुख अमान है, श्री देवता तिन मून ।^७

अगम निगम विचारि क, तहका पाप न पून ॥११॥

श्रीपाद

पाप करे दुख दाखन सहई ।^८ पून करे भाद्या गुन अहई ॥११३॥^९
 अर्ग नरक कर दुख सुख दाता ।^{१०} दुख है नरक सोड उतपाना ॥११४॥
 चारी जुग सन करिहुं भोगा ।^{११} दुख मुन संपति बिपति बियोगा ॥११५॥
 बायल तब सतजुग जुग अहई ।^{१२} प्रेठा कुमाल मगन मन सहई ॥११६॥
 दापर तख तब तब अएऊ । कामिनि अरक सोभा तब अएऊ ॥११७॥^{१३}

१ (ग) साहि = साह ।

२ (म) निरंकार = निराकार ।

३ (अ), (ग) करि = कर ।

४ (अ) कइ = कहे । (ग) कइ = कहे । (घ) (ग) को = को ।

५ (अ) अष = अशु ।

६ (अ), (ग) अविगति = अविगति ।

७ (अ), (ग) श्रीदेवता = श्रीदेवा ।

८ (अ) (ग) कर = करे ।

९ (अ), (ग) अहई = अहम् ।

१० (अ) (ग) कर = करे ।

११ (अ) (ग) चारि = चार ।

१२ (अ), (ग) तब = तो । (घ), (ग) सतजुग = सत पर ।

१३ (अ) (ग) अएऊ = अहेऊ ।

श्रीपाई

सांघ मेटे भूठ मेटी जाई ।^१ देवाहा यह भदस चसाई ॥१४३॥
 देखा मम सभ द्विष्टि पसारी ।^२ माया प्रिय बंधु सुत मारी ॥१४४॥
 यह फकीर आगे सभ भएऊ ।^३ थापना इमी करि दिएऊ ॥१४५॥
 जाकर हव बेहद भसमाना ।^४ बाको जिब सब सकल महाला ॥१४६॥^५
 तिन्हहि भकूफ बिना हमें घाई ।^६ बरसन बेबि भन्नित फल पाई ॥१४७॥
 तिन्हहि तक्त बक्त यह दिएऊ ।^७ दयावत दया बहु कियेऊ ॥१४८॥
 भन कपरा का बकसिस कौन्हा ।^८ दया तुमार न होए मलीन्हा ॥१४९॥^९
 पुस सुस मह सुमिरे प्रति नीका ।^{१०} भवरि बात जाने सब फीका ॥१५०॥^{११}
 मिदा भस्तुति जो कोइ करई ।^{१२} घोबी घोए महसि ना रहई ॥१५१॥
 गांभ ठाव की कवन बड़ाई ।^{१३} हमके छोड़ि कहां केरि जाई ॥१५२॥^{१४}
 कुस कुद म बंधु परिवारा ।^{१५} करे भगति सोई निबु सारा ॥१५३॥^{१६}

साक्षी

कुस कुद म सब निदिहै निविहि यह संसार ।^{१७}
 सब्य हमारा अनि छोड़ो, ^{१८} उतरहु भबजल पार ॥१५४॥

१ (ब) इह स्वयं पर निम्नलिखित अतिरिक्ति पाठ है—अरतालीस बँस यह मन्थप बिना । आप समाने इन्ह कह किना । (ग) बँस अरतालीस मन्थप बीना । आप समाने इन्ह कह कीया ॥

२. (ब) (ग) मम = मै ।

३ (ब), (ग) थापना = धपना । (ब) (ग) दिएऊ = कियेऊ । (ब), (ग) करि = कर ।

४ (ब) बाको = बाधा । (ग) बाको = बाकर । (ब), (ग) महाला = क्वाला ।

५ (ब) तिन्हहि = तिन्हि ।

६ (ब) तक्त = तक्त ।

७ (ब) (ग) बकसिस = कर्कसिस ।

८ (ब), (ग) तुमार = तोहार ।

९. (ब) (ग) पुस पुस मे सुमिरे नीका ।

१० (ब) (ग) जाने = जानै ।

११ (ब) (ग) केरि = किरि ।

१२. (ब) (ग) कुदुम औ बंधु ।

१३ (ब) (ग) करे = करै ।

१४ (ब) निदि है यह संसार । (ग) भीरे यह संसार ।

१५. (ब), (ग) छोड़ो = छोड़हु ।

उड़िगन गगन रहे विस्तार ।^१ गनि नहिं सके बंदे अधिकार ॥१३१॥^२
सब्द सार गहो बहु भाती ।^३ अनंत काल सभ भाति मजाती ॥१३२॥^४

साखी

बासापन ते साहब भजे, जग से रहे उदास ।

नाम देव चंदन भए, सीतल सब नेवास ॥१४॥

चौपाई

जहां तहां में देखा विचारी ।^५ त्यागे न भोग भाग मुख नागे ॥१३३॥^६
भव भव कइस गया दिन सारा ।^७ मूले गर्बे मूढ़ गवाग ॥१३४॥^८
दुइ सहिजादा मम मिह रहेऊ ।^९ भए चेतनि चित गुन इमि कइऊ ॥१३५॥
सीरे दफा ताहि के भाखा ।^{१०} ग्यान विचारि एक मन राखा ॥१३६॥
साह फकर फरबंद हमार ।^{११} भए दाम गुन ग्यान विचार ॥१३७॥
सधु भव विर्य दुनो है भारी ।^{१२} समुक्ति ग्यान गुन कहा बुझाई ॥१३८॥
बस्तीदास छोटा यह भहई ।^{१३} छापा सनदि मूल सो गहई ॥१३९॥
दफा हमार सभै सिर नावै ।^{१४} भदव भदाव भगति गुन गावै ॥१४०॥
ताहि परवाना बुकुम ओ दीन्हा ।^{१५} लिखा हमार होए नहिं भीन्हा ॥१४१॥
छापा सनदि ग्यान परवाना ।^{१६} करे भगति सभ सत सुनाता ॥१४२॥^{१७}

साखी

दुइ सहिजादा जानिके,^{१८} सील दिया हम सांच ।^{१९}

भागो पीछे जो करे,^{२०} सोइ वचन है कांच ॥१५॥

१ (ब) उड़िगन गगन = उड़िगगन ।

२ (ब), (ग) सके = सके ।

३ (ब) (ग) सब्द सार = सार सब्द ।

४ (ब) अनंतकाल = अनंतकाल ।

५ (ग) त्यागे = त्यागे ।

६ (ग) गर्बे मूढ़ = गर्बे से मूढ़ ।

७ (ब) मिह = मिहि ।

८ (ब), (ग) के = करे ।

९ (ब) (ग) फरबंद = फरियर ।

१० (ब) (ग) भव = भो । (ब) है = चरै ।

११ (ब), (ग) दाम = धारी ।

१२ (ब), (ग) ताहि = तेहि ।

१३ (ब) करे = करे ।

१४ (ब), (ग) बुकुम = रोए ।

१५ (ब) (ग) दीन्हा = लिखा ।

१६ (ब), (ग) करे = करे ।

साहिबादा के घागे घरई ।^१ बहुविधि भ्रान्तव मंगस करई ॥१६८॥
 होण बरकनि बास सुबासा ।^२ साहब घानि भेहि बहुं पासा ॥१६९॥
 भाव मगति एही बिधि करई ।^३ हस दसा गुन निर्मल रहई ॥१७०॥
 दरिस रोज मंह यह गुन नीका ।^४ साहब कहेबो भगति का टीका ॥१७१॥^५
 तन मन धन साहब का प्रहई । जीवन थीर गुन सभ्दहि गहई ॥१७२॥
 सो हसा छमलोकही जावै ।^६ बहुरि न भवभल घाका पावै ॥१७३॥

साखी

सोइ हंस गुनसार है, बिन्हि भानहि क्हा हमार ।

सम्भ वेग एह गहिके उतरहि भवभल पार ॥१८॥^७

धीपारै

साधु महिमा यह सेस बसाना । बीए महेस मारव मुनि जाना ॥१७४॥^८
 साधु के महिमा वन ओ कहरई ।^९ क्हा आस सुखवेव सुख सहई ॥१७५॥
 धाति पाति कहुबो नहि प्रहई ।^{१०} दहा सोइ साहब गुन गहई ॥१७६॥^{११}
 गुणव से कह कवन है नीका । बाबेबो बंट सम से भौ ऊका ॥१७७॥^{१२}
 किस्तु धापु परदम्बिन कौन्हा । धन धन साधु भ्रमर पद चीन्हा ॥१७८॥
 साधु सोइ ओ दुरमति खोवै ।^{१३} साध रहे भव पासक भोवै ॥१७९॥^{१४}
 साधु सोइ कंवना अस माहीं । संग रहे बल परबत माहीं ॥१८०॥^{१५}
 एहि बिधि रहे फिरै संसारा ।^{१६} भ्यान बिचारि करे उपकार ॥१८१॥

१ (क), (ग) के = कै ।

२ (क) (ग) का पाठ स्वीकृत । 'ब' प्रति में बरकनि ।

३ (क) (ग) एही = एह ।

४ (क) मंह = मोह ।

५ (क), (ग) कहेबो = कहा ।

६ (क) (ग) कहुबो = कहुबोके ।

७ (क) उतरहि = उतरै । (ग) उतरहि = उतरै ।

८ (क) बीए महेस = बी महेस ।

९ (क) साधु के = साधु कै ।

१० (क) (ग) कहुबो = किहुबो ।

११ (क) साहब = साहेब ।

१२ (क) बाबा बंट सम भौ नीका । (ग) बाबे बंट सम भौ नीका ।

१३ (ग) दुरमति = दुरमति के ।

१४ (क) पासक = पाक ।

१५ (क) संग = संघ ।

१६ (क) रहे = रई । (ग) एहि बिधि फिरै रमै संघ ।

श्रीपार्ष

लिखा हमार सागे अनि तीता ।^१ जाके भगि सोइ जन हीता ॥११५॥
 दात छोड़ि सुगना उड़ि गएऊ ।^२ मास त्रिते हहवां चलि गएऊ ॥११६॥
 भव सुगना तुम करो उपासा । यहुरि गए सेमर के पास ॥११६॥
 जोष के मारे सुभा उड़ि गएऊ । मुरछि गए तावर तन गएऊ ॥११७॥^३
 साल फूच बिसवास लोमैऊ ।^४ उड़ि गए माया भवन नहि रहेऊ ॥११८॥
 जो घन घोर हाकिमे लीन्हा ।^५ लागी भागि भसम करि दीन्हा ॥११९॥
 देह धेरि नहि माया भरी । ई नहि बसि भइ काहु केरी ॥१२०॥
 सरबहु छाहु स्वगुर के मवा ।^६ महल में टहल पावे निजु मेवा ॥१२१॥
 मरि भव गया पिदे पछुआबै ।^७ फेरि नहि बहुनि माया में आवै ॥१२२॥^८
 भरमित फिरे भवन मंह केता ।^९ धारि चरत धरि पनु होए एता ॥१२३॥

साक्षी

गुरु कंह सबस दीजिए, तन मन भरभेवो सीस ।^१

गुरु यहिभा गुरदेव है, गुरु साहज जगदीस ॥१०॥

श्रीपार्ष

सोइ गुरु ग्यान जो मरक उबारै ।^१ तरति धेधि पाए सोइ शरै ॥१२४॥^२
 जब परसाद सुरति मंह आवै ।^३ यहु भातिन्ह एहु सुगुति बनावै ॥१२५॥
 सकर सोहरी भव दधि मेवा ।^४ भगति भाव से सावहि सेवा ॥१२६॥^५
 तापर कपरा सेत बोहारी ।^६ पान जोरि कै बिन हमारी ॥१२७॥^७

- १ (ख), (ग) सागे = सागी ।
- २ (ख), (ग) का पाठ स्वीकृत ।
- ३ (ख) मास = एक मास ।
- ४ (ख), (ग) मुरछि = मरे तावरि तन गएऊ ।
- ५ (ख), (ग) साल फूच बिसवासे मरऊ ।
- ६ (ख) हाकिमे = हाकिम भे ।
- ७ (ख), (ग) के = का ।
- ८ (ख), (ग) फेरि = टिमि ।
- ९ (ख), (ग) मंह = मैं ।
- १० (ख) (ग) लीस = सीस । लीस स्वीकृत ।
- ११ (ख) (ग) सेइ = से ।
- १२ (ख) मकर = संकर । (ख) (ग) धर =
- १३ (ख), (ग) भावहि = भावै ।
- १४ (ग) विनै = बिनै ।

चौपाई

साधु मँदिल गुन तीरथ घामा ।^१ घूरि घूप करिए बिसरामा ॥११४॥^२
 साधु पारस हमि भेखन छेनी ।^३ पव पंकाज सुरखरी त्रिबेनी ॥११५॥^४
 साधु धरनि छेप छनछेपा ।^५ पट्टम प्रगास धारि नहि लेपा ॥११६॥^६
 साधु सुमति मति म्यान बिरागा । मति मराम फिरि होए न कागा ॥११७॥^७
 हमि करि साधु जगत मँह डोल ।^८ पूछे बिन कछु वात न बोसँ ॥११८॥^९
 भेख बनाए ब्याधा सर जोरा । मभूत भरम हँ मितर कठोरा ॥११९॥
 किरिखि करम काम नहिँ सोधा । क्रोध हँकार सरहँ दह जोधा ॥२००॥
 देन लेन करि मस कहँ खावै ।^{१०} भीतरि हकार घुमाँ मुस धावै ॥२०१॥
 बिस का मुर्बा घोट प्रमागा ।^{११} म्यान बिराग सुमति में आगा ॥२०२॥
 हमि करि साधु सर्व गुन कहँक ।^{१२} खास में एक कहँन कहँ भएक ॥२०३॥^{१३}

साखी

कपट काटि कंठा कटो^{१४} काटु क्रुयुधि वनठाट ।

सतगुन शोष न नीबिएँ जम रोकेगा वाट ॥२१॥^{१५}

चौपाई

सोना मोटा वाट न सुकँक ।^{१६} कपट काट भव ऐसेठ रहेक ॥२०४॥^{१७}
 होहु संतमंत म्यान समोषो । कठिन काल पीछ जनि रोवो ॥२०५॥

१ (ग) तीरथ = तीर्थ ।

२ (ख) 'घूरि घूरि करिये बिसरामा' । (ग) घुसि घूरि करिये बिसरामा ।

३ (ख) (ग) भेखन छेनी = लोह पर छेनी ।

४ (ग) त्रिबेनी = तिरबेनी ।

५ (ख) 'साधु सर्व गुन भोजे ज्ञनछेपा ।' (ग) 'साधु धरन गुन भोजे ज्ञनछेपा ।

६ (ख) (ग) प्रगास = परगास ।

७ (ख) (ग) 'मतिमराम किनि होधि न काया ।'

८ (ख), (ग) मँह = में ।

९ (ख) (ग) पूछे = पूछै । (ख) कछु = किछु ।

१० (ग) खना देना करि मस कहँ खावै । (ग) देना खेना करि मस कहँ खावै ।

११ (ख) (ग) मुर्बा = मुक्बा ।

१२ (ख), (ग) सर्व = धरस ।

१३ (ख), (ग) ये = मँह (ख) (ग) कहँ = के ।

१४ (ख) (ग) कटो = कटोरी ।

१५ (ख) (ग) रोकेगा = रोकेगा ।

१६ (ख), (ग) न = नाहिँ ।

१७ (ख) (ग) 'मो ऐसे धरकँक ।

साधु दरस पद पंकज गहई । महा पाप दुख दाखन बहई ॥१८२॥
कोटि तीर्थ साधुन के पास । मजन करे जाए जम प्रासा ॥१८३॥^१

साक्षी

कारज से कारन कठिन, गए जीव के साथ ।^२

कारन से रावन गए, वीस मूजा दस माय ॥१८४॥

चौपाइ

साधु से कारन कोइ जनि करई । महा पाप दुख दाखन सहई ॥१८५॥
महापाप जम सासन करई । एहि विधि जाए चौदासी परई ॥१८६॥
साधु सोइ निर्मल गुनसारा । वारे द्रिस्टि करे उजिभारा ॥१८६॥^३
जौ मराल मन कबहि न मला ।^४ मन भव भ्यान तोस में तौला ॥१८७॥^५
कड़ी कमान धिभं दिनराती । सहि नहि कान करे उतपती ॥१८८॥^६
ताके पास कामिनि नहि जाई । मस्त हाल देखि वृत्ति पराई ॥१८९॥
भोग भफीम पान नहि खाई । भरे भयो खासै तब लाई ॥१९०॥^७
एही रूखि सुनो हो संता । तेजहु मन मंत भाव धनता ॥१९१॥
एक रस रहे एक गुन गावै ।^८ साधु लखन परगट तथा पावै ॥१९२॥^९
परिमल पागस सिद्ध है केता । जहाँ कुकाठ धंदन भव एता ॥१९३॥^{१०}

साक्षी

नाथे गावै तास धनाम ^{११}भरे भरम का मोट ।^{११}

कहैं दरिभा नहि पदहि समाना ^{१२}हीग पै मोट ॥२०॥^{१२}

- १ (ख), (प) साधुन = सधुन ।
- २ (घ) करे = करै । (ग) मजन = मंजन ।
- ३ (घ) (ग) गए = गया ।
- ४ (ख), (ग) वारे = वारै । करे = करै ।
- ५ (घ), (ग) मेश = मश्रा ।
- ६ (ख) तौला = तबला । (ग) भव = भौ ।
- ७ (घ) (ग) करे = करै ।
- ८ (ख) (ग) भरे = भरै ।
- ९ (ख) (ग) रहे = रई । (ख) एक गुन = एकै गुन ।
- १० (घ), (ग) परगट = प्रगट ।
- ११ (ख) (ग) एता = हेता ।
- १२ (घ) (ग) नाथे = नाथै ।
- १३ (घ) (ग) परे = परै ।
- १४ (घ) (ग) कहैं दरिभा नहि पदहि समाना = कहैं दरिभा नहि पदहि समाना ।
- १५ (घ) पै = पर ।

एहि त्रिधि भए गरब गुन गामी । बिसरि गए नहि अन्नित धामी ॥२२०॥^१
 मनमत मासि वके बहु धत्ता ।^२ साधु संत के निष्ठ न जाता ॥२२१॥^३
 निर्निहि साधु फिरि जम ने बाधा ।^४ बहुविधि बंधन नहि धरि साधा ॥२२२॥^५
 बिसरि गए जगदीश गोसाई । नस सिख जिन्हि छव कान मगाई ॥२२३॥^६

साली

बिसरि गए धित चातुरे^७ मीत बिसारेहुं जानि ।^८

इहां से नेह लगाइया, जमपुर होइहैं हानि ॥२२३॥^९

श्रीपाई

कटि पदुका दुइ भांवरि कीन्हा ।^{१०} बाधि पिजरें मण्णा दोन्हा ॥२२४॥^{११}
 काध कंधा बरीबर बोरी ।^{१२} सोभे सिखाट पवन की सोरी ॥२२५॥^{१३}
 नैनहि काजर कारिख कीन्हा । भए मगन सभ मन नहि कीन्हा ॥२२६॥^{१४}
 जोग की भासिर सेहरा साधा । करि परिपंच कंगन बहु बाधा ॥२२७॥^{१५}
 सीन्ह सिभाए मंदिर के गएऊ ।^{१६} भानंद मंगल सब मिलि गएऊ ॥२२८॥^{१७}
 टेढ़ि जाल धब वन धबेबा ।^{१८} सासु ननद से कीन्ह बसेबा ॥२२९॥^{१९}
 सागि पढ़ावन सुनु पिभ भोरा । हृमरी बचन करहुं जनि भोरा ॥२३०॥^{२०}
 गुरु होए सीस सिखावन सागी ।^{२१} प्रति करि प्रेम काम रख पागी ॥२३१॥^{२२}

१ (ब), (ग) गए = गया । (ब) अन्नित धामी = धामी ।

२ (ब) मासि = मास । (ग) मासि = मात ।

३ (ब), (ग) संत साधु के निष्ठ न जाता ।

४ (ब), (ग) फिरि = फिरि ।

५ (ब), (ग) नहि = नाहि ।

६ (ब), (ग) जिन्हि कस छव साधु ।

७ (ब), (ग) गए = गया । (ब) चातुरे = चातुरी ।

८ (ग) बिसारेहुं = बिसारहुं ।

९ (ब), (ग) होइहैं = होइहैं । (ब), (ग) हानि = हारि ।

१० (ब), (ग) करि पदुका भांवरि दुइ सीन्हा ।

११ (ब), (ग) कीन्हा = कीन्हा ।

१२ (ब), (ग) बर = बरसी ।

१३ (ग) सिखाट = सिखार ।

१४ (ब) कंगन = कंगन (ग) कंगन = कंगन ।

१५ (ग) गएऊ = गएऊ ।

१६ (ब), (ग) गएऊ = गएऊ ।

१७ (ब), (ग) धब = धौ ।

१८ (ब), (ग) गुरु = गुरु ।

निरमल छिर भव महर्गे मोमा ।^१ पीर नीर नहिं अघ घट हातः ॥२०६॥
 नीर सुखे सग्वर दुगि डारा ।^२ तल्ल त्रिते भव काम विचारा ॥२०७॥^३
 भरमठ फिरे भरम नहिं जाना ।^४ जरा मरन भव भाए निमराना ॥२०८॥
 सुत बित नारि जो न्हं हमार । दया विवक न करे विचारा ॥२०९॥
 पस पस छन छन घटने सागा । ग्यात मिराग विवेक ना आगा ॥२१०॥
 एहि बिधि केते गए पम डारा । सार सन्द सुनि लागु विचारा ॥२११॥
 ऐगुन सब बिधि गुन कस्यु नाहीं । तरनी दूटि परा भव माहीं ॥२१२॥
 केबट भनारी खेवनिहारा । पर अकोह विविधि बहुधारा ॥२१३॥

साखी

भूटो मोठी लागहीं^५ साचो तीतो तात ।^६
 घोरे पवन में डोलत है, जों पीपर जो पाठ ॥२२॥^७

श्रीगार्ह

दस मास भव अमा बनएऊ ।^८ तीनि सँ छाठि चिराव^९ सएऊ ॥२१४॥^{१०}
 माये प्रिह एक मदुन वमावा ।^{११} दोए सास एह ता विष सावा ॥२१५॥^{१२}
 मासा सवन दसन तहां सोमा । रचना सटरम नीजन लोमा ॥२१६॥
 तेहि नीच दुइ मुजा बनामा ।^{१३} ताने कर इस सखा सगाया ॥२१७॥
 अहां सुयस अरन पसु पाया ।^{१४} डोलत फिरत भवन में भाया ॥२१८॥^{१५}
 बाल कुमाल अरुणपन अएऊ । भूठ सांच बहु बास बनएऊ ॥२१९॥

- १ (क), (ख) छिर भव = मिर औ ।
२. (ग) डारा = डारी ।
- ३ (क), (ग) भर = भी । (घ) विचारा = विचारी ।
- ४ (ख), (घ) फिरे = फिरै ।
५. (क) (ग) लागहीं = लागई ।
- ६ (क), (ग) तीतो = तीती । नही बास स्वीकृत ।
- ७ (क) (ग) जों = जो ।
८. (ख) (घ) दस = दस ।
९. (घ) छठि अ पाठ स्वीकृत । '७ में 'छैठ' ।
- १० (क), (घ) माये = मायी । (ग) मायी = माया ।
- ११ (क) ता = तेहि । (घ) दोए अगत तेहि विष लामा ।
१२. (ख), (घ) तदि = तदि । (क), (घ) उर = दोए ।
- १३ (क) सुयस = सुप ।
- १४ (क) डोलत फिरत = डोलत फिरत ।

साली

जएसे लता दुर्म में, षरुक्ति रहा फुस पाव ।
एहि बिधि माया अगत में, बंद दिया युन गाव ॥२५॥

श्रीपाइ

बामिनि कनक सता सपटना । ममुरत सन्मुखि संत सुजाना ॥२४६॥^१
जो महि मंडल परे मुसाई ।^२ निकलि आहि जेव फनि मनि पाई ॥२४७॥^३
उपजी मनि भयो बिसि के मासा ।^४ भै गो परिमल कस्ट सुवासा ॥२४८॥
गाया डगर जो डगमग माहीं ।^५ बड़ि गया गगन डोरि तहां नाहीं ॥२४९॥^६
जसी सुपति निरलि रहू नीचे । सार भाय पव नाहि तहां मीचे ॥२५०॥
नीच ऊंच पव पारवाहि संता । नीच से ऊंच सुपथ गुनवंता ॥२५१॥^७
गाधु के महिमा बहि महि जाई ।^८ जैसे सेंधु जस पाह ना पाई ॥२५२॥
त्रैम रुबि एसि सबते ऊचा ।^९ धवरि जीव जयत सब नीचा ॥२५३॥
पाठ निगम साधु मुन गाई । सेस सहस्र फनि चरित सुनाई ॥२५४॥
प्राणि मंत्र बाके मुनि केला । साधु महिमा है सेंधु समेता ॥२५५॥

साली

जव बिनु कर्मस न सोमही,^१ मान सरोवर हंस ।^२
साधु जम भसाधु धर, तब सोमे कुस बंस ॥२५६॥^३

श्रीपाई

जाति पाति सब तेजे बड़ाई ।^४ मया छिर सुसा समो छिर नाई ॥२५६॥

१ (ग) सन्मुखि = सन्मुख ।

२ (ब) परे = परे ।

३ (ब), (ग) जेव = जो ।

४ (ब), (ग) भयो = भौ ।

५ (क) पाठ 'गरी' अस्वीकृत ।

६ (क) पाठ 'महि' अस्वीकृत ।

७ (ब), (ग) से = से । (ग) गुनवंता = गुनवंत । (क) पाठ अस्वीकृत ।

८ (ब), (ग) के = कै ।

९ (ब), (ग) ते = ते ।

१० (ब) (ग) कर्मस = कर्मस । (ब), (ग) सेना = सेना ।

११ (ब) कर्मस = सरोवर ।

१२ 'ज' अक्षर = पूर्व । (ब), (ग) सेने = सेना ।

१३ 'ज' अक्षर = पूर्व । (ब), (ग) तेजे = तेजे ।

माते बहु विधि सब धनहीठा । मातु बचन मुनि सागत फीका ॥२३२॥^१
 ऐगुन गुन नहि करे विचारा । बिन गुन ग्यान बुढा मन्धारा ॥२३३॥^२
 जो मम कहा विरला केहु कियळ ।^३ बिनु गुन ग्यान केवट किमि लहळ ॥२३४॥

साली

दया धर्म विवेक नहि, बोल किया सब भोर ।
 मातु पिता नहि गुरु धर्या, वाधि गए जिमि जोर ॥२४॥

चौपाई

कनक बेरि सब त्रिप पगु डारी ।^४ मोतिन्हि मागनुयियहुविधि नारी ॥२३५॥^५
 वाधि मुए बधुघा नहि जाना । हाइ चाम सभ क्षत्क उडाना ॥२३६॥
 छूटा गज बाज सब तापी । जम ने पकरि नाक धरि नाथी ॥२३७॥
 मातु साधि यह करो विचारा । जसन कर्म तहां ले डारा ॥२३८॥^६
 नोहू की बरि समो पगु डारी ।^७ जसन धन तस दीन्हो नारी ॥२३९॥
 वाजीगर जेब वाधु बंधाई ।^८ नाचहि मरकट द्वारे जाई ॥२४०॥^९
 ग्यान होए तब करे विचारा । बिनु गुरु ग्यान परा मन्धारा ॥२४१॥^{१०}
 उमटा बेरि नागि पगु डारी ।^{११} वाधे रहो करा रखवारी ॥२४२॥
 रग महस मानो पिजरा भएळ । मुनिग्रन्धि पकरि ताहि में नळ ॥२४३॥^{१२}
 तान निकालि बाहर करि लीन्हा ।^{१३} फंदपद करिहू राति सो दीन्हा ॥२४४॥
 छूटा बचन साधु तब भएळ । उद्विस्तत प्रेम मगन मन रहळ ॥२४५॥^{१४}

- १ (क), (ग) मातु बचन लागी मम सीठा ।
- २ (क), (ग) बिना = बिनु ।
- ३ (क), (ग) कहा = कहेउ ।
- ४ (क) धर = धर । (क) डारी = डारी ।
- ५ (क) मोतिन्हि = मोतिन्ह ।
- ६ (क) (ग) कर्म = करम ।
- ७ (क) डारी = डारी ।
- ८ (क), (ग) जेब = जौ ।
- ९ (क) (ग) दूधर = दूधारे ।
- १० (क) (ग) बिना ग्यान बुढा मन्धारा ।
- ११ (क) उमटा = उलटि ।
- १२ (क), (ग) में = मई ।
- १३ (क), (ग) निकालि = निकारि ।
- १४ (क) उधि त = उद्विस्तत । (ग) म मगन = मगन ।

साक्षी

बएसे सता बुर्म में अर्धमि रहा फुल पाठ ।

एहि विधि माया जगत में, कैद दिया गुन गात ॥२५॥

चौपाइ

कामिमि कलक सता नपटामा । अमुरत अमुरहि संत सुजाना ॥२५६॥^१
 ओ महि मडल परे मुनाई ।^२ निकलि जाहि बेंव फमि मनि पाई ॥२५७॥^३
 उपजी मनि मनो बिलि के नासा ।^४ म गो परिमल अरु सुभासा ॥२५८॥
 पाया डगर ओ डगमग नाही ।^५ अडि गमा गगन डोरि तहाँ नाही ॥२५९॥^६
 बसी सुरति निरति रहु नीचे । सार भाग पद नाहि तहाँ मीचे ॥२६०॥
 नीच ऊंच पद पावहि संता । मीच से ऊच सुपच गुनवंता ॥२६१॥^७
 साधु के महिमा कहि महि जाई ।^८ जैसे संघु जल बाह ना पाई ॥२६२॥
 जैसे रवि ससि सनते ऊंचा ।^९ अवरि जीव जगत सब नीचा ॥२६३॥
 पाके निगम साधु गुन गाई । सेस सहस्र फनि अरिठ सुमाई ॥२६४॥
 प्रावि अंत पाके मुनि केता । साधु महिमा है संघु समेता ॥२६५॥

साक्षी

जल बिनु कमल न सोमही^१ मान छोवर हंस ।^२

साधु जन्म असाधु अरु, तब सोमे कुल अंस ॥२६॥^३

चौपाई

जाति पाति सब तेजे बड़ाई ।^४ मया सिर सुसा समो सिर नाई ॥२६॥

१ (घ) अमुरहि = अमुरत ।

२. (ब) परे = परै ।

३ (ब) (घ) बेंव = बौ ।

४ (ब), (घ) मनो = मी ।

५. (क) पाठ 'मि' अस्वीकृत ।

६ (क) पाठ 'मि' अस्वीकृत ।

७ (ब) (घ) वे = से । (ग) पुनजल = पुनवंता । (क) पाठ अस्वीकृत ।

८. (ब) (घ) वे = है ।

९ (ब) (ग) ऐ = वे ।

१० (ब), (घ) कमल = अंस । (ब), (घ) सोमहि = सोमै ।

११ (ब) छोवर = चोवर ।

१२ (ब), (घ) तब = तबै । (ब), (घ) सोमे = सोमै ।

१३ (ब), (घ) अंस = अंस । (ब), (घ) तेजे = तेजे ।

सक्ति संग रेग सम त्यागा ।^१ जस रंग भित्ति गी ग्यान ना जागा ॥२५७॥^१
 उतिम भविम का यही विचार ।^२ सिरे जमा का भक्ति पियारा ॥२५८॥^२
 माया भक्ति बरोबरि जाना । ग्यान भलग मुनु सत सुजाता ॥२५९॥^३
 जो वफा भइ धारवाहि जानी । तासो नर्म केहु जनि मानी ॥२६०॥^४
 भम पत्नी सब एके होई ।^५ हिहु तुक बूजा नहि कोई ॥२६१॥^५
 हिहु तुक सब भीष हमारा ।^६ समुक्ति सार भाषा टकसाय ॥२६२॥
 सिरे जाम धौ है सिर सूसा । छापा सनदि दुतहुं के मूला ॥२६३॥
 परसाद बनाए तंतु से भासा ।^७ साहिजादा के धागे रासा ॥२६४॥^७
 कोनिसि करि के मंगल पार ।^८ एहि विधि जीए के होए उबार ॥२६५॥^८

साखी

एके मन एके पसा,^१ एके सज है सार ।^१
 कहे दरिया मम भासिया गुन गहि होखे पार ॥२७॥^१

षीपार्श

भयसार हमार साध एह जानी । इन्हि बाते घोला मति मानी ॥२६६॥^१
 हव बेहव से भाग बहई । सो साहव गुन इहवा कहई ॥२६७॥

-
- १ (ग) त्यागा = त्यागे ।
 - २ (ग) जागा = जागी ।
 - ३ (घ) उतिम = उत्तम ।
 - ४ (घ), (ग) जमा = जमा ।
 - ५ (ग) जस = जस ।
 - ६ (घ) (ग) नर्म = नर्म ।
 - ७ (घ) (ग) भम पत्नी = भगवती । (ल) (ग) सब = सम (ख) (ग) एके = एकै ।
 - ८ (घ), (ग) तुक = तुक ।
 - ९ (घ), (ग) तुक = तुक (ख) (ग) सब = सम ।
 - १० (घ) (ग) तंतु = तंतु । (ख) पल बरसीहय ।
 - ११ (घ) के = के ।
 - १२ (घ) करि = करे । (ग) करि = कर ।
 - १३ (घ) (ग) जीए = जीए । (ग), (घ) क = के ।
 - १४ (घ), (ग) एके = एकै ।
 - १५ (घ) (ग) एके = एकै ।
 - १६ (घ) (ग) दोगे = दोगे ।
 - १७ (घ), (ग) जाने = जानो ।

सांच बहो तिसि कागज कोरे ।^१ सो साहव भाए ग्रिहि मोरे ॥२६८॥^२
 भगम निगम सब कहि समुझई ।^३ वेवाहा कीमति देखाई ॥२६९॥
 सन्तापीर एह भदव दखाया ।^४ साहव साहव एह दवर प्राया ॥२७०॥^५
 भद्रफ करे मुहुति फस पावै ।^६ चौरासी कवहीं नाहि जाव ॥२७१॥
 मन क्यरा सब उन्हेके हाया ।^७ ग्यान सते से होए समाया ॥२७२॥
 साहिजावा एह भहे हमारा ।^८ मनसफ दिया कहा टकसारा ॥२७३॥
 ए दोए फज्द जो भहे हमारा ।^९ इन्ह के दीन्ह छपा टकसारा ॥२७४॥
 बफा हमार समुझ गुन गहो ।^{१०} बवाहा दरिया चित सहो ॥२७५॥^{११}

साखी

सिरे बफा इन्हे जानिय भदव भदाव सिर नाए ।

बफा हमार एह मानिये,^{१२} भद्रफ कहा समुझए ॥२८॥

चौपाई

साहव अब छपसोक बतळ ।^{१३} कोनिसि करि भर्ज मम सएळ ॥२७६॥^{१४}
 एह भनवा उहा है कि नाहीं । सोइ बचन कहिय मम पाही ॥२७७॥
 एह भनवा उहाँ क्यहि न होत । बटूठ मीठा भञ्जित रस पोत्रै ॥२७८॥
 भमर फूल भव भमर दोलबा ।^{१५} फिनि नहि समटि केरि बाहि बैबा ॥२७९॥^{१६}
 पसंगे पुहुप छत्र सिर छाई ।^{१७} एहि विधि हंस सदा मुक्त राज ॥२८०॥

१ (ग) कोरे = कोरै ।

२ (ग) ग्रिहि = ग्रिह । मोरे = मोरै ।

३ (क) सब = सम ।

४ (क), (ग) एह = अह ।

५ (क) (ग) 'सो साहव यह इव पर जाय' ।

६ (क) (ग) करे = करै ।

७ (क), (ग) एव = एवम ।

८ (क) (ग) भहे = बहै ।

९ (ग) ए = एइ । (क) (ग) फज्द = फरज्द । (क) (ग) भहे = बहै ।

१० (क) (ग) समुझि = समुझ । (ग) गहो = गहरो ।

११ (क) (ग) सोही = सहोही ।

१२ (क) (ग) मानिये = जानिये ।

१३ (ग) साहव अब = अब साहव ।

१४ (ग) बटूठ = बरठ ।

१५ (क) भव = भौर । (ग) भव = भौ ।

१६ (ग) बाहि = नहि ।

१७ (ग) पसंगे = पसंग ।

सक्ति संग रंग सभ त्पागा ।^१ अल रंग मिलि गौम्यान ना जाम्पा ॥२५७॥^२
 उतिम मधिम का यही विचार ।^३ सिरे जमा का भक्ति पियाग ॥२५८॥^४
 माया भक्ति वरोवरि जाना । ग्यान भमग सुनु संत सुजाना ॥२५९॥^५
 जो दधा महुं घाबहि जानी । तासा नर्म केहु जनि मानी ॥२६०॥^६
 घन पानी सभ एके होई ।^७ हिनु तुक दूजा नहि कोई ॥२६१॥^८
 हिनु तुक सब जीव हमारा ।^९ समुक्ति सार मफ्ता टक्कारा ॥२६२॥
 सिरे आम झी ई सिग खूना । छापा सनदि दुनुहुं के मूना ॥२६३॥
 परसाद बनाए तंनु से भासा ।^{१०} साहिजाग क घाये रासा ॥२६४॥^{११}
 कोनिधि करि के मंगल चारा ।^{१२} एहि बिधि जीए के होए उवारा ॥२६५॥^{१३}

साथी

एके मन एके दसा,^{१४} एके सख ई सार ।^{१५}
 कहें दरिया मम भाविया गुन गहि होले पार ॥२७॥^{१६}

श्रीपाद

भवसार हमार सांख एह जानी । इन्हि बात धोखा मति मानो ॥२६६॥^{१७}
 हद वेहद से भाग बहरै । सो साहव गुन बहमा कहुई ॥२६७॥

- १ (क) त्पागा = त्पायी ।
- २ (ग) जाम्पा = जागी ।
- ३ (क) उतिम = उत्तम ।
- ४ (क), (ग) जमा = जाम्पा ।
- ५ (ग) घाएम = घासक ।
- ६ (क) (ग) नर्म = नर्म ।
- ७ (क), (ग) घन पानी = घनदंश । (क), (ग) सभ = सभ (क), (ग) एके = एके ।
- ८ (क), (ग) तुक = तुकड़ ।
- ९ (क) (ग) तुक = तुकड़ (क) (ग) सब = सब ।
- १० (क) (ग) साहिजे = तनु दह । (क) पाद करकीजल ।
- ११ (क) के = बेदि ।
- १२ (क) करिके = बेई । (ग) करिके = कर ।
- १३ (क), (ग) खीर = खीर । (क), (ग) के = ई ।
- १४ (क), (ग) एके = एके ।
- १५ (क) (ग) एके = एके ।
- १६ (क), (ग) होले = होली ।
- १७ (क) (ग), बाने = बानी ।

कंचन पर्वग तहाँ से डारा ।^१ हीरा मानिक है उजिभाग ॥२६१॥
 बेगम भवर् सहेली केता ।^२ कोनिसि करिहि प्र म मिजु हेता ॥२६४॥
 खोजा खवास चौंर सिर डारा ।^३ भरत चिराक नीन्ह उजिभाग ॥२६५॥
 भठारह् सास फौज है एता ।^४ तुर्की ताजी पाएस केता ॥२६६॥^५
 सब मम बेसा ट्रिस्टि पसारी । इन्हके किमि करि सेउ निकारी ॥२६७॥^६

साक्षी

सिरे दफा सुलतान मम, भव कसु करो उपाए ।^७
 इन्ह का लेइ निकासी,^८ सिफित मेरो गुन गाए ॥३०॥

चौपाई

कीन्ह निमेग दिन बहु वोता । जिवा जाप्रित हंस कि हीता ॥२६८॥^९
 भवदुलह् खाव रूखु तव भएऊ । फौ निकासि बाहर सब किएऊ ॥२६९॥
 कुदरति घाए परा मैदाना । मौबति बहुविधि हने निसाना ॥३००॥^{१०}
 तसाव ऊपर मम बैठेब जाई ।^{११} दरसन करिहि सोग सम भाई ॥३०१॥^{१२}
 वोजीर से सब मिमि बात जनाया ।^{१३} एक फकीर बेफ्रीमति जो भामा ॥३०२॥

समान बचन^{१४}

मल्लके दीवस घोभा बहु भांती ।^{१५} बरत नूर कोइ भई भजाती ॥३०३॥^{१६}

- १ (क) (ग) तहां = तहां।
- २ (क) भवर = श्रीर ।
- ३ (क), (ग) 'खोजा खवास ये सिर खबर जो डारा ।'
- ४ (क) (ग) खैब = खैब ।
- ५ (क), (ग) तुर्की = तुर्की ।
- ६ (क) (ग) करि सेउ = कर सेउ ।
- ७ (क) कसु = कसु ।
- ८ (क) निकासी = निष्कासी (ग) निकासी = निष्कासेउ ।
- ९ (क) (ग) जाप्रित हंस = जाप्रित रहे (क) (ग) कि = के ।
- १० (क) (ग) हने = हना ।
- ११ (क) (ग) बैठेब = बैठेब ।
- १२ (क) करहि = करै (ग) करिहि = करे । (ग) सम = सब ।
- १३ (क) (ग) वजीर = खोजीर ।
- १४ (क) (ग) में उपस्थित है । अर्थ उपस्थित ।
- १५ (क) (ग) मल्लके = मल्लके ।
- १६ (क) (ग) बरत = परबत ।

बहुत बिसर जिनु खोफ बजाता । मन रंन्ने सवे घरनाया ॥२=१॥^१
 हरही पर धननाक जो कहई । हृद से याएव न्न नाहिं अहई ॥२=२॥^१
 उचर दिशि है चहू हमाता ।^१ धमर सोत न्न हम बगरा ॥२=३॥^१
 मने कहा कही तुम दोष ।^१ निरखे रू प्रेम नाहिं दीव ॥२=४॥^१
 कृदरति मेवा उहवा पाई । जुग जुा के सव छया बुनाई ॥२=५॥^१

साली

उत जिसा पांजी अहू पत्तक करे जनि भोर ।^१
 तहां के हस गवन करे कहा जा मान मार ॥२=६॥^१

चौपद्य

साहब कहा गुप्त करि रावा ।^१ सो मम मेद परगट एहू नावा ॥२=६॥^१
 दाब बाब भाव भातस नावा । दिनम माण क मन्त्रव वनाया ॥२=७॥^१
 सीना साफ मुख नूर दिग्गदा ।^१ सोना सुन्न वृद्धिधि छाजा ॥२=८॥^१
 गिद महत चहु जिनी वनाया ।^१ विष विव बनक विप्र निवाया ॥२=९॥^१
 तन्नत बनाए सदा तहा कीया ।^१ हीन उवाहिं नहि विष दीया ॥२=१०॥^१
 कहि नाहि जाय तखत के सोना ।^१ वंठा पाप मनि इमि सोना ॥२=११॥^१
 प्राम खास खुमबोई बेना ।^१ माती भावगि नन्नक मना ॥२=१२॥^१

१ रंन्ने = रंन्ने । (ग) रंन्ने = रंन्ने ।

२ (क) दिशि = दिशि । (ग) उचरति दिशि ।

३ (ख) (ग) जहां = तहां ।

४ (क) (ग) तुम = तुम ।

५ (क) (ग) निरखे = निरखे । (ख) (ग) रहे = रहे ।

६ (ख), (ग) क = कै । (ग) हुषा = हुषा ।

७ (ख), (ग) करे = करे ।

८ (ख) (ग) के = के । (ख) (ग) कर = करे ।

९ (ख), (ग) मान = मने ।

१० (ख) (ग) कहा = कहई । (क) (ग) गुप्त = गुप्त ।

११ (क) मा के = मना के ।

१२ (ख) (ग) विवासा = विवासा ।

१३ (ख), (ग) छाजा = छाजा ।

१४ (ख) (ग) दिशि = दिशि ।

१५ (ख) नहि = नहि । (ग) हेरि = हा ।

१६ (ख) (ग) नादि जय = म जय । (ग) (ग) के = का ।

१७ (ख) (ग) मनि = मनि ।

१८ (ख) (ग) मन्त्रक = मन्त्रक ।

साक्षी

भाषाभावन नसाइ मे,^१ छपलोक में जाए ।नव भागर नहि देखियै,^२ एहि विधि कहा बुझए ॥३४॥

श्रीपारै

यह सोखा बनि जाने कोई ।^३ वधन हमारि दूखा नहि होई ॥३४०॥बिनु देखै क्ये बहुवानी ।^४ भेस भसेल सेहु पहचानी ॥३४१॥तुम्हुरा कहा जो माने दासा ।^५ नित्य होए छपसोक तेबासा ॥३४२॥साक्षी सखि सीखि मूलवाँ ।^६ जम वाल तेहि दाव लगावै ॥३४३॥है छपसोक सोच मम कहेऊ ।^७ बिरसा बारि बिदेक सो सहैऊ ॥३४४॥छापा सनदि मूल है खाना ।^८ यह मूरि देखहि संत सुजाना ॥३४५॥सोवत भागत नहि दिसरावै ।^९ सदा प्रेम भञ्जित यह पावै ॥३४६॥मै जाप्रित हों बिद सख्या ।^{१०} तुमसे कहव जो वधन बनूपा ॥३४७॥है छपलोक छापा पहचान ।^{११} तुमरी वधन कहा जो मान ॥३४८॥हस बसा प्रेम सब सावै ।^{१२} मान सरीबर मोती पावै ॥३४९॥

साक्षी

तुम सहिजावा मम हो^{१३} ध्यान जो कहा विचारि ।जो नित्य के जानिहै^{१४} भव बल बाहि न हारि ॥३५॥

श्रीपारै

जंगसी फूल है बहुबिधि जाती ।^{१५} ता महुं भंवर रई मद माती ॥३५०॥

१ (क), (घ) बसाइ के = नसाए के ।

२ (क), (ग) देखियै = देखिया ।

३ (क) (ग) यह सोखा बनी बनि कोई ।

४ (ख) (ग) क्ये = क्यै ।

५ (क), (ग) जो माने = मानै जो ।

६ (क), (घ) होए = है ।

७ (क) (घ) यह मूरि बानी कास बधि मएऊ ।

८ (क) (ग) जानि = जो ।

९ (क) (घ) बह = बल ।

१० (क) (ग) मैं जाप्रित हों = मैं ही जाप्रित ।

११ (क), (घ) तुमसे = तुम्ह से । (क), (ग) कहव = कहेत । (क) (ग) जो वधन = वधन ।

१२ (क) (ग) वञ्जितव है—तुम्हरी वधन कहा जो मानै । है छपलोक छापा पहचानी ॥

१३ (क), (घ) तुम = तुम्ह ।

१४ (क), (ग) के = है ।

१५ (क), (ग) ता महुं = तामी । (क) (घ) भंवर रई = भंवर रखा ।

बोजीर वचन^१

बोजीर कहा वायसाह से जाई ।^१ फकर बडा फकोर कोइ भाई ॥३०४॥
 सिफ्त बहुत जो हमें सुनाया । मम बोजिर तुम कब्रि जनाया ॥३०५॥^२
 फकर होए खंद तुम्ह से भई ।^३ दर्सन कीअ भसा सम बई ॥३०६॥
 उन्हे दोए होए सम नीका ।^४ कबरि खाक जानो सब फीका ॥३०७॥^५

साखी

तस्तखा पर बठि के, पहुँचा उहवा जाए ।^६

संग बोजीर ह्राबिर रई,^७ सिफ्त कीन्ह बनाए ॥३१॥

चौपाइ

तस्त राया से नीब हुजिए ।^८ करि सनाम भदर सो रहिए ॥३०८॥
 चहु दिस गिलम दिया बिछाई ।^९ करि सनाम तब बठे जाई ॥३०९॥^{१०}
 नूर सो दीदम गया छवाई । बहुत भदाब उन्हु के दिस भाई ॥३१०॥^{११}

साहब वचन^{१२}

पूछन लगे कहा ठे भाई ।^{१३} इंसिम कान बहो समुम्हई ॥३११॥^{१४}

बादसाह वचन^{१५}

एक भित्ति है सबते न्यार । बबाहा कही नाम हमार ॥३१२॥

बाही सहर से हम खसि भाई ।^{१६} यह सब कुदरति मेरी बनाई ॥३१३॥

१ (क) (ग) में अपठित है ।

२. (क) (ग) बोजीर = बोजीर ।

३ (क), (ग) दूम = दुम्है ।

४ (क) (ग) 'बजीर को कब्र दुम्है प जो बइइ ।'

५. (ग) दोए = हुए ।

६ (क) (ग) कबरि = कबर (क) (ग) खाक = कलक ।

७ (क) (ग) पहुँचा = पहुँचै ।

८. (क) (ग) बोजीर = बोजीर ।

९. (ग) से = सो (क) (ग) हुजिए = हुजिऐ । (क) (ग) रहिए = रहिऐ ।

१० (क) गिलम = गिलरम । (ग) गिरिम = गिरिम ।

११ (क) बठे = बैठ ।

१२ (क), (ग) बदाब = बदब ।

१३ (क) (ग) में अपठित है ।

१४ (ग) लामे = लाम ।

१५. (ग) इंसिम = इंसिफ । (क) (ग) कौन = कवन ।

१६ (क), (ग) में अपठित है ।

१७ (क) (ग) बाही = बाइ । (क) से = से = सो ।

ध्यान बिचारि भया निजु दासा । सो गुलाब सतगुर के पासा ॥३६३॥^१
 क्यास धंघ सिपाही भहई ।^२ सध्र सांगि मह निस दिन गहई ॥३६४॥
 सुसिहास दास फकीर है नीका । रक्षा सुसा नाहि जानत फीका ॥३६५॥
 भन कपरा कर्वाहि नाहि जोवै ।^३ प्रेम प्रीति दुरमति कर खोवै ॥३६६॥
 मुरलीदास दीवान करि लीन्हा ।^४ जो गुन रहा सो परगट कीन्हा ॥३६७॥
 जग मह जाए भकूफ बलावै । बहिमा होए के भानि मिलावै ॥३६८॥^५
 इनि करि मै गो मुरलीदासा । एहि विधि भानन्व प्रेम सुबासा ॥३६९॥
 साहिबावा होए हमरे पासा । साह फकर औ बस्ती दासा ॥३७०॥

साखी

साहिबादा मम दोए है,^६ मनसफवार हमार ।
 सदा भदय सिर राखिये, ऐसी भक्ति करार ॥३७१॥

चीपाई*

मेहरवान दास मम दासक भहई । मातु के संग सदा यह रहई ॥३७२॥^७
 बाल कुमाल तफलापन भएऊ । हुमा फकीर सैल के गएऊ ॥३७३॥^८
 करे सैल फिरि गए पर भावै ।^९ मातु के संग सदा गुन गावै ॥३७४॥
 जाके ध्यान होए भरिपुरा । सोई जम जगत महं पूरा ॥३७५॥^{१०}
 दिना ध्यान गमी कहां पावै ।^{११} ध्यान बिचारि भमरपुर जावै ॥३७६॥
 भमर पुर भरि बहूत सोहाई । एहि विधि प्रेम भगन होए जाई ॥३७७॥
 है यह सांच भूठ जनि जान ।^{१२} सो छपनोक पयाना ठानै ॥३७८॥
 सिरै आम सिर सुना भहई । ध्यान गमी छवा निजु गहई ॥३७९॥

१ (ब) (ग) के = है ।

२ (ब) क्यास = दुमास ।

३ (घ) भन कपरा = भन कपवा ।

४ (ब) (घ) दीवान = देवान ।

५ (ग) बहिमा भाविके होए मिलावै ।

६ (ब) (ग) है = है ।

७ (ब) में अपठित है ।

८ (ब) मातु के संग = मातु संग । (ब) (ग) यह = यह ।

९ (ब), (घ) हुमा फकीर सैल के गएऊ ।

१० (ब) (घ) करे = करै । (ब), (ग) सैल = सखि ।

११ (ब) (ग) भावै = में ।

१२ (घ) (ग) जानै = जाना ।

१३ (ब) (ग) है यह = यहै । (ब) (घ) जानै = जाना । (ब), (ग) ठानै = ठाना ।

वाही फून में जन्म गंवाई । वाके छोड़ि कउहि नहि जाई ॥३११॥
 बनस फून फूला सब क्यारी ।^१ त्रिनु सीषि सब सदा पसारी ॥३१२॥^१
 पकुम परकास बिग्या केहु देखा ।^२ भविगति कही अर्ज कै रेखा ॥३१३॥^१
 ऐसन फून है सब नर नारी ।^३ भक्ति विसारि संघन प्रिय हारी ॥३१४॥
 साहब छोड़ावहि तब यह छुटे ।^४ नाहि ती कान सकल बिय लुटे ॥३१५॥^६
 मारे आरे देह भवताग ।^५ मन के जान बंधन बहु हारा ॥३१६॥^१^१
 खेसे मरकट याधि नघाई । घर पर काल उमासा साई ॥३१७॥
 नाहे विसारेहु फून अनुपा । एहि विधि भरुभेख बर बर भूपा ॥३१८॥
 बहू फूव सुवैभ केरि मणि जाई । सदा सजीबनि सोइ गुन गाई ॥३१९॥^१
 अजर अमान जने नहि कवहीं ।^६ बहू सत वर्ग नसगुन मवहीं ॥३२०॥^१

सामी

वाए सनवर्ग सर्व ऊपर,^१ अजिना अजर अमान ।
 जीव मुकुटावहि जगल में, हृम के बना बबान ॥३२॥

धीरार्थ

पुन गुलाब है बहु विधि नीचा ।^१ अठर हूमा मंहगे मोल बीचा ॥३६१॥
 वाक्ये नअरि जो बहूत सोहार्थ ।^२ सीतल धंदन अरवि चढ़ाई ॥३६२॥

- १ (अ) (ग) वंदि-वपत्य है—वाके छोड़ि कउहि नहि जाई । कही फून में जन्म गंवाई ।
- २ (ग) फूला = फूल है । (घ), (ग) सब = सम ।
- ३ (ख), (ग) सब = सम ।
- ४ (घ), (ग) बिरला = बिरल ।
- ५ (घ) है = हे ।
- ६ (अ), (घ) ऐसन फून सब है नर नारी ।
- ७ (घ) (घ) छोड़ावहि = छोड़ाई ।
- ८ (घ) लुटे = लूटा ।
- ९ (ख) (ग) मारे जने = मारे जाई ।
- १० (अ) (ग) मन ब = मनई ।
- ११ (घ), (ग) कर्षिबनि = सजीवन । (घ) (अ) मोद = मो ।
- १२ (अ) (ग) जर = जरी ।
- १३ (घ) (ग) वाए सनवर्ग उग पुन करती ।
- १४ (ख), (ग) ऊपर = उपरी ।
- १५ (अ) (ग) मुकुटा = पुन ।
- १६ (ख) (ग) अजरि जो = अजरि ।

नाम बुझाई बहुत बुझारी ।^१ दया करहु मय पातक्य जारी ॥३९१॥^२
 बुझ मेटहु तुम सुख के दाता ।^३ आठ भगति प्रम रंम रता ॥३९२॥^४
 गरीबनेवाक ई नाम सुमारा ।^५ दया करहु मय संधु सवारा ॥३९३॥^६

साक्षी

छोड़ सोहागिनि प्रम रस, करे पिया से नेह ।^७
 भागत सोच विचारहु, नाहि तौ मुए या तन सेह ॥३९४॥

श्रीपार्थ

राएमती कुन सब कह त्यागी । भगति विचारि ध्यान मह आगी ॥३९५॥^८
 त्यागा कुन कुदुम सब जाती ।^९ सवगुर चरत प्रेम रस मानी ॥३९६॥
 हुकुम हमार एह सदा ओगावै ।^{१०} बिना हुकुम कतही नाहि आवै ॥३९७॥
 ध्याल हमार सदा एह ओहै ।^{११} ऐसी भगति प्रम रस छोहै ॥३९८॥
 सो कुनभागिर कुन में नीका । गैब दिहाए भवरि सम फीका ॥३९९॥^{१२}
 साह फकर कं दासी महई ।^{१३} पतिवरता ब्रौए निखरिन गहई ॥४००॥
 भपमा पिया के हुकुम जो गावै ।^{१४} भवरि दात कछुयो नाहि भावै ॥४०१॥^{१५}
 एहि भगति वाए निज करि जाना ।^{१६} भपमे चित में कीन्ह मनमाना ॥४०२॥
 भपमे हजूर भग पावन कीन्हा । वचन द्यमारि होए नाहि भीन्हा ॥४०३॥^{१७}

१ (अ), (प) बुझाई = बुझाई है ।

२ (अ) (प) करहु = करी ।

३ (अ), (ग) दया = दया । (अ) (प) कं = क ।

४ (अ) (प) रंम = रंम ।

५ (अ), (प) सुमारा = सुमारा ।

६ (अ) (ग) करहु = करे । (अ) (प) सवारा = से सारा ।

७ (अ) (प) करे = करे ।

८ (अ) (ग) महई = मे ।

९ (अ), (प) त्यागा = त्यागी ।

१० (अ) (प) हमार = हमारि ।

११ (अ), (प) हमार = हमार ।

१२ (अ), (प) भैव = भयो ।

१३ (अ) (ग) फकर दासी = फकर की दासी । यही पाठ स्वीकृत ।

१४ (अ), (ग) के = है ।

१५ (अ), (ग) कछुयो = कछुयो ।

१६ (अ), (प) निज = निज ।

१७ (अ), (प) द्यमारि = द्यमार ।

सनदि हमारि करे पह्चानी ।^१ मूठ तेजि भन्नित रस सानी ॥३७६॥^२
 किमि करि कर्हो विविधि विस्तारी । सबकी सनदि हजूरुह् डारी ॥३८०॥^३
 जो जन बफा हमारा प्रहई । सब सेवक साहब का कर्हई ॥३८१॥^४
 भूसे भयति ग्याल नाहि भाई । भातम मारि विकर होड जाई ॥३८२॥^५

साली

यही भज सुनि मीमिदै कोनिसि करि सिग नाग ।
 भन कपरा कद् दीजिदै इमि सेरो गुन गाए ॥३८३॥^६

चौपाइ*

सोइ सोहागिनि पिया रंग राती । सोइ सोहागिनि कुन नाहि जाती ॥३८३॥
 सोइ सोहागिनि पिया पह्चानै । तन मन वारि भगनि निजु ठान ॥३८४॥
 कपरा संत सुगंष सोहाई ।^१ साल पियर के नगीष न आई ॥३८५॥^२
 मई जुगल इमि पिया के साया ।^३ भानंद मंगल सदा सनापा ॥३८६॥
 सोहागिनि पिया हुकुम जो गाई ।^४ निस दिन सेवा खसुम के साई ॥३८७॥^५
 भभरल दूरि किया कांचु करि पोती ।^६ सब ससिप्रन्हि में निर्मलि मोती ॥३८८॥^७
 पिया के भजन सदा इमि लोषी ।^८ रहे सनीप भय पातल मोषी ॥३८९॥
 साहिजादी है भबरा मरी ।^९ मेहर कीजे कहा कर जोरी ॥३९०॥

१ (ब), (ग) करे = करै ।

२ (ब), (ग) सेवि = सेठी ।

३ (ब) इन्वर्दि = इन्तरे (ग) इन्वर्दि = इन्तरी ।

४ (ब), (ग) सेव = सेवै ।

५ (ब) मारि = मारि ।

६ (ब), (ग) सेरो = सेइरो ।

७ (ब) (ग) में कण्ठिन है ।

८ (ग) कपरा = कपरा ।

९ (ब) (ग) साया पिया = सायारियर । यही पाठ स्वीकृत ।

१० (ब) (ग) सुगल इमि पिया = सुगलरिया ।

११ (ब) (ग) पिया = सो पिया ।

१२ (ब), (ग) खसुम = खसुम । (ख), के = के ।

१३ (ब), (ग) भभरल = भभरल । यही पाठ स्वीकृत ।

१४ (ब), (ग) मे = मह । (ख) (ग) निर्मली = निर्मल ।

१५ (ब) (ग) के = के । (ग) इवि = ई ।

१६ (ब), (ग) मारिजाई = सायाजाई । (ग) भबरा = सायारी । (ग), (ग) मेरी = मेरी ।

ग्यान भाल जग सनित में सोभा । भया धमोल पुर्त सग सोभा ॥४१४॥^१
 वारिष वारि जिमि रहे बलेपा ।^२ रहे निवट इमि बल बहू खेपा ॥४१५॥^३
 बी बन भीन भीन हए एता ।^४ निरुस गमा कहु देखु न खेता ॥४१६॥

सासी

सग भसमान बस मीन रहे^५ ए दुषो वाट भकंय ।^६
 भावत वात न देखियै,^७ दिन दिवाकर रंय ॥४२॥

चौपाई

ग्यान ममी बूनो पहचाना । भया भवत मन जास पुराना ॥४१७॥
 मन बी संधी घट घट में रहई । मो में तुम में जन में बहई ॥४१८॥^८
 गहि क मूल त्रिस्टि में देखै ।^९ हूँ धरुत एक तव देखै ॥४१९॥
 नहि तहां सुरे रंय तहा होई । जयया जीत पवन सव सोई ॥४२०॥
 पसमे धोवन वारि जो गएऊ । उदे होए भस्त फिरि मएऊ ॥४२१॥^{१०}
 भावत मन के देखै न कोई । घट में पइठे परगट होई ॥४२२॥^{११}
 मन बीसंभर मन जगदीसा ।^{१२} मन भाववार भरि मन ही ईसा ॥४२३॥
 यह मन कीन कीन भयम्भना ।^{१३} सनकादिक बग्हादिक आना ॥४२४॥
 मन सामर्थ समर जो कीन्हा । दैतहि भारि राज छोरि सीन्हा ॥४२५॥
 जाके तिगुम वेद यह कहई । समुन सक्य देह भरि सहरई ॥४२६॥

- १ (क), (ग) मया धमोल = मया मोल ।
 २ (क), (ग) रहै = रहै ।
 ३ (क), (ग) रहै = रहै ।
 ४ (क), (ग) खेता = एता । मही पल स्वीकृत ।
 ५ (क), (ग) बस भसमान भीन बल मे रहै ।
 ६ (क), (ग) दुषो = दुनो । (ग) ए = इमि ।
 ७ (क), (ग) देखियै = देखिया ।
 ८ (क), (ग) तुम = तुम्ह ।
 ९ (क), (ग) देखै = देखै ।
 १० (क), (ग) फिरि = फिरि ।
 ११ (ग) पइठे = पइठी ।
 १२ (क) मय = मने ।
 १३ (क), (ग) कीन कीन = कीन कीन ।

जा हूँ कहा लिखा सोइ दासा ।^१ बस्ती नाम गुन परगासा ॥४०३॥^१
 जो हंस कहा सोइ गुन म्याना ।^१ भालर जुगल प्रेम रस राता ॥४०४॥
 सहिजादा कह बकसिस मैऊ ।^१ दुनो बुन मिलि म्यान गुन गैऊ ॥४०५॥^१
 प्रदस हमार भकूफ है नीका । सक्ति संग जानु सब फीका ॥४०६॥

साखी

घोरी उमिर तर्क क्रिया^१ साहब निदाहहि मोर ।^१
 होए फजई साहब के भागे कबहि न करियै मोर ॥४०७॥^१
 म्यान संपूरन प्रेम रस देखत प्रथम प्रमान ।
 मति मराल सुगंध भग इमि पै करत न पान ॥४१॥

बौपाई

जल है ज्ञान बुधी है माया ।^१ इमि है छीर भर्म है दाया ॥४०७॥
 छीर नीर संखित सब भरई ।^१ जल के घेंचि छीर नहि सहई ॥४०८॥
 सोइ हंस कुल बंस कहानै । छीर नीर इमि विवरन भावै ॥४०९॥^१
 भक्ति सक्ति दुखो संखित भरई । दुवा जुगल त्रिलगि निमि कहई ॥४१०॥
 म्यान भसग है प्रसित प्रमाना । सक्ति भक्ति अग है पग्वाना ॥४११॥^१
 म्यान के मगु पगु धरै न कोई ।^१ तर्क तेज तिछैन भसि होई ॥४१२॥
 धरै पगु इगमग नाहि होई ।^१ प्रह्य संपूरन मन सब धोई ॥४१३॥^१

- १ (ख) (ग) सोइ = इमिह ।
- २ (ख), (ग) परगासा = परक्यना ।
- ३ (ख), (ग) 'जो इन कहा लिखा गुन म्याता' ।
- ४ (ख) (ग) बकसिस = बकसिसि ।
- ५ (ख) (ग) जुने = जने ।
- ६ (ख), (ग) उमिर = उमिरि ।
- ७ (ख) साहब = साहैब ।
- ८ (ग) करियै = करिए ।
- ९ (ख), (ग) बनई ज्ञान बुद्धि है माया ।
- १० (ग) नीर छीर मम संखित भरई ।
- ११ (ख) (ग) छीरनीर = नीर छीर ।
- १२ (ख) (ग) बम है = बगत ।
- १३ (ख) क = कै । (ख), (ग) मगु पगु = पगु मगु ।
- १४ (ख) (ग) धरै = धरै ।
- १५ (ख) (ग) सब = धम ।

साखी

रवि को छवि एह छीत पर, यह निगुन को भाव ।
 छवि स रवि नहि होत है निगुन सगुन को राव ॥४२॥
 यह घट पट जब खुलत है छटकत छवि तव जाए ।
 सो छवि उलटि न भावहीं, फेरि नहि धरति समाए ॥४४॥

यस संपुरन म्यान मूल हुआ । जमा चौपाई ४२६ । साखी जमा ४४ ।
 जमा के सब ४७० ॥ सन् १२६१ साल दसखत हीरागाम फकीर मन् मनपुग
 के जिता पटना मुखल भगत के दरवाजा पर हुआ नेमार सो सही ॥^१

१ (घ), (ग) में यह साखी अपठित है ।

२. (घ) संमत १८९४ ॥

मने नाम कातिक बची दसदशी बार दिन मंगल का रोज मरम शानमूल संपुरन हुआ ।
 दसखत लखत राम कबीर शास्त्रिजारे फकर शाह की हरिया साहेब का जगद धरंधरा ॥
 (ग) मय सपुरन महल राजमूल इत्यादि शरती संमत १८ सै ६६ बैंगल सम १२२०
 पसली समे नाम कातिक बची ३० रोज होमार के लिखल संपुरन महल साहाबान मोरपुर
 परगने हमबापी तवे बीबी मौजे धरंधरा दसखत हरिया मरम का समुक्ति लता ।
 महल दसवार सतनाम दसखत परनाप राम कबीर सुक्रित हरिया साहेब के मकर गुलाम
 सब कबीर सेक है सो सम के सतनाम पनुषै बहुत बेम से कमरपुर मुदना लख
 बीनाकालीव (१) बिहा संपुरन मय महल दसखत परनाप राम कबीर के दस साहब त्रिब
 करम राम जी के गुलाम जाये ई मय हरियारपी सेक कबीर सख सोवरा बोद
 मति राव का दिनु का मुरक दिनु के गुनके मौरम मुकके पीर के होमप देत है ।

